ISSN 2249-751X

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तुरामाय

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्। दृक्सिद्ध निरयन भारतीय प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्रसाक्षिणौ।।

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

सन् 2012-13, 2013-14 ई. (द्विवार्षिक)

राजा शुक्र

* विक्रम संवत् 2069-70 * शक संवत् 1934-35 * जयहिंद संवत् 65-66, 66-67

दैवज्ञ भूषण
पं. रामेश्वर दत्त रैणा
राज ज्योतिषी

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

प्रधान सम्पादक :
डॉ० चन्द्रमौलि रैणा
फलित एवं सिद्धांतज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
वरिष्ठ सहायकाचार्य ज्योतिष विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली एवं कांगड़ा सहित

" ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारी महाराज जी "
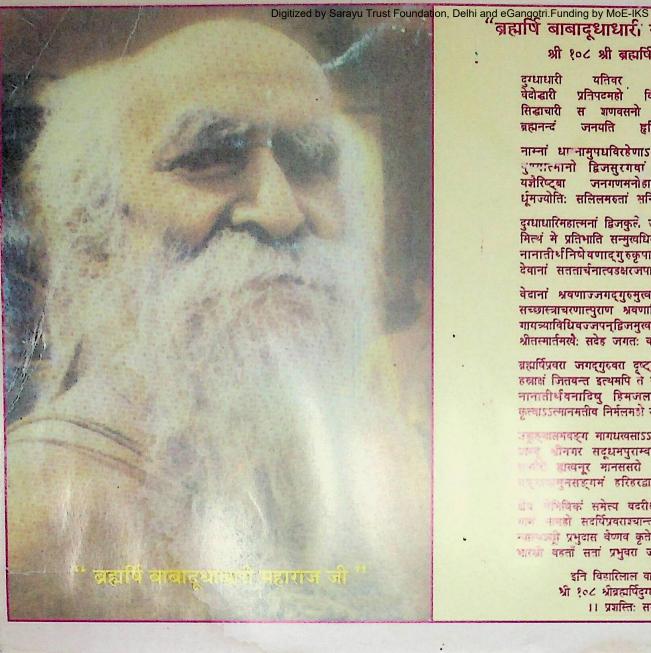
"ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारि महात्मनां प्रशस्तिः।।"

श्री १०८ श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः

दुग्धाधारी यतिवर प्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारी प्रनिपटमहो विश्वतो यज्ञकारी।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मनन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी।।१।।

नाम्नां धा[illegible]नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
[illegible]त्मानो द्विजसुरगवां सर्वदैवावधानाः।
यज्ञैरिष्ट्वा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेतो-
र्धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः।२।

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मना-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासतः।
नानातीर्थनिषेवणाद् गुरुकृपामासाद्य गोपालनाद्
देवानां सततार्चनात्षडक्षरजपादष्टाङ्गयोगार्जनात्।।३।।

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बनात्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पित्रर्चनान्नित्यशः।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्नित्यं पुरश्चर्यया
श्रौतस्मार्तमखैः सदेह जगतः कल्याण सञ्चिन्तनात्।।४।।

ब्रह्मर्षिप्रवरा जगद्गुरुवरा दृष्ट्वैक दृष्टया जगत्
ह्यक्षं जितवन्त इत्थमपि ते जाताः सहस्राध्वराः।
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाश्शय्यास्तपश्चर्यया
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम्।।५।।

[illegible]भवङ्ग मागधखसाऽऽसाकेत काशी गया
[illegible] श्रीनगर सदूधमपुराम्वाराम आर्यश्रियम्।
[illegible] हरवनूर मानससरो जन्द्राह भड्डूगुढा
[illegible]मुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम्।।६।।

[illegible] [illegible]षिकं समेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वरम्
[illegible] [illegible]महो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
[illegible]ष्ट्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं महत्
[illegible] वहतां सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम्।।७।।

इति बिहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता
श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदुग्धा धारिमहात्मनां
।। प्रशस्तिः समाप्ता ।।

नमोऽस्तुरामाय

नमोऽस्तुरामाय

ISSN 2249-751X

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

राजा शुक्र

विक्रमसंवत् 2069-70	द्विवार्षिक	जयहिंदसंवत् 65-66, 66-67
शकसंवत् 1934-35	पञ्चाङ्ग	खिष्टसन् 2012-13, 2013-14 ई०

प्रधान सम्पादक :

डॉ० चन्द्रमौलि रैणा

फलित एवं सिद्धांतज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
वरिष्ठ सहायकाचार्य ज्योतिष विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

सह-सम्पादक

पं० रोहित शास्त्री
फलित ज्योतिषाचार्य, विविध सम्मानप्राप्त
महन्त, बाबा कैलख देव मन्दिर एवं
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मा.वि.वि.)
जम्मू में कार्यरत

पं० उपेन्द्र भार्गव
सिद्धांत ज्योतिषाचार्य
UGC/NET (पञ्च स्वर्णपदक प्राप्त)
सहायकाचार्य (अं.का.), ज्योतिषविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मा.वि.वि.), जम्मू

पं० पीयूष रैणा
ज्योतिर्विद,
अभियन्ता एवं तकनीकी विज्ञ
विविध सम्मान प्राप्त
श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, जम्मू

प्रकाशन वर्ष : द्वादश

मूल्य : 90.00 रुपये

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान

44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू, दूरभाष एवं फैक्स : 0191-2473663, मोबाईल : 09419194230
ई-मेल : shriraghvendrapanchang@gmail.com

प्रकाशक : मल्होत्रा ब्रदर्ज, पक्का डंगा जम्मू

अन्य प्राप्ति स्थान : बजाज बुक स्टोर, अप्पर गुम्मट बाज़ार, जम्मू। गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, सिटी चौक, जम्मू।
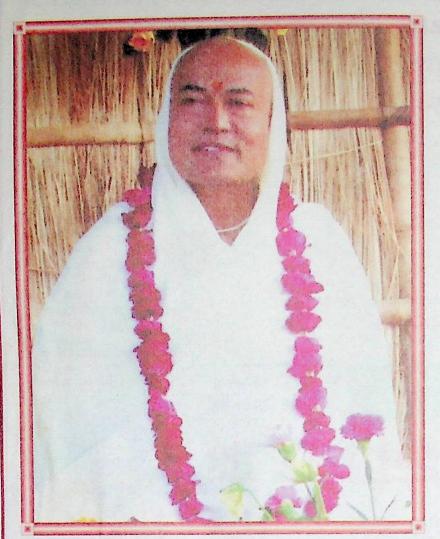
॥ नमोऽस्तु रामाय॥

श्रीदूधाधारी बर्फानी आश्रम

भूपतवाला, हरिद्वार-२४९४१०

परमाध्यक्ष- सन्तश्री प्रभुदासजी महाराज

दिनाङ्क - ०५/१०/२००३

शुभाशंसा

ज्योतिष शास्त्र में हमारे ऋषियों का अनुसन्धान चमत्कृत होता है। गणित, फलित सिद्धान्त आदि वर्गों में विभक्त इस शास्त्र की वैज्ञानिकता हमारे ही देश में नहीं, बल्कि दुनियाभर के लोग स्वीकार करते हैं। उसी प्रक्रिया में पञ्चाङ्गविधा को गणितीय आधार पर तैयार किया जाता है। लौकिक व्यवहारोपयोगी, दैनिक कृत्यों में सहयोगी यह पञ्चाङ्ग परिपाटी हमारे देश में बहुत ही लोकप्रिय है। इस परम्परा के पालन में विद्वान् ज्योतिषी डॉ०चन्द्रमौलि रैणा श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन बड़े ही श्रम और लगन के साथ कर रहे हैं। वास्तव में इस विधा को आगे बढ़ाने से ऋषि ऋण का शोधन होता है। इनके पिता पं०श्री रामेश्वरदत्त जी रैणा एक ख्यातिप्राप्त राजपण्डित थे। अपने पितृचरण की कीर्तिशृङ्खला में श्री रैणा का यह कृत्य श्लाघनीय है। मैं श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग की सफलता हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए श्री चन्द्रमौलि रैणा के कल्याण हेतु आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। शुभमस्तु।

श्रीसीतारामचरणानुरागी

प्रभुदास

(सन्त प्रभुदास)

आचार्यः रामानुज देवनाथः
कुलपतिः

Prof. Ramanuja DEVANATHAN
Vice Chancellor

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य–
राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः
मदाऊ, भांकरोटा, जयपुरम् (राज.)-302026
JAGADGURU RAMANANDACHARYA
RAJASTHAN SANSKRIT UNIVERSITY
Madau, Bhankrota, Jaipur (Raj.)-302026
Phone : 0141-5132001 (O)
0141-5132002(R)
Website : jrrsanskrituniversity.ac.in

ASTROLOGY — THE PERCEPTIBLE SCIENCE

अस्य शास्त्रस्य सम्बन्धो वेदाङ्गमिति चोदितः।
अभिधेयञ्च जगतां शुभाशुभनिरूपणम्॥
इज्याध्ययनसङ्क्रान्तिग्रहषोडशकर्म्मणाम्।
प्रयोजनञ्च विज्ञेयं तत्तत्कालविनिर्णयः॥

Thus, the objectives of the Science of Astrology, which is based on Astronomy, are well defined in Narada Smriti. This is well-regarded as one of the six constituent Shastras of Vedas and known as the eyes of Vedas. That is why it is termed as Pratyakhsa Shastra. As the other Vedangas, it also has its roots in Vedas.

यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।
अत्रयस्तमन्वविन्दन् न ह्यन्ये अशक्नुवन्॥ (ऋ. 5.40.9)

In this Mantra of Rigveda, the Solar Eclipse has been described and further said that it was first seen or discovered by the Rishi Atri.

Hence, this science of Astrology forms an important part of human life. Every human needs a calendar or Panchanga for performing his or her daily routine and special activities. For this purpose, various institutions and individuals engage in publishing Panchanga every year in India and abroad. Bharatiya Panchanga compilation has its own traditional scientific background.

Among the efforts made by the various institutions, Sri Raghvendra Panchanga Sansthan, Jammu has its own identity and speciality in compiling the Panchanga by its expertise in this field and the modern approach it adopts for the same. The Sansthan, which is known for its commitment to publish quality research work and aims spread knowledge through this innovative venture, is publishing for Panchanga for the last 12 years uninterruptedly. Because of its quality, it has obtained ISS Number also from the National Science Library. I hope that this Panchanga would serve the purpose and the public at large.

I congratulate Dr. Chandramouli Raina, Editor and an eminent scholar in Bharatiya Jyotisha Shastra and Sri Rohit Shastri, Sub Editor, a scholar of Jyotisha for their tireless efforts and for beautifully bringing out this Panchanga. I pray God for the success in their entire future endeavour.

With best wishes,

(Ramanuja DEVANATHAN)
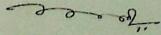
Vijayadashami
Shravana-Guruvasara
(07-10-2011)

कविकुलगुरु-कालिदास-संस्कृत-विश्वविद्यालयः रामटेक (महाराष्ट्र)
Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, (Maharashtra)

डॉ. पंकज चांदे
कुलगुरुः
Dr. Pankaj Chande
Vice-Chancellor

Ramtek : (O) Ph.No. : (07114) 256476
Fax : (07114) 255549
Nagpur : (O) Ph.No. : (0712) 2560992
Fax : (0712) 2560992

Ramtek Office : Administrative Building, Mauda Rd., Ramtek 441 106 Dist. - Nagpur (M.S.)
Nagpur Office : Kasturba Bhavan, Near Dnyaneshwar Temple, Bajaj Nagar, Nagpur - 440010 (M.S.)

No. P/AIU/2011/589 Date :- 05.10.2011

To

Dr. Chandermouli Raina,
Sr. Asst. Professor,
Department of Jyotish,
Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Deemed University,
Jammu Campus

Sub : Letter of Appreciation...

It is heartening to know that Shri Raghvendra Panchang authored by you is being published with International Serial Number. I wish that your Panchang will be of quality standards and will spread the knowledge related to Jyotish to eagar learners. Wishing Shri Raghavendra Panchang all the success.

Dr. Pankaj Chande
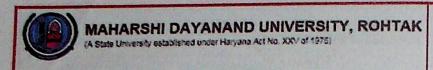
Dr. Baldev Mehara
HOD, Department of Sanskrit
Dean, Faculty of Humanities
Member, UGC Standing Commettee
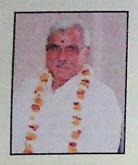
शुभाशंसा

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान जम्मू द्वारा 'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्' का प्रकाशन ISSN के साथ किया जा रहा है। ज्योतिष शास्त्र प्राचीन भारतीय खगोल शास्त्र का उपदेश करता है, वेदों के नेत्रों के रूप में इस शास्त्र की प्रसिद्धि है अतः ज्योतिष शास्त्र को वेदाङ्ग कहा जाता है।

मैं श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्ग के सम्पादक ज्योतिर्विद्या में पारंगत दैवज्ञ डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा को इस लोकोपकारी कार्य हेतु साधुवाद देता हूँ तथा सह-सम्पादक मेरे परम स्नेही रोहित शास्त्री को इस कार्य में सहयोग करने हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

डॉ॰ बलदेव मेहरा

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

'संस्कृत-भवनम्'
नया हैदराबाद,
लखनऊ - 226 007
फोन : 2780251

डॉ॰ रेखा बाजपेयी
अध्यक्ष .

श्रद्धेय बन्धु

हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, कि आपके द्वारा 'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्' का प्रकाशन प्रति वर्ष किया जा रहा है। वस्तुतः आज के समय में उच्च कोटि का लेखन व प्रकाशन अत्यन्त दुरूह है। आपके द्वारा प्रकाशित यह पञ्चाङ्ग विश्व के ज्योतिषियों में प्रख्यात हो यही मेरी मंगलकामना है।

डॉ. रेखा बाजपेई

डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा जम्मू में धर्म-भास्कर कैलेण्डर के विमोचन समारोह में उपस्थित महानुभाव, दायें से- डॉ. चन्द्रमौलि रैणा (संपादक राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्), पं. वेदप्रकाश शर्मा, प्रो. चमन लाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षा राज्यमंत्री भारत सरकार), श्री एन.एन. वोहरा (महामहिम राज्यपाल जम्मू एवं कश्मीर), सांसद श्री मदन लाल शर्मा, विधायक श्री अशोक खजूरिया एवं सभा के महामंत्री श्री शक्तिदत्त शर्मा।
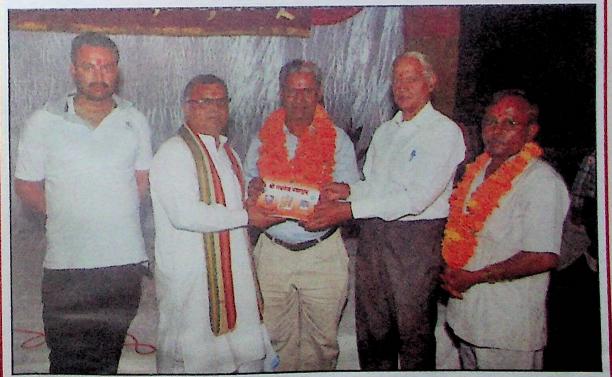
डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मा.वि.वि.) नई दिल्ली के कुलसचिव डॉ. के. बी. सुब्बरायुडु को पञ्चाङ्ग भेंट करते हुए डॉ. चन्द्रमौलि रैणा, साथ में हैं पं. वेद प्रकाश शर्मा, पुरी परिसर के प्राचार्य डॉ. जी. गङ्गन्ना एवं पं. रोहित शास्त्री।
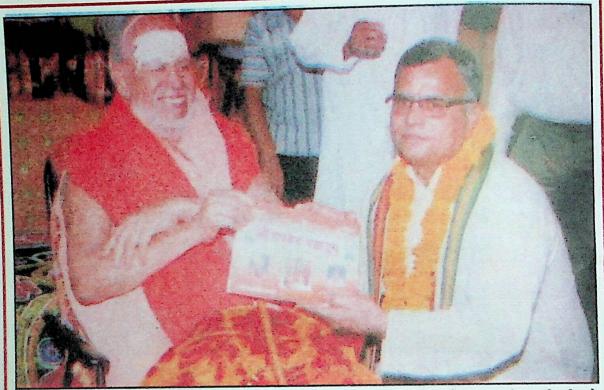
आद्य गुरू श्री शङ्कराचार्य मठ श्रीकांची कामकोटि पीठ के महामहिम श्रीश्रीश्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामी जी को 'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्' की प्रति भेंट करते हुए सम्पादक डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा।

विश्वप्रसिद्ध योग गुरू बाबा रामदेव जी को 'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्' की प्रति भेंट करते हुए सम्पादक डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा अपने प्रिय अनुजों (दायें) ज्योतिषी पं॰ शिवप्रसाद रैणा (बायें) ज्योतिषी पं॰ रवीन्द्र रैणा।

बाबा कैलख देव मन्दिर परिसर में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर द्वारा सम्मानित होते हुए बाबा कैलखनाथ के महंत एवं सह-सम्पादक पं. रोहित शास्त्री।

बाबा कैलख देव मन्दिर परिसर में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर द्वारा सम्मानित होते हुए श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम् के सह-सम्पादक पं. उपेन्द्र भार्गव, साथ में हैं मुख्य संपादक डॉ. चन्द्रमौलि रैणा।

डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा जम्मू में 'धर्म-भास्कर' कैलेण्डर के विमोचन के अवसर पर श्री एन.एन. वोहरा (महामहिम राज्यपाल जम्मू एवं कश्मीर) से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए डॉ. चन्द्रमौलि रैणा साथ में सांसद मदन लाल (बायें) एवं प्रो. चमन लाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षा राज्यमंत्री) दायें।

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम के मुख्य सम्पादक डॉ. चन्द्रमौलि रैणा के व्याख्यान को अवधान पूर्वक सुनते हुए मंचस्थ अतिथिगण (दाएं से) प्रो. चमन लाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षा राज्यमंत्री भारत सरकार), महामहिम राज्यपाल श्री एन.एन. वोहरा (जम्मू कश्मीर राज्य), सांसद पं. मदन लाल शर्मा, विधायक श्री अशोक खजूरिया।

विषय सूची

प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं अवकाश (सन् 2012-13 ई०)

जनवरी 2012 ई०

लोहड़ी पर्व	13 जनवरी शुक्र
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जनवरी शनि
पूर्णिमा, माघस्नान प्रारंभ	15 जनवरी रवि
षट्तिला एकादशी (वैष्णव)	19 जनवरी गुरू
माघ (मौनी) अमावस	23 जनवरी सोम
गौरी तृतीया	26 जनवरी गुरू
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	26 जनवरी गुरू
वसन्त पंचमी	28 जनवरी शनि
रथ-आरोग्य सप्तमी	20 जनवरी सोम

फरवरी

भीष्मद्वादशी	4 फरवरी शनि
माघ पूर्णिमा (सूर्योदय व्यापनी)	7 फरवरी मंगल
गुरु रविदास जयंती	7 फरवरी मंगल
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फरवरी सोम

मार्च

होलाष्टक प्रारम्भ	1 मार्च गुरू
गोविन्द द्वादशी	5 मार्च सोम
होलिका दहन (प्रदोष में)	7 मार्च बुध
पूर्णिमा, होली पर्व	8 मार्च गुरू
होलाष्टक समाप्त	8 मार्च गुरू
होला मेला (आनंदपुर सामाप्त)	9 मार्च शुक्र
श्री शीतलाष्टमी व्रत	15 मार्च गुरू
वि. संवत् 2068 पूर्ण	22 मार्च गुरू
नवरात्रे प्रारम्भ	23 मार्च शुक्र
स्कन्द षष्ठी व्रत	28 मार्च बुध
श्री दुर्गाष्टमी	31 मार्च शनि
मेला बाहुफोर्ट (जम्मू)	31 मार्च शनि

अप्रैल

श्री रामनवमी	1 अप्रैल रवि
नवरात्र समाप्त	1 अप्रैल रवि
कामदा एकादशी व्रत	3 अप्रैल मंगल
प्रदोष व्रत	4 अप्रैल बुध
जैन महावीर जयन्ती	5 अपैल गुरू
पूर्णिमा व्रत	6 अप्रैल शुक्र
श्री हनुमान जयन्ती	6 अप्रैल शुक्र
श्री गणेश चतुर्थी व्रत	9 अप्रैल सोम
वैशाख पर्व (संक्रांति)	13 अप्रैल शुक्र
सेठ बिरादरी मेल बावा कैलख, ठठर	13 अप्रैल शुक्र
मासिक शिवरात्रि व्रत	19 अप्रैल गुरू
देवपितृकार्येऽमावस	21 अप्रैल शनि
अक्षय तृतीया	24 अप्रैल मंगल
परशुराम जयन्ती	24 अप्रैल मंगल
श्रीबदरी केदार यात्रा	24 अप्रैल मंगल
आद्यशंकराचार्य जयन्ती	26 अप्रैल गुरू
श्रीरामानुज जयन्ती	27 अप्रैल शुक्र
श्री गंगा जयन्ती	28 अप्रैल शनि
बगलामुखी जयन्ती	30 अप्रैल सोम

मई

मोहिनी एकादशी व्रत	2 मई बुध
पूर्णिमा व्रत	6 मई रवि
नारद जयन्ती	7 मई सोम
टैगोर जयन्ती	7 मई सोम
श्री गणेश चतुर्थी	9 मई बुध
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई सोम
अपरा एकादशी	16 मई बुध
भद्रकाली एकादशी व्रत	16 मई बुध
देवपितृकार्येऽमावस	20 मई रवि
शनैश्चर जयन्ती	20 मई रवि
रम्भा तृतीया व्रत	23 मई बुध
श्री प्रताप जयन्ती	24 मई गुरू
श्री दुर्गाष्टमी	29 मई मंगल
मेला क्षीर भवानी (जम्मू कश्मीर)	29 मई मंगल
निर्जला एकादशी (स्मार्त) व्रत	31 मई गुरू

जून

निर्जला एकादशी (वैष्णव) व्रत	1 जून शुक्र
वटसावित्री व्रतारम्भ	2 जून शनि
पूर्णिमा व्रत	4 जून सोम
नृसिंह जयन्ती	4 जून सोम
वटसावित्री व्रत समाप्त	4 जून सोम
सन्त कबीर जयन्ती	4 जून सोम
श्री गणेश चतुर्थी	7 जून गुरू
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून गुरू
योगिनी एकादशी व्रत	15 जून शुक्र
देवपितृकार्येऽमास	19 जून मंगल
देवशयनी एकादशी व्रत	30 जून शनि

जुलाई

पूर्णिमाव्रत, गुरूपूर्णिमा, ऋषिव्यास पूजा	3 जुलाई मंगल
श्री गणेश चतुर्थी	6 जुलाई शुक्र
नाग पंचमी (मरूदेश)	8 जुलाई रवि
कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त)	14 जुलाई शनि
कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव)	15 जुलाई रवि
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई सोम
पितृकार्येऽमावस	18 जुलाई बुध
देवकार्येऽमावस, हरियाली अमावस	19 जुलाई गुरू
मधुस्रवा तृतीया	22 जुलाई रवि
नाग पंचमी	23 जुलाई सोम
कल्कि जयन्ती	24 जुलाई मंगल
श्रीदुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी)	26 जुलाई गुरू
पवित्रा एकादशी व्रत	29 जुलाई रवि

अगस्त

पूर्णिमा व्रत	2 अगस्त गुरू
दर्शन अमरनाथ गुफा	2 अगस्त गुरू
श्रीगणेश चतुर्थी	5 अगस्त रवि
दूर्वाष्टमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त) गोकुलाष्टमी	9 अगस्त गुरू
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	10 अगस्त शुक्र
गुग्गा नवमी	11 अगस्त शनि
अजा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी	13 अगस्त सोम
वत्स द्वादशी	14 अगस्त मंगल
कुशाग्रहणी पिठोरी अमावस	17 अगस्त शुक्र
पुरुषोत्तमा एकादशी (व्रत)	27 अगस्त सोम
पूर्णिमा व्रत	31 अगस्त शुक्र

सितम्बर

श्री गणेश चतुर्थी	4 सितंबर मंगल
पुरुषोतम एकादशी व्रत	12 सितम्बर बुध
पितृकार्येऽमावस	15 सितम्बर शनि
आश्विन संक्रान्ति, देवकार्येऽमावस	16 सितम्बर रवि
हरितालिका तीज व्रत	18 सितम्बर मंगल
सिद्धिविनायक व्रत	19 सितम्बर बुध
ऋषि पंचमी (नाग पंचमी डुग्गर प्रदेश)	20 सितम्बर गुरू
श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ	20 सितम्बर गुरू
श्री राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी (दुरब्बडी)	23 सितम्बर रवि
अदु:ख नवमी व्रत, श्रीचन्द्र(उदासीनव्रत)	24 सितंबर सोम
पद्मा एकादशी व्रत, वामन द्वादशी	26 सितम्बर बुध
अनन्त चतुर्दशी व्रत	28 सितम्बर शुक्र
श्राद्ध पूर्णिमा	29 सितम्बर शनि
श्राद्ध प्रारंभ	29 सितम्बर शनि
पूर्णिमा व्रत	30 सितम्बर रवि

अक्तूबर

महात्मा गाँधी, लालबहादुर शास्त्री जयंती	२ अक्तूबर मंगल
श्रीगणेश चतुर्थी	3 अक्तूबर बुध
इन्द्रा एकादशी	11 अक्तूबर गुरू
देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस	15 अक्तूबर सोम
सर्वपितृश्राद्धम	15 अक्तूबर सोम
तुला संक्रान्ति	16 अक्तूबर मंगल
शरद नवरात्र प्रारंभ	16 अक्तूबर मंगल
अग्रसेन जयन्ती	16 अक्तूबर मंगल
ललिता व्रत	19 अक्तूबर शुक्र
सरस्वती पूजनम्, देवी भद्रकाली अवतार	21 अक्तूबर रवि
श्रीदुर्गाष्टमी	22 अक्तूबर सोम
नवमी	23 अक्तूबर मंगल
नवरात्र समाप्त	23 अक्तूबर मंगल
विजयादशमी, बौद्धावतार	24 अक्तूबर बुध
पापांकुशा एकादशी व्रत	25 अक्तूबर गुरू
शरद पूर्णिमा, श्रीवाल्मीकि जयन्ती	29 अक्तूबर सोम

नवम्बर

श्रीगणेश चतुर्थी	2 नवम्बर शुक्र
करवा चौथ व्रत	2 नवम्बर शुक्र
अहोई अष्टमी, श्रीराधाष्टमी	7 नवम्बर बुध
रमा एकादशी, गोवत्स द्वादशी	10 नवम्बर शनि
धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती	11 नवम्बर रवि
श्री हनुमान जयन्ती	12 नवम्बर सोम
देवपितृकार्येऽमावस, दीपावली, महालक्ष्मीपूजा कुबेरपूजा	13 नवं मंगल
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	14 नवम्बर बुध
भाई दूज, टिक्का, विश्वकर्मा पूजा	15 नवम्बर गुरू
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	15 नवम्बर गुरू
दूर्वागणपति व्रत	17 नवम्बर शनि
गोपाष्टमी	20 नवम्बर मंगल
देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत	24 नवम्बर शनि
बैकुण्ठ चौदस	26 नवम्बर सोम
पूर्णिमा व्रत	28 नवम्बर बुध

दिसम्बर

श्री गणेश चतुर्थी	2 दिसम्बर रवि
श्री भैरवाष्टमी	6 दिसम्बर गुरू

उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)	9 दिसम्बर रवि
उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)	10 दिसम्बर सोम
देवपितृकार्येऽमावस	13 दिसम्बर गुरू
पौष संक्रान्ति	15 दिसम्बर शनि
मोक्षदा एकादशी (स्मार्त)	23 दिसम्बर रवि
मोक्षदा एकादशी (वैष्णव)	24 दिसम्बर सोम
क्रिसमस डे	25 दिसम्बर (मंगल)
पूर्णिमा व्रत	28 दिसम्बर शुक्र

जनवरी 2013 ई०

श्रीगणेश चतुर्थी	1 जनवरी मंगल
सफला एकादशी व्रत	8 जनवरी मंगल
देवपितृकार्येऽमावस, कुहुःअमावस	11 जनवरी शुक्र
लोहड़ी पर्व	12 जनवरी शनि
माघ संक्रान्ति	13 जनवरी रवि
पुत्रदा एकादशी व्रत	22 जनवरी मंगल
नेता जी सुभाष जयन्ती	23 जनवरी बुध
पूर्णिमा व्रत	27 जनवरी रवि
श्रीगणेश चतुर्थी	28 जनवरी सोम
भुग्गा व्रत	28 जनवरी सोम

फरवरी

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	3 फरवरी रवि
षट्तिला एकादशी व्रत	6 फरवरी बुध
तिलद्वादशी	7 फरवरी गुरू
देवपितृकार्ये मौनी अमावस	10 फरवरी रवि
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी मंगल
गौरी तृतीया	13 फरवरी बुध
बसन्त पंचमी	14 फरवरी गुरू
जया एकादशी	21 फरवरी गुरू
भीष्म द्वादशी	22 फरवरी शुक्र
पूर्णिमा व्रत, गुरू रविदास जयन्ति	25 फरवरी सोम

मार्च

श्रीगणेश चतुर्थी	1 मार्च शुक्र
विजया एकादशी (स्मार्त)	7 मार्च गुरू
विजया एकादशी (वैष्णव)	8 मार्च शुक्र
महाशिवरात्री व्रत	10 मार्च रवि
देवपितृकार्ये सोमवती अमावस	11 मार्च सोम
श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	13 मार्च बुध
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च गुरू
याज्ञवलक्य जयन्ती	16 मार्च शनि
होलाष्टक, अन्नपूर्णाष्टमी	20 मार्च बुध
आमला एकादशी व्रत	23 मार्च शनि
होलिका दहन	26 मार्च मंगल
पूर्णिमा व्रत	27 मार्च बुध
श्री गणेश चतुर्थी	30 मार्च शनि

अप्रैल

माता शीतला पूजनम्	3 अप्रैल बुध
पापमोचिनी एकादशी व्रत	6 अप्रैल शनि
देवपितृकार्येऽमावस	10 अप्रैल मंगल

वि. संवत् 2069 पूर्ण

एकादशी व्रत

(सन् 2012 ई०)

कामदा एका. (चैत्र शुक्ल)	3 अप्रैल, मंगल
वरूथिनी एका. व्रत (वैशा. कृ.) स्मार्त	16 अप्रैल, सोम
वरूथिनी एका. व्रत (वैशा. कृ.) वैष्णव	17 अप्रैल, मंगल
मोहिनी एकादशी व्रत (वैशाख शु.)	2 मई, बुध
अपरा एका. (ज्ये. कृ.)	16 मई, बुध
निर्जला एका. (ज्ये. शु.) स्मार्त	31 मई, गुरू
निर्जला एका. (ज्ये. शु.) वैष्णव	1 जून, शुक्र
योगिनी एका. (आषा. कृ.)	15 जून, शुक्र
देवशयनी एका. (आषा. शु.)	30 जून, शनि
कामदा एका. (स्मार्त) श्राव. कृ.	14 जुलाई, शनि
कामदा एका. (वैष्णव) श्राव. कृ.	15 जुलाई, रवि
पवित्रा एका. (श्राव. शु.)	29 जुलाई, रवि
पुरुषोत्तमा एकादशी (प्र. भाद्रपद कृ.)	13 अगस्त, सोम
पुरुषोत्तमा एकादशी (प्र. भाद्रपद शु.)	27 अगस्त, मंगल
अजा एका. (द्वितीय भाद्र. कृ.)	12 सितंबर, बुध
पद्मा एकादशी (द्वितीय भाद्र. शु.)	26 सितंबर, बुध
इन्द्रा एका. (आश्वि. कृ.)	11 अक्तूबर, गुरू
पापांकुशा एका. (आश्वि. शु.)	25 अक्तूबर, गुरू
रमा एका. (कार्ति. कृ.)	10 नवंबर, शनि
देवप्रबोधिनी एका. (कार्तिक शु.)	24 नवंबर, शनि
उत्पन्ना एका. (स्मार्त) (मार्गशीर्ष कृ.)	9 दिसंबर, रवि
उत्पन्ना एका. (वैष्णव) (मार्गशीर्ष कृ.)	10 दिसंबर, सोम
मोक्षदा एका. (स्मार्त) (मार्ग. शु.)	23 दिसंबर, रवि
मोक्षदा एका. (वैष्णव) (मार्ग. शु.)	24 दिसंबर, सोम

(सन् 2013 ई०)

सफला एका. (पौष कृ.)	8 जनवरी, मंगल
पुत्रदा एका. (पौष शु.)	22 जनवरी, मंगल
षटतिला एका. (माघ कृ.)	6 फरवरी, बुध
जया एका. (माघ शु.)	21 फरवरी, गुरू
विजया एका. (फाल्गु. कृ.) स्मार्त	7 मार्च, गुरू
विजया एका. (फाल्गु. कृ.) वैष्णव	8 मार्च, शुक्र

आमलकी एका. (फाल्गु. शु.)	23 मार्च, शनि
पापमोचनी एका. (चैत्र कृ.)	6 अप्रैल, शनि

पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत

पूर्णिमा व्रत	श्री सत्यनारायण व्रत
(सन् 2012 ई.)	
6 अप्रैल शुक्रवार	6 अप्रैल शुक्रवार
6 मई रविवार	5 मई शनिवार
4 जून सोमवार	3 जून रविवार
3 जुलाई मंगलवार	3 जुलाई मंगलवार
2 अगस्त गुरूवार	1 अगस्त बुधवार
31 अगस्त शुक्रवार	31 अगस्त शुक्रवार
30 सितम्बर रविवार	29 सितम्बर शनिवार
29 अक्तूबर सोमवार	29 अक्तूबर सोमवार
28 नवम्बर बुधवार	28 नवम्बर बुधवार
28 दिसम्बर शुक्रवार	27 दिसम्बर गुरूवार
(सन् 2013 ई.)	
27 जनवरी रविवार	26 जनवरी शनिवार
25 फरवरी सोमवार	25 फरवरी सोमवार
27 मार्च बुधवार	26 मार्च मंगलवार

अमावस्याएं

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

सन् 2012 ई०

वैशाख अमावस	21 अप्रैल, शनि
ज्येष्ठ अमावस	20 मई, रवि
आषाढ़ अमावस	19 जून, मंगल
श्रावण अमावस	19 जुलाई, गुरु
प्रथम भाद्रपद अमावस	17 अगस्त, शुक्र
द्वितीय भाद्रपद अमावस	16 सितम्बर, रवि
आश्विन अमावस	15 अक्तूबर, सोम
कार्तिक अमावस	13 नवम्बर, मंगल
मार्गशीर्ष अमावस	13 दिसम्बर, गुरू

सन् 2013 ई०

पौष अमावस	11 जनवरी, शुक्र
माघ अमावस	10 फरवरी, रवि
फाल्गुन अमावस	11 मार्च, सोम
चैत्र अमावस	10 अप्रैल, बुध

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् 2012 ई.)

श्री गणेश चतु. (वैशाख)	9 अप्रैल सोम
श्री गणेश चतु. (ज्येष्ठ)	9 मई बुध
श्री गणेश चतु. (आषाढ़)	7 जून गुरू
श्री गणेश चतु. (श्रावण)	6 जुलाई शुक्र
श्री गणेश चतु. (प्रथम भाद्रपद)	5 अगस्त रवि
श्री गणेश चतु. (द्वितीय भाद्रपद)	4 सितम्बर मंगल
श्री गणेश चतु (द्वितीय भाद्रपद)	19 सितम्बर बुध
श्रीगणेश चतु. (आश्विन)	3 अक्तूबर बुध
श्रीगणेश चतु. (कार्तिक) करवाचौथ	2 नवम्बर शुक्र
श्रीगणेश चतु. (मार्गशीर्ष)	2 दिसम्बर रवि

(सन् 2013 ई.)

श्रीगणेश चतु. (पौष)	1 जनवरी मंगल
श्रीगणेश संकट चतुर्थी (माघ) भुग्गा	30 जनवरी बुध
श्रीगणेश चतु. (फाल्गुन)	1 मार्च शुक्र
श्रीगणेश चतु. (चैत्र)	30 मार्च शनि

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

(सन् 2012 ई.)

मेरू त्रयोदशी	21 जनवरी शनिवार
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	6-8 मार्च
ऋषभदेव जयंती	14 मार्च बुधवार
वरसी तप शुरू	15 मार्च गुरूवार
ओली तप शुरू	31 मार्च शनिवार
महावीर जयंती	5 अप्रैल गुरूवार
ओली तप समाप्त	6 अप्रैल शुक्रवार
वरसी तप समापन	24 अप्रैल मंगलवार
केवल ज्ञान दिवस	1 मई मंगलवार
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिन्द)	5 से 7 जून
चातुर्मास्य व्रतादि प्रारंभ	3 जुलाई मंगलवार
तेरापन्थ स्थापना दिवस	3 जुलाई मंगलवार
जैन महोत्सव	17 से 19 जुलाई
पर्युषण पर्वारम्भ	13 सितम्बर गुरूवार
संवत्सरी महापर्व	20 सितम्बर गुरूवार
श्रीकालू निर्वाण दिवस	21 सितम्बर शुक्रवार
श्री तुलसी पट्टारोहण	24 सितम्बर सोमवार
श्री महावीर निर्वाण	13 नवम्बर मंगलवार
श्री वीर संवत् 2538 शुरु	14 नवम्बर बुधवार
जन्म आचार्य श्रीतुलसी	15 नवम्बर गुरूवार
ज्ञान पंचमी	18 नवम्बर रविवार
चातुर्मास्य व्रतादि समाप्त	28 नवम्बर बुधवार
मौनी एकादशी	23 दिसम्बर रविवार

(सन् 2013 ई.)

आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	2 जनवरी बुधवार
श्री पार्श्वनाथ जयंती	7 जनवरी सोमवार

मेरू त्रयोदशी	8 फरवरी शुक्रवार
मर्यादा महोत्सव	17 फरवरी रविवार
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	25-27 मार्च
ऋषभदेव जयंती	2 अप्रैल मंगलवार
वरसी तप शुरू	3 अप्रैल बुधवार

मुस्लिम त्यौहार

चेहलुम	14 जनवरी शनिवार
शहादत-ए-इमामहसन	23 जनवरी सोमवार
ईद-ए-मिलाद	5 फरवरी रविवार
ईद-ए-मौलाद	10 फरवरी शुक्रवार
ग्यारहवीं शरीफ	5 मार्च सोमवार
जन्म श्री हजरत अली	4 जून सोमवार
शबे-मिराज	18 जून सोमवार
शबे-बारात	6 जुलाई शुक्रवार
रमज़ान (रोज़े शुरू)	21 जुलाई शनिवार
शहादत-ए-हजरत अली	10 अगस्त शुक्रवार
शबे-कदर	16 अगस्त गुरूवार
जमातुलविदा	17 अगस्त शुक्रवार
ईद-उल-फितर	20 अगस्त सोमवार
ईदुलजुहा (बकरीद)	27 अक्तूबर शनिवार
मुहर्रम ताजिये	25 नवम्बर रविवार

पितृ पक्ष में श्राद्ध

आयु वृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, सुख शान्ति वृद्धि के लिए श्रद्धा एवं सद्भावना से पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध करना सर्वदा शुभफलदायक होता है। सन् 2012 ई० में श्राद्ध तिथियाँ निम्न प्रकार से हैं :-

पूर्णिमा का श्राद्ध	29 सितम्बर शनिवार
प्रतिपदा का श्राद्ध	30 सितम्बर रविवार
द्वितीया का श्राद्ध	1 अक्तूबर सोमवार
तृतीया का श्राद्ध	2 अक्तूबर मंगलवार दिवा 11:48 बाद 3 अक्तूबर बुधवार दिवा 1:59 तक
चतुर्थी का श्राद्ध	4 अक्तूबर गुरूवार
पंचमी का श्राद्ध	5 अक्तूबर शुक्रवार
षष्ठी का श्राद्ध	6 अक्तूबर शनिवार
सप्तमी का श्राद्ध	7 अक्तूबर रविवार
अष्टमी का श्राद्ध	8 अक्तूबर सोमवार
नवमी का श्राद्ध	9 अक्तूबर भौमवार
दशमी का श्राद्ध	10 अक्तूबर बुधवार
एकादशी का श्राद्ध	11 अक्तूबर गुरूवार
द्वादशी का श्राद्ध	12 अक्तूबर शुक्रवार
त्रयोदशी का श्राद्ध	13 अक्तूबर शनिवार
चतुर्दशी का श्राद्ध	14 अक्तूबर रविवार
अमावस (सर्वपितृ) श्राद्ध	15 अक्तूबर सोमवार

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	30 जनवरी सोमवार
होलिका दहन	7 मार्च बुधवार
श्रीभगवत्नारायण जयंती	11 मार्च रविवार
रामनवमी पर्व	1 अप्रैल रविवार
वैशाखी पर्व	13 अप्रैल शुक्रवार
जानकी जयंती	30 अप्रैल सोमवार
गंगा दशहरा	31 मई गुरूवार
गुरु पूर्णिमा	3 जुलाई मंगलवार
तुलसी जयंती पर्व	25 जुलाई बुधवार
श्रीकृष्ण जयंती पर्व	9 से 10 अगस्त
वामन जयंती	26 सितम्बर बुधवार
महंत गुरु गोविंददास जयंती	26 अक्तूबर शुक्रवार
शरद् पूर्णिमा पर्व	29 अक्तूबर सोमवार
दीपावली पर्व	13 नवम्बर मंगलवार

प्रदोष व्रत

(सन् 2012 ई०)

चैत्र शुक्ल	4 अप्रैल बुध
बैशाख कृष्ण	18 अप्रैल बुध
वैशाख शुक्ल	3 मई गुरू
ज्येष्ठ कृष्ण	18 मई शुक्र
ज्येष्ठ शुक्ल	2 जून शनि
आषाढ़ कृष्ण	16 जून शनि
आषाढ़ शुक्ल	1 जुलाई रवि
श्रावण कृष्ण	16 जुलाई सोम
श्रावण शुक्ल	30 जुलाई सोम
प्रथम भाद्रपद कृष्ण	15 अगस्त बुध
प्रथम भाद्रपद शुक्ल	29 अगस्त बुध
द्वितीय भाद्रपद कृष्ण	13 सितम्बर गुरू
द्वितीय भाद्रपद शुक्ल	27 सितम्बर गुरू
आश्विन कृष्ण	13 अक्तूबर शनि
आश्विन शुक्ल	27 अक्तूबर शनि
कार्तिक कृष्ण	11 नवम्बर रवि
कार्तिक शुक्ल	25 नवम्बर रवि
मार्गशीर्ष कृष्ण	11 दिसम्बर मंगल
मार्गशीर्ष शुक्ल	25 दिसम्बर मंगल

(सन् 2013 ई०)

पौष कृष्ण	9 जनवरी बुध
पौष शुक्ल	24 जनवरी बुध
माघ कृष्ण	8 फरवरी शुक्र
माघ शुक्ल	23 फरवरी शनि
फाल्गुन कृष्ण	9 मार्च शनि

फाल्गुन शुक्ल	24 मार्च रवि
चैत्र कृष्ण	7 अप्रैल रवि

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2012 ई०)

स्वामी बिवेकान्द जी	12 जनवरी गुरूवार
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	15 जनवरी रविवार
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जनवरी सोमवार
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	25 जनवरी बुधवार
लाला लाजपतराय जी	28 जनवरी शनिवार
गुरु रविदास जी	7 फरवरी मंगलवार
गुरु रामदास जी	16 फरवरी गुरूवार
स्वामी दयानन्द सरस्वती	16 फरवरी गुरूवार
परमहंस रामकृष्ण जी	23 फरवरी गुरूवार
श्री चैतन्य महाप्रभु	8 मार्च गुरूवार
सन्त तुकाराम जी	10 मार्च शनिवार
शहीद स. भगत सिंह	23 मार्च शुक्रवार
श्री महावीर जयंती	5 अप्रैल गुरूवार
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रैल शनिवार
श्री वल्लभाचार्य जयंती	16 अप्रैल सोमवार
श्री छत्रपति शिवाजी जयंती	23 अप्रैल सोमवार
श्री परशुराम जयंती	23 अप्रैल सोमवार
आद्य गुरु शंकराचार्य	26 अप्रैल गुरूवार
स्वामी रामानुजाचार्य	27 अप्रैल शुक्रवार
श्री बुद्ध महात्मा	6 मई रविवार
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई सोमवार
श्री नारद जयन्ती	7 मई सोमवार
महाराणा प्रताप	24 मई गुरूवार
सन्त कबीर जयंती	4 जून सोमवार
श्री ध्यानू भगत जयंती	24 जून रविवार
ऋषि वेदव्यास जयंती	3 जुलाई मंगलवार
तुलसीदास जयंती	25 जुलाई सोमवार
लोकमान्य तिलक जयंती	23 जुलाई सोमवार
सन्त ज्ञानेश्वर	10 अगस्त शुक्रवार
भक्त नवल (जोधपुर)	10 अगस्त शुक्रवार
महाराजा हरि सिंह	8 सितम्बर शनिवार
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितम्बर शनिवार
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तूबर मंगलवार
श्री अग्रसेन जयंती	16 अक्तूबर मंगलवार
महाराजा गुलाब सिंह	21 अक्तूबर रविवार
श्री माधवाचार्य	24 अक्तूबर बुधवार
श्री धनवन्तरी	11 नवम्बर रविवार
श्री हनुमान जयंती	12 नवम्बर सोमवार
पं. जवाहरलाल नेहरू	14 नवम्बर बुधवार
विश्वकर्मा जयंती	15 नवम्बर गुरूवार
श्री साई बाबा	23 नवम्बर शुक्रवार
श्री वीर वैरागी	26 नवम्बर सोमवार
श्री गुरु नानक देव	28 नवम्बर बुधवार
सत्य श्री साईं बाबा	23 नवम्बर शुक्र
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसम्बर सोम
श्री दत्तात्रेय	27 दिसम्बर गुरूवार

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जनवरी
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	20, 21 मार्च
गुप्तगंगा (अखनूर) समाह कुफ्फी	21 मार्च
नवरात्रे पर्व (कटड़ा)	23 मार्च से 1 अप्रैल
मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)	31 मार्च
कांशीगिर जी (सुन्दरबनी)	13,14 अप्रैल
सेठ बिरादरी मेला (बाबा कैलखदेव ठठर)	13 अप्रैल
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	4 मई
मेला मानसर	27-28 मई
मेला क्षीर भवानी (कश्मीर, जानीपुर जम्मू)	29 मई
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	4 जून
मेला शरीक भवानी	28 जून
मेला हरिप्रयाग (बनी-बसौली)	30 जून.
मेला ज्वालामुखी	2 जुलाई
मेला रूद्रगंगा, सोमेणी देसा (डोडा)	3 जुलाई
शहीदी दिवस	13 जुलाई
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा (कश्मीर)	2 अगस्त
मेला स्वामी शंकराचार्य	2 अगस्त
मेला रामबन	9, 10 अगस्त
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	15, 16 अगस्त
मेला पात (भद्रवाह)	22-24 अगस्त
मेला आशापति, मार्तण्ड	14-15 अक्तूबर
मेला झिड़ी बाबा जित्तो (सामाचक्क)	28 नवम्बर
मेला मथवार (बाबा बल्लू जी महाराज)	18 नवम्बर
मेला पुरमण्डल	12 दिसम्बर

हिमाचल प्रदेश के मेले

मेला श्री ब्रह्मा (कुल्लू)	20 जनवरी
बसन्त पंचमी (बिलासपुर)	28 जनवरी
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	20 से 29 फरवरी
मेला काठगढ़	20 फरवरी
मेला बैजनाथ (कांगड़ा)	4 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	8-11 मार्च
होला मेला (पौंटा साहिब)	9 मार्च

नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
नयना देवी (बिलासपुर)	23 मार्च से 1 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ा)	31 मार्च
मेला रोहरू (महासू)	3-4 अप्रैल
नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रैल
मेला मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रैल
मेला बिशू प्रारम्भ	13 अप्रैल
राजगढ़ (सिरमौर)	13 से 15 अप्रैल
कालेश्वर महादेव, देहरा (गरली)	13 अप्रैल
कशाधा, हुरला (कुल्लू)	16 से 17 अप्रैल
मेला खुनाणी (शिमला, कुल्लू)	19 से 20 अप्रैल
पीपल जातर (कुल्लू)	28 से 30 अप्रैल
मेला स्वीटी	30 अप्रैल
ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
हरि देवी (घुमारवीं)	21 मई
मेला शीतलादेवी (सुंदरनगर)	22 से 24 मई
मेला मुरारी देवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंचगाई (बिलासपुर)	29 से 30 मई
मेला अहल (हमीरपुर)	14 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मेला माँ शूलिनी (सोलन)	24 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	8 जुलाई
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुलाई
मेला चिन्तपूर्णी (ऊना) प्रारंभ	20 से 26 जुलाई
मिंजर (चम्बा) प्रारंभ	29 जुलाई
गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	11 अगस्त
बंद्राल (कुल्लू)	11 अगस्त
संतोषी माता (लदरौर)	16 अगस्त
यात्रा मणिमहेश (चम्बा)	24 अगस्त
मेला सायर (अर्की)	16 से 17 सितम्बर
गणपति उत्सव (मण्डी)	19 से 28 सितम्बर
मेला वामन द्वादशी (नाहन)	26 सितम्बर
मेला चामुण्डा (कांगड़ा)	16 से 23 अक्तूबर
मेला बगुलामुखी (कांगड़ा)	16 से 23 अक्तूबर
मेला रामलीला	16 से 23 अक्तूबर
शीतलामाता (मच्छिभवन)	22 अक्तूबर
मेला ज्वालामुखी	22-23 अक्तूबर
मेला दशहरा (कुल्लू)	24-29 अक्तूबर
मेला काली बाड़ी (शिमला)	12-13 नवम्बर
मेला रेणुका रिवालसर (मण्डी)	24-25 नवम्बर
मेला जोगी पांगा, ऊना	28 नवम्बर

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जनवरी रविवार
गुड फ्राइडे	6 अप्रैल शुक्रवार
ईस्टर सण्डे	8 अप्रैल रविवार
लो सण्डे	15 अप्रैल रविवार
रोगेशन सण्डे	13 मई रविवार
क्रिसमस डे	25 दिसम्बर मंगलवार

(2013 ई.)

नववर्ष प्रारंभ	1 जनवरी मंगल
गुड फ्राइडे	29 मार्च शुक्रवार

दशमहाविद्या जयन्ती

श्री महातारा जयंती	1 अप्रैल रविवार
श्री मातङ्गी जयंती	24 अप्रैल मंगलवार
श्री बगुलामुखी जयंती	30 अप्रैल सोमवार
श्री छिन्नमस्तिका जयंती	6 मई रविवार
श्री धूमावती जयंती	29 मई मंगलवार
श्री महाकाली जयंती	10 अगस्त शुक्रवार
श्री भुवनेश्वरी जयंती	27 सितम्बर गुरूवार
श्री कमला जयंती	1 नवम्बर गुरूवार
श्री त्रिपुरभैरवी जयंती	28 दिसम्बर शुक्रवार

(2013 ई.)

श्री ललिता जयंती	25 फरवरी

दशावतार जयंतियाँ

श्री मत्स्यावतार जयंती	25 मार्च रविवार
श्री रामावतार जयंती	1 अप्रैल रविवार
श्री परशुराम जयंती	23 अप्रैल सोमवार
श्री नृसिंहावतार जयंती	4 मई शुक्र
श्री कूर्मावतार जयंती	5 मई शनि
श्री बुद्धावतार जयंती	6 मई रविवार
श्री कल्कि अवतार जयंती	24 जुलाई मंगल
श्री कृष्णावतार जयंती	9 अगस्त गुरू
श्री वाराहावतार जयंती	18 सितम्बर मंगल
श्री वामनावतार जयंती	26 सितम्बर बुध

शुभकार्यों में विवर्जित काल
राहुकाल

रविवार	: सायं 4:30 से 6:00 तक
सोमवार	: प्रात: 7:30 से 9:00 तक
मंगलवार	: दोपहर 3:00 से 4:30 तक
बुधवार	: दोपहर 12:00 से 1:30 तक
वृहस्पतिवार	: दोपहर 1:30 से 3:00 तक
शुक्रवार	: दिवा 10:30 से 12:00 तक
शनि	: प्रात: 9:00 से 10:30 तक

पञ्चक आरम्भ तथा समाप्ति काल विक्रमी संवत् 2069 23 मार्च 2012 से 10 अप्रैल 2013 तक

आरम्भ काल (भारस्टै समय)	समाप्ति काल (भारस्टै समय)
2012 घ.मि.	2012 घ.मि.
15 अप्रैल रात्रि 11 :51	20 अप्रैल रात्रि 9:31
13 मई प्रात: 6:06	17 मई अर्धरात्रोपरि 3:27
9 जून दिवा 2:05	14 जून 9:46
6 जुलाई रात्रि 11:26	11 जुलाई सायं 5:00
3 अगस्त 8:59	7 अगस्त रात्रि 1:05
30 अगस्त 5:22	4 सितंबर 9:24
26 सितम्बर रात्रि 12:05	1 अक्तूबर सायं 5:10
24 अक्तूबर प्रात: 5:37	28 अक्तूबर रात्रि 11:55
20 नवम्बर 11:34	24 नवम्बर अर्धरात्रोपरि 5:53
17 दिसम्बर रात्रि 7:59	22 दिसम्बर दिवा 12:01
2013 घ.मि.	2013 घ.मि.
14 जनवरी प्रात: 6:16	18 जनवरी रात्रि 7:23
10 फरवरी सायं 4:47	14 फरवरी अर्धरात्रोपरि 4:08
9 मार्च रात्रि 1:34	14 मार्च दिवा 1:17
6 अप्रैल 8:01	10 अप्रैल रात्रि 9:28

पञ्चक विचार

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्रान्त तक पञ्चक होते हैं। शास्त्र दृष्टि से पञ्चकों में लकड़ी काटना; लकड़ी खरीदना; दक्षिण दिशा की यात्रा; प्रेत दाह संस्कार; धातु संचय करना; दुकान-मकान का छत डालना; चटाई, चारपाई, सोफा, आदि का बनाना शुभ नहीं होता। पञ्चकों में यदि यह कार्य किए जाएँ तो उसमें पाँच गुणा हानि होती है। ध्यान रहे- विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधु प्रवेश, रक्षाबन्धन, भैया दूज, आदि पर्वों में शास्त्रकारों ने कहीं भी निषेध नहीं किया है। व्यर्थ में पञ्चकों के विषय में भ्रमित नहीं रहना चाहिए।

-सम्पादक

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल- सन् 2012-13 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण
माघ संक्रान्ति	14 जनवरी शनि	रात्रि 12:55	पुण्य अगले दिन
फागुन संक्रान्ति	13 फरवरी सोम	दिवा 1:56	पुण्य अगले दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च बुध	दिवा 10:50	पुण्य अगले दिन
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रैल शुक्र	सायं 7:17	पुण्य अगले दिन
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई सोम	सायं 4:10	पुण्य अगले दिन
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून गुरू	रात्रि 10:45	पुण्य अगले दिन
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई सोम	दिवा 9:33	पुण्य अगले दिन
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अगस्त गुरू	सायं 5:55	पुण्य अगले दिन
आश्विन संक्रान्ति	16 सितम्बर रवि	सायं 5:52	पुण्य अगले दिन
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तूबर मंगल	अ.रा.परि 5:49	पुण्य अगले दिन
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	15 नवम्बर गुरू	अ.रा.परि 5:35	पुण्य अगले दिन
पौष संक्रान्ति	15 दिसम्बर शनि	रात्रि 8:13	पुण्य अगले दिन
माघ संक्रान्ति	13 जन. 2013 रवि	अ.रा.परि 6:56	पुण्य अगले दिन
फागुन संक्रान्ति	12 फरबरी मंगल	रात्रि 7:58	पुण्य अगले दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च गुरू	सायं 4:45	पुण्य अगले दिन

गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान संवत् 2069 (प्राचीन मतानुसार) (नानकशाही कैलण्डर मतानुसार)

सद्गुरु साहिबान के नाम	जन्म दिन	जन्म दिन
(1) गुरु नानक देव जी	28 नवम्बर	28 नवम्बर
(2) गुरु अंगद देव जी	22 अप्रैल	18 अप्रैल
(3) गुरु अमरदास जी	5 मई	23 मई
(4) गुरु रामदास जी	31 अक्तूबर	9 अक्तूबर
(5) गुरु अर्जुन देव जी	12 अप्रैल	2 मई
(6) गुरु हरगोबिन्द जी	5 जून	5 जुलाई
(7) गुरु हरिराय जी	5 फरवरी	31 जनवरी
(8) गुरु हरकिशन जी	12 जुलाई	23 जुलाई
(9) गुरु तेग बहादुर जी	11 अप्रैल	18 अप्रैल
(10) गुरु गोबिन्द सिंह जी	18 जनवरी (2013)	18 जनवरी (2013)

राजा मन्त्री आदि का विवरण

ॐ श्री गणेशाय नमः

अथास्मिन् वर्षे सृष्टितो गताब्दाः 1955885113 तत्र कृतयुगप्रमाणम् 1728000 त्रेतायुगप्रमाणम् 1296000 द्वापुरयुगप्रमाणम् 864000 कलियुगप्रमाणम् 432000 तन्मध्ये गतकलिः 5113 भोग्यकलिः 426887 अथास्मिन् संवत्सरे श्रीमन्नृपतिवीर-विक्रमादित्यराज्यतो गताब्दाः संवत् 2069 शाकः 1934 अथास्मिन् वर्षे राजा शुक्रः। मन्त्री शुक्रः। सस्येशः चन्द्रः। धान्येशो शनिः। मेघेशो गुरूः। रसेशः भौमः। नीरसेशः रविः। फलेशः गुरूः। धनेशः रविः। दुर्गेशः गुरूः। एतेदशाधिकारिणाः। तत्र वार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशतिकायां 19 विश्वावसु नाम संवत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्कसमये गतमासादिः 11/23/45/36 भोग्यमासादिः 0/06/14/24 विश्वेदेवदैवतं युगम्। तत्र वर्षनाम अश्विनः। मेघनाम आवर्त्तः। रोहिणीनिवासः पर्वते। समयनिवासो कुम्भकारगृहे। समय विश्वा 20 समयवाहनम् दुर्दुर। स्तंभः 1 तृण। सोमवत्यमाः 2, सोमवती पंचमी 1, अंगारकी चतुर्थी 2, बुधाष्टमी 3, भानुसप्तमी 2, रविदशमी 1, समय मुहूर्ताः 390, समयदिनानि 384, तिथिक्षयः 18, तिथिवृद्धिः 12, उत्पत्तिविश्वा 99, खपति विश्वा 126, वर्षाविश्वा 17, धान्यम् 17, तृणम् 15, शीतम् 15, तेजः 11, वायुः 13, वृद्धिः 15, क्षयः 15, विग्रहः 11, ऐक्यम् 129, सत्यम् 2, धर्म 1½, पापं 18, शनिदृष्टिः पश्चिमः, ग्रहणं 1 चन्द्रमसः 0।

राजा मन्त्री आदि का शास्त्रोक्त निर्णय

चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो वारः स उक्तो नृपतिस्तदाब्दे।
मेषप्रवेशे किल भास्करस्य यस्मिन्दिने स्यात्स तु राजमन्त्री।।
कर्कसंक्रान्तेर्यो वारः स अग्रधान्येश्वरः।
धनसंक्रान्तेर्यो वारः स पश्चिमधान्येश्वरः।।
कर्कप्रवेशे दिनपस्य उक्तं सस्यस्य नाथो मुनिभिः पुराणैः।
आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो मेघाधिपः प्रोक्तनविप्रवर्यैः।।
सिंहसंक्रान्तिवारेशो दुर्गेशः परिकीर्तितः।
कन्यासंक्रान्तिदिनपो धनेशः परिकीर्तितः।।
तुलाप्रवेशेऽह्नि यस्य वारो रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः।
चापप्रवेशे दिवसाधिनाथे धान्याधिपो वै कथितो मुनीन्द्रैः।।
नक्रसंक्रान्तिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः।
मीनसंक्रान्तिदिनपः फलेशः परिकीर्तितः।।

'विश्वावसु' नामक संवत्सर का फल

विश्वावसौ विविध सस्यायुता धरित्री नाना करैः प्रचुरतोयदमेघवृन्दैः
नानाविधक्रतुवरेपु विचित्रनादैर्भाव्यङ्गवङ्गमगधा निहताश्चचौरैः।।

(वसिष्ठसंहिता 6/67)

विश्वावसु संवत्सर में पृथ्वी अनेक अन्न से युक्त होती है बादल अधिक वर्षा करते हैं, अनेक प्रकार के यज्ञ अनुष्ठान होते हैं, अंग, बंग, मगध प्रदेशों में चोरों से हत अनेक प्रकार के वाद होते हैं।

शाश्वद्विश्वावसावब्दे मध्य सस्यार्घवृष्टयः।
प्रचुराश्चौररोगाश्च नृपा लोभाभिभूतयः।।

(नारदसंहिता 3/55)

विश्वावसु वत्सर में मध्यम वर्षा के कारण मध्यम उपज होती है और अन्न का भाव महंगा रहता हैं। रोग और चोरों की वृद्धि होती है तथा राजा लोभी होते हैं।

अब्दे विश्वावसु अश्वद्घोर रोगाकुलाधरा।
सस्यार्धा वृष्ट्यो मध्याभूपालानाति भूतयः।।

विश्वावसु नाम संवत्सर में लोग घोर एवं गम्भीर रोगों से व्याकुल रहें, वर्षा मध्यम रूप से हो इसी कारण से उपज भी कम हो, सरकार को राजस्व की प्राप्ति कम हो। उपर्युक्त तीनों आचार्यों के मतानुसार भारतवर्ष में इस वर्ष में खाद्य पदार्थों के भावों में तेजी रहेगी, पैट्रोलियम पदार्थ, डीजल रसोई गैस, तैल, घृत, खाद्य तैल स्निग्ध वस्तुएं, पूर्वी भाग में अस्थिरता, पश्चिमी, दक्षिणी, अंग, वंग देशों में लोक विग्रह उपद्रव अथवा हिंसक घटनाएं हों, मध्यप्रदेश में छत्रभंग भी हो सकता है, जगह-जगह विरोधाभास होगा।

1. वर्ष के राजा शुक्र का फल

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्ष बहुगोप्रसूतिः वसुन्धरा पार्थिव सौख्य संयुता।।

शुक्र यदि वर्ष का राजा हो तो उस वर्ष गेहूँ, धान्य तथा अनाज प्रचुर मात्रा में हो, नदियों में जल वेग पूर्वक बहे, वर्षा अच्छी हो, फल फूल अधिक हों, गोधन की वृद्धि हो, सभी लोग भूमि वाहन इत्यादि सुख साधनों से सम्पन्न हों, व्यापारी वर्ग व्यापार में प्रचुर धन कमायेगा, प्रेम-विवाह अधिक होंगे। सिनेमा जगत विशेषकर अश्लीलत्व को प्रधानता, नाचगान संगीत इत्यादि उत्सव होंगे, महिलाओं का वर्चस्व बढ़ेगा।

2. मन्त्री शुक्र का फल

भृगुसुतेनन्नु मन्त्रिपदं गते शलभमूषक शुक रौहिषः।
भवन्ति धान्य समर्घतयामलं जनपदेषुजलं सरितोऽधिकम्।।

शुक्र मन्त्री पद प्राप्त करे तो उस वर्ष, मूषक, टिड्डीदल, शलभ, तोता, हरिण इत्यादि

वन्य जीवों द्वारा फल फूलों तथा फसलों की हानि हो, कहीं-कहीं अतिवृष्टि, भूस्खलन, भूकम्प बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से हानि हो, वर्षा अधिक हो जाने से धान्य चावल इत्यादि फसलें अच्छी हो जाएंगी, व्यापारी लोग अच्छा मुनाफा उठा पायेंगे। नये-नये फैशन तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रचार होगा। लोग सुख ऐश्वर्यों के पीछे भागेंगे। मीडिया द्वारा अश्लीलत्व एवं निर्लज्जता का प्रदर्शन बढ़ेगा। यौन रोगों के साथ-साथ नये-नये असाध्य रोगों की उत्पत्ति भी होगी। मानव जीवन तकनीकि पर और अधिक आश्रित हो जाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार तन्त्र का अत्यधिक विकास होगा। भोग विलासिता में वृद्धि, शासन तन्त्र भ्रष्टाचार में लिप्त, चोरी ठगी की वारदातें अधिक होंगी। तामसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलेगा सात्विक प्रवृत्तियों के लोगों की निन्दा होगी तथा हतोत्साहित किया जाएगा।

3. सस्येश चन्द्र का फल

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयोमुञ्चति गोपगोधुक्
देवद्विजाराधनतत्परा नृपाधरा भवेत् धान्य-धनौघपूर्णा॥

सस्येश चन्द्रमा हो तो प्रजा सुखी, सुख साधनों की वृद्धि होती है। प्रचुर वर्षा, गौएं इत्यादि चौपायों में दूध की वृद्धि होगी। वैदिक ब्राह्मण पूजापाठ अनुष्ठान में रत रहें, राजनेता भी पण्डितों की पूजा करें, सभी लोग सुख साधनों द्वारा सम्पन्न रहें।

4. धान्येश शनि का फल

दुर्भिक्षं जायते तत्र कलहं देश विग्रहम्।
सौराष्ट्रदेशो नष्टश्च यत्र धान्याधिपः शनिः॥

धान्येश शनि होने के कारण देश में कहीं-कहीं दुर्भिक्ष (भुखमरी) से लोग पीड़ित हों, कलह एवं विग्रह से देश की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव होगा। सौराष्ट्र (गुजरात देश) में प्राकृतिक रूप से उत्पात, भूकम्प से भय, धन जन की हानि होगी।

5. मेघेश गुरू का फल

गुरूरपि प्रियवृष्टि करः सदाखिल विलासवती धरणी तदा।
श्रुतिविचारपरा नरपालकाः रस समृद्धियुताखिल मानवाः॥

वर्षा का स्वामी गुरू हो तो देश में व्यापक वर्षा होती है, जनता में भोग विलास, सुख ऐश्वर्यों के साधनों एवं उपभोग्य वस्तुओं को इकट्ठा करने की प्रवृत्ति अधिक हो, अधिक से अधिक लोग भोग विलास की प्रवृत्ति अपनाएंगे परन्तु कुछ अल्पसंख्या में प्रशासक श्रुतिस्मृति अर्थात् शास्त्र परम्परा का पालन भी कर पायेंगे।

6. रसेशमंगल का फल

यदिधरातनयो रसपोभवेन्नरसराशियुता जनता शुभा।
नरपतिर्विषमो जनतापदोन जलदो बहुवृष्टि करोभुवि॥

रसों का स्वामी मंगल हो तो उपयोगी वर्षा की कमी रसदार फल जैसे अनार, अंगूर, संगतरे, मौसम्मी, दूध, दही की कमी, स्वच्छ पेय जल की कमी अथवा मूल्यों की वृद्धि, प्रशासकों का व्यवहार जनता के प्रति प्रतिकूल रहेगा। पृथ्वी पर विषैले तत्वों की अधिकता रहेगी।

7. नीरसेश सूर्य का फल

नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्र चन्दनयोरपि।
रत्नमाणिक्य मुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते॥

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी सूर्य होने के कारण सोना, चान्दी, ताम्बा, पीतल, लोहा, चन्दन, माणिक्य, मोती, नीलम, पन्ना, पुखराज इत्यादि रत्नों के मूल्यों में वृद्धि होगी अर्थात् सुनार, ज्वैलर्स तथा धनाढ्य लोग विशेष रूप से लाभन्वित होंगे।

8. फलों के स्वामी देवगुरू वृहस्पति का फल

सुरगुरूः फलनायकतांगतोगतभयावनर राशिमहाद्रुमाः।
यजनया जनकोत्सव मन्दिराः श्रुतिविचारपरा द्विजपूर्वकाः॥

देवगुरू वृहस्पति होने के कारण जंगलों में अधिक से अधिक वृक्षारोपण होगा, लोग बिना किसी भय के रहेंगे। देवालयों में पूजापाठ हवन यज्ञ तथा धार्मिक उत्सव अधिक होंगे, वैदिक ब्राह्मण वेद प्रचार तथा भारतीय संस्कृत भाषा एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करेंगे। भारतीय संस्कृति की मान्यता सम्पूर्ण विश्व में होगी।

9. धनेश (धन के स्वामी) सूर्य का फल

द्रविणपे यदि वासरपे तदा वणिजतो बहुद्रव्य समागमः।
गज तुरंग मेष-खरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रय विक्रयात्॥

धनेश, धन का स्वामी सूर्य हो तो उच्च व्यापारी वर्ग अधिक से अधिक धन कमाने में सफल हो। व्यापारी लोग हाथी, घोड़े, भेड़, बकरी, ऊँट एवं गाय भैंस आदि चौपायों के व्यापार से धनार्जन करने में सफल होंगे। आज के सन्दर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि चौपाये वाहनों से अर्थात् छोटी बड़ी गाड़ियों के क्रय-विक्रय से लाभ होगा। बड़े-बड़े उद्योगपति एवं भारत सरकार के उच्चाधिकारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

10. दुर्गेश (सेना का स्वामी) गुरू का फल

सुरगुरौ गढ़पे नवशोभिता नरवरा नरपाः करपालिताः।
गिरिषु वै नगरेषु समं सुखं सुखमेति द्विजशस्त्रवताम विशाम्॥

दुर्ग अर्थात् सेना का स्वामी देवगुरू वृहस्पति हो तो देश में कानूनी व्यवस्था में सुधार हो अधिकारी वर्ग न्याय करने में प्रयासरत रहें, पर्वतीय प्रदेशों में रहने वाले लोगों को नगरीय परिवेश में रहने वाले लोगों के समान सुख सुविधाएं दिलवाने के प्रयास भी किये जाएंगे अर्थात् पर्वतीय प्रदेशों में सरकारें श्रेष्ठ कार्य करने वाली होंगी। ब्राह्मण लोग भी अपनी रक्षा के लिए शस्त्र उठाने में संकोच नहीं करेंगे।

ग्रहमण्डल की विधानसभा में 6 स्थान सैम्यग्रहों को प्राप्त हुए हैं और 4 स्थान उग्र ग्रहों को उपलब्ध हुए हैं अतः वर्षफल उत्तम रहेगा। प्रजा में सुख शान्ति, धनधान्य वृद्धि, व्यवसायों में वृद्धि तथा राजकीय कोष की वृद्धि भी होगी।

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

श्री विक्रमी संवत् 2069 आषाढ़ शुक्ल द्वितीया गुरूवार तदनुसारेण 21 जून सन् 2012 ई. पुनर्वसु नक्षत्र ध्रुवयोग, मिथुन राशि के चन्द्रमा में मकर लग्न में रात्रि घ. 10 मि. 14 पर सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।
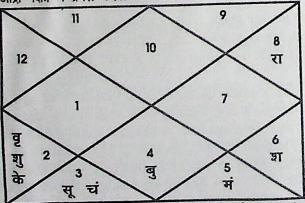
भगवान सूर्य नारायण का आर्द्रा प्रवेश मकर लग्न में हुआ है। मकर राशि पृथ्वी संज्ञक राशि है, लग्नेश शनि वायुकारक है तथा नवम स्थान में कन्या राशि मित्र राशि में बैठा है। सूर्य एवं चन्द्रमा की स्थिति सामान्य है क्योंकि सूर्य बुध की राशि में है शुभ है परन्तु चन्द्रमा बुध की राशि में शुभ नहीं कहा जा सकता अतः कुल मिलाकर दोनों की शुभाशुभ स्थिति सामान्य है, दोनों ग्रहों पर शनि की दृष्टि भी है, सप्तम स्थान में बैठा बुध लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। आचार्य वराहमिहिर के अनुसार 'न उदयति विघटनं विना चन्द्रात्मजः' जल तत्व प्रधान राशि में बैठा बुध उदयास्त के समय वर्षा के योग प्रबल बनाएगा। जिस दिन सूर्य आर्द्रा प्रवेश करते हैं उसी दिन से वर्षा का योग बनता है। इस वर्ष मानसून समयानुसार होगा जितनी वर्षा चाहिए सम्भवतया हो जायेगी। पूर्वी भारत में हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पञ्जाब, महाराष्ट्र, गुजरात इत्यादि प्रदेशों में तेज मुसलाधार वर्षा के योग हैं। उत्तर प्रदेश विहार, यमुना दिल्ली, जम्मू कश्मीर हिमाचल इत्यादि के प्रान्तों में बाढ़ादि का प्रकोप होने के कारण जन, धन एवं कृषि की हानि होगी।

आय व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	11	05	11	05	08	11	05	11	08	02	02	08
व्यय	05	14	11	08	05	11	14	05	11	14	14	11

लाभ व्यय देखने की रीति :- अपनी राशि के लाभ खर्च अंकों को जोड़कर एक घटा कर 8 का भाग देने पर यदि 1, 2, 6, 7 बचें तो वर्ष उत्तम फलप्रद 3, 4, 5, 0 बचें तो वर्ष अधमफलप्रद जानें। **'शुभम्भूयात्'।**

चैत्रमास (9 मार्च से 6 अप्रैल 2012 तक)

वर्ष लग्न कन्या होने से पूर्वी देशों में स्थिरता खाद्य पदार्थों के भावों में वृद्धि, दक्षिण में नये-नये रोगों से जनता पीड़ित हो, बंगाल में उपद्रवी, दुर्घटनाएं हों, पश्चिम में लोगों में अशान्ति, अन्दोलन, खाद्य पदार्थ महंगे हों, वाहनों अथवा चौपायों से सुख हो, पूर्वोत्तर में राजविग्रह, मध्यदेश में प्रजाभङ्ग होगा। किसी प्रमुख नेता की मृत्यु अथवा अपदस्थ होना संभव है।

वैशाख मास (7 अप्रैल से 6 मई 2012 तक)

तुला का शनि उदय होने के कारण राजा लोग सन्धि वार्ता करेंगे, राजनीति में भारी क्लेश हो, खाद्य पदार्थ महंगे हों, शृंङ्गार की चीजें महंगी हों, व्यापारी वैद्य (डॉक्टर) नौका से जीवन चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले पदार्थ तथा वाहन महंगे होंगे। वर्षा तथा खेती मध्यम हो, चीनी, दूध, रसादिक पदार्थ सस्ते होंगे।

ज्येष्ठ मास (7 मई से 4 जून 2012 तक)

पैट्रोल डीज़ल के भावों में वृद्धि, वृष राशि का वृहस्पति होने के कारण वर्षा अधिक होगी, तरल पदार्थ सस्ते होंगे। स्त्रियों को कष्ट हो, समाज में परस्पर विरोध हो, गेहूँ, चावल, चने, मूँग, माष सब महंगे होंगे। राजाओं में विग्रह, देश भंग हो, चौपायों में रोगोत्पत्ति, गुरू उदय होने पर सुभिक्ष हो, हीरा, पन्ना, पुखराज इत्यादि नवरत्न महंगे हों। लोगों में व्याधि और लड़ाई हो, पीले फूलों के व्यापार करने से शुभ हो, वायुवेग से वर्षा होगी।

आषाढ़ मास (5 जून से 13 जुलाई 2012 तक)

सभी पीत वर्ण वाली वस्तुओं के भावों में वृद्धि हो, खाद्य पदार्थ महंगे हों। आषाढ़ में बुध का उदय होने से प्राकृतिक आपदाएं, भूकम्प, दुर्भिक्ष, परस्पर विरोधाभास दुर्घटनाएं हों, आर्द्रा में बुध होने से वर्षा अधिक हो, गेहूँ, तिल माष सस्ते हों। ग्रहपात, बादलों का फटना, समुद्र में ज्वारभाटा, पवन का प्रवाह तीव्र, वाहनों के मूल्यों में वृद्धि, पुनर्वसु में बुध होने से छोटे बच्चों में रोगों की वृद्धि हो। पुनः रोहिणी नक्षत्र में गुरू आने से वर्षा मध्यम हो।

श्रावण मास (14 जुलाई से 2 अगस्त 2012 तक)

प्रारम्भ में बुध आश्लेषा में होने के कारण प्रचुर मात्रा में जल बरसेगा, धान्य उत्पन्न हो, घृत, गुड़ और नमक महंगे हों, तरल पदार्थों का क्षय हो, तुला का शनि होने के कारण खाद्य पदार्थ महंगे, गाँव व शहरों में लोग दुःखी हों, पृथ्वी कंम्पित हो, भूकम्प से जन धन की हानि होगी, सन्त महात्माओं को भी देह पीड़ा, मानसिक कष्ट हो, वर्षा कम होगी।

प्रथम भाद्रपद मास (3 अगस्त से 31 अगस्त 2012 तक)

चावल, गेहूँ तथा खाद्य पदार्थ महंगे हो, आर्द्रा में शुक्र होने से अयोध्या (उ.प्र.) तथा उड़ीसा में जन अन्दोलन लोगों में भय, आश्लेषा में बुध होने के कारण महावृष्टि हो, बाढ़

की स्थिति उत्पन्न हो, पुनर्वसु में शुक्र आ जाने से अन्न का अभाव हो, पुनः मघा में बुध आ जाए तथा सिंह में आकर अस्त हो जाए तो वर्षा कम होगी।

द्वि भाद्रपद मास (1 सितम्बर से 30 सितम्बर 2012 तक)

पूर्वाफाल्गुनी में बुध होने से क्षेत्र के बटवारे को लेकर पड़ोसी देश से मनमुटाव होगा। अन्न मन्दा, उड़द मूँग कम पैदा हों, विद्वान् लोगों को परेशानी हो, प्राणियों में धातुओं की हानि हो, कपास एवं गेहूँ का भाव महंगा हो, सर्पों से भय हो। कपास एवं गेहूँ का भाव महंगा हो, तैल, घृत तथा तरल पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होगी। गणिका, शिल्पी और विप्र वर्ग पीड़ित होंगे।

अश्विन् मास (1 अक्तूबर से 29 अक्तूबर 2012 तक)

वृष का वृहस्पति वक्री होने से पाँच महीने तक वाहन, तौल से बिकने वाले सभी पदार्थ तथा बरतन महंगे होंगे। अग्रिम आठ महीने तक महंगाई रहेगी। तैल, रसदार पदार्थ, पैट्रोलियम, डीजल, रसोई गैस, कैरोसिन इत्यादि महंगे होंगे। तुला राशि का बुध उदय होने के कारण गीतकार संगीतकार तथा अभिनेताओं को कष्ट होगा, कुआँ बनाने वालों को पीड़ा परन्तु वृष्टि ठीक ठाक हो जाएगी।

कार्तिक मास (30 अक्तूबर से 28 नवम्बर 2012 तक)

सोना, चान्दी, ताम्बा तथा अन्य सभी धातुओं के भावों में वृद्धि होगी, तुला का शनि उदय होने से राजा लोग सन्धि के लिए तत्पर हों, सुभिक्ष हो, स्वाति में शुक्र होने से क्षेम और सुभिक्ष हो, वर्षा पर्याप्त हो, व्यापारी एवं कोरियर सर्विस अथवा डाकखाने वालों को कष्ट हो। पृथ्वी अन्न से पूरित हो परन्तु दूध की कमी हो।

मार्गशीर्ष मास (29 नवम्बर से 28 दिसम्बर 2012 तक)

व्यापारी वर्ग बुरी तरह प्रभावित हो, खाद्य पदार्थ महंगे हों, गुरू उदय होने से सुभिक्ष हो, नवरत्न, ग्रह राशि रत्न, उपरत्न सभी महंगे हों, सुनार ज्वैलर्स को अच्छा खासा मुनाफा हो, तुला राशि का राहु एवं शनि दुर्भिक्ष कारक हैं, चावल, कम्बल, गर्म कपड़ा तथा कास्य पात्र पहले से खरीदे हो तो इस समय विशेष लाभप्रद हो। राजाओं में प्रधान का अभाव, सभी धातुओं के मूल्यों में वृद्धि हो।

पौष मास (29 दिसम्बर 2012 ई. से 27 जनवरी सन् 2013 ई. तक)

अन्न की उत्पत्ति कम, बच्चों को शारीरिक कष्ट, जल सम्बन्धि जीव पीड़ित हों, गुड़ शक्कर तथा अन्न सस्ता हो। श्रवण में बुध होने से गुड़ अलसी और चने इत्यादि धान्यों में बर्फ ओलों से हानि हो।

माघ मास (28 जनवरी से 25 फरबरी सन् 2013 ई. तक)

गायें पीड़ित हों, वर्षा का अभाव होने से नवीन-नवीन रोगों की उत्पत्ति हो, शतभिषा में मंगल होने के कारण धान्योत्पत्ति उत्तम हो, शीत लहर का प्रकोप बना रहे, माघ में बुधोदय होने से कहीं भी प्राकृतिक आपदा हो, श्रवण में शुक्र होने से धान्य [illegible] वृद्धि तथा सुभिक्ष हो।

फाल्गुन मास (26 फरबरी से 27 मार्च सन् 2013 ई. तक)

शतभिषा में स्थित शुक्र शराब बेचने वाले तथा फिल्मी कलाकारों को पीड़ित करता है, व्यापारी, वैद्य डॉक्टर, जहाजरानी करने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले जीवों को पीड़ा हो। अस्तु शुभम्।

'श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग' ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्रिका, वर्षफल शुद्ध गणित से कम्प्यूटर की सहायता से बनाये जाते हैं विद्या में सफलता, व्यवसाय सम्बंधी प्रश्न, विवाह, सन्तान, विदेश यात्रा, पारिवारिक सुख, इत्यादि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ग्रहों के आधार पर शास्त्रीय विधिविधान से अनुशीलन करके दिये जाते हैं।

संक्षिप्त जन्मपत्रिका – अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता, दादा का नाम, गोत्र जाति इत्यादि भेजें या स्वयं आकर लिखवायें। फीस 300 रुपये होगी, विदेश में उत्पन्न जातक की पत्रिका के लिए 600 रुपये देय होंगे।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री – आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा विवाहादि के सन्दर्भ में विस्तृत विवरण दिया जाता है। वृहद् जन्मपत्री की फीस 1100 से 2100 रुपये तक होगी।

वर्षफल – आपका वर्ष कैसा बीतेगा इसके लिए जन्मपत्रिका की फोटो कापी भेजना आवश्यक है। यदि जन्मपत्री नहीं है तो पत्र लिखने का समय, तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश की फीस 300 से 500 रुपये तक होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें।

कर्मकाण्ड सम्बंधी – हमारे यहाँ उच्चकोटि के कर्मकाण्डी विद्वान् हैं विवाह, पूजा, जप, अनुष्ठानादि के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। ग्रहों के शान्त्यर्थ, समस्त समाधान हेतु शास्त्रीय विधिविधान से अनुष्ठान करवाये जाते हैं।

डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा प्राध्यापक ज्योतिष जी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें।

संचालक
श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान
44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू
दूरभाष एवं फैक्स : 0191-2473663,
मोबाईल : 094191-94230
ई-मेल : shriraghvendrapanchang@gmail.com

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तुरामाय

आत्मनिवेदनम्

रामाय रामभद्राय राम चन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्' को प्रकाशित करते हुए गौरवशाली द्वादश वर्ष हो जाएंगे, श्री राघवेन्द्र सरकार की कृपा से श्रेष्ठतम स्तर पर ख्याति प्राप्त हो रही है यह बात प्रिय पाठकों से छिपी नहीं है। ज्योतिष शास्त्र का कर्मकाण्ड एवं भारतीय संस्कृति से अन्योऽन्याश्रय सम्बन्ध है इसीलिए भारतीय संस्कृति से जुड़े लेख प्रतिवर्ष पञ्चाङ्ग में छपते रहते हैं।

गोब्राह्मण प्रतिपालक साक्षात् ब्रह्मस्वरूप सद्गुरू सन्तशिरोमणि श्री प्रभुदास जी की आज्ञानुसार 'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्' इस वर्ष द्विवार्षिक पञ्चाङ्ग के रूप में आप के समक्ष समर्पित करने का सुअवसर सम्प्राप्त हुआ है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि परम श्रद्धेय सद्गुरूदेव जी के मार्गदर्शन में भविष्य में भी यथोचित समय पर पञ्चाङ्ग का प्रकाशन होता रहेगा।

पञ्चाङ्ग से सम्बन्धित विषयों एवं वैयक्तिक प्रश्नों पर आधारित पाठकों के पत्र हमें निरन्तर मिलते रहते हैं जिनका समाधान पत्र द्वारा, दूरभाषा द्वारा या ईमेल से किया जाता है। विशेष रूप से तिथि पर्व निर्णय, पौरोहित्य एवं कर्मकाण्डादि करने वाले विद्वानों की शंकाओं का धर्मशास्त्रीय पद्धति से धर्मशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र एवं वैदिक आचार्यों के विद्वत् मण्डल द्वारा निवारण की व्यवस्था श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान द्वारा की गई है। इस वर्ष श्रीराघवेन्द्र सरकार की कृपा एवं पूज्य गुरू जी के शुभाशीर्वाद से पाठकों की शुभेच्छाओं से आपके प्रिय पञ्चाङ्ग को ISSN (International Standard Serial Number) प्राप्त हुआ है, अतः पञ्चाङ्ग में प्रकाशन हेतु विद्वानों, बुद्धिजीवियों के आलेख आमन्त्रित हैं, सम्बद्ध लेख का विषय विद्वत् मण्डल द्वारा प्रकाशित करने योग्य पाये जाने पर पञ्चाङ्ग में छापा जाएगा, सर्वाऽधिकार सम्पादक के अधीन रहेंगे।

नेशनल कान्फ्रेंस पार्टी एक विश्वसनीय पार्टी के रूप में कार्य करेगी। प्रान्तीय सरकार को आर्थिक व सामाजिक विरोधाभास का सामना करना पड़ेगा। केन्द्र सरकार के द्वारा कश्मीरी पण्डितों के लिए विशेष विकास योजनाओं की घोषणा भी की जाएगी। नौकरियों की प्राप्ति तथा अन्य सुविधाएं सरकार की तरफ से मिलेंगी परन्तु कश्मीरी पण्डित पूर्ण रूपेण सहमत नहीं होंगे तथा पुनः कश्मीर वास करने में हिचकिचाएंगे। राज्य में प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प, अग्निभय, सड़क एवं हवाई दुर्घटना इत्यादि से जनता को कष्ट होने की सम्भावना है।

उपर्युक्त सभी बातें प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित हो चुकी हैं :-

1. इस वर्ष 'विश्वावसु नामक संवत्सर' है अतः जनता में नये-नये रेगों की उत्पत्ति होगी, नेता लोग लालची एवं स्वार्थी होंगे। खाद्य पदार्थों की महंगाई, पैट्रोलियम, डीज़ल की कीमतों में वृद्धि होगी।
2. मन्त्री पद भी शुक्र को प्राप्त है अतः शुक्र स्त्रियों की प्रधानता को बल देता है तथा श्रृंगार प्रिय है। प्रचार-प्रसार के माध्यम से नाच गान, सिनेमा, संगीत आदि के कार्यक्रम, स्त्री पुरुषों में अश्लीलता का प्रदर्शन बढ़ेगा। स्त्रियों का वर्चस्व प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ता जाएगा।
3. मुद्रास्फीति में वृद्धि, गगनचुम्बी महंगाई, जातीय एवं प्रान्तीय हिंसा, विस्फोटक घटनाओं में बृद्धि, लोगों में असन्तोष, नाराजगी एवं निराशा होगी।
4. नेता लोगों में परस्पर वैमनस्यता होने के कारण देश की उन्नति में बाधाएं आयेंगी।
5. नेता लोग जनता की परवाह किये वगैर रुक्ष व्यवहार करेंगे। पर धन लूटने में संकोच नहीं करेंगे।
6. 7 अप्रैल से 3 जुलाई तक ग्रहों की स्थिति आपत्तिजनक है, सीमा प्रदेशों में युद्ध जैसी घटनायें घटित हो सकती है, सीमाओं पर सतर्कता रखना परमावश्यक है।
7. मई-जून में एक राशि में चतुर्ग्रही योग एवं पञ्चग्रही योग बनने के कारण सीमाओं पर चीन एवं पाकिस्तानी फौजों की गतिविधियाँ आपत्तिजनक रहेंगी।
8. 14 अगस्त से 27 सितम्बर के मध्य में भारत के उत्तरपश्चिम भागों में बाढ़ का प्रकोप होने से जनधन की हानि होगी।
9. अग्निकाण्ड, जनांदोलन, भूकम्प, भूस्खलन, रेल दुर्घटना, वायुयान दुर्घटना इत्यादि प्रकोपों से जनता में भय होगा।
10. ग्रहों की स्थिति के अनुसार भूकम्प की विशेष आशंका बनी हुई है भूकम्प का प्रभाव कश्मीर, चीन, उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, कुछ पञ्जाब, हिमाचल का भाग, नेपाल वार्डर तक होने की सम्भावना है।
11. भ्रष्टाचार उन्मूलन जनलोकपाल विधेयक के प्रति कांग्रेस की नीतियों से जनता में विशेष आक्रोश पनपेगा, फलस्वरूप दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पञ्जाब में चुनावों में कांग्रेस को सफलता नहीं मिलेगी, भारतीय जनता पार्टी की विजय अधिक से अधिक सीटों पर होगी।

भारत के मुख्य प्रान्त

उत्तरप्रदेश– उत्तरप्रदेश में बहुजन समाज पार्टी सरकार द्वारा प्रचुर धन खर्च करके बहुत सी योजनाओं को क्रियान्वित किया जाएगा परन्तु विविध विकास योजनाओं का लाभ उच्च वर्ग के लोग ले जायेंगे। आम आदमी तक लाभ नहीं पहुंचेगा। भ्रष्टाचार, लूटमार, गगनचुम्बी महंगाई, अमीर गरीब के बीच बढ़ता आर्थिक अन्तर इत्यादि समस्याओं के कारण सामान्य जनता में आक्रोश पनपेगा। सुश्री मायावती जी की सरकार की प्रतिष्ठा में कमी आएगी। भारतीय जनता पार्टी अपेक्षाकृत अच्छी सफलता प्राप्त करेगी।

दिल्ली– श्रीमती शीला दीक्षित जी की सरकार के लिए समय चुनौती पूर्ण तथा गम्भीर उलझनों से भरपूर है। 'कामनवैल्थ गेम्ज़' के नाम पर धन का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार में संलिप्तता के आरोप होना काफी महंगा पड़ेगा। दिल्ली में विद्युत संकट, पेयजल की समस्या, विशेषकर महिलाओं की असुरक्षा, आवासीय सुविधाओं की कमी, आपराधिक तत्त्व एवं आतंकवाद की घटनाओं के कारण आम जनता में आक्रोश की भावना रहेगी। केन्द्र सरकार एवं स्थानीय सरकार की प्रतिष्ठा में कमी तथा लोकप्रियता में भी कमी आएगी। आगामी विधानसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा।

पञ्जाब– मुद्रास्फीति एवं गगन चुम्बी महंगाई के कारण लोगों का कुछ विश्वास भाजपा के प्रति घटेगा। भाजपा सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई योजनाओं में 80 प्रतिशत सफलता हो जाने के कारण आम लोगों को लाभ होगा। कुछ प्रान्तों में कांग्रेस का स्थान भी बनेगा। भाजपा एवं अकाली दल को राज्य में तेज महंगाई, बेईमानी, लूटमार, चोरी डकैती, नशीले पदार्थों की तस्करी, अन्य राज्यों से विवाद, इत्यादि ठीक करना परमावश्यक है। आगामी चुनावों में किसी भी पार्टी को बहुमत प्राप्त नहीं हो सकता। यदि आकाली एवं भाजपा इस समय से मेहनत करें तो पुनः सरकार बना सकते हैं।

हरियाणा– सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार के लिए विशेष चुनौतियों का समय है, भूमि सम्बन्धी घोटाले, जाटों का आन्दोलन, भ्रष्टाचार, मिलावटखोरी, बिजली पानी की समस्या, राजनीतिक उथल-पुथल इत्यादि समस्याओं का सामना करना होगा। विकास योजनाओं का छोटे लोगों को पूरा लाभ मिले, सरकार को प्रयत्नशील रहना चाहिए। ऐसा करने से उल्लेखनीय उन्नति होगी।

राजस्थान– ग्रह स्थिति के अनुसार, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, यातायात के साधनों का ह्रास तथा उद्योग की स्थिति बिगड़ेगी परन्तु पर्यटन विभाग में विशेष उन्नति होगी, कांग्रेस सरकार के लिए समय चुनौतियों से भरपूर है। सावधानीपूर्वक योजनाओं को सफल करवाना श्रेयस्कर रहेगा, भाजपा सत्ता में आने के लिए प्रयास करे तो सफल हो सकती है।

हिमाचल प्रदेश– वर्तमान भाजपा सरकार प्रदेश में अनेक अधूरी एवं रुकी हुई योजनाओं को पूरा करने में सफल होगी। प्रदेश में पर्यटन क्षेत्र, सड़क एवं भवन निर्माण तथा तकनीकि क्षेत्रों में विशेष बढ़ावा दिया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के साथ बहुत से मुद्दों पर मतमतान्तर भी सामने आयेंगे। प्राकृतिक प्रकोप जैसे भूस्खलन, भूकम्प, कृषि में हानि के योग भी बनेंगे। अनेक प्रकार के आर्थिक एवं प्राकृतिक विघ्नों के बावजूद भाजपा सरकार हिमाचल प्रदेश की उन्नति के लिए उल्लेखनीय कार्य कर सकेगी। भाजपा की प्रतिष्ठा में वृद्धि, महिलाओं को पार्टी में विशेष स्थान देना अच्छा रहेगा। शिक्षा एवं पर्यटन में विशेष सफलता के योग हैं।

जम्मू कश्मीर– ग्रहों के योगायोग विचार से कश्मीर में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति गत वर्ष से कहीं ज्यादा अच्छी हो जाएगी। लोगों में धर्म निरपेक्ष भावनाओं में सफलता, लघु एवं मध्यम स्तर के उद्योगों को एक नई दिशा प्राप्त होगी। प्रदेश में वन उद्योग, पर्यटन सड़क, पुल, रेल पुल, नये-नये भवन निर्माण होंगे। उच्च शिक्षा तकनीकि शिक्षा, कृषि बागवानी, केशर उद्योग, लकड़ी के लघु उद्योगों को सरकार बढ़ावा देगी, परस्पर भाईचारा बढ़ेगा, आत्म विश्वास जागेगा। श्री अमरनाथ यात्रा में सालोसाल श्रद्धालु यात्रियों की वृद्धि होना, देश विदेश से लोगों का कश्मीर घाटी में उपस्थित होना स्पष्ट संदेश देता है कि कश्मीर में हालात सुधरेंगे। वर्तमान सरकार घाटी में सुधार लाने के लिए भरसक प्रयास करेगी। आतंकवादी भी हिंसक घटनाओं को अंजाम दे सकते हैं।

इस वर्ष चूंकि द्विवार्षिक पञ्चाङ्ग का निर्माण करना था इसलिये कठिन परिश्रम करना पड़ा। इस कठिन परिश्रम एवं चुनौतीपूर्ण समय में श्रीराघवेन्द्र सरकार की कृपा, गुरुओं का शुभाशीर्वाद मेरे साथ रहा। प्रिय सुपुत्र चिरंजीवी पीयूष रैणा, सुपुत्री कु. महिमा रैणा, सद्भार्या श्रीमती कमलेश शास्त्री, सर्वगुण सम्पन्न मेरे अभिन्न सहयोगी द्वय चिरंजीवी डॉ. उपेन्द्र भार्गव संविदा सहायकाचार्य ज्योतिष राष्ट्रियसंस्कृत संस्थान, जम्मू परिसर एवं सर्वकार्य कुशल, विशेष प्रतिभा सम्पन्न चिरंजीवी श्री रोहित शास्त्री महन्त बावा कैलखनाथ देवस्थान इन सभी महानुभावों को हार्दिक अभिनन्दन सहित साधुवाद एवं आशीर्वाद देता हूँ और श्रीराघवेन्द्र सरकार से इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। सभी लोगों की कार्य व्यस्तता होते हुए भी हमारे कार्य को निर्वाध रूप से सञ्चालित करने में सहयोगी प्रिय शिष्य चिरंजीवी राहुल शर्मा (माधव) को भी साधुवाद देता हूँ। पञ्चाङ्ग सज्जा तथा टंकन कार्य में सिद्धहस्त श्रीराजेन्द्र शर्मा सौगुनियाँ को भी साधुवाद एवं आशीर्वाद देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

उपरोक्त भविष्यवाणियाँ ग्रह स्थिति के अनुसार अपनी अल्पबुद्धि से की हैं, होता वही है जो ईश्वर चाहते हैं।

आपका शुभचिन्तक
डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

भगवान् सूर्य – सृष्टि के प्रत्यक्ष देवता

ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै र्माणिक्यमौलिमरूणाङ्गरूचिं त्रिनेत्रम्॥

अनन्ताकाश की अनन्तयात्रा में लगे हुए अन्यान्य आकाशीय पिण्डों की आयु का ज्ञान हमें स्पष्ट रूप से तो नहीं है किन्तु प्राचीन ज्ञान के आधार पर, वेदों, पुराणों एवं उपनिषदों के प्रमाणों के आधार पर हम यह सुनते और पढ़ते आये हैं कि ये पिण्ड कोटि-कोटि (करोड़ों) वर्षों से इसी तरह यात्रा कर रहे हैं। इसी तथ्य की पुष्टि आधुनिक विज्ञान भी करता है। इन पिण्डों का एक समूह जो विशेष रूप से हमारे अर्थात् मानव जाति के सबसे ज्यादा समीप है वह है हमारा सौरमण्डल। इस सौरमण्डल के मुखिया (प्रमुख) हैं भगवान् सूर्य।

हमारे भारतीय वाङ्मय में सूर्य को सर्वाधिक तेजस्वी देवता माना गया है, सूर्य ही समस्त मानवीय और जीव सृष्टि के संचालक माने जाते हैं। सूर्य के उदित होते ही पशु, पक्षी, वृक्ष, लताएँ।, मानवादि समस्त अवयवों में चेतना का संचार होने लगता है अतः सूर्योपनिषद् में कहा गया है–

सूर्याद् भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि तु।
सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सोऽहमेव च॥

सूर्य से ही समस्त प्राणियों की उत्पत्ति होती है, पालन होता है और उन्हीं में विलय हो जाता है। इसीलिए सूर्य को परब्रह्म स्वरूप कहा गया है। उसी प्रकार का आशय भक्तिपूर्वक लिखे गये स्तोत्रों में भी वर्णित है–

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायणशङ्करात्मने॥(आदित्य हृद.)

"जो जगत् के एकमात्र नेत्र (प्रकाशक) हैं, संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण हैं, उन वेदत्रयी स्वरूप, सत्त्वादि तीनों गुणों के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और महेश नामक तीन रूप धारण करने वाले भगवान् सूर्य को नमस्कार है।"

लेखक
डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा
प्रधान सम्पादक

मानवीय सृष्टि का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद भी सूर्य भगवान् की स्तुति से परिपूर्ण है। ऋग्वेद में सवितृ सूक्त, आदित्यसूक्त कई स्थानों पर प्राप्त होते हैं। इन सबमें सूर्य को लोकोपकारी और सृष्टि का सबसे महान् देवता बताया गया है। सूर्य समस्त बुराइयों को दूर करके भद्र, कल्याण, श्रेय तथा मङ्गल को देने वाले हैं–

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव॥

(ऋ. 5/82/5, यजु. 30/3)

भगवान् सूर्य की कृपा से व्यक्ति अतिमृत्यु को भी लाँघ जाता है और उनकी कृपा के बिना मोक्ष भी संभव नहीं है। अतः वेदवाक्य में कहा है–

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥ (यजु. 31/18)

भगवान् सूर्य प्रत्यक्ष रूप से अन्धकार के नाशक और प्रकाश के संस्थापक हैं। अतः कुछ वेदवाक्य तो साक्षात् उन्हीं को समर्पित किए गये हैं। यथा–

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

(शतपथ ब्राह्मण 14/4/130)

हम इस अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड के जिस भाग में निवास करते हैं। उस भाग का प्राणदायक देवता अथवा स्रोत भगवान् सूर्य ही हैं। ब्रह्म के भर्ग (तेज) का रूप ही सूर्य है अतः श्रुतियों में सूर्य को ही ब्रह्म कहा गया है–

सूर्याद्वै खल्विमानि भूतानि जायन्ते। असावादित्यो ब्रह्म।" (छान्दोग्योपनिषत्)

प्राणिमात्र के हेतु, सृजनकर्ता तथा प्रत्यक्ष देवता होने के कारण सूर्य ब्रह्मरूप

हैं, इसलिए सभी के उपास्य हैं। अन्य किसी देवता की सत्ता में सन्देह हो सकता है किन्तु सूर्य की सत्ता निस्सन्देह है। उन्हें सम्पूर्ण चराचर जगत् की आत्मा कहा गया है–

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।" (ऋ. 1/115/1)

उपनिषदों में सूर्य के तीन रूपों का विवेचन मिलता है :- 1. निर्गुण निराकार, 2. सगुण निराकार, 3. सगुण साकार। यद्यपि वे स्वयं निर्गुण निराकार हैं तो अपनी माया शक्ति से सगुण साकार भी हैं। उनकी दिव्य तेजमय रश्मियाँ उन्हें दिव्यता देती हैं। उपनिषत् कहता है कि–

"य एवासौ तपति तमुद्गीथमुपासीत।" (छान्दो.उप. 1/3/1)

"ये जो भगवान् सूर्य आकाश में तपते हैं उनकी उद्गीथरूप से उपासना करनी चाहिए।" उपनिषद् में उन्हें 'आदित्यो ब्रह्म' कहकर ब्रह्म की उपाधि दी गई है तो ॐकार भी उन्हें कहा गया है–

"आदित्य ओमित्येवं ध्यायंस्तथात्मानं युञ्जीतेति।" (मैत्रा. 5/3)

"आदित्य ही ओम् है" इस रूप में आदित्य का ध्यान करते हुए स्वयं को तद्रूप कर देना चाहिए।

जिस प्रकार भगवान् विष्णु का स्थान वैकुण्ठ, भूतभावन शंकर का स्थान कैलास तथा चतुर्मुख ब्रह्मा का स्थान ब्रह्मलोक है उसी प्रकार भगवान् भास्कर का स्थान आदित्यलोक (सूर्यमण्डल) है। सूर्य ही काल चक्र के आदि प्रवर्तक हैं। उन्होंने ही लोकोपकार हेतु सर्वप्रथम ज्योतिष शास्त्र का उपाख्यान दिया। मयदानव नामक असुर ने घोर तपस्या करके भगवान् सूर्य को प्रसन्न किया था और अत्यन्त दुर्लभ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था। उनके इस ज्ञान रूपी ग्रन्थ को 'सूर्यसिद्धान्त' कहते हैं। काल के सूक्ष्म विभाग से लेकर हजारों करोड़ों प्रलयों के साक्षी सूर्य भगवान् ही हैं। हमारे करोड़ों जन्मों के साक्षी और प्रत्यक्षदर्शी सूर्य भगवान् ही हैं। सूर्योदय से दिनारम्भ होता है और सूर्यास्त होने पर रात्रि। यही दिन रात्रि 30 (तीस) संख्या में हो जाने पर एक सौरमास और फिर एक सौर वर्ष हो जाता है। इसी गणना में आगे दिव्य वर्ष, सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग रूपी एक महायुग बीत जाता है। महायुग से ब्रह्मा की दिन रात्रि व्यवस्था और ब्रह्मा की आयु का मास, पक्ष, अयन, ऋतु तथा संवत्सरादि का मुख्य कारक सूर्य ही है। अतः एक क्षण भी हम सूर्य के बिना अपनी कल्पना नहीं कर सकते। सूर्य ही तेज, ओज, बल, यश, चक्षु, श्रोत्र, आत्मा और मन है–

"आदित्यो वै तेज ओजो बलं यशश्चक्षुः श्रोत्रे आत्मा मनः।"

(नारायणोपनिषद् 15)

भूर्भुवादि सप्तव्याहृतियों में 'महः' व्याहृति सूर्य है–

"मह इत्यादित्यः। आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते।" (तै.उ. 1/5/1)

अभिप्राय भेद से पृथ्वी से ऊर्ध्व भाग में स्थित भूरादि सप्त लोकों में चतुर्थ लोक महर्लोक है। और वही आदित्य है अथवा आदित्यलोक है। इनका एक अतिप्रसिद्ध नाम सहस्त्ररश्मि है। सूर्यमण्डल से असंख्य रश्मियाँ निरन्तर निकलती रहती हैं। और वे रश्मियाँ विभिन्न गुणों को धारण करती है अतः उनके प्रभाव भी विभिन्न होते हैं। इन रश्मियों का गुण एवं कर्म के आधार पर सात प्रकार से विभाग किया गया है। महर्षि वेदव्यास का कथन है–

सुषुम्नो हरिकेशश्च विश्वकर्मा तथैव च।
विश्वव्यचा पुनश्चान्यः संयद्वसुरतः परः।
अर्वावसुरिति ख्यातः स्वराडन्यः प्रकीर्तितः।
सुषुम्नः सूर्यरश्मिस्तु पुष्णाति शिशिरद्युतिम्।।

(कू.पु. 1/41/3-4)

यहाँ सूर्य की सप्त रश्मियों के नाम निर्देशित किए गये हैं और प्रत्येक रश्मि एक पृथक् ग्रह की पोषक है। यथा–

	रश्मियाँ	पोषितग्रह
1.	सुषुम्ना	चन्द्र
2.	हरिकेश	नक्षत्र
3.	विश्वकर्मा	बुध
4.	विश्वव्यचा	शुक्र
5.	संयद्वसु	भौम
6.	अर्वावसु	गुरु

पुनः इन्हीं सुषुम्नादि सप्त रश्मियों के तीन भेद होते हैं–

1. **वृष्टिसर्जना**, 2. **हिमसर्जना**, 3. **घर्मसर्जना**। इन तीनों का स्थूल स्वरूप सहस्र (1000) रश्मियों (किरणों) के तुल्य होता है।

1. **वृष्टिसर्जना रश्मि**– यह रश्मि अमृतासंज्ञक होती है। इसके चार भेद कहे गये हैं। प्रत्येक भेद में सौ (100) संख्यक रश्मियाँ उत्पन्न होती है–

(क) वन्दना 100 रश्मियाँ

(ख) याज्या 100 रश्मियाँ

(ग) केतना 100 रश्मियाँ

(घ) भूतना 100 रश्मियाँ

इस प्रकार अमृतासंज्ञक रश्मियों की संख्या 400 (चार सौ) है।

2. **हिमसर्जना रश्मि**– यह रश्मियाँ चन्द्रासंज्ञक है। इसके तीन भेद है और प्रत्येक में 100 रश्मियाँ होती हैं–

(क) मेष 100 रश्मियाँ

(ख) पौष्य 100 रश्मियाँ

(ग) ह्लादिनी 100 रश्मियाँ

इस प्रकार चन्द्रासंज्ञक रश्मियाँ 300 (तीन सौ) हैं।

3. **घर्मसर्जना रश्मि**– यह रश्मि शुक्रासंज्ञक है। इसके भी प्रत्येक के 100 संख्यक होकर तीन भेद हैं।

(क) ककुभ 100 रश्मियाँ

(ख) गाव 100 रश्मियाँ

(ग) विश्वभृत् 100 रश्मियाँ

शुक्रासंज्ञक रश्मि भी 300 हैं।

इस प्रकार **अमृता+चन्द्रा+शुक्रा = 400+300+300 = 1000 रश्मियाँ** सिद्ध होती हैं। यही सहस्र (1000) रश्मियाँ सूर्य की सहस्ररश्मि कहलाती है। इस तथ्य का अत्यन्त विस्तृत विवेचन दैवज्ञभूषण प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय ने प्राच्यविद्यापरिशीलन नामक ग्रन्थ में किया है। सौरसम्प्रदाय के अनुसार वेदोक्त सहस्रबाहु, सहस्रशीर्षा, प्रजापति, परमपुरुष, पुराणात्मा, सभी भुवनों के गोप्ता, आदित्यवर्णादि नामों से निर्दिष्ट देव भगवान् सूर्य ही हैं–

सहस्रशीर्षा सुमनाः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सहस्रबाहुः प्रथमः प्रजापतिस्त्रयीपथे यः पुरूषो निगद्यते।
आदित्यवर्णो भुवनस्य गोप्ता अपूर्व एकः पुरुषः पुराणः॥

(भवि. पु. 1/77/19, 20)

एक ही परमात्मा सूर्य संसार चक्र के प्रवर्तन के लिए तथा काल की मर्यादा प्रतिष्ठित करने के लिए बारह रूपों में प्रविभक्त होकर अनेक प्रकार की लीलाएँ करते हैं। पुराणों में सूर्यरथ के वर्णन प्रकरण में बताया गया है कि द्वादश (बारह) आदित्य ही बारह नामों से अभिहित किए गये हैं। इन द्वादश आदित्यों के नाम इस प्रकार हैं–

(1) इन्द्र, (2) धाता, (3) पर्जन्य, (4) त्वष्टा, (5) पूषा, (6) अर्यमा, (7) भग, (8) विवस्वान्, (9) विष्णु, (10) अंशुमान्, (11) वरूण, (12) मित्र।

1. **इन्द्र**– भगवान् आदित्य की प्रथम मूर्ति का नाम 'इन्द्र' है, वह देवराज पद पर अधिष्ठित है। वह देवताओं के शत्रुओं का नाश करने वाली लीला मूर्ति है तथा आश्विन मास की अधिपति है। ये वृष्टि के स्वामी है।

2. **धाता**– भगवान् सूर्य के द्वितीय विग्रह का नाम धाता है वह प्रजापति के पद पर स्थित है और नाना प्रकार के प्रजावर्ग की सृष्टि करते हैं, इन्हीं का दूसरा नाम ब्रह्मा भी है। कार्तिक मास के सूर्य का नाम धाता है।

3. **पर्जन्य**– सूर्यदेव की तृतीय मूर्ति (स्वरूप) का नाम पर्जन्य है। यह मेघों में स्थित होकर वृष्टि करते हैं। श्रावणमास के सूर्य को पर्जन्य कहा जाता है।

4. **त्वष्टा**– भगवान् सूर्य के चतुर्थ स्वरूप का नाम 'त्वष्टा' है। त्वष्टा रूप में वे सम्पूर्ण औषधियों और वनस्पतियों में स्थित रहते हैं। फाल्गुन मास में त्वष्टा नामक सूर्य तपते हैं।

5. **पूषा**– सूर्य भगवान् का पाँचवाँ स्वरूप 'पूषा' नाम से प्रसिद्ध है। ये अन्न में स्थित होकर समस्त प्रजा को पुष्ट करते हैं और जीवन प्रदान करते हैं। पौषमास के सूर्य का नाम पूषा है।

6. **अर्यमा**– सूर्य के षष्ठ (छठवें) स्वरूप का नाम 'अर्यमा' है। यह वायु के आश्रय से समस्त देवताओं में स्थित रहते हैं। वैशाखमास के सूर्य अर्यमा कहलाते हैं।

7. **भग**– भगवान् भास्कर का सातवाँ विग्रह 'भग' नाम से विख्यात है। यह ऐश्वर्य रूप में तथा देहधारियों के शरीर में प्रतिष्ठित रहता है। माघ मास के सूर्य भग नाम से प्रसिद्ध हैं।

8. **विवस्वान्**– आठवें स्वरूप का नाम 'विवस्वान्' कहा गया है। यह अग्नि में स्थित होकर खाये हुए अन्न को पचाते हैं। ज्येष्ठ मास के सूर्य को विवस्वान् कहा जाता है।

9. **विष्णु**– सूर्यदेव की नवीं मूर्ति को 'विष्णु' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वे देवताओं के शत्रुओं का विनाश करने के लिए अवतरित होते हैं। राम, कृष्ण आदि इसी विग्रह के अवतार हैं। चैत्रमास के सूर्य को 'विष्णु' नाम से जाना जाता है। महाभारत में कहा गया है कि द्वादशादित्यों में विष्णु ही सबसे श्रेष्ठ हैं और गुणों में सबसे बढ़कर है–

".......... सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः।" (महाभा. आदि पर्व)

10. **अंशुमान्**– सूर्य की दसवीं मूर्ति का नाम अंशुमान् है। जो वायु में स्थित होकर समस्त प्रजा को आनन्दित करती है।

11. **वरूण**– सूर्यदेव के ग्यारहवें स्वरूप को वरूण कहा जाता है। वरूण रूप में वे जल में प्रतिष्ठित होकर जीवों का पोषण करते हैं। जलरूप में अन्न की उत्पत्ति करते हैं। भाद्रपद मास के सूर्य का नाम 'वरूण' है।

12. **मित्र**– भगवान् सूर्य के बारहवें स्वरूप का नाम है 'मित्र'। इस नाम के अनुरूप वे सकल चराचर जीवों के मित्र हैं और सम्पूर्ण जगत् के हितैषी बनकर जगत् कल्याण में लगे हुए हैं। मार्गशीर्ष मास के सूर्य को मित्र कहते हैं।

इस प्रकार भगवान् सूर्य सहस्त्ररश्मि तथा द्वादश आदित्यों के रूप में, देवता के रूप में, ऊर्जास्रोत के रूप में एवं अन्य विभिन्न रूपों में मानवीय सृष्टि के लिए अक्षय वरदान है। इनकी उपासना करने से आयु, आरोग्य, धन-धान्य, क्षेत्र, पुत्र, मित्र, कलत्र, तेज, वीर्य, यशादि की प्राप्ति होती है।

ॐउदये ब्रह्मणोरूपं मध्याह्ने तु महेश्वरः।
अस्तमाने स्वयं विष्णुस्त्रिमूर्तिश्च दिवाकरः॥

॥ ॐ तत्सत् ॥

सूर्य यन्त्र एवं पूजा विधान

तांत्रिक मंत्र– ॐ सूं सूर्याय नमः
अथवा ॐ ह्रीं घृणिः सूर्याय नमः।

जप संख्या– सात हजार

यन्त्र से भी सूर्य की पूजा होती है। सूर्य यंत्र स्थापना एवं पूजन के उपरान्त यथा सामर्थ्य जप करें। कृतिका नक्षत्र में रविवार के दिन सूर्य के सिंह राशि में होने पर सूर्य यंत्र साधना प्रभावी होती है।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

बीज मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

जप संख्या– सात हजार पाँच सौ।

दान सामग्री– गेहूँ, गुड़, घृत, लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, केशर, ताँबा, मूँगा एवं यथाशक्ति दक्षिणा।

सूर्यकवचम्

ऋणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम्॥१॥

देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मुकरकुण्डलम्।
ध्यात्वा सहस्त्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥२॥

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः॥३॥

घ्राणं घर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः॥४॥

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः॥५॥

सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके।
दधाति यः करे तस्य वरागाः सर्वसिद्धयः॥६॥

सुस्नाती यो जपेत् सम्यग् योऽधीते स्वस्थमानसः।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति॥७॥

कालसर्पयोग एक मिथ्यावाद (उदारहण एवं प्रमाण सहित)

लेखक
डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा
प्रधान सम्पादक

ज्यौतिष जगत् में कालसर्पयोग इस समय चर्चा का विषय बना हुआ है। यत्र-तत्र सर्वत्र ही लोगों में इस योग को लेकर भ्रान्ति के साथ-साथ भय भी होता जा रहा है। सर्वप्रथम देखते हैं कि कालसर्पयोग की उत्पत्ति और फल क्या है? तत्पश्चात् अपने विचार प्रस्तुत किये जाएंगे–

राहुकेतुमध्ये ग्रहासप्तौ विघ्नदाकालसर्पसंज्ञकः।
सुतकलत्रादिसकलदोषः रोगेन प्रवासे मरणं ध्रुवम्॥

जन्मकुण्डली में यदि सातों ग्रह राहु केतु के मध्य में आ जाएं तो कालसर्पयोग होता है। इस योग के प्रभाव से पुत्र, स्त्री के द्वारा समस्त दोषों की उत्पत्ति तथा रोग के साथ-साथ प्रवास में निश्चित तौर पर मरण होता है। अस्तु। कालसर्पयोग द्वादश भागों में विभक्त है :–

1. **अनन्त कालसर्पयोग–** लग्न से सप्तम पर्यन्त राहुकेतु के मध्य में ग्रह आने से अनन्त कालसर्पयोग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक के पास प्रचुर धनधान्य रहते हुए भी पत्नी द्वारा दुःखी रहता है। कभी-कभी इस योग में उत्पन्न जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

2. **कुलिक कालसर्पयोग–** दूसरे भाव से अष्टम भाव पर्यंत राहु केतु के मध्य ग्रहों की स्थिति होने पर कुलिक कालसर्पयोग बनता है। इस योग में स्वास्थ्य की हानि, आकस्मिक दुर्घटनाओं का होना, आर्थिक हानि और अनिश्चित आर्थिक लाभ होता है।

3. **वासुकी कालसर्पयोग–** तीसरे भाव से नवम भाव तक ग्रहों का योग बने तो वासुकी कालसर्पयोग बनता है। इस योग में व्यवसाय सम्बन्धी समस्याएं रहती हैं।

4. **शंखपाल कालसर्पयोग–** चतुर्थ भाव से दशम भाव तक राहुकेतु के मध्य में सभी ग्रह आ जाएं तो शंखपाल कालसर्पयोग बनता है। इस योग में मानसिक तनाव, बच्चे की मृत्यु या बच्चा होता ही नहीं परन्तु कभी-कभी राजनीतिक लाभ के साथ-साथ धन प्रचुर मात्रा में मिल जाता है।

5. **पद्म कालसर्प योग–** पञ्चम भाव से एकादश भाव तक राहुकेतु के मध्य में सभी ग्रहों की स्थिति हो जाने से पद्मकाल सर्पयोग बनता है, इस योग में बच्चों की चिन्ता रहती है। यदि चन्द्रमा राहु के साथ हो जाए तो भूत-प्रेत बाधा भी होती है, मित्रों द्वारा ठगा जाता है।

6. **महापद्म कालसर्प योग–** षष्ठ भाव से द्वादश भाव पर्यन्त राहुकेतु के मध्य में सभी ग्रहों की स्थिति हो जाए तो महापद्म कालसर्पयोग बनता है। यदि यह योग शुभफलप्रद हो तो राजनीतिक लाभ से प्रचुर धन की प्राप्ति करवाता है परन्तु पैसा शुद्ध रीति से नहीं कमाया जाता।

7. **तक्षक कालसर्प योग–** सप्तमभाव से लग्न पर्यन्त राहुकेतु के मध्य में ग्रहों की स्थिति से तक्षक कालसर्पयोग बनता है। ऐसा व्यक्ति शराब-जुए में धन तथा स्वास्थ्य की हानि करता है। घर में तिरस्कार प्राप्त करता है।

8. **कर्कोटक कालसर्प योग–** अष्टम भाव से द्वितीय भावपर्यन्त राहुकेतु मध्य में सभी ग्रहों की स्थिति से कर्कोटक कालसर्पयोग बनता है। ऐसा व्यक्ति शीघ्र क्रोध में आता है और शत्रु अधिक होते हैं। ऐसे लोगों की मित्रता देश विरोधियों से होती है। पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती।

9. **शंखचूड़ कालसर्प योग–** नवम भाव से तृतीय भाव तक राहुकेतु के मध्य में सभी ग्रहों की स्थिति हो जाए तो शंखचूड़ कालसर्पयोग बनता है। जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं, झूठ बोलने की आदत होती है, शीघ्र क्रोधित होता है।

10. **घातक कालसर्प योग–** दशम भाव से चतुर्थ भाव तक राहुकेतु के मध्य में सभी ग्रहों की स्थिति बनने से घातक कालसर्प योग बनता है। अत्यन्त संघर्ष के उपरान्त जीवन में सफलता मिलती है। पिता के सुख की कमी, झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

11. **विषधर कालसर्प योग–** एकादश भाव से पंचम भाव तक सभी ग्रह राहुकेतु के मध्य में हों तो विषधर कालसर्प योग बनता है। यात्राएं अधिक होती हैं, एक स्थान पर नहीं रह सकता, सन्तान के द्वारा कष्टों की सम्भावना, आयु के अन्तिम चरण में कुछ सन्तोष भी होता है।

12. **शेषनाग कालसर्प योग–** द्वादश भाव से षष्ठ भाव तक सभी ग्रहों की स्थिति हो जाने से शेषनाग कालसर्प योग बनता है। कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ते हैं, शत्रु अधिक होते हैं तथा स्वास्थ्य खराब रहता है।

राहु-केतु के बीच सातों ग्रहों की स्थिति से कालसर्प योग बनता है, ऐसा इस योग के मानने वालों का कहना है। कहा गया है कि इस योग में उत्पन्न जातक क्षुब्ध ही होता है, वसिष्ठ, नारद, कश्यप, गर्गादि ऋषियों की संहिताओं तथा वराह, मन्त्रेश्वर, कल्याणवर्मा, कालिदास आदि के किसी भी जातक या मुहूर्त ग्रन्थों में कालसर्प योग निर्दिष्ट नहीं है। अभी कुछ वर्षों से इसका प्रचलन हुआ है परन्तु उत्तर भारत के अनेक विद्वान् दैवज्ञों ने इसे प्रामाणिक फलित ज्यौतिष साहित्य में सर्वथा अनुपलब्ध होने के कारण पूर्णतया उपेक्ष्य घोषित किया है। पुनरपि जो लोग व्यर्थ में इस योग से भयभीत हों उन्हें इस तथाकथित कुयोग के तथाकथित कुप्रभाव की शान्ति करवाने से भला कौन रोक सकता है। इसमें भी ब्राह्मणों का लाभ तो होता ही है। हम ब्राह्मणों के विरोधी नहीं है।।

मुख्यतः ज्यौतिष शास्त्र का सम्बन्ध काल से है, यह शास्त्र कालनियामक है। कालसर्प योग का सम्बन्ध राहु ग्रह से है, राहु का सम्बन्ध सर्प देवता से है। सभी जातक ग्रन्थों में राहु का स्वरूप वर्णन नहीं किया गया अपितु इसको छाया ग्रह कहा गया है। पराशर ऋषि के अनुसार–

यद्यद्भावगतौवापियद्यद्भावेशसंयुतौ।
तत्फलानिप्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।।

राहु व केतु जिस भाव में स्थित हों अथवा जिस भावेश के साथ बैठे हों उन्हीं से सम्बन्धित फल बलवान होने पर देते हैं।

राहु व केतु को किसी भी राशि का स्वतन्त्र अधिपति नहीं माना गया है। जब पराशर जैसे महान ऋषि राहु-केतु के सन्दर्भ में उपर्युक्त बात कह कर सन्तोष अनुभव करते हैं तो हम व्यर्थ में अपनी बात क्यों कहें? पराशर ऋषि ने लघुपाराशरी लिखने से पूर्व प्रतिज्ञा की थी, जो मैं कहूँगा बही विशेष होगा–

बुधैर्भावादयःसर्वेज्ञेयाः सामान्यशास्त्रतः।
एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमोविशेषतः।।

कालसर्प योग का मुख्य फलादेश है–

सुतकलत्रादिसकलदोषः रोगेन प्रवासेमरणध्रुवम्।

पहले हम सुत अर्थात् पुत्र-सन्तान के सन्दर्भ में चर्चा करते हैं। भृगु ऋषि के अनुसार निरयत्ययोग कहते हैं–

पञ्चमेशे त्रिकस्थाने अस्तेवारविसंयुते
निरपत्याभिधोयोगो भाषितो मुनिसत्तमैः।।

पञ्चमेभवने पापा अथवा सौम्यसूर्यजौ।
रोहिणेरमणो वापि तमसा सह वै भवेत्।।

पञ्चमेश षष्ठाष्टमद्वादश भावों में हो– 1. पञ्चमेश अस्तंगत अथवा सूर्य सहित हो; 3. पञ्चम स्थान में पापग्रह सू.मं.श. राहु हो; 3. पञ्चम में बुध शनि हो; 4. चन्द्रमायुक्त राहु पञ्चम में हो; 5. इन सभी योगों में पुत्रहीन व्यक्ति का जन्म होता है। 'द्विजदोषः कृतः पुरा' पूर्वजन्म में ब्राह्मण का दोष किया गया था, ऐसा भृगु ऋषि कहते हैं।

यदि हमें पुत्र सम्बन्धी इस प्रकार के योग उपलब्ध हैं तो कालसर्प योग की आवश्यकता क्यों हुई? भृगुसंहिता में पुत्र-प्राप्ति, पुत्र-सुख के लिए अनेक प्रकार के उपाय कहे गए हैं, उन्हीं उपायों को करके पूर्णरूपेण लाभान्वित हो सकते हैं।

कलत्रादिसकल दोष– कलत्र अर्थात् पत्नी, पत्नी-सुख दुःख की चर्चा करते हैं–

जायेशः पापसञ्युक्तः शीर्षोदयगतोऽपिवा।
कुजो राहु सप्तमस्थो पापग्रह निरीक्षितः।।
सप्तमे भवने भौमः अथवा राहुसूर्यजौ।।
दारानाथः त्रिकस्थाने पापग्रहयुतोभवेत्।।
योगो विलासहानिः स्याद्भार्यादुःखी भवेन्नर
तमसः शशिकेतूनां त्रिभिर्बीजाक्षरं जपेत्।।
जपं क्षिप्रं ततः कुर्याद्दद्याद्दानं सुखाय वै।
सुवर्ण रजतंदत्त्वा ताम्रपात्रे घृतान्वितम्।
न करोति यदा दानं भार्या दुःखी नरो भवेत।
क्रोधपाशेन सञ्युक्तो दारहत्या कृता पुरा।।
यावन्न दीयते दानं तावद् भार्या न जीवति।
वियोगं प्राप्यते पुंसां भृगुणा वचनोदितः।।

सप्तमेश पापग्रह सञ्युत हो शीर्षोदय राशि में स्थिति हो (मि.सि.क.वृ.तु.कुं)– (1) मंगल राहु सप्तम हों, शनि सूर्य की दृष्टि हो; (2) सातवें घर में मंगल; (3) सातवें शनि राहु हों; (4) सप्तमेश षष्ठाष्टम द्वादश भाव में हों; (5) पाँच प्रकार के योगों से विलास हानि योग बनता है। स्त्री सुख के लिए चन्द्रमा राहु-केतु का बीजाक्षर से जप करना चाहिए। सोना, चान्दी, ताम्बा, देसी-घी दान करना

से ग्रह स. कब कैसे मृत्यु होगी यह स्पष्ट नहीं किया गया। जबकि भृगु संहिता

निरपत्याभिधोयोगो भावितो मानसत्तमः॥

स्त्री की हत्या की होती है तभी यह विलास-हीन योग बनता है। जब तक इस योग की शान्ति हेतु दान न दें तो तब तक स्त्री नहीं जिये, यदि जिये तो रोगी रहे। मनुष्य को स्त्री से वियोग प्राप्त रहता है। यह भृगु जी के वचन हैं।

यदि ऐसे सारगर्भित सटीक फलादेश देने वाले योग भृगुसंहिता में उपलब्ध हैं। हम इन्हीं योगों के माध्यम से लोगों को मार्गदर्शन कर सकते हैं तो कालसर्प जैसे भयभीत करने वाले योगों की क्या आवश्यकता है? ज्योतिषियों का कार्य भ्रान्ति मिटाना है न कि भ्रान्ति एवं भय में रखकर लोगों से उपाय करवाना और पैसा ठगना है। स्पष्टता के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हैं–

"रोगेन प्रवासेमरणं ध्रुवम्।"

दो जन्म कुण्डलियों को प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों कुण्डलियों में कालसर्पयोग विद्यमान है– न० 1 में महापद्मकालसर्प योग है व न० 2 में घातक काल सर्प योग है। इन दोनों योगों का फलादेश आप पढ़ चुके हैं।

नं० 1 (जन्माङ्गम्)

2, 12, 3, 1, के 11 चं, 4, 10, 7 सू मं, 5, 6 शु रा, 8 बृ बु, 9 श

नं० 2 (जन्माङ्गम्)

उपर्युक्त दोनों व्यक्तियों का जन्म सात्विक ब्राह्मण परिवारों में हुआ है। दोनों व्यक्ति पूर्णरूपेण आस्तिक, ईश्वर चिन्तन करने में तत्पर, धनधान्य वाहनादि से युक्त तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व सम्पन्न, श्रेष्ठ प्रतिभावान व्यक्ति हैं। इन दोनों में लेशमात्र भी कालसर्प योग का प्रभाव नहीं दीखता। अस्तु।

मृत्यु के लिए सुनिश्चित रूप से स्पष्ट कह पाना सभी ज्योतिषयों के लिए गहन विषय है। कालसर्प योग में जन्मे जातक की मृत्यु निश्चित तौर पर प्रवास में होगी यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। यह कोई सटीक प्रमाण नहीं लगता। कौन सा ग्रह व कब कैसे मृत्यु होगी यह स्पष्ट नहीं किया गया। जबकि भृगु संहिता में कारणों सहित विभिन्न प्रकार की मृत्यु के सन्दर्भ में स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। जैसे– लोभान्मृत्युः, तुरंगान्मृत्युः, अग्निकारणान्मृत्युः, गजान्मृत्युः, बंधुकारणान्मृत्युः, शूलिकामृत्युयोगाः, परदारार्थमृत्युः, जलादेरेणमृत्युः, स्त्रीकारणान्मृत्युः, शत्रुहस्तान्मृत्युः, कूपेमृत्युः, स्वजनान्मृत्युः, जलेनमृत्युः योग इत्यादि।

क्या कालसर्प योग इतना बलवान है? ऐसा कुछ भी नहीं, ज्योतिषियों को चाहिए कि वे इस योग को भूल जाएँ, ऐसा करने से ज्योतिषियों के साथ-साथ जनता का भी भला होगा।

गौड़ वंशावतंस वंशबरेलिकस्थ दैवज्ञ पं० श्याम लाल जी के अनुसार कालसर्प योग कुछ भी नहीं अपितु सात स्थानों में सभी ग्रहों की स्थिति यदि बनती है तो 'अर्धचन्द्रयोग' होता है। अर्धचन्द्रयोग के आठ भेद हैं–

1. दूसरे स्थान से अष्टम स्थान पर्यन्त सम्पूर्ण ग्रह हों तो
2. तीसरे स्थान से नवम स्थान पर्यन्त
3. पञ्चम स्थान से एकादश स्थान पर्यन्त
4. षष्ठ स्थान से द्वादश स्थान पर्यन्त
5. अष्टम स्थान से द्वितीय स्थान पर्यन्त
6. नवम स्थान से तृतीय स्थान पर्यन्त
7. एकादश भाव से पञ्चम स्थान पर्यन्त
8. द्वादश भाव से षष्ठ स्थान पर्यन्त।

अर्द्धचन्द्रयोगफलम्

भूमीपालात्प्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थबराद्यैः।
चेतुत्पत्तौ यस्ययोगार्द्धचन्द्रश्चन्द्रः साक्षादुत्सवार्ये जनानाम्॥

अर्धचन्द्रनाम योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा से प्रतिष्ठा प्राप्त कर, अच्छी सेना आभूषण, धनवस्त्रादि से युक्त, चन्द्रमा के सदृश लोगों में स्वरूपवान होता है।

ज्योतिषियों को कालसर्प के वजाये अर्द्धचन्द्रयोग का मत प्रस्तुत करना चाहिए। कालसर्प को भूलना चाहिए। कालसर्प योग एक मिथ्यावाद है।

अधिमास (पुरुषोत्तममास) विचार

भारतीय धर्मशास्त्र परम्परा में व्रतपर्वोत्सव निर्णय करते समय अधिमास को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है अधिक मास। अर्थात् चैत्रादि द्वादश मासों के अतिरिक्त जिस वर्ष में तेरहवाँ मास हो जाए वह मास अधिमास कहलाता है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से कहा गया है–

यस्मिन् मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा।
मलमासः स विज्ञेयो मासे त्रिंशत्तमे भवेत्॥ (ब्रह्मसिद्धान्त)

अर्थात् सूर्य का मासानुक्रम से मेषादिराशियों पर संचार होता है जिसके फल स्वरूप सौरमास होता है। वही सौर मास द्वादश संख्यक होने पर एक सौरवर्ष होता है। जिस मास में सूर्य का संक्रमण किसी अन्य राशि पर न हो और त्रिंशत् तिथ्यात्मक चान्द्रमास समाप्त हो जाए तो उस मास को अधिमास कहा जाता है। इसी प्रकार जिस मास में दो राशियों पर सूर्य की संक्रान्ति हो जाए उस मास का क्षय हो जाता है अतः उसे क्षयमास कहते हैं। इस सन्दर्भ में आचार्य भास्कर लिखते हैं–

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्यात्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं स्यात्॥ (सि.शि., म.अ.-6)

धर्मशास्त्र का अभिमत है कि सूर्य संक्रमणयुक्त जो अमान्त-पूर्णिमान्त चैत्रादि मास है वे शुद्ध मास है अतः उनमें नित्य, नैमित्तिक, काम्य, प्रायश्चित्तादि कर्म करने चाहिए। द्विसंक्रान्ति या संयुक्त अधिमास अथवा क्षयमास में वेदशास्त्रविहित नैमित्तिक एवं काम्य कर्म नहीं करने चाहिए। जिस वर्ष के मध्य दो अधिमास सम्भव हों और कार्तिकादि तीन मासों के मध्य क्षयमास आ जाए तो उस वर्ष के तीनों मास में विवाह, यज्ञ, मङ्गलकार्योत्सव त्याग देने चाहिए। 'पुरूषार्थ-चिन्तामणि' में संक्रान्ति रहित मलमास (अधिमास) प्रति 28 मास से ऊपर तथा 36 मास के भीतर होना कहा गया है। यह एक मलमास (अधिमास) से दूसरे मलमास (अधिमास) तक की अवधि है। ब्रह्माजी के मतानुसार फाल्गुनादि अधिमास और अगहन, पौष मास क्षय नित्य होता है। यथा–

अष्टाधिमासः सयुर्नित्यं प्रोच्यते फाल्गुणादयः।
सौम्य पौषो क्षयो नित्यं भवेतामिति निश्चितम्॥
(ब्रह्मसिद्धान्त)

लेखिका :
श्रीमती कमलेश शास्त्री
धर्मशिक्षा संस्कृत अध्यापिका,
नागबनी स्कूल, जम्मू

इसी प्रकार कहते हैं जिस मास में सूर्य संक्रान्ति का अभाव हो और द्विसंक्रान्ति संयुत क्षयमास के पूर्व अपर में होवे तो दोनों मलमास क्रमशः संसर्प तथा अंहस्पति के नाम से जाने जाते हैं–

संक्रान्तिरहितो मासो यो वा संक्रान्तियुग्मयुक्।
पूर्वः संसर्पसंज्ञः स्यादंहस्पति तथापरः॥

'सम्यक् सर्पतीति संसर्पः' इस व्युत्पत्ति से रवि संक्रमण रहित होकर भी आगे चलने वाले इस अभय अधिमास में प्रथम संसर्पसंज्ञक होता है और दूसरा अंहस्पति। **'निर्णय सिन्धु'** के अनुसार इन दोनों में विवाह, यज्ञ, महोत्सव, देवप्रतिष्ठा आदि मङ्गलकार्य नहीं करना चाहिए।

मलिम्लुचैः समाक्रान्तं सूर्यसंक्रान्तिवर्जितम्।
मलिम्लुचं विजानीयाद् गर्हितं सर्वकर्मसु॥ (निर्णय सिन्धु)

प्रथम अधिमास का नाम 'संसर्प' है। यदि एक ही वर्ष में दो अधिकमास उपस्थित होते हैं तव संसर्पमास द्वितीय 'अंहस्पति' की अपेक्षा श्रेष्ठ है। दूसरा मास मलिम्लुच अर्थात् मलिन या मलमास कहा गया है। जिस मास में अर्कसंक्रमण होता है, संसर्प में सूर्य का संक्रमण न होने के कारण मंगल कर्म नहीं किए जा सकते।

इसके विपरीत क्षमामास में दोनों मासों के कर्म एक साथ किए जाते हैं। शास्त्रवाक्य में कहा गया है कि–

एकस्मिन् मासि मासौ द्वौ यदि स्यातां तयोर्द्वयोः।

अधिमास में कर्तव्याकर्तव्य

शास्त्रों में कहा गया है कि अधिमास में विहित आवश्यक कार्य, मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध, आधानाङ्गीभूत पितरों की क्रिया करनी चाहिए यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा, अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मल मास में ही किसी की मृत्यु हो तो उससे जो बारहवां मास हो उसमें प्रेत क्रिया को समाप्त करना चाहिए। काम्यकर्म का प्रारम्भ, वृषोत्सर्ग, पर्वोत्सव, उपाकृति, मेखला, चौल, माङ्गल्य, अग्न्याधान, उद्यापनकर्म, वेदव्रत, महादान, अभिषेक, वर्द्धमानक, इष्ट तथा मूर्त कर्म नहीं करना चाहिए।

स्मृति रत्नावली नामक ग्रन्थ में प्रतिपादित है कि जिस काम्य प्रयोग का आरम्भ मलमास से पूर्व ही हो गया है उसके दिनों की समाप्ति में जो होना चाहिए वही इस अधिक मास में विहित है। अर्थात् इसकी समाप्ति अवश्य ही सन्देह रहित होकर करना चाहिए।

महर्षि गर्ग के मत में सोमयागादि कर्म, आग्रयण, आधान, चातुर्मास्यादि, अष्टक का श्राद्ध, उपाकर्मादि मलमास में नहीं करने चाहिए।

बृहस्पति जी कहते हैं कि अग्न्याधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दानव्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, यज्ञोपवीत, माङ्गल्य और अभिषेक मलमास में नहीं करना चाहिए।

वसिष्ठ जी के मतानुसार, वापी, कुंआ, तालाब, देव प्रतिष्ठा, यज्ञादि कार्य मल मास व क्षय मास में नहीं करने चाहिए।

मनुस्मृति में कहा है कि तीर्थ श्राद्ध, दर्श श्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्र सूर्य ग्रहणीय स्नान अधिकमास में करना चाहिए।

तीर्थश्राद्धं दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सपिण्डनम्।
चन्द्रसूर्यग्रहे स्नानं मलमासे विधीयते॥

(ज्यो.नि. पृष्ठ 84)

सम्वत् 2069 शाक 1934 भाद्रपद मास में अंग्रेजी दिनांक 18 अगस्त से 16 सितम्बर तक अधिक मास रहेगा। अधिक मास में पूर्वोक्त सभी कर्म निन्दनीय हैं, इस पुरुषोत्तम (अधि) मास में सदाचारी, ब्रह्मचारी और संयमी रहकर जो कोई भी प्राणी भगवान विष्णु की पूजा, अर्चना करता है, उसे मोक्ष एवं मरणोपरान्त गोलोक की प्राप्ति होती है।

विशेष

अधिमास या पुरुषोत्तम मास को भगवान् श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त है। पुराणों के अनुसार भगवान् विष्णु मल मास को लेकर श्रीकृष्ण के पास गए तब उन्होंने कहा– "हे विष्णो! आप मलमास को साथ लेकर यहाँ आये, यह आपने महान् उपकार किया है।" अब मैं इसे सर्वोपरि अपने तुल्य करता हूँ–

अहमेते यथा लोके प्रथितः पुरुषोत्तमः।
तथायमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्तमः॥

सद्गुणों, कीर्ति, प्रभाव, षडैश्वर्य, पराक्रम, भक्तों को वरदान देने आदि जितने भी गुण मुझमें हैं और उनसे जिस प्रकार मैं विश्व में पुरुषोत्तम के नाम से विख्यात हूँ, उसी प्रकार यह मलमास भी भूतल पर 'पुरुषोत्तम' नाम से प्रसिद्ध होगा–

अस्मै समर्पितः सर्वे ये गुणा मयि संस्थिताः।
पुरुषोत्तमेति मन्नाम प्रथितं लोकवेदयोः॥
अहमेवास्य संजातः स्वामी च मधुसूदनः॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने सारे सद्गुण मलमास को समर्पित कर दिए और स्वयं को मलमास का स्वामी माना। जिस परमधाम गोलोक में पहुंचने के लिये मुनि-महर्षि कठोर तपस्या में निरन्तर रत रहते हैं, वही दुर्लभ पद पुरुषोत्तम मास में स्नान, पूजादि अनुष्ठान करने वाले भक्त जनों को सुगमता से प्राप्त हो सकेगा।

विधिवत् सेवते यस्तु पुरुषोत्तममादरात्।
कुलं स्वकीयमुद्धृत्य मामेवैष्यत्यसंशयम्॥

प्रति तीसरे वर्ष में पुरुषोत्तम मास के आगमन पर जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति के साथ व्रत, उपवास, पूजा आदि शुभ-कर्म करता है, वह अपने समस्त परिवार के साथ गोलोक में पहुंचकर गोलोकावतंस भगवान् श्रीकृष्ण का सांनिध्य प्राप्त करता है।

॥ॐ श्री रामचन्द्रार्पणमस्तु॥

आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः

लेखिका : श्रीमती कमलेश शास्त्री, धर्मशिक्षा संस्कृत अध्यापिका, नागबनी स्कूल, जम्मू

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्

धर्म का पालन करने के लिए शरीर पहला साधन है अत: इस धर्म रूपी साधन (शरीर) को निरोग रखना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है; क्योंकि संसार के सभी सुखों में प्रथम स्थान निरोगी शरीर का ही है इसे शास्त्रों ने भी माना है पहला सुख निरोगी काया। जब शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी स्वस्थ होगा। भारतीय जीवन विज्ञान में तीन आधार माने गए हैं :–

आहार, स्वप्न (उचित निद्रा) एवं ब्रह्मचर्य अर्थात् संयम– ये तीन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रमुख आधार हैं, इसमें भी प्रथम स्थान आहार का है।

आहारः प्राणिनः सद्यो बलकृद्देहधारकः।
आयुस्तेजः समुत्साहः स्मृत्योजोऽग्निवर्धनः॥

आहार ही प्राणियों को नया बल और देह धारण करने की शक्ति देने वाला है। आहार से ही आयु, तेज उत्साह स्मृति ओज (जीवनशक्ति) तथा शरीर अग्नि की वृद्धि होती है। इन गुणों को सार्थक करने वाला भोजन कैसा हो सात्विक आहार कह कर वर्णन किया गया है–

आयु सत्वगुण बल आरोग्य, सुख और प्रसन्नता बढ़ाने वाला, स्थिर रहने वाले, हृदय की शक्ति देने वाले रसयुक्त तथा चिकने– ऐसे आहार सात्विक मनुष्य को प्रिय होते हैं। राजसी और तामसी आहार (मन-प्राण) की शुद्धि नहीं कर सकते मनुष्य का जैसा आहार होगा उसका स्वभाव और व्यवहार भी वैसा ही होगा। अत: मनुष्य का स्वभाव और उसकी प्रवृत्ति उसके आहार से नियन्त्रित होती है। तामसी आहार से तामसी प्रवृत्ति और राजसी आहार से राजसी वृत्ति का होना स्वाभाविक है।

इसी प्रकार सात्विक आहार से अन्त:करण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) का सात्विक होना भी स्वाभाविक वृत्ति है। इस सात्विक वृत्ति की भूमिका का निर्माण सन्ध्यावन्दन, अग्निहोत्र, ध्यान, जप, दान, अहिंसा और सात्विक आहार आदि आदर्श प्रवृत्तियों के विकास से होता है।

एक बार आचार्य चरक ने अपने शिष्यों से पूछा– 'कोऽरुक्', 'कोऽरुक्', 'कोऽरुक्' कौन रोगी नहीं है? अर्थात् स्वस्थ कौन है? एक प्रबुद्ध शिष्य ने उत्तर दिया– 'हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्' हमारे पूर्वजों ने संतुलित भोजन को मात्राहार और षट्रसयुक्त हित भोजन कहकर प्राचीन ग्रन्थों में वर्णन किया है, यही हित भोजन हमारे शरीर में रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और ओज आदि धातुओं को बढ़ाकर शरीर का विकास वृद्धि, क्षतिपूर्ति आवश्यक उष्णता एवं बल प्रदान करता है।

हितभोजन अर्थात् संतुलित आहार ग्रहण करने वाला व्यक्ति सौ वर्ष तक पूर्ण निरोग अवस्था में जीवित रह सकता है।

दूसरा मितभुक् है अर्थात् कम खाएं और तीसरा है ऋतभुक् अर्थात् गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि ऋतुओं के अनुकूल ही अपना आहार लें। साथ ही आहार के द्रव्यों को संस्कारित करके ही प्रयोग में लें, आहार को संस्कारित करने की पाँच विधियाँ हैं :–

1. **क्षेत्रशुद्धि–** भोजन बनाते और करते समय हमें स्थान विशेष की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। प्राचीन समय में चौके की व्यवस्था स्थान क्षेत्र शुद्धि को ध्यान में रखकर ही की गयी थी जिससे भोजन के स्थान में अनधिकृत व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सके तथा वैक्टीरिया (विषाणु) आदि का प्रकोप आहार सामग्री पर नहीं हो।

2. **द्रव्यशुद्धि–** भोजन की सामग्री, जिसको काम में लिया जाए वह साफ एवं शुद्ध हो, क्योंकि अशुद्ध द्रव्य से शारीरिक स्वास्थ्य खराब होता है और शारीरिक स्वास्थ्य खराब होने पर मन सत्त्व की शुद्धता तो सम्भव नहीं है। अत: शास्त्रों ने द्रव्यशुद्धि को भी महत्वपूर्ण माना है।

3. **कालशुद्धि–** समय का भी भोजन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। असमय का किया गया भोजन शरीर और विचार दोनों को दूषित करता है। निश्चित समय पर भूख लगने पर भोजन करना ही भोजन का सर्वोत्तम समय है और यही आदत स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। अत: मानव को हितकर भोजन उचित मात्रा में उचित समय में करना चाहिए।

4. **भावशुद्धि–** आहार पर भावनाओं का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को शुद्धभाव से भोजन करना चाहिए। क्रोध, ईर्ष्या, उत्तेजना, चिन्ता, मानसिक तनाव, भय आदि की स्थिति में किया गया। भोजन शरीर के अन्दर दूषित रसायन पैदा करता है। जो मानव के मन को दूषित करता है। प्रसन्नता पूर्वक किया गया भोजन शारीरिक स्वास्थ्य एवं सत्व की वृद्धि करता है।

5. क्रियाशुद्धि– मानवीय क्रियाओं का गहरा सम्बन्ध है, अधर्म के साधनों द्वारा कमाए गए धन से बनाया गया। भोजन हमारे तथा मन को प्रभावित करता है। जैसे– "जैसा खाये अन्न वैसा हो जाए मन।"

ईमानदारी एवं कड़ी मेहनत से कमाए गए धन से बना भोज हमारे मन, प्राण को शुद्ध करता है। अतः उक्त क्रियाओं द्वारा किया गया आहार शुद्धिकरण हमारे शरीर को स्वस्थ तथा मन को पवित्र बनाता है। जैसा कि श्रुति में वर्णित है:–

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः स्मृतिलाभे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।

आहार की शुद्धता रहने से (मन, प्राण, चैतन्य) की शुद्धि होती है। सत्वशुद्धि से स्मृति अर्थात् बुद्धि, सन्तुलित होती है। स्मृतिशुद्धि से आत्मज्ञान बढ़ता है जिससे मानसिक, ग्रन्थियों का पराभव होता है। इस सम्बन्ध में आचार्य चरक ने आहार के ग्रहण के कुछ नियमों का उल्लेख किया है :–

1. शुद्ध सात्विक एवं उष्ण भोजन करना चाहिए।
2. मात्रावत् स्निग्ध आहार ग्रहण करना चाहिए।
3. आहार को शान्तचित हो कर ग्रहण करें।
4. नियत समय पर आहार ग्रहण करें।
5. आहार द्रव्य में मन लगाकर भोजन करें।

उक्त नियमों का पालन करते हुए आहार ग्रहण करने से शारीरिक पुष्टि एवं मन, प्राण की शुद्धि होती है इसीलिए मनु महाराज ने कहा है :–

प्रतिदिन खाते समय भोजन पदार्थ का आदर करें और इसे निन्दा भाव से रहित होकर श्रद्धापूर्वक प्रसन्नता से खायें। विश्व के एक सर्वेक्षण में निष्कर्ष सामने आया है कि सात्विक और शाकाहारी लोग अहिंसक और दीर्घजीवी होते हैं। अतः शुद्ध सात्विक और शाकाहारी आहार लेने से शारीरिक पुष्टि तथा आत्मतत्व, प्राण एवं चैतन्य की शुद्धि होती है।

अतः श्रुति के इस वाक्य में आहार-शुद्धि के द्वारा मन-प्राण शुद्धि की प्रेरणा निहित है– "आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः।"

अशान्तस्य कुतः सुखम्

लेखिका : **श्रीमती कमलेश शास्त्री,** धर्मशिक्षा संस्कृत अध्यापिका, नागबनी स्कूल, जम्मू

मनुष्य सांसारिक भोगों और संग्रह करने में लगा हुआ है जिस पुरुष की मन और इन्द्रियाँ संयमित नहीं हैं, ऐसा पुरुष सांसारिक भोगों में और संग्रह करने में लगा रहता है, कभी मान चाहता है, कभी सुख आराम चाहता है, कभी धन चाहता है उसके भीतर अनेक तरह की कामनाएँ रहती हैं, इसलिए वह अशान्त रहता है। इसके अलावा जिस मनुष्य का चित्त निरन्तर विक्षिप्त है, वह राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मोह, अहंकार और भय के बन्धन में बँधा हुआ रहता है तो ऐसा अशान्त मनुष्य सुख नहीं पा सकता। इस पर हमारे चिन्तन का विषय यह है कि मनुष्य अशान्त क्यों होता है? उसके अशान्त होने का कारण है उसका रास्ते को भूल जाना, जिस मार्ग पर चलना चाहिए उसमें न चलकर आसुरी सम्पदा धारण करने लग जाना होता है अज्ञानता और विवेकहीनता। श्री भगवान भी गीता में ऐसा ही कहते हैं– अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्तिजन्तवः।। हम विषयों और इन्द्रियों के संयोग में तथा निद्रा, आलस्य और प्रमाद में सुख महसूस करते हैं, जो वास्तव में सुख नहीं है, वह दुःख का कारण है। तृष्णा से इन्द्रियों का निवृत्त होना ही सुख है। विषय सम्बन्धी तृष्णा सुख नहीं है। वह तो दुःख ही है। अभिप्राय यह है कि तृष्णा के रहते तो सुख की झलक मात्र भी नहीं मिल सकती।

जब हम मन के दास और इन्द्रियों के गुलाम होते हैं, ऐसे उन क्षणों में कभी सुख नहीं पा सकते। हमारे मन में जब लोभ की आसक्ति होती है तो मन अशान्त हो जाता है। सब से ज्यादा हमारे मन के अशान्त होने का कारण होती है– कामनाएँ, क्योंकि राग, द्वेष, लोभ, काम क्रोध के मूल में कामना विद्यमान रहती है। यहाँ तक कि भय में भी जीवन जीने की कामना रहती है– तभी तो मनुष्य भयभीत होता है। इसलिए हमें इन सब विकारों से विजयी होने के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अज्ञान के अंधेरे से निकल कर रोशनी में आना ही चाहिए, क्योंकि ज्ञान के प्राप्त होने पर सब से पहले मोह दूर हो जाता है तथा यदि हम पापी हैं तो उनके प्राप्त होते ही पाप से छुटकारा मिल जाता है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी कहा है कि ज्ञान/यज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ है, अतः हमें सब से पहले तत्वज्ञान प्राप्ति हेतु ज्ञानवानों की शरण में जाना चाहिए उनसे तत्वज्ञान की प्राप्ति करनी चाहिए। उनसे पूछना चाहिए कि परमात्मतत्व क्या है? मोह और कामना से छुटकारा कैसे मिले? यदि दुर्भाग्यवश तत्वज्ञानी गुरु नहीं मिलते, तो हमें सब से बड़े गुरु भगवान की शरण में जाना चाहिए और उनके मुखारविन्द से निकली गीता को गुरु मान कर श्रद्धापूर्वक उनके बताए रास्ते का अनुकरण करना चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे तो आसुरी सम्पदा को छोड़ सकेंगे और दैवी-सम्पदा को ग्रहण करने लगेंगे जब दैवी सम्पदा ग्रहण करेंगे तो अशान्त होने से बच जाएंगे और सुख को प्राप्त करके श्री भगवान की शरण में चले जाएंगे।

।। हरि ॐ तत्सत् ।।

बाबा अमरनाथ यात्रा (राष्ट्रीय अस्मिता, एकता एवं अखण्डता की सूत्रधार)

ॐ नमो रुद्राय हरये ब्रह्मणे परमात्मने।
प्रधानपुरुषेशाय सर्गस्थित्यंतकारिणे।।

भूतभावन भगवान् शिव की लीलास्थली जम्मू कश्मीर राज्य की मिट्टी में कण-कण में शिवतत्त्व, प्रखर शैववाद एवं शैवदर्शन की अद्भुत सुगंध व्याप्त है। यहाँ के पंचतत्त्वों में शिवत्व के दिव्य स्पर्श विद्यमान है। किसी भी रूप में हम शिव, शंकर, हर, देवाधिदेव के दिव्य चमत्कारों का अनुभव यहाँ करते ही रहते हैं। उन चमत्कारों में सर्वश्रेष्ठ चमत्कार है भगवान् शिव का 'हिमलिङ्ग' के रूप में स्वयं स्थापित होना। आज यह तथ्य सर्वविदित है कि एक समय में 2-4 अथवा 10 हजार की संख्या में आने वाले श्रद्धालु आज दस लाख के सांख्यिकीय समीकरण बना रहे हैं। श्रद्धालुओं की अगाध श्रद्धा और अनन्य भक्ति से एक ओर हमारी यह सरकार उत्साहित हैं तो वहीं भयाक्रान्त भी। एक ऐसा भय जो प्रायः भारत की दूसरी सबसे बड़ी बहुसंख्यक और जम्मू कश्मीर की एक मात्र बहुसंख्यक समाज की चिंताओं को व्यक्त करती है कि कहीं हमारे अस्तित्व को कोई खतरा तो नहीं होगा या कहीं हमारे धर्म की भावनाएं तो आहत नहीं होंगी या कहीं यह यात्रा हमारे धर्म की भावनाओं के खिलाफ तो नही है? ऐसे अनगिनत कुत्सित विचार अनन्य जघन्य दुरात्माओं के चित्त को आन्दोलित कर रहे होंगे।

किन्तु जब ईश्वर अपनी माया स्वयं रचते हैं तो वे अपने भक्तों को आश्रय देते हैं। हम बाबा अमरनाथ यात्रा के सम्बंध में जितना अध्ययन कर चुके हैं वह पर्याप्त नहीं है। सर्वप्रथम हम बाबा अमरनाथ के इतिहास को धर्म, संप्रदाय एवं आध्यात्मिक मान्यताओं के आधार पर परिभाषित करते हैं तो कुछ यह तथ्य प्रस्तुत है:-

बाबा अमरनाथ यात्रा (संक्षिप्त परिचय) :- भारतीय धर्म एवं संस्कृति के श्रेष्ठतम ग्रन्थों वेदों-पुराणों में भगवान् शिव की अन्यान्य लीलाओं का वर्णन है जिसके अन्तर्गत शिवलिङ्ग पूजा एक प्रधान क्रिया है। शिवलिङ्ग पूजा शैवमतानुयायी तथा बहुत संख्या में गृहस्थों का परम धर्म था, इसी धारणा से जहाँ कहीं भी कोई वृक्ष, पत्थर, पर्वत, शैलकूट यदि लिङ्ग की आकृति धारण किए हुए दिखता था तो उसे भगवान् शिव का प्रतीक मानकर पूजा जाता था। किन्तु इनमें सबके साथ कुछ-न-कुछ कथाएँ, आख्यायिकाएँ एवं किंवदन्तियों का पुटस्पर्श अवश्य होता है। बाबा अमरेश्वर या अमरनाथ का प्राकट्य कब हुआ? इसका इतिहास कितना प्राचीन है? आदि प्रश्नों का उत्तर यदि हम यह दें कि यह मात्र कुछ सौ वर्षों पहले ही प्रकट हुआ है तो यह तथ्य सन्देहास्पद भी है और हास्यास्पद भी।

लेखक
पं० उपेन्द्र भार्गव
सह-सम्पादक

जहाँ तक श्रुति के अनुसार कहें तो एक तो यह तथ्य है कि लगभग 350 से 400 वर्ष वर्ष पूर्व किसी चरवाहे ने अपनी भेड़ों को खोजते हुए यह हिमलिङ्ग सर्वप्रथम देखा था। और दूसरी मान्यता के अनुसार बूटा मलिक नामक किसी मुस्लिम व्यक्ति (चरवाहे) ने सर्वप्रथम इस अद्भुत हिमलिङ्ग के दर्शन किए और अन्य लोगों को इसके प्राकट्य के बारे में बताया तब से इस यात्रा का सूत्रपात हुआ।

'अमरनाथ यात्रा', पौराणिक सन्दर्भ– यह सर्वविदित एवं सर्वमान्य तथ्य है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रखर शैवदर्शन के पुरोधाओं ने एक स्वतन्त्र शिवतत्व, अद्वैतवाद का साम्राज्य विस्तृत किया। इसी के अन्तर्गत जहाँ-जहाँ पुराण प्रसिद्ध शिवलिंगों की स्थापना की गई वहाँ-वहाँ शैववाद भी पहुंचा। विशेष रूप से भगवान् शिव के दिव्यशक्तिस्रोत हैं द्वादश ज्योतिर्लिंग। यथा–

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वर।।

इन्हीं में से चतुर्थ है ॐकार में स्थित अमलेश्वर शिव। इन्हें अमरेश्वर शिव भी कहा जाता है। यहाँ ध्यातव्य यह है कि हिमालय पर ॐकार पर्वत भी विद्यमान है जिसका क्षेत्र अति विस्तीर्ण बताया गया है। यदि हम सूक्ष्मावलोकन करें तो द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से चौथा दिव्य ज्योतिर्लिङ्ग अमरेश्वर लिङ्ग ही है जो बाबा अमरनाथ के रूप में प्रसिद्ध है यह विषय वस्तुतः विद्वानों में भेदोत्पन्न भी करता

है क्योंकि मध्यप्रदेश में इन्दौर के समीप नर्मदा नदीके तट पर भी ॐकारेश्वर महादेव हैं जिन्हें ज्योतिर्लिङ्ग कहा गया है। किन्तु कुछ विद्वानों का यह स्वतन्त्र मत है कि अमरेश्वर शिव बाबा अमरनाथ ही है। इसी प्रकार का आशय स्कन्दपुराण में 'माहेश्वरखण्ड अरुणाचल माहात्म्यखण्ड' में भी उल्लिखित है। यहाँ शिव के विभिन्न तीर्थों की महिमा की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि **"अमरेश तीर्थ भी सब पुरुषार्थों का साधक बताया गया है, वहाँ ॐकार नाम वाले महादेव जी और चण्डिका नाम से प्रसिद्ध पार्वती जी निवास करती है।"**

अब हम एक अन्य दृष्टि से यह देखें कि जम्मू कश्मीर के इतिवृत्त में शिवशक्ति और लिङ्गपूजा का क्या महत्त्व है? सर्वप्रथम यह ध्यातव्य है कि जम्मू कश्मीर संस्कृत कवियों की उपासना स्थली रही है। यहाँ कल्हण, बिल्हण से लेकर भगवान् आदिशङ्कराचार्य तक भगवती शारदा की साधना करते रहे। पाक अधिकृत कश्मीर का शारदापीठ और श्रीनगर का शङ्कराचार्य मन्दिर इसका जीवन्त प्रमाण है। इन सभी ने जहाँ-जहाँ अपने काव्यों में हिमगिरि, हिमालय, कैलास, नगाधिराज, पर्वतराज आदि स्थानों का संकेत किया है वहाँ भगवान् शिव का अभिनंदन निश्चित रूप से किया है। महाकवि कालिदास ने तो अपना प्रथम काव्य ही भगवान् शिव को अर्पित कर दिया था। उन्होंने 'कुमारसंभवम्' महाकाव्य के लेखनारंभ में नगाधिराज हिमालय की स्तुति की है–

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।"(कुमारसंभवम् 1-1)

इसी तरह से अन्य कवियों आनन्दवर्धन, वामन, अभिनव गुप्त, उद्भुत, रुद्रट, कल्हण आदि ने भी भगवान् शिव और हिमालय के सन्दर्भ में अपनी लेखनी को गतिशीलता दी थी। काश्मीर शैवदर्शन का प्रवर्तन एक स्वतन्त्र दर्शन का परिचायक है। सदियों पूर्व से ही भगवान् शिव के गणों के नामों के आधार पर जम्मू कश्मीर राज्य के नगरों महानगरों का नामकरण हुआ है और आज भी वही नाम जीवन्त है। उदाहरणस्वरूप अनन्तनाग, शेषनाग, श्रीनगर आदि। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान् शिव ने देवी पार्वती को अमरकथा सुनाने का निश्चय किया तब उन्होंने अपने समस्त गणों को पीछे छोड़ दिया और अमरनाथ गुफा की ओर बढ़ते गये। जहाँ अनन्त नामक नाग को छोड़ा वह स्थान अनन्तनाग और जहाँ शेष नामक नाग को छोड़ा वह स्थान शेषनाग नाम से विख्यात है। इसी प्रकार जहाँ उन्होंने अपने नंदी बैल को छोड़ा वह स्थान बैलग्राम हुआ और बैलग्राम से अपभ्रंश होकर पहलगाम बना। अभिप्राय यह है कि जिस स्थान पर अमरेश्वर ने अमरकथा सुनाई वह स्थान जनशून्य था। फलस्वरूप इन नगरों के नामों से ही हमें शिवसायुज्य का आभास आज तक हो रहा है यही उस अमरकथा का वास्तविक प्रभाव है। एक अन्य प्रमाण देखें तो महाभारत में अनुशासन पर्व में वर्णन है कि भगवान् श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक जाम्बवती को कोई संतान नहीं थी उन्होंने श्रीकृष्ण से निवेदन किया कि आप मेरे लिए पुत्र प्राप्ति हेतु भगवान् शिव की आराधन कीजिए। तब श्रीकृष्ण ने भी हिमालय की ओर जा कर शिव की आराधना के माध्यम से पुत्रों को प्राप्त किया था।

सनातनधर्म में लिङ्ग पूजा और अमरनाथ– लिङ्ग पुराण में एक कथा के अन्तर्गत 74वें अध्याय में बताया गया है कि भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से विश्वकर्मा ने देवताओं की पूजा के योग्य विविध प्रकार के लिङ्गों को बनाकर उन्हें देवताओं को प्रदान किया–

लिङ्गानि कल्पयत्वैवं स्वाधिकारानुरुपतः।
विश्वकर्मा ददौ तेषां नियोगाद्ब्रह्मणः प्रभोः॥ (लिं.म.पु., 74-01)

और फिर इस प्रकार विश्वकर्मा ने समस्त देवी-देवताओं को बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से निर्मित शिवलिङ्ग प्रदान किए। विष्णु को इन्द्रनील से बना, इन्द्र को पद्मराग और विश्रवस के पुत्र ने स्वर्णलिङ्ग आदि की पूजा की। इस प्रकार समस्त देवी-देवताओं ने ही सर्वप्रथम ब्रह्मा की आज्ञा से सोना, चाँदी, ताँबा, मिट्टी (पार्थिव), लोहा, स्फटिक, मोती, त्रिधातु, बालू (रेत), काष्ठ (लकड़ी), मरकत, भस्म, बेलवृक्ष, गोबर, कुशा, रत्न, चन्दन शीशा (पारद) आदि बहुमूल्य धातुओं से निर्मित शिवलिङ्गों की पूजा की।

पुराणसम्मतवचन के अनुसार प्रशस्त एवं परम पुण्यफल देने वाले शिवलिङ्गों को छः प्रकार का बतलाया है जो कि विभिन्न द्रव्यों एवं धातुओं के संयोग से बने हैं।

षड्विधं लिङ्गमित्याहुर्द्रव्याणां च प्रभेदतः।
तेषांभेदाश्चतुर्युक्तचत्वारिंशदिति स्मृताः॥ (लिं.म.पु., 74-13)

तदनन्तर वे छः प्रकार के लिङ्गों के क्रमशः चालीस विभाग हैं। यहाँ क्रमशः छः प्रकार के लिङ्गों का विस्तृत रूप से वर्णन भी किया गया है :-

शैलजं प्रथमं प्रोक्तं तद्धि साक्षाच्चतुर्विधम्।
द्वितीयं रत्नजं तच्च सप्तधा मुनिसत्तमाः॥

तृतीयं धातुजं लिङ्गमष्टधा परमेष्ठिनः।
तुरीयं दारूजं लिङ्गं तत्तु षोडशधोच्यते॥
मृण्मयं पञ्चमं लिङ्गं द्विधा भिन्नं द्विजोत्तमाः।
षष्ठं तु क्षणिकं लिङ्गं सप्तधापरिकीर्त्तितम्॥ (लिं.म.पु., 74-14,15,16)

उपरोक्त प्रमाणों से निम्नलिखित छः प्रकार के शिवलिङ्गों के भेद स्पष्ट होते हैं–

1. **शैलज** – पत्थर से निर्मित।
2. **रत्नज** – हीरे, मोती, पुखराज आदि से निर्मित।
3. **धातुज** – सोने, चाँदी, ताँबा, लोहा, पारदादि से निर्मित।
4. **दारूज** – लकड़ी, वृक्षों, अर्क, बेलादि से निर्मित।
5. **मृण्मय** – लाल, काली, सफेद मिट्टी से निर्मित।
6. **क्षणिक** – दही, घी, हिम आदि से निर्मित।

यहाँ ध्यातव्य है कि बाबा अमरनाथ का स्वरूप हिममय (बर्फानी) है। अतः उन्हें क्षणिक लिङ्ग कहा जा सकता है। उनका स्वरूप दर्शन अत्यन्त अल्पकाल के लिए ही होता है अतः बाबा अमरेश्वर का दर्शन दुर्लभ है। अन्य प्रकार के शिवलिङ्गों यथा– शैलज, धातुज, रत्नज और मृण्मय आदि की प्राप्ति और दर्शन तो सरल हैं किन्तु क्षणिक शिवलिङ्ग अत्यन्त दुर्लभ और परमपुण्य फल को देने वाले हैं। लिङ्गपुराण के अनुसार क्षणिक शिवलिङ्ग मोक्षप्रदान करने वाला है। हिन्दू धर्म के अनुयायियों को लिङ्गमहापुराण में निर्देशित किया गया है कि **"जो व्यक्ति स्कन्द और उमा सहित कुन्द के पुष्प के समान या दूध के समान सफेद शुभ लिंग को विधानपूर्वक स्थापित करता है वह मनुष्य के रूप में रुद्र हो जाता है। उस शुभ्र श्वेत लिङ्ग का दर्शन करने और स्पर्श करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सौ युगों में भी उसके पुण्य को कहना संभव नहीं है।"**

सनातनधर्मपरम्पराओं में शिवलिङ्ग को अत्यन्त पवित्र माना गया है। बाबा अमरनाथ यात्रा का उद्देश्य उस पवित्र श्वेत हिमलिङ्ग का दर्शन करना है जिसके दर्शनों से अमरत्व की प्राप्ति, मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक लिङ्ग [illegible] (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की सिद्धि हेतु प्रयास करने का उपदेश किया गया है। बाबा अमरनाथ का दर्शन चारों पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाला एवं प्रत्यक्ष रूप से मोक्ष प्रदान करने वाला है जैसा कि पुराणवाक्य है–

"दर्शनात्स्पर्शनात्तस्य लभते निर्वृतिं नराः।" (लिं.म.पु., 74-28)

प्रायः गृहस्थों के लिए चारों पुरुषार्थों का साधन अनिवार्य कहा गया है और शिवराधना से उन्हें ये चारों पुरुषार्थों का फल और सिद्धि प्राप्त हो जाती है। किन्तु मुमुझुओं को एकमात्र चतुर्थ पुरुषार्थ 'मोक्ष' का साधन ही परम अभीष्ट है इसलिए मुमुक्षुओं के लिए भी लिङ्गपूजा का विधान करते हुए कहा गया है कि–

तस्मात् सदाशिवः पूज्यः सर्वैरेव मनीषिभिः।
पूजनीयो हि सम्पूज्यो ह्यर्चनीयः सदाशिवः॥
लिङ्गरूपो महादेवो ह्यर्चनीयो मुमुक्षुभिः॥
शिवात् परतरो नास्ति भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥ (स्क.पु.,माहे.ख. 19/68, 82)

मुमुक्षुजनों को लिङ्गरूपी महादेव की आराधना करनी चाहिए, क्योंकि उनसे बढ़कर भुक्ति और मुक्ति देने वाले अन्य कोई भी देवता नहीं है। इसी तथ्य की पुष्टि महाभारत के अनुशासन पर्व में भी की गई है–

नास्ति शर्वसमो देवो नास्ति शर्वसमा गतिः।
नास्ति शर्वसमो दाने नास्ति शर्वसमो रणे॥ (महा.भा., अनु.प. 15/11)

शिवजी के समान संसार में कोई देवता नहीं। वे ही समस्त सांसारिक जीवों को सद्गति देते हैं। कल्याण और सुख देने में शिवजी से बढ़कर कोई दयालु नहीं और युद्ध करने में भी उनसे बढ़कर कोई पराक्रमी नहीं। लिङ्ग पूजा के फल का विवेचन करते हुए भृङ्गीश संहिता में कहा गया है कि–

प्रणम्या विधिवद् भक्त्या स्वधालिङ्गं सनातनम्–
नरो न लिप्यते पापैः कोटि जन्म समुद्भवैः॥

विधिपूर्वक भक्ति से सनातन स्वधा लिङ्ग को प्रणाम कर मनुष्य करोड़ों जन्म में पैदा हुए पापों से लिप्त नहीं होता। अर्थात् वह निष्पाप हो जाता है। समस्त प्रकार के शिवलिङ्गों में विशिष्ट स्थान रखने वाले बाबा अमरनाथ (अमरेश्वर शिव) की [illegible] करने से ही व्यक्ति समस्त पापों से मुक्त हो

जाता है–

दर्शनात्स्पर्शनाच्चापि पूजानाच्चापि वन्दनात्।
अमरेशस्य लिङ्गस्य मुच्यते सर्वकिल्विषैः॥ (भृङ्गीश संहिता)

अतः यह कथन करना श्रेयस्कर है कि बाबा अमरनाथ रूपी हिमलिङ्ग परम पवित्र है और हिन्दू धर्म में वर्णित लिङ्गपूजा विधियों में सर्वाधिक पुण्य फल देने वाला है। इसका महत्त्व भी अनिर्वचनीय है।

अमरनाथ यात्रारंभ एवं समाप्तिकाल– वैदिक धर्म में प्रवर्तित पूजाविधियों के अनुसार शिवाराधना हेतु श्रावणमास श्रेयस्कर होता है। और अमरनाथ यात्रा भी गुरुपूर्णिमा से आरंभ करके श्रावण पूर्णिमा तक चलती है। इस सम्बंध में भृङ्गीश संहिता का वचन है–

यतः स्वं दर्शयामास श्रावण्यां च हरः स्वयम्।
ततश्च कथिता यात्रा श्रावण्यां पुण्यदायिनी॥
श्रावणे शुक्ल पक्षे तु यात्रां कृत्वा विधानतः।
यः प्रपश्येत्पूर्णिमायां स्वधालिङ्गं सनातनम्।
याति शैवपदं सोऽपि पशुपाशविवर्जितः॥ (भृङ्गीश संहिता)

महादेव ने श्रावणी के दिन दर्शन दिए, इसीलिए श्रावणी में पुण्यदायिनी यात्रा कही गई है। श्रावण शुक्ल पक्ष में जो विधिपूर्वक यात्रा करके पूर्णिमा के दिन सनातन स्वधालिङ्ग के दर्शन करे वह भी पशुपाश से मुक्त होकर शैव पद को प्राप्त करता है। इस प्रकार शास्त्रानुसार धर्मशास्त्रों के वचनों से श्रावण मास में ही यात्रा करना श्रेष्ठ कहा गया है। अमरनाथ यात्रा के प्रकारों का विवेचन भी भृङ्गीश संहिता में किया गया है और इस यात्रा का फल भी कहा गया है–

त्रयोविंशविधा यात्रा स्मृता ह्यमरनाथगा।
एवं कृत्वा नरो यात्रां पश्येल्लिङ्गरसात्मकम्।
स याति शिव सायुज्यं यत्र नास्ति कृताकृतम्। (भृङ्गीश संहिता)

"श्रीअमरनाथ जाने वाली 23 प्रकार की यात्रा कही गई है, इस प्रकार मनुष्य यात्रा कर रसात्मक लिङ्ग के दर्शन करे तो शिवसायुज्य को पता है जिसमें कृत-अकृत नहीं है।"

वर्तमान दशा एवं दिशा– अमरनाथ यात्रा को लेकर प्रतिवर्ष किसी न किसी विवाद को जन्म देकर यह दर्शाने का प्रयास किया जाता है कि यह यात्रा घाटी (कश्मीर) के लिए सबसे बड़ा सरदर्द है।

पहले यह यात्रा एक माह की होती थी फिर कालान्तर में इसे बढ़ाकर दो माह कर दिया गया। कुछ तुच्छ मानसिकता के व्यक्तियों के विरोध करने पर भी जम्मू कश्मीर उच्च न्यायालय ने हिन्दू धर्म की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इस यात्रा को दो मास तक जारी रखने की अनुमति प्रदान की। किंतु यह इस विवाद का स्थायी समाधान नहीं है। हमें चाहिए कि यात्रारंभ करने से लेकर यात्रा समाप्ति तक का निर्धारण एक विद्वन् मंडल द्वारा किया जाए जिसमें धर्माचार्य, संस्कृत भाषा के विद्वान, ज्योतिष विद्या विशारद, समाजसेवक आदि हिन्दू धर्म के विशेषज्ञों एवं बुद्धिजीवियों की एक स्वतंत्र समिति इस यात्रा के आरंभ एवं अवसान का निर्धारण करे।

धार्मिक यात्राओं, कर्मकाण्डों, अनुष्ठानों एवं किसी भी प्रकार की हिन्दू धर्म की धार्मिक गतिविधियों को करने हेतु जिस प्रकार हम अपने धर्माचार्यों को सर्वेसर्वा मानते हैं उसी प्रकार अमरनाथ यात्रा के विषय में भी होना चाहिए। इस यात्रा हेतु एक धर्मपीठ या धर्मप्रचार परिषद् हो जो कि प्रत्येक श्रद्धालु को बाबा अमरनाथ श्राइन बोर्ड से जोड़ने का कार्य करे। भारत के अन्य राज्यों में भी **"हज हाऊस"** की तरह **"अमरनाथ हाऊस"** की स्थापना का प्रावधान होना चाहिए।

अमरनाथ यात्रारंभ और यात्रा समाप्ति के निर्णय में शासकीय हस्तक्षेप को पूर्णतः समाप्त किया जाए क्योंकि यह हमारी अपनी धार्मिक भावनाओं से एवं आस्था से जुड़ा विषय है अतः इसका निर्णय पूर्णतः हमारे धर्म की रीतियों, परम्पराओं के आधार पर ही होना चाहिए न कि सरकार की सुविधा के अनुसार। क्योंकि सरकार अपनी इच्छा से **'ईद'** और **'रमजान'** का निर्धारण नहीं कर सकती। जिस प्रकार अन्य धर्मों के लोगों को उनके धार्मिक कार्यों हेतु पूर्ण स्वायत्तता दी जाती है उसी प्रकार हिन्दू धर्म के अनुष्ठानों, व्रत-पर्वादि तथा यात्राओं के निर्धारण पर बलात् किए जा रहे योजनाबद्ध **'शासकीय नियन्त्रण'** पर अंकुश लगना चाहिए।

निष्कर्ष– उपरोक्त विवेचनाओं से जो प्रधान तथ्य स्पष्ट हो रहे हैं वे इस प्रकार हैं–

1. बाबा अमरनाथ का हिमलिङ्ग एवं गुफा की प्रामाणिकता अत्यन्त प्राचीन है न कि अर्वाचीन।
2. बाबा अमरनाथ का महत्त्व हिन्दू समाज के लिए धार्मिक भावना एवं

अगाध आस्था से ओतप्रोत है अतः हिन्दू भावनाओं का पूर्णतः सम्मान होना चाहिए।

3. प्रत्येक वर्ष की तरह सरकारी नियन्त्रण न हो सके अतः यथाशीघ्र धर्मप्रचार परिषद् का गठन किया जाए।
4. भले ही अमरनाथ का इतिहास अत्यन्त प्राचीन न हो किन्तु वह शिवलिङ्ग पूजा विधि, लिङ्गायत पूजा विधि का ही एक अंग है, अतः इसकी पूजा हेतु समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
5. यात्रा कर रहे श्रद्धालुओं को बाबा अमरनाथ का पूर्ण इतिहास पूजाविधियाँ, स्तोत्र आदि दाक्षा के रूप में दिये जाने चाहिए ताकि उनकी श्रद्धा का संरक्षण हो सके एवं प्रदेश से बाहर समुचित धर्मप्रचार भी हो सके।

बाबा अमरनाथ (अमरेश्वर शिव) की यात्रा न केवल एक धार्मिक यात्रा है अपितु यह यात्रा जम्मू कश्मीर राज्य को भारत का अभिन्न अंग बनाये रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरणस्वरूप यात्रा पर जाने वाले समस्त भक्त हिन्दू सिख, जैन एवं बौद्धादि होते हैं किन्तु उन्हें बाबा के दरबार तक ले जाने वाले समस्त स्थानीय लोग मुस्लिम समाज के होते हैं। वे भी अपना दुःख दर्द भूलकर बाबा के भक्तों को उनकी सेवा में ले जाते हैं। इस प्रकार यह यात्रा भले ही आर्थिक रूप से ही सही किन्तु हिन्दू एवं मुस्लिम तथा शेष भारत और भारत के सिरमौर राज्य जम्मू कश्मीर की एकता व अखण्डता रूपी सद्भावना का ज्वलन्त उदाहरण है। इस सद्भावना यात्रा से प्रेरणा लेते हुए केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार को चाहिए कि वह इस यात्रा के माध्यम से राष्ट्रीय अस्मिता, एकता एवं अखण्डता की ज्योति को प्रज्वलित करे। समस्त पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों एवं वैमनस्यता को भुलाकर यह समय है एक आदर्श स्थापित करने का। अतः हम भारत के बुद्धिजीवियों, कलाकारों, साहित्यकारों, पत्रकारों, दार्शनिकों, लेखकों, समाजसेवकों, युवकों एवं राजनैतिक कर्णधारों से अपील करते हैं कि वे इस यात्रा को मात्र धार्मिक यात्रा समझकर इसके प्रति षड्यन्त्र करने वालों का तिरस्कार करें और इसे राष्ट्रीय भावना को बढ़ाने के माध्यम के रूप में देखें तथा भरपूर प्रोत्साहन दें।

ॐ शिवमुद्दिश्य यद्दत्तं स्वर्गे मर्त्ये च यैर्नरैः।
तत्सर्वं त्वक्षयं विद्यान्निश्छिद्रं कर्म चोच्यते॥

दशावतारस्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्। विहितवहित्रचरित्रमखेदम्।
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥१॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे। धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे॥२॥

वसति दशनखिरे धरणी तव लग्ना। शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे॥३॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्। दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन। पदनखनीरजनितजनपावन॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे॥५॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्। स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥६॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्। दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्॥
केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे॥७॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे॥८॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्। सदयहृदयदर्शितपशुघातम्॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे॥९॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम्॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥१०॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्। शृणु सुखदं शुभदं भवसारम्।
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे॥११॥

नाग देवता– मानव जाति के संरक्षक

ॐ नमस्तेऽस्तु महादेव! कैलाशगिरिमूर्धग।
जटामुकुटशोभाढ्य! कपालाङ्कितशेखर॥
नमस्ते भगवन्देव! नमस्ते सुरपूजित।
महेशान नमस्तेऽस्तु रूरूद्राज्ञानभेदने॥

भारतीय पुराण वाङ्मय में 33 कोटि देवताओं का निर्वचन किया गया है। इनमें देवी, देवता, नाग, यक्ष, गन्धर्व आदि को पुण्यात्मा मानकर पूजा की जाती है। इसी मान्यता के साथ-साथ भारत के विभिन्न क्षेत्रों का सम्बंध देवविशेष से भी है। यथा महाराष्ट्र में गणेशोत्सव, बंगाल में दुर्गोत्सव, केरल में मलयप्पा स्वामी (कुमार कार्तिकेय), तिरूपति (आंध्र प्रदेश) में तिरुमलस्वामी के रूप में भगवान् वेङ्कटेश्वर (विष्णु), उड़ीसा में जगन्नाथस्वामी (श्रीकृष्ण), उत्तर प्रदेश में श्रीराम (अयोध्या) एवं श्रीकृष्ण (मथुरा) में विशेष रूप से पूजे जाते हैं। यद्यपि उपरोक्त समस्त देवगण अलौकिक एवं अद्वितीय शक्तियों के स्वामी हैं और उन्हें परमात्मतत्त्व के रूप में ही मान्यता प्राप्त है किन्तु इनकी ईश्वरत्वसिद्धि मनुष्य का अवतार लेने के उपरान्त ही हुई है। दूसरा पक्ष है क्षेत्राधिष्ठित देवताओं का जिनमें लोकपाल या क्षेत्रपाल अथवा ग्राम देवता, कुलदेवता या स्थानदेवता का विशेष महत्त्व है। राजस्थान, गुजरात सहित देश के कई प्रदेशों में वैदिक देवताओं की अपेक्षा इन लौकिक देवताओं की पूजा अधिक प्रचलित है। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्धि नागपूजा की ही है क्योंकि नाग देवता को कहीं कुलदेवता तो कहीं ग्रामदेवता और कहीं-कहीं स्थानदेवता के रूप में अनादिकाल से पूजा जा रहा है। विशेष रूप से जम्मू कश्मीर राज्य में शिवतत्त्व, शैवागम एवं शैवदर्शन की प्रधानता होने से भगवान् शिव के प्रधान अङ्गरक्षकों में नागदेवता सर्वश्रेष्ठ है अतः यहाँ की भूमि में नागपूजा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है।

भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में नागपूजा के प्रमाण कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक मिलते हैं। दक्षिण भारत में और उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में नागदेवताओं के कई स्थानों पर मंदिर मिलते है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारत के विभिन्न भागों में नागों का निवास था। इसके अन्य प्रमाणों पर दृष्टिपात करें तो विभिन्न नगरों के नाम भी नागों के आधार पर ही हैं; यथा– 1. नागपुर (महाराष्ट्र), 2. उरगापुर, 3. नागारखण्ड, 4. नागबनी (जम्मू एवं कश्मीर), 5. अनंतनाग (जम्मू व कश्मीर) 6. शेषनाग (जम्मू व कश्मीर), 7. नागालैंड, 8. भागसूनाग (हिमाचल) आदि। इनमें शेषनाग अमरनाथ यात्रा मार्ग में स्थान विशेष का नाम है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में नागालैंड एक ऐसा स्थान है जो नागवंशियों का मुख्य स्थान माना गया है। महाभारत के कथानक के अनुसार नागसम्राट की कन्या उलुपी से अर्जुन का विवाह तब हुआ जब वह उत्तरपूर्व की यात्रा पर था। नागालैंड में स्थित मणिपुर स्थान भी नागमणि की ओर संकेत करता है अतः इसका सीधा सम्बंध नागों से है। भारतीय पुराण परम्परा में प्रसिद्ध नागों का वर्णन करते हुए डॉ. अनन्तराम शास्त्री लिखते हैं– "हिन्दी साहित्य में नागों की अष्टकुली का निर्देश है जिसमें 1. **शेष**, 2. **वासुकि**, 3. **कम्बल**, 4. **कर्कोटक**, 5. **पद्म**, 6. **महापद्म**, 7. **शंख**, 8. **कुलिक** नागों के नाम प्रमुख है।" पुराणों के मतों का परिशीलन करने से मतान्तर का परिज्ञान होता है। इनमें कुछ नागों के नामों में भेद हैं यथा– 1. **तक्षक**, 2. **महापद्म**, 3. **शङ्ख**, 4. **कुलिक**, 5. **कम्बल**, 6. **अश्वतर**, 7. **धृतराष्ट्र**, 8. **वालाहक** नागों के नाम प्रमुख हैं। इसी प्रकार पुराणोक्त हेमाद्रिसंकल्प प्रतिज्ञा में जिन आठ महानागों का उल्लेख है वे भी कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं; यथा– 1. **अनन्त**, 2. **वासुकि**, 8. **तक्षक**, 4. **कुलिक**, 5. **कर्कोटक**, 6. **पद्म**, 7. **महापद्म**, 8. **शङ्ख** नाम के नाग प्रमुख माने गये हैं।

लेखक
पं. रोहित शास्त्री
सह-सम्पादक

किंबहुना अष्टनागों की ये श्रृङ्खला ही नागवंश की नींव है और इनसे ही विभिन्न नागों की प्रजातियों का उद्भव हुआ है।

वेदों में नाग

अथर्ववेद का सर्पविषनाशन सूक्त वैदिककालीन नागों (सर्पों) की प्रजातियों को सूचित करता है। यथा–

कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्र आमे शृणुतासिता अलीकाः।
मा मे सख्युः स्तामानमपिष्ठाता श्रावयन्तौ निविषे रमध्वम्॥
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च।
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिवधन्वनो विमुञ्चामि रथाँइव।
आलिगी च विलिगी च पिता च माता च।
विद्म वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ॥
उरुगूलाया.......................................।
...............................तासामरसतं विषम्॥

इस उपरोक्त मन्त्र में सर्पों की अठारह प्रकार की प्रजातियों (जातियों) का वर्णन मिलता है। उनके गुण, प्रकृति आदि के आधार पर उनका विभाजन इस प्रकार है:-

1. **कैरात** – जहाँ भीलों का निवास हो उस वन के सर्प।
2. **पृश्नि** – विशेष चिह्नों वाले सर्प।
3. **उपतृथ** – घास में रहने वाले सर्प।
4. **बभ्रु** – धूम्रवर्ण वाले सर्प।
5. **असित** – कृष्णवर्ण वाले (काले) सर्प।
6. **अलीक** – अमंगल सर्प।
7. **तैमात** – जल में रहने वाले सर्प।
8. **अपोदक** – शुष्कप्रदेश में रहने वाले सर्प।
9. **सात्रासाह** – विनाशक सर्प।
10. **मन्यु** – क्रोधसंयुत सर्प।

12. **विलगी** – शरीर से दूर भागने वाली सर्पिणी।
13. **उरुगुला** – ऊँचे-नीचे स्थान पर रहने वाली सर्पिणी।
14. **असिम्नी** – कृष्ण सर्पिणी (काली नागिन)।
15. **दद्रुषी** – जिसके काटने से त्वचा में फोड़े-फुंसी हो जाए, रक्तस्राव हो वह सर्पिणी।
16. **कर्णा** – कानों वाली सर्पिणी।
17. **श्वावित्** – जिसे कुत्ता (श्वान) काटे, वह सर्पिणी।
18. **खनित्रिमा** – गड्डे में रहने वाली सर्पिणी।

उपरोक्त सर्पों के नामों एवं उनके लक्षणों को ध्यान में रखकर समीक्षा करने पर प्रथम कैरात सर्पों का क्षेत्र नागालैण्ड हो सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र भीलजातियों के लिए सर्वदा प्रसिद्ध रहा है। इसी प्रकार असित, तैमात, अपोदक, अलिगी, असिक्नी एवं खनित्रिमा नामक नागों की प्रजातियों के प्राय: दर्शन होते हैं।

पुराणों में नाग

पौराणिक कथानकों के आधार पर भगवान् विष्णु शेषनाग की शैय्या पर शयन करते हैं, श्रीकृष्ण अवतार में कालियनाग के दमन की कथा भी अतिप्रसिद्ध है। भगवान् शिव तो आभूषणों के रूप में नागों को धारण करते हैं। नागों का सम्बंध देवी-देवताओं से होने के कारण वे हमारे लिए अति पूज्य हैं। किसी भी देवता को नागों का विनाशक नहीं माना जाता। डॉ. अनन्तरामशास्त्री 'वासुकिपुराण' के समीक्षात्मक अध्ययन में लिखते हैं कि "भारत का प्रत्येक महत्त्वपूर्ण धर्म या सम्प्रदाय नागपूजा को अपना अभिन्न अंग मानता है। कहीं पर नाग को अपने किसी पूर्वज की आत्मा के रूप में मान्यता है तो कहीं नागों को कोषों (खजानों) का संरक्षक माना गया है।" अभी हाल ही में केरल के पद्मनाभस्वामी मंदिर के खजाने के बाहरी द्वार पर विकराल नागों का चिन्ह इस धारणा को सत्य सिद्ध करता है। इस प्रकार न केवल शैवमत में अपितु वैष्णव और जैन आदि मतों में भी नागपूजा का विशेष महत्त्व है। जैनधर्म के भगवान् पार्श्वनाथ का विग्रह सर्वदा नागचिन्हित ही होता है। भगवान् शिव, भगवती दुर्गा, विघ्नेश्वर गणेश और भगवान् सूर्य भी नागों

नागेन्द्र (नागों के राजा) को जिन्होंने हार रूप में धारण कर रखा हो ऐसे भगवान् शिव की स्तुति की गई है। इसी प्रकार भगवान् गणेश की वंदना में–

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
'नागाननाय' श्रुतियज्ञ विभूषिताय..................................॥

यहाँ नाग के समान है आनन (मुख) जिसका इस प्रकार का संकेत है। किन्तु अन्यत्र –

लीलागललुलल्लोल कालव्यालविलासिने।
गणेशाय नमो नील कमलामलकान्तये॥ (लीलावती)

यहाँ विकराल 'कालव्याल' नागों से जो लीला में रत है ऐसे भगवान् गणेश की स्तुति की गई है। देवी दुर्गा के स्तवन में–

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्। (दुर्गासप्तशती)

यहाँ 'पद्मं' इस शब्द का अर्थ अष्ट नागों में से एक 'पद्म' नामक नाग से है। अतः भगवती ने भी नाग को धारण किया यह ज्ञात होता है। भगवान् सूर्य के स्तवन में–

केयूरवान् मकर कुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृत शङ्खचक्रः।

यहाँ 'शङ्खचक्रः' से शङ्ख (पाञ्चजन्य, पौण्ड्रक) आदि का ज्ञान होता है किन्तु अष्ट महानागों में से एक नाग का नाम भी 'शङ्ख' ही है। अतः यह संभव है कि भगवान् सूर्य ने 'शङ्ख' नामक नाग को धारण किया। विष्णुधर्मोत्तरपुराणों, हरिवंशपुराण एवं भागवत पुराण की मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलराम को शेषनाग के अवतार के रूप में वर्णित किया गया है। जब उन्होंने अपना शरीर त्यागा तब उनके मुख से एक महाश्वेत नाग निकला और वह समुद्र में प्रवेश कर गया। इन समस्त कथा आख्यायिकाओं से यह स्पष्ट है कि नागों से हमारा प्राकृतिक सम्बंध है।

नागों की उत्पत्ति के सम्बंध में पौराणिक प्रमाण मिलता है कि दक्ष की कन्या 'कद्रू' ने कश्यपऋषि से सहस्र (1000) नागों को जन्म दिया उनसे ही नागजातियों की उत्पत्ति हुई। कश्यपऋषि के नागपुत्रों में प्रमुख है– **अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख एवं कलिक नाग।** एक बार इन्होंने प्रजा को बहुत पीड़ित किया जिससे क्रोधित होकर ब्रह्मा ने शाप दिया कि "जनमेजय के सर्प यज्ञ में तुम सब अपने भाई गरूड़ के साथ नष्ट हो जाओगे।" भयभीत नागों ने ब्रह्मा से क्षमा प्रार्थना की और उन्होंने नागतीर्थ (संभवतः नागालैण्ड) में जाकर निवास करने की आज्ञा दी। जब वे कालान्तर में ब्रह्मा जी के पास आये उस दिन श्रावणमास की पञ्चमी तिथि थी अतः नागमुक्तिदिवस होने के कारण इस तिथि को नागपञ्चमी कहा जाता है। यहाँ प्रमुख नागों के नाम, वर्ण, जाति आदि का विवरण दिया जा रहा है जो कि अलभ्य है :–

नाम	वर्ण	जाति	दृष्टि	दिशा	चिह्न
अनन्त	शुक्ल (श्वेत)	ब्राह्मण	सम्मुख (सामने)	पूर्व	पद्म
वासुकि	रक्त (लाल)	क्षत्रिय	वामभाग (वायां)	आग्नेय	उप्पल
तक्षक	पीत (पीला)	वैश्य	दक्षिण भाग (दायां)	दक्षिण	स्वस्तिक
कर्कोटक	कृष्ण (काला)	शूद्र	पृष्ठ (पीछे)	नैर्ऋत्य	कमल
पद्मनाभ	कृष्ण	शूद्र	चञ्चल	पश्चिम	पद्म
महापद्म	पीत	वैश्य	अधोभाग (नीचे)	वायव्य	शूल
शङ्खपाल	रक्त (लाल)	क्षत्रिय	बार-बार निश्चेष्टित	उत्तर	छत्र

महाभारत के आदिपर्व में जनमेजयसर्पसत्र में वासुकि, तक्षक, ऐरावत, कौरव्य और धृतराष्ट्र वंश के अन्यान्य नागों को जनमेजय का कोपभाजन बनना पड़ा और वे जीवित जला दिए गए। वासुकि नाग की बहन के गर्भ से जरत्कारू नामक नाग के संयोग से उत्पन्न 'आस्तीक' ने समस्त नागों को जनमेजय के कोप से बचाया और उन्हें अभय प्रदान किया। वासुकि नाग सभी नागों में श्रेष्ठ हैं। भारत में जम्मू कश्मीर राज्य में सिथत चन्द्रभागा नदी के समीप भद्रवाह नामक स्थान पर 'वासुकि मन्दिर' स्थित है जिसमें वासुकिनाग का अद्भुत विग्रह विद्यमान है। भारत के निकट स्थित बालीद्वीप में वासुकिनाग को समुद्र का अधिष्ठाता देवता कहा जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण कहते हैं– "सर्पाणामस्मिवासुकिः" में सर्पों में वासुकि हूँ और "अनन्तश्चास्मि नागानां" नागों में अनन्तनाग भी में ही हूँ। समुद्रमन्थन के समय वासुकि नाग ने स्वयं को रज्जु (रस्सी) के रूप में लगाया जिससे समुद्र से 14 अमूल्य रत्नों की उत्पत्ति हुई और मानव जाति का कल्याण

हुआ। अमरकोश में वासुकि शब्द के पर्याय में सर्पराज का उल्लेख है। ऐसा माना जाता है कि नागधन्वातीर्थ में इनका निवास स्थान था इनकी पत्नी का नाम 'शतशीर्षा' था। ये ऋषि कश्यप और कद्रू के पुत्र थे। धृतराष्ट्र नामक नाग ने वासुकि को विष्णु पुराण सुनाया था। इस प्रकार इन समस्त दृष्टान्तों से सिद्ध है कि नागदेवताओं ने मानवजाति का सर्वदा कल्याण किया है।

जम्मू में नाग देवता

जम्मू शहर एवं आसपास के क्षेत्रों में भगवान् शिव की पूजा जिस-जिस स्थान पर होती है वहाँ नाग देवता अवश्य ही पूजे जाते हैं किन्तु विशेष रूप से प्रसिद्ध स्थान इस प्रकार है– 1. शिवखोड़ी, 2. भद्रवाह, 3. अखनूर, 4. जम्मू।

जम्मू की लोक परम्पराओं में मान्यता है कि वासुकि नाग की वंश परम्परा में से जम्मू एवं आसपास के क्षेत्रों में कई नागों ने अपना निवास स्थान बनाया। द्विगर्त प्रदेश (डुग्गर) के प्राचीन इतिहास में नागराज वासुकि की वंश परम्परा में काईभैड़चोरसूकालसूलूनसूधनसरमानस- रचिलकमिलकसौंगली नामक चौरासी पुत्र पौत्रों का वर्णन मिलता है। इन सब में ज्येष्ठ पुत्र का नाम है काई देव और कनिष्ठ है भैड़ देव। वासुकि नाग क्षत्रिय वर्ण के हैं और इच्छाधारी माने जाते हैं। इनके कुल के नागों की ख्याति है कि वे स्वेच्छा से मानवादि योनियों में रूप धारण करते हैं तथा जल, स्थल और नभादि में विचरण करते हैं। वासुकिवंशी नागों के जम्मू में निवास करने सम्बंधी एक दन्तकथा प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख करना यहाँ उचित होगा।

"एक बार वासुकि नाग चर्मरोग से पीड़ित हुए उनके उपचार हेतु वैद्य आये उन्होंने कहा कि यदि कोई कैलास पर्वत से नदी लेकर आये तो उसके जल में स्नान करने के उपरान्त आपका यह रोग समाप्त हो जाएगा। वैद्यराज का वचन सुनकर नागराज वासुकि ने सभा बुलाई जिसमें समस्त अष्टकुली नागों को आमन्त्रित करके कहा कि आप लोगों में से जो कोई भी कैलासपर्वत से नदी लेकर आयेगा वह पुरस्कार स्वरूप जम्मू का राज्य प्राप्त करेगा। वासुकि का यह वचन सुनकर सभी नाग विभिन्न स्थानों से होते हुए कैलास की ओर प्रस्थान कर गए।

वासुकि नाग के कनिष्ठपुत्र भैडदेव जिन्हें वासुकि का विशेष स्नेह प्राप्त था वे अपनी बुद्धिमत्ता से सर्वप्रथम नदी को अवतरित करने में सफल हुए। उन्होंने सूर्यपुत्री तवी को जम्मू की ओर प्रवाहित किया। फल स्वरूप उन्हें जम्मू का राज्य प्राप्त हुआ। जहाँ दूसरी तरफ वासुकि के वरिष्ठ पुत्र काई देव कमण्डलु में जल भर कर ला रहे थे। उन्हें लगा कि वे ही सर्वप्रथम पहुंचेंगे किन्तु तवी नदी के प्रवाह का समाचार मार्ग में ही मिलने पर वे क्षुब्ध हुए। तब उनके क्षोभ की शाँति हेतु वासुकि ने उन्हें भी नदी प्रवाहित करने की अनुमति दी जिसके परिणामस्वरूप चन्द्रभागा नदी का अवतरण हुआ। काई देव ने भैड़ देव से बलपूर्वक आधा राज्य ले लिया और दक्षिण क्षेत्र का राज्य भैड़ देव तथा उत्तरी क्षेत्र का राज्य काई देव को मिला। जैसा कि जम्मू की लोकगीतियों में भी वर्णित है–

जम्मुआं दा टिक्का भैड़े गी मिलेया, अखनूरे दा काई।
बिच तवी दे भैड़ बसदा, अखनूर बसदा काई।
बिच जम्मुआं मिट्ठा पीर बसदा, बाबै कालका माई।। (पौंगर पृ. 15)

जब वासुकि के परिवार के साथ-साथ राज्य बटा तो वासुकि को बड़ा संताप हुआ। डोगरी के कारकों में वासुकि का यह दुःख आज भी सुनाई पड़ता है:–

जम्मू दा टिक्का पैड़ गी मिलया ते अखनूरे दा राजा काई।
वण्डी दित्ता ए राज जम्मुआ दा, वासुक आखेआ न पाओ दुआई।। (कारक)

इनके अतिरिक्त अन्य जो पुत्र पौत्र जहाँ-जहाँ पहुंचे वे वहीं के निवासी हो गए। यथा सुजान देव, मिलक देव, चालदेव, सुरगल देव ने भैड़ देव की राजधानी साम्बा में निवास किया। कैलख देव ने ठठर रायपुर गाँव (दुमाना) में अपना स्थान बनाया जो कि आज भव्य रूप में विद्यमान है। अलहण देव रियासी और तुलहण देव ने कश्मीर में अपना स्थान बनाया। वर्तमान में जम्मू नगर में उत्तर की तरफ नागदेवता का एक विशाल मन्दिर विद्यमान है। मान्यता है कि ये भी वासुकि नाग के पुत्रों में से एक है। यह स्थान बाबा कैलख देव नाम से प्रसिद्ध है। इनके प्रकटीकरण की कथा भी अतीव रोचक है ।जिस समय उपरोक्त घटनाक्रम हुए उस समय बावा कैलख देव ठठर ग्राम पहुंचे थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि एक तरफ तवी नदी का प्रवाह हो गया है और दूसरी ओर चन्द्रभागा (चिनाब) भी प्रवाहित हो गई है और दोनों तरफ पर्याप्त मात्रा में जल ही जल है। भाइयों के परस्पर बँटवारे का समाचार भी उन्हें मिला। अन्ततोगत्वा उन्होंने इसी स्थान पर विश्राम करना उचित समझा। बाबा कैलख देव जी के वर्तमान निवास स्थान पर प्रकटीकरण के समय भारी

जंगल था। इस स्थान पर सेठ ब्राह्मण जाति के ग्वाले पशु चराते थे। दन्त कथा के अनुसार बावा जी प्रतिदिन इन ग्वालों के साथ कबड्डी आदि खेल खेलते, शाम को चले जाया करते थे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हो गया। ग्वालों ने अपने कबीले में चर्चा की कि एक सुन्दर युवक प्रतिदिन हमारे साथ खेलता है, उसकी टोली कभी नहीं हारती और वह बालक बड़ा शक्तिशाली है। सेठ कबीले के सरदार और विचारकों ने विचार किया कि यह युवक कौन हो सकता है? संदेह व्यक्त किया गया कि यह युवा बालक किसी दूसरे कबीले का जासूस (गुप्तचर) हो सकता है और यह जासूसी करके हमारे पशुधन को भी हानि पहुँचा सकता है। निर्णय लिया गया कि अगले दिन उस जगह को कबीले के अंगरक्षक घेर लेंगे और उस युवक की सारी गतिविधियों का जायज़ा लेंगे अथवा उसे पकड़ लेंगे। निर्णयानुसार ऐसा ही हुआ। बावा जी जब खेल समाप्त होने पर कपड़े पहनने लगे तो घेरा बन्दी करके सतर्कता से उन्हें पकड़ में लिया गया। बावा जी चमत्कारिक रूप से लुप्त हो गए। इस पर ग्वाले व दूसरे पकड़ने वाले बन्धु आश्चर्यचकित हो गए।

उसी समय आकाशवाणी हुई कि "मैं कैलख देव हूँ और नाग वंशी वासुकि नाग का बेटा हूँ। कुछ समय पश्चात् मुझे आपके गाँव रायपुर में प्रकट होना था परन्तु आप लोगों ने शीघ्रता की। आज से यह जगह मेरा निवास स्थान होगी और मुझे क्षेत्र (बनी) के रूप में भेंट करनी होगी। इस स्थान पर कोई खेती आदि नहीं कर सकता है अथवा इस पर किसी का अधिकार नहीं होगा। आज से आपका वंश मुझे कुल देव मानेगा और पूजा इत्यादि की जिम्मेदारी भी निभाएगा।" बावा जी के आदेशानुसार रकवाल राजपूत बिरादरी ने बनी की सूरत में इस जगह को बावा जी को भेंट कर दिया क्योंकि यह स्थान इस बिरादरी की के स्वामित्व की थी।

वैदिक रीति के अनुसार बावा जी के लुप्त होने के स्थान पर आकृति रूप में प्रतिकृति (मोहरा) की स्थापना की गई। इस मोहरे पर पगड़ी बाँधे आदमी, नाग और शिवलिंग आदि की मूर्तियाँ अंकित हैं। सदियों पहले प्रकटीकरण के समय से आज तक सेठ बिरादरी बावा जी की पूजा तथा इस स्थान की देखरेख की जिम्मेदारी निभा रही है।

बावा कैलख जी महाराज पुत्र दाता और दूध दाता के रूप में प्रसिद्ध देवता हैं। बावा जी निःसंतान लोगों को मन्नत माँगने पर पुत्र देते हैं। पशु धन के अभिलाषियों को दूध देते हैं अथवा पशुओं की रक्षा करते हैं। इसके अतिरिक्त बावा जी की शरण में आने वाले हर व्यक्ति की मनोकामना पूरी होने की पुष्टि प्रतिदिन श्रद्धालुओं की वाणी से होती रहती है। बावा जी के मन्दिर के साथ बावा जी का तालाब भी है। इस कैलख गंगा में स्नान करने से मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट दूर होते हैं। विशेष रूप से चर्मरोगों से निदान पाने के इच्छुओं को आकर्षक लाभ मिलता है। क्योंकि इस स्थान पर अपने पिता के चर्मरोग को ठीक करने के उद्देश्य से लाया गया जल भी उन्होंने यहीं छोड़ दिया। इस जल का घर में छिड़काव करने से धन और सुख शान्ति में वृद्धि होती है। पशुओं को पिलाने से उनकी बिमारियों का निर्वाण होता है। नागपञ्चमील (जम्मू में ऋषिपञ्चमी) को नागपूजा का वास्तविक उद्देश्य ही यह है कि हम श्रद्धापूर्वक दूध, गन्ध, अक्षत्, पुष्पादि समर्पित करके नागदेवता को प्रसन्न करें उन्हें अपना मित्र बनाएँ और उन्हें भी इस बात के लिए निर्भय करें कि हम आपके मित्र हैं।

निष्कर्ष– निष्कर्ष यह है कि सर्प, नाग हर तरह से मानवजाति के लिए उपकारी रहे हैं। हम वैदिक काल से लेकर आज तक के अन्यान्य उदाहरण, कथानक या प्रसंगों पर ध्यान दें तो ऐसे बहुत उदाहरण मिल जाएंगे जिनसे सर्पों के प्रति मानवीय क्रूरता प्रकट होती है। भारत के किसी भी कोने में कहीं भी ऐसी कथा नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि सर्पों ने कभी मानव जाति को भयभीत किया हो। आजका विज्ञान भी कृषकों, ग्रामीणों, सामाजिक संस्थाओं एवं बुद्धिजीवियों से सर्पों की रक्षा हेतु उपाय करने का आह्वान करता है। हमारे धर्मग्रन्थों ने सहस्त्रों उदाहरणों में सर्पों को मानव का अभिन्न मित्र व्यक्त किया है।

अतः हम यह संकल्प लें कि किसी भी प्रकार से सर्पों (नागों) की हत्या नहीं करेंगे। उनके प्रति क्रूरता त्यागेंगे। वे अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए कभी गलती से काटते हैं उनका स्वभाव हमलावर नहीं होता। विज्ञान तो कहता है कि 80 प्रतिशत से अधिक सर्पों में विष नहीं होता। अतः आवश्यकता है प्रकृति के और हमारे इस अभिन्न मित्र को बचाने की।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।

ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

॥ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः॥

कुम्भ महापर्व – प्रयाग तीर्थ

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।।

देवभूमि भारत के श्रेष्ठतम आयोजनों में सबसे बड़ा आयोजन है 'कुम्भ' मेले का। प्राचीन भारत की वैदिककालीन परम्पराओं का संवाहक यह 'कुम्भ' महापर्व है। इस महापर्व पर सम्पूर्ण विश्व में जहाँ-जहाँ सनातन हिन्दू धर्म के अनुयायी रहते हैं वे सभी मेले में आते है। और अमृतरूपी जल में डुबकी लगाकर स्नान करते हैं। यह मेला पूर्णतः धार्मिक आस्थाओं, परम्पराओं और संस्कृतियों को एक मंच पर इकट्ठा करने का महान् साधन है। 'कुम्भ' शब्द का अर्थ होता है कलश, घट या घड़ा और कुम्भ का एक व्यापक अर्थ ब्रह्माण्ड भी है। जिस प्रकार कुम्भ (घड़े) में जल को एकत्र किया जाता है उसी प्रकार कुम्भ मेले के माध्यम से भारतीय समाज को भी एकत्र करने का प्रयास किया गया है। यह मेला भारतीय ऋषियों द्वारा प्रवर्तित एक ऐसा उपक्रम है जिसके माध्यम से भाषा, संस्कृति, जाति, पंथ, सम्प्रदायादि को एकसूत्र में बाँधा गया है। कुम्भ मेले के सन्दर्भ में ऋग्वेद के दशम मण्डल में उल्लेख मिलता है कि "कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य स्नान, दान, होमादि के द्वारा अपने पापों को उसी प्रकार काट देता है जिस प्रकार कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है उसी प्रकार कुम्भ-पर्व मनुष्य के पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए मानसिक व शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) घड़े की तरह निजस्वरूप को नष्ट कर संसार में नवीन सुवृष्टि प्रदान करता है।"

कुम्भ-महापर्व के आरंभ से सम्बंधित कथा पुराणों में अतिप्रसिद्ध है। पुराणों के अनुसार भगवान् विष्णु की आज्ञा से देवों तथा असुरों ने मिलकर संयुक्त रूप से समुद्र मंथन किया। इस महामंथन में मन्दराचल पर्वत को मथानी (मन्थनदण्ड) और वासुकिनाग को नेती (मन्थनरज्जु) बनाया गया। फलस्वरूप समुद्र के गर्भ से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई–

1. कालकूट विष, 2. पुष्पक विमान, 3. ऐरावत हाथी, 4. पारिजात वृक्ष, 5. अप्सरा रम्भा, 6. कौस्तुभ मणि, 7. बाल चन्द्रमा, 8. कुण्डल धनुष, 9. कामधेनु गाय, 10. उच्चैश्रवा अश्व, 11. ऐश्वर्य दात्री लक्ष्मी, 12. विश्वकर्मा, 13. शाङ्र्ग धनुष, 14. अमृत कलश लिए धन्वन्तरि।

लेखक
पं. सुरेश शास्त्री
फलित ज्योतिषाचार्य

देवताओं का संकेत पाकर इन्द्र के पुत्र जयन्त अमृत कलश लेकर वहाँ से भाग निकले। दैत्यगण उनका पीछा करते हुए परस्पर युद्ध करने लगे। इस प्रकार बारह दिव्य दिनों (मनुष्यों के बारह वर्ष) तक यह युद्ध चला। इस महायुद्ध में जिन-जिन स्थानों पर अमृत कलश (कुम्भ) से अमृत की बूँदें गिरीं उन स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है। वे चार स्थान हैं–

1. प्रयागराज (इलाहाबाद) 2. हरिद्वार
3. उज्जैन 4. नासिक।

इसी बारह वर्षीय युद्ध के कारण इन स्थानों पर बारह वर्ष में कुम्भ मेले का आयोजन होता है जो लगभग ढाई महीने तक चलता है। हरिद्वार तथा प्रयाग में छः वर्ष के बाद अर्धकुम्भ का मेला भी आयोजित होता है। जब हरिद्वार में अर्धकुम्भ हो तब नासिक में कुम्भ मेला और जब प्रयाग में अर्धकुम्भ हो तब उज्जैन में कुम्भ मेला होता है।

1- कुम्भ मेला हरिद्वार– कुम्भ राशि पर बृहस्पति का और मेष राशि पर सूर्य का योग होने पर हरिद्वार में पूर्णकुम्भ मेले का आयोजन होता है।

2. प्रयाग– वृष राशि पर बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि में होने से प्रयागराज में पूर्ण कुम्भ मेले का आयोजन होता है। स्कंद पुराण में कहा गया है–

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः।। (स्कंद पुराण)

इसी प्रकार अन्यत्र भी कुम्भ पर्व योग सम्भावना का उल्लेख है—

माघे वृषगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमायां च ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके॥

माघ मास में अमावस्या तिथि पर जब सूर्य तथा चन्द्र मकर राशि में हों तथा गुरू (बृहस्पति) वृषराशि पर हों तब कुम्भ महापर्व का योग होता है।

3. उज्जैन— सिंह राशि पर बृहस्पति का और मेष राशि पर सूर्य का योग होने पर उज्जैन में पूर्ण कुम्भ मेले का आयोजन होता है। इसे सिंहस्थ कहते हैं।

4. नासिक— वृश्चिक राशि पर बृहस्पति का योग होने पर नासिक में पूर्ण कुम्भ का योग होता है।

इस प्रकार चारों स्थानों पर बारह-बारह वर्ष के पश्चात् एक महाकुम्भ पर्व होता है। महाकुम्भ पर्व का महत्त्व बतलाते हुए कहा गया है कि—

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नाने च तत्फलम्॥

हजार अश्वमेधयज्ञ करने से, सौ वाजपेय यज्ञ करने से और पृथ्वी की लक्ष (लाख) प्रदक्षिणा करने से जो फल मिलता है वह मात्र कुम्भस्नान करने से प्राप्त होता है। कुम्भ पर्व में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, राज्य, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, वेशभूषा अर्थात् पहनावा आदि सभी संदर्भों में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। साधु-संत, धनी-मानी, विद्वान्, कर्मकाण्डी, योगी, ज्ञानी, कथावाचक, तत्त्वदर्शी, सिद्ध महापुरुष, सेठ-साहूकार, भिखारी, व्यापारी, गृहस्थ, संन्यासी, ब्रह्मचारी, कल्पवासी, अधिकारी, बूढ़े, जवान, आबालवृद्धवनिता सभी का वहाँ समागम होता है। विभिन्न धर्म, संस्कृति तथा सम्प्रदायों का संगम इन कुम्भ मेलों में होता है जो एक सहज आकर्षण है।

इस बार विक्रम संवत् 2069, अर्थात् 10 फरवरी 2013 ई०, रविवार को माघ मास की (मौनी) अमावस्या को सूर्य व चन्द्रमा मकर राशि पर इकट्ठे होंगे तथा गुरू वृष राशि में संचरित होंगे। अतः प्रयागराज (इलाहाबाद) में त्रिवेणी तट पर कुम्भ महापर्व का आयोजन होगा। त्रिवेणी पर प्रमुख स्नान, जप-पाठ, दानादि का विशेष पुण्यकाल सूर्योदय होने से चतुर्घटिका (चार घड़ी) पूर्व, अरुणोदय काल से अर्थात् प्रातः 5 बजकर 5 मिनट से आरम्भ होकर मध्याह्न 12 बजकर 50 मिनट तक रहेगा।

कुम्भ महापर्व की मुख्य तिथियाँ

1. **प्रथम शाही स्नान (माघ संक्रान्ति)** — पौष शुक्ल तृतीया, सोमवार 14 जनवरी, 2013 ई०।
2. **द्वितीय स्नान** — पौष शुक्ल एकादशी, मंगलवार, 22 जनवरी, 2013 ई०।
3. **तृतीय स्नान** — पौष शुक्ल पूर्णिमा, रविवार, 27 जनवरी, 2013 ई० रविपुष्य योग।
4. **चतुर्थ स्नान** — षट्तिला एकादशी, बुधवार, 6 फरवरी 2013 ई०।
5. **पंचम स्नान (प्रमुख-शाही स्नान)** — माघ मौनी अमावस्या, रविवार, 10 फरवरी 2013 ई०।
6. **षष्ठ स्नान (तृतीय शाही स्नान)** — वसन्त पंचमी, गुरुवार, 14 फरवरी 2013 ई०।
7. **सप्तम स्नान** — जया एकादशी, गुरूवार, 21 फरवरी, 2013 ई०।
8. **अष्टम स्नान विधि** — माघ पूर्णिमा, सोमवार, 25 फरवरी 2013 ई०।

कुछ आवश्यक सुधार

मेलों पर प्रायः सैकड़ों लुच्चे-लफंगे धन जन का अपहरण करते रहते हैं। स्त्रियों और बच्चों को बहकाने वालों की वहाँ कमी नहीं रहती। भगवे वेषधारियों में भी ऐसे दुराचारियों की एक बड़ी संख्या छिपी रहती है। अशिक्षित दम्भी तथाकथित कुछ तीर्थ पुरोहित भी उचित और अनुचित उपायों से यात्रियों को ठगते रहते हैं। मठ और मन्दिर भी राष्ट्रहित में अपना पूर्ण कर्त्तव्य नहीं निभा रहे हैं। प्राचीन युग में सदा नग्न तपस्या करने वाले दिगम्बर महात्मा सबके लिए पूज्य हैं, परन्तु आज सदा कपड़े पहनने वाले साधु तीर्थ पर आकर नंगे हो बड़ी शाहियों में सम्मिलित हो जाते हैं। ऐसे प्रपंची नकली नंगे साधुओं के विरुद्ध जनता को तीव्र आन्दोलन करना चाहिए। भिखारियों को भी सड़कों पर भीख मांगने से हटाना चाहिए। ऐसे ही समाज सुधार सम्बंधी कार्यों को क्रियात्मक रूप देने से हमारे राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। सदाचार और श्रद्धापूर्वक हरिद्वार गंगा जी में स्नान करें। इसलिए कुंभ पर्व पर उपस्थित यात्रीगण व्रत, तप, जप आदि शुभ कर्मों के द्वारा अपना और राष्ट्र का ऐहिक और पारलौकिक कल्याण करें, यही हमारी जनता जनार्दन से प्रार्थना है।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टा मिनटों में (सन् 2012 – 13 ई०)

सूर्य राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ० मि०
31	मार्च	मीन	रेवती	प्रात: 05:52
13	अप्रैल	मेष	अश्विनी	सायं 07:17
27	अप्रैल	मेष	भरणी	11:00
10	मई	मेष	कृत्तिका	अर्धरात्रोपरि 05:15
14	मई	वृष	कृत्तिका	सायं 04:10
24	मई	वृष	रोहिणी	रात्रि 01:22
07	जून	वृष	मृगशिरा	रात्रि 11:18
14	जून	मिथुन	मृगशिरा	रात्रि 10:45
21	जून	मिथुन	आर्द्रा	रात्रि 10:14
05	जुलाई	मिथुन	पुनर्वसु	रात्रि 09:50
16	जुलाई	कर्क	पुनर्वसु	रात्रि 09:33
19	जुलाई	कर्क	पुष्य	रात्रि 09:20
02	अगस्त	कर्क	आश्लेषा	रात्रि 08:15
16	अगस्त	सिंह	मघा	सायं 05:38
30	अगस्त	सिंह	पूर्वाफाल्गुनी	दिवा 01:55
13	सितम्बर	सिंह	उत्तरा फाल्गुनी	दिवा 07:45
16	सितम्बर	कन्या	उत्तर फाल्गुनी	सायं 05:52
26	सितम्बर	कन्या	हस्त	रात्रि 11:15
10	अक्टूबर	कन्या	चित्रा	दिवा 12:15
17	अक्टूबर	तुला	चित्रा	प्रात: 05:49
23	अक्टूबर	तुला	स्वाती	रात्रि 10:41
06	नवम्बर	तुला	विशाखा	प्रात: 06:55
16	नवम्बर	वृश्चिक	विशाखा	प्रात: 05:35
19	नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा	दिवा 12:52
02	दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा	सायं 05:15
15	दिसम्बर	धनु	मूल	रात्रि 08:13
28	दिसम्बर	धनु	पूर्वाषाढ़ा	रात्रि 10:25

सन् 2013 ई.

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ० मि०
10	जनवरी	धनु	उत्तराषाढ़ा	अर्धरात्रोपरि 12:25
14	जनवरी	मकर	उत्तराषाढ़ा	प्रात: 06:56
23	जनवरी	मकर	श्रवण	अर्धरात्रोपरि 02:42
06	फरवरी	मकर	धनिष्ठा	प्रात: 05:56
12	फरवरी	कुंभ	धनिष्ठा	रात्रि 07:58
19	फरवरी	कुंभ	शतभिषा	दिवा 10:24
04	मार्च	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	सायं 04:50
14	मार्च	मीन	पूर्वाभाद्रपद	सायं 04:54
17	मार्च	मीन	उ.भा.	अर्धरात्रोपरि 01:12
31	मार्च	मीन	रेवती	दिवा 12:10

मंगल राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ० मि०
10	मई	सिंह	पूर्वा फाल्गुनी	08:52
14	जून	सिंह	उत्तरा फाल्गुनी	रात्रि 11:45
22	जून	कन्या	उत्तरा फाल्गुनी	रात्रि 11:59
11	जूलाई	कन्या	हस्त	06:40
03	अगस्त	कन्या	चित्रा	11:45
14	अगस्त	तुला	चित्रा	09:45
24	अगस्त	तुला	स्वाती	रात्रि 11:16
14	सितम्बर	तुला	विशाखा	06:09
28	सितम्बर	वृश्चिक	विशाखा	रात्रि 08:41
03	अक्तूबर	वृश्चिक	अनुराधा	दिवा 03:15
22	अक्तूबर	वृश्चिक	ज्येष्ठा	07:15
09	नवम्बर	धनु	मूल	09:39
27	नवम्बर	धनु	पूर्वाषाढ़ा	अर्धरात्रोपरि 01:06
14	दिसम्बर	धनु	उत्तराषाढ़ा	08:27
18	दिसम्बर	मकर	उत्तराषाढ़ा	दिवा 03:15
31	दिसम्बर	मकर	श्रवण	10:00

सन् 2013 ई.

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ० मि०
17	जनवरी	मकर	धनिष्ठा	08:03
25	जनवरी	कुंभ	धनिष्ठा	सायं 06:30
03	फरवरी	कुंभ	शतभिषा	प्रात: 04:55
19	फरवरी	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	अर्धरात्रोपरि 02:34
04	मार्च	मीन	पूर्वाभाद्रपद	रात्रि 08:35
08	मार्च	मीन	उत्तराभाद्रपद	अर्धरात्रोपरि 03:05
26	मार्च	मीन	रेवती	08:12

बुध राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ० मि०
13	अप्रैल	मीन	उत्तराभाद्रपद	रात्रि 09:32
26	अप्रैल	मीन	रेवती	सायं 06:26
05	मई	मेष	अश्विनी	रात्रि 09:02
13	मई	मेष	भरणी	दिवा 01:06
20	मई	मेष	कृत्तिका	07:35
21	मई	वृष	कृत्तिका	रात्रि 09:48
26	मई	वृष	रोहिणी	दिवा 01:04
01	जून	वृष	मृगशिरा	दिवा 03:13
04	जून	मिथुन	मृगशिरा	सायं 06:32
07	जून	मिथुन	आर्द्रा	अर्धरत्रोपरि 01:15
15	जून	मिथुन	पुनर्वसु	07:46
21	जून	कर्क	पुनर्वसु	सायं 06:40
23	जून	कर्क	पुष्य	अर्धरात्रोपरि 05:30

08	जूलाई	कर्क	आश्लेषा	10:33
21	जुलाई	कर्क	पुष्य	अर्धरात्रोपरि 04:00
21	अगस्त	कर्क	आश्लेषा	06:10
29	अगस्त	सिंह	मघा	प्रातः 05:10
04	सितम्बर	सिंह	पू.फा.	अर्धरात्रोपरि 02:50
11	सितम्बर	सिंह	उ.फा.	अर्धरात्रोपरि 02:12
13	सितम्बर	कन्या	उत्तराफाल्गुनी	रात्रि 09:30
19	सितम्बर	कन्या	हस्त	दिवा 12:05
27	सितम्बर	कन्या	चित्रा	12:00
01	अक्तूबर	तुला	चित्रा	सायं 05:40
05	अक्तूबर	तुला	स्वाती	अर्धरात्रोपरि 03:29
15	अक्तूबर	तुला	विशाखा	दिवा 02:16
23	अक्तूबर	वृश्चिक	विशाखा	दिवा 02:53
26	अक्तूबर	वृश्चिक	अनुराधा	सायं 05:05
16	नवम्बर	वृश्चिक	विशाखा	दिवा 03:25
18	**नवम्बर**	**बुध**	**वक्री**	**अर्धरात्रोपरि 03:12**
18	नवम्बर	तुला	विशाखा	अर्धरात्रोपरि 03:12
06	दिसम्बर	वृश्चिक	विशाखा	09:03
09	दिसम्बर	वृश्चिक	अनुराधा	प्रातः 05:40
18	दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा	रात्रि 11:23
27	दिसम्बर	धनु	मूल	रात्रि 10:05

सन् 2013 ई.

05	जनवरी	धनु	पूर्वाषाढ़ा	दिवा 01:23
13	जनवरी	धनु	उत्तराषाढ़ा	रात्रि 01:50
15	जनवरी	मकर	उत्तराषाढ़ा	रात्रि 10:45
21	जनवरी	मकर	श्रवण रात्रि	10:25
29	जनवरी	मकर	धनिष्ठा	दिवा 03:30
02	फरवरी	कुंभ	धनिष्ठा	10:27
06	फरवरी	कुंभ	शतभिषा	प्रातः 06:20
14	फरवरी	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	रात्रि 11:00
04	मार्च	बुध	वक्री(शतभि.)	07:58(रात्रि)
01	अप्रैल	कुंभ	पूर्वाभाद्रपदा	दिवा 03:00
09	अप्रैल	मीन	पू.भा.	अर्धरात्रोपरि 01:52

बृहस्पति राशि प्रवेश

03	मई	मेष	कृत्तिका	07:49
17	मई	वृष	कृत्तिका	09:35
29	जून	वृष	रोहिणी	अर्धरात्रोपरि 04:05

शुक्र राशि प्रवेश

25	मार्च	मेष	कृत्तिका	प्रातः 5:30
28	मार्च	वृष	कृत्तिका	दिवा 02:22
08	अप्रैल	वृष	रोहिणी	08:12
25	अप्रैल	वृष	मृगशिरा	रात्रि 11:20
03	जून	शुक्र वक्री	रोहिणी	सायं 04:04
22	जूलाई	वृष	मृगशिरा	रात्रि 11:55
31	जुलाई	मिथुन	मृगशिरा	रात्रि 07:45
08	अगस्त	मिथुन	आर्द्रा	दिवा 02:02
22	अगस्त	मिथुन	पुनर्वसु	दिवा 01:07
01	सितम्बर	कर्क	पुनर्वसु	06:15
04	सितम्बर	कर्क	पुष्य	09:35
16	सितम्बर	कर्क	आश्लेषा	दिवा 02:15
28	सितम्बर	सिंह	मघा	08:45
09	अक्तूबर	सिंह	पू॰फा॰	सायं 07:45
20	अक्तूबर	सिंह	उ॰फा॰	अर्धरात्रोपरि 01:14
23	अक्तूबर	कन्या	उ॰फा॰	रात्रि 07:55
31	अक्तूबर	कन्या	हस्त	अर्धरात्रोपरि 02:36
11	नवम्बर	कन्या	चित्रा	अर्धरात्रोपरि 00:45
17	नवम्बर	तुला	चित्रा	10:55
22	नवम्बर	तुला	स्वाती	रात्रि 08:35
03	दिसम्बर	तुला	विशाखा	दिवा 02:45
11	दिसम्बर	वृश्चिक	विशाखा	दिवा 03:30
14	दिसम्बर	वृश्चिक	अनुराधा	07:40
24	दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा	11:48

सन् 2013 ई.

04	जनवरी	धनु	मूल	दिवा 03:30
15	जनवरी	धनु	पू॰षा॰	प्रातः 06:35
25	जनवरी	धनु	उ॰षा॰	रात्रि 10:20
28	जनवरी	मकर	उ॰षा॰	दिवा 02:10
05	फरवरी	मकर	श्रवण	दिवा 01:45
16	फरवरी	मकर	धनिष्ठा	प्रातः 05:20
26	फरवरी	कुंभ	शतभिषा	रात्रि 09:15
09	मार्च	कुंभ	पू॰भा॰	दिवा 01:30
17	मार्च	मीन	पू॰भा॰	दिवा 01:58
20	मार्च	मीन	उ॰भा॰	प्रातः 06:15
30	मार्च	मीन	रेवती	रात्रि 11:35
10	अप्रैल	मेष	अश्विनी	सायं 05:30

शनि राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ॰ मि॰
16	मई	कन्या	चित्रा	प्रातः 06:30
04	अगस्त	तुला	चित्रा	प्रातः 08:36
11	अक्टूबर	तुला	स्वाती	अर्धरात्रोपरि 01:08

राहु राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ॰ मि॰
21	अक्टूबर	वृश्चिक	विशाखा	रात्रि 08:16
23	दिसम्बर	तुला	विशाखा	सायं 05:54

केतु राशि प्रवेश

दि.	मास	राशि	नक्षत्र	घ॰ मि॰
23	दिसम्बर	मेष	कृत्तिका	सायं 05:54

चन्द्र राशि प्रवेश

दि॰	मास	राशि	घ॰मि॰
24	मार्च	मेष	दिवा 03:11
26	मार्च	वृष	अर्धरात्रोपरि 04:03
29	मार्च	मिथुन	दिवा 04:45
31	मार्च	कर्क	अर्धरात्रोपरि 2:58
03	अप्रैल	सिंह	दिवा 09:06
05	अप्रैल	कन्या	दिवा 11:22
07	अप्रैल	तुला	दिवा 11:20
09	अप्रैल	वृश्चिक	दिवा 11:03
11	अप्रैल	धनु	दिवा 12:23
13	अप्रैल	मकर	सायं 04:31
15	अप्रैल	कुंभ	रात्रि 11:46
18	अप्रैल	मीन	दिवा 09:42
20	अप्रैल	मेष	रात्रि 09:31
23	अप्रैल	वृष	दिवा 10:25
25	अप्रैल	मिथुन	रात्रि 11:14
28	अप्रैल	कर्क	दिवा 10:17
30	अप्रैल	सिंह	सायं 05:56
02	मई	कन्या	रात्रि 09:41
04	मई	तुला	रात्रि 10:20
06	मई	वृश्चिक	रात्रि 09:41
08	मई	धनु	रात्रि 09:42
10	मई	मकर	रात्रि 12:06
13	मई	कुंभ	प्रातः 06:00
15	मई	मीन	दिवा 03:29
17	मई	मेष	अर्धरात्रोपरि 03:27
20	मई	वृष	दिवा 04:27
23	मई	मिथुन	प्रातः 5:06
25	मई	कर्क	सायं 04:12
27	मई	सिंह	रात्रि 12:42
30	मई	कन्या	प्रातः 06:02
01	जून	तुला	प्रातः 08:18
03	जून	वृश्चिक	प्रातः 08:33
05	जून	धनु	प्रातः 08:23
07	जून	मकर	प्रातः 09:39
09	जून	कुंभ	दिवा 02:00
11	जून	मीन	रात्रि 10:14
14	जून	मेष	प्रातः 09:46
16	जून	वृष	रात्रि 10:45
19	जून	मिथुन	दिवा 11:13
21	जून	कर्क	रात्रि 09:52
24	जून	सिंह	प्रातः 06:16
26	जून	कन्या	दिवा 12:17
28	जून	तुला	दिवा 04:00
30	जून	वृश्चिक	सायं 05:48
02	जुलाई	धनु	सायं 06:38
04	जुलाई	मकर	सायं 07:55
06	जुलाई	कुंभ	रात्रि 11:20
09	जुलाई	मीन	प्रातः 06:19
11	जुलाई	मेष	सायं 05:00
14	जुलाई	वृष	प्रातः 05:48
16	जुलाई	मिथुन	सायं 06:14
18	जुलाई	कर्क	अर्धरात्रोपरि 04:27
21	जुलाई	सिंह	दिवा 12:06
23	जुलाई	कन्या	सायं 05:40
25	जुलाई	तुला	रात्रि 09:45
27	जुलाई	वृश्चिक	रात्रि 12:45
29	जुलाई	धनु	अर्धरात्रोपरि 03:01
01	अगस्त	मकर	प्रातः 05:19
03	अगस्त	कुंभ	प्रातः 08:55
05	अगस्त	मीन	दिवा 03:15
07	अगस्त	मेष	रात्रि 01:05
10	अगस्त	वृष	दिवा 01:32
12	अगस्त	मिथुन	रात्रि 02:08
15	अगस्त	कर्क	दिवा 12:22
17	अगस्त	सिंह	सायं 07:26
19	अगस्त	कन्या	रात्रि 12:00
21	अगस्त	तुला	अर्धरात्रोपरि 03:15
24	अगस्त	वृश्चिक	प्रातः 06:11
26	अगस्त	धनु	09:16
28	अगस्त	मकर	दिवा 12:47
30	अगस्त	कुंभ	सायं 05:20
01	सितम्बर	मीन	रात्रि 11:50
04	सितम्बर	मेष	प्रातः 09:24
06	सितम्बर	वृष	प्रातः 09:30
09	सितम्बर	मिथुन	प्रातः 10:22
11	सितम्बर	कर्क	रात्रि 09:13
13	सितम्बर	सिंह	अर्धरात्रोपरि 04:27
16	सितम्बर	कन्या	प्रातः 08:22
18	सितम्बर	तुला	प्रातः 10:23
20	सितम्बर	वृश्चिक	दिवा 12:06
22	सितम्बर	धनु	दिवा 02:38
24	सितम्बर	मकर	सायं 06:32
26	सितम्बर	कुंभ	रात्रि 12:03
29	सितम्बर	मीन	प्रातः 07:27
01	अक्टूबर	मेष	सायं 05:10
04	अक्टूबर	वृष	प्रातः 05:09
06	अक्टूबर	मिथुन	सायं 06:10
09	अक्टूबर	कर्क	प्रातः 05:54
11	अक्टूबर	सिंह	दिवा 02:11
13	अक्टूबर	कन्या	सायं 06:31
15	अक्टूबर	तुला	सायं 07:58
17	अक्टूबर	वृश्चिक	रात्रि 08:17
19	अक्टूबर	धनु	रात्रि 09:15
21	अक्टूबर	मकर	रात्रि 12:17
24	अक्टूबर	कुंभ	प्रातः 05:33
26	अक्टूबर	मीन	दिवा 01:35
28	अक्टूबर	मेष	रात्रि 11:55
31	अक्टूबर	वृष	दिवा 12:04
02	नवम्बर	मिथुन	रात्रि 01:05
05	नवम्बर	कर्क	दिवा 01:25
07	नवम्बर	सिंह	रात्रि 11:04
09	नवम्बर	कन्या	अर्धरात्रोपरि 04:50
12	नवम्बर	तुला	प्रातः 07:00
14	नवम्बर	वृश्चिक	प्रातः 06:55
16	नवम्बर	धनु	प्रातः 06:30
18	नवम्बर	मकर	प्रातः 07:35
20	नवम्बर	कुंभ	दिवा 11:38

रवियोग

सूर्यभाद्वेद-गो-तर्क-दिग्विश्व-नरव-सम्मिते।
चन्द्रर्क्षैरवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे चौथे, छठे, नवें, दसवें, तेरहवें तथा बीसवें नक्षत्र पर यदि चन्द्रमा हो तो दोष समूह को नष्ट करने वाला रवि योग होता है। स्पष्ट ज्ञान के लिए कोष्ठक निम्नलिखित है। (मु॰चि॰ मणि)

सूर्यनक्षत्र	चन्द्र नक्षत्र					
अश्वि	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले	मघा	हस्त	पू.षा.
भर.	मृग.	पुन.	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.षा
कृत्ति.	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वाति	श्रव
रोहि.	पुन	आश्ले	उ.फा.	हस्त	विशा.	धनि
मृग.	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनु.	शत
आर्द्रा	आश्ले	पू.फा	चित्रा	स्वाति	ज्येष्ठा	पू.भा
पुन.	मघा	उ.फा.	स्वाति	विशा	मूल	उ.भा
पुष्य	पू.फा	हस्त	विशा	अनु	पू.षा	रेव
आश्ले	उ.फा	चित्रा	अनु	ज्ये	उ.षा	अश्वि
मघा	हस्त	स्वा	ज्ये	मूल	श्रव	भर
पू.फा	चित्रा	विशा	मूल	पू.षा	धनि	कृत्ति
उ.फा.	स्वा	अनु	पू.षा.	उ.षा.	शत.	रोहि.
हस्त	विशा	ज्ये	उ.षा.	श्रव	पू.भा.	मृग.
चित्रा	अनु	मूल	श्रव	धनि	उ.भा.	आर्द्रा
स्वा.	ज्ये.	पू.षा	धनि.	शत.	रेव	पुन
विशा.	मूल	उ.षा.	शत.	पू.भा.	अश्वि.	पुष्य
अनु.	पू.षा.	श्रव	पू.भा.	उ.भा.	भर	आश्ले.
ज्ये.	उ.षा.	धनि.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	मघा
मूल	श्रव.	शत.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	पू.फा.
पू.षा.	धनि.	पू.भा.	अश्वि.	भर	मृग.	उ.फा.
उ.षा.	शत.	उ.भा.	भर	कृत्ति.	आर्द्रा	हस्त
श्रव.	पू.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.	पुन.	चित्रा
धनि	उ.भा.	अश्वि.	रोहि.	मृग.	पुष्य	स्वा
शत.	रेव.	भर	मृग.	आर्द्रा	आश्ले.	विशा.
पू.भा.	अश्वि	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.	मघा	अनु.
उ.भा.	भर	रोहि.	पुन.	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.
रेव.	कृत्ति	मृग.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	मूल

ता॰ मास घ॰ मि॰

सन् 2012 ई॰

दि॰	मास	घ॰ मि॰
26	मार्च	रवि योग रात्रि 09:15 तक
28	मार्च	पूरा दिन
02	अप्रैल	प्रातः 09:34 तक
03	अप्रैल	प्रातः 09:06 तक
05	अप्रैल	पूरा दिन
12	अप्रैल	11:11 तक
13	अप्रैल	10:35 तक
25	अप्रैल	09:49 तक
28	अप्रैल	दिवा 04:40 तक
01	मई	सायं 05:23 तक
02	मई	दिवा 04:06 तक
05	मई	प्रातः 08:55 तक
12	मई	सायं 05:43 तक
24	मई	पूरा दिन
25	मई	पूरा दिन
27	मई	पूरा दिन
30	मई	पूरा दिन
31	मई	पूरा दिन
03	जून	दिवा 01:51 तक
10	जून	प्रातः 07:03
24	जून	प्रातः 06:16
26	जून	प्रातः 06:24
28	जून	पूरा दिन
29	जून	पूरा दिन
02	जूलाई	सायं 06:38 तक
10	जूलाई	दिवा 02:32 तक
23	जूलाई	दिवा 11:48 तक
25	जूलाई	दिवा 10:18 तक
28	जूलाई	पूरा दिन
31	जूलाई	पूरा दिन
08	अगस्त	पूरा दिन
21	अगस्त	दिवा 03:55
23	अगस्त	दिवा 01:13 तक

सिद्धयोग

ता॰	मास	घ॰ मि॰
23	मार्च	पूरा दिन
4	अप्रैल	पूरा दिन
14	अप्रैल	पूरा दिन
24	अप्रैल	पूरा दिन
26	अप्रैल	पूरा दिन
27	अप्रैल	पूरा दिन
5	मई	पूरा दिन
8	मई	पूरा दिन
10	मई	पूरा दिन
11	मई	पूरा दिन
19	मई	पूरा दिन
31	मई	पूरा दिन
6	जून	पूरा दिन
14	जून	पूरा दिन
15	जून	पूरा दिन
23	जून	पूरा दिन
7	जुलाई	पूरा दिन
17	जुलाई	पूरा दिन
20	जुलाई	पूरा दिन
25	जुलाई	पूरा दिन
31	जुलाई	पूरा दिन
2	अगस्त	पूरा दिन
3	अगस्त	पूरा दिन
11	अगस्त	पूरा दिन
15	सितम्बर	पूरा दिन
18	सितम्बर	पूरा दिन
20	सितम्बर	पूरा दिन
21	सितम्बर	पूरा दिन
29	सितम्बर	पूरा दिन
3	नवम्बर	11:39 मिनट तक
8	दिसम्बर	7:48 तक
11	दिसम्बर	पूरा दिन
14	दिसम्बर	पूरा दिन
19	दिसम्बर	पूरा दिन
24	दिसम्बर	पूरा दिन
9	जनवरी	पूरा दिन
23	जनवरी	पूरा दिन
27	फरवरी	पूरा दिन
13	मार्च	पूरा दिन

अमृतयोग

ता॰	मास	घ॰ मि॰
30	मार्च	पूरा दिन
3	अप्रैल	पूरा दिन
5	अप्रैल	पूरा दिन
23	अप्रैल	पूरा दिन
7	मई	पूरा दिन
26	मई	पूरा दिन
27	मई	पूरा दिन
26	जून	पूरा दिन
28	जून	पूरा दिन
11	जुलाई	पूरा दिन
12	जुलाई	पूरा दिन
28	जुलाई	पूरा दिन
29	जुलाई	पूरा दिन
30	जुलाई	पूरा दिन
15	अगस्त	पूरा दिन
24	अगस्त	पूरा दिन
29	अगस्त	पूरा दिन
7	सितम्बर	पूरा दिन
17	सितम्बर	पूरा दिन
3	अक्तूबर	पूरा दिन
4	अक्तूबर	पूरा दिन
12	अक्तूबर	पूरा दिन
16	अक्तूबर	पूरा दिन
26	अक्तूबर	पूरा दिन
30	अक्तूबर	पूरा दिन
21	नवम्बर	पूरा दिन
30	नवम्बर	पूरा दिन
9	दिसम्बर	पूरा दिन
21	दिसम्बर	पूरा दिन
27	दिसम्बर	पूरा दिन
	(सन् 2013 ई.)	
4	जनवरी	पूरा दिन
8	जनवरी	पूरा दिन
18	जनवरी	पूरा दिन
22	जनवरी	पूरा दिन
30	जनवरी	पूरा दिन
31	जनवरी	दिवा 11:12 मि. तक
26	फरवरी	पूरा दिन
2	मार्च	पूरा दिन
3	मार्च	पूरा दिन
4	मार्च	पूरा दिन
12	मार्च	पूरा दिन
16	मार्च	पूरा दिन
17	मार्च	पूरा दिन
20	मार्च	पूरा दिन
21	मार्च	पूरा दिन
29	मार्च	पूरा दिन
3	अप्रैल	पूरा दिन
4	अप्रैल	पूरा दिन

रवि पुष्य योग

ता॰	मास	घ॰ मि॰
1	अप्रैल	9:12 के बाद
29	अप्रैल	सम्पूर्ण दिवस
30	दिसम्बर	प्रातः 8:06 मि. के बाद
27	जनवरी	सम्पूर्ण दिवस
24	मार्च	10:16 के बाद

गुरु पुष्य योग

ता॰	मास	घ॰ मि॰

रवियोग

सूर्यभाद्वेद-गो-तर्क-दिग्विश्व-नरव-सम्मिते।
चन्द्रर्क्षेरवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे चौथे, छठे, नवें, दसवें, तेरहवें तथा बीसवें नक्षत्र पर यदि चन्द्रमा हो तो दोष समूह को नष्ट करने वाला रवि योग होता है। स्पष्ट ज्ञान के लिए कोष्ठक निम्नलिखित है। (मु॰चि॰ मणि)

सूर्यनक्षत्र	चन्द्र नक्षत्र					
अश्वि	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले	मघा	हस्त	पू.षा.
भर.	मृग.	पुन.	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.षा
कृत्ति.	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वाति	श्रव
रोहि.	पुन	आश्ले	उ.फा.	हस्त	विशा.	धनि
मृग.	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनु.	शत
आर्द्रा	आश्ले	पू.फा	चित्रा	स्वाति	ज्येष्ठा	पू.भा
पुन.	मघा	उ.फा.	स्वाति	विशा	मूल	उ.भा
पुष्य	पू.फा	हस्त	विशा	अनु	पू.षा	रेव
आश्ले	उ.फा	चित्रा	अनु	ज्ये	उ.षा	अश्वि
मघा	हस्त	स्वा	ज्ये	मूल	श्रव	भर
पू.फा	चित्रा	विशा	मूल	पू.षा	धनि	कृत्ति
उ.फा.	स्वा	अनु	पू.षा.	उ.षा.	शत.	रोहि.
हस्त	विशा	ज्ये	उ.षा.	श्रव	पू.भा.	मृग.
चित्रा	अनु	मूल	श्रव	धनि	उ.भा.	आर्द्रा
स्वा.	ज्ये.	पू.षा	धनि.	शत.	रेव	पुन
विशा.	मूल	उ.षा.	शत.	पू.भा.	अश्वि.	पुष्य
अनु.	पू.षा.	श्रव	पू.भा.	उ.भा.	भर	आश्ले.
ज्ये.	उ.षा.	धनि.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	मघा
मूल	श्रव.	शत.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	पू.फा.
पू.षा.	धनि.	पू.भा.	अश्वि.	भर	मृग.	उ.फा.
उ.षा.	शत.	उ.भा.	भर	कृत्ति.	आर्द्रा	हस्त
श्रव.	पू.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.	पुन.	चित्रा
धनि	उ.भा.	अश्वि.	रोहि.	मृग.	पुष्य	स्वा
शत.	रेव.	भर	मृग.	आर्द्रा	आश्ले.	विशा.
पू.भा.	अश्वि	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.	मघा	अनु.
उ.भा.	भर	रोहि.	पुन.	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.
रेव.	कृत्ति	मृग.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	मूल

ता॰ मास घ॰ मि॰

सन् 2012 ई॰

दि॰	मास	घ॰ मि॰
26	मार्च	रवि योग रात्रि 09:15 तक
28	मार्च	पूरा दिन
02	अप्रैल	प्रातः 09:34 तक
03	अप्रैल	प्रातः 09:06 तक
05	अप्रैल	पूरा दिन
12	अप्रैल	11:11 तक
13	अप्रैल	10:35 तक
25	अप्रैल	09:49 तक
28	अप्रैल	दिवा 04:40 तक
01	मई	सायं 05:23 तक
02	मई	दिवा 04:06 तक
05	मई	प्रातः 08:55 तक
12	मई	सायं 05:43 तक
24	मई	पूरा दिन
25	मई	पूरा दिन
27	मई	पूरा दिन
30	मई	पूरा दिन
31	मई	पूरा दिन
03	जून	दिवा 01:51 तक
10	जून	प्रातः 07:03
24	जून	प्रातः 06:16
26	जून	प्रातः 06:24
28	जून	पूरा दिन
29	जून	पूरा दिन
02	जूलाई	सायं 06:38 तक
10	जूलाई	दिवा 02:32 तक
23	जूलाई	दिवा 11:48 तक
25	जूलाई	दिवा 10:18 तक
28	जूलाई	पूरा दिन
31	जूलाई	पूरा दिन
08	अगस्त	पूरा दिन
21	अगस्त	दिवा 03:55
23	अगस्त	दिवा 01:13 तक

26	अगस्त	प्रातः 09:16 तक
29	अगस्त	प्रातः 06:09 के बाद
30	अगस्त	दिवा 01:55 के बाद
07	सितम्बर	सायं 05:52 तक
19	सितम्बर	सायं 09:29 तक
21	सितम्बर	दिवा 04:02 तक
24	सितम्बर	दिवा 12:42 तक
25	सितम्बर	दिवा 12:11
29	सितम्बर	दिवा 01:44
06	अक्टूबर	दिनभर
18	अक्टूबर	दिनभर
20	अक्टूबर	सायं 07:34 तक
23	अक्टूबर	सायं 05:27 तक
24	अक्टूबर	सायं 05:47 तक
25	अक्टूबर	सायं 06:38 तक
28	अक्टूबर	पूरा दिन
05	नवम्बर	सायं 07:59 तक
06	नवम्बर	सूर्योदय से पूरा दिन
16	नवम्बर	पूरा दिन
18	नवम्बर	पूरा दिन
19	नवम्बर	दिवा 12:52 से पूरा दिन
22	नवम्बर	पूरा दिन
23	नवम्बर	पूरा दिन
27	नवम्बर	दिवा 11:35 तक
05	दिसम्बर	पूरादिन

18	दिसम्बर	प्रातः 7:33 से पूरा दिन
22	दिसम्बर	दिवा 12:01 तक
23	दिसम्बर	दिवा 02:45 तक
24	दिसम्बर	पूरा दिन
04	जनवरी	दिवा 01:58 तक
15	जनवरी	दिवा 04:44 तक
17	जनवरी	सायं 05:40 तक
20	जनवरी	पूरा दिन
21	जनवरी	पूरा दिन
26	जनवरी	दिवा 02:44 तक
02	फरवरी	सायं 06:46 तक
13	फरवरी	पूरा दिन
15	फरवरी	पूरा दिन
19	फरवरी	प्रातः 10:24 तक
20	फरवरी	सायं 05:40 तक
21	फरवरी	पूरा दिन
24	फरवरी	पूरा दिन
03	मार्च	पूरा दिन
04	मार्च	पूरा दिन
15	मार्च	दिवा 02:52 तक
17	मार्च	सायं 07:47 तक
18	मार्च	पूरा दिन
21	मार्च	पूरा दिन
23	मार्च	प्रातः 09:03 तक
26	मार्च	प्रातः 10:42 तक

कुशोत्पाटिनी अमावास्या महत्त्व

भाद्रपद मास की अमावास्या तिथि कुशोत्पाटिनी अमावास्या के नाम से जानी जाती है। इस दिन वर्ष भर के धार्मिक कृत्यों तथा श्राद्धादि कृत्यों के लिये कुश-उत्पाटन किया जाता है। यह तिथि पूर्वाह्णव्यापिनी ली जाती है। हिन्दुओं के किसी भी धार्मिक क्रियाकलाप में कुश की अनिवार्यता होती है-

पूजाकाले सर्वदैव कुशहस्तो भवेच्छुचिः।
कुशेन रहिता पूजा विफला कथिता मया।। (शब्दकल्पद्रुम)

अतः प्रत्येक गृहस्थ को इस दिन कुश-सञ्चय करना चाहिये। शास्त्र में दस प्रकार के कुशों का विवरण प्राप्त होता है-

कुशाः काशा यवा दूर्वा उशीराश्च सकुन्दकाः।
गोधूमा ब्राह्मयो मौञ्जा दश दर्भाः सबल्वजाः।।

इनमें से जो भी कुश इस तिथि को मिल जाय, वही ग्रहण कर लेना चाहिये।

जिस कुश मूल सुतीक्ष्ण हो, जिसमें पत्ती हो, अग्रभाग कटा न हो और हरा हो, वह देव तथा पितृ दोनों कार्यों के लिये उपयुक्त होता है। कुश-उत्पाटन के लिये इस तिथि को पूर्वाह्ण में दर्भस्थल पर जाकर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र पढ़ें और 'हुँ फट्' कहकर दाहिने हाथ से एक बार में कुश उखाड़ें-

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिन्निसर्गज।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव।।

धर्मशिक्षा

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।

(तैत्तिरीय. 1/11/1)

सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय से कभी न चूको। सत्य से कभी नहीं डिगना चाहिये। धर्म से नहीं डिगना चाहिये। शुभ कर्मों से कभी नहीं चूकना चाहिये। [illegible] कभी नहीं चूकना चाहिये। देवकार्य से और पितृकार्य

बारह-राशियों का मासगत एवं वार्षिक फलादेश सन् ई॰ 2012

लेखक :- पं॰ उपेन्द्र भार्गव

मेषराशि (Aries) (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वर्षफल– मेष राशि वाले जातकों के वर्षफल से ज्ञात होता हे कि आपकी राशि से सप्तमस्थ होकर तुला राशि में शनि का संचार गत वर्ष से ही है। और इस वर्ष के अन्त तक यही स्थिति बनी रहेगी किन्तु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त तक शनि का भ्रमण कन्या राशि में भी रहेगा। इसी प्रकार वृहस्पति भी मेष राशि में आपकी राशि से प्रथम संचार कर रहा है और इस वर्ष 16 मई तक इसी स्थिति में बना रहेगा। इसके उपरान्त 17 मई से इस वर्ष के अन्त तक वृष राशि में स्थित होकर आपकी राशि से द्वितीयस्थ शुभ अवस्था में भ्रमण करेगा। राहु, केतु भी आपकी राशि से क्रमशः अष्टम, द्वितीयस्थ होकर वृश्चिक एवं वृष राशि में गत वर्ष से ही अधिष्ठित हैं जो कि 25 दिसम्बर तक इसी अवस्था में बने रहेंगे। तदुपरान्त 26 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला एवं मेष राशि में प्रवेश करके सप्तम एवं प्रथम भावगत होकर संचरण करेंगे। इस वर्ष गुरू-शनि, केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक रहेगा और शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि एवं गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि क्रमशः 1 जनवरी से 16 मई व 17 मई से 25 दिसम्बर तक बनी रहेगी।
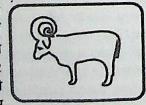
दिनांक 17 मई से 31 दिसम्बर तक वृहस्पति शुभ अवस्था में होकर विचरण करेगा। अन्य ग्रहों की स्थिति अशुभ स्थानों की ओर संकेत करती है। किंतु बृहस्पति शुभफलदायक रहेगा जिससे धन लाभ होगा और पारिवारिक सफलता प्राप्त कराएगा। इसी अवधि में किसी श्रेष्ठ शुभ कार्य की सम्पन्नता भी होगी। इस वर्ष प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से धन सम्पदा की वृद्धि के योग हैं किंतु अन्य ग्रहों की अशुभ स्थिति के कारण व्यावसायिक कार्यों एवं अर्थव्यवस्था में लाभ-हानि का क्रम बना रहेगा। ऋण लेने की स्थिति भी बन सकती है साथ ही मानसिक क्लेश होगा तथा स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। गृहक्लेश, पति-पत्नी में कलह की स्थिति बनेगी। विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करना होगा। विरोधियों का अधिक सामना होगा। विषम परिस्थितियों में आत्मनियन्त्रण रखें, शाँति एवं धैर्य धारण करना लाभदायक होगा। सम्पूर्ण वर्ष प्रथम दृष्ट्या सामान्य रहेगा किन्तु तनाव एवं चिन्ता बनी रहेगी।

मासिक फल

जनवरी – इस मास के पूर्व पक्ष में आपकी राशि से नवम में सूर्य, पंचम में मंगल रहेगा, उत्तरपक्ष में सूर्य दशम में तथा शनि सप्तम भाव में संचार करेंगे। फलस्वरूप इस मास में यात्रा होगी, पिता-पुत्र के संबंधों में वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

फरवरी – सूर्य के दशमभाव में जाने पर तथा एकादशभाव में संक्रमण करने पर तथा प्रथम भाव में गुरू के रहने पर साथ ही शनि सप्तम, राहु-केतु के अष्टम-द्वितीय में होने से दाम्पत्य सुख में कमी आयेगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे। आर्थिक रूप से अस्थिरता रहेगी।

मार्च – मास के पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध में सूर्य का भ्रमण एकादश, द्वादश में होगा तथा राहु केतु अष्टम, द्वितीय में रहेंगे। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी। धन लाभ होने के साथ ही व्यय के योग हैं। वित्तीय व्यवस्था में उतार-चढ़ाव होगा।

अप्रैल – आपकी राशि में द्वादशवें भाव में सूर्य एवं बुध का योग मानसिक कष्ट देगा। उद्योग, नौकरी आदि में तनाव होगा। मास के उत्तरार्ध में सूर्य गुरू का योग आपकी राशि पर होने से सफलता मिलेगी तथा किसी विशेष व्यक्ति से संपर्क हो सकता है।

मई – इस मास का पूर्वपक्ष सूर्य बुध गुरू के संयोग प्रथम भाव में होने से प्रयासों में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ जनों अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। उत्तरपक्ष में सूर्य-केतु के द्वितीय भावगत योग से तनाव बढ़ेगा और उत्साह की न्यूनता होगी।

जून – पूर्वार्ध में आपकी राशि से सूर्य, बुध, शुक्र, गुरू, केतु द्वितीयस्थ होंगे। उत्तरार्ध में सूर्य, बुध तृतीय रहेंगे। उद्योग, व्यापार आदि की स्थिति में उथल-पुथल होगी। व्यावसायिक एवं घरेलु समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

जुलाई – इस मास के पूर्वार्ध में सूर्य तृतीय, मंगल षष्ठगत होने से साहस में वृद्धि होगी। कार्य करने में उत्साह रहेगा, नए कार्यारंभ करने की सोचेंगे। धन लाभ होगा सफलता मिलेगी। मास का उत्तरार्ध संतोषजनक नहीं है। स्वास्थ्य के प्रति चिंता हो सकती है।

अगस्त – पूर्वार्ध में सूर्य बुध चतुर्थभाव में तथा मंगल षष्ठ भाव में होने से आप संपत्ति विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। किंतु मास के उत्तरार्ध में मंगल सप्तम, राहु, केतु क्रमशः अष्टम द्वितीय में होने से परेशानी, क्लेशकारक होंगे। चिंता होगी।

सितम्बर – इस मास के पूर्वार्ध में पंचमभाव में सूर्य, बुध एवं शनि सप्तमस्थ रहेगा। व्यावसायिक तनाव एवं चिन्ता बढ़ेगी। विरोधियों द्वारा आक्षेप लगेंगे। मास के उत्तरार्ध में सूर्य बुध षष्ठम होकर लाभदायी सिद्ध होंगे। रोजगार के अवसर मिलेंगे।

अक्तूबर – षष्ठ भाव में सूर्य मंगल का योग धनलाभ देगा, सफलता के योग बनेंगे।

शत्रु पक्ष कमजोर होगा। मास के उत्तरार्ध में सूर्य और शनि गृहस्थ सुख कम करेंगे। पिता-पुत्र में परस्पर विवाद की स्थिति बनेगी।

नवम्बर– मासारंभ में सूर्य शनि का योग सप्तम भाव में होने से वैवाहिक सम्बंधों में तनाव हो सकता है। व्यावसायिक समस्याएँ भी बढ़ेंगी। मास के उत्तरार्ध में सूर्य राहु अष्टम होने से आक्षेपों का सामना करना पड़ सकता है। किसी अप्रिय घटना की आशंका बनेगी।

दिसम्बर – मास का पूर्वार्ध सूर्य राहु की अष्टम युति से ग्रस्त होने से क्लेशकारी होगा। तात्कालिक कष्ट होगा। मास के उत्तरार्ध में यात्रा से बचें।

वृष (Taurus) (इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

वर्षफल– वृष राशि के जातकों की राशि में गत वर्ष से तुला राशि में शनि षष्ठ भावस्थ होकर संचार कर रहा है और वर्षान्त तक इसी स्थिति में विचरण करेगा। 28 मई से अगस्त मास तक पंचमस्थ होकर भी भ्रमण करेगा। वृहस्पति विगत वर्ष से ही आपकी राशि से द्वादश भाव में है और इस वर्ष 16 मई तक इसी अवस्था में रहेगा। पुनः 17 मई से वर्षान्त तक वृष में स्थित होकर प्रथम संचार करेगा। इसी प्रकार राहु केतु भी सप्तम भाव तथा प्रथम भाव में वृश्चिक-वृष राशि में स्थित होकर संचार कर रहे हैं और इस वर्ष 25 दिसम्बर तक इसी स्थिति में रहेंगे। तदनन्तर 26 दिसम्बर से तुला-मेषस्थ होकर षष्ठम द्वादशभाव में संचरित होंगे। गुरू शनि एवं केतु शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त और शनि राहु व गुरू केतु का युति सम्बंघ 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। इसी प्रकार गुरू शनि व गुरू राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि क्रमशः 1 जनवरी से 16 मई व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी।

फलस्वरूप इस वर्ष की स्थिति सुदृढ़ बनेगी। विभिन्न उपलब्धियों को प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। न्यायालय राजकार्य आदि में विजयश्री मिलेगी। पदोन्नति या पुरस्कार की संभावना बनेगी। किन्तु साथ ही पारिवारिक व्यय में वृद्धि होगी। आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। सन्तान हेतु विशेष व्यय होगा। यात्राओं के योग बनेंगे किंतु यात्रा का लाभ अपेक्षाकृत कम मिलेगा। कुछ अस्थायी परिवर्तन भी होंगे तथा स्वास्थ्य के प्रति चिंता उत्पन्न हो सकती है। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। विद्यार्थियों के लिए परिश्रम के अनुकूल सफलता मिलेगी तथा ज्ञानवृद्धि होगी।

मासिक फल

जनवरी – मासारंभ में सूर्य बुध अष्टम एवं गुरू द्वादशस्थ होने से मानसिक कष्ट, चिंता एवं तनाव होगा। व्यय की अधिकता होगी तथा स्वास्थ्य असंतुलित होगा। नवम भाव में सूर्य बुध शुक्र जाने पर यात्रा करनी पड़ेगी। प्रशासकों [illegible]

फरवरी – इस मास में ग्रहों का फल आर्थिक व्यवस्था में असंतुलन बढ़ायेगा। संपत्ति विवाद में सफलता न के बराबर होगी। मित्रों से कलह हो सकती है।

मार्च – क्रोध में वृद्धि होगी, परस्पर विवाद की स्थिति बनेगी, परिवार हेतु व्यय होगा। कार्य में सफलता की आशा है तथा मनोरथ सिद्धि भी होगी।

अप्रैल – किसी विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी, अतिथि आगमन तथा प्रियजन से सम्पर्क होगा। बान्धवों एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। भौतिक व्यवस्थाओं हेतु व्यय होगा।

मई – आपकी राशि से सूर्य बुध गुरू द्वादश स्थिति में होने से व्यापारिक क्लेश होगा। विरोधी प्रबल होंगे। उत्साह को संबल मिलेगा। कार्यक्षमता बढ़ेगी।

जून – सूर्य बुध शुक्र गुरू केतु आपकी राशि से प्रथम स्थित होने से न्यायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुपक्ष कमजोर होगा। आरोप-प्रत्यारोपों का सामना करना पड़ सकता है। असमंजस की स्थिति रहेगी तथा निर्णय लेने में विलम्ब लगेगा। वाणी पर संयम रखने से लाभ होगा।

जुलाई –व्यावसायिक उतार-चढ़ाव रहेगा। यात्रा कष्टकारी होगी। शासकीय आदेश से समस्या हो सकती है। राजकाज में समझदारी से निर्णय लें लाभ होगा।

अगस्त – उद्योग में लाभ की स्थिति बनेगी। आपके व्यवसाय में वृद्धि होगी। विशेष कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धी पराजित होंगे।

सितम्बर – चतुर्थ भाव में सूर्य बुध होने से मातृपक्ष से चिन्ता हो सकती है। वाहन आदि पर व्यय होगा तथा विद्यार्थियों को कठिनता का सामना करना पड़ सकता है। संतान के प्रति चिंता होगी। किसी कार्य में जोखिम न लें।

अक्तूबर – भविष्य के प्रति चिन्तित होंगे। नवीन योजना बनेगी। उत्साह एवं साहस बढ़ेगा। अधिक उठापटक करनी पड़ेगी। सफलता का स्वाद चखेंगे।

नवम्बर – सफलता मिलेगी किन्तु संघर्ष करना पड़ेगा। आर्थिक लेन-देन अधिक होंगे, व्यवसाय बढ़ेगा, उतार-चढ़ाव आयेगा।

दिसम्बर – गृहकार्यों एवं व्यवसाय में समस्या होगी। शारीरिक कष्ट भी हो सकता है। व्यय तथा तनाव सहना पड़ेगा। धैर्य एवं साहस का परिचय दें मंगल होगा।

मिथुन (Gemini) (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)

वर्षफल– इस वर्ष आपकी राशि से पंचमस्थ होकर शनि संचार कर रहा है जो कि 18 मई से 2 अगस्त तक अल्पावधि के लिए चतुर्थ भ्रमण करेगा। वृहस्पति मेष राशिस्थ होकर एकादश संचरण कर रहा है तथा 17 मई से वर्षान्त तक वृष राशिस्थ होकर द्वादश संचरित होगा। राहु केतु [illegible] संचार करेंगे तथा 26 दिसम्बर से
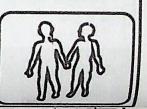
वर्षान्त पर्यन्त पंचम एकादश स्थित रहेंगे। इस वर्ष शनि-गुरू तथा केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक तथा शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर पर्यन्त रहेगा। इसी प्रकार 1 जनवरीसे 16 मई तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि रहेगी।

वर्षफल की दृष्टि से आपका राशिफल न्यूनाधिक मिश्रित फल देगा। आय की वृद्धि तथा व्यय के मार्ग खुलेंगे। संपत्ति विवादों की समाप्ति में विलम्ब लग सकता है। मातृपक्ष से चिन्ता तथा अवसाद हो सकता है। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में बाधा आयेगी तथा प्रयासों में सफलता मिलेगी। वायदा व्यापार, शेयर आदि में धन लगेगा जिससे चिन्ता बनेगी। आप अपना उत्तरदायित्व निभाने में सफल होंगे। अधिकारी वर्ग की प्रशंसा मिलेगी। आर्थिक स्थिति सुधरने के साथ-साथ धनलाभ होगा। शुभ कार्य के योग बनेंगे। मानसिक कष्ट तथा क्लेश से विचलित होंगे। क्रोध की वृद्धि होगी। व्यय, व्यवसाय आदि में उतार-चढ़ाव होगा। स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना होगा।

मासिक फल

जनवरी – विरोधियों की सक्रियता होने से कार्य क्षेत्र में परेशानी होगी। गृहकार्यों में बाधा आ सकती है। दाम्पत्य सुख प्रभावित होगा। व्यवसायिक उलझन होगी।

फरवरी – व्यवसाय सामान्य होगा। आत्मविश्वास को प्राप्त करेंगे। यात्रा करनी पड़ सकती है। साहस में वृद्धि तथा प्रसन्नता होगी।

मार्च – उत्साह व यश में वृद्धि होगी। यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। व्यवसाय में लाभ होगा। संतान के प्रति चिंता हो सकती है।

अप्रैल – किंचित् परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। शत्रुपक्ष .से क्लेश होगा, स्थानान्तरण का योग है। आत्मबल मजबूत बनेगा।

मई – व्यय की अधिकता होगी। चिंता और तनाव होगा। शुभ समाचार मिलेंगे। अतिथि आगमन होगा तथा यात्रा होगी।

जून – महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में शीघ्रता हानिकारक होगी। लेन-देन सम्बंधी व्यवहार में परेशानी होगी। पुराने लंबित कार्य पूर्ण होंगे।

जुलाई –किसी भी कार्य के निमित्त किया गया प्रयास सफलता देगा। पारिवारिक समन्वय सामान्य रहेगा।

अगस्त – विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में विस्तार की योजना बनेगी। गृहकार्यों में क्लेश का अनुभव होगा। उत्साह बढ़ेगा तथा सफलता मिलेगी।

सितम्बर – मास का पूर्वार्ध यात्रा कारक है। साक्षात्कार आदि में प्रभावी रहेंगे। कार्य में वृद्धि होगी। माता को कष्ट होगा। सन्तान की चिन्ता होगी।

अक्तूबर – अपने स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता होगी। शत्रु पक्ष बाधक होगा। मानसिक कष्ट हो सकता है। स्थानान्तरण हो सकता है।

नवम्बर – पिता-पुत्र में वैचारिक मतभेद हो सकता है। निजी जीवन में कुछ निराशा का अनुभव होगा। सन्तान के प्रति चिन्ता रहेगी। व्यय बढ़ेगा तथा स्वास्थ्य भी अस्थिर होगा।

दिसम्बर – लाभ के योग हैं तथा सफलता मिलेगी। पारिवारिक व्यय बढ़ेगा। गृहक्लेश भी हो सकता है। पत्नी का सहयोग मिलेगा।

कर्क (Cancer) (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

वर्षफल– आपके वर्षफल में गत वर्ष से शनि तुला राशि में स्थित होकर चतुर्थ संचार कर रहा है और वर्षान्त तक इसी अवस्था में रहेगा। किंतु मध्य में दिनांक 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में आपकी राशि से तृतीयस्थ होकर भ्रमण करेगा। इसी प्रकार वृहस्पति का संचार आपकी राशि से दशम है जो कि मेष राशि में स्थित है। तदनन्तर 17 मई से वर्षान्त तक वृष राशि में वृहस्पति का संचार होगा। राहु-केतु आपकी राशि से पंचम और एकादश भावस्थ होकर वृश्चिक तथा वृष राशि में संचार कर रहे हैं। वे 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला-मेष में प्रविष्ट होकर चतुर्थ-दशम भ्रमण करेंगे। इस वर्ष गुरू-शनि का केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक रहेगा। शनि, राहु व गुरू, केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि 1 जनवरी से 16 मई तक व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी। गत वर्ष से आपकी राशि शनि के ढैय्या (लघु कल्याणी) के प्रभाव में है जो कि वर्षान्त तक प्रभावी रहेगी।
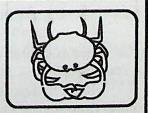
फलस्वरूप यह वर्ष परीक्षा का वर्ष होगा। सामान्य से कार्यों में भी अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। कठिनाइयों एवं विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। मई मास से दिसम्बर तक का समय आशानुरूप सफलतादायक है अतः इस कालावधि में महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे। यद्यपि यह वर्ष सफलता एवं यश में कमी नहीं आने देगा किंतु फिर भी चिंता एवं तनाव से घिरे रहेंगे। अल्प प्रसन्नता के उपरान्त मानसिक क्लेश का अनुभव करेंगे। स्थानांतरण तथा आवास परिवर्तन के योग भी होंगे। माता का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय होगा। संपत्ति विवादों से मुक्ति नहीं मिलेगी। व्यापार में लाभ-हानि की स्थिति सामान्य ही रहगी। कभी-कभी आर्थिक समस्या बढ़ सकती है। विदेश यात्रा में तथा विवाहादि कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। प्रयास करने तथा दैवाराधन में लगे रहने पर सफलता मिलेगी।

मासिक फल

जनवरी – यह मास सफलतादायक है। समाज एवं कार्यक्षेत्र में यश तथा सम्मान की वृद्धि होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

फरवरी – पारिवारिक वातावरण थोड़ा चिंता का विषय बनेगा। मानसिक क्लेश हो सकता है। कार्य अति उत्साह से करेंगे किंतु आशानुरूप लाभ नहीं मिलेगा।

मार्च – उद्योग एवं व्यापार की स्थिति सामान्य रहेगी। सम्पत्ति विवादों से बचना श्रेष्ठ होगा। यात्रा का योग है। विद्यार्थियों का मन अध्ययन में कम लगेगा।

अप्रैल –ग्रहस्थिति अस्थिरता उत्पन्न करेगी। किंतु प्रयासों में सफलता के योग हैं। उत्साह में वृद्धि होगी, अधिकारी वर्ग को प्रसन्न कर सकेंगे। निर्णय लेने में सावधान रहें।

मई – यह माह व्यापारिक वृद्धि एवं धनधान्य में समृद्धिकारक है। कृषक वर्ग को विशेष लाभ होगा। कठिनाइयों के साथ आगे बढ़ेंगे एवं सफलता मिलेगी। मनोरथ सिद्ध होगा।

जून – वैयक्तिक जीवन में अप्रसन्नता का अनुभव होगा। आरोप-प्रत्यारोपों का सामना होगा। सफलता एवं लाभ मिलेंगे। अज्ञात भय का वातावरण रहेगा।

जुलाई – व्यावसायिक समृद्धि में चुनौती मिलेगी। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में अस्थिरता हो सकती है। किसी अति स्नेही व्यक्ति से भेंट सुखदायक रहेगी। प्रयासों में सफलता मिलेगी।

अगस्त – व्यय में वृद्धि के साथ-साथ आय के नए स्रोत बनेंगे। व्यापार में वृद्धि होगी। भौतिक सुखों में लाभांश का व्यय होगा। गुप्त चिन्ता रहेगी।

सितम्बर – लाभ के निमित्त की गई यात्रा में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धा, साक्षात्कार आदि में भी सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग रहेगा। आर्थिक लाभ-हानि सामान्य रहेंगे।

अक्तूबर – धनलाभ होगा। पूर्व में बाधित कार्य की पूर्ति होगी। लाभदायक यात्रा होगी। संपत्ति विवाद में बाधा बनी रहेगी।

नवम्बर – मातृपक्ष से चिन्ता उत्पन्न होगी। उद्योग, व्यवसाय आदि में परेशानी होगी। निर्णय लने में शीघ्रता हानिकरक होगी।

दिसम्बर – आर्थिक विषयों में तथा व्यापारिक कार्यों में अनिश्चितता रहेगी। सन्तान चिन्ता हो सकती है। भविष्य की संभावनाओं से भय रहेगा।

सिंह (Leo) (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

वर्षफल– आपकी राशि से तृतीय भाव में तुला राशि में स्थित होकर शनि संचार कर रहा है और 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में संचार करके पुनः वर्षान्त तक पूर्ववत् तुला में संचार करेगा। बृहस्पति की स्थिति आपकी [illegible]

स्थिति वृश्चिक-वृषाशिगत होने से चतुर्थ-दशम संचार को दर्शाती है। 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक दोनों ग्रह क्रमशः तुला-मेष राशि में जाकर तृतीय-नवम संचार करेंगे। इस वर्ष में गुरू-शनि, केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तथा शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक रहेगा।

फलस्वरूप राहु-केतु जब चतुर्थ-दशम एवं तृतीय-नवम रहेंगे तब व्यापार, वाणिज्य एवं व्यवसाय में उतार-चढ़ाव होगा। किसी प्रकार का परिवर्तन भी आप कर सकते हैं। शासकीय वर्ग के जातकों को स्वैच्छिक स्थानान्तरण की प्राप्ति होगी। यात्राओं का लाभ मिलेगा। विदेश यात्रा के योग हैं तथा यह यात्रा फलदायी होगी। धर्मस्थलों के दर्शन होंगे तथा अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। यह वर्ष विद्यार्थियों के लिए उत्साहवर्धक सिद्ध होगा तथा वे अपने भविष्य की योजनाओं में सफल होंगे। आर्थिक, व्यापारिक, औद्योगिक एवं कृषि सम्बंधी क्षेत्रों में समय पर किए गये कार्यों में लाभ होगा। राजनैतिक दृष्टिकोण में बदलाव आयेगा। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। यह वर्ष प्रायः श्रेष्ठ सिद्ध होगा।

मासिक फल

जनवरी – व्यापार में वाणिज्य एवं उद्योग में कुछ क्लेश के उपरान्त वृद्धि होगी। लेन-देन में सावधानी रखें। विवाद की स्थिति से बचने का प्रयास करें।

फरवरी – साहस, उत्साह बढ़ेगा। क्रोध बढ़ने से हानि हो सकती है। शत्रु पक्ष निर्बल रहेंगे। व्यावसायकि लाभ होगा। सहयोगियों से वैचारिक मतभेद हो सकता है।

मार्च – गृहकार्य सामान्य होंगे। विरोधियों का पक्ष प्रवल होगा तथा आपसे प्रतिस्पर्धा रखेंगे और पराजित होंगे। मानसिक कष्ट होगा तथा तनाव रहेगा।

अप्रैल – यात्रा न करना श्रेष्ठ है अन्यथा लाभ नहीं होगा। शारीरिक आघात हो सकता है तथा मानसिक रूप से भी दुःख होगा। मास का उत्तरार्ध लाभदायक है। भय से मुक्ति होगी।

मई – शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रिया में सफलता मिलेगी। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। कृषकों के लिए लाभ होगा। उत्साह में वृद्धि होगी।

जून – परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। आरोपों का सामना होगा, सफलता मिलेगी। मित्रों का साथ होगा। परिवार में शान्ति होगी।

जुलाई – मास का पूर्वार्ध सफलतादायक है। व्यावसायिक लाभ-हानि सामान्य है। मास का उत्तरार्ध व्ययकारी है। तनाव बढ़ेगा।

अगस्त – कार्यक्षेत्र में कठिनाई होगी। परिवार में सामान्य वातावरण रहेगा। विवाद की स्थिति रहेगी। प्रयास लाभदायक सिद्ध होंगे। प्रभाव बढ़ेगा।

अक्तूबर – मातृकष्ट होगा, सम्पत्ति विवादों पर व्यय होगा। वाहनादि क्रय करेंगे तथा भौतिक संसाधनों पर धन का व्यय करेंगे। धार्मिक कार्य होंगे।

नवम्बर – व्यवसाय में स्थिति सामान्य होगी। न्यायिक समस्या आयेगी। यात्रा लाभप्रद होगी। स्वभाव प्रसन्न होगा।

दिसम्बर – कार्यों में कठिन परिश्रम करेंगे। लाभ हेतु किया गया कार्य निष्फल हो सकता है तदर्थ सचेत रहें। धर्म कार्य करने से सफलता मिलेगी। पिता से मतभेद हो सकता है।

कन्या (Virgo) (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

वर्षफल– तुला राशि में स्थित शनि गत वर्ष से आपकी राशि से द्वितीय संचार कर रहा है। वह 18 मई से 2 अगस्त के अल्पकाल हेतु कन्या राशि में स्थित होकर संचार करेगा। बृहस्पति की अवस्था गत वर्ष से मेष राशि में है जो कि इस वर्ष वृष का संक्रमण भी करेगा। राहु-केतु भी वृश्चिक-वृष का उपभोग करने के उपरान्त तुला-मेष का संक्रमण करेंगे और द्वितीय-अष्टम भ्रमण करेंगे। 18 मई से 2 अगस्त तक गुरू-शनि एवं केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध रहेगा। शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। 1 जनवरी से 16 मई तक गुरू-शनि तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि से आप प्रभावित होंगे। गत वर्ष से शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी) इस वर्ष भी प्रभाव देगी।

फलस्वरूप साढ़ेसाती होने से आपके कार्य बाधित होंगे। शनि आपकी राशि के स्वामी का मित्र होने से अधिक हानिकारक नहीं होगा। वह अकस्मात् कोई लाभ भी दे सकता है तथा किसी बिगड़े हुए कार्य बनने की संभावना है। आर्थिक, व्यापारिक एवं औद्योगिक स्थिति में निरन्तर उतार-चढ़ाव रहेगा। ऋण लेना पड़ सकता है। कृषकों को धनलाभ तो होगा किंतु शीघ्र ही आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। राजनेताओं की यात्राएं उनके कार्यों को सिद्ध करेंगी। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय रहेगा। स्वास्थ्य की चिन्ता बनेगी।

मासिक फल

जनवरी – विवाद की स्थितियाँ बनेंगी। सम्पत्ति के पक्ष से तनाव होगा। प्रेमादि प्रसंगों से परेशानी होगी। धन हानि हो सकती है। आत्मबल मजबूत होगा।

फरवरी – संतान हेतु निर्णय लेंगे। निवेश किए गए धन के प्रति संदेह होगा। सफलता हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

मार्च – कारोबार सामान्य रहेगा। यात्रा के योग हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व मिलेगा। प्रशंसा एवं यश की प्राप्ति होगी।

अप्रैल – पत्नी के साथ वैचारिक भिन्नता हो सकती है। सहयोग से किए जा रहे व्यवसाय के प्रति असुरक्षा उत्पन्न होगी। किसी वस्तु के चोरी होने अथवा खोने की संभावना है।

मई – गृहकार्यों एवं व्यवसाय में समस्या हो सकती है। धार्मिक यात्रा एवं तीर्थाटन हो सकता है। परिवार में पत्नी का सहयोग मिलेगा।

जून – व्यावसायिक यात्रा हो सकती है जिसका परिणाम संतोषजनक रहेगा। स्पर्धाओं में सफलता मिलेगी। मित्रों व सहयोगियों का पूर्ण समर्थन मिलेगा।

जुलाई – धनलाभ के विशेष योग हैं। पूर्व चिंतित कार्य में सफल होंगे। मंगल से प्रभावित होने से क्रोध अधिक करेंगे अतः धैर्य रखें।

अगस्त – आय-व्यय में संयोजन अस्थिर हो जाएगा। व्यवसाय में वृद्धि होने से कार्यभार बढ़ेगा। चिंता तथा तनाव रहेगा।

सितम्बर – शासकीय कार्यों तथा न्यायालयों में समय बीतेगा। यात्रा लाभप्रद होगी। राजपुरुष से मिलेंगे। लेन-देन के कार्यों में सावधानी रखें।

अक्तूबर – कार्य सिद्धि हेतु अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। धन लाभ होगा। यश और कीर्ति बढ़ेगी। साहस एवं उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। मन प्रसन्न रहेगा।

नवम्बर – धन के लेन-देन में शीघ्रता न करें। सफलता हेतु अधिक श्रम लगेगा। उत्साह बढ़ेगा। मित्रों से सहयोग की अपेक्षा रहेगी।

दिसम्बर – यात्रा को संभवतया मास के पूर्वार्ध में टाल दें। किसी अप्रिय समाचार मिलने के योग हैं। कष्ट हो सकता है। विवाद बढ़ेगा। धैर्य रखने की आवश्यकता है।

तुला (Libra) रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वर्षफल– तुला राशि में स्थित होकर शनि आपकी राशि में प्रथम संचार कर रहा है। यह स्थिति वर्षान्त तक रहेगी। किन्तु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त की कालावधि में शनि का संचार कन्या राशि में होगा। बृहस्पति मेषस्थ होकर आपकी राशि से सप्तम संचार कर रहा है जो कि 17 मई से वर्षान्त तक वृष में प्रवेश करके अष्टम रहेगा। वृश्चिक में राहु एवं वृष में केतु द्वितीय अष्टमस्थ संचार कर रहे हैं। 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक वे तुला व मेषस्थ होकर प्रथम-सप्तम भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि व केतु-शनि का त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक और शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि व
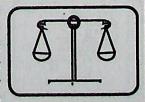
गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि 1 जनवरी से 16 मई तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी। वर्ष भर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

फलस्वरूप शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी) का प्रभाव होने से आप सम्पूर्ण वर्ष कई तरह के अनुभव करेंगे। साढ़ेसाती का प्रभाव होने से आप अधिक परिश्रम करेंगे। कई कार्यों में परेशानी होगी, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। उच्च पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका राशिस्वामी शनि का मित्र होने से कई कार्यों में बल मिलेगा। विदेश यात्रा होगी। विद्यार्थियों को नए अवसर मिलेंगे तथा रोजगार की संभावनाएं होंगी। व्यापार जगत में अत्यन्त सावधानी से कार्य करें। कृषिकार्य में लाभ आशानुरूप होगा। वित्त की कमी का अनुभव करेंगे। कार्य में प्रमाद करना घातक सिद्ध होगा। विषमता अधिक रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ बनी रहेगी। धर्मादि कार्यों से मन हटेगा।

मासिक फल

जनवरी – कार्यों की गति बाधित होगी। मित्रों एवं सहयोगियों का समर्थन न मिलने से दुखी होंगे। चित्त अस्थिर होगा।

फरवरी – यह मास चुनौतीपूर्ण होगा। गृह-क्लेश के साथ-साथ व्यापारिक कठिनाइयाँ होंगी। सम्पत्ति विवाद हो सकते हैं। सौहार्द की कमी होगी।

मार्च – यह मास तनावपूर्ण होगा। वाणिज्य एवं व्यवसाय में समस्याएं आयेंगी। ऋण लेना पड़ सकता है। कठिन परिश्रम से सफलता मिलेगी।

अप्रैल – उत्साहपूर्ण वातावरण रहेगा। कार्यों में आशानुरूप सफलता मिलेगी। कार्यक्षमता का विकास होगा। मित्रों से सहयोग मिलेगा, परिवार में शाँति रहेगी।

मई – व्यवसाय हेतु की गई यात्रा सफल रहेगी। विदेश यात्रा हेतु समय अनुकूल रहेगा। व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से किए गए कार्य लाभदायक सिद्ध होंगे।

जून – मासारंभ का समय तनावपूर्ण होगा। व्यवसाय एवं सेवा क्षेत्र में व्यवधान होंगे। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। गोपनीयता भंग हो सकती है।

जुलाई – भाग्य पर आश्रित रहेंगे। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। अतिथि आगमन होगा। धार्मिक कार्य होंगे। क्रोध बढ़ सकता है।

अगस्त – सामाजिक पद प्रतिष्ठा मिलेगी। यश में वृद्धि होगी। कई कार्यों में कठिनता होगी। कार्यारम्भ का विचार त्याग सकते हैं। धैर्य रखें, धर्मकार्य करें।

सितम्बर – आय में वृद्धि होगी। कार्य सिद्धि आशातीत होगी। रुके हुए कार्य होंगे। पुरानी सम्पत्ति क्रय-विक्रय हेतु समय उचित है। आरोप लगेंगे।

अक्तूबर – मानसिक कष्ट होगा। गृहकार्यों में क्लेश का अनुभव करेंगे। अर्थव्यवस्था अस्थिर होगी पुनः सामान्य स्थिति बनेगी। दाम्पत्य सुख में कमी होगी।

नवम्बर – पिता से वैचारिक मतभेद होगा। सम्मान हानि का भय रहेगा। गुप्त प्रसंग सामने आ सकते हैं। वैवाहिक सम्बंधों में मधुरता का [illegible]

दिसम्बर – तनाव के उपरान्त मन प्रसन्न होगा। धार्मिक यात्रा होगी। संत समागम होगा। व्यवसाय में मन्दी रहेगी। माता-पिता के प्रति चिन्तित होंगे।

वृश्चिक (Scorpio) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वर्षफल– गत वर्ष से तुला राशि में स्थित होकर शनि आपकी राशि से द्वादश भ्रमण कर रहा है जो कि वर्षान्त तक इसी स्थिति में रहेगा। किंतु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में प्रवेश करके एकादश होकर भ्रमण करेगा। इस प्रकार गत वर्ष की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी) का प्रभाव बना रहेगा। बृहस्पति मेषगत है और आपकी राशि से षष्ठ भ्रमण कर रहा है। इसके उपरान्त 17 मई को वृष संक्रमण करके सप्तम होकर संचार करेगा। राहु-केतु क्रमशः वृश्चिक-वृष में प्रथम-सप्तम संचार कर रहे हैं तथा 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला-मेष में द्वादश-षष्ठ भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि, शनि-केतु का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त एवं शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि एवं गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि क्रमशः 1 जनवरी से 16 मई 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी।

अन्य ग्रहों की अपेक्षा बृहस्पति मई से दिसम्बर तक शुभफलदायी सिद्ध होगा। अन्य ग्रहों की स्थिति अशुभ सिद्ध होगी। आपके महत्त्वपूर्ण कार्यों में बाधा आयेगी, विरोधियों का सामना करना पड़ेगा। व्यय बढ़ेगा तथा आय कम होगी। शत्रु पक्ष गुप्त रूप से हानि पहुंचायेगा। आर्थिक स्थिति में सामान्य की अपेक्षा प्रतिकूलता रहेगी। आप उत्साह से कार्यों में लगे रहेंगे तथा व्यापार को बढ़ाने का प्रयास करेंगे। अति कठिन परिश्रम करना होगा। विवाहादि में विलंब होगा। परिवार की चिंता होगी तथा स्वयं भी निराश हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में खुद को लगाने से लाभ होगा।

मासिक फल

जनवरी – साहस एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। मित्रों एवं भाइयों से सहयोग मिलेगा। सफलता के योग हैं। मनोरथ सिद्ध होगा, क्रोध में वृद्धि होगा। धैर्य रखने से लाभ होगा।

फरवरी – सफलता प्राप्ति हेतु समय अनुकूल है। उद्देश्यपूर्ण यात्रा लाभदायक होगी। व्यवसाय में वृद्धि होगी। वाहनादि भौतिक संसाधनों पर व्यय करेंगे। संपत्ति विवादों से परेशान होंगे।

मार्च – गृहकार्यों एवं व्यवसाय में उलझन होगी। सन्तान की चिन्ता रहेगी। मानसिक [illegible]

अप्रैल – व्यापारिक उथल-पुथल रहेगी। परिवर्तनों पर विचार करेंगे। कार्यक्षमता बढ़ेगी तथा उत्साह में वृद्धि होगी। मित्रों का साथ मिलेगा।

मई – शत्रुपक्ष निर्बल होगा तथा कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। उत्साहपूर्वक किए गए कार्यों में सफलता मिलेगी। सहयोग का अभाव हो सकता है।

जून – जीवन साथी से मनमुटाव हो सकता है। किसी आरोप का सामना करना पड़ेगा। यात्रा सफल होगी। धनलाभ होगा।

जुलाई – यात्रा कष्टकारिणी होगी। कार्यों में बाधाएं आयेंगी। आपसी विवाद होंगे। विश्वासघात हो सकता है।

अगस्त – शासकीय कर्मचारियों को कामकाज की उलझन रहेगी। किसानों की वित्तीय स्थिति में उथल-पुथल के संकेत है। व्यापार, वाणिज्य में हलचल रहेगी।

सितम्बर – सूर्य दशमैकादश में रहकर धन लाभ करायेगा। नौकरी एवं रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। उत्साह रहेगा।

अक्तूबर – सूर्य बुध का संक्रमण एकादश में आकस्मिक लाभकारी है। मित्रों एवं परिवारजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। व्यय अधिक होगा।

नवम्बर – सूर्य शनि द्वादश में होने से मानसिक संत्रास होगा। आकस्मिक व्यय होगा। कार्यक्षेत्र में पवित्रता रखें अन्यथा दुष्परिणाम होंगे।

दिसम्बर – मानसिक कष्ट रहेगा। धन के लेन-देन में सावधानी बरतें। वैवाहिक सम्बंधों में दूरी आयेगी। मासान्त में वातावरण अनुकूल होगा।

धनु (Sagittarius) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

वर्षफल– गत वर्ष से शनि का भ्रमण आपकी राशि से एकादश है। शनि तुला राशि में स्थित होकर सम्पूर्ण वर्ष इसी अवस्था में रहेगा किंतु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में प्रवेश करके दशम संचार करेगा। बृहस्पति का संचार आपकी राशि से पंचम है। मेष राशिस्थ बृहस्पति 17 मई को वृष में संक्रमण करेगा जो कि वर्षान्त तक इसी अवस्था में रहेगा और आपकी राशि से षष्ठ भ्रमण करेगा। वृश्चिक एवं वृष राशि में गत राहु-केतु आपकी राशि से द्वादश-षष्ठ संचरित हो रहे हैं। वे 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक क्रमशः तुला एवं मेष में एकादश-पंचम भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि व केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक और शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। इसी प्रकार गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि क्रमशः 1 जनवरी से 10 मई व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी।
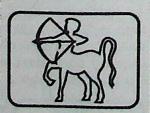
वर्ष की ग्रहस्थिति के फलस्वरूप अधिकांश ग्रहों का फल शुभ है एवं अनुकूलता को दर्शाता है। राहु एवं केतु वायदा एवं शेयर व्यवसाय में समर्घ-महर्घ (मंदी-तेजी) लायेंगे। किसी एक निश्चित क्षेत्र में पूंजी लगाना घातक होगा। जोखिम के कार्यों पर व्यय होगा। प्रेमादि प्रसंगों की गोपनीयता भंग होने से मान-हानि हो सकती है। तनाव व मानसिक क्लेश उत्पन्न होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल होगा। यह वर्ष प्रायः सफलता एवं उन्नतिदायक है किंतु फिर भी बीच-बीच में निराशा होगी। सुख, समृद्धि, यश एवं कीर्ति बढ़ेगी। शुभ कार्य होंगे तथा भौतिक सुखों के लिए धनव्यय होगा। वैवाहिक योग बनेंगे। धर्म कार्यों एवं अध्यात्म में रूचि उत्पन्न होगी।

मासिक फल

जनवरी – सम्मान एवं पद-प्रतिष्ठा मिलेगी। परिश्रम से किए गए कार्यों में आशानुरूप सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी। शनि भौतिक सुख देगा।

फरवरी – मासारंभ में कुछ क्लेश और बाधाएं आयेंगी। समय सामान्य होकर आपके अनुकूल बनेगा। धन लाभ होगा। अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

मार्च – उद्देश्यपूर्वक यात्रा सफल होगी। कामकाज में सुधार होगा। शत्रु पक्ष से परेशानी हो सकती है।

अप्रैल – संपत्ति विवाद हो सकता है। भूमि आदि क्रय करने का विचार होगा। अपनी योग्यता सिद्ध करने का अवसर मिलेगा।

मई – सन्तान सुख की प्राप्ति होगी। व्यापार में लाभकारी स्थिति बनेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूल सफलता मिलेगी।

जून – सम्मान को आघात हो सकता है। हताशा एवं निराशा का वातावरण होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा।

जुलाई – शत्रुपक्ष पराजित होगा। विरोधियों को भी पराजय मिलेगी। कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। पत्नी से विवाद हो सकता है।

अगस्त – स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। शारीरिक के साथ-साथ मानसिक कष्ट रहेगा। चिंता एवं तनाव में रहेंगे। व्यय होगा।

सितम्बर – यात्रा कष्टप्रद होगी तथा प्रतिकूल फल मिलेगा। आय के स्त्रोतों में वृद्धि होगी। तकनीकि क्षेत्र में प्रगति होगी। बुद्धि कौशल का प्रदर्शन होगा।

अक्तूबर – कार्यक्षेत्र में बाधाएँ आयेंगी किंतु धन लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी, मित्रों का सहयोग मिलेगा। अभिन्न व्यक्ति से भेंट होगी।

नवम्बर – पारिवारिक भेद उत्पन्न होंगे। आय पर ग्रहण लगेगा। गृहकार्यों में तनाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा।

दिसम्बर – मानसिक क्लेश रहेगा। स्थिति सामान्य होकर प्रसन्नता आयेगी। व्यवसाय पर मंदी होगी। भौतिक सुख मिलेंगे।

मकर (Capricorn) भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी

वर्षफल– तुला राशिस्थ शनि गत वर्ष से आपकी राशि से दशम भ्रमण कर रहा है और इस वर्षान्त तक इसी स्थिति में रहेगा। मध्य में 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में संक्रमित होकर आपकी राशि से नवम रहेगा। बृहस्पति का संचार आपकी राशि से चतुर्थ है। 17 मई से वर्षान्त तक वृष में प्रवेश करके पंचम भ्रमण करेगा। राहु केतु की स्थिति वृश्चिक-वृष राशि में है अत: उनका संचार एकादश-पंचम है। 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला-मेष में प्रविष्ट होकर आपकी राशि से दशम-चतुर्थ भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि एवं केतु शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक और शनि राहु व गुरू केतु का युति सम्बंध क्रमश: 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि क्रमश: 1 जनवरी से 10 मई व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी।

फलस्वरूप वाणिज्य एवं व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। मध्य में उतार-चढ़ाव अधिक हो सकता है। अस्थिरता का सामना करना पड़ेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। साहस एवं उत्साह बढ़ेगा। शासकीय कर्मियों को समस्या हो सकती है। स्थानान्तरण योग बनेंगे। सम्पत्ति विवादों में समय एवं धन का व्यय होगा। वैवाहिक सम्बंध प्रभावित होंगे। सन्तान की चिंता हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखनी होगी। भय हो सकता है। शैक्षणिक कार्य सफल होंगे। कृषकों को उदासीनता होगी।

मासिक फल

जनवरी – विवादों का सामना होगा। व्यवसाय उद्योगों में सामान्य स्थिति होगी। आघात का भय रहेगा। अर्थदशा में मन्दी-तेजी होगी।

फरवरी – समस्याएं आयेंगी। विरोधियों का सामना होगा। सहयोगियों द्वारा परेशानी होगी। रक्त विकार हो सकता है।

मार्च – व्यावसायिक यात्रा सफल होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। धन लाभ होगा। व्यवसाय सामान्य रहेगा।

अप्रैल– बाधाएं आयेंगी। शीघ्रता न करें। संपत्ति विवाद हो सकते हैं। अध्ययन में समय बीतेगा।

मई – विद्यार्थियों का समय अनुकूल रहेगा। क्रोध बढ़ेगा। सामाजिक क्षेत्र में पहचान अधिक होगी। व्यवहार से प्रभाव बनाएंगे।

जून – गोपनीयता भंग हो सकती है। गुप्त शत्रुओं से भय होगा। आरोप लग सकते हैं। व्यवसाय में स्थिरता रहेगी। धर्मकार्य होंगे।

जुलाई – परिश्रम अधिक करेंगे। विवाहादि में विलम्ब होगा। स्वास्थ्य की समस्या हो सकती है। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव रहेगा।

अगस्त – गृहकार्यों में उलझन होगी। व्यवसाय में व्यस्तता अधिक होगी। संयुक्त कार्य में अविश्वास होगा। आर्थिक सावधानी की आवश्यकता है।

सितम्बर – व्यावसायिक अस्थिरता उत्पन्न होगी। मानसिक कष्ट होगा। यात्रा में कष्ट होगा। तनाव बढ़ेगा।

अक्तूबर – यात्रा लाभप्रद रहेगी। सामाजिक यश बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में कोई पद मिल सकता है। उत्साह बढ़ेगा।

नवम्बर – कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। कार्य विस्तार होगा। पदोन्नति हो सकती है। यश मिलेगा।

दिसम्बर – समय आपके अनुकूल रहेगा। आय बढ़ेगी। सुख-समृद्धि बढ़ेगी। प्रियजनों से भेंट होगी। व्यय अधिक करेंगे। यात्रा होगी।

कुम्भ (Aquarius) गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द

वर्षफल– आपकी राशि से नवमभाव में गत वर्ष से शनि का संचार हो रहा है। वर्षान्त तक शनि यथावत् रहेगा किंतु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त की कालावधि में कन्या राशि में संक्रमित होकर अष्टम संचार करेगा। बृहस्पति की स्थिति गत वर्ष से मेष में है अत: उसका संचार तृतीय है। 17 मई से वर्षान्त तक वृष राशि में आपकी राशि से चतुर्थ संचार करेगा। वृश्चिक-वृष में राहु-केतु 25 दिसम्बर तक दशम चतुर्थ संचार करेंगे और 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला-मेष में प्रवेश करके वर्षान्त तक नवम-तृतीय भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि व केतु-शनि का त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त तक और शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमश: 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि 1 जनवरी से 10 मई तक तथा 17 मई से 25 दिसम्वर तक रहेगी।

फलस्वरूप यह वर्ष आपके लिए यात्रा वर्ष सिद्ध होगा। आप जो भी यात्रा व्यवसाय एवं कार्य के हेतु करेंगे वो सफलता देगी। यदि विदेश यात्रा करना चाहें तो समय आपके अनुकूल है। विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभ होगा। सफलता के अवसर होंगे, मान-सम्मान बढ़ेगा। यश और कीर्ति में वृद्धि होगी। शोध एवं अनुसन्धान में सफलता मिलेगी। व्यापार में विस्तार होगा तथा सुख-सुविधा मिलेगी। पारिवारिक सामंजस्य ठीक रहेगा।

मासिक फल

जनवरी – आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय बढ़िया तथा कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार में शांति रहेगी। सुखद समाचार मिलेगा।

फरवरी – आय-व्यय में अस्थिरता आयेगी। परिवार में स्थिति सामान्य रहेगी। सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ेगा। धार्मिक कार्य होंगे। व्यवसाय सामान्य रहेगा।

मार्च – उद्देश्य रहित भ्रमण होगा। विवाद की स्थिति आयेगी। सहभागियों से निराशा होगी। यात्रा स्थगित करेंगे।

अप्रैल – लाभ की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। छात्रों के लिए समय अनुकूल है।

मई – कृषि कार्यों में सुधार होगा। स्थिति सुदृढ़ होगी। यात्रा सुखकारी होगी। बाधाएं उत्पन्न होंगी।

जून – निर्णय की स्थिति में संदेह होगा। व्यवसाय सामान्य रहेगा। मित्रों का सहयोग कम मिलेगा। तनाव हो सकता है।

जुलाई – सन्तान की चिन्ता होगी। प्रतिभा का लाभ कम मिलने से खिन्नता रहेगी। मानसिक क्लेश होगा। परिवार का सहयोग मिलेगा। अप्रिय समाचार मिलेगा।

अगस्त – स्वास्थ्य प्रतिकूल होगा। व्यवसाय में समस्या होगी। सहभागिता में विच्छेद हो सकता है। परस्पर अविश्वास की भावना रहेगी। वैवाहिक जीवन में क्लेश होगा। आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी।

सितम्बर – विघ्न बाधाओं से कार्य प्रभावित होंगे। गृहकार्यों में उलझन होगी। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी।

अक्तूबर – प्रिय वस्तु की क्षति हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होगा। यात्रा सामान्य रहेगी। धर्म में रूचि बढ़ेगी।

नवम्बर – भाग्य पर आश्रित होंगे, पिता-पुत्र में वैचारिक मतभेद हो सकता है। पिता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। अर्थव्यवस्था सामान्य होगी।

दिसम्बर – श्रमसाध्य सफलता व लाभ मिलेगा। धनागम होगा। अवरुद्ध कार्यों में प्रगति आयेगी। यात्रा शुभफल देगी। धर्मकार्यों में रूचि बढ़ेगी। सम्मान प्राप्त होगा। व्यवसाय सामान्य रहेगा।

मीन (Pisces) दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि

वर्षफल– तुला राशिस्थ शनि आपकी राशि से अष्टम भ्रमण कर रहा है जो कि वर्षान्त तक इसी अवस्था में रहेगा किन्तु मध्य में 18 मई से 2 अगस्त तक कन्या राशि में विचरण करने से सप्तम रहेगा। आपकी राशि गतवर्ष से शनि की ढैय्या (लघुकल्याणी) से प्रभावित है जो कि सम्पूर्ण वर्ष प्रभाव में रहेगी। बृहस्पति का संचार आपकी राशि से द्वितीय है वह मेषराशिस्थ है। 17 मई से वर्षान्त तक बृहस्पति वृषराशिगत होकर वर्षान्त तक तृतीय संचार करेंगे। राहु-केतु वृश्चिक-वृषस्थ होकर आपकी राशि से नवम-तृतीय संचार कर रहे हैं। 28 दिसम्बर से वर्षान्त तक तुला-मेष राशि में स्थित होकर अष्टम द्वितीय भ्रमण करेंगे। गुरू-शनि केतु-शनि का परस्पर त्रिकोण दृष्टि सम्बंध 18 मई से 2 अगस्त और शनि-राहु व गुरू-केतु का युति सम्बंध क्रमशः 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक तथा 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगा। गुरू-शनि व गुरू-राहु की परस्पर विरोधी दृष्टि 1 जनवरी से 10 मई तक व 17 मई से 25 दिसम्बर तक रहेगी।
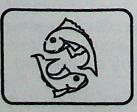
फलस्वरूप यह वर्ष गुप्त चिन्ता तनाव एवं भयोत्पादक रहेगा। अनावश्यक बाधाओं का सामना होगा। विघ्नों का आगमन बना रहने से कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा। आपका विश्वास टूट सकता है। मित्रों एवं परिवार का सहयोग मिलने की पूर्ण संभावना रहेगी। नए कार्यों को आरम्भ करने में परिश्रम अधिक लगेगा। अरूचि एवं निराशाजनक बातों पर ध्यान जाएगा। आत्मबल कमजोर होगा। धर्म एवं अध्यात्म में मन को लगाने से राहत मिलेगी। जनवरी से मई तक का समय विशेष धन लाभ देगा। भौतिक सुखों की अभिवृद्धि होगी। यात्रा से कष्ट होगा।

मासिक फल

जनवरी – कार्यक्षमता बढ़ेगी, उत्साह से कार्य करेंगे। सम्मान मिलेगा, सफलता प्राप्त होगी। धनलाभ होगा।

फरवरी – आशातीत सफलता प्राप्त होगी। धन लाभ होगा। गृह में शुभ कार्य होंगे। धर्मस्थलों की यात्रा होगी।

मार्च – कार्यों में विघ्न होंगे। गुप्त शत्रु सक्रिय होंगे। व्यय होगा तथा यात्रा होगी। मनोबल सामान्य रहेगा।

अप्रैल – प्रयास सफल होंगे। संत समागम होगा। क्रोध से कार्य का नाश हो सकता है। मंगल कार्य हो सकता है।

मई – धन के लेन-देन में शुचिता रखें। यश वृद्धि होगी। आपका सम्मान बढ़ेगा। पदोन्नति हो सकती है।

जून – कार्यसिद्धि होगी। यात्रा हो सकती है। धर्मस्थलों के दर्शन होंगे। अतिथि आयेंगे। परिवार का वातावरण अनुकूल रहेगा।

जुलाई – भाग्य के पक्ष से निराशा हाथ लगेगी। सन्तान चिन्ता होगी। विवाह में विलंब हो सकता है। यात्रा में लाभ नहीं होगा।

अगस्त – प्रेम सम्बंधों से परेशानी होगी। घरेलू उलझनें चिंता बढ़ायेंगी। अलगाव की स्थिति रहेगी।

सितम्बर – चित्त में स्थिरता रहेगी। प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। अपने कार्य से अधिकारी वर्ग को सन्तुष्ट करेंगे।

अक्तूबर – मानसिक कष्ट होगा। दाम्पत्य सुख में कमी आयेगी। कार्यों में विघ्न होगा। यात्रा कष्टकारी रहेगी।

नवम्बर – यह मास प्रतिकूल रहेगा। किसी कार्य में शीघ्रता हानिकर होगी। सुख का अनुभव होगा किंतु चिंता बनेगी।

दिसम्बर – आपका प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रु परास्त होंगे। कार्य सफल होंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। परिवार में शान्ति रहेगी।

द्वादश राशियों पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव (संवत् 2069)

सन् 2012 ई. वर्ष के प्रारम्भ से ही शनि देव तुला राशि में रहेंगे, 7 फरबरी सन् 2012 ई. मंगलवार रात्रि 7:39 पर वक्री होकर चलते-चलते 16 मई सन् 2012 ई. बुधवार प्रातः 6:30 पर कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। 25 जून को दिवा 1:30 पर मार्गी होकर 4 अगस्त प्रातः 8:36 पर तुला राशि में पुनः प्रवेश करेंगे।

आचार्य वराहमिहिर के अनुसार शनि देव जब वक्र होकर सञ्चार करते है। तो राजनीतिक तनाव होने के कारण राजाओं में परस्पर वैर, छत्र भंग (सत्ता-परिवर्तन) प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प हिंसक घटनाओं का अधिक होना, आवश्यक वस्तुओं की कमी तथा महंगाई की वृद्धि करते हैं।

तुला राशिगत शनि साढ़ेसाती तथा ढैय्या फल

शनि साढ़ेसाती– कन्या तुला एवं वृश्चिक राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का फल मिला जुला रहेगा, कभी अच्छा कभी बुरा फलादेश होगा।

ढैय्या विचार– कर्क एवं मीन राशि वालों को शनि अढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

मेष राशि– शनि की पूर्ण दृष्टि मेष राशि पर है अतः शारीरिक कष्ट, आय से खर्चा अधिक, शनि का पाया स्वर्ण होने से उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी। अचानक खर्चा होगा।

वृष राशि– केवल निर्वाहमात्र धन मिलेगा, शनिपाया ताम्र होने के कारण अचानक विदेश यात्रा सम्भव हो, धन प्राप्ति के साथ-साथ प्रतिस्पर्धाओं में सफलता हो।

मिथुन राशि– पदोन्नति, उच्चविद्या प्राप्ति तथा सफलता हो, शनि पाया चान्दी है अतः विदेश यात्रा, धन लाभ, भूमि वाहन सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

कर्क राशि– शनि का पाया लोहा होने के कारण धन का खर्च, मानसिक परेशानी, व्यर्थ की भागदौड़, कारोवार में उलझनें आएंगी।

सिंह राशि– शनि का पाया ताम्र है अतः भूमि, मकान, वाहनादि का सुख, सर्वत्र सफलता, धार्मिक एवं मांगलिक कार्य सम्पादित होने के योग हैं।

कन्या राशि– कन्या राशि पर साढ़ेसाती के कारण आमदनी अठन्नी खर्चा रुपया, आर्थिक उलझनों के कारण मानसिक अशान्ति, शानि का पाया सुवर्ण होने के कारण उन्नति मार्ग में विघ्न होंगे।

तुला राशि– शनि पाया रजत है, शनि उच्चस्थ है अतः रुके हुए कार्य सफल होंगे, धनधान्य की प्राप्ति हों परन्तु कभी-कभी मानसिक तनाव के साथ साथ खर्चा अधिक

वृश्चिक राशि– शनि पाया लोह होने से शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव रहेगा, धन लाभ की कमी, खर्चा अधिक होगा।

धनु राशि– कठिन परिश्रम के पश्चात् धनागम होगा, शनि का पाया ताम्र होने के कारण आय के साधन निम्न स्तर पर ही रहेंगे।

मकर राशि– निर्वाह मात्र धन प्राप्त होता रहेगा। शनि का पाया मकर राशि पर चान्दी का है अतः खर्चा अधिक, आमदनी कम होगी, यात्राएं अधिक वाहन सुख होगा।

कुंभ राशि– शनि नवम स्थान में है। बनते कार्यों में विघ्न, व्यर्थ धन खर्चा, पारिवारिक मसलों में अशान्ति, शनि पाया सुवर्ण है तो भाग्योन्नति में विघ्न एवं देरी होगी।

मीन राशि– शनि का ढैय्या अशुभ फलप्रद है, आमदी कम खर्चा अधिक, सभी कार्यों की सफलता में विघ्न, व्यर्थ भागदौड़, पारिवारिक परेशानियों में वृद्धि, शनि का पाया लोह होने के कारण आर्थिक हानि, दुर्घटना चोटादि का भय हो।

कन्या विवाहे विलम्बदोष परिहारः

किसी शुभ दिन में वर प्राप्ति के लिए कन्या स्नानादि से प्रातःकाल निवृत्त होकर कमलबीज की माला से (ॐ श्रीगणेशाय नमः) इस मन्त्र का एक माला जप में गणेश का ध्यान करें। फिर गौरीशङ्कर (शिवपार्वती) का ध्यान करती हुई–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ स्वाहा

प्रतिदिन इस मन्त्र का एक माला जप करें।

हर ऐतवार के दिन जप के बाद प्रातः देसी घी में फीकी फुल्लियों को भिगोकर जगती आग में 108 आहुतियें दे दिया करें। मन्त्र के साथ स्वाहा का उच्चारण करती जायें। श्री शिव पार्वती गणेश जी का चित्र सामने रख लिया करें। जप व हवन के बाद–

प्रार्थना :- **ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।**
नन्दगोपसुतं देवि पतिं देहि मनोरमम्॥

यह अनुष्ठान कन्या अपनी नवग्रह शान्ति तक करती रहे। कन्या के माता पिता भी श्रीगणेश जी की इकीस-इकीस माला जप करते रहें। लाख जप होने पर अपने तोल के बराबर हरा घास, भूसा, खल, पत्तरी, जौ का दाला, चने आदि को गौओं को डाल दिया करें। पक्षियों को प्रतिदिन चावल बाजरा आदि भी डालते रहें। *अथवा* कन्या हरिद्रा (हल्दी) की माला से निम्न लिखित मन्त्र की प्रतिदिन पांच माला जप विवाह की नवग्रह शान्ति तक करें :-

ॐ हे गौरि! शङ्करार्धाङ्गि! यथा त्वं शङ्कर प्रिया।

ग्रहण विवरण (संवत् 2069 वि०) सन् 2012-13 ई०

– पीयूष रैणा, अभियन्ता

यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।
अत्रयस्तमन्वविन्दन् न ह्यन्ये अशक्नुवन्॥ (ऋ. 5.40.9)

ऋग्वेद के उपरोक्त मन्त्र से ज्ञात होता है कि महर्षि अत्रि ने सर्वप्रथम सूर्यग्रहण के रहस्य को जाना और सूर्यग्रहण के बारे में बताया। वैदिक काल में यह मान्यता थी कि स्वर्भानु (राहु) नामक दैत्य के द्वारा सूर्य को ग्रसित करने से ग्रहण होता है। माध्यन्दिनी संहिता में कहा गया है कि–

"राहुर्वै हस्ती भूत्वा तमसा सूर्यं विव्याध।"

किंतु कालान्तर में इस मान्यता अथवा इस चिन्तन को और अधिक विस्तृत रूप से विद्वानों ने परिशुद्ध किया और उन्होंने बताया कि 'स्वर्भानु' या 'राहु' नाम का कोई दैत्य या राक्षस नहीं है अपितु राहु शब्द का अर्थ होता है तम (अंधकार)। यथा–

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः। (अमरकोश)

अतः इस धारणा को बल मिला कि अंधकार रूपी राक्षस (राहु) चंद्रबिम्ब के माध्यम से (चंद्र छाया में प्रवेश करके) जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आकर सूर्य को ढँक देता है (आच्छादित कर देता है) तब यह अवस्था सूर्यग्रहण कहलाती है। और जब यह राहु पृथ्वी की छाया के माध्यम से चंद्रमा को आच्छादित कर दे तब चंद्रग्रहण होता है। वैदिक युग से आरंभ करके ज्योतिषग्रन्थों तक सूर्यग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण के भेदोपभेदों का पर्याप्त विवेचन मिलता है। इस वर्ष घटित होने वाले ग्रहणों का वर्णन इस प्रकार है :–

विक्रम संवत् 2069, सन् 2012-13 ई० में भूमि पर 4 ग्रहण घटित होंगे :–

1. सूर्यग्रहण 20-21 मई 2012 ई०
2. चन्द्रग्रहण (खण्डग्रास) 4 जून 2012 ई०
3. सूर्यग्रहण 13-14 नवम्बर 2012 ई०
4. चन्द्रग्रहण (खण्डग्रास) 28 नवम्बर 2012 ई०

2. सूर्यग्रहण (वलयग्रहण) 20-21 मई 2012 ई०– यह ग्रहण 20 मई की रात्रि 2:26 से आरंभ करके 21 मई के प्रातः 8:19 तक घटित होगा किन्तु भारत के किसी भी नगर में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अतः यह ग्रहण जम्मू सहित भारत के किसी भी भाग में नहीं लगेगा। यह ग्रहण विशेष रूप से कनाडा, चीन, जापान, ग्रीनलैण्ड, इंडोनेशिया, कजाकिस्तान, दक्षिण कोरिया, मैक्सिको, मंगोलिया, फिलिपींस, रसियन फेडरेशन, ताइवान और वेस्टर्न यू.एस. में देखा जा सकेगा।

विशेष– भारत में ग्रहण दृश्य न होने के कारण सूतकादि काल का प्रयोजन नहीं है।

2. चन्द्रग्रहण (खण्डग्रास) 4 जून 2012– यह ग्रहण जम्मू कश्मीर सहित भारत के किसी भी भाग में दृश्य नहीं होगा। विशेष रूप से एशिया के कुछ भागों सहित ऑस्ट्रेलिया, पेसेफिक (प्रशान्त महासागर) एवं अमेरिका में दिखाई देगा।

ग्रहण काल– (भा.स्टै.टा.)

चन्द्रमालिन्य प्रारंभ (Moon enters Penumbra)	14:18
ग्रहणस्पर्श (Moon enters Umbra)	15:29
ग्रहण समाप्त (Moon Leaves Umbra)	17:36
चन्द्रमालिय समाप्त (Moon Leaves Penumbra)	18:48

विशेष– भारत के दक्षिणपूर्वी भागों में कुछ समय के लिए मात्र चन्द्र मालिन्य रहेगा। अतः ग्रहणसूतकादि का प्रयोजन नहीं है।

स्थान	चन्द्रोदय	चन्द्रमालिन्य समाप्ति काल
चेन्नै	18:22	18:37
तिरुचिरापल्ली	18:25	18:37
तिरुपति	18:28	18:37
भुवनेश्वर	18:12	18:37
कटक	18:13	18:37
पुरी	18:11	18:37
कोणार्क	18:10	18:37
रायपुर (छ.ग.)	18:32	18:37
कोलकाता	18:06	18:37

3. सूर्यग्रहण 13-14 नवम्बर 2012 :– यह ग्रहण जम्मू कश्मीर सहित भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा। इस ग्रहण को ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, साऊथ पेसिफिक, दक्षिणी अमेरिका आदि देशों में 13 नवम्बर रात्रि 1:07 से 14 नवम्बर प्रातः 6:15 तक देखा जा सकेगा।

विशेष– यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा अतः सूतकादि का प्रयोजन नहीं है।

4. चन्द्रग्रहण 28 नवम्बर 2012 :– यह ग्रहण भारत में हल्की छाया के रूप में ही रहेगा जो कि प्रायः प्रभावहीन ही है। फिर भी जम्मू कश्मीर सहित विश्व के विभिन्न भागों में छाया देखी जा सकेगी।

ग्रहण काल– (भा.स्टै.टा.)

चन्द्रमालिन्य प्रारंभ (Moon enters Penumbra)	17:30
चन्द्रमालिन्य समाप्त (Moon Leaves Penumbra)	22:11

विश्व के अन्य देशों यूरोप, पूर्वी अमेरिका, एशिया के कुछ भागों, ऑस्ट्रेलिनया, पेसिफिक एवं उत्तरी अमेरिका में इस छाया का समय भिन्न रहेगा।

(भा.स्टै.टा.)

चन्द्रमालिन्य प्रारंभ (Moon enters Penumbra)	12:14
चन्द्रमालिन्य समाप्त (Moon Leaves Penumbra)	16:50

विशेष– इस ग्रहण का सूतकादि काल निर्धारण आवश्यक नहीं है। यथावत् एवं यथाविधि अपने कार्यों को कर सकते हैं। उपरोक्त चारों ग्रहणों का प्रभाव भारत में कहीं नहीं है अतः किसी भी राशि के जातकों को लाभ-हानि का चिन्तन नहीं करना चाहिए।

शुक्र पारगमन (Transit of Venus) 5-6 जून 2012

"गृह्यते अनेन इति ग्रहणम्" अथवा "गृह्यते स्वाश्रयाभिमुखमाकृष्यते ग्राहकेन ग्राह्यं यत्रेति।" आदि शास्त्रीय परिभाषाएँ ग्रहण शब्द को परिभाषित करती है। प्रायः ग्रहण शब्द से सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण का ही परिज्ञान होता है। किन्तु अन्य समस्त ग्रह भी परस्पर एक दूसरे का अतिक्रमण करते हैं उनकी इस प्रक्रिया को 'पारगमन' कहा जाता है। 'पारगमन' और 'ग्रहण' में अन्तर यह है कि ग्रहण होने पर ग्राहकबिम्ब (जिसके द्वारा ग्रहण किया जा रहा हो), ग्राह्यबिम्ब (जिसका ग्रहण किया जा रहा हो) को पूर्णतः आच्छादित कर देता है जिससे प्रकाशमान ग्रह की किरणें अवरुद्ध हो जाती हैं और इस अवस्था को ग्रहण कहते हैं। किंतु पारगमन की इस अद्भुत खगोलीय घटना में स्थिति बिल्कुल भिन्न होती है। जब सूर्य बिम्ब के सामने से शुक्र बिम्ब का गमन होता है तब सूर्य में एक चलायमान 'काला बिंदु' दिखाई देता है यही स्थिति शुक्र पारगमन कहलाती है। चूँकि शुक्र की अपेक्षा सूर्यबिम्ब करोड़ों गुना अधिक विशाल है अतः शुक्रबिम्ब एक बिंदु की तरह दिखाई देता है इसी कारण यह घटना ग्रहण न होकर **'शुक्रपारगमन'** (Transit of Venus) के नाम से ख्यात है।

खगोलीय इतिहास के प्रमाणों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि शुक्रपारगमन की घटना सर्वप्रथम 'जेरेमिया होरोकस' नाम के व्यक्ति ने 1639 ई. में देखी थी। तब यह ज्ञात हुआ कि सूर्य और पृथ्वी के बीच से चन्द्रमा की तरह शुक्र एवं बुध का भी पारगमन होता है। इसके बाद यह घटना क्रमशः 1761, 1769, 1874 और 1882 में देखी गई। इस सदी में प्रथम बार यह घटना 8 जून 2004 को हुई जो कि लगभग 121 वर्षों के अन्तराल के बाद घटित हुई। और अब 8 वर्षों के बाद 5-6 जून 2012 की मध्यरात्रि में लगभग 03:39 को आरम्भ होकर प्रातः 10:19 तक इस अद्भुत खगोलीय घटना का दृश्य आकाश में दिखाई देगा।

भारत में शुक्र पारगमन लगभग प्रातः 07:02 से प्रारंभ होकर 10:22 पर सम्पन्न होगा।
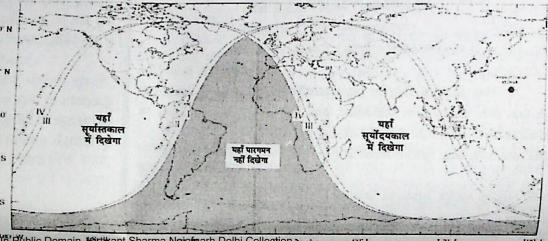
अखण्ड सुहाग का प्रतीक– 'करवाचौथ व्रत'
2 नवम्बर 2012

– श्रीमती कमलेश शास्त्री
धर्मशिक्षा संस्कृत अध्यापिका,
नागवनी स्कूल, जम्मू

भारतीय हिन्दू स्त्रियों के लिये 'करवाचौथ' का व्रत अखण्ड सुहाग को देने वाला माना जाता है। विवाहित स्त्रियाँ इस दिन अपने पति की दीर्घ आयु एवं स्वास्थ्य की मंगल-कामना करके भगवान् रजनीश (चन्द्रमा) को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती हैं। स्त्रियों में इस दिन के प्रति इतना अधिक श्रद्धाभाव होता है कि वे कई दिन पूर्व से ही इस व्रत की तैयारी प्रारम्भ कर देती है। यह व्रत कार्तिक कृष्ण की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी को किया जाता है, यदि वह दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वविद्धा लेनी चाहिये। करकचतुर्थी को ही 'करवाचौथ' भी कहा जाता है।

वास्तव में करवाचौथ का त्योहारा भारतीय संस्कृति के उस पवित्र बन्धन का प्रतीक है जो पति-पत्नी के बीच होता है। भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर की संज्ञा दी गयी है। करवाचौथ पति और पत्नी दोनों के लिये नवप्रणय-निवेदन और एक-दूसरे के प्रति अपार प्रेम, त्याग एवं उत्सर्ग की चेतना लेकर आता है। इस दिन स्त्रियाँ पूर्ण सुहागिन का रूप धारण कर, वस्त्राभूषणों को पहनकर भगवान् रजनीश से अपने अखण्ड सुहाग की प्रार्थना करती हैं।

स्त्रियाँ शृंगार करके ईश्वर के समक्ष दिनभर के व्रत के बाद यह प्रण भी लेती हैं कि वे मन, वचन एवं कर्म से पति के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखेंगी।

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चौथ को केवल चन्द्र देवता की ही पूजा नहीं होती, बल्कि शिव-पार्वती और स्वामिकार्तिकेय को भी पूजा जाता है। शिव-पार्वती की पूजा का विधान इस हेतु किया जाता है कि जिस प्रकार शैलपुत्री पार्वती ने घोर तपस्या करके भगवान् शंकर को प्राप्त कर अखण्ड सौभाग्य प्राप्त किया वैसा ही उन्हें भी मिले। वैसे भी गौरी-पूजन का कुँआरी कन्याओं और विवाहिता स्त्रियों के लिये विशेष माहात्म्य है।

नगर	चन्द्रोदय	नगर	चन्द्रोदय
अखनूर	19/57	वैष्णो देवी	19/56
अनंतनाग	19/54	जालंधर	19/58
उधमपुर	19/56	जयपुर	20/05
कटड़ा	19/56	दिल्ली	19/56
कठुआ	19/55	जिंद	19/59
किश्तवाड़	19/51	अमृतसर	19/59
कुद	19/55	ऊना	19/54
केरन	19/56	कांगड़ा	19/49
कोटली	19/59	कुल्लू	19/49
चिनैनी	19/55	कुरुक्षेत्र	19/55
जम्मू	19/57	गुरुदासपुर	19/56
जसरोटा	19/55	गुड़गांव	19/57
डोडा	19/53	चम्बा	19/52
नवांशहर	19/58	देहरादून	19/49
पहलगांव	19/52	नाहन	19/52
पुंछ	19/49	पठानकोट	19/55
बनिहाल	19/54	बनारस	19/39
बसोली	19/54	मुम्बई	20/24
बारामूला	19/56	बैजनाथ	19/52
भद्रवाह	19/53	बिलासपुर	19/49
मेंडर	19/58	लुधियाना	19/57
राजौरी	19/58	लखनऊ	19/44
रामनगर	19/55	शिमला	19/51
रामबन	19/54	सोलन	19/52
रियासी	19/56	सोनीपत	19/57
लेह	19/43	सहारनपुर	19/53
श्रीनगर	19/54	होशियारपुर	19/55
साम्बा	19/56	हरिद्वार	19/49

अथ शिवार्चनम्

अथ शांतिपाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्।
देवानाꣳसख्यमुपसे दिमावयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भग- म्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत्।।
तन्नो वातो मयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विनाश्रृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसोविश्वे नोदेवाऽअवसा गमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।

तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः।।
आयुष्यंवर्च्चस्यꣳरायस्पोषमौद्भिदम्।
इदꣳहिरण्यव्वर्च्चस्वज्जैत्राय विशतादुमाम्।।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे-देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि।
ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।
।।ॐ सुशान्तिर्भवतु।।
।। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।

आत्मपूजा

पवित्रीधारणम् :

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।
अथवा
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आत्माभिषेक :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमनम् :

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

हस्तप्रक्षालनम्:

ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः। ॐ गोविन्दाय नमः।

प्राणायाम :

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अङ्गन्यास :

ओं वाङ्मेऽआस्येऽस्तु। ॐ नासोर्मे प्राणोऽस्तु। ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। ॐ ऊर्वोर्मेऽओजोऽस्तु। ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तन्वा सह सन्तु।

सषर्पैर्दिग्बन्ध :

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः।
ये चात्र विघ्नकर्त्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे।।

ओं प्राच्यैः नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः
ओं उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षाय नमः, ॐ पूजाभूम्यै नमः

विनियोग :

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वीपूजा :

ॐ पृथिव्यैः (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम्, शरीरे स्नानीयं, वस्त्रोपवस्त्रं, यज्ञोपवीतं एष गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि, धूपोदीपश्च नैवेद्यं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

पृथ्वी प्रार्थना :

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

कर्मपात्रस्थापनम् :

गन्धादिना त्रिकोणमण्डलं कृत्वा दूर्वागन्धाक्षतपुष्पाणि निधाय कर्मपात्रं न्यसेत्। तत्रकर्मपात्रं पूर्ववद् गन्धाद्यैः सम्पूज्य।

कलशस्थापनम् :

ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

जलपूरणम् :

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

तीर्थाभिमन्त्रणम् :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

गन्धक्षेपः

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

दूर्वा

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पूगीफलम्

ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳬंहसः।।

पंचरत्नम्

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे।।

सुवर्णखण्डः

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपᳬंसंव्ययस्व विभावसो।।

स्मार्ताचमनम् :

ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः।

वरुणावाहनम्

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।।
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आह्वयामि।
(कलश को चारों दिशाओं में तिलक लगायें)
ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदाय नमः
ॐ सामवेदाय नमः, ॐ अथर्ववेदाय नमः

देवताह्वानम्

ॐ कला कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।

आत्मतिलकम् :

ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां भूयासꣳसुवर्चामुखेन।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्।।

शिखाबन्धनम् :

ॐ उर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये चामुण्डे चापराजिते।।

सूर्यार्घ्यम् :

ॐ एहि सूर्यसहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

ध्यानम् :

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्त्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्यमयवपुर्धृत शंखचक्रः।।

दीपार्घ्यम् :

ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह।
प्रसीद मम गोविन्द दीपार्घ्यं प्रतिगृह्यताम्।।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः
सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

दीपप्रार्थना :

ॐ दीप! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकारनिवारक।
इमा मया कृता पूजा गृह्ण तेजो विवर्धय।।

धूपार्घ्यम् :

ॐ वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्य सुमनोहरम्।

धूपम्

ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयंवयंधूर्वाम:।
देवानामसिवह्नितमॐसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।

धूपप्रार्थना :

ॐ वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते।।

एषाऽऽत्मपूजा सर्वकर्मसुप्रयोज्या।।

प्रतिज्ञा संकल्प :

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा- यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र: अमुकशर्माऽहं (अमुक वर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) सपत्नीक: ममाऽत्मन: श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिकाम: कायिकवाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपातकदुरितक्षयद्वारा चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रदेवताप्रीत्यर्थं शिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) दुग्धधारया जलधारया वा पूजनमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादीनां नन्दीश्वरवीरभद्रस्वामिकार्तिक-कुबेर-कीर्तिमुखादीनां पूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयो: पूजनं च करिष्ये।

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषाविश्ववेदा:।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु।।

पय: पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा:। पयस्वती: प्रदिश: सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वॐशान्ति: शान्तिरेव शांति: सामा शांतिरेधि। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभारामहेमती: यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।। एतत्ते देवसवितुर्यज्ञम्प्राहुवर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव।। मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञॐसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते न सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति।। गणानान्त्वा गणपतिॐहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिॐहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिॐहवामहे वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नम:।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ श्री-मातृ-पितृ-चरण-कमलेभ्यो नमः। ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः। ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः। ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ-देवताभ्यो नमः। ॐ अधिदेव-प्रत्यधिदेव-सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो-नमः। ॐ समस्त-लोकपालेभ्यो नमः। ॐ वास्तु-क्षेत्रपालयोगिनी-सर्वतोभद्र-पीठाधिष्ठातृ-देवताभ्यो नमः। ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। ॐ श्री राधादामोदराभ्यां नमः। ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामभ्यो नमः। ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः। ॐ प्रयागादि-तीर्थ-राजेभ्यो नमः। ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्रह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायरुद्राय नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनंध्यायेत्सर्व-विघ्नोपशान्तये।

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये-त्र्यम्बके-गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेङ्ऽघ्रियुगं स्मरामि।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।
वक्रतुण्ड - महाकाय - कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।

श्री गौरीगणेशपूजा

शर्करास्नानम्- ॐ अपां ॐ रसमुद्वयस ॐ सूर्येसन्त ॐ समाहितम्।

श्री गौरीगणेशपूजा

आह्वानम्– ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहे
निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम्।।

आसनम्– ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।

पाद्यम्– ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

अर्घ्यम्– ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमधुमन्तन्तऽऊर्मिम्।।

आचमनम्– ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

स्नानम्– ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये।।

पयःस्नानम्–ॐ पयः पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

शुद्धस्नानम्– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्।
एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम्।

दधिस्नानम्– ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्।।

घृतस्नानम्– ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभव्वक्षिहव्यम्।।

मधुस्नानम्–मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽऽअस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।।

शर्करास्नानम्–ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्यसन्त ꣳ समाहितम्।
अपा ꣳ रसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रा-
यत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

उद्वर्तनस्नानम्– ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वाव्वसुः परिदधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो
विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।
मित्रो-वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यरिष्ट्यै
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।

शुद्धस्नानम्– ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनः श्येतः
श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा
नभोरूपाः पार्जन्याः।

वस्त्रम्– ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः।
तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः।।

यज्ञोपवीतम्– ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः।।

चन्दनम्– ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

अक्षतान्– अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो
विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी।

पुष्पाणि– ॐ ओषधीःप्रतिमोद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

दुर्वाङ्कुरम्– ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

सुगन्धतैलम्– ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु व्विश्वतः।।

धूपम्– ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयम्वयंधूर्वामः।

देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमज्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।

दीपम्– ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

नैवेद्यम्– ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

हस्तप्रक्षालनम्– ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुःपृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

फलम्– ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व-ꣳ-हसः।।

ताम्बूलम्– ॐ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राब्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।

दक्षिणा– ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाव्विधेम्।।

आरार्त्तिकम्– ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाꣳसि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः।।
इदꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

पुष्पाञ्जलि– ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं [illegible]

समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

विशेषार्घ्यः– ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्स्ते रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपायनमस्ते ब्रह्मचारिणे।

लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषुसर्वदा।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति।।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव।
अनयापूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपतिः सागः सपरिवारः प्रीयताम्।।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः

हरिः ॐ।। नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि। पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।।१।। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। **"ॐ गं गणपतये नमः।"** एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते सब्रह्मभूयाय़ कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलम-वाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा संनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः।।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

अथ विप्र वरणम्

अथ संकल्पः

ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे-जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्त्तैकदेशे अमुकस्थाने अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं अमुक शिवलिङ्गपूजनं ब्राह्मण द्वारा कारयितुमेभिवरणद्रव्यैर्यथानामगोत्रान् ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अथ ईशान कलश स्थापनम्

भूमिस्पर्शः – ॐ महीद्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतानो भरीमभिः।।

तण्डुलपुञ्जम् – ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त**ँ**राजन्पारयामसि।।

कलशस्थापनम् – ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वतीः पुनर्म्माविशताद्रयिः।।

जलपूरणम्– ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी
स्थोवरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि
वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

तीर्थजलम् – इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोम **ँ** स च तापरुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीयेश्रृणु ह्यासुषोमया।।

गन्धक्षेपः – ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

सर्वौषधीः – ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनु बभ्रुणामह**ँ**शतंधामानि सप्त च।।

दूर्वा – ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पञ्चपल्लवाः – ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्ण्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्।।

सप्तमृत्तिका – ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म्म सपृथाः।।

पूंगीफलम् – ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व**ँ**हसः।।

पंचरत्नम् – ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे।।

सुवर्णखण्डम्–ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तवस्त्रम् – ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूप**ँ**संव्ययस्व विभावसो।।

पूर्णपात्रम् – ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज **ँ** शतक्रतो।।

श्रीफलम् – ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व**ँ**हसः।।

वरुणावाहनम्– ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश**ँ**समानऽआयुः प्रमोषीः।।
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं
सशक्तिकं वरुणं आह्वयामि।

देवताह्वानम्– ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।

मूले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णा वेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

प्रतिष्ठा– ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

कलशस्थदेवपूजा – ॐ कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं मुखे आचमनीयम्। सर्वांगेषु स्नानीयम्। गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य-दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि।

प्रार्थना – ॐ देवदानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः।
आदित्या वसवोरुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसाददिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।
ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

नन्दीश्वरपूजनम्

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

प्रार्थना

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्त्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।

वीरभद्रपूजनम्

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

प्रार्थना

ॐ भद्रो नोऽअग्निराहुतमो भद्रा राति सुभग भद्राऽअध्वरः भद्रा उत प्रशस्तयः।।

स्वामिकार्तिकपूजनम्

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्त्यं महि जातं ते अर्वन्।।

प्रार्थना

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।

कुबेरपूजनम्

ॐ कुविदङ्गयवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।

प्रार्थना

ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

कीर्तिमुखपूजनम्

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा भिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

अथात्मविन्यासः

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा-पापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। **शिखायाम्।**

ॐ अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। **शिरसि।**

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। **ललाटे।**

ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।। **भ्रुवोर्मध्ये।**

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। **नेत्रयोः।**

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योति-र्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। **तृतीयनेत्रे।**

ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च।। **कर्णयोः।**

ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे। **नासिकयोः।**

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। **मुखे।**

ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः।। **ग्रीवायाम्।**

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवꣳरुद्रा उपश्रिताः।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। **कण्ठदेशे।**

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। **बाह्वोः।**

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। **हस्तयोः।**

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च।। **अङ्गुलिषु।**

ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्त्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।। **पृष्ठे।**

ॐ विकिरिद्रव्विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्रᳬंहेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः। **उदरे।**

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। **दक्षिणकुक्षौ।**

ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मोचनः किं च नाममत्।। **वामकुक्षौ।**

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। **नाभौ।**

ॐ मीढुष्टम शिवतमशिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसानऽआ चर पिनाकम्बिभ्रदा गहि। **कट्याम्।**

ॐ शिवो नामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिᳬंसीः।
निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। **लिङ्गे (हस्तप्रक्षालनम्)।**

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्न नातुरम्।। **गुह्ये।**

ॐ इषे त्त्वोर्जे त्त्वा वायव स्थ देवो वःसविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण आप्यायद्ध्वमग्घ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मामावस्तेनईशतमाघशᳬंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। **वृषणयोः (हस्तप्रक्षलनम्)।**

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।। **ऊर्वोः।**

ॐ एष ते रुद्र भागः सहस्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः।। **जान्वोः।**

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापर जाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।। **जंघयोः।**

ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च।। **गुल्फयोः।**

ॐ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः।
तेषाᳬंसहस्र योजनेऽवधन्वानि तन्मसि।। **पादयोः।**

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव। **कवचम्।**

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।। **अस्त्रम्।**

ॐ विज्ज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः। **धनुः।**

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्मयच्छतु।। **बाणः।**

ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तुताः।। **खड्गः।**

ॐ य एतावन्तश्च भूयाᳬंसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।
तेषाᳬंसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। **दिग्बन्धनम्।**

'शिवोऽहम्' इति भावयेत्।

अथ शिवार्चनम्

ध्यानम्– ॐ धयायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि।

आवाहनम् – ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।।
त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रं महाद्युतिम्।
गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम्।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्– ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।
विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्– ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्।।
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् – ॐ शिवेन वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठꣳसुमना असत्।।
नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचनम् – ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्तसर्व्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव।।
सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम् – ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनꣳरुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाꣳहेडईमहे।।
गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्– ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम् – ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि।। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम् – ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्वस्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्।।
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम् – ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः

द्यौरस्तुनः पिता।। मधु-मान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः।
माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
दिव्यैः पुष्पैः समुद्भुतं सर्वगुणसमन्वितम्।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्– ॐ अपाॅंरसमुद्वयसॅंसूर्ये सन्तॅंसमाहितम्।
अपाॅंरसस्य यो रसस्तंबोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो
सीन्द्राय त्वा जुष्ट्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतम्।।
इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्– ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् – ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्त आश्विनः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।
गङ्गा गोदवरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्

नमस्तेरुद्द्र मन्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहुभ्यामुतते नमः।। याते रुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी।। तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभि चाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिॅंसीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेनवचसात्त्वागिरि शाच्छाव्वदामसि।। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मॅंसुमनाऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्रथमो दैव्योभिषक्।। अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः।। ये चैनॅंरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाॅंहेडऽईमहे।।६।। असौयोवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।। उतैनंगोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्ट्टोमृडयातिनः।।७।। नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।। अथोयेऽअस्य सत्त्वानोहन्तेभ्योऽकरन्नमः।।८।। प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमु-भयोरात्क्न्योर्ज्याम्।। याश्चचतेहस्तऽइषवः पराताभगवोव्वप।।९।। विज्यन्धनुः कपर्द्दिनोविशल्योबाणवाँ २ऽउत।। अनेशन्नस्य याऽइषवआभुरस्य-निषङ्गधिः।।१०।। या ते हेतिर्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूवते धनुः।। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज।।११।। परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः।। अथो यऽइषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्यधनुष्ट्वॅंसहस्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य शल्यानाम्मुखाशिवो नः सुमनाभव।।२३।। नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे।। उभाभ्या मुतते नमो बाहुभ्यान्तवधन्वने।।१४।। मानो महान्तमुतमानोऽअर्भकम्मान उक्षन्तमुत मानउक्षितम्।। मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्दरीरिषः।।२५।। मा नस्तोके तनये मानऽआयुषि मानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः।। मानोवीरान्रुद्द्रभामिनोवधी र्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।।१६।।

गन्धोदकस्नानम्– ॐ त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

विजयास्नानम्– ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम्।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम्।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम् –ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।
शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम् – ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथ मा सदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपॐसंव्ययस्व विभावसो।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्– ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय
मीढुषे अथो ये अस्य सत्त्वानो हन्तेभ्योऽकरं नमः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धः – ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवोव्वप।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

भस्म – ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सॐसृज्यमातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।।
सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्मं समर्पयामि।

अक्षत् – ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिता।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला– ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि – ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।। त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१।। गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय।।२।।
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥३॥ श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम्। पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर॥४॥ त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः। त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥ अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्रस्य सदा प्रियम्। तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर॥६॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुर– ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि – (अबीर-गुलाल-बुक्का-हरिद्रा-चूर्णानि) –
ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँ ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमल द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्– ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम् – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अंग पूजा

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि॥१॥ ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि॥२॥ ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि॥३॥ ॐ शम्भवे नमः कटिं पूजयामि॥४॥ ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि॥५॥ ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि॥६॥ ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि॥७॥ ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वेपूजयामि॥८॥ ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि॥९॥ ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि॥१०॥ ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि॥११॥ ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि॥१२॥ ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि॥१३॥ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥१४॥

आवरण पूजा

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥ ॐ शिवाय नमः॥३॥ ॐ विरूपाय नमः॥४॥ ॐ विश्वरूपाय नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥ ॐ भैरवाय नमः॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥९॥ ॐ ईशानाय नमः॥१०॥ ॐ महेशाय नमः॥१२॥

शक्तिपूजा

ॐ उमायै नमः॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः॥३॥ ॐ गौर्यै नमः॥४॥ ॐ काल्यै नमः॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः॥६॥ ॐ कोटर्यै नमः॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः॥८॥ ॐ ह्रां नमः॥९॥ ॐ ह्रीं नमः॥१०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः॥११॥

गणपूजनम्

ॐ गणपतये नमः॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः॥२॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः॥४॥ ॐ भैरवाय नमः॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः॥८॥ ॐ नन्दिने नमः॥९॥ ॐ महाकालाय नमः॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजनम्

ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः॥१॥ ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः॥५॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः॥६॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः॥७॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः॥८॥

एकादश रुद्रपूजनम्

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥ ॐ शर्वाय नमः॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः॥४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥ ॐ कपर्दिने नमः॥७॥ ॐ भैरवाय नमः॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥९॥ ॐ ईशानाय नमः॥१०॥ ॐ महेश्वराय नमः॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम–पूजनम्

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता: गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

ॐ शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं,
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,

1 ॐ शिवाय नमः
2 ॐ महेश्वराय नमः
3 ॐ शम्भवे नमः
4 ॐ पिनाकिने नमः
5 ॐ शशिशेखराय नमः
6 ॐ वामदेवाय नमः
7 ॐ विरूपाक्षाय नमः
8 ॐ कपर्दिने नमः
9 ॐ नीललोहिताय नमः
10 ॐ शंकराय नमः
11 ॐ शूलपाणये नमः
12 ॐ खट्वाङ्गिने नमः
13 ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
14 ॐ शिपिविष्टाय नमः
15 ॐ अम्बिकानाथाय नमः
16 ॐ श्रीकण्ठाय नमः
17 ॐ भक्तवत्सलाय नमः
18 ॐ भवाय नमः
19 ॐ शर्वाय नमः
20 ॐ त्रिलोकीशाय नमः
21 ॐ शितिकण्ठाय नमः
22 ॐ शिवप्रियाय नमः
23 ॐ उग्राय नमः
24 ॐ कपालिने नमः
25 ॐ कामरये नमः
26 ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः

28 ॐ ललाटाक्षाय नमः
29 ॐ कालकालाय नमः
30 ॐ कृपानिधये नमः
31 ॐ भीमाय नमः
32 ॐ परशुहस्ताय नमः
33 ॐ मृगपाणये नमः
34 ॐ जटाधराय नमः
35 ॐ कैलासवासिने नमः
36 ॐ कवचिने नमः
37 ॐ कठोराय नमः
38 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
39 ॐ वृषाङ्काय नमः
40 ॐ वृषभारूढाय नमः
41 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
42 ॐ सामप्रियाय नमः
43 ॐ स्वरमयाय नमः
44 ॐ त्रिमूर्त्तये नमः
45 ॐ अश्विनीश्वराय नमः
46 ॐ सर्वज्ञाय नमः
47 ॐ परमात्मने नमः
48 ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः
49 ॐ हविषे नमः
50 ॐ यज्ञमयाय नमः
51 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
52 ॐ सदाशिवाय नमः
53 ॐ विश्वेश्वराय नमः

55 ॐ गणनाथाय नमः
56 ॐ प्रजापतये नमः
57 ॐ हिरण्यरेतसे नमः
58 ॐ दुर्धर्षाय नमः
59 ॐ गिरीशाय नमः
60 ॐ गिरिशायाय नमः
61 ॐ अनघाय नमः
62 ॐ भुजंगभूषणाय नमः
63 ॐ भर्गाय नमः
64 ॐ गिरिधन्वने नमः
65 ॐ प्रियाय नमः
66 ॐ अष्टमूर्त्तये नमः
67 ॐ अनेकात्मने नमः
68 ॐ सात्विकाय नमः
69 ॐ शुभविग्रहाय नमः
70 ॐ शाश्वताय नमः
71 ॐ खण्डपरशवे नमः
72 ॐ अजाय नमः
73 ॐ पाशविमोचकाय नमः
74 ॐ कृत्तिवाससे नमः
75 ॐ पुरारातये नमः
76 ॐ भगवते नमः
77 ॐ प्रमथाधिपाय नमः
78 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
79 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
80 ॐ जगद्व्यापिने नमः
81 ॐ जगद्गुरवे नमः

82 ॐ व्योमकेशाय नमः
83 ॐ महासेनाय नमः
84 ॐ जनकाय नमः
85 ॐ चारुक्रमाय नमः
86 ॐ रुद्राय नमः
87 ॐ भूतपतये नमः
88 ॐ स्थाणवे नमः
89 ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
90 ॐ दिगम्बराय नमः
91 ॐ मृडाय नमः
92 ॐ पशुपतये नमः
93 ॐ देवाय नमः
94 ॐ महादेवाय नमः
95 ॐ अव्यक्ताय नमः
96 ॐ हरये नमः
97 ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः
98 ॐ भगनेत्रभिदे नमः
99 ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
100 ॐ अव्यग्राय नमः
101 ॐ अव्यक्ताय नमः
102 ॐ अनन्ताय नमः
103 ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
104 ॐ सहस्राक्षाय नमः
105 ॐ तारकाय नमः
106 ॐ हराय नमः
107 ॐ सहस्रपदे नमः
108 ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः

धूपम् – ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।
बनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् – ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्।।
साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्– ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।
नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

(हस्तप्रक्षालनम्)

उद्वर्तनम्– ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुःपृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

फलम्– ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः।।

धत्तूरफलम् – ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वा क्षित्त्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।

ताम्बूलम्– ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा– ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।।
दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्तिः समर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।।

आरार्त्तिक्यम्– ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठसऽआत्वेषं वर्तते तमः।।
इद ꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

पुष्पाञ्जलि– ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे।
समे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुबेराय

स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुतव्विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

अथ तर्पणम् – ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि। ॐ देव देवं तर्पयामि। ॐ ज्येष्ठाय नमः, मधुपर्कम्। मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कपः। मधुपर्क प्रदानेन प्रीतो भव महेश्वर।। कालाय नमः गन्धः। ॐ कलविकरणाय नमः पुष्पाणि। ॐ सर्वभूतदमनाय नमः धूपः। ॐ भवोद्भवायनमः नैवेद्यम्।
अथ अष्टौ पुष्पांजलयः। ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शिवायदेवाय नमः। ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः। ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः। ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात। ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः। ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः। ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः। ॐ पशुपतये यजमान मूर्त्तयेनमः। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः – ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।

शिव नीराजनम्

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा।।
हर हर हर महादेव।।१।।
कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंज वने गहने।।
कोकिल कूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद सहिता।
हर हर हर महादेव।।२।।
तस्मिन् ललित सुदर्शन शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे गौरीमुदसहिता।
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्।
हर हर हर महादेव।।३।।
कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलिं विषधर कण्ठ युतम्।।
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालं।
डमरु त्रिशूल पिनाकं करधृत नृकपालम्।।
हर हर हर महादेव।।४।।
मुण्डैः रचयति मालां पन्नग उपवीतं।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्।।
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वज रूपं तापत्रय हरणम्।।
हर हर हर महादेव।।५।।
ॐ शिवाय नमः नीराजनं समर्पयामि।।

शिवगायत्री–ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।
मन्दारमालाङ्कुलितालकायै कपालमालाङ्कित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

प्रणामः– ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्क्कराय नमः शिवाय च शिवतराय च।।

क्षमा-प्रार्थना– मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।१।।
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।२।।
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भव।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव।।३।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।४।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव।।५।।

अनेन यथाशक्तिकृतेन शिवपूजननेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम।
ॐ शिवाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ शिवाय नमः।
इति शिवार्चनपद्धतिः समाप्ता।

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथवेदसार स्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गांगवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्॥१॥

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥२॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्॥३॥

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥४॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥५॥

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्त्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे॥६॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीय तमः पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥७॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते! नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य॥८॥

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ! महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे! त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः॥९॥

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे! गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्!।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि॥१०॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे! त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृडविश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश! लिङ्गात्मकं हर चराचर विश्वरूपिन्॥११॥

शिव स्तुति

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।१।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं।।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।२।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभाश्रीशरीरं।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।३।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।५।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।।
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नाराणां।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो।।८।।
शलोक – रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भव भवानीसहितं नमामि।।
ॐ जय शिव ओंकारा, भोले हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।१।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे।।२।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै।।३।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमालारुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी।।४।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।।५।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूलधर्ता।
सुखकर्ता दुःखहर्ता जगपालनकर्त्ता।।६।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।।७।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी।।८।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामि की आरति जो कोई नर गावै।
भणत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावै।।९।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

आशीर्वादः—ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्राव्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णास्सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे।।
ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

आयुष्यतिलकम् – ॐ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतबलशा विरोहतात्।।

वैदिक अभिषेकः—ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।
ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरू।
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः।।
ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां तथा।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थसिद्धये।।
अमृताभिषेकोऽस्तु।।

विसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्त्वस्त्वे महे।
उप प्प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवा स चा।।
ॐ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा।
गणेश्वर त्रिनयन विघ्नव्यूह विनाशन।
शिवलोकं प्रगच्छस्व गणेशाय नमोनमः।१।
ओंकारं चतुरोवेदांश्चातुर्होत्रमुखं प्रभुम्।

हरिं नारायणं कृष्णं गोविन्द मधुसूदनम्।
मन्दराद्रिधरं नौमि विष्णो गच्छ स्वमालयम्।३।
कल्पनानां पथि सर्वं विभ्रान्तं सचराचरम्।
तेजस्विनं महादेवं नौमि शम्भो गिरिं व्रज।४।
तेजो रूपधरं सूर्यं शाशनं शीतलत्विषम्।
रक्तवर्णधरं भौमं शशिजं हरितप्रभम्।५।
सर्वाविद्या मुखे यस्य सर्वदेवैः प्रपूजितम्।
गुरुं नौमि तवाभक्त्या भार्गवं दैत्यपूजितम्।६।
शनैश्चरं सूर्यसुतं सैंहिकेयं महाबलम्।
केतुं च नौमि शिखिनं ग्रहा गच्छन्तु स्वां पुरीम्।७।
शक्र गच्छ सुधर्माख्यां वीतिहोत्र स्वमालयम्।
खंयमनीं धर्मराज नैर्ऋतं गच्छ निर्ऋते।८।
वरुण त्वमपांमध्ये वायो गन्धवर्तीं व्रज।
अलकां याहि यक्षेन्द्र रुद्रा ईशानमण्डलम्।९।
क्षेत्रपाला त्वक्षत्रेषु मातरो मातृमण्डले।
गच्छन्तु सर्वे स्वं स्थानं यजमानवरप्रदाः।१०।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।११।
धान्यं देहि धनं देहि पुत्रपौत्रांश्च देहि मे।
देहि मे ऽआयुरारोग्यं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।१२।
यत्र देवालयाः सन्ति तत्र गच्छ हुताशन।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।१३।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।१४।
न्यूनं संपूर्णतां यान्ति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।
ॐ विश्व शान्तिः ओं विश्व शान्तिः। ॐ विश्व शान्तिः।

अथ श्रीसूर्यार्घ्यदानम्

श्रीसूर्याभिमुखस्तिष्ठन् गन्धाक्षतपुष्पयुक्तानि त्रीण्यर्घ्याणि दद्यात्, तत्र मन्त्रः –

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकर॥
कर्मसाक्षिणे श्रीसूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम।
इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, दत्तार्घ्योदकेन दक्षिणनासाचक्षुः श्रोत्रस्पर्शनञ्च कुर्यात्

ॐ यानि कानीति प्रदक्षिणीकृत्य–

ॐ एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः॥ इति प्रणमेत्।
ॐ यज्ञच्छिद्रं तपश्चिछद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः।
ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः,
इत्याद्युक्त्वा तूष्णीं त्रिराचमेत्॥ ततः

ॐ आपद्धनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥

श्रीशिवसहस्रनामावलिः

1 ॐ स्थिराय नमः।
2 ॐ स्थाणवे नमः।
3 ॐ प्रभवे नमः।
4 ॐ भीमाय नमः।
5 ॐ प्रवराय नमः।
6 ॐ वरदाय नमः।
7 ॐ वराय नमः।
8 ॐ सर्वात्मने नमः।
9 ॐ सर्वविख्याताय नमः।
10 ॐ सर्वस्मै नमः।
11 ॐ सर्वकराय नमः।
12 ॐ भवाय नमः।
13 ॐ जटिने नमः।
14 ॐ चर्मिणे नमः।
15 ॐ शिखण्डिने नमः।
16 ॐ सर्वाङ्गने नमः।
17 ॐ सर्वभावनाय नमः।
18 ॐ हराय नमः।
19 ॐ हरिणाक्षाय नमः।
20 ॐ सर्वभूतहराय नमः।
21 ॐ प्रभवे नमः।

23 ॐ निवृत्तये नमः।
24 ॐ नियताय नमः।
25 ॐ शाश्वताय नमः।
26 ॐ ध्रुवाय नमः।
27 ॐ श्मशानवासिने नमः।
28 ॐ भगवते नमः।
29 ॐ खचराय नमः।
30 ॐ गोचराय नमः।
31 ॐ अर्दनाय नमः।
32 ॐ अभिवाद्याय नमः।
33 ॐ महाकर्मणे नमः।
34 ॐ तपस्विने नमः।
35 ॐ भूतभावनाय नमः।
36 ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः।
37 ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः।
38 ॐ महारूपाय नमः।
39 ॐ महाकायाय नमः।
40 ॐ वृषरूपाय नमः।
41 ॐ महायशसे नमः।
42 ॐ महात्मने नमः।
43 ॐ सर्वभूतात्मने नमः।

45 ॐ महाहनवे नमः।
46 ॐ लोकपालाय नमः।
47 ॐ अन्तर्हितात्मने नमः।
48 ॐ प्रसादाय नमः।
49 ॐ हयगर्दभये नमः।
50 ॐ पवित्राय नमः।
51 ॐ महते नमः।
52 ॐ नियमाय नमः।
53 ॐ नियमाश्रिताय नमः।
54 ॐ सर्वकर्मणे नमः।
55 ॐ स्वयम्भूताय नमः।
56 ॐ आदये नमः।
57 ॐ आदिकराय नमः।
58 ॐ निधये नमः।
59 ॐ सहस्राक्षाय नमः।
60 ॐ विशालाक्षाय नमः।
61 ॐ सोमाय नमः।
62 ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः।
63 ॐ चन्द्राय नमः।
64 ॐ सूर्याय नमः।
65 ॐ शनये नमः।
66 ॐ केतवे नमः।
67 ॐ ग्रहाय नमः।

69 ॐ वराय नमः।
70 ॐ अत्रये नमः।
71 ॐ अत्र्या नमस्कर्त्रे नमः।
72 ॐ मृगबाणार्पणाय नमः।
73 ॐ अनघाय नमः।
74 ॐ महातपसे नमः।
75 ॐ घोरतपसे नमः।
76 ॐ अदीनाय नमः।
77 ॐ दीनसाधकाय नमः।
78 ॐ संवत्सरकराय नमः।
79 ॐ मन्त्राय नमः।
80 ॐ प्रमाणाय नमः।
81 ॐ परमाय तपसे नमः।
82 ॐ योगिने नमः।
83 ॐ योज्याय नमः।
84 ॐ महाबीजाय नमः।
85 ॐ महारेतसे नमः।
86 ॐ महाबलाय नमः।
87 ॐ सुवर्णरेतसे नमः।
88 ॐ सर्वज्ञाय नमः।
89 ॐ सुबीजाय नमः।
90 ॐ बीजवाहनाय नमः।
91 ॐ दशबाहवे नमः।

93 ॐ नीलकण्ठाय नमः।
117 ॐ स्ववहस्ताय नमः।
141 ॐ त्रिजटिने नमः।
165 ॐ बहुभूताय नमः।

93 ॐ नीलकण्ठाय नमः।
94 ॐ उमापतये नमः।
95 ॐ विश्वरूपाय नमः।
96 ॐ स्वयं श्रेष्ठाय नमः।
97 ॐ बलवीराय नमः।
98 ॐ अबलगणाय नमः।
99 ॐ गणकर्त्रे नमः।
100 ॐ गणपतये नमः।
101 ॐ दिग्वाससे नमः।
102 ॐ कामाय नमः।
103 ॐ मन्त्रविदे नमः।
104 ॐ परममन्त्राय नमः।
105 ॐ सर्वभावकराय नमः।
106 ॐ हराय नमः।
107 ॐ कमण्डलुधराय नमः।
108 ॐ धन्विने नमः।
109 ॐ बाणहस्ताय नमः।
110 ॐ कपालवते नमः।
111 ॐ अशनिने नमः।
112 ॐ शतघ्निने नमः।
113 ॐ खड्गिने नमः।
114 ॐ पट्टिशिने नमः।
115 ॐ आयुधिने नमः।
116 ॐ महते नमः।

117 ॐ सुबलहस्ताय नमः।
118 ॐ सुरूपाय नमः।
119 ॐ तेजसे नमः।
120 ॐ तेजस्करनिधये नमः।
121 ॐ उष्णीषिणे नमः।
122 ॐ सुवक्त्राय नमः।
123 ॐ उदग्राय नमः।
124 ॐ विनताय नमः।
125 ॐ दीर्घाय नमः।
126 ॐ हरिकेशाय नमः।
127 ॐ सुतीर्थाय नमः।
128 ॐ कृष्णाय नमः।
129 ॐ शृगालरूपाय नमः।
130 ॐ सिद्धार्थाय नमः।
131 ॐ मुण्डाय नमः।
132 ॐ सर्वशुभङ्कराय नमः।
133 ॐ अजाय नमः।
134 ॐ बहुरूपाय नमः।
135 ॐ गन्धधारिणे नमः।
136 ॐ कपर्दिने नमः।
137 ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
138 ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः।
139 ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः।
140 ॐ नभःस्थलाय नमः।

141 ॐ त्रिजटिने नमः।
142 ॐ चीरवाससे नमः।
143 ॐ रुद्राय नमः।
144 ॐ सेनापतये नमः।
145 ॐ विभवे नमः।
146 ॐ अहश्चराय नमः।
147 ॐ नक्तंचराय नमः।
148 ॐ तिग्ममन्यवे नमः।
149 ॐ सुवर्चसाय नमः।
150 ॐ गजघ्ने नमः।
151 ॐ दैत्यघ्ने नमः।
152 ॐ कालाय नमः।
153 ॐ लोकधात्रे नमः।
154 ॐ गुणाकराय नमः।
155 ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः।
156 ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः।
157 ॐ कालयोगिने नमः।
158 ॐ महानादाय नमः।
159 ॐ सर्वकामाय नमः।
160 ॐ चतुष्पथाय नमः।
161 ॐ निशाचराय नमः।
162 ॐ प्रेतचारिणे नमः।
163 ॐ भूतचारिणे नमः।
164 ॐ महेश्वराय नमः।

165 ॐ बहुभूताय नमः।
166 ॐ बहुधराय नमः।
167 ॐ स्वर्भानवे नमः।
168 ॐ अमिताय नमः।
169 ॐ गतये नमः।
170 ॐ नृत्यप्रियाय नमः।
171 ॐ नित्यनर्ताय नमः।
172 ॐ नर्तकाय नमः।
173 ॐ सर्वलालसाय नमः।
174 ॐ घोराय नमः।
175 ॐ महातपसे नमः।
176 ॐ पाशाय नमः।
177 ॐ नित्याय नमः।
178 ॐ गिरिरुहाय नमः।
179 ॐ नभसे नमः।
180 ॐ सहस्रहस्ताय नमः।
181 ॐ विजयाय नमः।
182 ॐ व्यवसायाय नमः।
183 ॐ अतन्द्रिताय नमः।
184 ॐ अधर्षणाय नमः।
185 ॐ धर्षणात्मने नमः।
186 ॐ यज्ञघ्ने नमः।
187 ॐ कामनाशकाय नमः।
188 ॐ दक्षयागापहारिणे नमः।

189 ॐ सुसहाय नमः।
190 ॐ मध्यमाय नमः।
191 ॐ तेजोऽपहारिणे नमः।
192 ॐ बलघ्ने नमः।
193 ॐ मुदिताय नमः।
194 ॐ अर्थाय नमः।
195 ॐ अजिताय नमः।
196 ॐ अवराय नमः।
197 ॐ गम्भीरघोषाय नमः।
198 ॐ गम्भीराय नमः।
199 ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः।
200 ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः।
201 ॐ न्यग्रोध्याय नमः।
202 ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः।
203 ॐ विभवे नमः।
204 ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः।
205 ॐ महाकायाय नमः।
206 ॐ महाननाय नमः।
207 ॐ विष्वक्सेनाय नमः।
208 ॐ हरये नमः।
209 ॐ यज्ञाय नमः।
210 ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः।
211 ॐ तीक्ष्णतापाय नमः।
[illegible]

213 ॐ सहायाय नमः।
214 ॐ कर्मकालविदे नमः।
215 ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः।
216 ॐ यज्ञाय नमः।
217 ॐ समुद्राय नमः।
218 ॐ वडवामुखाय नमः।
219 ॐ हुताशनसहायाय नमः।
220 ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
221 ॐ हुताशनाय नमः।
222 ॐ उग्रतेजसे नमः।
223 ॐ महातेजसे नमः।
224 ॐ जन्याय नमः।
225 ॐ विजयकालविदे नमः।
226 ॐ ज्योतिषामयनाय नमः।
227 ॐ सिद्धये नमः।
228 ॐ सर्वविग्रहाय नमः।
229 ॐ शिखिने नमः।
230 ॐ मुण्डिने नमः।
231 ॐ जटिने नमः।
232 ॐ ज्वालिने नमः।
233 ॐ मूर्तिजाय नमः।
234 ॐ मूर्द्धगाय नमः।
235 ॐ बलिने नमः।

237 ॐ पणविने नमः।
238 ॐ तालिने नमः।
239 ॐ खलिने नमः।
240 ॐ कालकटंकटाय नमः।
241 ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः।
242 ॐ गुणबुद्धये नमः।
243 ॐ लयाय नमः।
244 ॐ अगमाय नमः।
245 ॐ प्रजापतये नमः।
246 ॐ विश्वबाहवे नमः।
247 ॐ विभागाय नमः।
248 ॐ सर्वगाय नमः।
249 ॐ अमुखाय नमः।
250 ॐ विमोचनाय नमः।
251 ॐ सुसरणाय नमः।
252 ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः।
253 ॐ मेढ्रजाय नमः।
254 ॐ बलचारिणे नमः।
255 ॐ महीचारिणे नमः।
256 ॐ स्रुताय नमः।
257 ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः।
258 ॐ सर्वातोद्यपरिग्रहाय नमः।

260 ॐ गुहावासिने नमः।
261 ॐ गुहाय नमः।
262 ॐ मालिने नमः।
263 ॐ तरङ्गविदे नमः।
264 ॐ त्रिदशाय नमः।
265 ॐ त्रिकालधृषे नमः।
266 ॐ कर्मसर्वबन्धविमोचनाय नमः।
267 ॐ असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः।
268 ॐ युधि शत्रुविनाशनाय नमः।
269 ॐ सांख्यप्रसादाय नमः।
270 ॐ दुर्वाससे नमः।
271 ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः।
272 ॐ प्रस्कन्दनाय नमः।
273 ॐ विभागज्ञाय नमः।
274 ॐ अतुल्याय नमः।
275 ॐ यज्ञविभागविदे नमः।
276 ॐ सर्ववासाय नमः।
277 ॐ सर्वचारिणे नमः।
278 ॐ दुर्वाससे नमः।
279 ॐ वासवाय नमः।

281 ॐ हैमाय नमः।
282 ॐ हेमकराय नमः।
283 ॐ अयज्ञाय नमः।
284 ॐ सर्वधारिणे नमः।
285 ॐ धरोत्तमाय नमः।
286 ॐ लोहिताक्षाय नमः।
287 ॐ महाक्षाय नमः।
288 ॐ विजयाक्षाय नमः।
289 ॐ विशारदाय नमः।
290 ॐ संग्रहाय नमः।
291 ॐ निग्रहाय नमः।
292 ॐ कर्त्रे नमः।
293 ॐ सर्वचीरनिवासनाय नमः।
294 ॐ मुख्याय नमः।
295 ॐ अमुख्याय नमः।
296 ॐ देहाय नमः।
297 ॐ काहलये नमः।
298 ॐ सर्वकामदाय नमः।
299 ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः।
300 ॐ सुबलाय नमः।
301 ॐ बलरूपधृषे नमः।
302 ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः।
303 ॐ सर्वदाय नमः।
304 ॐ सर्वतोमुखाय नमः।

305 ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः।
306 ॐ निपातिने नमः।
307 ॐ अवशाय नमः।
308 ॐ खगाय नमः।
309 ॐ रौद्ररूपाय नमः।
310 ॐ अंशवे नमः।
311 ॐ आदित्याय नमः।
312 ॐ बहुरश्मये नमः।
313 ॐ सुवर्चसिने नमः।
314 ॐ वसुवेगाय नमः।
315 ॐ महावेगाय नमः।
316 ॐ मनोवेगाय नमः।
317 ॐ निशाचराय नमः।
318 ॐ सर्ववासिने नमः।
319 ॐ श्रियावासिने नमः।
320 ॐ उपदेशकराय नमः।
321 ॐ अकराय नमः।
322 ॐ मुनये नमः।
323 ॐ आत्मनिरालोकाय नमः।
324 ॐ सम्भग्नाय नमः।
325 ॐ सहस्रदाय नमः।
326 ॐ पक्षिणे नमः।
327 ॐ पक्षरूपाय नमः।
328 ॐ अतिदीप्ताय नमः।

329 ॐ विशाम्पतये नमः।
330 ॐ उन्मादाय नमः।
331 ॐ मदनाय नमः।
332 ॐ कामाय नमः।
333 ॐ अश्वत्थाय नमः।
334 ॐ अर्थकराय नमः।
335 ॐ यशसे नमः।
336 ॐ वामदेवाय नमः।
337 ॐ वामाय नमः।
338 ॐ प्राचे नमः।
339 ॐ दक्षिणाय नमः।
340 ॐ वामनाय नमः।
341 ॐ सिद्धयोगिने नमः।
342 ॐ महर्षये नमः।
343 ॐ सिद्धार्थाय नमः।
344 ॐ सिद्धसाधकाय नमः।
345 ॐ भिक्षवे नमः।
346 ॐ भिक्षुरूपाय नमः।
347 ॐ विपणाय नमः।
348 ॐ मृदवे नमः।
349 ॐ अव्ययाय नमः।
350 ॐ महासेनाय नमः।
351 ॐ विशाखाय नमः।
352 ॐ षष्टिभागाय नमः।

353 ॐ गवाम्पतये नमः।
354 ॐ वज्रहस्ताय नमः।
355 ॐ विष्कम्भिने नमः।
356 ॐ चमूस्तम्भनाय नमः।
357 ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः।
358 ॐ तालाय नमः।
359 ॐ मधवे नमः।
360 ॐ मधुकलोचनाय नमः।
361 ॐ वाचस्पत्याय नमः।
362 ॐ वाजसनाय नमः।
363 ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय नमः।
364 ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
365 ॐ लोकचारिणे नमः।
366 ॐ सर्वचारिणे नमः।
367 ॐ विचारविदे नमः।
368 ॐ ईशानाय नमः।
369 ॐ ईश्वराय नमः।
370 ॐ कालाय नमः।
371 ॐ निशाचारिणे नमः।
372 ॐ पिनाकवते नमः।
373 ॐ निमित्तस्थाय नमः।
374 ॐ निमित्ताय नमः।
375 ॐ नन्दये नमः।
376 ॐ नन्दिकराय नमः।

377 ॐ हरये नमः।
378 ॐ नन्दीश्वराय नमः।
379 ॐ नन्दिने नमः।
380 ॐ नन्दनाय नमः।
381 ॐ नन्दिवर्द्धनाय नमः।
382 ॐ भगहारिणे नमः।
383 ॐ निहन्त्रे नमः।
384 ॐ कालाय नमः।
385 ॐ ब्रह्मणे नमः।
386 ॐ पितामहाय नमः।
387 ॐ चतुर्मुखाय नमः।
388 ॐ महालिङ्गाय नमः।
389 ॐ चारुलिङ्गाय नमः।
390 ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः।
391 ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
392 ॐ योगाध्यक्षाय नमः।
393 ॐ युगावहाय नमः।
394 ॐ बीजाध्यक्षाय नमः।
395 ॐ बीजकर्त्रे नमः।
396 ॐ अध्यात्मानुगताय नमः।
397 ॐ बलाय नमः।
398 ॐ इतिहासाय नमः।
399 ॐ सकल्पाय नमः।
400 ॐ गौतमाय नमः।

401 ॐ निशाकराय नमः।
402 ॐ दम्भाय नमः।
403 ॐ अदम्भाय नमः।
404 ॐ वैदम्भाय नमः।
405 ॐ वश्याय नमः।
406 ॐ वशकराय नमः।
407 ॐ कलये नमः।
408 ॐ लोककर्त्रे नमः।
409 ॐ पशुपतये नमः।
410 ॐ महाकर्त्रे नमः।
411 ॐ अनौषधाय नमः।
412 ॐ अक्षराय नमः।
413 ॐ परमाय ब्रह्मणे नमः।
414 ॐ बलवते नमः।
415 ॐ शक्राय नमः।
416 ॐ नीतये नमः।
417 ॐ अनीतये नमः।
418 ॐ शुद्धात्मने नमः।
419 ॐ शुद्धाय नमः।
420 ॐ मान्याय नमः।
421 ॐ गतागताय नमः।
422 ॐ बहुप्रसादाय नमः।
423 ॐ सुस्वप्नाय नमः।
424 [illegible]

425 ॐ अमित्रजिते नमः।
426 ॐ वेदकाराय नमः।
427 ॐ मन्त्रकाराय नमः।
428 ॐ विदुषे नमः।
429 ॐ समरमर्दनाय नमः।
430 ॐ महामेघनिवासिने नमः।
431 ॐ महाघोराय नमः।
432 ॐ वशिने नमः।
433 ॐ कराय नमः।
434 ॐ अग्निज्वालाय नमः।
435 ॐ महाज्वालाय नमः।
436 ॐ अतिधूम्राय नमः।
437 ॐ हुताय नमः।
438 ॐ हविषे नमः।
439 ॐ वृषणाय नमः।
440 ॐ शंकराय नमः।
441 ॐ नित्यं वर्चस्विने नमः।
442 ॐ धूमकेतनाय नमः।
443 ॐ नीलाय नमः।
444 ॐ अङ्गलुब्धाय नमः।
445 ॐ शोभनाय नमः।
446 ॐ निरवग्रहाय नमः।
447 ॐ स्वस्तिदाय नमः।

449 ॐ भागिने नमः।
450 ॐ भागकराय नमः।
451 ॐ लघवे नमः।
452 ॐ उत्सङ्गाय नमः।
453 ॐ महाङ्गाय नमः।
454 ॐ महागर्भपरायणाय नमः।
455 ॐ कृष्णवर्णाय नमः।
456 ॐ सुवर्णाय नमः।
457 ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः।
458 ॐ महापादाय नमः।
459 ॐ महाहस्ताय नमः।
460 ॐ महाकायाय नमः।
461 ॐ महायशसे नमः।
462 ॐ महामूर्ध्ने नमः।
463 ॐ महामात्राय नमः।
464 ॐ महानेत्राय नमः।
465 ॐ निशालयाय नमः।
466 ॐ महान्तकाय नमः।
467 ॐ महाकर्णाय नमः।
468 ॐ महोष्ठाय नमः।
469 ॐ महाहनवे नमः।
470 ॐ महानासाय नमः।
471 ॐ महाकम्बवे नमः।

473 ॐ श्मशानभाजे नमः।
474 ॐ महावक्षसे नमः।
475 ॐ महोरस्काय नमः।
476 ॐ अन्तरात्मने नमः।
477 ॐ मृगालयाय नमः।
478 ॐ लम्बनाय नमः।
479 ॐ लम्बितोष्ठाय नमः।
480 ॐ महामायाय नमः।
481 ॐ पयोनिधये नमः।
482 ॐ महादन्ताय नमः।
483 ॐ महादंष्ट्राय नमः।
484 ॐ महाजिह्वाय नमः।
485 ॐ महामुखाय नमः।
486 ॐ महानखाय नमः।
487 ॐ महारोम्णे नमः।
488 ॐ महाकोशाय नमः।
489 ॐ महाजटाय नमः।
490 ॐ प्रसन्नाय नमः।
491 ॐ प्रसादाय नमः।
492 ॐ प्रत्ययाय नमः।
493 ॐ गिरिसाधनाय नमः।
494 ॐ स्नेहनाय नमः।
495 ॐ अस्नेहनाय नमः।
496 ॐ अजिताय नमः।

497 ॐ महामुनये नमः।
498 ॐ वृक्षाकाराय नमः।
499 ॐ वृक्षकेतवे नमः।
500 ॐ अनलाय नमः।
501 ॐ वायुवाहनाय नमः।
502 ॐ गण्डलिने नमः।
503 ॐ मेरुधाम्ने नमः।
504 ॐ देवाधिपतये नमः।
505 ॐ अथर्वशीर्षाय नमः।
506 ॐ सामास्याय नमः।
507 ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः।
508 ॐ यजुःपादभुजाय नमः।
509 ॐ गुह्याय नमः।
510 ॐ प्रकाशाय नमः।
511 ॐ जङ्गमाय नमः।
512 ॐ अमोघार्थाय नमः।
513 ॐ प्रसादाय नमः।
514 ॐ अभिगम्याय नमः।
515 ॐ सुदर्शनाय नमः।
516 ॐ उपकाराय नमः।
517 ॐ प्रियाय नमः।
518 ॐ सर्वस्मै नमः।
519 ॐ कनकाय नमः।

520 ॐ काञ्चनच्छवये नमः।
521 ॐ नाभये नमः।
522 ॐ नन्दिकराय नमः।
523 ॐ भावाय नमः।
524 ॐ पुष्करस्थपतये नमः।
525 ॐ स्थिराय नमः।
526 ॐ द्वादशाय नमः।
527 ॐ त्रासनाय नमः।
528 ॐ आद्याय नमः।
529 ॐ यज्ञाय नमः।
530 ॐ यज्ञसमाहिताय नमः।
531 ॐ नक्ताय नमः।
532 ॐ कलये नमः।
533 ॐ कालाय नमः।
534 ॐ मकराय नमः।
535 ॐ कालपूजिताय नमः।
536 ॐ सगणाय नमः।
537 ॐ गणकाराय नमः।
538 ॐ भूतवाहनसारथये नमः।
539 ॐ भस्मशायाय नमः।
540 ॐ भस्मगोप्त्रे नमः।
541 ॐ भस्मभूताय नमः।
542 ॐ तरवे नमः।
543 ॐ गणाय नमः।

544 ॐ लोकपालाय नमः।
545 ॐ अलोकाय नमः।
546 ॐ महात्मने नमः।
547 ॐ सर्वपूजिताय नमः।
548 ॐ शुक्लाय नमः।
549 ॐ त्रिशुक्लाय नमः।
550 ॐ सम्पन्नाय नमः।
551 ॐ शुचये नमः।
552 ॐ भूतनिषेविताय नमः।
553 ॐ आश्रमस्थाय नमः।
554 ॐ क्रियावस्थाय नमः।
555 ॐ विश्वकर्ममतये नमः।
556 ॐ वराय नमः।
557 ॐ विशालशाखाय नमः।
558 ॐ ताम्रोष्ठाय नमः।
559 ॐ अम्बुजालाय नमः।
560 ॐ सुनिश्चलाय नमः।
561 ॐ कपिलाय नमः
562 ॐ कपिशाय नमः।
563 ॐ शुक्लाय नमः।
564 ॐ आयुषे नमः।
565 ॐ परस्मै नमः।
566 ॐ अपरस्मै नमः।
567 ॐ गन्धर्वाय नमः।

568 ॐ अदितये नमः।
569 ॐ तार्क्ष्याय नमः।
570 ॐ सुविज्ञेयाय नमः।
571 ॐ सुशारदाय नमः।
572 ॐ परश्वधायुधाय नमः।
573 ॐ देवाय नमः।
574 ॐ अनुकारिणे नमः।
575 ॐ सुबान्धवाय नमः।
576 ॐ तुम्बवीणाय नमः।
577 ॐ महाक्रोधाय नमः।
578 ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
579 ॐ जलेशयाय नमः।
580 ॐ उग्राय नमः।
581 ॐ वंशकराय नमः।
582 ॐ वंशाय नमः।
583 ॐ वंशनादाय नमः।
584 ॐ अनिन्दिताय नमः।
585 ॐ सर्वाङ्गरूपाय नमः।
586 ॐ मायाविने नमः।
587 ॐ सुहृदे नमः।
588 ॐ अनिलाय नमः।
589 ॐ अनलाय नमः।
590 ॐ बन्धनाय नमः।

592 ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः।
593 ॐ सयज्ञारये नमः।
594 ॐ सकामारये नमः।
595 ॐ महादंष्ट्राय नमः।
596 ॐ महायुधाय नमः।
597 ॐ बहुधा निन्दिताय नमः।
598 ॐ शर्वाय नमः।
599 ॐ शङ्कराय नमः।
600 ॐ शङ्कराय नमः।
601 ॐ अधनाय नमः।
602 ॐ अमरेशाय नमः।
603 ॐ महादेवाय नमः।
604 ॐ विश्वदेवाय नमः।
605 ॐ सुरारिघ्ने नमः।
606 ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
607 ॐ अनिलाभाय नमः।
608 ॐ चेकितानाय नमः।
609 ॐ हविषे नमः।
610 ॐ अजैकपदे नमः।
611 ॐ कापालिने नमः।
612 ॐ त्रिशङ्कवे नमः।
613 ॐ अजिताय नमः।
614 ॐ शिवाय नमः।

616 ॐ धूमकेतवे नमः।
617 ॐ स्कन्दाय नमः।
618 ॐ वैश्रवणाय नमः।
619 ॐ धात्रे नमः।
620 ॐ शक्राय नमः।
621 ॐ विष्णवे नमः।
622 ॐ मित्राय नमः।
623 ॐ त्वष्ट्रे नमः।
624 ॐ ध्रुवाय नमः।
625 ॐ धराय नमः।
626 ॐ प्रभावाय नमः।
627 ॐ सर्वगाय वायवे नमः।
628 ॐ अर्यम्णे नमः।
629 ॐ सवित्रे नमः।
630 ॐ रवये नमः।
631 ॐ उषङ्गवे नमः।
632 ॐ विधात्रे नमः।
633 ॐ मान्धात्रे नमः।
634 ॐ भूतभावनाय नमः।
635 ॐ विभवे नमः।
636 ॐ वर्णविभाविने नमः।
637 ॐ सर्वकामगुणावहाय नमः।
638 ॐ पद्मनाभाय नमः।

640 ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः।
641 ॐ अनिलाय नमः।
642 ॐ अनलाय नमः।
643 ॐ बलवते नमः।
644 ॐ उपशान्ताय नमः।
645 ॐ पुराणाय नमः।
646 ॐ पुण्यचञ्चुरिणे नमः।
647 ॐ कुरुकर्त्रे नमः।
648 ॐ कुरुवासिने नमः।
649 ॐ कुरुभूताय नमः।
650 ॐ गुणौषधाय नमः।
651 ॐ सर्वाशयाय नमः।
652 ॐ दर्भचारिणे नमः।
653 ॐ सर्वेषां प्राणिनां पतये नमः।
654 ॐ देवदेवाय नमः।
655 ॐ सुखासक्ताय नमः।
656 ॐ सते नमः।
657 ॐ असते नमः।
658 ॐ सर्वरत्नविदे नमः।
659 ॐ कैलासगिरिवासिने नमः।
660 ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः।

662 ॐ कूलकर्त्रे नमः।
663 ॐ बहुविद्याय नमः।
664 ॐ बहुप्रदाय नमः।
665 ॐ वणिजाय नमः।
666 ॐ वर्धकिने नमः।
667 ॐ वृक्षाय नमः।
668 ॐ बकुलाय नमः।
669 ॐ चन्दनाय नमः।
670 ॐ छदाय नमः।
671 ॐ सारग्रीवाय नमः।
672 ॐ महाजत्रवे नमः।
673 ॐ अलोलाय नमः।
674 ॐ महौषधाय नमः।
675 ॐ सिद्धार्थकारिणे नमः।
676 ॐ सिद्धार्थाय नमः।
677 ॐ छन्दोव्याकरणोत्तराय नमः।
678 ॐ सिंहनादाय नमः।
679 ॐ सिंहदंष्ट्राय नमः।
680 ॐ सिंहगाय नमः।
681 ॐ सिंहवाहनाय नमः।
682 ॐ प्रभावात्मने नमः।
683 ॐ जगत्कालस्थानाय नमः।
684 ॐ लोकहिताय नमः।
685 ॐ तरवे नमः।
686 ॐ सारङ्गाय नमः।
687 ॐ नवचक्राङ्गाय नमः।
688 ॐ केतुमालिने नमः।
689 ॐ सभावनाय नमः।
690 ॐ भूतालयाय नमः।
691 ॐ भूतपतये नमः।
692 ॐ अहोरात्राय नमः।
693 ॐ अनिन्दिताय नमः।
694 ॐ सर्वभूतानां वाहित्रे नमः।
695 ॐ सर्वभूतानां निलयाय नमः।
696 ॐ विभवे नमः।
697 ॐ भवाय नमः।
698 ॐ अमोघाय नमः।
699 ॐ संयताय नमः।
700 ॐ अश्वाय नमः।
701 ॐ भोजनाय नमः।
702 ॐ प्राणधारणाय नमः।
703 ॐ धृतिमते नमः।
704 ॐ मतिमते नमः।
705 ॐ दक्षाय नमः।
706 ॐ सत्कृताय नमः।
707 ॐ युगाधिपाय नमः।
708 ॐ गोपालाय नमः।
709 ॐ गोपतये नमः।
710 ॐ ग्रामाय नमः।
711 ॐ गोचर्मवसनाय नमः।
712 ॐ हरये नमः।
713 ॐ हिरण्यबाहवे नमः।
714 ॐ प्रवेशिनांगुहापालाय नमः।
715 ॐ प्रकृष्टारये नमः।
716 ॐ महाहर्षाय नमः।
717 ॐ जितकामाय नमः।
718 ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
719 ॐ गान्धाराय नमः।
720 ॐ सुवासाय नमः।
721 ॐ तपःसक्ताय नमः।
722 ॐ रतये नमः।
723 ॐ नराय नमः।
724 ॐ महागीताय नमः।
725 ॐ महानृत्याय नमः।
726 ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः।
727 ॐ महाकेतवे नमः।
728 ॐ महाधातवे नमः।
729 ॐ नैकसानुचराय नमः।
730 ॐ चलाय नमः।
731 ॐ आवेदनीयाय नमः।
732 ॐ आदेशाय नमः।
733 ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नमः।
734 ॐ तोरणाय नमः।
735 ॐ तारणाय नमः।
736 ॐ वाताय नमः।
737 ॐ परिध्यै नमः।
738 ॐ पतिखेचराय नमः।
739 ॐ संयोगवर्धनाय नमः।
740 ॐ वृद्धाय नमः।
741 ॐ अतिवृद्धाय नमः।
742 ॐ गुणाधिकाय नमः।
743 ॐ नित्याय आत्मसहायाय नमः।
744 ॐ देवासुरपतये नमः।
745 ॐ पत्ये नमः।
746 ॐ युक्ताय नमः।
747 ॐ युक्तबाहवे नमः।
748 ॐ देवाय दिविसुपर्वणाय नमः।
749 ॐ आषाढाय नमः।

750 ॐ सुषाढाय नमः।

751 ॐ ध्रुवाय नमः।

752 ॐ हरिणाय नमः।

753 ॐ हराय नमः।

754 ॐ आवर्तमानेभ्योवपुषे नमः।

755 ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः।

756 ॐ महापथाय नमः।

757 ॐ विमर्शायशिरोहारिणे नमः।

758 ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः।

759 ॐ अक्षाय रथयोगिने नमः।

760 ॐ सर्वयोगिने नमः।

761 ॐ महाबलाय नमः।

762 ॐ समाम्नायाय नमः।

763 ॐ असमाम्नायाय नमः।

764 ॐ तीर्थदेवाय नमः।

765 ॐ महारथाय नमः।

766 ॐ निर्जीवाय नमः।

767 ॐ जीवनाय नमः।

768 ॐ मन्त्राय नमः।

769 ॐ शुभाक्षाय नमः।

770 ॐ बहुकर्कशाय नमः।

771 ॐ रत्नप्रभूताय नमः।

772 ॐ रत्नाङ्गाय नमः।

773 ॐ महार्णवनिपानविदे नमः।

774 ॐ मूलाय नमः।

775 ॐ विशालाय नमः।

776 ॐ अमृताय नमः।

777 ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।

778 ॐ तपोनिधये नमः।

779 ॐ आरोहणाय नमः।

780 ॐ अधिरोहाय नमः।

781 ॐ शीलधारिणे नमः।

782 ॐ महायशसे नमः।

783 ॐ सेनाकल्पाय नमः।

784 ॐ महाकल्पाय नमः।

785 ॐ योगाय नमः।

786 ॐ युगकराय नमः।

787 ॐ हरये नमः।

788 ॐ युगरूपाय नमः।

789 ॐ महारूपाय नमः।

790 ॐ महानागहनाय नमः।

791 ॐ अवधाय नमः।

792 ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः।

793 ॐ पादाय नमः।

794 ॐ पण्डिताय नमः।

795 ॐ अचलोपमाय नमः।

796 ॐ बहुमालाय नमः।

797 ॐ महामालाय नमः।

798 ॐ शशिने हरसुलोचनाय नमः।

799 ॐ विस्ताराय लवणाय कूपाय नमः।

800 ॐ त्रियुगाय नमः।

801 ॐ सफलोदयाय नमः।

802 ॐ त्रिलोचनाय नमः।

803 ॐ विषण्णाङ्गाय नमः।

804 ॐ मणिविद्धाय नमः।

805 ॐ जटाधराय नमः।

806 ॐ विन्दवे नमः।

807 ॐ विसर्गाय नमः।

808 ॐ सुमुखाय नमः।

809 ॐ शराय नमः।

810 ॐ सर्वायुधाय नमः।

811 ॐ सहाय नमः।

812 ॐ निवेदनाय नमः।

813 ॐ सुखजाताय नमः।

814 ॐ सुगन्धाराय नमः।

815 ॐ महाधनुषे नमः।

816 ॐ भगवते गन्धपालिने नमः।

817 ॐ सर्वकर्मणामुत्थानाय नमः।

818 ॐ मन्थानाय बहुलाय वायवे नमः।

819 ॐ सकलाय नमः।

820 ॐ सर्वलोचनाय नमः।

821 ॐ तलस्तालाय नमः।

822 ॐ करस्थालिने नमः।

823 ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः।

824 ॐ महते नमः।

825 ॐ छत्राय नमः।

826 ॐ सुच्छत्राय नमः।

827 ॐ विख्याततलोकाय नमः।

828 ॐ सर्वाश्रयाय क्रमाय नमः।

829 ॐ मुण्डाय नमः।

830 ॐ विरूपाय नमः।

831 ॐ विकृताय नमः।

832 ॐ दण्डिने नमः।

833 ॐ कुण्डिने नमः।

834 ॐ विकुर्वणाय नमः।

835 ॐ हर्यक्षाय नमः।

836 ॐ ककुभाय नमः।

837 ॐ वज्रिणे नमः।
838 ॐ शतजिह्वाय नमः।
839 ॐ सहस्रपादे सहस्रमूर्ध्ने नमः।
840 ॐ देवेन्द्राय नमः।
841 ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
842 ॐ गुरवे नमः।
843 ॐ सहस्रबाहवे नमः।
844 ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
845 ॐ शरण्याय नमः।
846 ॐ सर्वलोककृते नमः।
847 ॐ पवित्राय नमः।
848 ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः।
849 ॐ कनिष्ठाय नमः।
850 ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः।
851 ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः।
852 ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः।
853 ॐ पद्मगर्भाय नमः।
854 ॐ महागर्भाय नमः।
855 ॐ ब्रह्मगर्भाय नमः।
856 ॐ जलोद्भवाय नमः।
857 ॐ गभस्तये नमः।
858 ॐ ब्रह्मकृते नमः।
859 ॐ ब्रह्मिणे नमः।
860 ॐ ब्रह्मविदे नमः।
861 ॐ ब्राह्मणाय नमः।
862 ॐ गतये नमः।
863 ॐ अनन्तरूपाय नमः।
864 ॐ नैकात्मने नमः।
865 ॐ स्वयंभुवाय तिग्मतेजसे नमः।
866 ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः।
867 ॐ पशुपतये नमः।
868 ॐ वातरंहसे नमः।
869 ॐ मनोजवाय नमः।
870 ॐ चन्दनिने नमः।
871 ॐ पद्मनालाग्राय नमः।
872 ॐ सुरभ्युत्तरणाय नमः।
873 ॐ नराय नमः।
874 ॐ कर्णिकारमहास्रग्विणे नमः।
875 ॐ नीलमौलये नमः।
876 ॐ पिनाकधृते नमः।
877 ॐ उमापतये नमः।
878 ॐ उमाकान्ताय नमः।
879 ॐ जाह्नवीधृते नमः।
880 ॐ उमाधवाय नमः।
881 ॐ वरवराहाय नमः।
882 ॐ वरदाय नमः।
883 ॐ वरेण्याय नमः।
884 ॐ सुमहास्वनाय नमः।
885 ॐ महाप्रसादाय नमः।
886 ॐ दमनाय नमः।
887 ॐ शत्रुघ्ने नमः।
888 ॐश्वेतपिङ्गलाय नमः।
889 ॐ पीतात्मने नमः।
890 ॐ परमात्मने नमः।
891 ॐ प्रयतात्मने नमः।
892 ॐ प्रधानधृते नमः।
893 ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः।
894 ॐ त्र्यक्षाय नमः।
895 ॐ धर्मसाधारणाय वराय नमः।
896 ॐ चराचरात्मने नमः।
897 ॐ सूक्ष्मात्मने नमः।
898 ॐ अमृताय गोवृषेश्वराय नमः।
899 ॐ साध्यर्षये नमः।
900 ॐ आदित्याय वसवे नमः।
901 ॐ विवस्वते सवितामृताय नमः।
902 ॐ व्यासाय नमः।
903 ॐ सुसंक्षेपाय विस्तराय सर्गाय नमः।
904 ॐ पर्ययाय नराय नमः।
905 ॐ ऋतवे नमः।
906 ॐ संवत्सराय नमः।
907 ॐ मासाय नमः।
908 ॐ पक्षाय नमः।
909 ॐ संख्यासमापनाय नमः।
910 ॐ कलाभ्यो नमः।
911 ॐ काष्ठाभ्यो नमः।
912 ॐ लवेभ्यो नमः।
913 ॐ मात्राभ्यो नमः।
914 ॐ मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः।
915 ॐ क्षणेभ्यो नमः।
916 ॐ विश्वक्षेत्राय नमः।
917 ॐ प्रजाबीजाय नमः।
918 ॐ लिङ्गाय नमः।
919 ॐ आद्याय निर्गमाय नमः।
920 ॐ सते नमः।

921 ॐ असते नमः।
922 ॐ व्यक्ताय नमः।
923 ॐ अव्यक्ताय नमः।
924 ॐ पित्रे नमः।
925 ॐ मात्रे नमः।
926 ॐ पितामहाय नमः।
927 ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
928 ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
929 ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
930 ॐ त्रिविष्टपाय नमः।
931 ॐ निर्वाणाय नमः।
932 ॐ ह्लादनाय नमः।
933 ॐ ब्रह्मलोकाय नमः।
934 ॐ परस्यै गतये नमः।
935 ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नमः।
936 ॐ देवासुरपरायणाय नमः।
937 ॐ देवासुरगुरवे नमः।
938 ॐ देवाय नमः।
939 ॐ देवासुरनमस्कृताय नमः।
940 ॐ देवासुरमहामात्राय नमः।
941 ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः।
942 ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः।
943 ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नमः।

944 ॐ देवातिदेवाय नमः।
945 ॐ देवर्षये नमः।
946 ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः।
947 ॐ देवासुरेश्वराय नमः।
948 ॐ विश्वस्मै नमः।
949 ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः।
950 ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
951 ॐ अचिन्त्याय नमः।
952 ॐ देवतात्मने नमः।
953 ॐ आत्मसम्भवाय नमः।
954 ॐ उद्भिदे नमः।
955 ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
956 ॐ वैद्याय नमः।
957 ॐ विरजसे नमः।
958 ॐ नीरजसे नमः।
959 ॐ अमराय नमः।
960 ॐ ईड्याय नमः।
961 ॐ हस्तीश्वराय नमः।
962 ॐ व्याघ्राय नमः।
963 ॐ देवसिंहाय नमः।
964 ॐ नरर्षभाय नमः।
965 ॐ विवुधाय नमः।
966 ॐ [illegible] नमः।

967 ॐ सूक्ष्माय नमः।
968 ॐ सर्वदेवाय नमः।
969 ॐ तपोमयाय नमः।
970 ॐ सुयुक्ताय नमः।
971 ॐ शोभनाय नमः।
972 ॐ वज्रिणे नमः।
973 ॐ प्रासानां प्रभवाय नमः।
974 ॐ अव्ययाय नमः।
975 ॐ गुहाय नमः।
976 ॐ कान्ताय नमः।
977 ॐ निजाय सर्गाय नमः।
978 ॐ पवित्राय नमः।
979 ॐ सर्वपावनाय नमः।
980 ॐशृङ्गिणे नमः।
981 ॐशृङ्गप्रियाय नमः।
982 ॐ बभ्रवे नमः।
983 ॐ राजराजाय नमः।
984 ॐ निरामयाय नमः।
985 ॐ अभिरामाय नमः।
986 ॐ सुरगणाय नमः।
987 ॐ विरामाय नमः।
988 ॐ सर्वसाधनाय नमः।
989 ॐ ललाटाक्षाय नमः।

990 ॐ विश्वदेवाय नमः।
991 ॐ हरिणाय नमः।
992 ॐ ब्रह्मवर्चसे नमः।
993 ॐ स्थावराणां पतये नमः।
994 ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः।
995 ॐ सिद्धार्थाय नमः।
996 ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः।
997 ॐ अचिन्त्याय नमः।
998 ॐ सत्यव्रताय नमः।
999 ॐ शुचये नमः।
1000 ॐ व्रताधिपाय नमः।
1001 ॐ परस्मै नमः।
1002 ॐ ब्रह्मणे नमः।
1003 ॐ भक्तानां परमायै गतये नमः।
1004 ॐ विमुक्ताय नमः।
1005 ॐ मुक्ततेजसे नमः।
1006 ॐ श्रीमते नमः।
1007 ॐ श्रीवर्धनाय नमः।
1008 ॐ जगते नमः।

।इति श्रीमहाभारते
अनुशासनपर्वणि
श्रीशिवसहस्रनामावलिः

श्रीविक्रमी संवत् 2069 **चैत्र शुक्ल पक्ष** शाके: 1934, सन् 2012 ई. **23 मार्च से 6 अप्रैल तक** सूर्य उत्तरायणे, वसन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ.मि.	श चैत्र	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै. समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ
30	16	1	शुक्र	38	36	22	0	उ.भा.	14	58	12	33	ब्रह्म	26	37	किं	09	02	मीने	3	10	23	नव चान्द्रसंवत्सर प्रारंभ सिद्धियोग, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, गंडमूल A	06	34	06	4
30	21	2	शनि	44	16	24	15	रेवती	21	35	15	11	ऐन्द्र	27	22	बा	11	05	मे.दि.3:11	4	11	24	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30), पञ्चक समाप्त दिवा 3:11, गंडमूलविचार, B	06	33	06	4
30	27	3	रवि	50	41	26	47	अश्वि	28	59	18	07	वैधृ	28	18	तै	13	27	मेषे	5	12	25	स.सि. योग, सौभाग्य शयन व्रत, **श्रीगौरी तृतीया**, शिवशक्ति पूजा,C	06	32	06	4.
30	31	4	सोम	57	27	29	28	भरणी	36	54	21	15	विष्कुं	29	22	व	16	04	वृ.अ.रा.4:03	6	13	26	भद्रा दिवा 4:07 से अ.रा. परि 05:28 तक, रवियोग:	06	30	06	4
30	36	5	मंग	60	0	0	0	कृत्ति	44	51	24	25	प्रीति	30	24	व	18	48	वृषे	7	14	27	स.सि. योग, **श्रीलक्ष्मी पञ्चमी**, हयव्रत	06	29	06	4
30	42	5	बुध	04	07	08	07	रोहि	52	24	27	24	आयु.	0	0	बा	08	07	वृषे	8	15	28	स.सि. योग, स्कन्द षष्ठी व्रत, शुक्र वृष में दिवा 2:22, रवियोग:	06	28	06	4
30	48	6	गुरु	10	12	10	31	मृग	58	54	29	59	आयु.	07	16	तै	10	31	मि.दि.4:45	9	16	29	वक्री बुधोदय: पूर्वे 7:50 **विश्वावसुनामकसंवत्सर**	06	26	06	4
30	51	7	शुक्र	15	05	12	27	आर्द्रा	60	0	0	0	सौभा.	07	47	व	12	27	मिथुने	10	17	30	भद्रा दिवा 12:27 से रात्रि 1:04 तक, अमृतयोग, अशोक कलिका D	06	25	06	4
30	57	8	शनि	18	16	13	42	आर्द्रा	03	55	07	58	शोभ	07	49	ब	13	42	क.अ.रा.2:58	11	18	31	**श्रीदुर्गाष्टमी**, मेला बाहुफोर्ट, जम्मू, अशोकाष्टमी	06	24	06	4
31	03	9	रवि	19	25	14	08	पुन	07	05	09	12	अतिगंड सुकर्मा	07 30	15 01	कौ	14	08	कर्के	12	19	अप्रै	रविपुष्य योग 9:12 बाद, **श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त**, श्रीतारा जयंती	06	22	06	4
31	06	10	सोम	18	20	13	41	पुष्य	08	02	09	34	धृति	28	05	ग	13	41	कर्के	13	20	2	भद्रा रात्रि 1:01 से, स.सि. योग 9:34 तक, गंडमूल प्रारंभ 9:34, E	06	21	06	4
31	11	11	मंग	15	05	12	22	आश्ले	06	55	09	06	शूल	25	30	वि	12	22	सिं.दि.9:06	14	21	3	**कामदा एकादशी व्रत**, भद्रा दि. 12:22 तक, स.सि. योग 9:06 तक, F	06	20	06	4
31	17	12	बुध	09	55	10	17	मघा पू.फा.	03 59	50 07	07 29	51 56	गंड	22	21	बा	10	17	सिंहे	15	22	4	**प्रदोष व्रत**, बुधमार्गी दिवा 3:40, सिद्धयोग, गंडमूल समाप्ति 7:51	06	19	06	4
31	21	13	गुरु	03	10	07	33	उ.फा.	53	07	27	31	वृद्धि	18	44	तै	07	33	क.दि.11:22	16	23	5	भद्रा अ.रा.परि 4:20 से, अमृतयोग 7:33 बाद, अनंग त्रयोदशी, G	06	17	06	4
0	0	14	गुरु	55	09	28	20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	(
31	26	15	शुक्र	46	21	24	48	हस्त	46	16	24	46	ध्रुव	14	47	वि	14	36	कन्यायां	17	24	6	**श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत**, भद्रा दि. 2:34 तक, **श्रीहनुमज्जयन्ती**, H	06	16	06	5

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (31 मार्च, सन् 2012 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	02	4	11	0	01	06	07	01
16	18	10	0	19	02	03	14	14
38	42	55	44	03	32	19	10	10
59	37	29	01	38	45	55	35	35
59	758	10	22	12	57	04	03	03
13	37	29	52	30	15	49	11	11
शी	शी	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 4	आर्द्रा 4	मघा 4	पू.भा. 4	भरणी 2	कृति 2	चित्रा 3	अनु 4	रोहि 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:24

1 बृ, 12 सू. बु, 11, 10, 2 के शु, 3 चं, 9, 4, 6, 8 रा, 5 मं, 7 श

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (6 अप्रैल, सन् 2012 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	05	04	10	0	01	06	07	01
22	11	10	29	20	08	02	13	13
33	14	04	55	23	07	53	51	51
46	11	04	40	29	23	28	30	30
59	904	05	11	13	53	04	03	03
0	34	49	03	28	42	30	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रेवती 2	हस्त 1	मघा 4	पू.भा. 3	भर 3	कृति 4	चित्रा 3	अनु 4	रोहि 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:16

1 बृ, 12 सू, 11 बु, 10, 2 के शु, 3, 9, 4, 6 चं, 8 रा, 5 मं, 7 श

A प्रारंभ 12:33 घटस्थापनम् नवरात्र प्रारंभ B शुक्र कृत्तिका में अ.रा.परि 05:30 C मत्स्य जयन्ती, गण्डमूल समाप्त सायं 6:07 D प्राशनम्, सूर्य रेवती में अ.रा.परि 5:52 E रवियोग 9:34 तक F रवियोग 9:06 तक, गंडमूलविचार अमृतयोग G जैन महावीर जयन्ती, रवियोग H बुध मीन में दिवा 2:53 वैशाख स्नानारम्भः।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा– इस दिन श्री ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी अतः हमारा वर्षारम्भ इसी दिन से होता है, इस दिन श्री ब्रह्मा जी की पूजा के पश्चात् नववर्षीय पञ्चाङ्ग में दिये गए वर्ष के राजा मन्त्री इत्यादि का फल श्रवण करने से गंगा स्नान का फल मिलता है। अपने मित्र बन्धुओं से नववर्षारम्भ की बधाई एवं शुभ कामनायें देनी चाहिए। प्रातःकाल इसी दिन निम्ब पत्र प्राशन करके शरीर में तैल मालिश भी करने से सम्पूर्ण वर्ष में रक्तविकार नहीं होता भारतीय नववर्ष प्रारम्भ वस्तुतः इसी दिन से होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन 'नवरात्र' कहलाते हैं, इन नौ दिनों में भगवती दुर्गा माँ के नौ रूपों का पूजन तथा श्री दुर्गा सप्तशती पाठ करने का विधान है। इस वर्ष विश्वावसु नामक संवत्सर है अतः मध्यम वर्षा होने के कारण उपज भी कम होगी, अन्न का भाव महंगा रहेगा, रोग और चोरों की वृद्धि होगी, सभी राजा लोग लोभी एवं अभिमानी होंगे। महंगाई गगनचुम्बी होने के कारण लोगों में क्षुब्धता एवं आक्रोश की वृद्धि होगी, कहीं-कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, सरकार विरोधी आन्दोलन, जातीय दंगे तथा छत्र भंग होने की आशंका होगी। **आकाश लक्षण–** खण्ड वर्षा के योग हैं, मौसम सामान्य रहेगा।

921 ॐ असते नमः।
922 ॐ व्यक्ताय नमः।
923 ॐ अव्यक्ताय नमः।
924 ॐ पित्रे नमः।
925 ॐ मात्रे नमः।
926 ॐ पितामहाय नमः।
927 ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
928 ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
929 ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
930 ॐ त्रिविष्टपाय नमः।
931 ॐ निर्वाणाय नमः।
932 ॐ ह्लादनाय नमः।
933 ॐ ब्रह्मलोकाय नमः।
934 ॐ परस्यै गतये नमः।
935 ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नमः।
936 ॐ देवासुरपरायणाय नमः।
937 ॐ देवासुरगुरवे नमः।
938 ॐ देवाय नमः।
939 ॐ देवासुरनमस्कृताय नमः।
940 ॐ देवासुरमहामात्राय नमः।
941 ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः।
942 ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः।
943 ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नमः।

944 ॐ देवातिदेवाय नमः।
945 ॐ देवर्षये नमः।
946 ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः।
947 ॐ देवासुरेश्वराय नमः।
948 ॐ विश्वस्मै नमः।
949 ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः।
950 ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
951 ॐ अचिन्त्याय नमः।
952 ॐ देवतात्मने नमः।
953 ॐ आत्मसम्भवाय नमः।
954 ॐ उद्भिदे नमः।
955 ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
956 ॐ वैद्याय नमः।
957 ॐ विरजसे नमः।
958 ॐ नीरजसे नमः।
959 ॐ अमराय नमः।
960 ॐ ईड्याय नमः।
961 ॐ हस्तीश्वराय नमः।
962 ॐ व्याघ्राय नमः।
963 ॐ देवसिंहाय नमः।
964 ॐ नरर्षभाय नमः।
965 ॐ विबुधाय नमः।
966 ॐ अग्रवराय नमः।

967 ॐ सूक्ष्माय नमः।
968 ॐ सर्वदेवाय नमः।
969 ॐ तपोमयाय नमः।
970 ॐ सुयुक्ताय नमः।
971 ॐ शोभनाय नमः।
972 ॐ वज्रिणे नमः।
973 ॐ प्रासानां प्रभवाय नमः।
974 ॐ अव्ययाय नमः।
975 ॐ गुहाय नमः।
976 ॐ कान्ताय नमः।
977 ॐ निजाय सर्गाय नमः।
978 ॐ पवित्राय नमः।
979 ॐ सर्वपावनाय नमः।
980 ॐशृङ्गिणे नमः।
981 ॐशृङ्गप्रियाय नमः।
982 ॐ बभ्रवे नमः।
983 ॐ राजराजाय नमः।
984 ॐ निरामयाय नमः।
985 ॐ अभिरामाय नमः।
986 ॐ सुरगणाय नमः।
987 ॐ विरामाय नमः।
988 ॐ सर्वसाधनाय नमः।
989 ॐ ललाटाक्षाय नमः।

990 ॐ विश्वदेवाय नमः।
991 ॐ हरिणाय नमः।
992 ॐ ब्रह्मवर्चसे नमः।
993 ॐ स्थावराणां पतये नमः।
994 ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः।
995 ॐ सिद्धार्थाय नमः।
996 ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः।
997 ॐ अचिन्त्याय नमः।
998 ॐ सत्यव्रताय नमः।
999 ॐ शुचये नमः।
1000 ॐ व्रताधिपाय नमः।
1001 ॐ परस्मै नमः।
1002 ॐ ब्रह्मणे नमः।
1003 ॐ भक्तानां परमायै गतये नमः।
1004 ॐ विमुक्ताय नमः।
1005 ॐ मुक्ततेजसे नमः।
1006 ॐ श्रीमते नमः।
1007 ॐ श्रीवर्धनाय नमः।
1008 ॐ जगते नमः।

।इति श्रीमहाभारते
अनुशासनपर्वणि
श्रीशिवसहस्रनामावलिः

श्रीविक्रमी संवत् 2069 चैत्र शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 23 मार्च से 6 अप्रैल तक सूर्योत्तरायणे, वसन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श चैत्र	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	उ
30	16	1	शुक्र	38	36	22	0	उ.भा.	14	58	12	33	ब्रह्म	26	37	किं	09	02	मीने	3	10	23	नव चान्द्रसंवत्सर प्रारंभ सिद्धियोग, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, गंडमूल A	06	34	06	4
30	21	2	शनि	44	16	24	15	रेवती	21	35	15	11	ऐन्द्र	27	22	बा	11	05	मे.दि.3:11	4	11	24	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30), पञ्चक समाप्त दिवा 3:11, गंडमूलविचार, B	06	33	06	4
30	27	3	रवि	50	41	26	47	अश्वि	28	59	18	07	वैधृ	28	18	तै	13	27	मेषे	5	12	25	स.सि. योग, सौभाग्य शयन व्रत, **श्रीगौरी तृतीया**, शिवशक्ति पूजा,C	06	32	06	4.
30	31	4	सोम	57	27	29	28	भरणी	36	54	21	15	विष्कुं	29	22	व	16	04	वृ.अ.रा.4:03	6	13	26	भद्रा दिवा 4:07 से अ.रा. परि 05:28 तक, रवियोग:	06	30	06	4
30	36	5	मंग	60	0	0	0	कृत्ति	44	51	24	25	प्रीति	30	24	ब	18	48	वृषे	7	14	27	स.सि. योग, **श्रीलक्ष्मी पञ्चमी**, हयव्रत	06	29	06	4
30	42	5	बुध	04	07	08	07	रोहि	52	24	27	24	आयु.	0	0	बा	08	07	वृषे	8	15	28	स.सि. योग, स्कन्द षष्ठी व्रत, शुक्र वृष में दिवा 2:22, रवियोग:	06	28	06	4
30	48	6	गुरु	10	12	10	31	मृग	58	54	29	59	आयु.	07	16	तै	10	31	मि.दि.4:45	9	16	29	वक्री बुधोदय: पूर्वे 7:50 **विश्वावसुनामकसंवत्सर**	06	26	06	4
30	51	7	शुक्र	15	05	12	27	आर्द्रा	60	0	0	0	सौभा.	07	47	व	12	27	मिथुने	10	17	30	भद्रा दिवा 12:27 से रात्रि 1:04 तक, अमृतयोग, अशोक कलिका D	06	25	06	4
30	57	8	शनि	18	16	13	42	आर्द्रा	03	55	07	58	शोभ	07	49	ब	13	42	क.अ.रा.2:58	11	18	31	**श्रीदुर्गाष्टमी**, मेला बाहुफोर्ट, जम्मू, अशोकाष्टमी	06	24	06	4
31	03	9	रवि	19	25	14	08	पुन	07	05	09	12	अतिगंड सुकर्मा	07 30	15 01	कौ	14	08	कर्के	12	19	अप्रै	रविपुष्य योग 9:12 बाद, **श्रीरामनवमी**, **नवरात्र समाप्त**, श्रीतारा जयंती	06	22	06	4
31	06	10	सोम	18	20	13	41	पुष्य	08	02	09	34	धृति	28	05	ग	13	41	कर्के	13	20	2	भद्रा रात्रि 1:01 से, स.सि. योग 9:34 तक, गंडमूल प्रारंभ 9:34, E	06	21	06	4
31	11	11	मंग	15	05	12	22	आश्ले	06	55	09	06	शूल	25	30	वि	12	22	सिं.दि.9:06	14	21	3	**कामदा एकादशी व्रत**, भद्रा दि. 12:22 तक, स.सि. योग 9:06 तक, F	06	20	06	4
31	17	12	बुध	09	55	10	17	मघा पू.फा.	03 59	50 07	07 29	51 56	गंड	22	21	बा	10	17	सिंहे	15	22	4	**प्रदोष व्रत**, बुधमार्गी दिवा 3:40, सिद्धयोग, गंडमूल समाप्ति 7:51	06	19	06	4
31	21	13	गुरु	03	10	07	33	उ.फा.	53	07	27	31	वृद्धि	18	44	तै	07	33	क.दि.11:22	16	23	5	भद्रा अ.रा.परि 4:20 से, अमृतयोग 7:33 बाद, अनंग त्रयोदशी, G	06	17	06	4
0	0	14	गुरु	55	09	28	20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	(
31	26	15	शुक्र	46	21	24	48	हस्त	46	16	24	46	ध्रुव	14	47	वि	14	36	कन्यायां	17	24	6	**श्रीसत्यनारायण**, **पूर्णिमा व्रत**, भद्रा दि. 2:34 तक, **श्रीहनुमज्जयन्ती**, H	06	16	06	5

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (31 मार्च, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	02	4	11	0	01	06	07	01
16	18	10	0	19	02	03	14	14
38	42	55	44	03	32	19	10	10
59	37	29	01	38	45	55	35	35
59	758	10	22	12	57	04	03	03
13	37	29	52	30	15	49	11	11
शी	शी	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 4	आर्द्रा 4	मघा 4	पू.भा. 4	भरणी 2	कृति 2	चित्रा 3	अनु 4	रोहि 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:24

- 1 बृ
- 2 के शु
- 3 चं
- 4
- 5 मं
- 6
- 7 श
- 8 रा
- 9
- 10
- 11
- 12 सू बु

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (6 अप्रैल, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	05	04	10	0	01	06	07	01
22	11	10	29	20	08	02	13	13
33	14	04	55	23	07	53	51	51
46	11	04	40	29	23	28	30	30
59	904	05	11	13	53	04	03	03
0	34	49	03	28	42	30	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रेवती 2	हस्त 1	मघा 4	पू.भा. 3	भर 3	कृति 4	चित्रा 3	अनु 4	रोहि 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:16

- 1 बृ
- 2 के शु
- 3
- 4
- 5 मं
- 6 चं
- 7 श
- 8 रा
- 9
- 10
- 11 बु
- 12 सू

A प्रारंभ 12:33 घटस्थापनम् नवरात्र प्रारंभ B शुक्र कृत्तिका में अ.रा.परि 05:30 C मत्स्य जयन्ती, गण्डमूल समाप्त सायं 6:07 D प्राशनम्, सूर्य रेवती में अ.रा.परि 5:52 E रवियोग 9:34 तक F रवियोग 9:06 तक, गंडमूलविचार अमृतयोग G जैन महावीर जयन्ती, रवियोग H बुध मीन में दिवा 2:53 वैशाख स्नानारम्भः।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा– इस दिन श्री ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी अतः हमारा वर्षारम्भ इसी दिन से होता है, इस दिन श्री ब्रह्मा जी की पूजा के पश्चात् नववर्षीय पञ्चाङ्ग में दिये गए वर्ष के राजा मन्त्री इत्यादि का फल श्रवण करने से गंगा स्नान का फल मिलता है। अपने मित्र बन्धुओं से नववर्षारम्भ की बधाई एवं शुभ कामनायें देनी चाहिए। प्रातःकाल इसी दिन निम्ब पत्र प्राशन करके शरीर में तैल मालिश भी करने से सम्पूर्ण वर्ष में रक्तविकार नहीं होता भारतीय नववर्ष प्रारम्भ वस्तुतः इसी दिन से होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन 'नवरात्र' कहलाते हैं, इन नौ दिनों में भगवती दुर्गा माँ के नौ रूपों का पूजन तथा श्री दुर्गा सप्तशती पाठ करने का विधान है। इस वर्ष विश्वावसु नामक संवत्सर है अतः मध्यम वर्षा होने के कारण उपज भी कम होगी, अन्न का भाव महंगा रहेगा, रोग और चोरों की वृद्धि होगी, सभी राजा लोग लोभी एवं अभिमानी होंगे। महंगाई गगनचुम्बी होने के कारण लोगों में क्षुब्धता एवं आक्रोश की वृद्धि होगी, कहीं-कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, सरकार विरोधी आन्दोलन, जातीय दंगे तथा छत्र भंग होने की आशंका होगी। आकाश लक्षण– खण्ड वर्षा के योग हैं, मौसम सामान्य रहेगा।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 वैशाख कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 7 अप्रैल से 21 अप्रैल तक सूर्योत्तरायणे, वसन्त/ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श चैत्र	वि चैत्र	अं अप्रै	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
31	31	1	शनि	37	14	21	08	चित्रा	39	06	21	53	व्याघा	10	40	बा	10	58	तु.दि.11:20	18	25	7	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा	06	15	06	51
31	37	2	रवि	28	12	17	30	स्वाती	32	05	19	03	हर्षण वज्र	06 26	30 25	तै	07	18	तुलायां	19	26	8	भद्रा रात्रि 3:46 से, शुक्र रोहिणी में 8:12	06	14	06	52
31	41	3	सोम	19	38	14	03	विशा	25	36	16	26	सिद्धि	22	34	वि	14	03	वृ.दि.11:03	20	27	9	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय जम्मू, रात्रि 9:57, भद्रा दिवा 2:03 तक	06	12	06	52
31	46	4	मंग	11	57	10	58	अनु	19	58	14	10	व्यती	19	3	बा	10	58	वृश्चिके	21	28	10	गंडमूल प्रारंभ दिवा 2:10, सती अनुसूया जयन्ती	06	11	06	53
31	51	5	बुध	05	25	08	20	ज्ये	15	33	12	23	वरीय	15	56	तै	08	20	ध.दि.12:23	22	29	11	गंडमूल विचार	06	10	06	54
31	55	6	गुरु	0	17	06	16	मूला	12	36	11	11	परिघ	13	18	व	06	16	धने	23	30	12	भद्रा प्रात: 6:16 से सायं 5:32 तक, गण्डमूल समाप्ति दिवा 11:11, A	06	09	06	54
0	0	7	गुरु	56	42	28	48	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय	0	0	0	0
32	01	8	शुक्र	54	42	27	59	पू.षा.	11	10	10	35	शिव	11	11	बा	16	19	म.सा.4:31	24	वैशा	13	वैशाख संक्रान्ति, सूर्य मेष में सायं 7:17, बुध उ.भा. में रात्रि 9:32 B	06	07	06	55
32	06	9	शनि	54	14	27	47	उ.षा.	11	17	10	37	सिद्धि	09	33	तै	15	49	मकरे	25	2	14	सिद्धयोग, मंगलमार्गी 9:21, डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	06	06	06	56
32	11	10	रवि	55	17	28	11	श्रव	12	55	11	15	साध्य	08	26	व	15	55	कुं.रा.11:46	26	3	15	पञ्चक प्रारंभ रात्रि 11:51, भद्रा दिवा 3:55 से अ.रा.परि 4:11 तक	06	05	06	57
32	13	11	सोम	57	37	29	06	धनि	15	58	12	27	शुभ	07	45	ब	16	35	कुंभे	27	4	16	वरूथिनी एकादशी (स्मार्त) व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती	06	04	06	57
32	20	12	मंग	60	0	0	0	शत	20	16	14	9	शुक्ल	07	29	कौ	17	45	कुंभे	28	5	17	वरूथिनी एकादशी (वैष्णव) व्रत	06	03	06	58
32	26	12	बुध	01	12	06	30	पू.भा.	25	38	16	16	ब्रह्म	07	34	तै	06	30	मी.दि. 9:42	29	6	18	प्रदोष व्रत	06	01	06	59
32	28	13	गुरु	05	42	08	17	उ.भा.	31	53	18	45	ऐन्द्र	07	58	व	08	17	मीने	30	7	19	मासिक शिवरात्री व्रत, सायन सूर्य वृष में रात्रि 9:49, ग्रीष्म C	06	0	06	59
32	33	14	शुक्र	11	05	10	25	रेवती	38	51	21	31	वैधृ	08	37	श	10	25	मे.रा. 9:31	31	8	20	पञ्चक समाप्त रात्रि 9:31 गण्डमूल विचार, स.सि. योग	05	59	07	0
32	38	30	शनि	17	05	12	48	अश्वि	46	24	24	31	विष्कुं	09	28	ना	12	48	मेषे	वैशा	9	21	देव पितृ कार्येऽमावस, भा. वैशाखारंभ, गण्डमूल समाप्ति रात्रि 12:31	05	58	07	01

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (13 अप्रैल, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	08	04	11	00	01	06	07	01
29	23	09	02	21	14	02	13	13
26	47	39	51	58	09	21	29	29
08	43	27	50	38	03	34	15	15
58	803	00	42	13	48	04	03	03
47	21	30	01	45	44	36	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
स्वाती 4	पू.षा. 4	मघा 3	पू.भा. 4	भरणी 3	रोहि 2	चित्रा 3	अनु 4	रोहि 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:07

1 बृ; 12 सू बु; 11; 10; के 2 शु; 3; चं 9; 4; 6; 8 रा; 5 मं; 7 श

अमावस्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (21 अप्रैल, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	00	04	11	0	01	06	07	01
07	03	09	10	23	20	01	13	13
15	56	55	00	49	14	44	03	03
39	55	46	11	31	21	43	50	50
59	770	05	66	13	41	04	03	03
33	25	11	38	59	18	34	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
अश्वि 3	अश्वि 2	मघा 1	उ.भा. 3	भर 4	रोहि 4	चित्रा 3	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अमावस प्रातः 5:58

शु के 2; बु 12; 1 सू चं बृ; 3; 11; 4; 10; 5 मं; 7 श; 9; 6; 8 रा

A रवियोगः 11:11 तक B सेठ बिरादरी मेल, बाबा कैलखदेव, ठठर C ऋतु प्रारंभ, भद्रा प्रातः 8:17 से रात्रि 9:21 तक, गंडमूल प्रा. सायं 6:45

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **वरुथिनी एकादशी व्रत–** यह एकादशी व्रत करने से मनुष्य को समस्त पापों-सन्तापों से रक्षा होती है। एकादशी व्रत का महत्त्व वर्णन करने में देवता भी असमर्थ हैं, एकादशी व्रत में लघु फलाहार एवं निराहार दोनों पक्ष हैं– पुरुष स्त्रियाँ अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार व्रत करें, यह व्रत सर्वदा कल्याणकारी है। **प्रदोष व्रत–** प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी में सम्पन्न होता है यह सर्वविदित है।

मास शिवरात्रि व्रत– यह व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी 'महाशिवरात्रि' के दिन शुरू किया जाता है, पूरा दिन निराहार रहकर फिर रात्रि के चारों प्रहरों में शिवजी की पूजा का विधान है। इस पक्ष में राजनीति में क्लेश, खाद्य पदार्थ एवं शृंगार की चीजों की महंगाई होगी। वैशाख संक्रान्ति 13 अप्रैल शुक्रवार तथा अमावस्या शनिवार को है अतः बादलों के गर्भ बिगड़ेंगे, अन्नोत्पति कम हो, [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 वैशाख शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 22 अप्रैल से 6 मई तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श वैशा	वि वैशा	अं अप्रै	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
32	43	1	रवि	23	33	15	22	भरणी	54	14	27	38	प्रीति	10	27	ब	15	22	मेषे	2	10	22	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15)	05	57	07	02
32	46	2	सोम	30	11	18	0	कृत्ति	60	0	0	0	आयु.	11	32	कौ	18	00	वृ.दि.10:25	3	11	23	अमृतयोग, शिवाजी जयन्ती, परशुराम जयन्ती	05	56	07	02
32	51	3	मंग	36	44	20	36	कृत्ति	02	10	06	47	सौभा.	12	36	तै	07	19	वृषे	4	12	24	सिद्धयोग, स.सि.योग 6:47 तक, अक्षय तृतीया, श्रीबद्रीकेदार यात्रा	05	55	07	03
32	56	4	बुध	42	44	22	59	रोहि	09	47	09	49	शोभन	13	33	व	09	50	मि.रा.11:14	5	13	25	भद्रा 9:50 से रात्रि 10:59 तक, स.सि. योग 9:49 तक, A	05	54	07	04
33	02	5	गुरु	47	53	25	01	मृग	16	46	12	35	अतिगंड	14	16	ब	12	03	मिथुने	6	14	26	सिद्ध योग, आद्यशंकराचार्य जयन्ती, बुध रेवती में सायं 6:26	05	53	07	05
33	06	6	शुक्र	51	39	26	30	आर्द्रा	22	40	14	55	सुकर्मा	14	38	कौ	13	50	मिथुने	7	15	27	सिद्धयोग, श्रीरामानुजाजयन्ती, अगस्त्यास्त: 12:15, सूर्य भरणी में 11:00	05	51	07	05
33	11	7	शनि	53	44	27	19	पुन	27	06	16	40	धृति	14	32	ग	15	00	क.दि.10:17	8	16	28	भद्रा अ.रा.परि 3:19 से, श्रीगंगोत्पत्ति:	05	50	07	06
33	16	8	रवि	53	54	27	22	पुष्य	29	41	17	41	शूल	13	52	वि	15	27	कर्के	9	17	29	भद्रा दिवा 3:20 तक, गुरूवार्धक्यदोष शुरू, गण्डमूल प्रारंभ B	05	49	07	07
33	18	9	सोम	52	02	26	36	आश्ले	30	21	17	56	गंड	12	35	बा	15	05	सिं.सा.5:56	10	18	30	गण्डमूल, सीता नवमी, बगलामुखी जयन्ती श्रीजानकी जयन्ती	05	48	07	07
33	23	10	मंग	48	12	25	03	मघा	29	01	17	23	वृद्धि	10	40	तै	13	56	सिंहे	11	19	मई	गण्डमूल समाप्ति सायं 5:23 — गुरु अस्त 2 मई	05	47	07	08
33	27	11	बुध	42	32	22	47	पू.फा.	25	50	16	06	ध्रुव व्याघात	08 29	07 00	व	12	0	क.रा.9:41	12	20	2	मोहिनी एकादशी व्रत, भद्रा दिवा 11:55 से रात्रि 10:47 तक, C	05	46	07	09
33	31	12	गुरु	35	21	19	54	उ.फा.	21	0	14	10	हर्षण	25	25	ब	09	24	कन्यायां	13	21	3	गुरू कृत्तिका में 7:49, मधुसूदनद्वादशी	05	46	07	10
33	33	13	शुक्र	26	58	16	32	हस्त	14	55	11	43	वज्र	21	29	कौ	06	16	तु.रा.10:20	14	22	4	प्रदोष व्रत, नृसिंह चतुर्दशी, कामदेव व्रत	05	45	07	10
33	38	14	शनि	17	53	12	53	चित्रा	07	57	08	55	सिद्धि	17	19	व	12	53	तुलायां	15	23	5	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दिवा 12:53 से रात्रि 10:58 तक, D	05	44	07	11
33	43	15	रवि	08	22	09	04	स्वाती विशा	00 53	35 09	05 26	57 58	व्यती	13	04	ब	09	04	वृ.रा.9:41	16	24	6	पूर्णिमाव्रत, वैशाख स्नान पूत्ति:, जलकुंभदानम्, श्रीबुद्ध जयन्ती	05	43	07	12

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (29 अप्रैल, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	03	04	11	00	01	06	07	01
15	10	10	19	25	25	01	12	12
03	07	55	59	42	11	08	38	38
09	07	25	13	00	12	41	23	23
57	779	10	144	14	31	04	03	03
17	01	14	43	08	20	23	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
भर 1	पुष्य 3	मघा 4	रेव 1	भर 4	मृग 1	चित्रा 3	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:49

- 1: सू. बृ
- 2: शु के
- 3
- 4: चं
- 5: मं
- 6
- 7: श
- 8: रा
- 9
- 10
- 11
- 12: बु

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (6 मई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	06	04	00	00	01	06	07	01
21	19	12	00	27	28	00	12	12
50	42	18	34	21	15	38	16	16
27	38	43	01	12	55	46	08	08
58	912	14	98	14	19	04	03	03
03	57	01	30	12	25	06	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	व उ	व अ	व अ
भर 3	स्वा 4	मघा 4	अश्वि 1	कृत्ति 1	मृग 2	चित्रा 3	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:43

- 1: सू. बु बृ
- 2: शु के
- 3
- 4
- 5: मं
- 6
- 7: चं श
- 8: रा
- 9
- 10
- 11
- 12

A शुक्र मृग् में रात्रि 11:20 B सायं 5:41, रविपुष्य योग C गुरु अस्त पश्चिमे सूर्यास्तसमय D सिद्धयोग, कूर्मोत्पत्ति:, बुध मेष में रात्रि 9:02, श्रीनृसिंह जयन्ती।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **अक्षय तृतीया–** यह युगादि तिथि है, इस दिन यव सत्तु भक्षण का विशेष महत्त्व है। इसी दिन नर-नारायण परशुराम एवं हयग्रीव का अवतार हुआ था, सनातन धर्म को मानने वाले हिन्दुओं का प्रमुख व्रत माना जाता है। नर-नारायण के लिए सत्तु दान, परशु राम जी के लिए ककड़ी, हयग्रीव के लिए दूध में भीगे चने की दाल तथा अन्न फल सहित तिल मिश्रित जलपूर्ण कुंभ दान का माहात्म्य है। इस दिन किया गया पितृश्राद्ध एवं दान अक्षय माना गया है। **सीता नवमी–** श्री जानकी माता की अवतरण तिथि वैशाख शुक्ल नवमी मानी गई है। इस दिन राजा जनक द्वारा हलकर्षित भूमि से श्री सीता जी का प्रादुर्भाव हुआ था, व्रती को इस दिन सीता राम की पूजा करनी चाहिए। **मोहनी एकादशी व्रत–** इस व्रत से मोहमाया में फंसा मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। **मधुसूदन द्वादशी व्रत–** इस दिन भगवान मधुसूदन जी की विधिपूर्वक पूजा अर्चना करने से चन्द्रलोक की प्राप्ति होती है। **कामदेव व्रत–** इस दिन व्रती होकर व्यक्ति सर्वदा अरोग्य लाभ एवं जितेन्द्रिय होकर विष्णु लोक को प्राप्त करता है। इसी दिन प्रदोष व्रती होकर पुत्र प्राप्ति भी होती है। **आकाश लक्षणम्–** गर्मी की वृद्धि, पूर्वी प्रान्तों में लू चलेगी तथा वर्षा कम होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 7 मई से 20 मई तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श वैशा	वि वैशा	अं मई	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
0	0	1	रवि	58	59	29	18	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा क्षय	0	0	0	0
33	48	2	सोम	50	02	25	42	अनु	46	11	24	10	वरीयान परिघ	08 28	52 51	ते	15	28	वृश्चिके	17	25	7	नारद जयन्ती, टैगोर जयन्ती, स.सि.योग अमृतयोग, गण्डमूल A	05	42	07	13
33	51	3	मंग	41	56	22	27	ज्ये	40	04	21	42	शिव	25	08	व	12	04	घ.रा.9:42	18	26	8	भद्रा दिवा 12:04 से रात्रि 10:27 तक, गण्डमूल, सिद्धयोग	05	41	07	13
33	56	4	बुध	35	03	19	41	मूला	35	08	19	43	सिद्धि	21	51	ब	09	0	धने	19	27	9	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय जम्मू, रात्रि 10:41 गंडमूल समा. सायं 7:43	05	40	07	14
34	0	5	गुरु	29	42	17	32	पू.षा.	31	45	18	21	साध्य	19	03	कौ	06	32	म.रा.12:06	20	28	10	सिद्धयोग, बुधास्तः पूर्वे रात्रि 9:43 सूर्य कृत्तिका में अ.रा.परि 5:15,B	05	39	07	15
34	03	6	शुक्र	26	03	16	04	उ.षा.	30	03	17	40	शुभ	16	50	व	16	04	मकरे	21	29	11	भद्रा सायं 4:04 से अ.रा. परि 3:42 तक, सिद्धयोग	05	39	07	16
34	06	7	शनि	24	18	15	21	श्रव	30	13	17	43	शुक्ल	15	13	ब	15	21	मकरे	22	30	12	स.सि.योग	05	38	07	16
34	11	8	रवि	24	23	15	22	धनि	32	13	18	30	ब्रह्म	14	12	कौ	15	22	कुं.प्रा.6:00	23	31	13	पञ्चक प्रारंभ प्रातः 6:00, बुध भरणी में दिवा 1:06	05	37	07	17
34	15	9	सोम	26	17	16	07	शत	35	57	19	59	ऐन्द्र	13	44	ग	16	07	कुंभे	24	ज्ये	14	ज्येष्ठ संक्रान्ति, सूर्य वृष में सायं 4:10, भद्रा अ.रा.परि 4:48 से	05	36	07	18
34	16	10	मंग	29	43	17	29	पू.भा.	41	06	22	02	वैधृ	13	46	वि	17	29	मी.दि.3:29	25	2	15	भद्रा सायं 5:29 तक, शुक्र वक्री रात्रि 8:00	05	36	07	18
34	21	11	बुध	34	26	19	21	उ.भा.	47	31	24	35	विष्कुं	14	13	ब	06	21	मीने	26	3	16	अपरा एकादशी, भद्रकाली एकादशी व्रत, गण्डमूल प्रारंभ C	05	35	07	19
34	25	12	गुरु	40	05	21	36	रेवती	54	42	27	27	प्रीति	14	58	कौ	08	26	मे.अ.रा.3:27	27	4	17	पंचक समाप्ति अ.रा.परि 3:27, स.सि.योग, गण्डमूल, गुरू वृष में 9:35	05	34	07	20
34	28	13	शुक्र	46	21	24	6	अश्वि	60	0	0	0	आयु.	15	56	ग	10	50	मेषे	28	5	18	प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 12:06 से, गण्डमूल, स.सि. योग	05	34	07	21
34	30	14	शनि	52	52	26	42	अश्वि	02	25	06	31	सोभा.	17	0	वि	13	23	मेषे	29	6	19	भद्रा दिवा 1:24 तक, गण्डमूल समाप्त 6:31, सिद्धयोग, D	05	33	07	21
34	33	30	रवि	59	19	29	16	भरणी	10	17	09	40	शोभन	18	06	च	16	0	वृ.दि.4:27	30	7	20	देवपितृकार्येऽमावस, शनैश्चर जयन्ती, सायन सूर्य मिथुन में E	05	33	07	22

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (13 मई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	09	04	00	00	01	06	07	01
28	29	14	12	29	29	00	11	11
36	42	06	44	00	49	11	53	53
22	54	53	24	43	38	09	52	52
57	824	17	111	14	04	03	03	03
54	40	18	07	13	51	44	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा अ	मा उ	व उ	व अ	व अ
कृत्ति 1	धनि 2	पू.फा. 1	अश्वि 4	कृत्ति 1	मृग 2	चित्रा 3	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:37

2 शु के; 1 सू बु बृ; 12; 3; 11; 4; 10 चं; 5 मं; 7 श; 9; 6; 8 रा

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (20 मई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	00	04	00	01	01	05	07	01
05	24	16	26	00	29	29	11	11
21	36	16	29	40	34	46	31	31
14	58	47	02	12	28	26	37	37
57	707	20	124	14	11	03	03	03
45	58	10	56	11	55	11	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा अ	व उ	व उ	व अ	व अ
कृत्ति 3	भर 4	पू.फा. 1	भर 4	कृत्ति 1	मृग 2	चित्रा 2	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अमावस प्रातः 5:33

3; 1 चं बु; 2 सू के बृ शु; 4; 12; 5 मं; 11; 6 श; 8 रा; 10; 7; 9

A प्रारंभ रात्रि 12:10 B मंगल पू.फा. में 8:52 C रात्रि 12:35, शनि कन्या में 6:30 D मासिक शिवरात्रि E रात्रि 8:03 बुध कृत्तिका में 7:35

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– श्रीगणेश चतुर्थी व्रत– इस व्रत के दिन मौन रखना चाहिए, सायंकाल चन्द्रोदय होने के बाद शंख में दूध, दूर्वा, सुपारी तथा गन्धाक्षत हाथ में लेकर चन्द्रमा को अर्घ दें। **अपरा एकादशी व्रत–** इस एकादशी का नाम अपरा, भद्रकाली एवं अचला नाम शास्त्र में प्रसिद्ध हैं, इस एकादशी को व्रत करने से मनुष्य निष्पाप हो जाता है तथा सुख भोग कर अन्त में श्री हरि का परमधाम प्राप्त होता है। **प्रदोष व्रत–** यह व्रत दोनों पक्षों में प्रदोष काल त्रयोदशी में सम्पन्न होता है, शाम को शिव चरणों में बैठकर विधिपूर्वक शिवपूजन करना चाहिए तत्पश्चात् एक समय भोजन प्रसाद ले सकते हैं। **देवपितृकार्येऽमावस–** अपने पितरों की परमतृप्ति के लिए कई प्रकार के खाद्य पदार्थ, वस्त्रादि द्वारा पितृतर्पण तथा ब्राह्मण भोजन करने से पितृप्रसन्नता तथा ईश्वर कृपा से मानसिक सन्तोष भी प्राप्त होता है। वटसावित्री व्रत– यह सौभाग्यवती स्त्रियों का व्रत है। उत्तर भारत में ज्येष्ठ अमावस तथा दक्षिण भारत में ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शको. 1934, सन् 2012 ई. 21 मई से 4 जून तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श वैशा	वि ज्ये	अं मई	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
34	38	1	सोम	60	0	0	0	कृत्ति	18	05	12	46	अतिगंड	19	07	किं	18	31	वृषे	31	8	21	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, बुध वृष में रात्रि 9:48	05	32	07	23
34	40	1	मंग	05	30	07	43	रोहि	25	30	15	43	सुकर्मा	20	01	ब	07	43	वृषे	ज्ये.	9	22	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30) भारतीय ज्येष्ठारम्भः	05	31	07	23
34	43	2	बुध	11	02	09	56	मृग	32	13	18	24	धृति	20	42	कौ	09	56	मि.प्रा.5:06	2	10	23	स.सि. योग, रम्भा तृतीया व्रत, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थान)	05	31	07	24
34	47	3	गुरु	15	47	11	49	आर्द्रा	38	05	20	44	शूल	21	05	ग	11	49	मिथुने	3	11	24	भद्रा रात्रि 12:35 से, श्रीप्रताप जयन्ती, सूर्य रोहिणी में रात्रि 1:22	05	30	07	25
34	47	4	शुक्र	19	22	13	15	पुन	42	50	22	38	गंड	21	07	वि	13	15	क.सा.4:12	4	12	25	भद्रा दिवा 1:15 तक, स.सि.योग, शहीदी दिवस श्रीगुरू अर्जुन देव सिंह जी	05	30	07	25
34	51	5	शनि	21	40	14	10	पुष्य	46	14	23	59	वृद्धि	20	43	बा	14	10	कर्के	5	13	26	अमृतयोग, बुध रोहिणी में दिवा 1:04, गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 11:59	05	30	07	26
34	55	6	रवि	22	30	14	29	आश्लें	48	07	24	44	ध्रुव	19	51	तै	14	29	सिं.रा.12:42	6	14	27	अमृतयोग, गण्डमूल, अरण्यषष्ठी	05	29	07	27
34	56	7	सोम	21	43	14	10	मघा	48	24	24	50	व्याघा	18	27	व	14	10	सिंहे	7	15	28	भद्रा दिवा 2:10 से रात्रि 1:40 तक, गण्डमूल समाप्त रात्रि 12:50, A	05	29	07	27
35	0	8	मंग	19	17	13	11	पू.फा.	47	0	24	16	हर्षण	16	32	ब	13	11	सिंहे	8	16	29	श्रीदुर्गाष्टमी, मेला क्षीर भवानी, जम्मू कश्मीर, धूमावती जयंती	05	28	07	28
35	0	9	बुध	15	10	11	32	उ.फा.	44	05	23	06	वज्र	14	05	कौ	11	32	कं.6:02	9	17	30	गुरू उदयः पूर्वे सूर्योदय काल	05	28	07	28
35	03	10	गुरु	09	35	09	18	हस्त	39	44	21	21	सिद्धि	11	09	ग	09	18	कन्यायां	10	18	31	निर्जला एकादशी(स्मार्त) व्रत, भद्रा सायं 7:55 से, सिद्धयोग, B	05	28	07	29
35	07	11	शुक्र	02	42	06	32	चित्रा	34	15	19	09	व्यती वरीयान	07 28	48 07	वि	06	32	तु.8:18	11	19	जून	निर्जला एकादशी (वैष्णव) व्रत भद्रा समाप्त प्रातः 6:32, C	05	27	07	30
0	0	12	शुक्र	54	45	27	21	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी क्षय, **शुक्रास्त पश्चिमे 2 जून सूर्यास्तकाल**	0	0	0	0
35	07	13	शनि	46	07	23	54	स्वाती	27	52	16	36	परिघ	24	11	कौ	13	39	तुलायां	12	20	2	शनि प्रदोष व्रत, स.सि.योग, वट सावित्री व्रतारम्भः, शुक्रास्त पश्चिमे	05	27	07	30
35	10	14	रवि	37	05	20	17	विशा	21	0	13	51	शिव	20	08	ग	10	06	वृ.8:33	13	21	3	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा रात्रि 8:17 से, वक्री शुक्र रोहिणी में सायं 4:14	05	27	07	31
35	10	15	सोम	28	05	16	41	अनु	14	0	11	03	सिद्धि	16	05	वि	06	28	वृश्चिके	14	22	4	पूर्णिमा व्रत, भद्रा 6:28 तक, गण्डमूल प्रारंभ 11:03, नृसिंह जयन्ती, D	05	27	07	31

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (29 मई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	04	04	01	01	01	05	07	01
14	15	19	15	02	26	29	11	11
00	57	31	53	47	26	19	03	03
11	22	24	52	22	13	57	00	00
57	823	23	131	14	31	02	03	03
32	41	20	45	03	08	32	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व उ	व अ	व अ
रोहि 2	पू.फा. 1	पू.फा. 2	रोहि 2	कृत्ति 2	मृग 1	चित्रा 2	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:28

3, 2, 1, 4, सू. बु बृ शु के, 12, चं, 5 मं, 11, 6 श, 8 रा, 10, 7, 9

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (4 जून, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	07	04	01	01	01	05	07	01
19	13	21	28	04	22	29	10	10
45	10	55	51	11	59	06	43	43
06	27	55	59	17	43	01	55	55
57	901	26	125	13	37	02	03	03
26	44	06	07	54	30	00	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व अ	व अ
रोहि 3	अनु 3	पू.फा 3	मृग 2	कृत्ति 3	रोहि 4	चित्रा 2	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:27

3, 2, 1, 4, सू. बु बृ शु के, 12, 5 मं, 11, चं 8 रा, 6 श, 10, 7, 9

A अमृतयोग B गंगा दशहरा शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ C बुध मृग में दिवा 3:13 D शुद्धमहादेव उधमपुर, वटसावित्री समाप्त, श्री कबीर जयन्ती, बुध मिथुन में सायं 6:32

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– रम्भा तृतीया व्रत– भविष्य पुराण के अनुसार मेनका नाम की माता के कहने पर पार्वती ने किया था। इस व्रत से गृह सुख, समृद्धि-पुत्रपौत्रादि की प्राप्ति होती है। इसी दिन पार्वती का जन्म हुआ है सुख, सौभाग्य, प्राप्ति के लिए पार्वती का जन्मोत्सव मनाना चाहिए। शिव पूजा व्रत– ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी के दिन भगवती शुक्ला देवी का व्रत करना चाहिए। दुष्ट दानवों के उपद्रवों से पीड़ित भूमि की रक्षा करने के लिए यह व्रत सर्वोत्तम है। गंगा दशहरा– यह पृथ्वी पर गंगावतरण की तिथि है। इस दिन भगीरथ की तपश्चर्या से स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा जी धारा रूप में आई थी। (1) ज्येष्ठमास, (2) शुक्ल पक्ष, (3) दशमी तिथि, (4) बुधवार, (5) हस्त नक्षत्र, (6) व्यतीपात, (7) गरकरण, (8) आनन्द योग, (9) वृष राशि में सूर्य, (10) कन्या का चन्द्रमा– इन दश प्रकार के अपूर्व योग होने पर श्रीगंगा दशहरा विशेष महत्त्वपूर्ण बनता है। **निर्जला एकादशी व्रत–** सभी एकादशियों में सर्वोत्तम व्रत है। इस दिन निर्जल उपवास करें और ब्राह्मणों को मीठे जल से भरे कुंभ एवं खरबूजा इत्यादि दान करना चाहिए। निर्धनों को भी मीठा जल पिलाने से बहुत पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन व्रत करने से दीर्घायु, आरोग्य एवं जन्म जन्मांतर के पापों की निवृत्ति होती है। **आकाश लक्षणम्–** गर्मी अधिक, सूर्य आर्द्रा में आने पर बादल चाल बनेगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 आषाढ़ कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 5 जून से 19 जून तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श ज्ये	वि ज्ये	अं जून	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
35	13	1	मंग	19	28	13	14	ज्ये	07	20	8	23	साध्य	12	11	कौ	13	14	धने 8:23	15	23	5	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल, अमृतयोग	05	27	07	32
35	15	2	बुध	11	42	10	07	मूला पू.षा.	01 56	25 32	06 28	00 03	शुभ शुक्ल	08 29	31 15	ग	10	07	धने	16	24	6	भद्रा रात्रि 8:47 से, सिद्धयोग, गण्डमूल समाप्त 6:00	05	26	07	32
35	17	3	गुरु	05	05	07	28	उ.षा.	53	07	26	41	ब्रह्म	26	28	वि	07	28	मकरे 9:39	17	25	7	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय, रात्रि 10:05 भद्रा प्रातः 7:28 तक, A	05	26	07	33
0	0	4	गुरु	59	55	29	24	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय, शुक्र उदय 11 जून सूर्योदय काल	0	0	0	0
35	17	5	शुक्र	56	35	28	04	श्रव	51	30	26	02	ऐन्द्र	24	16	कौ	16	38	मकरे	18	26	8	स.सि. योग	05	26	07	33
35	20	6	शनि	55	12	27	31	धनि	51	45	26	08	वैधृ	22	41	ग	15	41	कुं.दि.2:00	19	27	9	पञ्चक प्रारंभ दिवा 2:05, भद्रा अ.र. परि 3:31 से	05	26	07	34
35	20	7	रवि	55	50	27	46	शत	54	02	27	03	विष्कुं	21	45	वि	15	32	कुंभे	20	28	10	भद्रा दिवा 3:38 तक	05	26	07	34
35	20	8	सोम	58	22	28	47	पू.भा.	58	10	28	42	प्रीति	21	25	बा	16	11	मी.रा.10:14	21	29	11	शुक्रोदय पूर्वे सूर्योदय काल	05	26	07	34
35	22	9	मंग	60	0	0	0	उ.भा.	60	0	0	0	आयु.	21	38	तै	17	32	मीने	22	30	12	स.सि. योग	05	26	07	35
35	22	9	बुध	2	32	06	27	उ.भा.	03	55	07	0	सौभा.	22	17	ग	06	27	मीने	23	31	13	भद्रा सायं 7:32 से, गण्डमूल प्रारंभ 7:00	05	26	07	35
35	25	10	गुरु	08	0	08	38	रेवती	10	50	09	46	शोभन	23	14	वि	08	38	मेषे 9:46	24	आषा	14	आषा. संक्रांति, सूर्य मिथुन में रात्रि 10:45, पञ्चक समाप्त 9:46, B	05	26	07	36
35	25	11	शुक्र	14	12	11	07	अश्वि	18	30	12	50	अतिगंड	24	20	बा	11	07	मेषे	25	2	15	योगिनी एकादशी व्रत, सिद्धयोग, बुध पुन. में 7:46, C	05	26	07	36
35	25	12	शनि	20	42	13	43	भरणी	26	22	15	59	सुकर्मा	25	27	तै	13	43	वृ.रा.10:45	26	3	16	शनि प्रदोष व्रत	05	26	07	36
35	26	13	रवि	27	01	16	15	कृत्ति	34	03	19	04	धृति	26	27	व	16	15	वृषे	27	4	17	भद्रा सायं 4:15 से अ.रा.परि 5:24 तक, मासिक शिवरात्रि व्रत	05	26	07	37
35	25	14	सोम	32	45	18	33	रोहि	41	10	21	55	शूल	27	15	श	18	33	वृषे	28	5	18	स.सि. यांग	05	27	07	37
35	25	30	मंग	37	40	20	31	मृग	47	27	24	26	गंड	[illegible]	47	च	07	35	मिथुने 11:13	29	6	19	देवपितृकार्येऽमावस	05	27	07	37

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (11 जून, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	10	04	02	01	01	05	07	01
26	21	24	12	05	18	28	10	10
26	17	57	45	47	40	53	21	21
47	17	16	01	59	42	52	40	40
57	747	26	110	13	34	01	03	03
21	08	56	00	41	08	22	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व अ	व अ
मृग. 1	पू.भा. 1	पू.फा. 4	आर्द्रा 2	कृत्ति 3	रोहि 3	चित्रा 2	अनु 3	रोहि 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:26

3 बु; 2 सू. के बृ शु; 1; 4; 12; 5 मं; 11 चं; 6 श; 8 रा; 10; 7; 9

अमावस्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (19 जून, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	01	04	02	01	01	05	07	01
04	27	28	26	07	14	28	09	09
05	07	39	15	36	54	45	56	56
20	24	30	51	25	49	40	13	13
57	726	28	90	13	19	00	03	03
17	21	49	01	22	08	35	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व अ	व अ
मृग. 4	मृग. 2	उ.फा. 1	पुन. 2	कृत्ति 4	रोहि 2	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अमावस प्रातः 5:27

4; शु चं बृ के 2; 5 मं; सू. 3 बु; 1; 6 श; 12; 7; 9; 11; 8 रा; 10

A सूर्य मृग. में रात्रि 11:18 बुध आर्द्रा में अ.रा. परि 1:15 B भद्रा प्रातः 8:38 तक, गण्डमूल, सिद्ध योग स.सि. योग 9:46 तक, मंगल उ.फा. में रात्रि 11:45 C गण्डमूल समाप्ति 12:50

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत– चन्द्रोदय व्यापिनी कृष्ण चतुर्थी के दिन श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत किया जाता है, चन्द्रोदय के समय चन्द्रमा को अर्घ देकर श्रीगणेश जी को नैवेद्य अर्पण करके स्वयं प्रसाद प्राप्त करना चाहिए। **योगिनी एकादशी व्रत–** इस एकादशी के व्रत में श्री नारायण का विधिपूर्वक पूजन करके चरणामृत लेकर सभी अंगों का मार्जन करना चाहिए ऐसा करने से समस्त रोगों से निवृत्ति होती है। **प्रदोष व्रत–** यह व्रत दोनों पक्षों में प्रदोष काल त्रयोदशी में किया जाता है, इसमें श्री गौरी शंकर की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। व्रत के सन्दर्भ में पहले कह चुके हैं। बुध पुनर्वसु में होने के कारण [illegible]

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श ज्ये.	वि आषा	अं जून	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
35	25	1	बुध	41	37	22	06	आर्द्रा	52	47	26	34	वृद्धि	27	59	किं	09	22	मिथुने	30	7	20	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, सायन सूर्य कर्क में अ.रा. परि 3:34, A	05	27	07	37
35	27	2	गुरु	44	27	23	14	पुन	57	02	28	16	ध्रुव	27	50	बा	10	43	क.रा.9:52	31	8	21	स.सि. योग, चन्द्रदर्शनम् (मु. 45) **रथयात्रा (जगन्नाथपुरी)**, B	05	27	07	38
35	26	3	शुक्र	46	05	23	54	पुष्य	60	0	0	0	व्याघा	27	20	तै	11	37	कर्के	आषा	9	22	भारतीय आषाढ़ारम्भः, मंगल कन्या में रात्रि 11:59	05	27	07	38
35	25	4	शनि	46	32	24	05	पुष्य	0	05	05	30	हर्षण	26	27	व	12	03	कर्के	2	10	23	भद्रा दिवा 11:59 से रात्रि 12:05 तक गण्डमूल प्रारंभ 5:30, C	05	28	07	38
35	25	5	रवि	45	50	23	48	आश्ले	02	0	06	16	वज्र	25	11	ब	12	00	सिंहे 6:16	3	11	24	गण्डमूल	05	28	07	38
35	25	6	सोम	43	52	23	01	मघा	02	45	06	34	सिद्धि	23	32	कौ	11	28	सिंहे	4	12	25	शनिमार्गी दिवा 1:30, **स्कन्दषष्ठी**, गण्डमूल समाप्ति 6:34	05	28	07	38
35	23	7	मंग	40	45	21	47	पू.फा.	02	19	06	24	व्यती	21	31	ग	10	28	कं.12:17	5	13	26	भद्रा रात्रि 9:47 से, **विवस्वत् सप्तमी**	05	28	07	38
35	22	8	बुध	36	32	20	06	उ.फा. हस्त	00 58	42 00	05 28	46 41	वरीय	19	07	वि	09	00	कन्यायां	6	14	27	भद्रा प्रातः 8:56 तक, अमृतयोग, स.सि.योग, शुक्र मार्गी रात्रि 8:35	05	29	07	38
35	21	9	गुरु	31	11	17	58	चित्रा	54	15	27	12	परिघ	16	23	बा	07	05	तु.दि.4:00	7	15	28	अमृतयोग	05	29	07	38
35	20	10	शुक्र	24	57	15	29	स्वाती	49	40	25	22	शिव	13	19	ग	15	29	तुलायां	8	16	29	भद्रा अ.रा.परि 2:04 से गुरू रोहिणी में अ.रा.परि 4:05	05	30	07	38
35	20	11	शनि	17	55	12	40	विशा	44	22	23	15	सिद्धि	10	0	वि	12	40	वृ.सा.5:48	9	17	30	**देवशयनी एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 12:40 तक, चतुर्मास व्रत D	05	30	07	38
35	18	12	रवि	10	19	09	38	अनु	38	38	20	58	साध्य शुभ	06 26	28 50	बा	09	38	वृश्चिके	10	18	जुला	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 8:58	05	30	07	38
35	17	13	सोम	02	25	06	29	ज्ये	32	47	18	38	शुक्ल	23	12	तै	06	29	ध.सा.6:38	11	19	2	भद्रा अ.रा. परि 3:21 से, कोकिला व्रत, **शिव शयनोत्सव**, गण्डमूल	05	31	07	38
0	0	14	सोम	54	35	27	21	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
35	16	15	मंग	47	03	24	21	मूला	27	08	16	23	ब्रह्म	19	39	वि	13	49	धने	12	20	3	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, पूर्णिमा व्रत, भद्रा दिवा 1:51 तक, E	05	31	07	38

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (27 जून, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	05	05	03	01	01	05	07	01
11	09	02	07	09	13	28	09	09
43	50	35	01	22	27	43	30	30
23	28	55	47	00	34	48	47	47
57	862	30	68	12	00	00	03	03
12	15	28	27	58	18	13	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
आर्द्रा 2	उ.फा. 4	उ.फा. 2	पुष्य 2	कृत्ति 4	रोहि 2	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:29

4 बु; 3 सू; 2 बृ शु के; 1; 5; 6 चं मं श; 12; 7; 9; 11; 8 रा; 10

पूर्णिमायां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (3 जुलाई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	08	05	03	01	01	05	07	01
17	06	05	13	10	13	28	09	09
26	40	41	05	38	59	46	11	11
33	17	24	09	56	19	35	42	42
57	878	31	49	12	12	00	03	03
10	15	31	05	36	47	48	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
आर्द्रा 4	मूल 3	उ.फा. 3	पुष्य 3	रोहि 1	रोहि 2	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:31

4 बु; 3 सू; 2 बृ शु के; 1; 5; मं 6 श; 12; 7; 9 चं; 11; 8 रा; 10

A सा. दक्षिणायन प्रारंभ, वर्षा ऋतु प्रारंभ B सूर्य आर्द्रा में रात्रि 10:14, बुध कर्क में सायं 6:40 C सिद्धयोग, बुध पुष्य में अ.रा.परि 5:30 D प्रारंभ, श्रीविष्णुशयनोत्सव E गंडमूल समाप्ति सायं 4:23 गुरू पूर्णिमा, ऋषि व्याप्त पूजा आषाढ़ी योगः।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- रथ यात्रा (जगन्नाथ पुरी)- आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन जगन्नाथ पुरी उड़ीसा में सुभद्रा सहित भगवान जगन्नाथ जी को रथ में विराजमान करके यात्रा करवाई जाती है। हिमाचल प्रदेश में परागपुर (गरली) में, जम्मू-कश्मीर उधमपुर में भी यात्रा निकाली जाती है। **स्कन्दषष्ठी व्रत-** भगवान कार्तिक स्वामी का विधिपूर्वक पूजन कर एकाहारी रह कर यह व्रत करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। **विवस्वत् सप्तमी व्रत-** आषाढ़ शुक्ल सप्तमी व्रत में सूर्य भगवान की पूजा का विधान है, इस दिन सूर्योपासना करने से सभी रोगों की निवृत्ति होती है। **देव शयनी एकादशी व्रत एवं चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रारम्भ-** यह व्रत नियमादि आषाढ़ पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर चार मास तक (मध्य में पुरुषोत्तम मास आ जाए तो पाँच मास तक) डुग्गर प्रदेश (जम्मू प्रान्त) में स्थानीय परम्परानुसार चातुर्मास्य आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक किया जाता है कार्तिक शुक्ल द्वादशी को पारण किया जाता है, ब्राह्मणों को भोजनदानादि दिया जाता है। चातुर्मास्य व्रत नियमादि में एक समय भोजन का आचरण करना चाहिए। इस व्रत नियमों में शय्याशयन, अनृतुस्त्री प्रसंग पूर्णतया वर्जित है। श्रावण में शाक, भाद्रपद में दही, अश्विन में दूध और कार्तिक में द्विदल (चना, मूंगी, राजमाश इत्यादि) का त्याग करना चाहिए। **आकाश लक्षणम्-** गर्मी अधिक परन्तु वर्षा के योग भी अच्छे हैं प्रचुर जल बरसेगा।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 श्रावण कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 4 जुलाई से 19 जुलाई तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श आपा	वि आपा	अं जुला	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू. उ.		सू. अ.	
35	15	1	बुध	40	17	21	39	पू.षा.	22	05	14	22	ऐन्द्र	16	19	बा	10	57	म.सा.7:55	13	21	4	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा	05	32	07	38
35	13	2	गुरु	34	36	19	23	उ.षा.	18	01	12	45	वैधृ	13	19	तै	08	27	मकरे	14	22	5	सूर्य पुनर्वसु में रात्रि 9:50 अशून्य शयन व्रत	05	32	07	38
35	12	3	शुक्र	30	22	17	42	श्रव	15	15	11	39	विष्कुं	10	46	व	06	27	कुं.रा.11:20	15	23	6	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदयः, रात्रि 9:17 भद्रा प्रातः 6:32 A	05	33	07	38
35	11	4	शनि	27	51	16	42	धनि	14	11	11	14	प्रीति	08	45	बा	16	42	कुंभे	16	24	7	सिद्धयोग	05	33	07	38
35	07	5	रवि	27	17	16	29	शत	15	0	11	34	आयु.	07	21	तै	16	29	कुंभे	17	25	8	नागपञ्चमी (मरूदेशे) बुध आश्ले में 10:33	05	34	07	37
35	06	6	सोम	28	41	17	03	पू.भा.	17	44	12	40	सोभा.	06	34	व	17	03	मीने 6:19	18	26	9	भद्रा सायं 5:03 से	05	34	07	37
35	05	7	मंग	32	0	18	23	उ.भा.	22	22	14	32	शोभन	06	24	ब	18	23	मीने	19	27	10	भद्रा प्रातः 5:43 तक, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 2:32, स.सि. योग B	05	35	07	37
35	03	8	बुध	36	50	20	20	रेवती	28	31	17	0	अतिगंड	06	46	बा	07	17	मे.सा.5:00	20	28	11	पंचक समाप्त सायं 5:00 गण्डमूल, अमृतयोग, मंगल हस्त में 6:40	05	35	07	37
35	0	9	गुरु	42	45	22	42	अश्वि	35	47	19	55	सुकर्मा	07	33	तै	09	28	मेषे	21	29	12	गण्डमूल समाप्ति सायं 7:55, अमृतयोग, स.सि. योग	05	36	07	36
34	58	10	शुक्र	49	5	25	15	भरणी	43	33	23	02	धृति	08	35	व	11	58	मेषे	22	30	13	भद्रा दिवा 11:58 से अ.रा. परि 1:15 तक	05	36	07	36
34	57	11	शनि	55	22	27	46	कृत्ति	51	15	26	07	शूल	09	41	व	14	32	वृषे 5:48	23	31	14	कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त)	05	37	07	36
34	53	0	रवि	60	0	0	0	रोहि	58	17	28	57	गंड	10	41	कौ	16	55	वृषे	24	32	15	बुध वक्री 7:45	05	37	07	35
34	51	12	सोम	0	54	06	0	मृग्	60	0	0	0	वृद्धि	11	27	तै	06	00	मि.सा.6:14	25	श्राव	16	श्रावण संक्रांति, सूर्य कर्क में 9:33, सोम प्रदोष व्रत, स.सि. योग, C	05	38	07	35
34	47	13	मंग	05	25	07	49	मृग्	04	20	07	23	ध्रुव	11	53	व	07	49	मिथुने	26	2	17	भद्रा 7:49 प्रातः से सायं 8:28 तक, सिद्ध योग 7:49 तक, D	05	39	07	34
34	46	14	बुध	8	39	09	07	आर्द्रा	09	12	09	20	व्याघा	11	54	श	09	07	क.अ.रा.4:27	27	3	18	पितृकार्येऽमावस	05	39	07	34
34	41	30	गुरु	10	32	09	53	पुन	12	41	10	45	हर्षण	11	30	ना	09	53	कर्के	28	4	19	देवकार्येऽमावस, हरियाली अमावस, स.सि. योग 10:45 तक, E	05	40	07	33

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (11 जुलाई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	11	05	03	01	01	05	07	01
25	24	09	17	12	16	28	08	08
04	14	58	50	18	34	55	46	46
03	13	17	39	00	29	47	16	16
56	718	32	16	12	27	01	03	03
13	19	50	54	04	10	36	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुन 2	रेव 3	उ.फा. 4	आश्ले 1	रोहि 1	रोहि 2	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:35

4 बु; 3 सू; 2 बृ शु के; 1; 5; 6 मं श; 12 चं; 7; 9; 11; 8 रा; 10

अमावस्यां गुरूवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (19 जुलाई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	03	05	03	01	01	05	07	01
02	00	14	17	13	20	29	08	08
42	32	25	53	52	51	11	20	20
00	59	20	41	26	25	10	49	49
57	767	34	20	11	37	02	03	03
17	24	08	53	26	52	21	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुन 4	पुन 4	हस्त 2	आश्ले 1	रोहि 2	रोहि 4	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अमावस प्रातः 5:40

5 मं; 4 सू चं बु; 3; 2 बृ शु के; 6 श; 7; 1; 8 रा; 10; 12; 9; 11

A से सायं 5:42 तक, स.सि. योग 11:39 तक पञ्चक प्रारंभ रात्रि 11:26 B दिवा 2:32 तक शीतला सप्तमी व्रत C निरयन दक्षिणायन शुरू, बुधास्त पश्चिमे अ.रा. परि 4:10 D मासिक शिवरात्री E सूर्य पुष्य में रात्रि 9:20

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **अशून्य शयन व्रत–** श्रावण कृष्ण द्वितीया से मार्गशीर्ष द्वितीया तक यह व्रत मनाया जाता है। इस व्रत से पुरुष भागवत भक्ति सम्पन्न होकर वैकुण्ठ धाम को प्राप्त होता है एवं स्त्री व्रत करे तो जन्म जन्मान्तर तक सौभाग्य सम्पन्न होती है। **कजली तृतीया व्रत–** श्रीविष्णुपुराण के अनुसार श्रावण कृष्ण तृतीया को यदि श्रवण नक्षत्र का योग बन जाए तो कजली तृतीया का व्रत विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाता है. इस व्रत से वैकुण्ठधाम की प्राप्ति शीघ्र होती है। **शीतला सप्तमी व्रत–** यह व्रत श्रावण कृष्ण सप्तमी मध्याह्न व्यापिनी में किया जाता है, इस व्रत के प्रभाव से रोगों से निवृत्ति, दीर्घायु तथा सुख ऐश्वर्य प्राप्त होता है। इस व्रत से परिवार में ज्वर, फोड़ा-फुंसी, नेत्र रोगों से निवृत्ति होती है। **कामदा एकादशी व्रत–** इस व्रत में राधादामोदर की विशेष पूजा होती है, तुलसी मंजरियों से पूजा करें तो विशेष फल प्राप्ति होती है। इस व्रत में [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 **श्रावण शुक्ल पक्ष** शके 1934, सन् 2012 ई. **20 जुलाई से 2 अगस्त तक** सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दे. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श आषा	वि श्राव	अं जुला	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
34	40	1	शुक्र	11	07	10	08	पुष्य	14	57	11	40	वज्र	10	41	ब	10	08	कर्के	29	5	20	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा, सायन सूर्य सिंह में दिवा 1:03, A	05	41	07	33
34	36	2	शनि	10	29	09	53	आश्ले	16	01	12	06	सिद्धि	09	29	को	09	53	सिंहे 12:06	30	6	21	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30) वक्री बुध पुष्य में अ.रा. परि 4:00, गण्डमूल	05	41	07	32
34	33	3	रवि	08	47	09	13	मघा	16	01	12	07	व्यती	07	57	ग	09	13	सिंहे	31	7	22	भद्रा रात्रि 8:42 से, **मधुस्रवा तृतीया**, गण्डमूल दिवा 12:07,B	05	42	07	32
34	30	4	सोम	06	12	08	12	पू.फा.	15	12	11	48	वरीयान् परिघ	06 28	08 03	वि	08	12	कं.सा.5:40	श्राव	8	23	भद्रा प्रातः 8:12 तक, भारतीय श्रावणरंभ, **शुभजन्मदिनोत्सव**, C	05	43	07	31
34	28	5	मंग	02	52	06	52	उ.फा.	13	39	11	11	शिव	25	45	बा	06	52	कन्यायां	2	9	24	कल्की जयन्ती, **पुण्यतिथि बाबा दूधाधारी जी (हरिद्वार)**, नागपञ्चमी	05	43	07	31
0	0	6	मंग	58	50	29	16	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	षष्ठी तिथि क्षय	0	0	0	0
34	23	7	बुध	54	10	27	25	हस्त	11	24	10	18	सिद्धि	23	15	ग	16	22	तु.रा. 9:45	3	10	25	भद्रा अ.रा.परि 3:25 से, **तुलसीदास जयन्ती** सिद्धयोग, D	05	44	07	30
34	20	8	गुरु	49	05	25	23	चित्रा	08	35	9	11	साध्य	20	34	वि	14	26	तुलायां	4	11	26	भद्रा दि. 2:24 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, मेला चिंतपूर्णी चामुण्डा देवी (काँगड़ा)	05	45	07	29
34	18	9	शुक्र	43	25	23	08	स्वाती	05	17	07	52	शुभ	17	44	बा	12	17	वृ.रा.12:45	5	12	27		05	45	07	29
34	13	10	शनि	37	25	20	45	विशा अनु	01 57	29 22	06 28	22 44	शुक्ल	14	46	तै	09	58	वृश्चिके	6	13	28	गण्डमूल प्रारंभ अ.रा. परि 4:44, अमृतयोग	05	46	07	28
34	10	11	रवि	31	12	18	16	ज्ये	53	5	27	01	ब्रह्म	11	42	व	07	31	ध.अ.रा.3:01	7	14	29	**पवित्रा एकादशी व्रत**, भद्रा प्रातः 7:31 से सायं 6:16 तक,E	05	47	07	27
34	06	12	सोम	24	53	15	45	मूला	48	45	25	18	एन्द्र वैधृ	08 29	35 30	बा	15	45	धने	8	15	30	**सोम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल समाप्त रात्रि 1:18, अमृतयोग	05	47	07	26
34	03	13	मंग	18	39	13	16	पू.षा.	44	40	23	41	विष्कुं	26	30	तै	13	16	धने	9	16	31	सिद्धयोग दिवा 1:16 तक, शुक्र मिथुन में रात्रि 7:45	05	48	07	26
34	0	14	बुध	12	52	10	58	उ.षा.	41	12	22	18	प्रीति	23	42	व	10	58	म.प्रा.5:19	10	17	अग	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा दिवा 10:58 से रात्रि 9:57 तक	05	49	07	25
33	56	15	गुरु	07	49	08	57	श्रव	38	35	21	16	आयु.	21	12	ब	08	57	मकरे	11	18	2	**पूर्णिमाव्रत**, सिद्धयोग प्रातः 8:57 तक, **रक्षाबन्धन(पूरा दिन शुद्ध)**F	05	49	07	24

अष्टम्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (26 जुलाई, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	06	05	03	01	01	05	07	01
09	04	18	14	15	25	29	07	07
23	30	26	08	10	38	29	58	58
07	38	42	16	38	27	33	34	34
57	845	35	42	10	44	02	03	03
20	31	02	51	48	50	59	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुष्य 2	चित्रा 4	हस्त 3	पुष्य 4	रोहि 2	मृग 1	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:45

4 सू बु; 5; मं 6 श; 7 चं; 8 रा; 9; 10; 11; 12; 1; 2 शु के; 3 वृ

पूर्णिमायां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (2 अगस्त, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	09	05	03	01	02	05	07	01
16	14	22	09	16	01	29	07	07
04	12	34	18	24	09	52	36	36
34	12	33	56	08	22	15	18	18
57	830	35	32	10	50	03	03	03
24	46	55	07	05	16	35	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुष्य 4	श्रवण 2	हस्त 4	पुष्य 2	रोहि 2	मृग 3	चित्रा 2	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:49

4 सू बु; 5; मं 6 श; 7; 8 रा; 9; 10 चं; 11; 12; 1; 2 वृ; 3 शु के

A गण्डमूल प्रारंभ 11:40 सिद्ध योग 10:08 तक B वरदचतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत, शुक्र मृग् में रात्रि 11:55 C सन्त श्री प्रभुदास जी (हरिद्वार) D स.सि.योग 10:18 तक, शीतला सप्तमी E गण्डमूल, अमृतयोग F श्रावणी उपाकर्म, दर्शन बाबा अमरनाथ गुफा, सूर्य आश्लेषा में रात्रि 8:15

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– मधुस्रवा तृतीया– इस व्रत में माता-पिता अपनी विवाहित सौभाग्यवती बेटियों के घर विविध पकवान, मिठाई, वस्त्र अलंकार भेजते हैं। पंजाब तथा जम्मू प्रान्त में इस व्रत को संघारा व्रत कहा जाता है, बाग बगीचों में जाकर झूले झूलने की परम्परा भी है, राधा कृष्ण की पूजा की जाती है। **नागपञ्चमी–** इस दिन नागों की पूजा की जाती है, परन्तु हमारे जम्मू प्रदेश में इस दिन नाग पूजा न करके ऋषि पञ्चमी को ही नागपूजा करने की परम्परा चली आ रही है। **रक्षाबन्धन** इस दिन बहनें अपने भाई को कलाई पर उसकी लम्बी आयु, सुख ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए राखी बान्धती है, ब्राह्मण भी अपने यजमान के हाथ में रक्षाबन्धन करते हैं, इसी दिन माँ लक्ष्मी ने भी राजा बली को उसकी कलाई पर रक्षाबन्धन किया था। भाईयों को चाहिए कि वे अपनी बहनों को उपहार इत्यादि देकर प्रसन्न करें। सगी बहन न हो तो मौसेरी, चचेरी, मामा की पुत्री या फिर किसी भी धर्म बहन से अवश्य रक्षा बन्धन करवाना चाहिए। **आकाश लक्षणम्–** गर्मी अधिक, रुक-रुक कर वर्षा होगी परन्तु पानी जोरों से बरसेगा।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 प्र भाद्रपद कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 3 अगस्त से 17 अगस्त तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श श्राव	वि श्राव	अं अग	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
33	51	1	शुक्र	03	47	07	21	धनि	37	10	20	43	सौभा.	19	06	कौ	07	21	कुंभे 8:55	12	19	3	प्रथम भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, मंगल चित्रा में 11:45, पञ्चक A	05	50	07	23
33	47	2	शनि	01	05	06	17	शत	37	17	20	46	शोभन	17	28	ग	06	17	कुंभे	13	20	4	भद्रा सायं 6:05 से, शनि तुला में 8:36	05	51	07	22
33	43	3	रवि	0	04	05	53	पू.भा.	39	05	21	30	अतिगंड	16	24	ब	05	53	मी.दि.3:15	14	21	5	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 8:55, भद्रा प्रात: 5:53 तक,B	05	51	07	21
33	38	4	सोम	0	49	06	12	उ.भा.	42	40	22	57	सुकर्मा	15	55	बा	06	12	मीने	15	22	6	गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 10:57	05	52	07	20
33	35	5	मंग	03	25	07	15	रेवती	48	0	25	05	धृति	15	58	तै	07	15	मे.रा.1:05	16	23	7	पञ्चक समाप्त रात्रि 1:05 गण्डमूल, चन्दनषष्ठी व्रत	05	53	07	19
33	31	6	बुध	07	39	08	57	अश्वि	54	37	27	45	शूल	16	31	व	08	57	मेषे	17	24	8	भद्रा प्रात: 8:57 से रात्रि 10:03 तक, गण्डमूल समाप्त C	05	53	07	18
33	28	7	गुरु	13	09	11	10	भरणी	60	0	0	0	गंड	17	24	ब	11	10	मेषे	18	25	9	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त), दूर्वाष्टमी व्रत, गोकुलाष्टमी, D	05	54	07	18
33	25	8	शुक्र	19	25	13	41	भरणी	02	07	06	46	वृद्धि	18	27	कौ	13	41	वृ.दि.1:32	19	26	10	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव), चन्द्रोदय रात्रि 11:53	05	55	07	17
33	21	9	शनि	25	43	16	13	कृत्ति	09	52	09	52	ध्रुव	19	29	ग	16	13	वृषे	20	27	11	भद्रा अ.रा.परि 5:21 से, सिद्धयोग, गुग्गा नवमी, मेला रैणा बिरादरी E	05	55	07	16
33	16	10	रवि	31	23	18	30	रोहि	17	09	12	48	व्याघा	20	19	वि	18	30	मि.रा.2:08	21	28	12	भद्रा सायं 6:30 तक	05	56	07	15
33	10	11	सोम	35	57	20	20	मृग	23	27	15	20	हर्षण	20	47	ब	07	29	मिथुने	22	29	13	अजा एकादशी व्रत, स.सि.योग, गोवत्सद्वादशी (डुग्गर प्रदेशे), F	05	57	07	13
33	06	12	मंग	39	03	21	35	आर्द्रा	28	23	17	19	वज्र	20	47	कौ	09	02	मिथुने	23	30	14	वत्सद्वादशी, मंगल तुला में 9:45	05	57	07	12
33	01	13	बुध	40	25	22	09	पुन	31	41	18	39	सिद्धि	20	17	ग	09	57	क.12:22	24	31	15	प्रदोषव्रत, भद्रा रात्रि 10:09 से, अमृतयोग, मासिक शिवरात्री व्रत, G	05	58	07	11
32	57	14	गुरु	40	12	22	04	पुष्य	33	22	19	20	व्यती	19	15	वि	10	11	कर्के	25	भाद्र	16	भाद्रपद संक्रान्ति, सूर्य सिंह में सायं 5:38, भद्रा 10:06 तक,H	05	59	07	10
32	53	30	शुक्र	38	30	21	24	आश्ले	33	36	19	26	वरीय	17	44	च	09	48	सिं.सा.7:26	26	2	17	कुशांग्रहणी पिठोरी अमावस, देवपितृकार्येऽमावस, गण्डमूल	05	59	07	09

अष्टम्यां शुक्रवासारे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (10 अगस्त, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	00	05	03	01	02	06	07	01
23	26	27	07	17	08	00	07	07
44	02	25	33	41	09	23	10	10
17	18	07	51	45	17	10	52	52
57	708	36	15	09	55	04	03	03
33	16	52	28	12	05	14	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
आश्ले 3	भरणी 4	चित्रा 2	पुष्य 2	रोहि 3	आर्द्रा 1	चित्रा 3	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अष्टमी प्रात: 5:55

1 चं, 2 के, 3 शु बृ, 4 सू बु, 5, 6 मं, 7 श, 8 रा, 9, 10, 11, 12

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (17 अगस्त, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	03	06	03	01	02	06	07	01
00	22	01	11	18	14	00	06	06
27	14	45	48	43	45	54	48	48
40	53	32	07	26	07	18	30	30
58	805	38	63	08	58	04	03	03
44	14	40	17	18	20	45	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मघा 1	आश्ले 2	चित्रा 3	पुष्य 3	रोहि 3	आर्द्रा 3	चित्रा 3	अनु 2	कृत्ति 4

कुण्डली अमावस प्रात: 5:59

1, 2 के बृ, 3 शु, 4 चं बु, 5 सू, 6, 7 मं श, 8 रा, 9, 10, 11, 12

A प्रारंभ 8:59, सिद्ध योग 7:21 तक B बुधोदय: पूर्वे रात्रि 2:45 C अ.रा. परि 3:45, बुध मार्गी दिवा 11:10 शीतला व्रत, शुक्र आर्द्रा में दिवा 2:02 D चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में E सूज्झवाँ कुलदेव स्थान F पर्युषण पर्व प्रारंभ (जैन) G भारतीय स्वतन्त्रता दिवस H गण्डमूल प्रारंभ सायं 7:20, गुरू पुष्य योग।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– चन्दनषष्ठी व्रत– चन्द्रोदय व्यापिनी षष्ठी में विवाहित सौभाग्यवती स्त्रियाँ या कुमारी लड़कियाँ इस व्रत को करती हैं, जम्मू प्रदेश में उद्यापन (मोख) करने की परम्परा प्रचलित है। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत–** इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का व्रत पूर्वक पूजा अर्चना करने का शास्त्रीय विधान है। श्रीकृष्ण भगवान का जन्म भाद्रपद कृष्णाष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र आधी रात के समय वृष लग्न में हुआ था। शास्त्र में अष्टमी के शुद्धा एवं विद्धा दो भेद हैं, सूर्योदय से पुन: सूर्योदय तक अष्टमी हो तो शुद्धा और सप्तमी या नवमी से युक्त विद्धा कही जाती है, शास्त्रीय सिद्धान्तानुसार अर्धरात्रि में व्याप्त अष्टमी अधिक महत्त्वपूर्ण होती है, स्मार्त लोग सप्तमी विद्धा को श्रेष्ठ मानते हैं। वैष्णव लोग नवमी विद्धा को सही कहते हैं, निम्बार्क मतानुयायी मात्र रोहिणी नक्षत्र को महत्त्व देते हैं, कुछ लोग अष्टमी तिथि को महत्त्व देते हैं, सम्भवत: इन विवादों में नहीं पड़कर श्रीकृष्ण भगवान के जन्मोत्सव को श्रद्धा से मनाना चाहिए। लगभग एक सप्ताह तक धार्मिक सम्मेलन, कथा वार्ता तथा पूजा अर्चना का वातावरण बना रहता [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 **प्र. भाद्रपद शुक्ल पक्ष** शाके 1934, सन् 2012 ई. **18 अगस्त से 31 अगस्त तक** सूर्यो दक्षिणायणे, वर्षा शरद ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श श्राव	वि भाद्र	अं अग	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
32	48	1	शनि	35	31	20	13	मघा	32	33	19	02	परिघ	15	48	किं	08	52	सिंहे	27	3	18	प्रथम भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा, भाद्रपद अधिक मास प्रारम्भ A	06	0	07	08
32	45	2	रवि	31	37	18	40	पू.फा.	30	32	18	14	शिव	13	33	बा	07	29	कं.रा.12:00	28	4	19	चन्द्रदर्शनम् (मु. 45)	06	01	07	07
32	41	3	सोम	27	01	16	50	उ.फा.	27	51	17	10	सिद्धि	11	03	ग	16	50	कन्यायां	29	5	20	भद्रा अ.रा. परि 3:49 से	06	01	07	06
32	36	4	मंग	21	56	14	49	हस्त	24	41	15	55	साध्य शुभ	08 29	23 37	वि	14	49	तु.अ.रा.3:15	30	6	21	भद्रा दिवा 2:49 तक, बुध आश्ले में 6:10	06	02	07	05
32	30	5	बुध	16	40	12	43	चित्रा	21	20	14	35	शुक्ल	26	48	बा	12	43	तुलायां	31	7	22	सायन सूर्य कन्या में रात्रि 10:28 शरद्ऋतु प्रारंभ शुक्र पुन में दि. 1:07	06	03	07	03
32	26	6	गुरु	11	17	10	34	स्वाती	17	54	13	13	ब्रह्म	24	0	तै	10	34	तुलायां	भाद्र	8	23	भारतीय भाद्रपद मासारम्भ	06	03	07	02
32	21	7	शुक्र	5	54	08	26	विशा	14	26	11	51	ऐन्द्र	21	12	व	08	26	वृ.प्रा.6:11	2	9	24	भद्रा 8:26 से रात्रि 7:23 तक, अमृतयोग 8:26 तक, B	06	04	07	01
32	17	8	शनि	0	37	06	20	अनु	11	07	10	32	वैधृ	18	27	व	06	20	वृश्चिके	3	10	25	गण्डमूल प्रारम्भ 10:32	06	05	07	0
0	0	9	शनि	55	32	28	18	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	नवमी तिथि क्षय	0	0	0	0
32	13	10	रवि	50	32	26	19	ज्ये	07	57	09	16	विष्कुं	15	45	तै	15	18	ध.प्रा.9:16	4	11	26	गण्डमूल	06	05	06	59
32	06	11	सोम	45	53	24	28	मूला	04	57	08	05	प्रीति	13	07	व	13	23	धने	5	12	27	**पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 1:23 से रात्रि 12:28 तक, C	06	06	06	57
32	02	12	मंग	41	37	22	46	पू.षा.	02	17	07	02	आयु.	10	36	ब	11	36	मकरे 12:47	6	13	28		06	07	06	56
31	58	13	बुध	37	58	21	19	उ.षा. श्रवण	00 58	04 30	06 29	09 32	सौभा शोभन	08 30	14 06	कौ	10	01	मकरे	7	14	29	प्रदोष व्रत, अमृतयोग, बुध सिंह में प्रातः 5:10	06	07	06	55
31	53	14	गुरु	35	06	20	11	धनि	57	47	29	16	अतिगंड	28	14	ग	08	42	कुं.सा.5:20	8	15	30	**पंचक प्रारंभ सायं** 5:22, भद्रा रात्रि 8:11 से, बुधास्त पूर्वे 10:28,D	06	08	06	54
31	47	15	शुक्र	33	15	19	27	शत	58	15	29	27	सुकर्मा	26	44	वि	07	46	कुंभ	9	16	31	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, भद्रा 7:49 तक	06	09	06	52

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (25 अगस्त, सन् 2012 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	07	06	03	01	02	06	07	01
08	13	06	22	19	22	01	06	06
10	42	49	50	45	42	34	23	23
01	14	52	33	54	33	10	11	11
57	844	38	103	07	61	05	03	03
53	56	30	26	10	16	16	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मघा 3	अनु 4	स्वाती 1	आश्ले 2	रोहि 3	पुन 1	चित्रा 3	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:05

6; 5 सू.; 4 बु; 3 शु; 2 बृ के; 1; 12; 11; 10; 9; 8 चं रा; 7 श मं

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (31 अगस्त, सन् 2012 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	10	06	04	01	02	06	07	01
13	06	10	03	20	28	02	06	06
57	47	42	49	26	54	06	04	04
38	25	27	34	39	55	45	06	06
58	793	39	125	06	63	05	03	03
01	56	06	51	15	08	38	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.फा. 1	शत 1	स्वाती 2	मघा 2	रोहि 4	पुन 3	चित्रा 3	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:09

6; 5 सू बु; 4; 3 शु; 2 के बृ; 1; 12; 11 चं; 10; 9; 8 रा; 7 मं श

A गण्डमूल समाप्ति रात्रि 7:02 B मंगल स्वाती में रात्रि 11:16 C सूर्य पू.फा. में दिवा 1:55 D सूर्य पू.फा. में दिवा 1:55

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान– इस मास में निष्काम भाव से दान पूजादि करना श्रेयस्कर है इसमें किया हुआ दान पूजादि अक्षय फलप्रद होता है, अधिमास में विशेषकर विष्णु एवं श्रीसूर्यनारायण का पूजन किया जाता है– गेहूँ, घृत और गुड़ के बनाए हुए 33 अपूप (मालपूड़े) कास्यपात्र में रखकर मन्त्रपूर्वक संकल्प करके श्रद्धा सहित प्रतिदिन ब्राह्मणों को दान करें, यदि प्रत्येक दिन न हो सके तो रविवार को करें। अधिक मास में विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश, काम्य अनुष्ठान कृत्यों का शुभारम्भ, मूर्ति प्रतिष्ठा, मन्त्रदीक्षा इत्यादि कार्यों को नहीं किया जाता है। **अधिमासानयनोदहारणम्–** संवत् 2069 में 24 जोड़ें तो 2093 हुए 160 का भाग दिया तो लब्धि 13 त्याज्य शेष 13 बचे तो भाद्रपद मास अधिमास आएगा अथवा शकाब्द 1934 में एक घटा कर 1933 हुआ 160 से भाग दिया लब्धि त्याज्य शेष 13 बचे तो भाद्रपद मास अधिमास आएगा। अधिमास 18 अगस्त से 16 सितम्बर तक चलेगा। भाद्रपद संक्रान्ति गुरूवार 16 अगस्त सन् 2012 ई. को होने के कारण गुड़ घृतादि रस, रूई, तिल, तेल, सरसों में तेजी और गेहूँ, जौ, चना में मन्दी आएगी। **आकाश लक्षणम्–** गर्मी अधिक, खण्ड वृष्टि के योग हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 द्वि भाद्रपद कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 1 सितंबर से 16 सितंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श भाद्र	वि भाद्र	अं सितं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू. उ.		सू. अ.	
31	43	1	शनि	32	43	19	15	पू.भा.	60	0	0	0	धृति	25	40	बा	07	17	मी.रा.11:56	10	17	1	द्वितीय भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, शुक्र कर्क में 6:15	06	09	06	51
31	38	2	रवि	33	38	19	38	उ.भा.	60	0	0	0	शूल	25	04	तै	07	22	मीने	11	18	2	स.सि. योग	06	10	06	50
31	35	3	सोम	36	07	20	38	उ.भा.	03	15	07	29	गंड	24	57	व	08	03	मीने	12	19	3	भद्रा 8:08 से रात्रि 8:38 तक, गण्डमूल प्रारंभ 7:29	06	11	06	49
31	28	4	मंग	40	10	22	16	रेवती	08	02	09	24	वृद्धि	25	18	ब	09	23	मे.9:24	13	20	4	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 8:33, पञ्चक समाप्त 9:24, A	06	11	06	47
31	25	5	बुध	45	30	24	24	अश्वि	14	10	11	52	ध्रुव	26	01	कौ	11	16	मेषे	14	21	5	गण्डमूल समाप्त 11:52	06	12	06	46
31	21	6	गुरु	51	40	26	53	भरणी	21	24	14	46	व्याघा	27	0	ग	13	36	वृ.रा.9:30	15	22	6	भद्रा अ.रा. परि 2:53 से, अगस्त्योदय:	06	12	06	45
31	13	7	शुक्र	58	07	29	29	कृत्ति	29	06	17	52	हर्षण	28	04	वि	16	11	वृषे	16	23	7	भद्रा दिवा 4:11 तक, अमृत योग	06	13	06	43
31	10	0	शनि	60	0	0	0	रोहि	36	45	20	56	वज्र	29	01	बा	18	44	वृषे	17	24	8	स.सि. योग	06	14	06	42
31	06	8	रवि	04	14	07	56	मृग	43	40	23	43	सिद्धि	29	41	कौ	07	56	मिथुने 10:22	18	25	9		06	14	06	41
30	58	9	सोम	09	17	09	58	आर्द्रा	49	15	25	58	व्यती	29	54	ग	09	58	मिथुने	19	26	10	भद्रा रात्रि 10:40 से	06	15	06	39
30	55	10	मंग	12	47	11	23	पुन	53	12	27	33	वरीय	29	33	वि	11	23	क.रा.9:13	20	27	11	भद्रा दिवा 11:23 तक, बुध उ.फा. में अ.रा. परि 2:12	06	16	06	38
30	51	11	बुध	14	29	12	04	पुष्य	55	12	28	22	परिघ	28	37	बा	12	04	कर्क	21	28	12	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**, गण्डमूल प्रारम्भ अ.रा. परि 4:22	06	16	06	37
30	43	12	गुरु	14	14	11	59	आश्ले	55	22	28	27	शिव	27	04	तै	11	59	सिं.अ.रा.4:27	22	29	13	**प्रदोषव्रत**, गण्डमूल, सूर्य उ.फा. में 7:45, बुध कन्या में रात्रि 9:30	06	17	06	35
30	40	13	शुक्र	12	07	11	09	मघा	53	55	27	52	सिद्धि	24	58	व	11	09	सिंहे	23	30	14	भद्रा दिवा 11:09 से रात्रि 10:24 तक, गण्डमूल समाप्त B	06	18	06	34
30	36	14	शनि	08	24	09	40	पू.फा.	51	0	26	43	साध्य	22	24	श	09	40	सिंहे	24	31	15	सिद्धयोग 9:40 तक, पितृकार्येऽमावस	06	18	06	33
30	30	30	रवि	03	22	07	40	उ.फा.	47	07	25	10	शुभ	19	29	ना	07	40	कन्यायां 8:22	25	अश्वि	16	**आश्विन संक्रान्ति**, सूर्य कन्या में सायं 5:52, देवकार्येऽमावस, C	06	19	06	31

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (9 सितंबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	01	06	04	01	03	06	07	01
22	27	16	21	21	08	02	05	05
40	34	37	16	17	32	59	35	35
54	15	56	04	05	46	28	30	30
58	720	39	113	04	65	06	03	03
18	16	59	59	46	27	07	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.फा. 3	मृग 2	स्वा 3	पू.फा 3	रोहि 4	पुष्य 2	चित्रा 3	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:14

6 · 4 शु · सू 5 बु · 3 · मं 7 श · 2 के चं बृ · 8 रा · 9 · 11 · 1 · 10 · 12

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (16 सितंबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	04	06	05	01	03	06	07	01
29	28	21	04	21	16	03	05	05
29	17	19	13	46	15	43	13	13
45	56	49	32	43	36	17	15	15
59	857	40	106	03	06	06	03	03
32	16	39	57	30	57	27	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.फा. 1	उ.फा. 1	विशा 1	उ.फा. 3	रोहि 4	पुष्य 4	चित्रा 4	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अमावस प्रातः 6:19

6 बु · 4 शु · सू 5 चं · 3 · मं 7 श · के 2 बृ · 8 रा · 9 · 11 · 1 · 10 · 12

A गण्डमूल बुध पू.फा. में अ.रा. परि 2:50, शुक्र पुष्य में 9:35 B अ.रा. परि 3:52, मासिक शिवरात्री व्रत, मंगल विशाखा में 6:09 C अधिकमास समाप्त, स.सि. योग, शुक्र आश्लें में दिवा 2:15

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- पुरुषोत्तममास – यस्मिन्मासे संक्रान्तिः संक्रान्ति- द्वयमेव वा। मलमासः स विज्ञेयो मासे त्रिंशत्तमे भवेत्।। (ब्रह्मसिद्धान्त) ज्योतिषशास्त्र के अधिष्ठातृदेव सूर्य हैं। सूर्य का मेषादि द्वादंश राशियों में संक्रमण संचार होने पर संवत्सर बनता है वही सौर वर्ष कहलाता है। जिस मास में सूर्य का राशि पर संक्रमण न हो वह **अधिकमास** अर्थात् एक महीने में संक्रान्तिद्वय संयुक्त हो वही क्षयमास (मलमास) कहलाता है। अधिमास या क्षयमास में वेदशास्त्र विहित एवं काम्यकर्म नहीं करना चाहिए। **'निर्णय सिन्धु** के अनुसार अधिमास में विवाह, यज्ञ, देवप्रतिष्ठा जैसे मांगलिक कार्य नहीं किये [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 द्वि भाद्रपद शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 17 सितंबर से 30 सितंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद ऋतौ, [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 द्वि. भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाका 1934 सन् 2012 ई. 17 सितंबर से 30 सितंबर तक सूर्यो दक्षिणायणे, शरद ऋतौ, उत्तर-दक्षिण गोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श भाद्र	वि अश्वि	अं सितं	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
0	0	1	रवि	57	25	29	17	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा क्षय	0	0	0	0
30	26	2	सोम	50	50	26	40	हस्त	42	33	23	21	शुक्ल	16	19	वा	16	00	कन्यायां	26	2	17	अमृतयोग, चन्द्रदर्शनम् (मु. 30)	06	19	06	30
30	21	3	मंग	44	00	23	57	चित्रा	37	40	21	25	ब्रह्म	13	00	तै	13	19	तुलायां10:23	27	3	18	हरितालिका तीज व्रत, सिद्धयोग, श्री वराह जयन्ती	06	20	06	29
30	15	4	बुध	37	15	21	15	स्वाती	32	50	19	29	ऐन्द्र	09	40	व	10	36	तुलायां	28	4	19	सिद्धि विनायक व्रत, भद्रा 10:36 से रात्रि 9:15 तक A	06	21	06	27
30	11	5	गुरु	30	46	18	40	विशा	28	16	17	40	वैध / विष्कं	06 / 27	23 / 13	ब	07	57	वृश्चि.12:06	29	5	20	ऋषि पञ्चमी (नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेशे) सिद्ध योग	06	21	06	26
30	03	6	शुक्र	24	46	16	17	अनु	24	08	16	02	प्रीति	24	14	तै	16	17	वृश्चिके	30	6	21	सूर्यषष्ठी, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 4:02, सिद्धयोग, स.सि. योग	06	22	06	24
30	0	7	शनि	19	22	14	08	ज्ये	20	37	14	38	आयु.	21	27	व	14	08	ध.दि.2:38	31	7	22	सायन सूर्य तुला में रात्रि 8:52, भद्रा दि. 2:08 से रात्रि 1:12 तक, गंडमूल	06	23	06	23
29	56	8	रवि	14	41	12	16	मूला	17	49	13	31	सौभा.	18	54	व	12	16	धनें	अश्वि	8	23	गण्डमूल समाप्त दिवा 1:31, स.सि.योग, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, B	06	23	06	22
29	48	9	सोम	10	44	10	42	पू.षा.	15	44	12	42	शोभन	16	36	कौ	10	42	म.सा.6:32	2	9	24	अदुःख नवमी व्रत, श्री चन्द्र (उदासीन सम्प्रदाय)	06	24	06	20
29	45	10	मंग	07	32	09	26	उ.षा.	14	25	12	11	अतिगंड	14	33	ग	09	26	मकरे	3	10	25	भद्रा रात्रि 8:58 से	06	25	06	19
29	41	11	बुध	05	14	08	31	श्रव	13	56	12	0	सुकर्मा	12	46	वि	08	31	कुं.रा.12:03	4	11	26	पद्मा एकादशी व्रत, वामन द्वादशी, श्रीवामन जयंती, पंचक प्रारंभ C	06	25	06	18
29	33	12	गुरु	03	47	07	57	धनि	14	19	12	10	धृति	11	16	बा	07	57	कुंभे	5	12	27	प्रदोष व्रत, बुध चित्रा में 12:00	06	26	06	16
29	30	13	शुक्र	03	20	07	47	शत	15	42	12	44	शूल	10	6	तै	07	47	कुंभे	6	13	28	अनन्त चतुर्दशी, मंगल वृश्चिक में रात्रि 8:41, शुक्र सिंह में 8:45	06	27	06	15
29	26	14	शनि	03	59	08	03	पू.भा.	18	11	13	44	गंड	09	16	व	08	03	मीने 07:27	7	14	29	श्रीसत्यनारायण व्रत, श्राद्ध प्रारंभ, श्राद्ध पूर्णिमा प्रातः 8:03 बाद, D	06	27	06	14
29	18	15	रवि	05	49	08	48	उ.भा.	21	51	15	13	वृद्धि	08	48	ब	08	48	मीने	8	15	30	पूर्णिमा व्रत, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 3:13, स.सि. योग, E	06	28	06	12

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (23 सितम्बर, सन् 2012 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	08	06	05	01	03	06	07	01
06	08	26	16	22	24	04	04	04
20	40	06	20	07	08	29	51	51
08	35	17	24	18	06	11	00	00
58	832	41	99	02	68	06	03	03
44	00	17	49	11	12	42	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.फा. 3	मूला 3	विशा 2	हस्त 2	रोहि 4	आश्ले 3	चित्रा 4	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:23

मं श 7 | सू 6 बु | 5 | 4 शु | 3 | 2 बृ के | 1 | 12 | 11 | 10 | 9 चं | 8 ग

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (30 सितंबर, सन् 2012 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	11	07	05	01	04	06	07	01
13	11	00	27	22	02	05	04	04
11	36	56	39	18	08	16	28	28
56	31	59	31	28	57	47	45	45
58	745	41	93	00	09	06	03	03
57	28	51	26	49	19	55	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
हस्त 1	उ.भा. 3	विशा 4	चित्रा 2	रोहि 4	मघा 1	चित्रा 4	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:28

7 श | सू 6 बु | 5 शु | 4 | 3 | 2 बृ के | 1 | 12 चं | 11 | 10 | 9 | 8 मं ग

A चन्द्रदर्शन विषेध, बुध हस्त में दिवा 12:05 B राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी (दुरब्बड़ी) डुग्गर प्रदेशे (ज्येष्ठा मूला नक्षत्रयुक्त पूज्या नहीं) दधीचि जयन्ति C रात्रि 12:05, भद्रा प्रातः 8:31 तक, सूर्य हस्त में रात्रि 11:12 D भद्रा प्रातः 8:03 से रात्रि 8:25 तक, सिद्धयोग 8:03 तक E श्राद्ध प्रतिपदा 8:48 बाद।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **श्रीवराह जयन्ती**– शास्त्रों के अनुसार अपराह्न व्यापिनी तृतीया को व्रत करने का निर्देश है। यह तिथि श्री विष्णु भगवान के वराहावतार की तिथि है। **हरितालिका तीज व्रत**– भाद्रपद शुक्ल तृतीया परविद्धा चतुर्थीयुक्त श्रेष्ठ मानी जाती है। इस दिन मिट्टी के शिवलिंग बना कर गौरी शंकर भगवान की प्रसन्नता के लिए एवं पुत्र पौत्रादि सुख के लिए श्रद्धापूर्वक व्रत करना चाहिए। यह व्रत उत्तर-प्रदेश, बिहार इत्यादि प्रदेशों में बहुत प्रसिद्ध है। **ऋषिपञ्चमी व्रत**– यह व्रत सायं व्यापिनी पञ्चमी को किया जाता है। यह व्रत स्त्रियों के रजोदोष शान्ति हेतु किया जाता है। इसमें अरुन्धती सहित सप्त ऋषियों की पूजा की जाती है, कहीं- कहीं ब्राह्मण लोग वेदारम्भ भी करते हैं। जम्मू प्रान्त में इस दिन नागों की पूजा (नागपञ्चमी) की तरह करने की परम्परा है, पाँच-पाँच नाग पाँच-पाँच स्थानों में पाँच-पाँच रंगों से बनाकर, दूध मिश्रित गुड़ से युक्त गेहूँ का दलिया भोग नागों को अर्पित किया जाता है। इसके साथ ही अन्य विषैले क्षुद्र जंतुओं की भी पूजा की जाती है। विष भरे सर्पों से रक्षा इस पूजा का प्रतिफल माना जाता है। यह व्रत अधिकतर डुग्गर प्रदेश में प्रसिद्ध है। **श्रीराधाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत**– श्रीराधा का जन्मदिनोत्सव भाद्रपद शुक्लाष्टमी को मनाया जाता है। दूर्वाष्टमी के दिन लक्ष्मी पूजा भी की जाती है। स्त्रियाँ एक साथ मिलकर जलाशय पर जा कर विधिवत पूजा सम्पन्न करती हैं इस पूजा से प्रत्येक कामना पूर्ति होती है। इस व्रत में यदि ज्येष्ठा या मूला नक्षत्र आ जाए तो दूर्वा के बिना पूजा करनी चाहिए। भाद्रपद शुक्लाष्टमी के पूर्व ही अगस्त्य तारा का उदय हो जाए तो कृष्ण जन्माष्टमी को ही दूर्वाष्टमी कर लेनी चाहिए। **आकाश लक्षणम्**– वर्षा अधिक होगी, बिहार, उड़ीसा, म.प्र., दिल्ली इत्यादि में बाढ़ का प्रकोप हो सकता है।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 आश्विन कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 1 अक्तूबर से 15 अक्तूबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श अश्वि	वि अश्वि	अं अक्तू	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.	सू.	सू. अ.	
29	15	1	सोम	08	55	10	03	रेवती	26	42	17	10	ध्रुव	08	43	कौ	10	03	मे.सा.5:10	9	16	1	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा, द्वितीया श्राद्ध 10:03 बाद, पंचक समाप्तA	06	29	06	11
29	11	2	मंग	13	16	11	48	अश्वि	32	43	19	35	व्याघा	09	01	ग	11	48	मेषे	10	17	2	भद्रा रात्रि 12:53 से, गण्डमूल रात्रि 7:35 तक, स.सि. योग, B	06	29	06	10
29	03	3	बुध	18	41	13	59	भरणी	39	43	22	24	हर्षण	09	39	वि	13	59	मेषे	11	18	3	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय, रात्रि 7:47 भद्रा दिवा 1:59 तक, अृतयोग, C	06	30	06	08
29	0	4	गुरु	24	57	16	30	कृत्ति	47	25	25	29	वज्र	10	33	बा	16	30	वृ.प्रा.5:09	12	19	4	अमृतयोग, वक्र गुरू रात्रि 6:48, **श्राद्ध चतुर्थी**	06	31	06	07
28	56	5	शुक्र	31	36	19	10	रोहि	55	17	28	39	सिद्धि	11	36	तै	19	10	वृषे	13	20	5	**पञ्चमी श्राद्ध**, शनि अस्त पश्चिमे दिवा 1:45, बुध स्वाती में D	06	31	06	06
28	51	6	शनि	38	05	21	47	मृग्	60	00	00	00	व्यती	12	39	ग	08	30	मि.सा.6:10	14	21	6	भद्रा रात्रि 9:47 से, **षष्ठी श्राद्ध**	06	32	06	05
28	43	7	रवि	43	48	24	05	मृग	02	47	07	40	वरीय	13	32	वि	10	59	मिथुने	15	22	7	भद्रा दिवा 10:56 तक, **सप्तमी श्राद्ध**, बुध उदय पश्चिमे E	06	33	06	03
28	40	8	सोम	48	12	25	51	आर्द्रा	09	20	10	18	परिघ	14	04	बा	13	03	मिथुने	16	23	8	**अष्टमी श्राद्ध**, श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी, जीवित्पुत्रिका व्रत	06	34	06	02
28	36	9	मंग	50	47	26	54	पुन	14	26	12	21	शिव	14	07	तै	14	28	क.प्रा.5:54	17	24	9	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्, शुक्र पू.फा. में सायं 7:45	06	34	06	01
28	31	10	बुध	51	22	27	09	पुष्य	17	41	13	40	सिद्धि	13	35	व	15	08	कर्के	18	25	10	भद्रा दिवा 03:01 से अ.रा.परि 3:09 तक, गंडमूल दिवा 1:40 से, F	06	35	06	0
28	25	11	गुरु	49	55	26	34	आश्ले	18	57	14	11	साध्य	12	23	ब	14	58	सिं.दि.2:11	19	26	11	**इन्द्रा एकादशी व्रत**, गण्डमूल, **एकादशी श्राद्ध**, शनि स्वाती में G	06	36	05	58
28	21	12	शुक्र	46	28	25	12	मघा	18	14	13	54	शुभ	10	33	कौ	13	59	सिंहे	20	27	12	गण्डमूल दिवा 1:54 तक, अमृतयोग, **द्वादशी श्राद्ध**, सन्यासीनांश्राद्धम्	06	36	05	57
28	16	13	शनि	41	15	23	08	पू.फा.	15	36	12	52	शुक्ल ब्रह्म	08 29	07 09	ग	12	15	कं.सा.6:31	21	28	13	**शनि प्रदोष व्रत**, भद्रा रात्रि 11:08 से, **त्रयोदशी श्राद्ध**, **मासिक शिवरात्री**	06	37	05	56
28	11	14	रवि	34	43	20	32	उ.फा.	11	29	11	14	ऐन्द्र	25	46	वि	09	54	कन्यायां	22	29	14	भद्रा दिवा 9:50 तक, स.सि. योग, **चतुर्दशी श्राद्ध**, शस्त्रहतानां श्राद्धम्	06	38	05	55
28	05	30	सोम	27	12	17	32	हस्त	06	12	09	08	वैधृ	22	05	च	07	04	तु.सा.7:58	23	30	15	देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस, सर्वपितृश्राद्धम्, H	06	39	05	53

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (8 अक्तूबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	02	07	06	01	04	06	07	01
21	17	06	09	22	11	06	04	04
04	34	34	43	19	27	12	03	03
34	20	10	18	20	38	48	19	19
59	732	102	86	00	70	07	03	03
15	51	31	40	48	28	06	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
हस्त 4	आर्द्रा 4	अनु 1	स्वा 1	रोहि 4	मघा 4	चित्रा 4	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:34

7 श बु; 6 सू; 5 शु; 4; 8 मं रा; 9; 3 चं; 10; 12; 2 के बृ; 11; 1

अमावस्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (15 अक्तूबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	05	07	06	01	04	06	07	01
28	21	11	19	22	19	07	03	03
00	05	33	30	09	43	02	41	41
07	55	31	49	29	29	52	04	04
59	827	43	79	02	70	07	03	03
30	54	05	57	13	18	12	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
चित्रा 2	हस्त 4	अनु 3	स्वा 4	रोहि 4	पू.फा. 2	स्वा 1	अनु 1	कृत्ति 3

कुण्डली अमावस प्रातः 6:39

7 बु श; 6 सू चं; 5 शु; 4; 8 रा मं; 9; 3; 10; 12; 2 के बृ; 11; 1

A सायं 5:10, गण्डमूल, बुध तुला में सायं 5:40 B **श्राद्ध तृतीया** 11:48 बाद, श्रीगान्धी, लालबहादुर शास्त्री जयन्ति C**श्राद्ध तृतीया दिवा** 1:59 के पहले, मंगल अनुराधा में दिवा 3:15 D अ.रा. परि 3:29 E अ.रा.परि 4:50 F **दशमी श्राद्ध**, सूर्य चित्रा में दिवा 12:15 G अ.रा. परि 1:08 H बुधा विशाखा में दिवा 2:16

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

श्राद्धपक्ष– इस पक्ष में प्रतिदिन देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन देवर्षि पितृ तर्पण के बाद पितरों के लिए जल, फल, तिल, पुष्पादि से श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि प्रतिदिन श्राद्ध न कर सकें तो पितरों की तिथि के दिन श्रद्धापूर्वक श्राद्ध एवं ब्राह्मणों को भोजन अवश्य करवाएं। प्रतिदिन अन्न फलादि का दान करने से पितरों की प्रसन्नता प्राप्त होने पर शरीर में आरोग्यता, घर में सुख ऐश्वर्य तथा धनधान्य की वृद्धि होती है। **इन्द्रा एकादशी व्रत–** इस व्रत के करने से जन्म जन्मान्तरीय पापों का नाश होता है, दिन भर प्रभुचिन्तन करने से घर में सुख ऐश्वर्य तथा धनधान्य की प्राप्ति होती

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श आश्वि	वि आश्वि	अं अक्तू	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
28	01	1	मंग	19	04	14	17	चित्रा स्वाती	00 53	12 50	06 28	44 12	विष्कुं	18	14	ब	14	17	तुलायां	24	कार्ति	16	आ.शु. प्रतिपदा, तुला संक्रान्ति, सूर्य तुला में अ.रा. परि 5:49 A	06	39	05	52
27	56	2	बुध	10	44	10	58	विशा	47	28	25	40	प्रीति	14	21	कौ	10	58	वृ.रा.8:17	25	2	17	चन्द्रदर्शनम् (मु. 45)	06	40	05	51
27	51	3	गुरु	02	34	07	43	अनु	41	33	23	19	आयु.	10	32	ग	07	43	वृश्चिके	26	3	18	भद्रा सायं 6:11 से अ.रा.परि. 4:40 तक, गंडमूल रात्रि 11:19 से, B	06	41	05	50
0	0	4	गुरु	54	55	28	40	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
27	47	5	शुक्र	48	05	25	56	ज्ये	36	22	21	15	सोभा शोभन	06 27	54 32	ब	15	15	ध.रा.9:15	27	4	19	गण्डमूल, उपाङ्ग, ललिता व्रतम्	06	42	05	49
27	43	6	शनि	42	13	23	36	मूला	32	08	19	34	अतिगंड	24	30	कौ	12	43	धने	28	5	20	गण्डमूल रात्रि 7:34 तक, सरस्वती आवाहनम् (मूल नक्षत्रे) C	06	42	05	48
27	38	7	रवि	37	33	21	45	पू.षा.	29	03	18	21	सुकर्मा	21	51	ग	10	37	म.रा.12:07	29	6	21	भद्रा रात्रि 9:45 से, देवी भद्रकाली अवतार सरस्वती पूजन (पू.षा. नक्षत्रे)	06	43	05	47
27	33	8	सोम	34	11	20	25	उ.षा.	27	13	17	38	धृति	19	38	वि	09	01	मकरे	30	7	22	श्रीदुर्गाष्टमी, भद्रा दिवा 9:05 तक, बलिदानं (उ.षा.नक्षत्रे) महाष्टमी, D	06	44	05	46
27	26	9	मंग	32	11	19	38	श्रव	26	43	17	27	शूल	17	49	बा	07	57	मकरे	कार्ति	8	23	**श्रीदुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त**, सा. सूर्य वृश्चिके प्रात: 7:00 E	06	45	05	44
27	22	10	बुध	31	30	19	22	धनि	27	32	17	47	गंड	16	26	तै	07	26	कुं.प्रा.5:33	2	9	24	विजयादशमी, पञ्चक प्रारम्भ प्रात: 5:37, बौद्धावतार, अपराजिता F	06	46	05	43
27	18	11	गुरु	32	08	19	38	शत	29	38	18	38	वृद्धि	15	28	ब	07	26	कुंभे	3	10	25	**पापांकुशा एकादशी व्रत**	06	46	05	42
27	13	12	शुक्र	34	01	20	24	पू.भा.	32	56	19	58	ध्रुव	14	52	ब	07	57	मी.दि.1:35	4	11	26	अमृतयोग, बुध अनुराधा में सायं 5:05	06	47	05	41
27	08	13	शनि	37	0	21	37	उ.भा.	37	18	21	44	व्याघा	14	38	कौ	08	57	मीने	5	12	27	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल रात्रि 9:44 से	06	48	05	40
27	03	14	रवि	41	05	23	16	रेवती	42	43	23	55	हर्षण	14	44	ग	10	24	मे.रा.11:55	6	13	28	**पञ्चक समाप्त** रात्रि 11:55, भद्रा रात्रि 11:16 से, गण्डमूल	06	49	05	39
26	58	15	सोम	46	10	25	19	अश्वि	49	02	26	28	वज्र	15	08	वि	12	15	मेषे	7	14	29	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा** श्रीवाल्मीकि जयंती, G	06	50	05	38

अष्टम्यां सोमवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (22 अक्तूबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	09	07	06	01	04	06	07	01
04	03	16	28	21	28	07	03	03
57	05	36	23	49	04	53	18	18
20	00	44	25	51	45	30	49	49
59	815	43	69	03	72	07	03	03
43	26	36	55	35	00	15	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
चित्रा 4	उ.षा. 2	अनु 4	विशा 3	रोहि 4	उ.फा. 1	स्वा 1	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अष्टमी प्रात: 6:44

मं रा
8
7
6
9
सू बु श
5 शु
10 चं
4
11
1
3
12
2 के बृ

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (29 अक्तूबर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	00	07	07	01	05	06	07	01
11	02	21	05	21	06	08	02	02
55	48	43	43	20	30	44	56	56
59	48	28	50	56	40	17	34	34
59	121	44	51	04	72	07	03	03
55	46	06	04	51	38	14	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
स्वा 2	अश्वि 1	ज्येष्ठ 2	अनु 1	रोहि 4	उ.फा. 3	स्वा 1	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रात: 6:50

मं बु रा
8
सू 7 श
6 शु
9
5
10
4
11
1 चं
3
12
2 बृ के

A पुष्य अगले दिन, नवरात्र प्रारंभ, अमृतयोग, घटस्थापनम्, अग्रसेन जयन्ती माता महाश्राद्धम् B स.सि.योग C शुक्र उ.फा. में अ.रा. परि 1:14 D मंगल ज्येष्ठा में 7:15 E हेमन्त ऋतु प्रारंभ सरस्वती विसर्जनम् (श्रवणनक्षत्रे), भारतीय कार्तिक मास प्रारम्भ, सूर्य स्वाती में रात्रि 10:41, बुध वृश्चिक में दिवा 2:53, शुक्र कन्या में रात्रि 7:55 F पूजनम्, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती G भद्रा दिवा 12:17 तक, गण्डमूल।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- नवरात्र व्रत- आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक शारदीय नवरात्र महोत्सव मनाया जाता है, इसमें शक्ति पूजा का विशेष महत्त्व है, सभी लोग श्रद्धा से नवरात्र व्रत करते हैं, नवमी के दिन कन्या पूजन करके व्रत पारणा करना चाहिए। **सरस्वती शयन व्रत-** सरस्वती का आवाहन मूल नक्षत्र में, विशेष पूजा पूर्वाषाढ़ा में, मीठा प्रसाद हलवा इत्यादि का भोग उ.षा. में, श्रवण नक्षत्र में विधिपूर्वक आरती करके भगवती सरस्वती का विसर्जन करें, विद्यार्थी अपनी पुस्तकों की पूजा करके श्रवण नक्षत्र के पश्चात् प्रतिदिन स्वाध्याय करें तो सरस्वती प्रसन्न होकर अक्षुण विद्या प्रदान करती है। **पापांकुशा एकादशी व्रत-** इस एकादशी का व्रत करने से समस्त पापों का नाश होता है तथा साकेत धाम की प्राप्ति होती है। **आकाश लक्षणम्-** सामान्य वर्षा होगी, मौसम प्रायश: खुशक रहेगा।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 कार्तिक कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 30 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श कार्ति	वि कर्ति	अं अक्तू	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
26	55	1	मंग	52	02	27	40	भरणी	56	10	29	19	सिद्धि	15	48	बा	14	27	मेषे	8	15	30	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा, अमृतयोग	06	51	05	37
26	51	2	बुध	58	30	30	16	कृत्ति	60	0	0	0	व्यती	16	40	तै	16	57	वृ.दि.12:04	9	16	31	स.सि. योग, शुक्र हस्त में अ.रा. परि 2:36	06	51	05	36
26	48	3	गुरु	60	0	0	0	कृत्ति	03	47	08	23	वरीय	17	40	व	19	37	वृषे	10	17	नवं.	भद्रा रात्रि 7:37 से	06	52	05	36
26	43	3	शुक्र	05	14	08	59	रोहि	11	37	11	32	परिघ	18	42	वि	08	59	मि.रा.1:05	11	18	2	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 7:57, **करवाचौथ व्रत**, A	06	53	05	35
26	38	4	शनि	11	52	11	39	मृग	19	19	14	38	शिव	19	39	बा	11	39	मिथुने	12	19	3	सिद्ध योग 11:39 तक	06	54	05	34
26	33	5	रवि	17	56	14	06	आर्द्रा	26	28	17	31	सिद्धि	20	25	तै	14	06	मिथुने	13	20	4		06	55	05	33
26	28	6	सोम	23	01	16	09	पुन	32	36	19	59	साध्य	20	49	व	16	09	क.दि.1:25	14	21	5	भद्रा दिवा 4:09 से अ.रा. परि 4:53 तक, **स्कन्द षष्ठी**	06	56	05	32
26	25	7	मंग	26	40	17	37	पुष्य	37	20	21	53	शुभ	20	46	ब	17	37	कर्के	15	22	6	गण्डमूल रात्रि 9:53 से, बुध वक्री अ.रा. परि 4:32, B	06	57	05	31
26	23	8	बुध	28	31	18	22	आश्लें	40	15	23	04	शुक्ल	20	10	कौ	18	22	सिं.रा.11:04	16	23	7	गण्डमूल, **अहोई अष्टमी, श्रीराधाष्टमी** (दूर्वाष्टमी डुग्गर प्रदेशे)	06	57	05	31
26	18	9	गुरु	28	21	18	19	मघा	41	13	23	28	ब्रह्म	18	56	ग	18	19	सिंहे	17	24	8	भद्रा अ.रा. परि 5:53 से, गण्डमूल रात्रि 11:28 तक, C	06	58	05	30
26	13	10	शुक्र	26	08	17	27	पू.फा.	40	10	23	04	ऐन्द्र	17	04	वि	17	27	कं.अ.रा.4:50	18	25	9	भद्रा सायं 5:27 तक, मंगल धनु में 9:35	06	59	05	29
26	08	11	शनि	21	59	15	48	उ.फा.	37	15	21	55	वैधृ	14	34	बा	15	48	कन्यायां	19	26	10	रमा एकादशी व्रत, **गोवत्सद्वादशी**	07	0	05	28
26	06	12	रवि	16	06	13	28	हस्त	32	43	20	07	विष्कुं	11	31	तै	13	28	कन्यायां	20	27	11	प्रदोष व्रत, धनतेरस, **धन्वन्तरी जयंति**, यमापदीपदानम्, D	07	01	05	28
26	01	13	सोम	08	47	10	33	चित्रा	26	53	17	48	प्रीति आयु	07 28	59 05	व	10	33	तुलायां 7:00	21	28	12	**मासिक शिवरात्री व्रत, दीपदान, श्री हनुमान जयन्ति**, E	07	02	05	27
25	58	14	मंग	0	24	07	13	स्वाती	20	06	15	06	सोभा.	23	57	श	07	13	तुलायां	22	29	13	देवपितृकार्येऽमावस, **महालक्ष्मी पूजा, दीपावली, कुबेर पूजा**	07	03	05	27
0	0	30	मंग	51	22	27	37	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0		0	0	0	0

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (7 नवम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	03	07	07	01	05	06	07	01
20	20	28	10	20	17	09	02	02
56	39	22	15	31	27	49	27	27
30	18	46	37	25	15	15	57	57
60	768	44	04	06	73	07	03	03
14	56	42	48	17	20	10	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
विशा 1	आश्लें 2	ज्येष्ठ 4	अनु 3	रोहि 4	हस्त 3	स्वा 1	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:57

मं बु रा 8
6 शु
सू 7 श
9
5
10
4 चं
11
1
3
12
2 बृ के

अमावस्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (13 नवम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	06	08	07	01	05	06	07	01
26	13	02	07	19	24	10	02	02
58	57	51	21	51	48	31	08	08
22	48	56	46	44	14	59	53	53
60	907	45	02	07	73	07	03	03
26	13	16	27	03	42	04	11	11
शी	शी	व उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
विशा 3	स्वा 3	मूल 1	अनु 2	भर 2	चित्रा 1	स्वा 2	विशा 4	कृति 2

कुण्डली अमावस प्रातः 7:03

बु रा 8
6 शु
7 सू चं श
9 मं
5
10
4
11
1
3
12
2 बृ के

A भद्रा दिवा 8:59 तक B सूर्य विशाखा में प्रातः 6:55 C बुधास्त पश्चिमे रात्रि 11:05 शनि उदय पेर्वे रात्रि 11:50 D स.सि.योग, शुक्र चित्रा में रात्रि 12:45 E भद्रा दिवा 10:33 से भद्रा रात्रि 8:53 तक।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– कार्तिक स्नान– आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को कार्तिक स्नान का संकल्प कर लें। प्रतिदिन स्नान करने से शारीरिक पुष्टि, मानसिक तुष्टि, बुद्धि बल के साथ छुपी हुई बातों का ज्ञान स्वयं ही होने लगता है। कार्तिक स्नान करने से वैकुण्ठधाम की प्राप्ति होती है। **करवाचौथ व्रत–** कार्तिक कृष्ण तृतीया युक्त चतुर्थी जो चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो करवाचौथ का व्रत स्त्रियाँ पति की दीर्घायु तथा पारिवारिक सुख के लिए करती हैं; जम्मू प्रान्त, पंजाब, दिल्ली इत्यादि प्रदेशों में यह व्रत बहुत प्रचलित है। **अहोई अष्टमी–** इस दिन प्रदोष में व्रती द्वारा कालिका पूजन किया जाता है, जम्मू प्रान्त, पंजाब, हरियाणा इत्यादि में व्रत बहुत श्रद्धापूर्वक किया जाता है, दीवार पर कालिका देवी का चित्र बनाकर पूजा करने की परम्परा है, यह नक्त व्रत है। पूजा में अन्न, फल, गन्ना, मूली, बैंगन, रूमाल और दक्षिणा धीवर स्त्री को दे दें, इस व्रत से अन्न भण्डार भरे रहते हैं। **नरक चतुर्दशी व्रत–** [illegible] पूजन करें। ऐसा करने से आतिशबाजी, बम विस्फोट, बिजली करंट तथा गोली लगने से मरने वाले मनुष्यों की सद्गति हो जाती है।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 कार्तिक शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 14 नवंबर से 28 नवंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श कार्ति	वि कार्ति	अं नवं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू. उ.		सू. अ.	
25	53	1	बुध	42	08	23	56	विशा	12	49	12	12	शोभन	19	43	किं	13	47	वृ.प्रा.6:55	23	30	14	कार्ति शु प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा, विश्वकर्मा दिवस, अन्नकूट, नेहरू जयंती	07	04	05	26
25	48	2	गुरु	33	01	20	18	अनु ज्ये.	05 58	29 30	09 30	17 30	अतिगंड	15	31	बा	10	06	वृश्चिके	24	मार्ग	15	**मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, सूर्य वृश्चिक में अ.रा.परि 05:35 पुण्य अगले दिन,A	07	05	05	25
25	47	3	शुक्र	24	32	16	55	मूला	52	20	28	02	सुकर्मा	11	27	ग	16	55	धनें प्रा. 6:30	25	2	16	भद्रा अ.रा. परि 3:24 से, गण्डमूल अ.रा. परि 4:02 तक, B	07	06	05	25
25	43	4	शनि	16	59	13	54	पू.षा.	47	15	26	01	धृति शूल	07 28	41 18	त्रि	13	54	धनें	26	3	17	भद्रा दिवा 1:54 तक, सिद्ध योग दिवा 1:54 तक, **दूर्वागणपति व्रत**,C	07	06	05	24
25	41	5	रवि	10	42	11	24	उ.षा.	43	35	24	34	गंड	25	23	बा	11	24	मकरे 7:35	27	4	18	स.सि.योग, **सौभाग्य पंचमी**, मेला बाबा वल्लूजी मथवार जम्मू, D	07	07	05	24
25	36	6	सोम	05	57	09	31	श्रव	41	33	23	46	वृद्धि	23	01	तै	09	31	मकरे	28	5	19	स.सि. योग, सूर्य अनुराधा में दिवा 12:52	07	08	05	23
25	33	7	मंग	02	57	08	20	धनि	41	20	23	42	ध्रुव	21	13	व	08	20	कुंभे 11:38	29	6	20	**गोपाष्टमी**, पंचक प्रारंभ 11:34, भद्रा दिवा 8:20 से रात्रि 8:06 तक	07	09	05	23
25	31	8	बुध	01	47	07	53	शत	42	53	24	20	व्याघ्रा	20	0	ब	07	53	कुंभे	30	7	21	अमृतयोग 7:53 तक, **अक्षय नवमी**, कूष्माण्ड नवमी	07	10	05	23
25	26	9	गुरु	02	24	08	09	पू.भा.	46	05	25	38	हर्षण	19	19	कौ	08	09	मीं.रा.7:14	मार्ग	8	22	सा. सूर्य धनु में प्रातः 5:13, अमृत योग 8:09 तक, बुधोदयः E	07	11	05	22
25	23	10	शुक्र	04	44	09	06	उ.भा.	50	45	27	31	वज्र	19	06	ग	09	06	मीने	2	9	23	भद्रा रात्रि 9:52 से, गण्डमूल अ.रा. परि 3:31 से	07	12	05	22
25	21	11	शनि	08	32	10	38	रेवती	56	37	29	53	सिद्धि	19	19	वि	10	38	मीने	3	10	24	**देव प्रवोधिनी एकादशी व्रत**, पञ्चक समाप्ति अ.रा. परि 5:53 F	07	13	05	22
25	16	12	रवि	13	29	12	38	अश्वि	60	0	0	0	व्यती	19	50	बा	12	38	मेषे प्रा. 5:53	4	11	25	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल, स.सि. योग	07	14	05	21
25	15	13	सोम	19	20	14	59	अश्वि	03	25	08	37	वरीय	20	36	तै	14	59	मेषे	5	12	26	गण्डमूल दिवा 8:37 तक, बुध मार्गी अ.रा. परि 4:15, G	07	15	05	21
25	13	14	मंग	25	46	17	34	भरणी	10	49	11	35	परिघ	21	30	व	17	34	वृ.सा.6:21	6	13	27	भद्रा सायं 5:34 से अ.रा. परि 6:54 तक	07	15	05	21
25	11	15	बुध	32	26	20	15	कृत्ति	18	31	14	41	शिव	22	29	ब	20	15	वृषे	7	14	28	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, स.सि.योग, गुरु नानक देव जयंति,H	07	16	05	21

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (21 नवम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	10	08	06	01	06	06	07	01
05	09	08	27	18	04	11	01	01
02	50	54	27	52	39	27	43	43
25	24	17	43	30	21	45	26	26
60	774	45	60	07	74	06	03	03
36	37	33	39	47	06	50	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
अनु 1	शत 1	मूल 3	विशा 3	रोहि 3	चित्रा 4	स्वा 2	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:10

9 मं; शु बु श; 8 सू ग; 7; 6; 10; 11 चं; 5; 12; 2 बृ के; 4; 1; 3

पूर्णिमायां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (28 नवम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	01	08	06	01	06	06	07	01
12	05	14	24	17	13	12	01	01
07	28	14	13	56	18	14	21	21
02	56	11	36	48	57	56	11	11
60	707	45	15	08	74	06	03	03
45	54	54	50	08	23	46	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
अनु 3	कृत्ति 3	पू.षा. 1	विशा 2	रोहि 3	स्वा 2	स्वा 2	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:16

9 मं; शु बु श; 8; 7; सू रा; 10; 6; 11; 5; 2 चं बृ के; 12; 4; 1; 3

A भाई दूज, टिक्का, विश्वकर्मा पूजा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15), दिवा 9:17 से B बुध विशाखा में दिवा 3:25 C शुक्र तुला में 10:55 D वक्री बुध तुला में अ.रा. परि 3:12 E सायं 5:00, भारतीय मार्ग शीर्ष प्रारंभ, शुक्र स्वाती में रात्रि 8:35 F भद्रा दिवा 10:38 तक, गण्डमूल, देवोस्थापनं भीष्म पञ्चक, तुलसी विवाह, चतुर्मास्य व्रत समाप्ति G वैकुंठ चतुर्दशी, मंगल पू.षा. में अ.रा.परि 1:06 H **कार्तिक स्नान समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त।**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **गोवर्धनपूजा–** गोवर्धन पूजा के साथ ही गोक्रीड़ा, अन्नकूट, बलि पूजा चारों पर्व एक ही दिन मनाये जाते हैं। **गोवर्धन पूजा–** सभी कृष्णभक्त इस दिन साक्षात् गोवर्धनगिरि के पास जाकर धूप दीप पुष्पादि से पूजन कर गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करते हैं, गोवर्धन पूजा के पश्चात् गौमाता का पूजन भी किया जाता है। **अन्नकूट–** कृष्ण मन्दिरों में अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किये जाते हैं, भोग लगा कर भक्तों को प्रसाद दिया जाता है। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को ही दैत्यराज बलि की भी पूजा की जाती है। **विश्वकर्मा पूजा–** इस दिन यन्त्रजीवी, अभियन्ता, उद्योगपति, लोहार, वास्तुकार, वाहन मरम्मत करने वाले अपने यन्त्रों, औजारों को हाथ नहीं लगाते, विश्वकर्मा भगवान की मूर्ति के सामने बैठकर श्रद्धा से पूजा करते हैं। **यमद्वितीया/भ्रातृद्वितीया–** इस दिन बहनों द्वारा भाईयों की दीर्घायु योग, आरोग्य, समृद्धि के लिए तिलक किया जाता है। **गोपाष्टमी–** इस दिन गायों को अलंकृत कर पूजा अर्चना की जाती है। **आकाश लक्षणम्–** वर्षा के योग मध्यम है, रुक-रुक कर वर्षा होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 29 नवंबर से 13 दिसंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श मार्ग	वि मार्ग	अं नवं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
25	06	1	गुरु	39	08	22	57	रोहि	26	16	17	48	सिद्धि	23	27	बा	09	36	वषे	8	15	29	मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा	07	17	05	20
25	03	2	शुक्र	45	33	25	32	मृग	33	48	20	50	साध्य	24	20	तै	12	15	मिथुने 7:20	9	16	30	अमृतयोग	07	18	05	20
25	01	3	शनि	51	25	27	54	आर्द्रा	40	53	23	41	शुभ	25	04	व	14	45	मिथुने	10	17	दिस	भद्रा दिवा 2:43 से अ.रा. परि 3:54 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	07	19	05	20
25	0	4	रवि	56	32	29	57	पुन	47	17	26	15	शुक्ल	25	34	ब	16	58	कर्के रा.7:38	11	18	2	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 8:29, सूर्य ज्येष्ठ में सायं 5:15	07	20	05	20
24	58	5	सोम	60	0	0	0	पुष्य	52	40	28	25	ब्रह्म	25	45	कौ	18	49	कर्के	12	19	3	गण्डमूल अ.रा. परि 4:25 से, स.सि.योग, शुक्र विशाखा दिवा 2:45	07	20	05	20
24	56	5	मंग	0	29	07	33	आश्ले	56	45	30	04	ऐन्द्र	25	32	तै	07	33	कर्के	13	20	4	गण्डमूल, स.सि. योग	07	21	05	20
24	53	6	बुध	03	07	08	37	मघा	59	20	31	07	वैधृ	24	52	व	08	37	सिंहे प्रा.6:04	14	21	5	भद्रा दिवा 8:37 से रात्रि 8:50 तक, गण्डमूल प्रातः 7:07 तक	07	22	05	20
24	51	7	गुरु	04	09	09	03	पू.फा.	60	0	0	0	विष्कुं	23	40	ब	09	03	सिंहे	15	22	6	श्री भैरवाष्टमी, बुध वृश्चिक में 9:03 श्रीकालाष्टमी	07	23	05	20
24	50	8	शुक्र	03	27	08	47	पू.फा. / उ.फा.	00 / 59	15 / 27	07 / 31	30 / 11	प्रीति	21	54	कौ	08	47	कन्या.दि.1:30	16	23	7		07	24	05	20
24	48	9	शनि	0	59	07	48	हस्त	56	52	30	10	आयु.	19	35	ग	07	48	कन्यायां	17	24	8	भद्रा रात्रि 6:57 से अ.रा.परि 6:06 तक, सिद्ध योग 7:48 तक, A	07	24	05	20
0	0	10	शनि	56	42	30	06	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
24	48	11	रवि	50	50	27	46	चित्रा	52	40	28	30	सोभा.	16	43	ब	17	00	तुला.सा.5:24	18	25	9	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त), अमृतयोग	07	25	05	21
24	46	12	सोम	43	33	24	52	स्वाती	47	08	26	18	शोभन	13	21	कौ	14	22	तुलायां	19	26	10	अमृतयोग, उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)	07	26	05	21
24	45	13	मंग	35	12	21	32	विशा	40	35	23	41	अतिगंड / सुकर्मा	09 / 29	35 / 31	ग	11	14	वृ.सा.6:22	20	27	11	प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 9:32 से, सिद्धयोग, मासिक शिवरात्रि व्रत, B	07	27	05	21
24	43	14	बुध	26	8	17	55	अनु	33	18	20	47	धृति	25	16	वि	07	45	वृश्चिके	21	28	12	भद्रा प्रातः 7:47 तक, गंडमूल रात्रि 8:47 से, मेला पुरमंडल जम्मू,C	07	27	05	21
24	41	30	गुरु	16	46	14	11	ज्ये	25	48	17	48	शूल	20	57	ना	14	11	घने सा.5:48	22	29	13	देवपितृकार्येऽमावस, गण्डमूल	07	28	05	21

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (7 दिसम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	04	08	07	01	06	06	07	01
21	25	21	00	16	24	13	00	00
14	33	09	56	43	29	12	52	52
29	06	01	35	19	46	48	33	33
60	819	46	69	08	74	06	03	03
56	03	19	54	07	42	09	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
ज्येष्ठ 2	पू.फा. 4	पू.षा. 3	विशा 4	रोहि 3	विशा 2	स्वा 2	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:24

9 मं; 8 सू. बु रा; 7 शु श; 6; 5 चं; 4; 3; 2 बृ के; 1; 12; 11; 10

अमावस्यां गुरूवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (13 दिसम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	07	08	07	01	07	06	07	01
27	22	25	08	15	01	13	00	00
20	11	47	32	55	58	49	33	33
24	28	37	24	11	24	14	29	29
61	913	46	82	07	74	05	03	03
02	05	35	23	50	51	53	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
ज्ये 4	ज्ये 2	पू.षा. 4	अनु 2	रोहि 2	विशा 4	स्वा 3	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अमावस प्रातः 7:28

9 मं; 8 सू चं बु शु रा; 7 श; 6; 5; 4; 3; 2 बृ के; 1; 12; 11; 10

A बुध अनुराधा में अ.रा. परि 5:40 B शुक्र वृश्चिक में दिवा 3:30 C देवका स्नान (उधमपुर)।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :-

श्री भैरवाष्टमी– इस दिन सायंकाल कालभैरव का जन्म हुआ था, अतः भैरव भक्तों को व्रतपूर्वक पूजा अर्चना करनी चाहिए। इस दिन बच्चों को तथा काले कुत्ते को खाद्य पदार्थ खिलाने चाहिए। **उत्पन्ना एकादशी व्रत**– मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी का नाम उत्पन्ना कहा जाता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति निर्धन से धनी, निर्बली बलवान, पुत्र रहित पुत्र युक्त हो जाता है अन्त में वैकुण्ठधाम प्राप्त होता है, जम्मू के समीप पुरमंडल ग्राम में गुप्त गंगा के किनारे एक प्राचीन शिव मन्दिर है पुरमण्डल में मार्गशीर्ष त्रयोदशी से अमावस तक मेला लगता है, गुप्त गंगा में स्नान का महत्व गंगा स्नान के तुल्य है, श्रद्धालु लोग लाखों की संख्या में पुरमण्डल में जमा होते हैं तथा स्नानोपरान्त पुण्य अर्जित करते हैं। **आकाश लक्षणम्**– जम्मू, हिमाचल प्रदेश में वर्षा के योग हैं, सर्दी की वृद्धि होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2012 ई. 14 दिसंबर से 28 दिसंबर तक सूर्योदक्षिण-उत्तरायणे, हेमन्त शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श मार्ग	वि मार्ग	अं दिसं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
24	42	1	शुक्र	07	32	10	30	मूला	18	30	14	53	गंड	16	44	व	10	30	धने	23	30	14	गण्डमूल दिवा 2:53 तक, सिद्धयोग 10:30 तक, चन्द्रदर्शनम् A	07	29	05	22
0	0	2	शुक्र	58	52	31	02	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीय तिथि क्षय	0	0	0	0
24	41	3	शनि	51	12	27	59	पू.षा.	11	52	12	14	वृद्धि	12	45	तै	17	27	म.सा.5:38	24	पौष	15	**पौष संक्रान्ति**, सूर्य धनु में रात्रि 8:13	07	29	05	22
24	38	4	रवि	44	55	25	29	उ.षा.	06	19	10	02	ध्रुव व्याघात	09 29	08 59	व	14	39	मकरे	25	2	16	भद्रा दिवा 2:44 से अ.रा. परि 1:29 तक, स.सि. योग 10:02 तक	07	30	05	22
24	40	5	सोम	40	25	23	41	श्रव	02	15	8	25	हर्षण	27	26	ब	12	29	कुं.रा.7:53	26	3	17	**पञ्चक प्रारंभ** रात्रि 7:59, स.सि. योग 8:25 तक, **नाग पञ्चमी**,B	07	31	05	23
24	38	6	मंग	37	53	22	41	धनि शत	00 59	04 52	07 31	33 29	वज्र	25	31	कौ	11	05	कुंभे	27	4	18	अमृतयोग, स्कन्दषष्ठी, चम्पाषष्ठी, मंगल मकर में दिवा 3:15, C	07	31	05	23
24	40	7	बुध	37	32	22	33	पू.भा.	60	0	0	0	सिद्धि	24	16	ग	10	31	मी.अ.रा.1:58	28	5	19	भद्रा रात्रि 10:33 से, सिद्धयोग, मित्रसप्तमी	07	32	05	24
24	38	8	गुरु	39	18	23	16	पू.भा.	01	44	08	14	व्यती	23	40	वि	10	48	मीने	29	6	20	**राहु तुला में, केतु मेष में** 23 दिसंबर सायं 5:54, भद्रा दिवा 10:54 तक	07	32	05	24
24	40	9	शुक्र	42	57	24	44	उ.भा.	05	37	09	48	वरीय	23	39	बा	11	55	मीने	30	7	21	सा. सूर्य मकर में सायं 6:56, सायन उत्तरायण प्रारंभ शिशर ऋतु प्रारंभ,D	07	33	05	25
24	38	10	शनि	48	7	26	49	रेवती	11	09	12	01	परिघ	24	05	तै	13	42	मेषे 12:01	पौष	8	22	**पंचक समाप्त** दिवा 12:01, गडमूल, अमृतयोग, **शकपौष प्रारंभ**	07	33	05	25
24	40	11	रवि	54	22	29	19	अश्वि	17	57	14	45	शिव	24	51	व	16	01	मेषे	2	9	23	**मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयंती**, भद्रा दिवा 4:04 से E	07	34	05	26
24	38	12	सोम	60	0	0	0	भरणी	25	31	17	47	सिद्धि	25	48	ब	18	40	वृषे रा.12:34	3	10	24	सिद्धयोग 8:02 पश्चात, शुक्र ज्येष्ठ में रात्रि 11:48	07	34	05	26
24	40	12	मंग	01	07	08	02	कृत्ति	33	25	20	57	साध्य	26	48	बा	08	02	वृषे	4	11	25	**प्रदोष व्रत**, स.सि. योग, अनंगत्रयोदशी, **क्रिसमिसडे**	07	35	05	27
24	40	13	बुध	08	02	10	48	रोहि	41	12	24	04	शुभ	27	45	तै	10	48	वृषे	5	12	26	स.सि. योग, पिशाचमोचन श्राद्धम, श्री दत्तात्रय जयन्ती	07	35	05	27
24	41	14	गुरु	14	36	13	26	मृग	48	32	27	01	शुक्ल	28	33	व	13	26	मि.दि.1:34	6	13	27	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा दिवा 1:26 से अ.रा. परि 2:38 तक, F	07	35	05	28
24	42	15	शुक्र	20	37	15	51	आर्द्रा	55	17	29	43	ब्रह्म	29	09	ब	15	51	मिथुने	7	14	28	**पूर्णिमा व्रत**, सूर्य पू.षा. में रात्रि 10:25	07	36	05	29

अष्टम्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (20 दिसम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	11	09	07	01	07	06	07	01
04	01	01	18	15	10	14	00	00
27	52	14	29	02	42	29	11	11
53	28	29	47	03	44	09	13	13
61	754	46	88	07	74	05	03	03
06	28	49	17	13	58	28	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मूल 2	पू.भा. 4	उ.षा. 2	ज्ये 1	रोहि 2	अनु 3	स्वा 3	विशा 4	कृत्ति 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:32

10 मं, 9 सू, 8 शु बु रा, 7 श, 11, 12 चं, 6, 1, 3, 5, 2 बृ के, 4

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (28 दिसम्बर, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	02	09	08	01	07	06	06	00
12	07	07	00	14	20	15	29	29
36	53	29	28	07	42	10	45	45
44	37	54	06	43	50	55	46	46
61	720	47	91	06	75	04	03	03
07	36	02	27	12	04	54	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मूल 4	आर्द्रा 1	उ.षा. 4	मूल 1	रोहि 2	ज्ये 2	स्वा 3	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:36

10 मं, सू 9 बु, 8 शु, श 7 रा, 11, 12, 6, 1 के, 3 चं, 5, 2 बृ, 4

A (मु. 30), मंगल उ.षा. में 8:27, शुक्र अनुराधा में 7:40 B **श्रीराम विवाहोत्सव**, श्रीपञ्चमी C बुध ज्येष्ठ में रात्रि 11:23 D गण्डमूल दिवा 9:48 से E अ.रा. परि 5:19 तक अमृतयोग स.सि. योग, गण्डमूल दिवा 2:45 तक F अमृतयोग, बुध धनु में रात्रि 10:05

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– मोक्षदा एकादशी व्रत– मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी मोक्षदा एकादशी व्रत सभी मनुष्यों को काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार को अपने भीतर समाविष्ट कर, सभी विकारों पर विजय प्राप्त कराकर, अपूर्व आत्मबल को सुदृढ़ बनाकर सब प्रकार से शान्ति देने वाला है। **गीता जयन्ती–** मार्गशीर्ष एकादशी के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश दिया था। अतः इस दिन अत्यन्त पवित्र ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता के सम्मान में विशेष उत्सव मनाने की परम्परा है, इस दिन गीता पाठ सुनना और सुनाना चाहिए। **दत्तात्रेय जयन्ती–** पुत्र प्राप्ति के लिए अत्रि ऋषि ने भगवान विष्णु की आराधना की, तपस्या से प्रसन्न भगवान विष्णु ने अत्रि ऋषि के घर पुत्र रूप में आना स्वीकार किया। श्रीविष्णु ही अत्रि पुत्र के रूप में अवतरित हुए और दत्त कहलाए। अत्रि के पुत्र होने के कारण आत्रेय भी कहलाए। इस प्रकार दत्त और आत्रेय शब्दों का एक रूप 'दत्तात्रेय' हुआ। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने की परम्परा है। **आकाश लक्षणम्–** सर्दी की वृद्धि होने लगेगी, पक्षान्त में वर्षा के योग प्रबल हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 पौष कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2012-13 ई. 29 दिसंबर से 11 जनवरी तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श पौष	वि पौष	अं दिसं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू. उ.		सू. अ.	
24	42	1	शनि	25	52	17	57	पुन.	60	0	0	0	ऐन्द्र	29	30	कौ	17	57	क.रा.1:32	8	15	29	पौष कृष्ण प्रतिपदा	07	36	05	29
24	43	2	रवि	30	11	19	41	पुन	01	14	8	06	वैधृ	29	35	ग	19	41	कर्के	9	16	30		07	36	05	30
24	45	3	सोम	33	35	21	03	पुष्य	06	15	10	07	विष्कुं	29	21	व	08	25	कर्के	10	17	31	भद्रा दिवा 8:22 से रात्रि 9:03 तक, गण्डमूल दिवा 10:07 से, A	07	37	05	31
24	45	4	मंग	35	55	21	59	आश्ले	10	20	11	45	प्रीति	28	48	ब	09	34	सिंहे 11:45	11	18	जन.	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 9:13, गंडमूल, स.सि.योग 11:45 तक	07	37	05	31
24	47	5	बुध	37	07	22	28	मघा	13	22	12	58	आयु.	27	53	कौ	10	17	सिंहे	12	19	2	गण्डमूल दिवा 12:58 तक	07	37	05	32
24	50	6	गुरु	37	07	22	28	पू.फा.	15	15	13	43	सौभा.	26	36	ग	10	32	कं.रा.7:49	13	20	3	भद्रा रात्रि 10:28 से	07	37	05	33
24	52	7	शुक्र	35	47	21	56	उ.फा.	15	52	13	58	शोभन	24	53	वि	10	16	कन्यायां	14	21	4	भद्रा दिवा 10:12 तक, अमृतयोग, शुक्र (मूल 1) धनु में दिवा 3:30	07	37	05	34
24	53	8	शनि	33	01	20	50	हस्त	15	09	13	41	अतिगंड	22	44	बा	09	27	तु.रा.1:20	15	22	5	बुध पू.षा. में दिवा 1:23	07	37	05	35
24	52	9	रवि	28	52	19	11	चित्रा	13	02	12	51	सुकर्मा	20	09	तै	08	05	तुलायां	16	23	6	भद्रा अ.रा. परि 6:05 से	07	38	05	35
24	55	10	सोम	23	25	17	0	स्वाती	09	40	11	30	धृति	17	08	वि	17	00	वृ.अ.रा.4:09	17	24	7	भद्रा सायं 5:00 तक	07	38	05	36
24	57	11	मंग	16	47	14	21	विशा अनु	05 59	02 25	09 31	39 24	शूल	13	45	बा	14	21	वृश्चिके	18	25	8	**सफला एकादशी व्रत**, गण्डमूल प्रातः 7:24 से, अमृतयोग	07	38	05	37
25	0	12	बुध	09	12	11	19	ज्ये	53	05	28	52	गंड वृद्धि	10 30	02 07	तै	11	19	ध.अ.रा.4:52	19	26	9	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल, सिद्धयोग 11:19 तक, श्री वोधनाचार्य जयन्ती	07	38	05	38
25	02	13	गुरु	0	57	08	01	मूला	46	22	26	11	ध्रुव	26	04	व	08	01	धने	20	27	10	भद्रा दिवा 8:01 से सायं 6:18 तक, गण्डमूल अ.रा.परि 2:11 तक,B	07	38	05	39
0	0	14	गुरु	52	25	28	36	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
25	06	30	शुक्र	43	59	25	13	पू.षा.	39	46	23	32	व्याघा	22	03	च	14	53	म.अ.रा.4:53	21	28	11	देवपितृकार्येऽमावस कुहूः अमावस	07	38	05	40

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (5 जनवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	05	09	08	01	08	06	06	00
20	18	13	12	13	00	15	29	29
45	41	46	48	22	43	48	20	20
49	37	56	52	27	40	03	20	20
61	822	47	94	04	75	04	03	03
09	04	14	09	55	09	17	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.षा. 3	हस्त 3	श्रवण 2	मूल 4	रोहि 2	मूल 1	स्वा 3	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:37

10 मं, 9 सू बु शु, 8, 7 श रा, 11, 12, 6 चं, 1 के, 3, 5, 2 बृ, 4

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (11 जनवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	08	09	08	01	08	06	06	00
26	15	18	22	12	08	16	29	29
52	24	30	19	55	14	12	01	01
46	16	38	43	37	42	33	15	15
61	898	47	96	03	75	03	03	03
09	10	20	37	49	11	47	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.षा. 1	पू.षा. 1	श्रवण 3	पू.षा. 3	रोहि 1	मूल 3	स्वा 3	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली अमावस प्रातः 7:38

10 मं, 9 सू चं बु शु, 8, 7 श रा, 11, 12, 6, 1 के, 3, 5, 2 बृ, 4

A स.सि. योग 10:07 तक, मंगल श्रवण में 10:00 B मासिक शिवरात्री व्रत, सूर्य उ.षा. में रात्रि 12:25

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पौष मास महत्त्वम्– पौष मास में भगवान सूर्य नारायण धनु राशि में रहते हैं, देवगुरू बृहस्पति की राशि में सूर्य हो तो भगवत्पूजन का विशेष महत्त्व है दक्षिण भारत के मन्दिरों में धनुर्मास का उत्सव मनाया जाता है। **सफला एकादशी व्रत–** पौष कृष्ण पक्ष एकादशी को उपवास पूर्वक भगवान का पूजन करना सभी कार्यों की सफलता करवाता है। **कहू अमावस–** इस अमावस को हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, चन्द्रभागा (अखनूर), तथापि जम्मू, गुप्त गंगा, देविका नदी उधमपुर में स्नानदानादि का विशेष महत्त्व है तान्त्रिक सिद्धियों की प्राप्ति के लिए

श्रीविक्रमी संवत् 2069 पौष शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2013 ई. 12 जनवरी से 27 जनवरी तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श पौष	वि पौष	अं जन	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
25	07	1	शनि	36	07	22	04	उ.षा.	33	40	21	05	हर्षण	18	12	किं	11	36	मकरे	22	29	12	पौष शुक्ल प्रतिपदा, लोहड़ी पर्व (पंजाब, हि.प्र., जम्मू कश्मीर, A	07	37	05	40
25	10	2	रवि	29	12	19	18	श्रव	28	30	19	01	वज्र	14	38	बा	08	37	मकरे	23	माघ	13	माघ संक्रान्ति, सूर्य मकर में अ.रा.परि 6:56, पुष्य अगले दिन, B	07	37	05	41
25	12	3	सोम	23	45	17	07	धनि	24	45	17	31	सिद्धि	11	31	ग	17	07	कुं.प्रा.6:11	24	2	14	पञ्चक प्रारंभ प्रात: 6:16, भद्रा अ.रा. परि 4:23 से	07	37	05	42
25	15	4	मंग	20	05	15	39	शत	22	47	16	44	व्यती/वरीया	08/30	56/59	वि	15	39	कुंभे	25	3	15	भद्रा दि. 3:39 तक, बुध मकर में रात्रि 10:45, शुक्र पू.षा.में प्रात: 6:57	07	37	05	43
25	17	5	बुध	18	32	15	02	पू.भा.	22	55	16	47	परिघ	29	44	बा	15	02	मीने 10:40	26	4	16		07	37	05	44
25	21	6	गुरु	19	10	15	17	उ.भा.	25	08	17	40	शिव	29	09	तै	15	17	मीने	27	5	17	गण्डमूल सायं 5:40 से, मंगल धनिष्ठा में 8:03	07	37	05	45
25	25	7	शुक्र	22	0	16	24	रेवती	29	27	19	23	सिद्धि	29	10	व	16	24	मे.रा.7:23	28	6	18	पंचक समाप्त रात्रि 7:23, भद्रा दिवा 4:24 से अ.रा.परि 5:19 तक,C	07	36	05	46
25	27	8	शनि	26	37	18	15	अश्वि	35	25	21	46	साध्य	29	41	ब	18	15	मेषे	29	7	19	गण्डमूल रात्रि 9:46 तक श्री दुर्गाष्टमी	07	36	05	47
25	31	9	रवि	32	38	20	39	भरणी	42	41	24	40	शुभ	30	32	कौ	20	39	मेषे	30	8	20		07	36	05	48
25	35	10	सोम	39	27	23	22	कृत्ति	50	32	27	48	शुक्ल	31	32	तै	09	59	वृ.प्रा.7:26	माघ	9	21	भारतीय माघारम्भ, बुध श्रवण में रात्रि 10:25	07	35	05	49
25	38	11	मंग	46	24	26	08	रोहि	58	29	30	58	ब्रह्म	0	0	व	12	45	वृषे	2	10	22	पुत्रदा एकादशी व्रत, सा.सूर्य कुंभ में प्रात: 5:51, भद्रा दि. 12:45 से D	07	35	05	50
25	42	12	बुध	52	52	28	43	मृग्	60	0	0	0	ब्रह्म	08	32	ब	15	27	मि.रा.8:28	3	11	23	सिद्धयोग, स.सि.योग, नेता सुभाष जयंती, सूर्य श्रवण में E	07	34	05	51
25	45	13	गुरु	58	30	30	58	मृग्	05	52	09	55	ऐन्द्र	09	21	कौ	17	54	मिथुने	4	12	24	प्रदोष व्रत	07	34	05	52
25	48	0	शुक्र	60	0	0	0	आर्द्रा	12	25	12	32	वैधृ	09	55	ग	19	56	मिथुने	5	13	25	मंगल कुंभ में सायं 6:30, शुक्र उ.षा. में रात्रि 10:20	07	34	05	53
25	51	14	शनि	03	05	08	47	पुन	17	58	14	44	विष्कुं	10	09	व	08	47	कर्के 8:13	6	14	26	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दि. 8:47 से रात्रि 9:27 तक, गणतन्त्र दिवस	07	33	05	53
25	55	15	रवि	06	30	10	08	पुष्य	22	20	16	28	प्रीति	10	02	व	10	08	कर्के	7	15	27	पूर्णिमाव्रत, गण्डमूल दिवा 4:28 से, रविपुष्य योग, माघ स्नानारम्भ	07	32	05	54

अष्टम्यां शनिवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (19 जनवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	00	09	09	01	08	06	06	00
05	05	24	05	12	18	16	28	28
01	08	49	26	30	16	40	35	35
46	47	41	20	29	13	18	49	49
61	722	48	100	02	75	03	03	03
04	04	24	39	14	13	04	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.षा. 3	अश्वि 2	धनि 1	उ.षा. 3	रोहि 1	पू.षा. 2	पू.फा. 2	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली अष्टमी प्रात: 7:36

11 | 9 शु | 10 सू. मं बु | 12 | 8 | 1 चं के | 7 श | 2 बृ | 4 | 6 | 3 | 5

पूर्णिमायां रविवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (27 जनवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	03	10	09	01	08	06	06	00
13	10	01	19	12	28	17	28	28
09	57	09	06	18	17	02	10	10
53	09	04	25	14	39	06	22	22
60	752	46	104	00	75	02	03	03
57	54	26	40	36	11	17	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
श्रवण 1	पुष्य 3	धनि 3	श्रवण 3	रोहि 1	उ.षा. 1	स्वा 4	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रात: 7:32

11 मं | 9 शु | 10 सू. बु | 12 | 8 | 1 के | 7 श | 2 बृ | 4 चं | 6 | 3 | 5

A दिल्ली), स्वामी विवेकानन्द जयन्ती B निरयन उत्तरायण प्रारंभ चन्द्रदर्शन (मु. 30) C गण्डमूल, अमृत योग, स.सि. योग D अ.रा.परि 2:08 तक, अमृतयोग E अ.रा. परि 02:42

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– पुत्रदा एकादशी व्रत– इस व्रत के करने से पुत्रहीन व्यक्ति को पुत्र एवं विद्या प्राप्ति के इच्छुक को अपूर्व विद्या लाभ होता है। इस लोक में सुख भोग कर वैकुण्ठ धाम को प्राप्त करता है। पौषी पूर्णिमा– माघ स्नान पौषी पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक एक मास चलने वाला पर्व है। माघ स्नान में पौषी पूर्णिमा का विशेष महत्त्व है, माघ स्नान के दिनों में प्रतिदिन प्रात: दैनिक नित्यकर्म, स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर किसी तीर्थ, नदी, बावड़ी, तालाब अथवा अपने घर में ही गंगादि तीर्थों का ध्यान करके स्नान करने का बहुत महत्त्व है, यह स्नान सूर्योदय काल से कुछ क्षण पूर्व हो तो अच्छा है। 12 जनवरी को लोहड़ी पर्व, जम्मू कश्मीर, पंजाब, दिल्ली में हर्षोल्लास से मनाया जाता है। 13 जनवरी को माघ संक्रान्ति है। इस संक्रान्ति के दिन कम्बल दान करने का विशेष महत्त्व है। आकाश लक्षणम्– शीत लहर का प्रकोप रहेगा, कहीं वर्फवारी तथा ओलावृष्टि हो सकती है।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 माघ कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2013 ई. 28 जनवरी से 10 फरवरी तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | **दै. सूर्योदयास्त**

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श माघ	वि माघ	अं जन	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
25	58	1	सोम	08	42	11	01	आश्ले	25	36	17	46	आयु.	09	34	कौ	11	01	सिं.सा.5:46	8	16	28	माघ कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल, शुक्र मकर में दिवा 2:10	07	32	05	55
26	02	2	मंग	09	50	11	27	मघा	27	52	18	40	सौभा.	08	45	ग	11	27	सिंहे	9	17	29	भद्रा रात्रि 11:29 से, गंडमूल सायं 6:40 तक, बुध धनि में दि. 3:30	07	31	05	56
26	06	3	बुध	10	0	11	31	पू.फा.	29	13	19	12	सोभन अतिगंड	07 30	39 15	वि	11	31	कं.रा.1:15	10	18	30	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 9:04, भुग्गा व्रत, A	07	31	05	57
26	11	4	गुरु	09	15	11	12	उ.फा.	29	43	19	23	सुकर्मा	28	36	बा	11	21	कन्यायां	11	19	31	अमृतयोग 11:12 तक	07	30	05	58
26	15	5	शुक्र	07	40	10	33	हस्त	29	22	19	14	धृति	26	41	तै	10	33	कन्यायां	12	20	फर.		07	29	05	59
26	18	6	शनि	05	10	09	33	चित्रा	28	13	18	46	शूल	24	29	व	09	33	तु.प्रा.7:02	13	21	2	भद्रा दिवा 9:22 से रात्रि 8:53 तक, मंगल शतभिषा में B	07	29	06	0
26	23	7	रवि	01	52	08	13	स्वाती	26	13	17	57	गंड	22	01	ब	08	13	तुलायां	14	22	3	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतभेद से), बुधोदय, पश्चिमे 10:35	07	28	06	01
0	0	8	रवि	57	44	30	33	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	अष्टमी तिथि क्षय	0	0	0	0
26	27	9	सोम	52	40	28	31	विशा	23	20	16	47	वृद्धि	19	17	तै	17	34	वृ.11:06	15	23	4	शुक्रास्त 10 फरवरी	07	27	06	02
26	31	10	मंग	46	54	26	12	अनु	19	40	15	19	ध्रुव	16	17	व	15	24	वृश्चिके	16	24	5	भद्रा दिवा 3:21 से अ.रा.परि 2:12 तक, गंडमूल दिवा 3:19 से, C	07	27	06	03
26	36	11	बुध	40	26	23	36	ज्ये	15	18	13	33	व्याघा	13	03	ब	12	56	धने दि.1:32	17	25	6	षट्तिला एकादशी व्रत, गण्डमूल, बुध शतभिषा में प्रातः 6:20	07	26	06	04
26	41	12	गुरु	33	36	20	51	मूला	10	22	11	34	हर्षण वज्र	09 30	39 09	कौ	10	14	धने	18	26	7	गण्डमूल दिवा 11:34 तक, तिल द्वादशी	07	25	06	05
26	46	13	शुक्र	26	36	18	02	पू.षा.	05	12	09	29	सिद्धि	26	39	ग	07	26	म.दि.2:58	19	27	8	प्रदोष व्रत, भद्रा सायं 6:02 से अ.रा.परि 4:40 तक, D	07	24	06	06
26	51	14	शनि	19	50	15	19	उ.षा श्रवण	00 55	07 27	07 29	26 33	व्यती	23	16	श	15	19	मकरे	20	28	9	सिद्धयोग	07	23	06	07
26	52	30	रवि	13	37	12	49	धनि	51	37	28	01	वरीय	20	08	ना	12	49	कुं.दि.4:44	21	29	10	देवपितृकार्येमौनी अमावस, पञ्चक प्रारंभ सायं 4:47, शुक्रास्त E	07	22	06	07

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (3 फरवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	06	10	10	01	09	06	06	00
20	12	06	01	12	07	17	27	27
16	48	41	23	18	03	16	48	48
13	50	02	33	15	50	02	07	07
60	834	47	104	00	75	01	03	03
51	03	24	58	49	10	35	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रवण	स्वा	शत	धनि	रोहि	उ.षा	स्वा	विशा	कृत्ति
4	2	1	3	1	4	4	3	1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:28

11 मं बु; 9; 12; 10 सू. शु; 8; 1 के; 7 चं श रा; 2 बृ; 4; 6; 3; 5

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (10 फरवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	09	10	10	01	09	06	06	00
27	23	12	13	12	15	17	27	27
21	17	12	14	28	49	24	25	25
52	41	47	32	13	55	57	41	41
60	854	47	93	02	75	00	03	03
44	02	21	26	13	18	52	11	11
शी	शी	व	मा	मा	मा	व	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
धनि	श्रव	शत	शत	रोहि	श्रवण	स्वा	विशा	कृत्ति
2	4	2	2	1	2	4	3	1

कुण्डली अमावस प्रातः 7:22

11 मं बु; 9; 12; 10 सू चं शु; 8; 1 के; 7 श रा; 2 बृ; 4; 6; 3; 5

A भद्रा दिवा 11:31 तक, अमृतयोग 11:31 तक, गुरू मार्गी सायं 5:05 B अ.रा.परि 4:55, बुध कुंभ में 10:27 C सूर्य धनिष्ठा में 5:56, शुक्र श्रवण में दिवा 1:45 D मासिक शिवरात्रि व्रत, मेरू त्रयोदशी (जैन) E पूर्वे सूर्योदयकाल कुंभमहापर्व (प्रयागराज)।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

श्रीगणेश तिला चतुर्थी (भुग्गा व्रत)– इस दिन पार्वतीमाता जी ने तिलों का उबटन शरीर से उतार कर कमल के फूल पर रखा तो वहाँ पर दिव्य बालक प्रकट हुआ। यह दिन भगवान श्रीगणेश जी का जन्मदिन कहलाता है। चन्द्रोदय व्यापिनी माघ कृष्ण चतुर्थी को यह व्रत किया जाता है। इस दिन व्रत रखने से यश लाभ, मनोरथ सिद्धि एवं भगवान गणेश जी प्रसन्न होकर मनुष्य का जीवन सफल कर देते हैं। षट्तिला एकादशी [illegible]

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श माघ	वि माघ	अं फर	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
26	56	1	सोम	08	25	10	44	शत	49	07	27	0	परिघ	17	22	व	10	44	कुंभे	22	30	11	माघ शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15)	07	22	06	8
27	01	2	मंग	04	37	09	12	पू.भा.	48	12	26	37	शिव	15	05	को	09	12	मी.रा.8:38	23	फा.	12	**फाल्गुन संक्रान्ति**, सूर्य कुंभ में रात्रि 7:58	07	21	06	9
27	06	3	बुध	02	35	08	22	उ.भा.	49	09	26	59	सिद्धि	13	22	ग	08	22	मीने	24	2	13	**गौरी तृतीया**, भद्रा रात्रि 8:20 से, गंडमूल अ.रा.परि 2:59 से **तिलचतुर्थी**	07	20	06	10
27	11	4	गुरु	02	30	08	19	रेवती	52	04	28	08	साध्य	12	16	वि	08	19	मे.अ.रा.4:08	25	3	14	**बसन्त पंचमी**, पंचक समाप्त अ.रा.परि 4:08, भद्रा दि. 8:19 तक A	07	19	06	11
27	16	5	शुक्र	04	27	09	05	अश्वि	56	52	30	02	शुभ	11	48	बा	09	05	मेषे	26	4	15	गंडमूल प्रात: 6:02 तक, स.सि.योग, शुक्र धनिष्ठा में अ.रा परि 5:20	07	18	06	12
27	21	6	शनि	08	17	10	36	भरणी	60	0	0	0	शुक्ल	11	54	तै	10	36	मेषे	27	5	16		07	17	06	13
27	26	7	रवि	13	43	12	45	भरणी	03	15	08	34	ब्रह्म	12	28	व	12	45	वृ.दि.3:17	28	6	17	भद्रा दिवा 12:45 से अ.रा.परि 2:02 तक, मर्यादा महोत्सव (जैन)	07	16	06	14
27	31	8	सोम	20	10	15	19	कृत्ति	10	42	11	32	ऐन्द्र	13	20	ब	15	19	वृषे	29	7	18	भीमाष्टमी, सा.सू. मीन में रात्रि 7:24, **बसन्त ऋतु प्रारंभ** B	07	15	06	15
27	33	9	मंग	26	56	18	0	रोहि	18	33	14	39	वैधृ	14	19	को	18	00	मि.अ.रा.4:11	30	8	19	सूर्य शतभिषा में 10:24, मंगल पू.भा. में अ.रा.परि 2:34	07	14	06	15
27	38	10	बुध	33	23	20	34	मृग	26	08	17	40	विष्कुं	15	14	तै	07	19	मिथुने	फा.	9	20	स.सि.योग, शक फाल्गुन प्रारंभ	07	13	06	16
27	43	11	गुरु	38	54	22	45	आर्द्रा	32	56	20	22	प्रीति	15	55	व	09	43	मिथुने	2	10	21	**जया एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 9:39 से रात्रि 10:45 तक, C	07	12	06	17
27	49	12	शुक्र	43	11	24	26	पुन	38	35	22	36	आयु.	16	14	ब	11	40	क.सा. 4:05	3	11	22	**भीष्म द्वादशी**, अमृतयोग, स.सि. योग	07	11	06	18
27	56	13	शनि	45	56	25	31	पुष्य	42	46	24	15	सौभा.	16	07	को	13	03	कर्के	4	12	23	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल रात्रि 12:15 से, बुध वक्री दिवा 3:10	07	09	06	19
28	01	14	रवि	47	11	26	0	आश्ले	45	31	25	20	शोभन	15	32	ग	13	50	सिं.रा.1:20	5	13	24	भद्रा अ.रा.परि 2:00 से, गण्डमूल	07	08	06	20
28	03	15	सोम	47	01	25	55	मघा	46	56	25	53	अतिगंड	14	31	वि	14	01	सिंहे	6	14	25	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत**, गुरू रविदास जयंती, D	07	07	06	20

अष्टम्यां सोमवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (18 फरवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	01	10	10	01	09	06	06	00
05	07	18	23	12	25	17	27	27
27	01	31	27	51	50	28	00	00
00	36	14	24	28	45	53	26	26
60	708	47	46	03	75	00	03	03
31	25	14	48	46	04	01	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
धनि 4	कृत्ति 4	शत 4	पू.भा. 2	रोहि 1	धनि 1	भ्वा 4	विशा 3	कृत्ति 1

कुण्डली अष्टमी प्रात: 7:15

12, 10 शु, 11 सू मं बु, 1 के, 9, चं 2 बृ, 8, 3, 5, श 7 रा, 4, 6

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (25 फरवरी, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	04	10	10	01	10	06	06	00
12	02	24	25	13	04	17	26	26
29	14	01	37	21	35	26	38	38
58	13	23	07	38	56	50	11	11
60	784	47	20	05	74	00	03	03
18	03	04	29	02	59	42	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
शत 2	मघा 1	पू.भा 2	पू.भा 2	रोहि 2	धनि 4	स्वा 4	विशा 2	भर 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रात: 7:07

12, 10, 11 बु सू मं शु, 1 के, 9, 2 बृ, 8, 3, 5 चं, श 7 रा, 4, 6

A बुध पू.भा. में रात्रि 11:00 B शनि वक्री रात्रि 11:30 C शुक्र कुंभ में दिवा 1:14 D भद्रा दिवा 1:57 तक, गण्डमूल अ.रा.परि 1:53 तक, माघस्नान समाप्त, जन्मदिनोत्सव श्रीगुरू रविदास जी।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– **वसन्त पञ्चमी–** यह वसन्तोत्सव का दिन है इस दिन रति और कामदेव की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। पति और पत्नी दोनों मिलकर रति और कामदेव की पूजा करने से दाम्पत्य जीवन सर्वतोभावेन सुख ऐश्वर्य पूर्ण हो जाता है। वसन्त पञ्चमी को व्यापारी लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं; बुद्धिजीवी लोग माता सरस्वती की पूजा करते हैं; सरस्वती स्तोत्र का नित्य प्रतिदिन पाठ करने से विद्यार्थियों को विशेष लाभ होता है। **भीष्माष्टमी–** श्रीभीष्म पितामह के शरीर त्याग की तिथि है अत: इस दिन भीष्म पितामह का मध्याह्न (दोपहर) में एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिए तर्पण भी करना चाहिए। **भीष्म द्वादशी–** इस दिन तिल मिश्रित जल से स्नान करने का विशेष महत्त्व है। श्री विष्णु भगवान की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। तिलों से बने लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए व्रती भी स्वयं तिलों का नैवेद्य ग्रहण करे। **आकाश लक्षणम्–** घने बादलों की चाल दृष्टिगोचर होगी परन्तु वर्षा कम होगी, सर्दी भी कम होने लगेगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 फाल्गुन कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2013 ई. 26 फरवरी से 11 मार्च तक सूर्योत्तरायणे, वसन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श फाल्गु	वि फाल्गु	अं फर.	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
28	08	1	मंग	45	44	25	23	पू.फा.	47	11	25	58	सुकर्मा	13	06	बा	13	42	सिंहे	7	15	26	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, बुधास्त पश्चिमे रात्रि 12:05, शुक्रशत मेंA	07	6	06	21
28	13	2	बुध	43	24	24	26	उ.फा.	46	29	25	40	धृति	11	20	तै	12	57	कन्यायां 7:55	8	16	27	सिद्धयोग	07	5	06	22
28	18	3	गुरु	40	21	23	12	हस्त	45	04	25	05	शूल	09	18	व	11	51	कन्यायां	9	17	28	भद्रा दिवा 11:49 से रात्रि 11:12 तक	07	4	06	23
28	24	4	शुक्र	36	45	21	44	चित्रा	43	08	24	17	गंड वृद्धि	07 28	00 38	ब	10	29	तुलाया 12:42	10	18	मार्च	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 10:02	07	3	06	24
28	28	5	शनि	32	41	20	05	स्वाती	40	44	23	18	ध्रुव	26	05	कौ	08	55	तुलाया	11	19	2	अमृतयोग, स.सि.योग	07	1	06	24
28	33	6	रवि	28	13	18	17	विशा	37	59	22	11	व्याघा	23	26	ग	07	12	वृ.सा.4:28	12	20	3	अमृतयोग, भद्रा सायं 6:17 से अ.रा.परि 5:20 तक	07	0	06	25
28	38	7	सोम	23	28	16	22	अनु	34	56	20	57	हर्षण	20	41	ब	16	22	वृश्चिके	13	21	4	गण्डमूल रात्रि 8:57 से, अमृतयोग, स.सि.योग, सूर्य पू.भा. में B	06	59	06	26
28	44	8	मंग	18	29	14	21	ज्ये	31	40	19	37	वज्र	17	51	कौ	14	21	ध.रा.7:37	14	22	5	गण्डमूल	06	58	06	27
28	51	9	बुध	13	18	12	15	मूला	28	13	18	13	सिद्धि	14	57	ग	12	15	धने	15	23	6	भद्रा रात्रि 11:10 से, गण्डमूल सायं 6:13 तक	06	56	06	28
28	53	10	गुरु	07	57	10	06	पू.षा.	24	41	16	47	व्यती	12	02	वि	10	06	म.रा.10:25	16	24	7	भद्रा दिवा 10:06 तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती	06	55	06	28
28	58	11	शुक्र	02	40	07	58	उ.षा.	21	13	15	23	वरीयान परिघ	09 30	08 18	बा	07	58	मकरे	17	25	8	विजया एकादशी व्रत, मंगल उ.भा. में अ.रा.परि 3:05	06	54	06	29
0	0	12	शुक्र	57	34	29	55	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षय	0	0	0	0
29	04	13	शनि	53	01	28	04	श्रव	18	04	14	06	शिव	27	37	ग	16	58	कुं.रा.1:31	18	26	9	शनि प्रदोष व्रत, पंचक प्रारंभ रात्रि 1:34, भद्रा अ.रा.परि 4:04 से,C	06	53	06	30
29	11	14	रवि	49	09	26	30	धनि	15	28	13	02	सिद्धि	25	10	वि	15	14	कुंभे	19	27	10	महाशिवरात्री व्रत, भद्रा दिवा 3:17 तक	06	51	06	31
29	13	30	सोम	46	16	25	20	शत	13	43	12	19	साध्य	23	03	च	13	51	कुंभे	20	28	11	देवपितृकार्ये सोमवती अमावस	06	50	06	31

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (5 मार्च, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	07	11	10	01	10	06	06	00
20	21	00	19	14	14	17	26	26
31	41	17	35	06	35	18	12	12
38	11	16	36	33	31	23	45	45
60	848	46	61	06	74	01	03	03
06	12	53	53	21	55	30	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
पू.भा. 1	ज्ये 2	पू.भा. 4	शत 4	रोहि 2	शत 3	स्वा 4	विशा 2	भरणी 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:58

12 मं, 11 सू बु शु, 10, 1 के, 9, 2 बृ, 8 चं, 3, 5, 7 श रा, 4, 6

अमावस्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (11 मार्च, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	10	11	10	01	10	06	06	00
26	16	04	14	14	22	17	25	25
31	07	58	02	47	04	07	07	07
48	10	05	30	01	49	54	54	54
59	813	46	39	07	74	02	03	03
55	45	42	58	16	50	05	11	11
शी	शी	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
पू.भा. 2	शत 3	उ.भा. 1	शत 3	रोहि 2	पू.भा. 1	स्वा 4	विशा 2	भरणी 4

कुण्डली अमावस प्रातः 6:50

12 मं, 11 सू चं बु शु, 10, 1 के, 9, 2 बृ, 8, 3, 5, 7 श रा, 4, 6

A रात्रि 9:15, अमृतयोग B सायं 4:50, मंगल मीन में रात्रि 8:35, वक्री बुध शतभिषा में रात्रि 7:58 C स.सि.योग, शुक्र पू.भा. में दिवा 1:30

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

विजया एकादशी व्रत– इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त कर अमोघ शक्तियों की प्राप्ति हो जाती है तथा भगवान के मूर्धन्य भक्तों में शामिल हो जाता है। **महाशिवरात्रि व्रत–** शैव सम्प्रदाय के लोग प्रत्येक कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि व्रत करते हैं अतः यह प्रमुख महाशिवरात्रि व्रत है। इस दिन व्रती लोग आधी रात में शिवजी का षोडशोपचार पूर्वक विशेष अभिषेक और पूजा करते हैं। रात्रि पूजा अर्चना के पश्चात् निद्रा के वशीभूत नहीं होना चाहिए। ॐ नमः शिवाय मन्त्र का जप करते हुए [illegible] फाल्गुनी अमावस– इस अमावस के दिन शिव, अग्नि एवं ब्रह्मा की [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2069 फाल्गुन शुक्ल पक्ष शका. 1934, सन् 2013 ई. 12 मार्च से 27 मार्च तक सूर्योत्तरायण, वसन्त-ग्रीष्म ऋतौ, दक्षिण-उत्तरगोलार्धे | **दै. सूर्योदयास्त**

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श फाल्गु	वि फाल्गु	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
29	18	1	मंग	44	46	24	43	पू.भा.	13	05	12	03	शुभ	21	21	किं	12	57	मी.प्रा.6:03	21	29	12	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग	06	49	06	32
29	24	2	बुध	44	51	24	43	उ.भा.	13	53	12	21	शुक्ल	20	07	बा	12	38	मीने	22	30	13	गण्डमूल दिवा 12:21 से, सिद्धयोग, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती,A	06	48	06	33
29	31	3	गुरु	46	34	25	23	रेवती	16	18	13	17	ब्रह्म	19	25	तै	12	58	मे.दि.1:16	23	चैत्र	14	चैत्र संक्रान्ति, सूर्य मीन में सायं 4:54, पञ्चक समाप्त दिवा 1:17,B	06	46	06	34
29	33	4	शुक्र	49	59	26	44	अश्वि	20	18	14	52	ऐन्द्र	19	14	व	13	59	मेषे	24	2	15	भद्रा दिवा 2:03 से अ.रा.परि 2:44 तक, गंडमूल दिवा 2:52 तक, C	06	45	06	34
29	39	5	शनि	54	54	28	40	भरणी	25	54	17	05	वैधृ	19	32	ब	15	38	वृ.रा.11:43	25	3	16	अमृतयोग, याज्ञवल्क्य जयन्ती	06	44	06	35
29	46	0	रवि	60	0	0	0	कृत्ति	32	43	19	47	विष्कुं	20	12	कौ	17	49	वृषे	26	4	17	अमृतयोग, बुधमार्गी रात्रि 1:30, सूर्य उ.भा. में रात्रि 1:12, D	06	42	06	36
29	51	6	सोम	0	55	07	03	रोहि	40	16	22	47	प्रीति	21	07	तै	07	03	वृषे	27	5	18	स.सि. योग	06	41	06	37
29	53	7	मंग	07	25	09	38	मृग	47	59	25	51	आयु.	22	05	व	09	38	मिथुने 12:19	28	6	19	भद्रा दिवा 9:38 से रात्रि 10:54 तक	06	40	06	37
30	0	8	बुध	13	51	12	11	आर्द्रा	55	14	28	43	सौभा.	22	56	ब	12	11	मिथुने	29	7	20	सा.सू. मेष में सायं 5:37, अमृतयोग 12:11 तक होलाष्टक शुरू,E	06	39	06	38
30	06	9	गुरु	19	33	14	26	पुन.	60	0	0	0	शोभन	23	29	कौ	14	26	क.रा.12:37	30	8	21	अमृतयोग दिवा 2:26 तक, स.सि. योग	06	37	06	39
30	08	10	शुक्र	23	55	16	10	पुन	01	27	07	11	अतिगंड	23	37	ग	16	10	कर्के	चैत्र	9	22	भद्रा अ.रा.परि 4:42 से, भारतीय चैत्रारंभ	06	36	06	39
30	15	11	शनि	26	42	17	15	पुष्य	06	10	09	03	सुकर्मा	23	15	वि	17	15	कर्के	2	10	23	आमलकी एकादशी व्रत, भद्रा सायं 5:15 तक, गंडमूल दिवा 9:03 से	06	35	06	40
30	21	12	रवि	27	46	17	39	आश्ले	09	17	10	16	धृति	22	19	बा	17	39	सिंहे 10:06	3	11	24	प्रदोष व्रत, गण्डमूल, गोविन्द द्वादशी	06	33	06	41
30	26	13	सोम	27	01	17	20	मघा	10	40	10	48	शूल	20	52	तै	17	20	सिंहे	4	12	25	गण्डमूल दिवा 10:48 तक	06	32	06	42
30	30	14	मंग	24	44	16	24	पू.फा.	10	28	10	42	गंड	18	55	व	16	24	क.सा.4:35	5	13	26	श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका दहन, भद्रा पूर्व, भद्रा दिवा 4:24 से F	06	31	06	42
30	36	15	बुध	21	10	14	57	उ.फा.	08	55	10	03	वृद्धि	16	34	व	14	57	कन्यायां	6	14	27	पूर्णिमा व्रत, होलाष्टक समाप्त, जन्मदिनोत्सव श्रीचैतन्यमहाप्रभु	06	29	06	43

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (20 मार्च, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	02	11	10	01	11	06	06	00
05	08	11	11	15	03	16	25	25
29	27	57	48	57	17	45	25	25
53	54	06	56	41	48	57	04	04
59	695	46	15	08	74	02	03	03
36	07	23	07	32	41	52	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 1	आर्द्रा 1	उ.भा. 3	शत 2	रोहि 2	पू.भा. 4	स्वा 4	विशा 2	भरणी 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:39

1 के; 2 बृ; 3 चं; 4; 5; 6; 7 श रा; 8; 9; 10; 11 बु; 12 सू मं शु

पूर्णिमायां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (27 मार्च, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	05	11	10	01	11	06	06	00
12	07	17	15	17	12	16	25	25
26	22	20	13	00	00	24	02	02
19	33	52	58	04	15	17	49	49
59	835	46	45	09	74	03	03	03
20	10	05	49	23	34	23	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 3	उ.फा. 4	रेवती 1	शत 3	रोहि 3	उ.भा. 3	स्वा 3	विशा 2	भर 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:29

1 के; 2 बृ; 3; 4; 5; 6 चं; 7 श रा; 8; 9; 10; 11 बु; 12 सू मं शु

A चन्द्रदर्शनम् (मु. 30), B गण्डमूल, स.सि. योग दिवा 1:17 तक C स.सि. योग दिवा 2:52 तक D शुक्र मीन में दिवा 1:58 E अन्नपूर्णाष्टमी, शुक्र उ.भा. में प्रातः 6:15 F अ.रा.परि 3:40 तक, मंगल रेवती में 8:12

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– **आमलकी एकादशी व्रत–** फाल्गुन शुक्ल एकादशी के दिन आमली के वृक्ष में लक्ष्मी नारायण का वास होता है अतः उस दिन लक्ष्मीनारायण जी की पूजा आमली वृक्ष के समीप करते हुए उपवास रात्रि जागरण करके दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन के बाद स्वयं व्रत पारण करें तो विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। **होलाष्टक–** फाल्गुन शुक्लाष्टमी से पूर्णिमा तक का काल होलाष्टक कहलाता है इस अवधि में शुभकृत्यों का निषेध है, धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को केवल प्रभुचिन्तन करना चाहिए। **होलिका दहन–** सामान्यतया संध्याकाल में होलिका दहन किया जाता है, भद्रा में होलिका दहन नहीं होता। भद्रा प्रतिपदा और दिन में होलिका दहन निषिद्ध है। भद्रा के पुच्छ में होलिका दाह शुभ होता है। **आकाश लक्षणम्–** मौसम अच्छा रहे, अर्थात् सामान्य सर्दी अभी रहेगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2069 चैत्र कृष्ण पक्ष शका. 1934, सन् 2013 ई. 28 मार्च से 10 अप्रैल तक सूर्योत्तरायणे, वसन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श चैत्र	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
30	41	1	गुरु	16	30	13	04	हस्त	06	15	08	58	ध्रुव	13	54	कौ	13	04	तु.रा.8:18	7	15	28	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, होला मेला पौंटा साहिब (हि.प्र.)	06	28	06	44
30	45	2	शुक्र	11	08	10	54	चित्रा स्वाती	02 58	50 57	07 30	38 00	व्याघा	11	0	ग	10	54	तुलायां	8	16	29	भद्रा रात्रि 9:44 से, अमृतयोग 10:54 तक, सन्त तुकाराम जयन्ती	06	27	06	44
30	51	3	शनि	05	22	08	34	विशा	54	47	28	19	हर्षण वज्र	07 28	57 50	वि	08	34	वृ.रा.10:44	9	17	30	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 10:01, भद्रा दि. 8:34 तक, A	06	25	06	45
0	0	4	शनि	59	19	30	08	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
30	56	5	रवि	53	19	27	43	अनु	50	39	26	39	सिद्धि	25	43	कौ	16	55	वृश्चिके	10	18	31	गण्डमूल अ.रा.परि 2:39 से, रंग पञ्चमी, सूर्य रेवती में 12:10	06	24	06	46
30	58	6	सोम	47	29	25	22	ज्ये	46	39	25	02	व्यती	22	39	ग	14	32	धने रा.1:02	11	19	अप्रै	भद्रा अ.रा.परि 1:22 से, गण्डमूल, बुध पू.भा. में दिवा 3:00	06	23	06	46
31	05	7	मंग	42	01	23	09	मूला	43	03	23	34	वरीय	19	42	वि	12	14	धने	12	20	2	भद्रा दिवा 12:15 तक, गण्डमूल रात्रि 11:34 तक	06	22	06	47
31	11	8	बुध	36	56	21	06	पू.षा.	39	49	22	15	परिघ	16	52	बा	10	06	म.अ.रा3:57	13	21	3	अमृत योग, माता शीतला पूजनम्	06	20	06	48
31	16	9	गुरु	32	21	19	15	उ.षा.	37	06	21	09	शिव	14	13	तै	08	09	मकरे	14	22	4	अमृतयोग	06	19	06	49
31	20	10	शुक्र	28	27	17	40	श्रव	35	02	20	18	सिद्धि	11	45	व	06	26	मकरे	15	23	5	भद्रा प्रात: 6:27 से सायं 5:40 तक	06	18	06	49
31	26	11	शनि	25	16	16	22	धनि	33	43	19	45	साध्य	9	30	बा	16	22	कुं.प्रा.8:00	16	24	6	**पापमोचिनी एकादशी व्रत**, पञ्चक प्रारंभ 8:01	06	16	06	50
31	31	12	रवि	22	53	15	24	शत	33	13	19	32	शुभ शुक्ल	07 29	32 51	तै	15	24	कुंभे	17	25	7	**प्रदोष व्रत**, वारूणी योग दिवा 3:24 से रात्रि 7:32 तक	06	15	06	51
31	33	13	सोम	21	30	14	50	पू.भा.	33	43	19	43	ब्रह्म	28	30	व	14	50	मी.दि.1:38	18	26	8	भद्रा दिवा 2:50 से अ.रा.परि 2:46 तक, **मासिक शिवरात्री व्रत**	06	14	06	51
31	40	14	मंग	21	16	14	43	उ.भा.	35	22	20	21	ऐन्द्र	27	32	श	14	43	मीने	19	27	9	गण्डमूल रात्रि 8:21 से, स.सि.योग, बुध मीन में अ.रा.परि 1:52,B	06	13	06	52
31	46	30	बुध	22	15	15	05	रेवती	38	14	21	28	वैधृ	26	58	ना	15	05	मे.रा.9:28	20	28	10	देवपितृकार्येऽमावस, पञ्चक समाप्त रात्रि 9:28, गण्डमूल,C	06	11	06	53

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (3 अप्रैल, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	08	11	10	01	11	06	06	00
19	16	22	21	18	20	15	24	24
21	49	42	40	08	41	59	40	40
05	49	37	42	12	53	11	34	34
59	844	45	66	10	74	03	03	03
08	00	48	21	10	28	50	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रेव 1	पू.षा. 2	रेव 2	पू.भा 1	रोहि 3	रेव 2	स्वा 3	विशा 2	भर 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:20

1 के, 11, 12 बु, 2 बृ, सू. मं. शु, 10, 3, 9 चं, 4, 6, 8, 5, 7 श रा

अमावस्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (10 अप्रैल, सन् 2012 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	11	11	11	01	11	06	06	00
26	21	28	00	19	29	15	24	24
14	32	02	11	21	22	31	18	18
23	58	20	54	30	46	14	19	19
58	759	45	81	10	74	04	03	03
55	08	29	12	52	21	11	11	11
शी	शी	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रेव 3	रेव 2	रेव 4	पू.भा. 4	रोहि 3	रेव 4	स्वा 3	विशा 2	भर 4

कुण्डली अमावस प्रातः 6:11

1 के, 11, 12 सू. चं मं बु शु, 2 बृ, 10, 3, 9, 4, 6, 8, 5, 7 श रा

A शुक्र रेवती में रात्रि 11:35 B मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा) C शुक्र (अश्विनी 1) मेष में सायं 5:30, विक्रमी संवत् 2069 समाप्त।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

वसन्तोत्सव– चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को प्रात: तैलाभ्यंग करना चाहिए। स्नानोपरान्त श्वेतवस्त्र धारण करके पूर्व मुख बैठकर सौभाग्यवती द्वारा तिलक करवाएं आरती उतरवाए। चन्दन मिश्रित जल से मिश्रित आम्र मञ्जरी को निगल ले तो सब कुछ अच्छा होता है। इस दिन प्रात: होलिका भूमि को भी प्रणाम करना चाहिए। **पापमोचिनी एकादशी व्रत–** इस एकादशी के दिन श्री लक्ष्मी नारायण की पूजा प्रमुख होती है, द्वादशी के दिन ब्राह्मण भोजन करवा कर व्रत पारणा करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से व्यक्ति समस्त पापों से विमुक्त होकर अन्त में परमधाम को जाता है। **माता शीतला पूजनम्–** जम्मू कश्मीर पंजाब इत्यादि प्रदेशों में तैल से पका हुआ बासी अन्न नैवेद्य के रूप में शीतला माता को अर्पित किया जाता है और स्वयं भी बासी रोटी खाई जाती है। शीतला का वाहन गर्दभ है अत: गधों को चारा खिलाने की परम्परा भी है। शीतला माता की पूजा अर्चना करने से परिवार में फोड़े-फुन्सी चेचक आदि का प्रकोप नहीं होता। **वारुणी योग–** त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र हो तो वारुणी शनिवार भी हो तो महावारुणी, शुभयोग भी हो तो महामहावारुणी या अतिवारुणी योग में गंगादि तीर्थों में स्नान

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग | श्री विक्रमी संवत् 2069 चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या तक | अप्रैल, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि अप्रैल	विक्रमी संवत् चैत्र	शक संवत् चैत्र	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	23	10	3	शुक्र	1	22	0	उ.भा.	12	33	ब्रह्म	26	37	मीने	नव चान्द्रसंवत्सर प्रारंभ सिद्धियोग, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, गंडमूल प्रारंभ 12:33 A	06	34	06	40
	24	11	4	शनि	2	24	15	रेवती	15	11	ऐन्द्र	27	22	मे.दि.3:11	चंद्रदर्शनम् (मु.30), पंचक समाप्त दिवा 3:11, गंडमूलविचार, शुक्र कृत्तिका में B	06	33	06	41
	25	12	5	रवि	3	26	47	अश्वि	18	07	वैधृ	28	18	मेषे	स.सि.योग, सौभाग्य शयन व्रत, **श्रीगौरी तृतीया**, शिवशक्ति पूजा, मत्स्य जयंती, C	06	32	06	42
	26	13	6	सोम	4	29	28	भरणी	21	15	विष्कुं	29	22	वृ.रा4:03	भद्रा दिवा 4:07 से अ.रा. परि 05:28 तक, रवियोग:	06	30	06	42
	27	14	7	मंगल	5	0	0	कृत्ति	24	25	प्रीति	30	24	वृषे	स.सि. योग, **श्रीलक्ष्मी पञ्चमी**, हयव्रत	06	29	06	43
	28	15	8	बुध	5	08	07	रोहि	27	24	आयु.	0	0	वृषे	स.सि. योग, स्कन्द षष्ठी व्रत, शुक्र वृष में दिवा 2:22, रवियोग:	06	28	06	44
	29	16	9	गुरू	6	10	31	मृग	29	59	आयु.	07	16	मि.दि.4:45	वक्री बुधोदय: पूर्वे 7:50 **विश्वावसुनामकसंवत्सर**	06	26	06	45
	30	17	10	शुक्र	7	12	27	आर्द्रा	0	0	सौभा.	07	47	मिथुने	भद्रा दिवा 12:27 से रात्रि 1:04 तक, अमृतयोग, अशोक कलिका प्राशनम्, D	06	25	06	45
	31	18	11	शनि	8	13	42	आर्द्रा	07	58	शोभ	07	49	क.रा.2:58	**श्रीदुर्गाष्टमी**, मेला बाहुफोर्ट, जम्मू, अशोकाष्टमी	06	24	06	46
	अप्रैल	19	12	रवि	9	14	08	पुन	09	12	अतिगंड सुकर्मा	07 30	15 01	कर्के	रविपुष्य योग 9:12 बाद, **श्रीरामनवमी**, **नवरात्र समाप्त**, श्रीतारा जयंती	06	22	06	47
	2	20	13	सोम	10	13	41	पुष्य	09	34	धृति	28	05	कर्के	भद्रा रात्रि 1:01 से, स.सि.योग 9:34 तक, गंडमूल प्रारंभ 9:34, रवियोग 9:34 तक	06	21	06	47
	3	21	14	मंगल	11	12	22	आश्ले	09	06	शूल	25	30	सिं.दि.9:06	**कामदा एकादशी व्रत**, भद्रा दि.12:22 तक, स.सि.योग 9:06 तक, रवियोग 9:06 तक	06	20	06	48
	4	22	15	बुध	12	10	17	मघा उ.फा.	07 29	51 56	गंड	22	21	सिंहे	**प्रदोष व्रत**, बुधमार्गी दिवा 3:40, सिद्धयोग, गंडमूल समाप्ति 7:51	06	19	06	49
	5	23	16	गुरू	13	07	33	उ.फा.	27	31	वृद्धि	18	44	क.दि.11:22	भद्रा अ.रा.परि 4:20 से, अमृतयोग 7:33 वाद, अनंग त्रयोदशी, महावीर जयंती, रवियोग	06	17	06	49
	0	0	0	गुरू	14	28	20	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	00	0
	6	24	17	शुक्र	15	24	48	हस्त	24	46	ध्रुव	14	47	कन्यायां	**श्रीसत्यनारायण**, **पूर्णिमा व्रत**, भद्रा दि. 2:34 तक, **श्रीहनुमज्जयन्ती**, E	06	16	06	50
वैशाख कृष्ण पक्ष	7	25	18	शनि	1	21	08	चित्रा	21	53	व्याघा	10	40	तु.दि.11:20	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा	06	15	06	51
	8	26	19	रवि	2	17	30	स्वाती	19	03	हर्षण वज्र	०६ २६	३० २५	तुलायां	भद्रा रात्रि 3:46 से, शुक्र रोहिणी में 8:12	06	14	06	52
	9	27	20	सोम	3	14	03	विशा	16	26	सिद्धि	22	34	वृ.दि.11:03	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय जम्मू, रात्रि 9:57, भद्रा दिवा 2:03 तक	06	12	06	52
	10	28	21	मंगल	4	10	58	अनु	14	10	व्यती	19	03	वृश्चिके	गंडमूल प्रारंभ दिवा 2:10, सती अनुसूया जयन्ती	06	11	06	53
	11	29	22	बुध	5	08	20	ज्येष्ठा	12	23	वरीय	15	56	ध.दि.12:23	गंडमूल विचार	06	10	06	54
	12	30	23	गुरू	6	06	16	मूला	11	11	परिघ	13	18	धने	भद्रा प्रात: 6:16 से सायं 5:32 तक, गंडमूल समाप्ति दि.11:11, रवियोग: 11:11 तक	06	09	06	54
	0	0	0	गुरू	7	28	48	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	13	वैशाख	24	शुक्र	8	27	59	पू.षा.	10	35	शिव	11	11	म.सा.4:31	**वैशाख संक्रांति**, सूर्य मेष में सायं 7:17, बुध उ.भा. में रात्रि 9:32, सेठ बिरादरी मेल, F	06	07	06	55
	14	2	25	शनि	9	27	47	उ.षा.	10	37	सिद्धि	09	33	मकरे	सिद्धयोग, मंगलमार्गी 9:21, डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	06	06	06	56
	15	3	26	रवि	10	28	11	श्रवण	11	15	साध्य	08	26	कुं.रा.11:46	पञ्चक प्रारंभ रात्रि 11:51, भद्रा दिवा 3:55 से अ.रा.परि 4:11 तक	06	05	06	57
	16	4	27	सोम	11	29	06	धनि	12	27	शुभ	07	45	कुंभे	**वरूथिनी एकादशी (स्मार्त) व्रत**, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती	06	04	06	57
	17	5	28	मंगल	12	0	0	शत	14	09	शुक्ल	07	29	कुंभे	**वरूथिनी एकादशी (वैष्णव) व्रत**	06	03	06	58
	18	6	29	बुध	12	06	30	पू.भा.	16	16	ब्रह्म	07	34	मी.दि. 9:42	**प्रदोष व्रत**	06	01	06	59
	19	7	30	गुरू	13	08	17	उ.भा.	18	45	ऐन्द्र	07	58	मीने	**मासिक शिवरात्री व्रत**, सायन सूर्य वृष में रात्रि 9:49, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, G	06	0	06	59
	20	8	31	शुक्र	14	10	25	रेवती	21	31	वैधृ	08	37	मे.रा. 9:31	पञ्चक समाप्त रात्रि 9:31 गण्डमूल विचार, स.सिं. योग	05	59	06	0
	21	9	वैशा	शनि	30	12	48	अश्वि	24	31	विष्कुं	09	28	मेषे	देव पितृ कार्येऽमावस, भा. वैशाखारंभ, गण्डमूल समाप्ति रात्रि 12:31	05	58	06	01

A घटस्थापनम् नवरात्र प्रारंभ B अ.रा.परि 05:30 C गण्डमूल समाप्त सायं 6:07 D सूर्य रेवती में अ.रा.परि 5:52, गंडमूलविचार अमृतयोग E बुध मीन में दिवा 2:53 वैशाख स्नानारम्भ: F बाबा कैलखदेव, ठठर G भद्रा प्रात: 8:17 से रात्रि 9:21 तक, गंडमूल प्र. सायं 6:45

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग — श्री विक्रमी संवत् 2069 वैशाख शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस्या तक — अप्रैल-मई, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि (अप्रैल)	विक्रमी संवत् (वैशाख)	शक संवत् (वैशाख)	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
वैशाख शुक्ल पक्ष	22	10	2	रवि	1	15	22	भरणी	27	38	प्रीति	10	27	मेषे	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15)	05	57	07	02
	23	11	3	सोम	2	18	0	कृत्ति	0	0	आयु.	11	32	वृ.दि.10:25	अमृतयोग, **शिवाजी जयन्ती, परशुराम जयन्ती**	05	56	07	02
	24	12	4	मंगल	3	20	36	कृत्ति	06	47	सौभा.	12	36	वृषे	सिद्धयोग, स.सि.योग 6:47 तक, **अक्षय तृतीया**, श्रीबद्रीकेदार यात्रा	05	55	07	03
	25	13	5	बुध	4	22	59	रोहि	09	49	शोभन	13	33	मि.रा.11:14	भद्रा 9:50 से रात्रि 10:59 तक, स.सि. योग 9:49 तक, शुक्र मृग् में रात्रि 11:20	05	54	07	04
	26	14	6	गुरू	5	25	01	मृग	12	35	अतिगं	14	16	मिथुने	सिद्ध योग, **आद्यशंकराचार्य जयन्ती**, बुध रेवती में सायं 6:26	05	53	07	05
	27	15	7	शुक्र	6	26	30	आर्द्रा	14	55	सुकर्मा	14	38	मिथुने	सिद्धयोग, श्रीरामानुजाजयन्ती, अगस्त्यास्त: 12:15, सूर्य भरणी में 11:00	05	51	07	05
	28	16	8	शनि	7	27	19	पुन	16	40	धृति	14	32	क.दि.10:17	भद्रा अ.रा.परि 3:19 से, श्रीगंगोत्पत्ति:	05	50	07	06
	29	17	9	रवि	8	27	22	पुष्य	17	41	शूल	13	52	कर्के	भद्रा दिवा 3:20 तक, गुरूवार्धक्यदोष शुरू, गंडमूल प्रारंभ सायं 5:41, रविपुष्य योग	05	49	07	07
	30	18	10	सोम	9	26	36	आश्ले	17	56	गंड	12	35	सिं.सा.5:56	गण्डमूल, **सीता नवमी**, बगलामुखी जयन्ती श्रीजानकी जयन्ती	05	48	07	07
	मई	19	11	मंगल	10	25	03	मघा	17	23	वृद्धि	10	40	सिंहे	गण्डमूल समाप्ति सायं 5:23	05	47	07	08
	2	20	12	बुध	11	22	47	पू.फा.	16	06	ध्रुव व्याघा	08 29	07 00	कं.रा.9:41	**मोहिनी एकादशी व्रत**, भद्रा दि.11:55 से रा.10:47 तक, गुरु अस्त पश्चिमे सूर्यास्तसमय	05	46	07	09
	3	21	13	गुरू	12	19	54	उ.फा.	14	10	हर्षण	25	25	कन्यायां	गुरू कृत्तिका में 7:49, **मधुसूदनद्वादशी**	05	46	07	10
	4	22	14	शुक्र	13	16	32	हस्त	11	43	वज्र	21	29	तु.रा.10:20	**प्रदोष व्रत, नृसिंह चतुर्दशी, कामदेव व्रत**	05	45	07	10
	5	23	15	शनि	14	12	53	चित्रा	08	55	सिद्धि	17	19	तुलायां	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा दिवा 12:53 से रात्रि 10:58 तक, सिद्धयोग, कूर्मोत्पत्ति:, A	05	44	07	11
	6	24	16	रवि	15	09	04	स्वाती विशा	05 26	57 58	व्यती	13	04	वृ.रा.9:41	**पूर्णिमाव्रत**, वैशाख स्नान पूत्ति:, जलकुंभदानम्, श्रीबुद्ध जयन्ती	05	43	07	12
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	0	0	0	रवि	1	29	18	विशा	26	58	0	0	0	0	प्रतिपदा क्षय	0	0	0	0
	7	25	17	सोम	2	25	42	अनु	24	10	वृद्धि ध्रुव	08 28	52 51	वृश्चिके	नारद जयन्ती, टैगोर जयन्ती, स.सि.योग अमृतयोग, गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 12:10	05	42	07	13
	8	26	18	मंगल	3	22	27	ज्ये	21	42	शिव	25	08	ध.रा.9:42	भद्रा दिवा 12:04 से रात्रि 10:27 तक, गण्डमूल, सिद्धयोग	05	41	07	13
	9	27	19	बुध	4	19	41	मूला	19	43	सिद्धि	21	51	धने	**श्रीगणेश चतुर्थी**, चन्द्रोदय जम्मू, रात्रि 10:41 गंडमूल समा. सायं 7:43	05	40	07	14
	10	28	20	गुरू	5	17	32	पू.षा.	18	21	साध्य	19	03	म.रा.12:06	सिद्धयोग, बुधास्त: पूर्वे रा. 9:43 सूर्य कृत्ति. में अ.रा.परि 5:15, मंगल पू.फा.में 8:52	05	39	07	15
	11	29	21	शुक्र	6	16	04	उ.षा.	17	40	शुभ	16	50	मकरे	भद्रा सायं 4:04 से अ.रा. परि 3:42 तक, सिद्धयोग	05	39	07	16
	12	30	22	शनि	7	15	21	श्रव	17	43	शुक्ल	15	13	मकरे	स.सि.योग	05	38	07	16
	13	31	23	रवि	8	15	22	धनि	18	30	ब्रह्म	14	12	कुं.प्रा.6:00	पञ्चक प्रारंभ प्रात: 6:00, बुध भरणी में दिवा 1:06	05	37	07	17
	14	ज्येष्ठ	24	सोम	9	16	07	शत	19	59	ऐन्द्र	13	44	कुंभे	**ज्येष्ठ संक्रान्ति**, सूर्य वृष में सायं 4:10, भद्रा अ.रा.परि 4:48 से	05	36	07	18
	15	2	25	मंगल	10	17	29	पू.भा.	22	02	वैधृ	13	46	मी.दि.3:29	भद्रा सायं 5:29 तक, शुक्र वक्री रात्रि 8:00	05	36	07	18
	16	3	26	बुध	11	19	21	उ.भा.	24	35	विष्कुं	14	13	मीने	**अपरा एकादशी, भद्रकाली एकादशी व्रत**, गंडमूल प्रारंभ रा.12:35, शनि कन्या में 6:30	05	35	07	19
	17	4	27	गुरू	12	21	36	रेवती	27	27	प्रीति	14	58	मे.रा.3:27	पंचक समाप्ति अ.रा.परि 3:27, स.सि.योग, गण्डमूल, गुरू वृष में 9:35	05	34	07	20
	18	5	28	शुक्र	13	24	06	अश्वि	0	0	आयु.	15	56	मेषे	प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 12:06 से, गण्डमूल, स.सि. योग	05	34	07	21
	19	6	29	शनि	14	26	42	अश्वि	06	31	[illegible]	17	0	मेषे	भद्रा दिवा 1:24 तक, गण्डमूल समाप्त 6:31, सिद्धयोग, मासिक शिवरात्रि	05	33	07	21

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग | श्री विक्रमी संवत् 2069 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से आषाढ़ कृष्ण पक्ष अमावस्या तक | मई-जून, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि मई	विक्रमी संवत् ज्येष्ठ	शक संवत् वैशाख	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	21	8	31	सोम	1	0	0	कृत्ति	12	46	अतिगं	19	07	वृषे	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, बुध वृष में रात्रि 9:48	05	32	07	23
	22	9	ज्येष्ठ	मंगल	1	07	43	रोहि	15	43	सुकर्मा	20	01	वृषे	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30) भारतीय ज्येष्ठारम्भ:	05	31	07	23
	23	10	2	बुध	2	09	56	मृग	18	24	धृति	20	42	मि.प्रा.5:06	स.सि. योग, रम्भा तृतीया व्रत, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थान)	05	31	07	24
	24	11	3	गुरू	3	11	49	आर्द्रा	20	44	शूल	21	05	मिथुने	भद्रा रात्रि 12:35 से, श्रीप्रताप जयन्ती, सूर्य रोहिणी में रात्रि 1:22	05	30	07	25
	25	12	4	शुक्र	4	13	15	पुन	22	38	गंड	21	07	क.सा.4:12	भद्रा दिवा 1:15 तक, स.सि.योग, **शहीदी दिवस श्रीगुरू अर्जुन देव सिंह जी**	05	30	07	25
	26	13	5	शनि	5	14	10	पुष्य	23	59	वृद्धि	20	43	कर्के	अमृतयोग, बुध रोहिणी में दिवा 1:04, गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 11:59	05	30	07	26
	27	14	6	रवि	6	14	29	आश्ले	24	44	ध्रुव	19	51	सिं.रा.12:42	अमृतयोग, गण्डमूल, अरण्यषष्ठी	05	29	07	27
	28	15	7	सोम	7	14	10	मघा	24	50	व्याघा	18	27	सिंहे	भद्रा दिवा 2:10 से रात्रि 1:40 तक, गण्डमूल समाप्त रात्रि 12:50, अमृतयोग	05	29	07	27
	29	16	8	मंगल	8	13	11	पू.फा.	24	16	हर्षण	16	32	सिंहे	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला क्षीर भवानी**, जम्मू कश्मीर, धूमावती जयंती	05	28	07	28
	30	17	9	बुध	9	11	32	उ.फा.	23	06	वज्र	14	05	कं.6:02	**गुरू उदय: पूर्वे सूर्योदय काल**	05	28	07	28
	31	18	10	गुरू	10	09	18	हस्त	21	21	सिद्धि	11	09	कन्यायां	**निर्जला एकादशी(स्मार्त) व्रत**, भद्रा सायं 7:55 से, सिद्धयोग, गंगा दशहरा A	05	28	07	29
	जून	19	11	शुक्र	11	06	32	चित्रा	19	9	व्यती वरीया	06 28	04 21	तु.8:18	**निर्जला एकादशी (वैष्णव) व्रत** भद्रा समाप्त प्रात: 6:32, बुध मृग में दिवा 3:13	05	27	07	30
	0	0	0	शुक्र	12	27	21	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी क्षय, **शुक्रास्त पश्चिमे 2 जून सूर्यास्तकाल**	0	0	0	0
	2	20	12	शनि	13	23	54	स्वाती	16	36	परिघ	24	11	तुलायां	**शनि प्रदोष व्रत**, स.सि.योग, वट सावित्री व्रतारम्भ:, शुक्रास्त पश्चिमे	05	27	07	30
	3	21	13	रवि	14	20	17	विशा	13	51	शिव	20	08	वृ.8:33	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा रात्रि 8:17 से, वक्री शुक्र रोहिणी में सायं 4:14	05	27	07	31
	4	22	14	सोम	15	16	41	अनु	11	03	सिद्धि	16	05	वृश्चिके	**पूर्णिमा व्रत**, भद्रा 6:28 तक, गंडमूल प्रारंभ 11:03, नृसिंह जयन्ती, B	05	27	07	31
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	5	23	15	मंगल	1	13	14	ज्ये	08	23	साध्य	12	11	धने 8:23	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल, अमृतयोग	05	27	07	32
	6	24	16	बुध	2	10	07	मूला पू.षा.	06 28	00 03	शुभ शुक्ल	08 29	31 15	धने	भद्रा रात्रि 8:47 से, सिद्धयोग, गण्डमूल समाप्त 6:00	05	26	07	32
	7	25	17	गुरू	3	07	28	उ.षा.	26	41	ब्रह्म	26	28	मकरे 9:39	श्रीगणेश चतुर्थी, चंद्रोदय, रात्रि 10:05 भद्रा प्रात: 7:28 तक, सूर्य मृग. में C	05	26	07	33
	0	0	0	गुरू	4	29	24	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय, **शुक्र उदय 11 जून सूर्योदय काल**	0	0	0	0
	8	26	18	शुक्र	5	28	04	श्रवण	26	02	ऐन्द्र	24	16	मकरे	स.सि. योग	05	26	07	33
	9	27	19	शनि	6	27	31	धनि	26	08	वैधृ	22	41	कुं.दि.2:00	पञ्चक प्रारंभ दिवा 2:05, भद्रा अ.र. परि 3:31 से	05	26	07	34
	10	28	20	रवि	7	27	46	शत	27	03	विष्कुं	21	45	कुंभे	भद्रा दिवा 3:38 तक	05	26	07	34
	11	29	21	सोम	8	28	47	पू.भा.	28	42	प्रीति	21	25	मी.रा.10:14	**शुक्रोदय पूर्वे सूर्योदय काल**	05	26	07	34
	12	30	22	मंगल	0	0	0	उ.भा.	0	0	आयु.	21	38	मीने	स.सि. योग	05	26	07	35
	13	31	23	बुध	9	06	27	उ.भा.	07	0	सौभा.	22	17	मीने	भद्रा सायं 7:32 से, गण्डमूल प्रारंभ 7:00	05	26	07	35
	14	आषा	24	गुरू	10	08	38	रेवती	09	46	शोभन	23	14	मेषे 9:46	**आषा. संक्रांति**, सूर्य मिथुन में रात्रि 10:45, पंचक समाप्त 9:46, गण्डमूल, D	05	26	07	36
	15	2	25	शुक्र	11	11	07	अश्वि	12	50	अतिगंड	24	20	मेषे	**योगिनी एकादशी व्रत**, सिद्धयोग, बुध पुन. में 7:46, गण्डमूल समाप्ति 12:50	05	26	07	36
	16	3	26	शनि	12	13	43	भरणी	15	59	सुकर्मा	25	27	वृ.रा.10:45	शनि प्रदोष व्रत	05	26	07	36
	17	4	27	रवि	13	16	15	कृत्ति	19	04	धृति	26	27	वृषे	भद्रा सायं 4:15 से अ.रा.परि 5:24 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत**	05	26	07	37
	18	5	28	सोम	14	18	33	रोहि	21	55	शूल	27	15	वृषे	स.सि. यांग	05	27	07	37
	19	6	29	मंगल	30	20	31	मृग	24	26	गंड	27	47	मि. 11:13	देवपितृकार्येऽमावस	05	27	07	37

A शुक्र वार्धक्य प्रारंभ B शुद्धमहादेव उधमपुर, वटसावित्री समाप्त, श्रीकबीर जयंती, [illegible] मिथुन में [illegible] D भद्रा [illegible]8:38 तक, सिद्धयोग स.सि.योग 9:46 तक, मंगल उ.फा. में रात्रि 11:45

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग — श्री विक्रमी संवत् 2069 आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या तक जून-जुलाई, सन् 2012 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि (जून)	विक्रमी संवत् (ज्येष्ठ)	शक संवत् (ज्येष्ठ)	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	20	7	30	बुध	1	22	06	आर्द्रा	26	34	वृद्धि	27	59	मिथुने	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, सायन सूर्य कर्क में अ.रा.परि 3:34, सा. दक्षिणायन प्रारंभ, वर्षा ऋतु प्रारंभ	05	27	07	37
	21	8	31	गुरू	2	23	14	पुन	28	16	ध्रुव	27	50	क.रा.9:52	स.सि.योग, चंद्रदर्शनम् (मु.45) रथयात्रा (जगन्नाथपुरी), सूर्य आर्द्रा में रात्रि 10:14, A	05	27	07	38
	22	9	आषा	शुक्र	3	23	54	पुष्य	0	0	व्याघा	27	20	कर्के	भारतीय आषाढ़ारम्भः, मंगल कन्या में रात्रि 11:59	05	27	07	38
	23	10	2	शनि	4	24	05	पुष्य	05	30	हर्षण	26	27	कर्के	भद्रा दिवा 11:59 से रात्रि 12:05 तक गण्डमूल प्रारंभ 5:30, सिद्धयोग, B	05	28	07	38
	24	11	3	रवि	5	23	48	आश्ले	06	16	वज्र	25	11	सिंहे 6:16	गण्डमूल	05	28	07	38
	25	12	4	सोम	6	23	01	मघा	06	34	सिद्धि	23	32	सिंहे	शनिमार्गी दिवा 1:30, **स्कन्दषष्ठी**, गण्डमूल समाप्ति 6:34	05	28	07	38
	26	13	5	मंगल	7	21	47	पू.फा.	06	24	व्यती	21	31	कं.12:17	भद्रा रात्रि 9:47 से, **विवस्वत् सप्तमी**	05	28	07	38
	27	14	6	बुध	8	20	06	उ.फा. हस्त	05 28	46 41	वरीय	19	07	कन्यायां	भद्रा प्रातः 8:56 तक, अमृतयोग, स.सि.योग, शुक्र मार्गी रात्रि 8:35	05	29	07	38
	28	15	7	गुरू	9	17	58	चित्रा	27	12	परिघ	16	23	तु.दि.4:00	अमृतयोग	05	29	07	38
	29	16	8	शुक्र	10	15	29	स्वाती	25	22	शिव	13	19	तुलायां	भद्रा अ.रा.परि 2:04 से गुरू रोहिणी में अ.रा.परि 4:05	05	30	07	38
	30	17	9	शनि	11	12	40	विशा	23	15	सिद्धि	10	0	वृ.सा.5:48	**देवशयनी एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 12:40 तक, चतुर्मास व्रत प्रारंभ, श्रीविष्णुशयनोत्सव	05	30	07	38
	जुलाई	18	10	रवि	12	09	38	अनु	20	58	साध्य शुभ	06 26	28 50	वृश्चिके	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 8:58	05	30	07	38
	2	19	11	सोम	13	06	29	ज्येष्ठा	18	38	शुक्ल	23	12	ध.सा.6:38	भद्रा अ.रा. परि 3:21 से, कोकिला व्रत, **शिव शयनोत्सव**, गण्डमूल	05	31	07	38
	2	0	0	सोम	14	27	21	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	3	20	12	मंगल	15	24	21	मूला	16	23	ब्रह्म	19	39	धने	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, पूर्णिमा व्रत, भद्रा दिवा 1:51 तक, गुरू पूर्णिमा, C	05	31	07	38
श्रावण कृष्ण पक्ष	4	21	13	बुध	1	21	39	पू.षा.	14	22	ऐन्द्र	16	19	म.सा.7:55	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा	05	32	07	38
	5	22	14	गुरू	2	19	23	उ.षा.	12	45	वैधृ	13	19	मकरे	सूर्य पुनर्वसु में रात्रि 9:50 अशून्य शयन व्रत	05	32	07	38
	6	23	15	शुक्र	3	17	42	श्रवण	11	39	विष्कुं	10	46	कुं.रा.11:20	**श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदयः**, रात्रि 9:17 भद्रा प्रातः 6:32 से सायं 5:42 तक, D	05	33	07	38
	7	24	16	शनि	4	16	42	धनि	11	14	प्रीति	08	45	कुंभे	सिद्धयोग	05	33	07	38
	8	25	17	रवि	5	16	29	शत	11	34	आयु.	07	21	कुंभे	नागपञ्चमी (मरूदेशे) बुध आश्ले में 10:33	05	34	07	37
	9	26	18	सोम	6	17	03	पू.भा.	12	40	सौभा.	06	34	मीने 6:19	भद्रा सायं 5:03 से	05	34	07	37
	10	27	19	मंगल	7	18	23	उ.भा.	14	32	शोभन	06	24	मीने	भद्रा प्रातः 5:43 तक, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 2:32, स.सि. योग दिवा 2:32 तक E	05	35	07	37
	11	28	20	बुध	8	20	20	रेवती	17	0	अतिगं	06	46	मे.सा.5:00	**पंचक समाप्त सायं** 5:00 गण्डमूल, अमृतयोग, मंगल हस्त में 6:40	05	35	07	37
	12	29	21	गुरू	9	22	42	अश्वि	19	55	सुकर्मा	07	33	मेषे	गण्डमूल समाप्ति सायं 7:55, अमृतयोग, स.सि. योग	05	35	07	37
	13	30	22	शुक्र	10	25	15	भरणी	23	02	धृति	08	35	मेषे	भद्रा दिवा 11:58 से अ.रा. परि 1:15 तक	05	36	07	36
	14	31	23	शनि	11	27	46	कृत्ति	26	07	शूल	09	41	वृषे 5:48	**कामदा एकादशी व्रत**	05	36	07	36
	15	32	24	रवि	0	0	0	रोहि	28	57	गंड	10	41	वृषे	बुध वक्री 7:45	05	37	07	36
	16	श्रावण	25	सोम	12	06	0	मृग्	0	0	वृद्धि	11	27	मि.सा.6:14	**श्रावण संक्रांति**, सूर्य कर्क में 9:33, **सोम प्रदोष व्रत**, स.सि.योग, निरयन दक्षिणायन शुरू, F	05	38	07	35
	17	2	26	मंगल	13	07	49	मृग्	07	23	ध्रुव	11	53	मिथुने	भद्रा 7:49 प्रातः से सायं 8:28 तक, सिद्ध योग 7:49 तक, **मासिक शिवरात्री**	05	39	07	34
	18	3	27	बुध	14	09	07	आर्द्रा	9	20	व्याघा	11	54	क.रा.4:27	पितृकार्येऽमावस	05	39	07	34
	19	4	28	गुरू	30	09	53	पुन	10	45	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	हरियाली अमावस, स.सि.योग 10:45 तक, सूर्य पुष्य में रात्रि 9:20	05	40	07	33

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग — श्री विक्रमी संवत् 2069 श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से प्र.भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या तक — जुलाई-अगस्त, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि जुलाई	विक्रमी संवत् श्रावण	शक संवत् आषाढ़	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
श्रावण शुक्ल पक्ष	20	5	29	शुक्र	1	10	08	पुष्य	11	40	वज्र	10	41	कर्के	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा, सायन सूर्य सिंह में दिवा 1:03, गंडमूल प्रारंभ 11:40 A	05	41	07	33
	21	6	30	शनि	2	09	53	आश्ले	12	06	सिद्धि	09	29	सिंहे 12:06	चन्द्रदर्शनम् (मु. 30) वक्री बुध पुष्य में अ.रा. परि 4:00, गंडमूल	05	41	07	32
	22	7	31	रवि	3	09	13	मघा	12	07	व्यती	07	57	सिंहे	भद्रा रात्रि 8:42 से, **मधुस्रवा तृतीया**, गण्डमूल दिवा 12:07, वरदचतुर्थी, B	05	42	07	32
	23	8	श्रावण	सोम	4	08	12	पू.फा.	11	48	वरीया परिघ	06 28	08 03	क.सा.5:40	भद्रा प्रात: 8:12 तक, भारतीय श्रावणरंभ, शुभजन्मदिनोत्सव, सन्त श्री प्रभुदास जी (हरिद्वार)	05	43	07	31
	24	9	2	मंगल	5	06	52	उ.फा.	11	11	शिव	25	45	कन्यायां	कल्की जयन्ती, **पुण्यतिथि बाबा दूधाधारी जी (हरिद्वार)**, नागपञ्चमी	05	43	07	31
	0	0	0	मंगल	6	29	16	0	0	0	0	0	0	0	षष्ठी तिथि क्षय	0	0	0	0
	25	10	3	बुध	7	27	25	हस्त	10	18	सिद्धि	23	15	तु.रा. 9:45	भद्रा अ.रा.परि 3:25 से, तुलसीदास जयन्ती सिद्धयोग, स.सि.योग 10:18 तक, C	05	44	07	30
	26	11	4	गुरू	8	25	23	चित्रा	09	11	साध्य	20	34	तुलायां	भद्रा दि. 2:24 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, मेला चिंतपूर्णी चामुण्डा देवी (काँगड़ा)	05	45	07	29
	27	12	5	शुक्र	9	23	08	स्वाती	07	52	शुभ	17	44	वृ.रा.12:45		05	45	07	29
	28	13	6	शनि	10	20	45	विशा अनु	06 28	22 44	शुक्ल	14	46	वृश्चिके	गण्डमूल प्रारंभ अ.रा. परि 4:44, अमृतयोग	05	46	07	28
	29	14	7	रवि	11	18	16	ज्ये	27	01	ब्रह्म	11	42	ध.अ.रा.3:01	**पवित्रा एकादशी व्रत**, भद्रा प्रात: 7:31 से सायं 6:16 तक, गंडमूल, अमृतयोग	05	47	07	27
	30	15	8	सोम	12	15	45	मूला	25	18	ऐन्द्र वैधृ	08 29	35 30	धने	**सोम प्रदोष व्रत**, गण्डमूल समाप्त रात्रि 1:18, अमृतयोग	05	47	07	26
	31	16	9	मंगल	13	13	16	पू.षा.	23	41	विष्कुं	26	30	धने	सिद्धयोग दिवा 1:16 तक, शुक्र मिथुन में रात्रि 7:45	05	48	07	26
	अगस्त	17	10	बुध	14	10	58	उ.षा.	22	18	प्रीति	23	42	म.प्रा.5:19	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा दिवा 10:58 से रात्रि 9:57 तक	05	49	07	25
	2	18	11	गुरू	15	08	57	श्रव	21	16	आयु.	21	12	मकरे	**पूर्णिमाव्रत**, सिद्धयोग प्रात: 8:57 तक, **रक्षाबन्धन**(पूरा दिन शुद्ध)श्रावणी उपाकर्म, D	05	49	07	24
प्रथम भाद्रपद कृष्ण पक्ष	3	19	12	शुक्र	1	07	21	धनि	20	43	सौभा.	19	06	कुंभे 8:55	प्रथम भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, मंगल चित्रा में 11:45, पंचक प्रारंभ 8:59, सिद्ध योग 7:21 तक	05	50	07	23
	4	20	13	शनि	2	06	17	शत	20	46	शोभन	17	28	कुंभे	भद्रा सायं 6:05 से, शनि तुला में 8:36	05	51	07	22
	5	21	14	रवि	3	05	53	पू.भा.	21	30	अति	16	24	मी.दि.3:15	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 8:55, भद्रा प्रात: 5:53 तक, बुधोदय: पूर्वे रात्रि 2:45	05	51	07	21
	6	22	15	सोम	4	06	12	उ.भा.	22	57	सुकर्मा	15	55	मीने	गण्डमूल प्रारंभ रात्रि 10:57	05	52	07	20
	7	23	16	मंगल	5	07	15	रेवती	25	05	धृति	15	58	मे.रा.1:05	पञ्चक समाप्त रात्रि 1:05 गण्डमूल, **चन्दनषष्ठी व्रत**	05	53	07	19
	8	24	17	बुध	6	08	57	अश्वि	27	45	शूल	16	31	मेषे	भद्रा प्रात: 8:57 से रात्रि 10:03 तक, गण्डमूल समाप्त अ.रा. परि 3:45, E	05	53	07	18
	9	25	18	गुरू	7	11	10	भरणी	0	0	गंड	17	24	मेषे	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी(स्मार्त)**, दूर्वाष्टमीव्रत, गोकुलाष्टमी, चंद्रोदयव्यापिनी अष्टमी में	05	54	07	18
	10	26	19	शुक्र	8	13	41	भरणी	06	46	वृद्धि	18	27	वृ.दि.1:32	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)**, चन्द्रोदय रात्रि 11:53	05	55	07	17
	11	27	20	शनि	9	16	13	कृत्ति	09	52	ध्रुव	19	29	वृषे	भद्रा अ.रा.परि 5:21 से, **सिद्धयोग, गुग्गा नवमी, मेला रैणा बिरादरी** F	05	55	07	16
	12	28	21	रवि	10	18	30	रोहि	12	48	व्याघा	20	19	मि.रा.2:08	भद्रा सायं 6:30 तक	05	56	07	15
	13	29	22	सोम	11	20	20	मृग	15	20	हर्षण	20	47	मिथुने	अजा एकादशी व्रत, स.सि.योग, गोवत्सद्वादशी (डुग्गर प्रदेशे), पर्युषण पर्व प्रारंभ (जैन)	05	57	07	13
	14	30	23	मंगल	12	21	35	आर्द्रा	17	19	वज्र	20	47	मिथुने	वत्सद्वादशी, मंगल तुला में 9:45	05	57	07	12
	15	31	24	बुध	13	22	09	पुन	18	39	सिद्धि	20	17	क.12:22	प्रदोषव्रत, भद्रा रात्रि 10:09 से, अमृतयोग, मासिक शिवरात्री व्रत, भारतीय स्वतंत्रता दिवस	05	58	07	11
	16	भाद	25	गुरू	14	22	04	पुष्य	19	20	व्यती	19	15	कर्के	भाद्रपद संक्रांति, सूर्य सिंह में सायं 5:38, भद्रा 10:06 तक, गंडमूल प्रारंभ सायं 7:20, गुरू पुष्य योग	05	59	07	10
	17	2	26	शुक्र	30	21	24	आश्ले	19	26	वरीय	17	44	सिं.सा.7:26	कुशाग्रहणी पिठोरी अमावस, देवपितृकार्येऽमावस, गंडमूल	05	59	07	9

A सिद्धयोग 10:08 तक B दूर्वागणपति व्रत, शुक्र मृग में रात्रि 11:55 C शीतला सप्तमी D दर्शन बाबा अमरनाथ गुफा, सूर्य आश्लेषा में रात्रि 8:15 E बुध मार्गी दिवा 11:10 शीतला व्रत, शुक्र आर्द्रा में दिवा 2:02 F सूञ्झवां कुलदेव स्थान।

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग

श्री विक्रमी संवत् 2069 प्र. भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से द्वि. भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या तक अगस्त-सितंबर, सन् 2012 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि अगस्त	विक्रमी संवत् भद्रपद	शक संवत् श्रावण	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
प्रथम भाद्रपद शुक्ल पक्ष	18	3	27	शनि	1	20	13	मघा	19	02	परिघ	15	48	सिंहे	प्रथम भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा, भाद्रपद अधिक मास प्रारम्भ गंडमूल समाप्ति रात्रि 7:02	06	0	07	08
	19	4	28	रवि	2	18	40	पू.फा.	18	14	शिव	13	33	कं.रा.12:00	चन्द्रदर्शनम् (मु. 45)	06	01	07	07
	20	5	29	सोम	3	16	50	उ.फा.	17	10	सिद्धि	11	03	कन्यायां	भद्रा अ.रा. परि 3:49 से	06	01	07	06
	21	6	30	मंगल	4	14	49	हस्त	15	55	साध्य शुभ	08 29	23 37	तु.अ.रा.3:15	भद्रा दिवा 2:49 तक, बुध आश्ले में 6:10	06	02	07	05
	22	7	31	बुध	5	12	43	चित्रा	14	35	शुक्ल	26	48	तुलायां	सायन सूर्य कन्या में रात्रि 10:28 **शरद्ऋतु प्रारंभ** शुक्र पुन में दि. 1:07	06	03	07	03
	23	8	भाद्र	गुरू	6	10	34	स्वाती	13	13	ब्रह्म	24	0	तुलायां	भारतीय भाद्रपद मासारम्भ	06	03	07	02
	24	9	2	शुक्र	7	08	26	विशा	11	51	ऐन्द्र	21	12	वृ.प्रा.6:11	भद्रा 8:26 से रात्रि 7:23 तक, अमृतयोग 8:26 तक, मंगल स्वाती में रात्रि 11:16	06	04	07	01
	25	10	3	शनि	8	06	20	अनु	10	32	वैधृ	18	27	वृश्चिके	गण्डमूल प्रारम्भ 10:32	06	05	07	0
	0	0	0	शनि	9	28	18	0	0	0	0	0	0	0	नवमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	26	11	4	रवि	10	26	19	ज्ये	09	16	विष्कुं	15	45	ध.प्रा.9:16	गण्डमूल	06	05	06	59
	27	12	5	सोम	11	24	28	मूला	08	05	प्रीति	13	07	धने	**पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 1:23 से रात्रि 12:28 तक, सूर्य पू.फा. में दिवा 1:55	06	06	06	57
	28	13	6	मंगल	12	22	46	पू.षा.	07	02	आयु.	10	36	मकरे 12:47		06	07	06	56
	29	14	7	बुध	13	21	19	उ.षा. श्रवण	06 29	09 32	सौभा शोभन	08 30	14 06	मकरे	प्रदोष व्रत, अमृतयोग, बुध सिंह में प्रातः 5:10	06	07	06	55
	30	15	8	गुरू	14	20	11	धनि	29	16	अतिगं	28	14	कुं.सा.5:20	**पंचक प्रारंभ सायं** 5:22, भद्रा रात्रि 8:11 से, बुधास्त पूर्वे 10:28, A	06	08	06	54
	31	16	9	शुक्र	15	19	27	शत	29	27	सुकर्मा	26	44	कुंभे	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, भद्रा 7:49 तक	06	09	06	52
द्वितीय भाद्रपद कृष्ण पक्ष सितंबर	17	10		शनि	1	19	15	पू.भा.	0	0	धृति	25	40	मी.रा.11:56	द्वितीय भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, शुक्र कर्क में 6:15	06	09	06	51
2	18	11		रवि	2	19	38	उ.भा.	0	0	शूल	25	04	मीने	स.सि. योग	06	10	06	50
3	19	12		सोम	3	20	38	उ.भा.	07	29	गंड	24	57	मीने	भद्रा 8:08 से रात्रि 8:38 तक, गण्डमूल प्रारंभ 7:29	06	11	06	49
4	20	13		मंगल	4	22	16	रेवती	09	24	वृद्धि	25	18	मे.9:24	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 8:33, पंचक समाप्त 9:24, गंडमूल बुध पू.फा. में B	06	11	06	47
5	21	14		बुध	5	24	24	अश्वि	11	52	ध्रुव	26	01	मेषे	गण्डमूल समाप्त 11:52	06	12	06	46
6	22	15		गुरू	6	26	53	भरणी	14	46	व्याघा	27	0	वृ.रा.9:30	भद्रा अ.रा. परि 2:53 से, अगस्त्योदय:	06	12	06	45
7	23	16		शुक्र	7	29	29	कृत्ति	17	52	हर्षण	28	04	वृषे	भद्रा दिवा 4:11 तक, अमृत योग	06	13	06	43
8	24	17		शनि	0	0	0	रोहि	20	56	वज्र	29	01	वृषे	स.सि. योग	06	14	06	42
9	25	18		रवि	8	07	56	मृग	23	43	सिद्धि	29	41	मिथुने10:22		06	14	06	41
10	26	19		सोम	9	09	58	आर्द्रा	25	58	व्यती	29	54	मिथुने	भद्रा रात्रि 10:40 से	06	15	06	39
11	27	20		मंगल	10	11	23	पुन	27	33	वरीय	29	33	क.रा.9:13	भद्रा दिवा 11:23 तक, बुध उ.फा. में अ.रा. परि 2:12	06	16	06	38
12	28	21		बुध	11	12	04	पुष्य	28	22	परिघ	28	37	कर्के	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**, गण्डमूल प्रारम्भ अ.रा. परि 4:22	06	16	06	37
13	29	22		गुरू	12	11	59	आश्ले	28	27	शिव	27	04	सिं.रा.4:27	**प्रदोषव्रत**, गण्डमूल, सूर्य उ.फा. में 7:45, बुध कन्या में रात्रि 9:30	06	17	06	35
14	30	23		शुक्र	13	11	09	मघा	27	52	सिद्धि	24	58	सिंहे	भद्रा दिवा 11:09 से रात्रि 10:24 तक, गण्डमूल समाप्त अ.रा. परि 3:52, C	06	18	06	34
15	31	24		शनि	14	09	40	पू.फा.	26	43	साध्य	22	24	सिंहे	सिद्धयोग 9:40 तक, पितृकार्येऽमावस	06	18	06	33
16	अश्विन	25		रवि	30	07	40	उ.फा.	25	10	शुभ	19	29	कन्या. 8:22	आश्विन संक्रांति, सूर्य कन्या में सायं 5:52, देवकार्येऽमावस, अधिकमास समाप्त. D	06	19	06	31

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि सितंबर	विक्रमी संवत् अश्वि	शक संवत् भाद्र	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चन्द्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पचक, भद्रा, ग्रहो का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष	0	0	0	रवि	1	29	17	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा क्षय	0	0	0	0
	17	2	26	सोम	2	26	40	हस्त	23	21	शुक्ल	16	19	कन्यायां	अमृतयोग, चन्द्रदर्शनम् (मु. 30)	06	19	06	30
	18	3	27	मंगल	3	23	57	चित्रा	21	25	ब्रह्म	13	0	तु. 10:33	हरितालिका तीज व्रत, सिद्धयोग, श्री वराह जयन्ती	06	20	06	29
	19	4	28	बुध	4	21	15	स्वाती	19	29	ऐन्द्र	09	40	तुलायां	सिद्धि विनायक व्रत, भद्रा 10:36 से रात्रि 9:15 तक, चन्द्रदर्शन विषेध, A	06	21	06	27
	20	5	29	गुरू	5	18	40	विशा	17	40	वैधृ विष्कं	06 27	23 13	वृ. 12:06	ऋषि पञ्चमी (नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेशे) सिद्ध योग	06	21	06	26
	21	6	30	शुक्र	6	16	17	अनु	16	02	प्रीति	24	14	वृश्चिके	सूर्यषष्ठी, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 4:02, सिद्धयोग, स.सि. योग	06	22	06	24
	22	7	31	शनि	7	14	08	ज्ये	14	38	आयु.	21	27	ध.दि.2:38	सायन सूर्य तुला में रात्रि 8:52, भद्रा दि. 2:08 से रात्रि 1:12 तक, गंडमूल	06	23	06	23
	23	8	अश्वि	रवि	8	12	16	मूला	13	31	सौभा.	18	54	धने	गण्डमूल समाप्त दिवा 1:31, स.सि.योग, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, राधाष्टमी, B	06	23	06	22
	24	9	2	सोम	9	10	42	पू.षा.	12	42	शोभन	16	36	म.सा.6:32	अदु:ख नवमी व्रत, श्री चन्द्र (उदासीन सम्प्रदाय)	06	24	06	20
	25	10	3	मंगल	10	09	26	उ.षा.	12	11	अतिगं	14	33	मकरे	भद्रा रात्रि 8:58 से	06	25	06	19
	26	11	4	बुध	11	08	31	श्रव	12	0	सुकर्मा	12	46	कुं.रा.12:03	पद्मा एकादशी व्रत, वामन द्वादशी, श्रीवामन जयंती, पंचक प्रारंभ रात्रि 12:05, C	06	25	06	18
	27	12	5	गुरू	12	07	57	धनि	12	10	धृति	11	16	कुंभे	प्रदोष व्रत, बुध चित्रा में 12:00	06	26	06	16
	28	13	6	शुक्र	13	07	47	शत	12	44	शूल	10	06	कुंभे	अनन्त चतुर्दशी, मंगल वृश्चिक में रात्रि 8:41, शुक्र सिंह में 8:45	06	27	06	15
	29	14	7	शनि	14	08	03	पू.भा.	13	44	गंड	09	16	मीने 07:27	श्रीसत्यनारायण व्रत, श्राद्ध प्रारंभ, श्राद्ध पूर्णिमा प्रात: 8:03 बाद, भद्रा प्रात: 8:03 D	06	27	06	14
	30	15	8	रवि	15	08	48	उ.भा.	15	13	वृद्धि	08	48	मीने	पूर्णिमा व्रत, गण्डमूल प्रारंभ दिवा 3:13, स.सि.योग, श्राद्ध प्रतिपदा 8:48 बाद	06	28	06	12
आश्विन कृष्ण पक्ष	अक्तूबर	16	9	सोम	1	10	03	रेवती	17	10	ध्रुव	08	43	मे.सा.5:10	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा, द्वितीया श्राद्ध 10:03 बाद, पंचक समाप्त सायं 5:10, E	06	29	06	11
	2	17	10	मंगल	2	11	48	अश्वि	19	35	व्याघा	09	01	मेषे	भद्रा रात्रि 12:53 से, गंडमूल रात्रि 7:35 तक, स.सि.योग, श्राद्ध तृतीया 11:48 बाद, F	06	29	06	10
	3	18	11	बुध	3	13	59	भरणी	22	24	हर्षण	9	39	मेषे	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय, रात्रि 7:47 भद्रा दिवा 1:59 तक, अृतयोग, श्राद्ध तृतीया G	06	30	06	08
	4	19	12	गुरू	4	16	30	कृत्ति	25	29	वज्र	10	33	वृ.प्रा.5:09	अमृतयोग, वक्र गुरू रात्रि 6:48, श्राद्ध चतुर्थी	06	31	06	07
	5	20	13	शुक्र	5	19	10	रोहि	28	39	सिद्धि	11	36	वृषे	पञ्चमी श्राद्ध, शनि अस्त पश्चिमे दिवा 1:45, बुध स्वाती में अ.रा. परि 3:29	06	31	06	06
	6	21	14	शनि	6	21	47	मृग	0	0	व्यती	12	39	मि.सा.6:10	भद्रा रात्रि 9:47 से, षष्ठी श्राद्ध	06	32	06	05
	7	22	15	रवि	7	24	05	मृग	7	40	वरीय	13	32	मिथुने	भद्रा दिवा 10:56 तक, सप्तमी श्राद्ध, बुध उदय पश्चिमे अ.रा.परि 4:50	06	33	06	03
	8	23	16	सोम	8	25	51	आर्द्रा	10	18	परिघ	14	04	मिथुने	अष्टमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी, जीवित्पुत्रिका व्रत	06	34	06	02
	9	24	17	मंगल	9	26	54	पुन	12	21	शिव	14	07	क.प्रा.5:54	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्, शुक्र पू.फा. में सायं 7:45	06	34	06	01
	10	25	18	बुध	10	27	09	पुष्य	13	40	सिद्धि	13	35	कर्के	भद्रा दिवा 03:01 से अ.रा.परि 3:09 तक, गंडमूल दिवा 1:40 से, दशमी श्राद्ध, H	06	35	06	0
	11	26	19	गुरू	11	26	34	आश्ले	14	11	साध्य	12	23	सिं.दि.2:11	इन्दा एकादशी व्रत, गण्डमूल, एकादशी श्राद्ध, शनि स्वाती में अ.रा. परि 1:08	06	36	05	58
	12	27	20	शुक्र	12	25	12	मघा	13	54	शुभ	10	33	सिंहे	गण्डमूल दिवा 1:54 तक, अमृतयोग, द्वादशी श्राद्ध, सन्यासीनांश्राद्धम्	06	36	05	57
	13	28	21	शनि	13	23	08	पू.फा.	12	52	शुक्ल ब्रह्म	08 29	07 09	कं.सा.6:31	शनि प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 11:08 से, त्रयोदशी श्राद्ध, मासिक शिवरात्री	06	37	05	56
	14	29	22	रवि	14	20	32	उ.फा.	11	14	ऐन्द्र	25	46	कन्यायां	भद्रा दिवा 9:50 तक, स.सि. योग, चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रहतानां श्राद्धम्	06	38	05	55
	15	30	23	सोम	30	17	32	उ.फा.	09	08	वैधृ	22	05	तु.सा.7:58	देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस, सर्वपितृश्राद्धम्, बुधा विशाखा में दिवा 2:16	06	39	05	53

C भद्रा प्रात: 8:31 तक, सूर्य हस्त में रात्रि 11:12 D से रात्रि 8:25 तक, सिद्धयोग 8:03 तक E गंडमूल, बुध तुला में सायं 5:40 F श्रीगान्धी, लालबहादुर शास्त्री जयन्ति G दि. 1:59 के पहले, मंगल अनुराधा में दिवा 3:15 H सूर्य चित्रा में दिवा 12:15

A बुध हस्त में दिवा 12:05 B दूर्वाष्टमी (दुरब्बड़ी) डुग्गर प्रदेशे (ज्येष्ठा मूला नक्षत्रयुक्त पूज्या नहीं) दधीचि जयन्ति

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग — श्री विक्रमी संवत् 2069 आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या तक — अक्तूबर-नवंबर, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि अक्तूबर	विक्रमी संवत् कार्ति	शक संवत् आश्विन	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
आश्विन शुक्ल पक्ष	16	कार्ति	24	मंगल	1	14	17	चित्रा स्वाती	06 28	44 12	विष्कुं	18	14	तुलायां	आ.शु. प्रतिपदा, तुला संक्रान्ति, सूर्य तुला में अ.रा. परि 5:49, पुष्य अगले दिन, A	06	39	05	52
	17	2	25	बुध	2	10	58	विशा	25	40	प्रीति	14	21	वृ.रा.8:17	चन्द्रदर्शनम् (मु. 45)	06	40	05	51
	18	3	26	गुरू	3	07	43	अनु	23	19	आयु.	10	32	वृश्चिके	भद्रा सायं 6:11 से अ.रा.परि. 4:40 तक, गंडमूल रात्रि 11:19 से, स.सि.योग	06	41	05	50
	0	0	0	गुरू	4	28	40	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
	19	4	27	शुक्र	5	25	56	ज्ये	21	15	सौभा शोभन	06 27	54 32	ध.रा.9:15	गण्डमूल, उपाङ्ग, ललिता व्रतम्	06	42	05	49
	20	5	28	शनि	6	23	36	मूला	19	34	अतिगं	24	30	धने	गंडमूल रात्रि 7:34 तक, सरस्वती आवाहनम् (मूल नक्षत्रे) शुक्र उ.फा. में अ.रा.परि1:14	06	42	05	48
	21	6	29	रवि	7	21	45	पू.षा.	18	21	सुकर्मा	21	51	म.रा.12:07	भद्रा रात्रि 9:45 से, देवी भद्रकाली अवतार सरस्वती पूजन (पू.षा. नक्षत्रे)	06	43	05	47
	22	7	30	सोम	8	20	25	उ.षा.	17	38	धृति	19	38	मकरे	श्रीदुर्गाष्टमी, भद्रा दिवा 9:05 तक, बलिदानं (उ.षा.नक्षत्रे) महाष्टमीं B	06	44	05	46
	23	8	कार्ति	मंगल	9	19	38	श्रव	17	27	शूल	17	49	मकरे	**श्रीदुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त**, सा. सूर्य वृश्चिके प्रातः 7:00, हेमन्त ऋतु प्रारंभ C	06	44	05	46
	24	9	2	बुध	10	19	22	धनि	17	47	गंड	16	26	कुं.प्रा.5:33	विजयादशमी, पंचक प्रारम्भ प्रातः 5:37, बौद्धावतार, अपराजिता पूजनम्, D	06	45	05	44
	25	10	3	गुरू	11	19	38	शत	18	38	वृद्धि	15	28	कुंभे	**पापांकुशा एकादशी व्रत**	06	46	05	43
	26	11	4	शुक्र	12	20	24	पू.भा.	19	58	ध्रुव	14	52	मी.दि.1:35	अमृतयोग, बुध अनुराधा में सायं 5:05	06	46	05	42
	27	12	5	शनि	13	21	37	उ.भा.	21	44	व्याघा	14	38	मीने	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल रात्रि 9:44 से	06	47	05	41
	28	13	6	रवि	14	23	16	रेवती	23	55	हर्षण	14	44	मे.रा.11:55	**पञ्चक समाप्त** रात्रि 11:55, भद्रा रात्रि 11:16 से, गण्डमूल	06	48	05	40
	29	14	7	सोम	15	25	19	अश्वि	26	28	वज्र	15	08	मेषे	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा**, श्रीवाल्मीकि जयंती, गंडमूल E	06	49	05	39
कार्तिक कृष्ण पक्ष	30	15	8	मंगल	1	27	40	भरणी	29	19	सिद्धि	15	48	मेषे	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा, अमृतयोग	06	50	05	38
	31	16	9	बुध	0	30	16	कृत्ति	0	0	व्यती	16	40	वृ.दि.12:04	स.सि. योग, शुक्र हस्त में अ.रा. परि 2:36	06	51	05	37
	नवंबर	17	10	गुरू	0	0	0	कृत्ति	08	23	वरीय	17	40	वृषे	भद्रा रात्रि 7:37 से	06	51	05	36
	2	18	11	शुक्र	3	8	59	रोहि	11	32	परिघ	18	42	मि.रा.1:05	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 7:57, **करवाचौथ व्रत**, भद्रा दिवा 8:59 तक	06	52	05	36
	3	19	12	शनि	4	11	39	मृग	14	38	शिव	19	39	मिथुने	सिद्ध योग 11:39 तक	06	53	05	35
	4	20	13	रवि	5	14	06	आर्द्रा	17	31	सिद्धि	20	25	मिथुने		06	54	05	34
	5	21	14	सोम	6	16	09	पुन	19	59	साध्य	20	49	क.दि.1:25	भद्रा दिवा 4:09 से अ.रा. परि 4:53 तक, **स्कन्द षष्ठी**	06	55	05	33
	6	22	15	मंगल	7	17	37	पुष्य	21	53	शुभ	20	46	कर्के	गण्डमूल रात्रि 9:53 से, बुध वक्री अ.रा. परि 4:32, सूर्य विशाखा में प्रातः 6:55	06	56	05	32
	7	23	16	बुध	8	18	22	आश्ले	23	04	शुक्ल	20	10	सिं.रा.11:04	गण्डमूल, **अहोई अष्टमी, श्रीराधाष्टमी** (दूर्वाष्टमी डुग्गर प्रदेशे)	06	57	05	31
	8	24	17	गुरू	9	18	19	मघा	23	28	ब्रह्म	18	56	सिंहे	भद्रा अ.रा.परि 5:53 से, गंडमूल रात्रि 11:28 तक, बुधास्त पश्चिमे रात्रि 11:05 F	06	57	05	31
	9	25	18	शुक्र	10	17	27	पू.फा.	23	04	ऐन्द्र	17	04	कं.अ.रा.4:50	भद्रा सायं 5:27 तक, मंगल धनु में 9:35	06	58	05	30
	10	26	19	शनि	11	15	48	उ.फा.	21	55	वैधृ	14	34	कन्यायां	रमा एकादशी व्रत, **गोवत्सद्वादशी**	06	59	05	29
	11	27	20	रवि	12	13	28	उ.फा.	20	07	विष्कुं	11	31	कन्यायां	प्रदोप व्रत, धनतेरस, धन्वंतरी जयंति, यमापदीपदानम्, स. सि. योग, शुक्र चित्रा में रात्रि 12:45	07	0	05	28
	12	28	21	सोम	13	10	33	चित्रा	17	48	प्रीति आयु	07 28	59 05	तुलायां 7:00	**मासिक शिवरात्री व्रत, दीपदान, श्री हनुमान जयन्ति**, भद्रा दिवा 10:33 से G	07	01	05	28
	13	29	22	मंगल	14	07	13	स्वाती	15	06	सौभा.	23	57	तुलायां	देवपितृकार्ये अमावस, महालक्ष्मी पूजा, दीपावली, कुबेर पूजा	07	02	05	27
																[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग

श्री विक्रमी संवत् 2069 कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अमावस्या तक — नवंबर-दिसंबर, सन् 2012 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि नवंबर	विक्रमी संवत् कार्तिक	शक संवत् कार्तिक	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
कार्तिक शुक्ल पक्ष	14	30	23	बुध	1	23	56	विशा	12	12	शोभन	19	43	वृ.प्रा.6:55	कार्ति शु प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा, विश्वकर्मा दिवस, अन्नकूट, नेहरू जयंती	07	04	05	26
	15	मार्ग	24	गुरू	2	20	18	अनु ज्येष्ठा	09 30	17 30	अतिगं	15	31	वृश्चिके	**मार्गशीर्ष संक्रांति**, सूर्य वृश्चिक में अ.रा.परि 05:35 पुण्य अगले दिन, भाई दूज A	07	05	05	25
	16	2	25	शुक्र	3	16	55	मूला	28	02	सुकर्मा	11	27	ध.प्रा. 6:30	भद्रा अ.रा.परि 3:24 से, गंडमूल अ.रा. परि 4:02 तक, बुध विशाखा में दिवा 3:25	07	06	05	25
	17	3	26	शनि	4	13	54	पू.षा.	26	01	धृति शूल	07 28	41 18	धने	भद्रा दिवा 1:54 तक, सिद्ध योग दिवा 1:54 तक, दूर्वागणपति व्रत, शुक्र तुला में 10:55	07	06	05	24
	18	4	27	रवि	5	11	24	उ.षा.	24	34	गंड	25	23	मकरे 7:35	स.सि.योग, **सौभाग्य पंचमी**, मेला बाबा वल्लूजी मथवार जम्मू, वक्री बुध तुला में अ.रा.परि 3:12	07	07	05	24
	19	5	28	सोम	6	09	31	श्रव	23	46	वृद्धि	23	01	मकरे	स.सि. योग, सूर्य अनुराधा में दिवा 12:52	07	08	05	23
	20	6	29	मंगल	7	08	20	धनि	23	42	ध्रुव	21	13	कुंभे 11:38	**गोपाष्टमी**, पंचक प्रारंभ 11:34, भद्रा दिवा 8:20 से रात्रि 8:06 तक	07	09	05	23
	21	7	30	बुध	8	07	53	शत	24	20	व्याघा	20	0	कुंभे	अमृतयोग 7:53 तक, **अक्षय नवमी**, कूष्माण्ड नवमी	07	10	05	23
	22	8	मार्ग	गुरू	9	08	09	पू.भा.	25	38	हर्षण	19	19	मी.रा.7:14	सा. सूर्य धनु में प्रातः 5:13, अमृत योग 8:09 तक, बुधोदयः सायं 5:00, B	07	11	05	22
	23	9	2	शुक्र	10	09	06	उ.भा.	27	31	वज्र	19	06	मीने	भद्रा रात्रि 9:52 से, गण्डमूल अ.रा. परि 3:31 से	07	12	05	22
	24	10	3	शनि	11	10	38	रेवती	29	53	सिद्धि	19	19	मीने	**देव प्रवोधिनी एकादशी व्रत**, पंचक समाप्ति अ.रा. परि 5:53, भद्रा दिवा 10:38 तक, C	07	13	05	22
	25	11	4	रवि	12	12	38	अश्वि	0	0	व्यती	19	50	मे.प्रा. 5:53	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल, स.सि. योग	07	14	05	21
	26	12	5	सोम	13	14	59	अश्वि	08	37	वरीय	20	36	मेषे	गंडमूल दिवा 8:37 तक, बुध मार्गी अ.रा.परि 4:15, वैकुंठ चतुर्दशी, मंगल पू.षा. में अ.रा.परि 1:06	07	15	05	21
	27	13	6	मंगल	14	17	34	भरणी	11	35	परिघ	21	30	वृ.सा.6:21	भद्रा सायं 5:34 से अ.रा. परि 6:54 तक	07	15	05	21
	28	14	7	बुध	15	20	15	कृत्ति	14	41	शिव	22	29	वृषे	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, स.सि.योग, गुरु नानकदेव जयंति, कार्तिक स्नान समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त	07	16	05	21
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	29	15	8	गुरू	1	22	57	रोहि	17	48	सिद्धि	23	27	वृषे	मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा	07	17	05	20
	30	16	9	शुक्र	2	25	32	मृग	20	50	साध्य	24	20	मिथुने 7:20	अमृतयोग	07	18	05	20
	दिसंबर	17	10	शनि	3	27	54	आर्द्रा	23	41	शुभ	25	04	मिथुने	भद्रा दिवा 2:43 से अ.रा. परि 3:54 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	07	19	05	20
	2	18	11	रवि	4	29	57	पुन	26	15	शुक्ल	25	34	क. रा.7:38	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 8:29, सूर्य ज्येष्ठ में सायं 5:15	07	20	05	20
	3	19	12	सोम	5	0	0	पुष्य	28	25	ब्रह्म	25	45	कर्के	गण्डमूल अ.रा. परि 4:25 से, स.सि.योग, शुक्र विशाखा दिवा 2:45	07	20	05	20
	4	20	13	मंगल	5	07	33	आश्ले	30	04	ऐन्द्र	25	32	कर्के	गण्डमूल, स.सि. योग	07	21	05	20
	5	21	14	बुध	6	08	37	मघा	31	07	वैधृ	24	52	सिं.प्रा.6:04	भद्रा दिवा 8:37 से रात्रि 8:50 तक, गण्डमूल प्रातः 7:07 तक	07	22	05	20
	6	22	15	गुरू	7	09	03	पू.फा.	0	0	विष्कुं	23	40	सिंहे	श्री भैरवाष्टमी, बुध वृश्चिक में 9:03 श्रीकालाष्टमी	07	23	05	20
	7	23	16	शुक्र	8	08	47	पू.फा. उ.फा.	07 30	30 10	प्रीति	21	54	कं.दि.1:30		07	24	05	20
	8	24	17	शनि	9	07	48	हस्त	30	10	आयु.	19	35	कन्यायां	भद्रा रात्रि 6:57 से अ.रा.परि 6:06 तक, सिद्ध योग 7:48 तक, बुध अनुराधा में अ.रा. परि 5:40	07	24	05	20
	0	0	0	शनि	10	30	06	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	9	25	18	रवि	11	27	46	चित्रा	28	30	सौभा.	16	43	तु.सा.6:22	**उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)**, अमृतयोग	07	25	05	21
	10	26	19	सोम	12	24	52	स्वाती	26	18	शोभन	13	21	तुलायां	अमृतयोग, **उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)**	07	26	05	21
	11	27	20	मंगल	13	21	32	विशा	23	41	अतिगं सुकर्मा	09 29	35 31	वृ.सा.6:22	प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 9:32 से, सिद्धयोग, मासिक शिवरात्रि व्रत, शुक्र वृश्चिक में दिवा 3:30	07	27	05	21
	12	28	21	बुध	14	17	55	अनु	20	47	धृति	25	16	वृश्चिके	भद्रा प्रातः 7:47 तक, गंडमूल रात्रि 8:47 से, मेला पुरमंडल जम्मू, देवका स्नान (उधमपुर)	07	27	05	21
	13	29	22	गुरू	30	14	11	ज्ये	17	48	शूल	20	57	ध.सा.5:48	देवपितृकार्येऽमावस, गण्डमूल	07	28	05	21

A टिक्का, विश्वकर्मा पूजा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15), दिवा 9:17 से B भारतीय मार्ग शीर्ष प्रारंभ, शुक्र स्वाती में रात्रि 8:35 C गण्डमूल, देवोस्थापनं भीष्म पञ्चक, तुलसी विवाह, चतुर्मास्य व्रत समाप्ति

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग | श्री विक्रमी संवत् 2069 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से पौष कृष्ण पक्ष अमावस्या तक | दिसंबर-जनवरी, सन् 2012-13 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि दिसंबर	विक्रमी संवत् मार्ग	शक संवत् मार्ग	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	जम्मू सूर्यास्त घ.	मिं.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	14	30	23	शुक्र	1	10	30	मूला	14	53	गंड	16	44	धने	गण्डमूल दिवा 2:53 तक, सिद्धयोग 10:30 तक, चन्द्रदर्शनम् (मु. 30), मंगल उ.षा. में 8:27,A	07	29	05	22
	0	0	0	शुक्र	2	31	02	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीय तिथि क्षय	0	0	0	0
	15	पौष	24	शनि	3	27	59	पू.षा.	12	14	वृद्धि	12	45	म.सा.5:38	पौष संक्रान्ति, सूर्य धनु में रात्रि 8:13	07	29	05	22
	16	2	25	रवि	4	25	29	उ.षा.	10	02	ध्रुव व्याघा	09 29	08 59	मकरे	भद्रा दिवा 2:44 से अ.रा. परि 1:29 तक, स.सि. योग 10:02 तक	07	30	05	22
	17	3	26	सोम	5	23	41	श्रवण	08	25	हर्षण	27	26	कुं.रा.7:53	पंचक प्रारंभ रात्रि 7:59, स.सि.योग 8:25 तक, नाग पंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव, B	07	31	05	23
	18	4	27	मंगल	6	22	41	धनि शत	07 31	33 29	वज्र	25	31	कुंभे	अमृतयोग, स्कन्दषष्ठी, चम्पाषष्ठी, मंगल मकर में दिवा 3:15, C	07	31	05	23
	19	5	28	बुध	7	22	33	पू.भा.	0	0	सिद्धि	24	16	मी.रा.1:58	भद्रा रात्रि 10:33 से, सिद्धयोग, मित्रसप्तमी	07	32	05	24
	20	6	29	गुरू	8	23	16	पू.भा.	08	14	व्यती	23	40	मीने	राहु तुला में, केतु मेष में 23 दिसंबर सायं 5:54, भद्रा दिवा 10:54 तक	07	32	05	24
	21	7	30	शुक्र	9	24	44	उ.भा.	09	48	वरीय	23	39	मीने	सा. सूर्य मकर में सायं 6:56, सायन उत्तरायण प्रारंभ शिशर ऋतु प्रारंभ,D	07	33	05	25
	22	8	पौष	शनि	10	26	49	रेवती	12	01	परिघ	24	05	मेषे 12:01	पंचक समाप्त दिवा 12:01, गडमूल, अमृतयोग, शकपौष प्रारंभ	07	33	05	25
	23	9	2	रवि	11	29	19	अश्वि	14	45	शिव	24	51	मेषे	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयंती, भद्रा दिवा 4:04 से अ.रा.परि 5:19 तक E	07	34	05	26
	24	10	3	सोम	12	0	0	भरणी	17	47	सिद्धि	25	48	वृ.रा.12:34	सिद्धयोग 8:02 पश्चात, शुक्र ज्येष्ठ में रात्रि 11:48	07	34	05	26
	25	11	4	मंगल	12	08	02	कृत्ति	20	57	साध्य	26	48	वृषे	प्रदोष व्रत, स.सि. योग, अनंगत्रयोदशी, क्रिसमिसडे	07	35	05	27
	26	12	5	बुध	13	10	48	रोहि	24	04	शुभ	27	45	वृषे	स.सि. योग, पिशाचमोचन श्राद्धम्, श्री दत्तात्रय जयन्ती	07	35	05	27
	27	13	6	गुरू	14	13	26	मृग	27	01	शुक्ल	28	33	मि.दि.1:34	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दिवा 1:26 से अ.रा. परि 2:38 तक, अमृतयोग, F	07	35	05	28
	28	14	7	शुक्र	15	15	51	आर्द्रा	29	43	ब्रह्म	29	09	मिथुने	पूर्णिमा व्रत, सूर्य पू.षा. में रात्रि 10:25	07	36	05	29
पौष कृष्ण पक्ष	29	15	8	शनि	1	17	57	पुन.	0	0	ऐन्द्र	29	30	क.रा.1:32	पौष कृष्ण प्रतिपदा	07	36	05	29
	30	16	9	रवि	2	19	41	पुन	08	06	वैधृ	29	35	कर्के		07	36	05	30
	31	17	10	सोम	3	21	03	पुष्य	10	07	विष्कुं	29	21	कर्के	भद्रा दिवा 8:22 से रात्रि 9:03 तक, गंडमूल दिवा 10:07 से, स.सि. योग 10:07 तक, G	07	37	05	31
	जनवरी	18	11	मंगल	4	21	59	आश्लें	11	45	प्रीति	28	48	सिंहे 11:45	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 9:13, गंडमूल, स.सि.योग 11:45 तक	07	37	05	31
	2	19	12	बुध	5	22	28	मघा	12	58	आयु.	27	53	सिंहे	गण्डमूल दिवा 12:58 तक	07	37	05	32
	3	20	13	गुरू	6	22	28	पू.फा.	13	43	सौभा.	26	36	कं.रा.7:49	भद्रा रात्रि 10:28 से	07	37	05	33
	4	21	14	शुक्र	7	21	56	उ.फा.	13	58	शोभन	24	53	कन्यायां	भद्रा दिवा 10:12 तक, अमृतयोग, शुक्र (मूल 1) धनु में दिवा 3:30	07	37	05	34
	5	22	15	शनि	8	20	50	हस्त	13	41	अतिगंड	22	44	तु.रा.1:20	बुध पू.षा. में दिवा 1:23	07	37	05	35
	6	23	16	रवि	9	19	11	चित्रा	12	51	सुकर्मा	20	09	तुलायां	भद्रा अ.रा. परि 6:05 से	07	38	05	35
	7	24	17	सोम	10	17	0	स्वाती	11	30	धृति	17	08	वृ.अ.रा.4:09	भद्रा सायं 5:00 तक	07	38	05	36
	8	25	18	मंगल	11	14	21	विशा अनु	09 31	39 24	शूल	13	45	वृश्चिके	सफला एकादशी व्रत, गण्डमूल प्रातः 7:24 से, अमृतयोग	07	38	05	37
	9	26	19	बुध	12	11	19	ज्येष्ठा	28	52	गंड वृद्धि	10 30	02 07	ध.अ.रा.4:52	प्रदोष व्रत, गण्डमूल, सिद्धयोग 11:19 तक, श्री वोधनाचार्य जयन्ती	07	38	05	38
	10	27	20	गुरू	13	08	01	मूला	26	11	ध्रुव	26	04	धने	भद्रा दिवा 8:01 से सायं 6:18 तक, गण्डमूल अ.रा.परि 2:11 तक, H	07	38	05	39
	0	0	0	गुरू	14	28	36	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0

तिथ्यादि | श्री विक्रमी संवत् 2069 पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से माघ कृष्ण पक्ष अमावस्या तक | जनवरी-फरबरी, सन् 2013 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि जनवरी	विक्रमी संवत् पौष	शक संवत् पौष	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
पौष शुक्ल पक्ष	12	29	22	शनि	1	22	04	उ.षा.	21	05	हर्षण	18	12	मकरे	पौष शुक्ल प्रतिपदा, लोहड़ी पर्व (पंजाब, हि.प्र., जम्मू कश्मीर, दिल्ली), A	07	37	05	40
	13	माघ	23	रवि	2	19	18	श्रव	19	01	वज्र	14	38	मकरे	माघ संक्रान्ति, सूर्य मकर में अ.रा.परि 6:56, पुष्य अगले दिन, B	07	37	05	41
	14	2	24	सोम	3	17	07	धनि	17	31	सिद्धि	11	31	कुं.प्रा.6:11	पञ्चक प्रारंभ प्रातः 6:16, भद्रा अ.रा. परि 4:23 से	07	37	05	42
	15	3	25	मंगल	4	15	39	शत	16	44	व्यती वरीया	08 30	56 59	कुंभे	भद्रा दि. 3:39 तक, बुध मकर में रात्रि 10:45, शुक्र पू.षा.में प्रातः 6:57	07	37	05	43
	16	4	26	बुध	5	15	02	पू.भा.	16	47	परिघ	29	44	मीने 10:40		07	37	05	44
	17	5	27	गुरू	6	15	17	उ.भा.	17	40	शिव	29	09	मीने	गण्डमूल सायं 5:40 से, मंगल धनिष्ठा में 8:03	07	37	05	45
	18	6	28	शुक्र	7	16	24	रेवती	19	23	सिद्धि	29	10	मे.रा.7:23	पंचक समाप्त रात्रि 7:23, भद्रा दिवा 4:24 से अ.रा.परि 5:19 तक, गंडमूल, C	07	36	05	46
	19	7	29	शनि	8	18	15	अश्वि	21	46	साध्य	29	41	मेषे	गण्डमूल रात्रि 9:46 तक श्री दुर्गाष्टमी	07	36	05	47
	20	8	30	रवि	9	20	39	भरणी	24	40	शुभ	30	32	मेषे		07	36	05	48
	21	9	माघ	सोम	10	23	22	कृत्ति	27	48	शुक्ल	31	32	वृ.प्रा.7:26	भारतीय माघारम्भ, बुध श्रवण में रात्रि 10:25	07	35	05	49
	22	10	2	मंगल	11	26	08	रोहि	30	58	ब्रह्म	0	0	वृषे	पुत्रदा एकादशी व्रत, सा.सूर्य कुंभ में प्रातः 5:51, भद्रा दिवा 12:45 से D	07	35	05	50
	23	11	3	बुध	12	28	43	मृग्	0	0	ब्रह्म	08	32	मि.रा.8:28	सिद्धयोग, स.सि.योग, नेता सुभाष जयंती, सूर्य श्रवण में अ.रा. परि 02:42	07	34	05	51
	24	12	4	गुरू	13	30	58	मृग्	09	55	ऐन्द्र	09	21	मिथुने	प्रदोष व्रत	07	34	05	52
	25	13	5	शुक्र	0	0	0	आर्द्रा	12	32	वैधृ	09	55	मिथुने	मंगल कुंभ में सायं 6:30, शुक्र उ.षा. में रात्रि 10:20	07	34	05	53
	26	14	6	शनि	14	08	47	पुन	14	44	विष्कुं	10	09	कर्के 8:13	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दि. 8:47 से रात्रि 9:27 तक, गणतन्त्र दिवस	07	33	05	53
	27	15	7	रवि	15	10	08	पुष्य	16	28	प्रीति	10	02	कर्के	पूर्णिमाव्रत, गण्डमूल दिवा 4:28 से, रविपुष्य योग, माघ स्नानारम्भ	07	32	05	54
माघ कृष्ण पक्ष	28	16	8	सोम	1	11	01	आश्ले	17	46	आयु.	09	34	सिं.सा.5:46	माघ कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल, शुक्र मकर में दिवा 2:10	07	32	05	55
	29	17	9	मंगल	2	11	27	मघा	18	40	सौभा.	08	45	सिंहे	भद्रा रात्रि 11:29 से, गंडमूल सायं 6:40 तक, बुध धनि में दि. 3:30	07	31	05	56
	30	18	10	बुध	3	11	31	पू.फा.	19	12	सोभन अतिगं	07 30	39 15	कं.रा.1:15	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 9:04, भुग्गा व्रत, भद्रा दिवा 11:31 तक, E	07	31	05	57
	31	19	11	गुरू	4	11	12	उ.फा.	19	23	सुकर्मा	28	36	कन्यायां	अमृतयोग 11:12 तक	07	30	05	58
	फरवरी	20	12	शुक्र	5	10	33	हस्त	19	14	धृति	26	41	कन्यायां		07	29	05	59
	2	21	13	शनि	6	09	33	चित्रा	18	46	शूल	24	29	तु.प्रा.7:02	भद्रा दिवा 9:22 से रात्रि 8:53 तक, मंगल शतभिषा में अ.रा.परि 4:55, F	07	29	05	0
	3	22	14	रवि	7	08	13	स्वाती	17	57	गंड	22	01	तुलायां	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतभेद से), बुधोदय, पश्चिमे 10:35	07	28	05	01
	0	0	0	रवि	8	30	33	0	0	0	0	0	0	0	अष्टमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	4	23	15	सोम	9	28	31	विशा	16	47	वृद्धि	19	17	वृ.10:06	शुक्रास्त 10 फरवरी	07	27	06	02
	5	24	16	मंगल	10	26	12	अनु	15	19	ध्रुव	16	17	वृश्चिके	भद्रा दिवा 3:21 से अ.रा.परि 2:12 तक, गंडमूल दिवा 3:19 से, सूर्य धनिष्ठा में 5:56, G	07	27	06	03
	6	25	17	बुध	11	23	36	ज्ये	13	33	व्याघा	13	03	धने दि.1:32	षट्तिला एकादशी व्रत, गण्डमूल, बुध शतभिषा में प्रातः 6:20	07	26	06	04
	7	26	18	गुरू	12	20	51	मूला	11	34	हर्षण वज्र	09 30	39 09	धने	गण्डमूल दिवा 11:34 तक, तिल द्वादशी	07	25	06	05
	8	27	19	शुक्र	13	18	02	पू.षा.	09	29	सिद्धि	26	39	म.दि.2:58	प्रदोष व्रत, भद्रा सायं 6:02 से अ.रा.परि 4:40 तक, मासिक शिवरात्रि व्रत, H	07	24	06	06
	9	28	20	शनि	14	15	19	उ.षा. श्रवण	07 29	26 33	व्यती	23	16	मकरे	सिद्धयोग	07	23	06	07
	10	29	21	रवि	30	12	49	धनि	28	01	वरीय	20	08	कुं.दि.4:44	देवपितृकार्यमौनी अमावस, पञ्चक प्रारंभ सायं 4:47, शुक्रास्त पूर्वे सूर्योदयकाल I	07	22	06	07

A स्वामी विवेकानन्द जयन्ती B निरयन उत्तरायण प्रारंभ चन्द्रदर्शन (मु. 30) C अमृत योग, स.सि. योग D अ.रा.परि 2:08 तक, अमृतयोग E अमृतयोग 11:31 तक, गुरू मार्गी सायं 5:05 F बुध कुंभ में 10:27 G शुक्र श्रवण में दिवा 1:45 H मेरू त्रयोदशी (जैन)। कुंभमहापर्व (प्रयागराज)।

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग | श्री विक्रमी संवत् 2069 माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक फरबरी-मार्च, सन् 2013 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि फरबरी	विक्रमी संवत् माघ	शक संवत् माघ	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
माघ शुक्ल पक्ष	11	30	22	सोम	1	10	44	शत	27	0	परिघ	17	22	कुंभे	माघ शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (मु. 15)				
	12	फाल्गु	23	मंगल	2	09	12	पू.भा.	26	37	शिव	15	05	मी.रा.8:38	फाल्गुन संक्रान्ति, सूर्य कुंभ में रात्रि 7:58	07	22	06	08
	13	2	24	बुध	3	08	22	उ.भा.	26	59	सिद्धि	13	22	मीने	गौरी तृतीया, भद्रा रात्रि 8:20 से, गंडमूल अ.रा.परि 2:59 से तिलचतुर्थी	07	21	06	09
	14	3	25	गुरू	4	08	19	रेवती	28	08	साध्य	12	16	मे.रा.4:08	बसन्त पंचमी, पंचक समाप्त अ.रा.परि 4:08, भद्रा दि. 8:19 तक, A	07	20	06	10
	15	4	26	शुक्र	5	09	05	अश्वि	30	02	शुभ	11	48	मेषे	गंडमूल प्रात: 6:02 तक, स.सि.योग, शुक्र धनिष्ठा में अ.रा परि 5:20	07	19	06	11
	16	5	27	शनि	6	10	36	भरणी	0	0	शुक्ल	11	54	मेषे		07	18	06	12
	17	6	28	रवि	7	12	45	भरणी	08	34	ब्रह्म	12	28	वृ.दि.3:17	भद्रा दिवा 12:45 से अ.रा.परि 2:02 तक, मर्यादा महोत्सव (जैन)	07	17	06	13
	18	7	29	सोम	8	15	19	कृत्ति	11	32	ऐन्द्र	13	20	वृषे	भीमाष्टमी, सा.सू. मीन में रात्रि 7:24, बसन्त ऋतु प्रारंभ शनि वक्री रात्रि 11:30	07	16	06	14
	19	8	30	मंगल	9	18	0	रोहि	14	39	वैधृ	14	19	मि.रा.4:11	सूर्य शतभिषा में 10:24, मंगल पू.भा. में अ.रा.परि 2:34	07	15	06	15
	20	9	फाल्गु	बुध	10	20	34	मृग	17	40	विष्कुं	15	14	मिथुने	स.सि.योग, शक फाल्गुन प्रारंभ	07	14	06	15
	21	10	2	गुरू	11	22	45	आर्द्रा	20	22	प्रीति	15	55	मिथुने	जया एकादशी व्रत, भद्रा दिवा 9:39 से रात्रि 10:45 तक, शुक्र कुंभ में दिवा 1:14	07	13	06	16
	22	11	3	शुक्र	12	24	26	पुन	22	36	आयु.	16	14	क.सा. 4:05	भीष्म द्वादशी, अमृतयोग, स.सि. योग	07	12	06	17
	23	12	4	शनि	13	25	31	पुष्य	24	15	सौभा.	16	07	कर्के	शनि प्रदोष व्रत, गण्डमूल रात्रि 12:15 से, बुध वक्री दिवा 3:10	07	11	06	18
	24	13	5	रवि	14	26	0	आश्ले	25	20	शोभन	15	32	सिं.रा.1:20	भद्रा अ.रा.परि 2:00 से, गण्डमूल	07	09	06	19
	25	14	6	सोम	15	25	55	मघा	25	53	अतिगं	14	31	सिंहे	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, गुरू रविदास जयंती, भद्रा दिवा 1:57 तक, B	07	08	06	20
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	26	15	7	मंगल	1	25	23	पू.फा.	25	58	सुकर्मा	13	06	सिंहे	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, बुधास्त पश्चिमे रात्रि 12:05, शुक्रशत में रात्रि 9:15, अमृतयोग	07	07	06	20
	27	16	8	बुध	2	24	26	उ.फा.	25	40	धृति	11	20	क.7:55	सिद्धयोग	07	06	06	21
	28	17	9	गुरू	3	23	12	हस्त	25	05	शूल	09	18	कन्यायां	भद्रा दिवा 11:49 से रात्रि 11:12 तक	07	05	06	22
	मार्च	18	10	शुक्र	4	21	44	चित्रा	24	17	गंड वृद्धि	07 28	00 38	तु. 12:42	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 10:02	07	04	06	23
	2	19	11	शनि	5	20	05	स्वाती	23	18	ध्रुव	26	05	तुलाया	अमृतयोग, स.सि.योग	07	03	06	24
	3	20	12	रवि	6	18	17	विशा	22	11	व्याघा	23	26	वृ.सा.4:28	अमृतयोग, भद्रा सायं 6:17 से अ.रा.परि 5:20 तक	07	01	06	24
	4	21	13	सोम	7	16	22	अनु	20	57	हर्षण	20	41	वृश्चिके	गण्डमूल रात्रि 8:57 से, अमृतयोग, स.सि.योग, सूर्य पू.भा. में सायं 4:50, C	07	0	06	25
	5	22	14	मंगल	8	14	21	ज्ये	19	37	वज्र	17	51	ध.रा.7:37	गण्डमूल	06	59	06	26
	6	23	15	बुध	9	12	15	मूला	18	13	सिद्धि	14	57	धने	भद्रा रात्रि 11:10 से, गण्डमूल सायं 6:13 तक	06	58	06	27
	7	24	16	गुरू	10	10	06	पू.षा.	16	47	व्यती	12	02	म.रा.10:25	भद्रा दिवा 10:06 तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती	06	56	06	28
	8	25	17	शुक्र	11	07	58	उ.षा.	15	23	वरीयां परिघ	09 30	08 18	मकरे	विजया एकादशी व्रत, मंगल उ.भा. में अ.रा.परि 3:05	06	55	06	28
	0	0	0	शुक्र	12	29	55	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षय	06	54	06	28
	9	26	18	शनि	13	28	04	श्रव	14	06	शिव	27	37	कुं.रा.1:31	शनि प्रदोष व्रत, पंचक प्रारंभ रात्रि 1:34, भद्रा अ.रा.परि 4:04 से, स.सि.योग, D	00	0	0	0
	10	27	19	रवि	14	26	30	धनि	13	02	सिद्धि	25	10	कुंभे	महाशिवरात्रि व्रत, [illegible]	06	53	06	30

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग — श्री विक्रमी संवत् 2069 फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या तक — मार्च-अप्रैल, सन् 2013 ई०

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि मार्च	विक्रमी संवत् फाल्गुन	शक संवत् फाल्गुन	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	12	29	21	मंगल	1	24	43	पू.भा.	12	03	शुभ	21	21	मी.प्रा.6:03	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग	06	49	06	32
	13	30	22	बुध	2	24	43	उ.भा.	12	21	शुक्ल	20	07	मीने	गंडमूल दिवा 12:21 से, सिद्धयोग, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, चंद्रदर्शनम् (मु. 30)	06	48	06	33
	14	चैत्र	23	गुरू	3	25	23	रेवती	13	17	ब्रह्म	19	25	मे.दि.1:16	**चैत्र संक्रान्ति**, सूर्य मीन में सायं 4:54, पंचक समाप्त दिवा 1:17, गंडमूल, A	06	46	06	34
	15	2	24	शुक्र	4	26	44	अश्वि	14	52	ऐन्द्र	19	14	मेषे	भद्रा दिवा 2:03 से अ.रा.परि 2:44 तक, गंडमूल दिवा 2:52 तक, स.सि. योग दिवा 2:52 तक	06	45	06	34
	16	3	25	शनि	5	28	40	भरणी	17	05	वैधृ	19	32	वृ.रा.11:43	अमृतयोग, याज्ञवल्क्य जयन्ती	06	44	06	35
	17	4	26	रवि	0	0	0	कृत्ति	19	47	विष्कुं	20	12	वृषे	अमृतयोग, बुधमार्गी रात्रि 1:30, सूर्य उ.भा. में रात्रि 1:12, **शुक्र मीन में दिवा 1:58**	06	42	06	36
	18	5	27	सोम	6	07	03	रोहि	22	47	प्रीति	21	07	वृषे	स.सि. योग	06	41	06	37
	19	6	28	मंगल	7	09	38	मृग	25	51	आयु.	22	05	मि. 12:19	भद्रा दिवा 9:38 से रात्रि 10:54 तक	06	40	06	37
	20	7	29	बुध	8	12	11	आर्द्रा	28	43	सौभा.	22	56	मिथुने	सा.सू. मेष में सायं 5:37, अमृतयोग 12:11 तक होलाष्टक शुरू, अन्नपूर्णाष्टमी, B	06	39	06	38
	21	8	30	गुरू	9	14	26	पुन.	0	0	शोभन	23	29	क.रा.12:37	अमृतयोग दिवा 2:26 तक, स.सि. योग	06	37	06	39
	22	9	चैत्र	शुक्र	10	16	10	पुन	07	11	अतिगं	23	37	कर्के	भद्रा अ.रा.परि 4:42 से, भारतीय चैत्रारंभ	06	36	06	39
	23	10	2	शनि	11	17	15	पुष्य	09	03	सुकर्मा	23	15	कर्के	**आमलकी एकादशी व्रत**, भद्रा सायं 5:15 तक, गंडमूल दिवा 9:03 से	06	35	06	40
	24	11	3	रवि	12	17	39	आश्ले	10	16	धृति	22	19	सिंहे 10:06	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल, **गोविन्द द्वादशी**	06	33	06	41
	25	12	4	सोम	13	17	20	मघा	10	48	शूल	20	52	सिंहे	गण्डमूल दिवा 10:48 तक	06	32	06	42
	26	13	5	मंगल	14	16	24	पू.फा.	10	42	गंड	18	55	कं.सा.4:35	**श्रीसत्यनारायण व्रत**, होलिका दहन, भद्रा पूर्व, भद्रा दिवा 4:24 से अ.रा.परि 3:40 तक, C	06	31	06	42
	27	14	6	बुध	15	14	57	उ.फा.	10	03	वृद्धि	16	34	कन्यायां	**पूर्णिमा व्रत, होलाष्टक समाप्त, जन्मदिनोत्सव श्रीचैतन्यमहाप्रभु**	06	29	06	43
चैत्र कृष्ण पक्ष	28	15	7	गुरू	1	13	04	हस्त	08	58	ध्रुव	13	54	तु.रा.8:18	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, होला मेला पौंटा साहिब (हि.प्र.)	06	28	06	44
	29	16	8	शुक्र	2	10	54	चित्रा स्वाती	07 30	35 00	व्याघा	11	0	तुलायां	भद्रा रात्रि 9:44 से, अमृतयोग 10:54 तक, सन्त तुकाराम जयन्ती	06	27	06	44
	30	17	9	शनि	3	08	34	विशा	28	19	हर्षण वज्र	07 28	57 50	वृ.रा.10:44	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 10:01, भद्रा दि. 8:34 तक, शुक्र रेवती में रात्रि 11:35	06	25	06	45
	0	0	0	शनि	4	30	08	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
	31	18	10	रवि	5	27	43	अनु	26	39	सिद्धि	25	43	वृश्चिके	गण्डमूल अ.रा.परि 2:39 से, रंग पञ्चमी, सूर्य रेवती में 12:10	06	24	06	46
	अप्रैल	19	11	सोम	6	25	22	ज्ये	25	02	व्यती	22	39	धने रा.1:02	भद्रा अ.रा.परि 1:22 से, गण्डमूल, बुध पू.भा. में दिवा 3:00	06	23	06	46
	2	20	12	मंगल	7	23	09	मूला	23	34	वरीय	19	42	धने	भद्रा दिवा 12:15 तक, गण्डमूल रात्रि 11:34 तक	06	22	06	47
	3	21	13	बुध	8	21	06	पू.षा.	22	15	परिघ	16	52	म.अ.रा3:57	अमृत योग, **माता शीतला पूजनम्**	06	20	06	48
	4	22	14	गुरू	9	19	15	उ.षा.	21	09	शिव	14	13	मकरे	अमृतयोग	06	19	06	49
	5	23	15	शुक्र	10	17	40	श्रव	20	18	सिद्धि	11	45	मकरे	भद्रा प्रातः 6:27 से सायं 5:40 तक	06	18	06	49
	6	24	16	शनि	11	16	22	धनि	19	45	साध्य	09	30	कुं.प्रा.8:00	**पापमोचिनी एकादशी व्रत**, पञ्चक प्रारंभ 8:01	06	16	06	50
	7	25	17	रवि	12	15	24	शत	19	32	शुभ शुक्ल	07 29	32 51	कुंभे	**प्रदोष व्रत, वारूणी योग दिवा 3:24 से रात्रि 7:32 तक**	06	15	06	51
	8	26	18	सोम	13	14	50	पू.भा.	19	43	ब्रह्म	28	30	मी.दि.1:38	भद्रा दिवा 2:50 से अ.रा.परि 2:46 तक, **मासिक शिवरात्री व्रत**	06	14	06	51
	9	27	19	मंगल	14	14	43	उ.भा.	20	21	ऐन्द्र	27	32	मीने	गण्डमूल रात्रि 8:21 से, स.सि.योग, बुध मीन में अ.रा.परि 1:52, D	06	13	06	52
	10	28	20	बुध	30	15	05	रेवती	21	28	वैधृ	26	58	मे.रा.9:28	देवपितृकार्येऽमावस, पंचक समाप्त रात्रि 9:28, गण्डमूल, शुक्र (अश्विनी 1) E	06	11	06	53

A स.सि. योग दिवा 1:17 तक B शुक्र उ.भा. में प्रातः 6:15 C मंगल रेवती में 8:12 D मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा) E मेष में सायं 5:30, **विक्रमी संवत् 2069 समाप्त**

जम्मू चन्द्रोदयास्त (भारतीय समयानुसार), सन् 2012–13 ई०

दिनांक	जनवरी 2012		फरवरी 2012		मार्च 2012		अप्रैल 2012		मई 2012		जून 2012		जुलाई 2012		अगस्त 2012	
	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.
1	11:46	00:03	12:04	01:30	11:28	01:07	12:59	02:06	13:50	01:55	15:58	02:19	17:05	02:33	18:31	04:30
2	12:17	00:58	12:48	02:24	12:19	01:57	14:00	02:46	14:54	02:30	17:08	03:02	18:08	03:32	19:12	05:36
3	12:51	01:52	13:37	03:17	13:14	02:46	15:03	03:23	16:01	03:07	18:18	03:52	19:05	04:35	19:48	06:40
4	13:28	02:47	14:31	04:08	14:13	03:31	16:08	04:00	17:10	03:45	19:25	04:49	19:55	05:42	20:22	07:42
5	14:10	03:42	15:29	04:56	15:15	04:13	17:16	04:37	18:21	04:28	20:26	05:51	20:39	06:49	20:55	08:41
6	14:56	04:36	16:31	05:41	16:19	04:53	18:25	05:15	19:33	05:15	21:19	06:57	21:17	07:55	21:27	09:39
7	15:48	05:28	17:34	06:22	17:25	05:31	19:36	05:56	20:42	06:09	22:05	08:04	21:52	08:57	22:00	10:35
8	16:44	06:18	18:39	07:00	18:31	06:08	20:48	06:41	21:46	07:09	22:45	09:10	22:24	09:57	22:35	11:31
9	17:44	07:05	19:44	07:37	19:40	06:45	21:57	07:31	22:41	08:13	23:21	10:13	22:56	10:55	23:13	12:26
10	18:46	07:47	20:50	08:13	20:49	07:23	23:02	08:26	23:30	09:18	23:53	11:12	23:28	11:51	23:53	13:19
11	19:49	08:26	21:57	08:49	21:58	08:05	0	09:26	0	10:23	0	12:10	0	12:46	0	14:12
12	20:52	09:03	23:04	09:27	23:07	08:51	00:00	10:29	00:11	11:25	00:25	13:06	00:01	13:41	00:38	15:02
13	21:56	09:38	0	10:08	0	09:41	00:50	11:32	00:48	12:25	00:56	14:00	00:37	14:35	01:27	15:50
14	23:00	10:12	00:11	10:54	00:12	10:36	01:34	12:33	01:21	13:22	01:27	14:55	01:15	15:29	02:20	16:35
15	0	10:48	01:16	11:44	01:12	11:35	02:13	13:33	01:52	14:17	02:01	15:49	01:58	16:21	03:16	17:17
16	00:05	11:26	02:19	12:40	02:06	12:36	02:47	14:31	02:23	15:12	02:37	16:43	02:44	17:10	04:15	17:56
17	01:11	12:08	03:17	13:40	02:53	13:38	03:19	15:27	02:54	16:06	03:17	17:36	03:35	17:57	05:15	18:33
18	02:18	12:55	04:09	14:42	03:35	14:39	03:50	16:22	03:26	17:01	04:02	18:27	04:30	18:41	06:17	19:09
19	03:24	13:48	04:55	15:44	04:12	15:38	04:20	17:17	04:00	17:55	04:50	19:16	05:27	19:21	07:19	19:44
20	04:26	14:46	05:35	16:46	04:45	16:36	04:51	18:11	04:38	18:48	05:42	20:01	06:26	19:58	08:22	20:20
21	05:23	15:49	06:11	17:45	05:17	17:32	05:24	19:06	05:19	19:41	06:38	20:43	07:26	20:34	9:27	20:58
22	06:14	16:53	06:44	18:43	05:47	18:27	06:00	20:00	06:05	20:31	07:35	21:21	08:27	21:08	10:33	21:40
23	06:59	17:56	07:16	19:40	06:18	19:22	06:39	20:53	06:55	21:18	08:34	21:57	09:28	21:43	11:39	22:26
24	07:38	18:58	07:46	20:36	06:50	20:17	07:21	21:45	07:47	22:02	09:33	22:31	10:31	22:18	12:44	23:17
25	08:13	19:58	08:17	21:31	07:23	21:12	08:08	22:34	08:43	22:42	10:33	23:05	11:35	22:57	13:47	0
26	08:45	20:56	08:49	22:25	08:00	22:06	08:58	23:20	09:40	23:19	11:34	23:40	12:40	23:39	14:45	0:14
27	09:16	21:52	09:24	23:20	08:40	22:59	09:52	0	10:39	23:55	12:37	0	13:46	0	15:38	01:15
28	09:46	22:47	10:01	0	09:23	23:50	10:49	00:02	11:39	0	13:43	00:16	14:52	00:27	16:25	02:18
29	10:17	23:41	10:42	00:14	10:12	0	11:47	00:42	12:40	00:29	14:50	00:56	15:54	01:21	17:07	03:22
30	10:50	0	0	0	11:04	00:38	12:48	01:19	13:43	01:01	15:58	01:42	16:53	02:20	17:45	04:26

जम्मू चन्द्रोदयास्त (भारतीय समयानुसार), सन् 2012–13 ई०

दिनांक	सितम्बर 2012		अक्तूबर 2012		नवम्बर 2012		दिसम्बर 2012		जनवरी 2013		फरवरी 2013		मार्च 2013		अप्रैल 2013	
	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.
1	18:53	06:28	18:32	07:09	19:10	08:39	19:35	08:59	21:13	09:32	23:06	09:51	22:02	08:30	0	09:40
2	19:26	07:26	19:08	08:05	19:57	09:29	20:29	09:40	22:11	10:05	0	10:29	23:06	09:12	00:05	10:40
3	19:59	08:23	19:47	09:00	20:48	10:17	21:25	10:19	23:09	10:39	00:09	11:11	0	09:58	01:01	11:43
4	20:33	09:20	20:28	09:54	21:40	11:00	22:21	10:55	0	11:13	01:13	11:58	00:10	10:48	01:50	12:47
5	21:10	10:15	21:14	10:46	22:35	11:41	23:18	11:29	00:10	11:49	02:17	12:52	01:12	11:45	02:35	13:51
6	21:50	11:09	22:02	11:35	23:32	12:19	0	12:03	01:13	12:29	03:19	13:51	02:11	12:46	03:15	14:53
7	22:33	12:02	22:54	12:21	0	12:55	00:17	12:37	02:18	13:13	04:18	14:55	03:04	13:49	03:52	15:54
8	23:19	12:54	23:49	13:04	00:30	13:30	01:18	13:12	03:24	14:04	05:11	16:02	03:52	14:54	04:27	16:54
9	0	13:42	0	13:44	01:29	14:04	02:22	13:51	04:31	15:03	05:59	17:09	04:36	15:59	05:02	17:53
10	00:10	14:28	00:46	14:22	02:31	14:40	03:28	14:35	05:34	16:07	06:42	18:15	05:16	17:03	05:37	18:51
11	01:04	15:10	01:44	14:59	03:36	15:19	04:37	15:24	06:32	17:15	07:21	19:19	05:53	18:05	06:13	19:49
12	02:01	15:50	02:45	15:34	04:43	16:01	05:46	16:21	07:24	18:24	07:57	20:22	06:28	19:06	06:51	20:44
13	03:00	16:28	03:47	16:11	05:53	16:49	06:53	17:24	08:10	19:32	08:32	21:22	07:04	20:05	07:32	21:38
14	04:01	17:05	04:52	16:48	07:03	17:43	07:55	18:32	08:50	20:37	09:07	22:20	07:39	21:03	08:15	22:29
15	05:04	17:41	05:59	17:29	08:12	18:44	08:49	19:41	09:27	21:39	09:43	23:17	08:16	22:00	09:02	23:18
16	06:08	18:17	07:09	18:14	09:15	19:49	09:37	20:48	10:02	22:39	10:20	0	08:55	22:55	09:51	0
17	07:13	18:56	08:18	19:05	10:12	20:55	10:19	21:53	10:36	23:37	10:59	00:12	09:37	23:47	10:43	00:02
18	08:20	19:37	09:27	20:01	11:01	22:01	10:56	22:55	11:10	0	11:42	01:06	10:21	0	11:36	00:44
19	09:28	20:23	10:31	21:01	11:44	23:05	11:30	23:54	11:45	00:33	12:27	01:57	11:09	00:37	12:31	01:22
20	10:35	21:14	11:29	22:05	12:22	0	12:03	0	12:22	01:28	13:16	02:46	11:59	01:24	13:27	01:59
21	11:40	22:10	12:21	23:09	12:57	00:06	12:36	00:51	13:02	02:22	14:08	03:31	12:52	02:08	14:24	02:34
22	12:40	23:09	13:05	0	13:30	01:05	13:10	01:47	13:46	03:15	15:03	04:14	13:47	02:49	15:24	03:08
23	13:35	0	13:45	00:12	14:02	02:02	13:45	02:42	14:33	04:05	15:59	04:54	14:43	03:27	16:25	03:43
24	14:23	00:12	14:21	01:13	14:34	02:57	14:23	03:36	15:24	04:53	16:56	05:31	15:41	04:03	17:29	04:20
25	15:06	01:15	14:55	02:12	15:08	03:53	15:05	04:29	16:17	05:37	17:55	06:07	16:40	04:38	18:36	05:00
26	15:44	02:17	15:27	03:10	15:45	04:47	15:50	05:21	17:12	06:19	18:55	06:42	17:41	05:13	19:44	05:44
27	16:20	03:18	15:59	04:06	16:24	05:41	16:38	06:10	18:09	06:57	19:56	07:17	18:44	05:49	20:51	06:34
28	16:53	04:18	16:33	05:02	17:07	06:34	17:30	06:57	19:07	07:33	20:58	07:52	19:49	06:27	21:55	07:30
29	17:26	05:16	17:07	05:58	17:53	07:25	18:24	07:40	20:05	08:08	0	0	20:55	07:08	22:54	08:30
30	17:58	06:13	17:45	06:53	18:43	08:14	19:20	08:20	21:04	08:42	0	0	22:01	07:54	23:47	09:34
31	0	0	18:26	07:47	0	0	20:16	08:57	22:04	09:16	0	0	23:05	08:45	0	0

नमोऽस्तुरामाय

नमोऽस्तुरामाय

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

विक्रमसंवत् 2070
शकसंवत् 1935

卐

जयहिंदसंवत् 66-67
ख्रिष्टसन् 2013-14 ई०

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान
44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू, दूरभाष एवं फैक्स : 0191-2473663, मोबाईल : 09419194230
ई-मेल

श्रीविक्रमी संवत् 2070 | चैत्र शुक्ल पक्ष | शाके 1935, सन् 2013 ई. | 11 अप्रैल से 25 अप्रैल तक | सूर्योत्तरायणे, वसन्त ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श चैत्र	वि चैत्र	अं अप्रै	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
31	51	1	गुरु	24	31	15	58	अश्वि	42	21	23	06	विष्कुं	26	48	ब	15	58	मेषे	21	29	11	नव चान्द्रसंवत्सर प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, नवरात्र प्रारंभ, A	06	10	06	54
31	53	2	शुक्र	28	06	17	23	भरणी	47	44	25	14	प्रीति	27	03	कौ	17	23	मेषे	22	30	12	अमृतयोग, मंगल मेष में रात्रि 7:36, बुध रेवती में दिवा 12:15	06	09	06	54
32	00	3	शनि	32	55	19	17	कृत्ति	54	14	27	48	आयु.	27	38	तै	06	17	वृ.प्रा.7:50	23	वैशा	13	वैशाख संक्रान्ति, सूर्य मेष में रात्रि 1:26	06	08	06	55
32	06	4	रवि	38	41	21	34	रोहि	60	0	0	0	सोभा.	28	28	व	08	23	वृषे	24	2	14	भद्रा दिवा 8:25 से रात्रि 9:34 तक	06	06	06	56
32	08	5	सोम	45	01	24	05	रोहि	01	32	06	42	शोभन	29	27	ब	10	49	मि.रा.8:13	25	3	15	श्रीलक्ष्मी पञ्चमी — पराभव नामक संवत्सर	06	05	06	56
32	13	6	मंग	51	27	26	38	मृग	09	12	09	45	अतिगंड	00	00	कौ	13	22	मिथुने	26	4	16	अमृतयोग	06	04	06	57
32	18	7	बुध	57	19	28	58	आर्द्रा	16	48	12	46	अतिगंड	06	25	ग	15	50	मिथुने	27	5	17	भद्रा अ.रा.परि 4:58 से, सिद्धयोग	06	03	06	58
32	23	8	गुरु	60	0	0	0	पुन	23	40	15	30	सुकर्मा	07	14	वि	18	00	कर्क प्रा.8:51	28	6	18	श्रीदुर्गाष्टमी, भद्रा सायं 5:56 तक, स.सि. योग दिवा 3:30 तक	06	02	06	59
32	27	8	शुक्र	02	12	06	54	पुष्य	29	24	17	46	धृति	07	42	ब	06	54	कर्के	29	7	19	श्रीराम नवमी, नवरात्र समाप्त, सा.सू. वृष में अ.रा.परि 3:33, B	06	01	06	59
32	33	9	शनि	05	37	08	14	आश्ले	33	36	19	25	शूल	07	43	कौ	08	14	सिं.सा.7:25	30	8	20	गण्डमूल, सिद्धयोग 8:14 तक शुक्रोदयः पश्चिमे 21 अप्रैल	05	59	07	0
32	38	10	रवि	07	12	08	51	मघा	35	56	20	20	गंड	07	12	ग	08	51	सिंहे	वैशा	9	21	भद्रा रात्रि 8:47 से, गंडमूल 7:25 तक, शुक्र भरणी में 12:10C	05	58	07	01
32	41	11	सोम	06	55	08	43	पू.फा.	36	21	20	29	वृद्धि / ध्रुव	06 / 28	04 / 21	वि	08	43	कं.रा.2:25	2	10	22	कामदा एकादशी, भद्रा दिवा 8:43 तक	05	57	07	01
32	46	12	मंग	04	42	07	49	उ.फा.	35	03	19	57	व्याघा	26	04	बा	07	49	कन्यायां	3	11	23	भौम प्रदोष व्रत	05	56	07	02
32	51	13	बुध	0	47	06	14	हस्त	32	08	18	46	हर्षण	23	18	तै	06	14	कन्यायां	4	12	24	भद्रा अ.रा.परि 4:04 से, स.सि. योग	05	55	07	03
0	0	14	बुध	55	24	28	04	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
32	56	15	गुरु	48	52	25	26	चित्रा	28	01	17	06	वज्र	20	08	वि	14	48	तु.प्रा.6:00	5	13	25	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, भद्रा सायं 5:09 तक, सिद्धयोग	05	54	07	04

अष्टम्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (18 अप्रैल, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	02	00	11	01	00	06	06	00
04	28	04	11	20	09	14	23	23
04	19	04	51	50	17	56	52	52
45	01	56	37	51	00	45	53	53
58	724	45	95	11	74	04	03	03
38	45	16	14	33	11	26	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
अश्वि 2	पुन 3	अश्वि 2	उ.भा. 3	रोहि 4	अश्वि 3	स्वा 3	विशा 2	भर 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:02

1 सू मं शु के | 2 बृ | 3 चं | 4 | 5 | 6 | 7 श रा | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 बु

पूर्णिमायां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (25 अप्रैल, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	05	00	11	01	00	06	06	00
10	29	09	23	22	17	14	23	23
54	42	19	33	13	55	25	30	30
25	11	35	23	13	51	16	38	38
58	878	44	107	12	74	04	03	03
24	45	45	00	03	03	33	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
अश्वि 4	चित्रा 2	अश्वि 3	रेव 3	रोहि 4	भर 2	स्वा 3	विशा 2	भर 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:54

1 सू मं शु के | 2 बृ | 3 | 4 | 5 | 6 चं | 7 श रा | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 बु

A गंडमूल रात्रि 11:06 तक, स.सि. योग **B** ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, गंडमूल सायं 5:46 से **C** शुक्रोदयः पश्चिमे।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शस्त्र विधान– पराभव नामक संवत्सर है वर्ष के राजा बृहस्पति एवं मन्त्री शनि है "पराभवाब्दे राजानः प्राप्नुवन्तिपराभवम्" महर्षि नारद मतानुसार पराभव नामसंवत्सर में राजा तिरस्कार को प्राप्त होते हैं और राजा लोग राजाधर्म के अनुसार कार्य नहीं करेंगे तथा जनता के द्वारा अपमानित होंगे। शनिमन्त्री होने से राजाओं में परस्पर वैमनस्य, जनता दुःखी, राजा क्रूरता की ओर अग्रसर तथा कठोरता से व्यवहार करेंगे, नये-नये रोगों की उत्पत्ति होगी। चैत्र मास शुक्ल प्रतिपदा तिथि से नवसंवत्सर का आरम्भ होता है। यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इस तिथि से पितामह ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण प्रारम्भ किया था-- चैत्रमासि जगद्ब्रह्मासंसर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्ल पक्षेसमग्रे तु तदासूर्योदये सति॥ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक वासन्तिक नवरात्र रहेंगे। नवमी तिथि को भगवान् श्रीराम जी का अवतार हुआ था, श्री राम जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाना चाहिए। "दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। दानवनां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ परित्रणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। आकाश लक्षण – जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि के क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ रुक-रुक कर वर्षा होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 वैशाख कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 26 अप्रैल से 10 मई तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श वैशा	वि वैशा	अं अप्रै	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
32	58	1	शुक्र	41	34	22	30	स्वाती	22	53	15	02	सिद्धि	16	41	बा	12	0	तुलायां	6	14	26	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा सिद्धयोग	05	53	07	04
33	03	2	शनि	33	48	19	23	विशा	17	15	12	46	व्यती	13	03	तै	08	58	वृ.प्रा.7:21	7	15	27	सूर्य भरणी में सायं 5:20, अगस्त्यास्त: सायं 6:24	05	52	07	05
33	08	3	रवि	25	58	16	14	अनु	11	22	10	24	वरीयान परिघ	09 29	21 42	वि	16	14	वृश्चिके	8	16	28	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 9:55, भद्रा प्रात: 5:48 से A	05	51	07	06
33	13	4	सोम	18	23	13	11	ज्ये	05	40	08	06	शिव	26	11	बा	13	11	धने 8:06	9	17	29	गण्डमूल	05	50	07	07
33	16	5	मंग	11	17	10	20	मूला पू.षा.	00 55	25 52	05 28	59 09	सिद्धि	22	54	तै	10	20	धने	10	18	30	गण्डमूल प्रात: 5:59 तक, मंगल भरणी में दिवा 2:44, B	05	49	07	07
33	21	6	बुध	04	57	07	47	उ.षा.	52	17	26	42	साध्य	19	55	व	07	47	मकरे 9:45	11	19	मई	भद्रा दिवा 7:47 से रात्रि 6:42 तक	05	48	07	08
0	0	7	बुध	59	37	29	38	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय	0	0	0	0
33	26	8	गुरु	55	24	27	56	श्रव	49	49	25	42	शुभ	17	06	बा	16	43	मकरे	12	20	2	शुक्र कृत्तिका में 7:31	05	47	07	09
33	28	9	शुक्र	52	27	26	44	धनि	48	34	25	11	शुक्ल	15	02	तै	15	16	कुं.दि.1:22	13	21	3	पञ्चक प्रारंभ दिवा 1:27	05	46	07	09
33	33	10	शनि	50	47	26	03	शत	48	34	25	10	ब्रह्म	13	11	व	14	19	कुंभे	14	22	4	भद्रा दिवा 2:23 से अ.रा.परि 2:03 तक, अमृतयोग, C	05	45	07	10
33	38	11	रवि	50	22	25	52	पू.भा.	49	52	25	40	ऐन्द्र	11	45	ब	13	53	मी.सा.7:30	15	23	5	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, अमृतयोग, बुध भरणी में दिवा 1:12	05	44	07	11
33	43	12	सोम	51	14	26	12	उ.भा.	52	24	26	40	वैधृ	10	44	कौ	13	58	मीने	16	24	6	गण्डमूल अ.रा.परि 2:40 से, अमृतयोग	05	43	07	12
33	46	13	मंग	53	19	27	01	रेवती	56	07	28	08	विष्कुं	10	07	ग	14	33	मे.अ.रा.4:08	17	25	7	**भौम प्रदोष व्रत**, पंचक समापत अ.रा.परि 4:08, भद्रा अ.रा परि 3:01D	05	42	07	12
33	51	14	बुध	56	32	28	17	अश्वि	60	0	0	0	प्रीति	09	51	वि	15	36	मेषे	18	26	8	भद्रा दिवा 3:39 तक, गण्डमूल	05	41	07	13
33	55	30	गुरु	60	0	0	0	अश्वि	0	55	06	02	आयु.	09	56	च	17	05	मेषे	19	27	9	पितृकार्येऽमावस, गण्डमूल 6:02 तक	05	40	07	14
33	58	30	शुक्र	0	45	05	58	भरणी	06	37	08	19	सोभा.	10	20	ना	18	56	वृ.दि.2:57	20	28	10	देवकार्येअमावस	05	40	07	15

अष्टम्यां गुरुवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (2 मई, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	09	00	00	01	00	06	06	00
17	11	14	06	23	26	13	23	23
42	37	31	38	38	33	53	08	08
33	55	47	22	55	47	24	22	22
58	832	44	118	12	73	04	03	03
12	30	24	57	29	55	32	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
भर 2	श्रव 1	भर 1	अश्वि 2	मृग 1	भर 4	स्वा 3	विशा 1	भर 3

कुण्डली अष्टमी प्रात: 5:47

1 सू. मं. बु. शु. के.; 2 बृ.; 3; 4; 5; 6; 7 श. रा.; 8; 9; 10 चं.; 11; 12

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (10 मई, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	00	00	00	01	01	06	06	00
25	25	20	23	25	06	13	22	22
27	14	25	12	20	24	17	42	42
30	24	35	03	21	43	30	57	57
58	722	44	129	13	73	04	03	03
00	16	00	39	55	47	23	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
भर 4	भर 4	भर 3	भर 3	मृग 1	कृत्ति 3	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अमावस प्रात: 5:40

1 सू. चं. मं. बु. के.; 2 बृ. शु.; 3; 4; 5; 6; 7 श. रा.; 8; 9; 10; 11; 12

A दिवा 4:14 तक, गंडमूल दिवा 10:24 से, बुध मेष में सायं 6:25 B गुरु मृग में सायं 4:54 C शुक्र वृष में रात्रि 12:30 D से गण्डमूल, सिद्धयोग।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- वैशाख के समान कोई मास नहीं। सत्ययुग के समान कोई युग नहीं, वेद के समान शास्त्र नहीं और गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं, वैशाख अपने कतिपय वैशिष्ट्य के कारण उत्तम मास है– **न माधवसमोमासो न कृतेन युगं समम्। नचवेदसमं शास्त्रं व तीर्थ गंगया समम्॥** मेष संक्रान्ति से सौर वैशाख मास की प्रवृत्ति होती है, इसी संक्रान्ति को भगवान् सूर्य उत्तरायण की आधी यात्रा पूर्ण करते हैं। इस संक्रान्ति को धर्मघट का दान, स्नान, तिलों द्वारा पितरों का तर्पण तथा मधुसूदन भगवान् के पूजन का विशेष महत्त्व है– पद्मपुराण के अनुसार – तीर्थ चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम्।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 वैशाख शुक्ल पक्ष शाके 1935, सन् 2013 ई. 11 मई से 25 मई तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श वैशा	वि वैशा	अं मई	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
34	01	1	शनि	05	52	08	0	कृत्ति	13	15	10	57	शोभन	11	0	ब	08	0	वृषे	21	29	11	वैशाख शु. प्रतिपदा सूर्य कृत्तिका में 11:28, बुध कृत्तिका में सायं 7:53	05	39	07	15
34	06	2	रवि	11	40	10	18	रोहि	20	30	13	50	अतिगंड	11	51	को	10	18	मि.अ.रा.3:21	22	30	12	श्रीपरशुराम जयन्ती, शुक्र रोहिणी में अ.रा.परि 3:30	05	38	07	16
34	10	3	सोम	17	55	12	47	मृग	28	10	16	53	सुकर्मा	12	51	ग	12	47	मिथुने	23	31	13	भद्रा अ.रा.परि 2:03 से, स.सि. योग, बुध वृष में 8:38	05	37	07	17
34	13	4	मंग	24	16	15	19	आर्द्रा	35	48	19	56	धृति	13	52	वि	15	19	मिथुने	24	ज्ये	14	ज्येष्ठ संक्रान्ति, सूर्य वृष में रात्रि 10:20, भद्रा दिवा 3:19 तक	05	37	07	18
34	16	5	बुध	30	18	17	43	पुन	43	11	22	52	शूल	14	49	बा	17	43	क.सा.4:10	25	2	15	श्रीशंकराचार्य जयन्ती	05	36	07	18
34	20	6	गुरु	35	37	19	50	पुष्य	49	42	25	28	गंड	15	33	को	06	49	कर्के	26	3	16	गंडमूल अ.रा.परि 1:28 से, स.सि.योग, गुरू पुष्य योग, श्रीरामानुजा जयंती	05	35	07	19
34	23	7	शुक्र	39	44	21	28	आश्ले	54	59	27	34	वृद्धि	15	57	ग	08	43	सिं.अ.रा.3:34	27	4	17	भद्रा रात्रि 9:50 से, गंडमूल, अमृतयोग, बुध रोहिणी में रात्रि 11:08	05	35	07	20
34	26	8	शनि	42	19	22	29	मघा	58	44	29	03	ध्रुव	15	54	वि	10	04	सिंहे	28	5	18	भद्रा दिवा 9:58 तक, गंडमूल प्रात: 5:03 तक, मंगल कृत्तिक में सायं 6:41	05	34	07	20
34	30	9	रवि	43	05	22	47	पू.फा.	60	0	0	0	व्याघा	15	18	बा	10	44	सिंहे	29	6	19	श्रीजानकी जयन्ती	05	33	07	21
34	33	10	सोम	41	54	22	18	पू.फा.	0	40	5	49	हर्षण	14	05	तै	10	38	कन्या.11:53	30	7	20	सा.सू. मिथुन में	05	33	07	22
34	35	11	मंग	38	45	21	02	उ.फा हस्त	00 58	40 47	06 29	48 03	वज्र	12	16	व	09	46	कन्यायां	31	8	21	मोहिनी एकादशी व्रत, अमृत योग	05	32	07	22
34	38	12	बुध	33	48	19	03	चित्रा	55	12	27	36	सिद्धि	09	50	ब	08	08	तु.सा.4:24	ज्ये	9	22	प्रदोष व्रत, भारतीय ज्येष्ठारम्भ:	05	32	07	23
34	42	13	गुरु	27	20	16	27	स्वाती	50	07	25	34	व्यती वरीया	06 27	51 25	को	05	50	तुलायां	2	10	23	मंगल वृष में 9:10, शुक्र मृग् में रात्रि 12:15, श्रीनृसिंह चतुर्दशी	05	31	07	24
34	43	14	शुक्र	19	35	13	21	विशा	44	01	23	07	परिघ	23	38	व	13	21	वृ.सा.5:45	3	11	24	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दिवा 1:21 से रात्रि 11:37 तक, A	05	31	07	24
34	47	15	शनि	11	0	09	54	अनु	37	10	20	22	शिव	19	37	व	09	54	वृश्चिके	4	12	25	पूर्णिमा व्रत, श्रीबुद्ध जयंती, गंडमूल दिवा 8:22 से, B	05	30	07	25

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (18 मई, सन 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	04	00	01	01	01	06	06	00
03	00	26	10	27	16	12	22	22
10	59	16	33	04	14	43	17	17
45	30	02	59	50	31	20	30	30
57	754	43	123	14	73	04	03	03
47	18	33	53	14	38	05	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
कृत्ति 2	मघा 1	भर 4	रोहि 1	मृग 2	रोहि 2	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:34

पूर्णिमायां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (25 मई, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	07	01	01	01	01	06	06	00
09	07	01	24	28	24	12	21	21
54	19	19	49	38	49	15	55	55
39	16	48	43	10	32	46	15	15
57	905	53	113	13	73	03	03	03
36	56	11	16	27	30	44	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
कृत्ति 4	अनु 2	कृत्ति 2	मृग 1	मृग 2	मृग 1	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:30

A बुध मृगशिरा में 10:55 B अमृत योग 9:54 तक, सूर्य रोहिणी में 7:42

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- चैत्र शुक्ल तृतीया 'अक्षय तृतीया' आत्म-विश्लेषण तथा आत्मनिरीक्षण तिथि है– 'अक्षय तृतीया' को ही भगवान् वदरीनाथ जी के दर्शन किये जाते हैं। अक्षय तृतीया को ही वृन्दावन में श्रीबिहारी जी के चरणों के दर्शन वर्ष में एक बार होते हैं, देश के कोने-कोने से श्रद्धालु, भक्तजन चरण दर्शन के लिए वृन्दावन पधारते हैं। स्कन्दपुराण और भविष्य पुराण के अनुसार भगवान् विष्णु ने वैशाख शुक्ल तृतीया को रेणुका के गर्भ से परशुराम रूप में जन्म लिया। **"वैशाखस्यसिते पक्षे तृतीयायां पुर्नवसौ। निशायाः प्रथमेयामे रामाख्यः समये हरिः।। स्वोच्चगैः षड्ग्रहैर्युक्ते मिथुने राहुसंस्थिते। रेणुकायास्तुयोगर्भादवतीर्णो विभुः स्वयम्।।"** **आकाश लक्षण** – अक्षय तृतीया को वर्षा होना सुभिक्ष सूचक है। कहीं-कहीं तेज़ हवाओं सहित तेज जोरदार वर्षा के योग भी हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 **ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष** शाका 1935, सन् 2013 ई. **26 मई से 8 जून तक** सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श ज्ये.	वि ज्ये.	अं मई	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
34	51	1	रवि	01	55	06	16	ज्ये	30	03	17	31	सिद्धि	15	30	कौ	06	16	ध.सा.5:31	5	13	26	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा गण्डमूल, अमृतयोग 6:16 तक	05	30	07	26
0	0	2	रवि	52	44	26	35	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीया तिथि क्षय	0	0	0	0
34	52	3	सोम	43	52	23	02	मूला	23	05	14	43	साध्य	11	25	व	12	47	धने	6	14	27	भद्रा दिवा 12:48 से रात्रि 11:02 तक, गंडमूल दिवा 2:43 तक, A	05	29	07	26
34	56	4	मंग	35	46	19	47	पू.षा.	16	40	12	09	शुभ शुक्ल	07 27	30 53	ब	09	22	म.सा.5:53	7	15	28	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 10:29	05	29	07	27
35	0	5	बुध	28	42	16	57	उ.षा.	11	15	09	58	ब्रह्म	24	40	कौ	06	18	मकरे	8	16	29	शुक्र मिथुन में 10:55	05	28	07	28
35	0	6	गुरु	23	0	14	40	श्रव	07	02	08	17	ऐन्द्र	21	55	व	14	40	कुं.सा.7:40	9	17	30	पञ्चक प्रारंभ सायं 7:45, भद्रा दिवा 2:40 से अ.रा.परि 1:50 तक	05	28	07	28
35	02	7	शुक्र	18	52	13	01	धनि	04	25	07	14	वैधृ	19	44	ब	13	01	कुंभे	10	18	31	अमृत योग दिवा 1:01 तक, बुध आर्द्रा में रात्रि 11:20, गुरु मिथुन में 6:50	05	28	07	29
35	03	8	शनि	16	30	12	04	शत	03	30	06	52	विष्कुं	18	06	कौ	12	04	मी.रा.1:02	11	19	जून		05	28	07	29
35	07	9	रवि	15	57	11	50	पू.भा.	04	20	07	11	प्रीति	17	01	ग	11	50	मीने	12	20	2	भद्रा अ.रा.परि 12:03 से	05	27	07	30
35	07	10	सोम	17	02	12	16	उ.भा.	06	50	08	11	आयु.	16	29	वि	12	16	मीने	13	21	3	भद्रा दिवा 12:16 तक, गंडमूल दिवा 8:11 से, शुक्र आर्द्रा में रात्रि 9:45	05	27	07	30
35	10	11	मंग	19	37	13	18	रेवती	10	50	09	47	सौभा.	16	23	बा	13	18	मेषे 09:47	14	22	4	**अपरा एकादशी व्रत**, पंचक समाप्त 9:47, गंडमूल, B	05	27	07	31
35	13	12	बुध	23	30	14	51	अश्वि	16	05	11	53	शोभन	16	41	तै	14	51	मेषे	15	23	5	**प्रदोष व्रत**, गंडमूल दिवा 11:53 तक, सिद्धयोग, गुरु अस्त पश्चिमे	05	27	07	32
35	15	13	गुरु	28	22	16	47	भरणी	22	22	14	23	अतिगंड	17	17	व	16	47	वृ.रा. 9:04	16	24	6	भद्रा दिवा 4:47 से, मंगल रोहिणी में 8:30, **मासिक शिवरात्री व्रत**	05	26	07	32
35	17	14	शुक्र	33	57	19	01	कृत्ति	29	22	17	11	सुकर्मा	18	06	वि	05	52	वृषे	17	25	7	भद्रा प्रातः 5:54 तक	05	26	07	33
35	17	30	शनि	40	0	21	26	रोहि	36	47	20	09	धृति	19	03	च	08	12	वृषे	18	26	8	**शनैश्चर जयंती**, देवपितृकार्येऽमावस, स.सि.योग, सूर्य मृगशिरा में 5:33	05	26	07	33

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (1 जून, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	10	01	02	02	02	06	06	00
16	19	06	07	00	03	11	21	21
37	14	20	04	12	23	51	32	32
33	15	59	43	51	38	00	59	59
57	790	42	93	13	73	03	03	03
30	43	59	31	37	23	16	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रोहि 2	शत 4	कृत्ति 3	आर्द्रा 1	मृग 3	मृग 4	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:28

3 बु बृ शु; 2 सू. मं; 1 के; 12; 11 चं; 10; 9; 8; 7 श रा; 6; 5; 4

अमावस्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (8 जून, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	01	01	02	02	02	06	06	00
23	16	11	16	01	11	11	21	21
19	05	19	55	48	56	29	10	10
47	46	38	43	31	57	39	44	44
57	710	42	71	13	73	02	03	03
25	42	28	57	44	16	45	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रोहि 4	रोहि 2	रोहि 1	आर्द्रा 4	मृग 3	आर्द्रा 2	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अमावस प्रातः 5:26

3 बु बृ शु; 2 सू. चं. मं; 1 के; 12; 11; 10; 9; 8; 7 श रा; 6; 5; 4

A बुध मिथुन में रात्रि 12:44 Bअमृतयोग दिवा 1:18 तक।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शस्त्र विधान–

वट सावित्री व्रत– वट देव वृक्ष है, वट वृक्ष के मूल में भगवान ब्रह्मा, मध्य में जर्नादन विष्णु तथा अग्रभाग में देवाधिदेव शिव जी रहते हैं। देवी सावित्री भी वट वृक्ष में प्रतिष्ठित रहती है। वट सावित्री व्रत करने का सब को अधिकार है। पद्म पुराण के अनुसार– **"सर्वेषामेव वर्णानामधिकारोऽस्तिमर्दव्रते। मदभक्तैस्तु विशेषेण कर्त्तव्यं मत्परायणैः।। वटमूलेस्थितो ब्रह्मा वटमध्येजनार्दनः। वटाग्रे तु शिवोदेवः सावित्री वटसंश्रिता। वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकन्दं मनसा स्मरामि।।"** सूर्य रोहिणी में आने से रूई, सूत, रेशम, कर्पूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूँग, मोठ, [illegible] सभी चीजें महंगी हो जाएंगी। **आकाश लक्षण–** गर्मी का प्रकोप अधिक, लू से जनता परेशान होगी। वर्षा कम होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 9 जून से 23 जून तक सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श ज्ये.	वि ज्ये.	अं जून	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
35	20	1	रवि	46	12	23	55	मृग	44	25	23	12	शूल	20	05	किं	10	40	मिथुने 9:40	19	27	9	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग	05	26	07	34
35	20	2	सोम	52	25	26	24	आर्द्रा	52	02	26	15	गंड	21	07	बा	13	10	मिथुने	20	28	10	बुध पुन. में रात्रि 9:30, चन्द्रदर्शनम्, अमृतयोग	05	26	07	34
35	20	3	मंग	58	20	28	46	पुन	59	22	29	11	वृद्धि	22	04	तै	15	36	क.रा.10:58	21	29	11	प्रताप जयन्ती	05	26	07	34
35	22	4	बुध	60	0	0	0	पुष्य	60	0	0	0	ध्रुव	22	53	व	17	52	कर्के	22	30	12	भद्रा सायं 5:50 से	05	26	07	35
35	22	4	गुरु	03	40	06	54	पुष्य	06	10	07	54	व्याघा	23	28	वि	06	54	कर्के	23	31	13	भद्रा प्रात: 6:54 तक, गंडमूल प्रात: 7:54 से, गुरु पुष्ययोग 7:54 तक	05	26	07	35
35	25	5	शुक्र	08	10	08	42	आश्ले	12	07	10	17	हर्षण	23	43	बा	08	52	सिंहे 10:17	24	आषा	14	**आषाढ़ संक्रान्ति, सूर्य मिथुन में अ.रा.परि 4:55, गंडमूल, A**	05	26	07	36
35	25	6	शनि	11	30	10	02	मघा	16	55	12	12	वज्र	23	33	तै	10	02	सिंहे	25	2	15	गण्डमूल दिवा 12:12 तक	05	26	07	36
35	25	7	रवि	13	20	10	46	पू.फा.	20	17	13	33	सिद्धि	22	52	व	10	46	कं.सा.7:46	26	3	16	भद्रा दिवा 10:46 से रात्रि 10:47 तक	05	26	07	36
35	26	8	सोम	13	26	10	49	उ.फा.	21	56	14	13	व्यती	21	38	ब	10	49	कन्यायां	27	4	17	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (जम्मू कश्मीर)	05	26	07	37
35	25	9	मंग	11	45	10	09	हस्त	21	45	14	09	वरीय	19	48	कौ	10	09	तु.रा.1:51	28	5	18	**श्रीगंगादशहरा**	05	27	07	37
35	25	10	बुध	08	10	08	43	चित्रा	19	45	13	21	परिघ	17	23	ग	08	43	तुलायां	29	6	19	भद्रा रात्रि 7:39 से	05	27	07	37
35	25	11	गुरु	02	50	06	35	स्वाती	16	02	11	52	शिव	14	23	वि	06	35	वृ.अ.रा.4:21	30	7	20	**निर्जला एकादशी व्रत**, भद्रा प्रात: 7:39 से	05	27	07	37
0	0	12	गुरु	55	55	27	49	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षय	0	0	0	0
35	27	13	शुक्र	47	45	24	33	विशा	10	47	09	46	सिद्धि	10	54	कौ	14	14	वृश्चके	31	8	21	**प्रदोष व्रत**, सूर्य आर्द्रा में अ.रा.परि 4:30, सा. सूर्य कर्क में	05	27	07	38
35	26	14	शनि	38	33	20	53	अनु ज्येष्ठ	04 57	19 00	07 28	11 16	साध्य शुभ	07 26	02 53	ग	10	45	ध.अ.रा.4:16	आषा	9	22	भद्रा रात्रि 8:53 से, गंडमूल दिवा 7:11 से, सिद्धयोग, B	05	27	07	38
35	25	15	रवि	28	55	17	02	मूला	49	22	25	13	शुक्ल	22	36	वि	06	58	धने	2	10	23	**पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा प्रात: 6:57 तक, C	05	28	07	38

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (17 जून, सन 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	05	01	02	02	02	06	06	00
01	05	17	25	03	22	11	20	20
55	14	39	39	52	55	07	42	42
58	31	48	30	18	37	58	07	07
57	793	41	39	13	73	01	03	03
17	09	58	44	47	04	59	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
मृग 3	उ.फा. 3	रोहि 3	पुन 2	मृग 4	पुन 1	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:26

4
2 मं
3 सू. बु बृ शु
1 के
5
6 चं
12
श 7 रा
9
11
8
10

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (23 जून, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	08	01	02	02	03	06	06	00
07	00	21	28	05	00	10	20	20
39	46	50	35	14	13	57	23	23
28	28	49	03	52	42	29	02	02
57	916	41	13	13	72	01	03	03
13	57	39	58	45	56	26	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
आर्द्रा 1	मूल 1	रोहि 4	पुन 3	मृग 4	पुन 4	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:28

4 शु
2 मं
3 सू. बु बृ
1 के
5
6
12
श 7 रा
9 चं
11
8
10

A शुक्र पुन. में सायं 7:55 B शुक्र कर्क में रात्रि 1:00 C गंडमूल अ.रा.परि1:13 तक, स.सि.योग।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शस्त्र विधान– श्रीगंगा दशहरा– गंगा जी देव नदी हैं, वे मनुष्यमात्र के कल्याणर्थ धरती पर आयीं धरती पर उनका अवतरण ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी को हुआ। अत: यह तिथि उनके नाम पर गंगा दशहरा के नाम से प्रसिद्ध हुई– **"दशमी शुक्ल पक्षे तु ज्येष्ठमासे बुधेऽहनि। अवतीर्णा यतः स्वर्गाद् हस्तर्क्षे च सरिद्वरा॥"** **निर्जला एकादशी–** यह व्रत सभी एकादशियों में सर्वोत्तम माना जाता है। अत: अन्य एकादशियों से अधिक महत्त्वूर्ण है। इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य को दीर्घायु, आरोग्य वृद्धि एवं जन्म जन्मान्तर के पापों की निवृत्ति होती है। सूर्य बुध आर्द्रा में आने से तथा सायन सूर्य कर्क में आ जाने के कारण रूई, कपास, खल, अलसी, गेहूँ, चाबल, चना, जौ, बाजरा तथा चान्दी के भाव तेज होंगे। सोने के भाव में उतार-चढ़ाव होता रहेगा। **आकाश लक्षण–** गर्मी अधिक होगी, सूर्य आर्द्रा में आने से बादल चाल बनेगी। गर्मी अधिक होने के कारण रोगों की उत्पत्ति होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 24 जून से 8 जुलाई तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श आषा	वि आषा	अं जून	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
35	25	1	सोम	19	10	13	08	पू.षा.	41	50	22	12	ब्रह्म	18	19	कौ	13	08	म.अ.रा.3:28	3	11	24	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा	05	28	07	38
35	25	2	मंग	09	45	09	22	उ.षा.	34	50	19	24	ऐन्द्र	14	13	ग	09	22	मकरे	4	12	25	भद्रा रात्रि 7:39 से, मंगल मृगशिरा में 8:52, शुक्र पुष्य में सायं 6:50	05	28	07	38
35	23	3	बुध	01	12	05	57	श्रव	28	53	17	02	वैधृ	10	25	वि	05	57	कुं.अ.रा.4:04	5	13	26	श्रीगणेश चतुर्थी, चंद्रोदय रात्रि 9:50, पंचक प्रारंभ अ.रा.परि 4:08, A	05	28	07	38
0	0	4	बुध	53	47	27	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
35	22	5	गुरु	48	02	24	42	धनि	24	22	15	14	विष्कुंभ प्रीति	07 28	03 14	कौ	13	46	कुंभे	6	14	27	सिद्धयोग	05	29	07	38
35	22	6	शुक्र	44	10	23	09	शत	21	37	14	08	आयु.	26	03	ग	11	50	कुंभे	7	15	28	भद्रा रात्रि 11:09 से, सिद्धयोग	05	29	07	38
35	21	7	शनि	42	20	22	26	पू.भा.	20	54	13	51	सौभा.	24	32	वि	10	41	मीने 7:50	8	16	29	भद्रा दिवा 10:47 तक, गुरू आर्द्रा में 10:15	05	29	07	38
35	20	8	रवि	42	35	22	32	उ.भा.	22	10	14	22	शोभन	23	40	बा	10	23	मीने	9	17	30	गण्डमूल दिवा 2:22 से, **स.सि.योग** दिवा 2:22 तक	05	30	07	38
35	18	9	सोम	44	43	23	24	रेवती	25	26	15	41	अतिगंड	23	25	तै	10	53	मे.दि.3:41	10	18	जुल	पंचक समाप्त दिवा 3:41, गण्डमूल	05	30	07	38
35	17	10	मंग	48	32	24	56	अश्वि	30	22	17	40	सुकर्मा	23	40	व	12	06	मेषे	11	19	2	भद्रा दिवा 12:10 से अ.रा.परि 12:56 तक, गंडमूल सायं 5:40 तक B	05	31	07	38
35	17	11	बुध	53	35	26	57	भरणी	36	37	20	10	धृति	24	18	ब	13	53	वृ.अ.रा.2:50	12	20	3	**योगिनी एकादशी व्रत बृहस्पति उदय पूर्व में सूर्योदय काल**	05	31	07	38
35	16	12	गुरु	59	25	29	18	कृत्ति	43	45	23	02	शूल	25	12	कौ	16	06	वृषे	13	21	4	मंगल मिथुन में अ.रा.परि 1:10	05	31	07	38
35	15	13	शुक्र	60	0	0	0	रोहि	51	22	26	05	गंड	26	14	ग	18	32	वृषे	14	22	5	**प्रदोष व्रत**, सूर्य पुन. में अ.रा. परि 4:05	05	32	07	38
35	13	13	शनि	05	39	07	48	मृग	59	02	29	10	वृद्धि	27	18	व	07	48	मि.दि.3:36	15	23	6	भद्रा दिवा 7:48 से रात्रि 9:03 तक, सिद्ध योग 7:48 पश्चात् C	05	32	07	38
35	12	14	रवि	11	52	10	18	आर्द्रा	60	0	0	0	ध्रुव	28	19	श	10	18	मिथुने	16	24	7		05	33	07	38
35	11	30	सोम	17	56	12	44	आर्द्रा	06	34	08	11	व्याघा	29	13	ना	12	44	क.अ.रा.4:20	17	25	8	देवपितृकार्येऽमावस, **सोमवती अमावस**, शनिमार्गी 10:40	05	33	07	38

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (30 जून, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	11	01	02	02	03	06	06	00
14	11	26	28	06	08	10	20	20
19	53	41	37	50	43	49	00	00
55	21	20	03	58	46	29	46	46
59	777	41	17	13	72	00	03	03
12	22	18	25	41	46	46	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
आर्द्रा 3	उ.भा. 3	मृग. 2	पुन 3	आर्द्रा 1	पुष्य 2	स्वा 2	विशा 1	भर 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:30

4 शु, 3 बु सू बृ, 2 मं, 1 के, 5, 6, 12 चं, 7 श रा, 9, 11, 8, 10

अमावस्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (8 जुलाई, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	02	02	02	02	03	06	06	00
21	18	02	24	08	18	10	19	19
57	40	10	46	39	25	46	35	35
40	05	22	50	59	22	08	20	20
57	714	40	37	13	72	00	03	03
13	05	54	50	32	35	01	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
पुन 1	आर्द्रा 4	मृग. 3	पन 2	आर्द्रा 1	आश्ले 1·	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अमावस प्रातः 5:33

4 शु, 3 सू चं मं बु बृ, 2, 1 के, 5, 6, 12, 7 श रा, 9, 11, 8, 10

A भद्रा प्रातः 5:57 तक बुध वक्री सायं 5:35
B स.सि.योग C शुक्र आश्ले. में सायं 6:42, मासिक शिवरात्री व्रत।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **संकट चतुर्थी व्रत–** इस व्रत में चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी ग्रहण करें। **व्रत नियम–** भू शयन, जित क्रोधी, इन्द्रिय संयम, मोहादि का त्याग, प्रतिमास, एक वर्ष, तीन वर्ष, इक्कीस वर्ष या जीवन भर व्रत करें तो समस्त संकटों से मुक्ति, मानसिक शान्ति, घर में ऋद्धि सिद्धि प्राप्ति, कुमारी करे तो मनोरम वर प्राप्त हो, प्रत्येक स्त्री को सौभाग्य प्राप्ति एवं विधवा को उत्तम लोक प्राप्ति, जन्मान्तर में अटूट सौभाग्य प्राप्त हो। **योगिनी एकादशी व्रत –** इस व्रत से शारीरिक कष्टों से निवृत्ति होकर सुख ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है। **प्रदोष व्रत –** यह व्रत विधिपूर्वक प्रत्येक त्रयोदशी के दिन सायं भगवान् गौरीशंकर की अराधना में संलग्न होकर करना चाहिए। ***आकाश लक्षण –*** *21 जून को सूर्य नारायण आर्द्रा में आ चुके हैं, जोरदार वर्षा के योग प्रबल हैं। मानसून आने की शीघ्र ही सम्भावना है। असम, बिहार, उड़ीसा, बंगाल तथा उत्तर प्रदेश प्रान्तों में वर्षा हो जाने से जनता*

श्रीविक्रमी संवत् 2070 आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 9 जुलाई से 22 जुलाई तक सूर्य दक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ.मि.	श आषा	वि आषा	अं जुला	विवरण भारतीय स्टै. समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
35	06	1	मंग	23	29	14	58	पुन	13	41	11	03	हर्षण	0	0	ब	14	58	कर्क	18	26	9	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग दिवा 2:58 तक	05	34	07	37
35	05	2	बुध	28	27	16	58	पुष्य	20	15	13	41	हर्षण	05	56	कौ	16	58	कर्क	19	27	10	गण्डमूल दिवा 1:41 से, चन्द्रदर्शनम्, **रथयात्रा पुरी (उड़ीसा)**	05	35	07	37
35	03	3	गुरु	32	41	18	40	आश्ले	26	06	16	02	वज्र	06	28	तै	05	52	सिं.सा.4:02	20	28	11	गण्डमूल	05	35	07	37
35	0	4	शुक्र	36	02	20	01	मघा	31	05	18	02	सिद्धि	06	43	व	07	24	सिंहे	21	29	12	भद्रा प्रात: 7:20 से रात्रि 8:01, गण्डमूल सायं 6:02 तक	05	36	07	36
34	58	5	शनि	38	15	20	55	पू.फा.	35	03	19	38	व्यती	06	41	ब	08	32	कं.अ.रा.1:56	22	30	13		05	36	07	36
34	57	6	रवि	39	15	21	19	उ.फा.	37	47	20	44	वरीयान परिघ	06 / 29	16 / 26	कौ	09	11	कन्यायां	23	31	14	अमृतयोग, स.सि.योग, मंगल आर्द्रा में रात्रि 8:13, **स्कन्दषष्ठी**	05	37	07	36
34	53	7	सोम	38	43	21	07	हस्त	39	05	21	16	शिव	28	08	ग	09	18	कन्यायां	24	32	15	भद्रा रात्रि 9:07 से, अमृतयोग	05	37	07	35
34	51	8	मंग	36	38	20	18	चित्रा	38	48	21	10	सिद्धि	26	18	वि	08	48	तुलायां 9:17	25	श्राव	16	**श्रावण संक्रान्ति सूर्य कर्क में दिवा** 3:35, भद्रा दिवा 8:42 तक,A	05	38	07	35
34	50	9	बुध	32	55	18	49	स्वाती	36	55	20	25	साध्य	23	56	बा	07	39	तुलायां	26	2	17	शुक्र (मघा 1) सिंह में सायं 7:34	05	39	07	35
34	46	10	गुरु	27	36	16	42	विशा	33	23	19	01	शुभ	21	03	तै	05	50	वृ.दि.1:25	27	3	18	भद्रा अ.रा.परि 3:21 से	05	39	07	34
34	45	11	शुक्र	20	50	14	0	अनु	28	30	17	04	शुक्ल	17	42	वि	14	00	वृश्चके	28	4	19	**देवशयनी एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 2:00 तक, B	05	40	07	34
34	41	12	शनि	12	49	10	48	ज्ये	22	24	14	38	ब्रह्म	13	58	बा	10	48	ध.दि.2:38	29	5	20	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल, बुधमार्गी रात्रि 11:50, श्रावणे वर्जयेच्छाकम्	05	40	07	33
34	36	13	रवि	03	57	07	16	मूला	15	26	11	52	ऐन्द्र	09	57	तै	07	16	धने	30	6	21	भद्रा अ.रा.परि 3:31 से, गंडमूल दिवा 2:38 तक, स.सि.योग 11:52 तक	05	41	07	32
0	0	14	रवि	54	32	27	31	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
34	35	15	सोम	45	07	23	45	पू.षा.	08	05	08	56	वैधृति विष्कम्भ	05 / 25	47 / 37	वि	13	38	म.दि.2:10	31	7	22	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, गुरू पूर्णिमा, श्रीव्यास पूजा,C**	05	42	07	32

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (16 जुलाई, सन् 2013 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	05	02	02	02	03	06	06	00
29	27	07	20	10	28	10	19	19
35	53	36	17	27	05	49	09	09
31	08	09	08	33	18	06	54	54
57	810	40	21	13	72	00	03	03
15	58	30	15	19	21	49	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुन 3	चित्रा 2	आर्द्रा 1	पुन 1	आर्द्रा 2	आश्ले 4	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अष्टमी प्रात: 5:38

4 शु, 2, 3 सू मं बु बृ, 5, 1 के, 6 चं, 12, श 7 रा, 9, 11, 8, 10

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (22 जुलाई, सन् 2013 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	08	02	02	02	04	06	06	00
05	24	11	19	11	05	10	18	18
18	29	38	22	46	18	55	50	50
59	16	21	58	54	53	27	49	49
57	910	40	09	13	72	01	03	03
16	42	11	50	06	08	24	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुष्य 1	पू.षा. 4	आर्द्रा 2	आर्द्रा 4	आर्द्रा 2	मघा 1	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रात: 5:42

5 शु, मं बु बृ 3, 4 सू, 6, 2, श 7 रा, 1 के, 8, 10, 12, 9 चं, 11

A सिद्धयोग बुध आर्द्रा में रात्रि 12:53 B गण्डमूल सायं 5:04 से स.सि.योग, सूर्य पुष्य में अ.रा.परि 3:35 चतुर्मास व्रत प्रारंभ C भद्रा दिवा 1:38 तक, सा.सू. सिंह में, निरयन दक्षिणायनारम्भ:, कोकिलाव्रत।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-

रथ यात्रा - आषाढ़ शुक्ल द्वितीया पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो सुभद्रा सहित भगवान जगन्नाथ जी को रथ में विराजमान करके यात्रा कराकर पुन: अपने स्थान पर प्रतिष्ठित कर दें, इस दिन जगन्नाथपुरी में रथ यात्रा का विधिवत् समारोह मनाया जाता है, ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) में भी यह यात्रा मनायी जाती है। **देवशयनी एकादशी** – आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम देव शयनी है। यह व्रत महान पुण्य प्रदायक, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाला, सर्वपाप नाशक उत्तम व्रत है। **कोकिला व्रत**– यह व्रत आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण पूर्णिमा तक किया जाता है इसके करने से स्त्रियों को सात जन्म तक सुत, सौभाग्य और सम्पत्ति मिलती है। इस व्रत में मां गौरी का कोकिला के रूप में पूजन किया जाता है। **आकाश लक्षण**– मौसम पर्याप्त गर्म रहेगा, वर्षा होगी, कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी भी पाई जाएगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 श्रावण कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 23 जुलाई से 6 अगस्त तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श श्राव	वि श्राव	अं जुला	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
34	31	1	मंग	36	03	20	08	उ.षा. श्रवण	00 54	47 02	06 27	01 20	प्रीति	21	35	बा	09	55	मकरे	श्राव	8	23	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, भारतीय श्रावण प्रारम्भ, अमृतयोग	05	42	07	31
34	28	2	बुध	27	48	16	51	धनि	48	15	25	02	आयु.	17	51	तै	06	26	कुं.दि.2:07	2	9	24	पंचक प्रारंभ दिवा 2:10, भद्रा प्रारंभ अ.रा. परि 3:28, A	05	43	07	31
34	25	3	गुरु	20	55	14	06	शत	44	0	23	20	सोभा.	14	33	वि	14	06	कुंभे	3	10	25	श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 9:02, भद्रा समाप्त दिवा 2:06	05	44	07	30
34	21	4	शुक्र	15	39	12	0	पू.भा.	41	33	22	22	शोभन	11	48	बा	12	00	मी.सा.4:31	4	11	26		05	44	07	29
34	18	5	शनि	12	24	10	43	उ.भा.	41	05	22	12	अतिगंड	09	43	तै	10	43	मीने	5	12	27	गंडमूल रात्रि 10:12 से, अमृतयोग 10:43 तक, नागपंचमी (मरूदेशे)	05	45	07	29
34	15	6	रवि	11	15	10	16	रेवती	42	52	22	55	सुकर्मा	08	19	व	10	16	मे.रा.10:55	6	13	28	पंचक समाप्ति रात्रि 10:55, भद्रा 10:16 से रात्रि 10:29 तक,B	05	46	07	28
34	11	7	सोम	12	19	10	42	अश्वि	46	38	24	26	धृति	07	36	ब	10	42	मेषे	7	14	29	गण्डमूल रात्रि 12:26 तक, अमृतयोग 10:42 तक	05	46	07	27
34	06	8	मंग	15	16	11	54	भरणी	52	05	26	38	शूल	07	30	कौ	11	54	मेषे	8	15	30	सिद्धयोग	05	47	07	26
34	05	9	बुध	19	52	13	45	कृत्ति	58	50	29	20	गंड	07	55	ग	13	45	वृषे 9:15	9	16	31	भद्रा अ.रा.परि 2:53 से, स.सि. योग	05	48	07	26
34	01	10	गुरु	25	33	16	02	राहि	60	0	0	0	वृद्धि	08	42	वि	16	02	वृषे	10	17	अग	भद्रा सायं 4:02 तक	05	48	07	25
33	56	11	शुक्र	31	46	18	32	रोहि	06	19	08	21	ध्रुव	09	43	बा	18	32	मि.रा.9:53	11	18	2	कामदा एकादशी व्रत, सूर्य आश्लेषा में अ.रा.परि 2:30	05	49	07	24
33	52	12	शनि	38	02	21	03	मृग	14	0	11	26	व्याघा	10	46	कौ	07	48	मिथुने	12	19	3	मंगल पुन. में सायं 7:02	05	50	07	23
33	48	13	रवि	43	55	23	25	आर्द्रा	21	29	14	26	हर्षण	11	46	ग	10	16	मिथुने	13	20	4	प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 11:25, बुध कर्क में रात्रि 9:26	05	50	07	22
33	46	14	सोम	49	10	25	32	पुन	28	26	17	14	वज्र	12	36	वि	12	31	कर्के 10:33	14	21	5	भद्रा दिवा 12:28 तक, मासिक शिवरात्री व्रत	05	51	07	22
33	42	30	मंग	53	40	27	20	पुष्य	34	37	19	43	सिद्धि	13	12	च	14	29	कर्के	15	22	6	देवपितृकार्येऽमावस, हरियाली अमावस, गंडमूल रात्रि 7:43 से,C	05	52	07	21

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (30 जुलाई, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	00	12	02	02	04	06	06	00
12	15	16	23	13	14	11	18	18
57	56	58	26	30	54	09	24	24
27	09	33	10	28	56	17	40	40
57	730	39	56	12	71	02	03	03
22	11	49	40	45	51	19	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पुष्य 3	भर 1	आर्द्रा 4	पुन 2	आर्द्रा 3	पू.फा. 1	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:47

4 सू; 5 शु; 3 मं बु बृ; 2; 1 चं के; 12; 11; 10; 9; 8; 7 श रा; 6

अमावस्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (6 अगस्त, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	03	02	03	02	04	06	06	00
19	09	21	01	14	23	11	18	18
39	21	36	56	58	17	26	03	03
28	11	16	04	35	04	17	07	07
57	738	39	92	12	71	02	03	03
31	28	29	48	22	34	47	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
आश्ले 1	पुष्य 2	पुन 1	पुन 4	आर्द्रा 3	पू.फा 3	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अमावस प्रातः 5:52

4 सू चं बु; 5 शु; 3 मं बृ; 2; 1 के; 12; 11; 10; 9; 8; 7 श रा; 6

A बुध पुन. सायं 6:18 अशून्य शयन व्रत B गण्डमूल, अमृतयोग 10:16 तक, शुक्र पू.फा. में रात्रि 9:47 C बुध पुष्य में अ.रा. परि 3:10

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-

अशून्य शयन व्रत :- भविष्य पुराण में अशून्य शयन व्रत की मीमांसा की गई है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर होने के पाप से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए इस व्रत का विधान किया गया है। अशून्य शयन का अर्थ है, स्त्री का शयन पति से शून्य तथा पति का शयन पत्नी से शून्य नहीं होता। दोनों का ही यावज्जीवन विशुद्ध साहचर्य बना रहता है। श्रावण मास में प्रत्येक मंगला गौरी की पूजा एवं व्रत करने से स्त्रियों को वैवाहिक जीवन में सुख तथा उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। प्रजा में बीमारी-महंगाई अधिक तथा उपद्रव होंगे। **कामिका एकादशी व्रत –** इस व्रत में राधा दामोदर की पूजा करनी चाहिए, शालिग्राम पूजन में तुलसी मञ्जरियां चढ़ाने से तथा द्वादशी को ब्राह्मण भोजन करवाने से अनन्त फल प्राप्त होता है। **आकाश लक्षण –** गर्मी अधिक, रक्त-रक्त

श्रीविक्रमी संवत् 2070 श्रावण शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 7 अगस्त से 21 अगस्त तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे — दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श श्राव	वि श्राव	अं अग	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
33	38	1	बुध	57	15	28	47	आश्ले	40	0	21	53	व्यती	13	32	किं	16	06	सिं.रा.9:53	16	23	7	गण्डमूल, श्रावण शुक्ल प्रतिपदा	05	52	07	20
33	33	2	गुरु	59	52	29	51	मघा	44	28	23	41	वरीय	13	36	बा	17	22	सिंहे	17	24	8	गण्डमूल रात्रि 11:41 तक, शुक्र उ.फा. में रात्रि 1:35, चन्द्रदर्शनम्	05	53	07	19
33	28	3	शुक्र	60	0	0	0	पू.फा.	48	02	25	08	परिघ	13	23	तै	18	15	सिंहे	18	25	9	मधुस्रवा तृतीया, कजली तीज	05	54	07	18
33	25	3	शनि	01	35	06	33	उ.फा.	50	42	26	12	शिव	12	51	ग	06	33	कन्यायां 7:26	19	26	10	भद्रा सायं 6:58 से, वरद चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत	05	55	07	17
33	21	4	रवि	02	22	06	52	हस्त	52	17	26	51	सिद्धि	12	01	वि	06	52	कन्यायां	20	27	11	भद्रा 6:52 तक, शुक्र कन्या में रात्रि 8:50, नागपंचमी, A	05	55	07	16
33	16	5	सोम	02	02	06	45	चित्रा	52	47	27	04	साध्य	10	51	बा	06	45	तु.दि. 3:00	21	28	12	कल्की जयन्ती	05	56	07	15
33	12	6	मंग	0	35	06	11	स्वाती	52	10	26	49	शुभ	09	18	तै	06	11	तुलायां	22	29	13	तुलसी जयन्ती	05	57	07	14
0	0	7	मंग	57	57	29	08	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय	0	0	0	0
33	08	8	बुध	54	02	27	35	विशा	50	15	26	04	शुक्ल ब्रह्म	07 29	22 02	वि	16	25	वृ.रा.8:18	23	30	14	श्रीदुर्गाष्टमी, अमृतयोग, भद्रा प्रातः 5:08 से सायं 4:21 तक, B	05	57	07	13
33	03	9	गुरु	48	52	25	32	अनु	47	03	24	48	ऐन्द्र	26	17	बा	14	37	वृश्चिके	24	31	15	गंडमूल रात्रि 12:48 से, अमृतयोग, स.सि.योग, भरतीय स्वतंत्रता दिवस	05	58	07	12
33	0	10	शुक्र	42	35	23	01	ज्ये	42	47	23	06	वैधृ	23	09	तै	12	20	ध.रा.11:06	25	भाद्र	16	भाद्रपद संक्रांति, सूर्य सिंह में रात्रि 12:06, गंडमूल	05	59	07	11
32	53	11	शनि	35	21	20	08	मूला	37	30	21	0	विष्कुं	19	43	व	09	37	धने	26	2	17	पवित्रा एकादशी व्रत, भद्रा 9:34 से रात्रि 8:08 तक, C	05	59	07	09
32	48	12	रवि	27	23	16	58	पू.षा.	31	33	18	38	प्रीति	16	03	व	06	34	म.रा.11:59	27	3	18	प्रदोष व्रत, मंगल कर्क में अ.रा. परि 1:56, दधि भक्षण त्यागः	06	0	07	08
32	45	13	सोम	19	05	13	39	उ.षा.	25	15	16	07	आयु.	12	15	तै	13	39	मकरे	28	4	19		06	01	07	07
32	41	14	मंग	10	49	10	21	श्रवण	19	04	13	39	सौभा शोभन	08 28	27 47	व	10	21	कुं.रा.12:29	29	5	20	श्रीसत्यनारायण व्रत, रक्षाबन्धन, पञ्चक प्रारंभ रात्रि 12:31, D	06	01	07	06
32	36	15	बुध	02	59	07	14	धनि	13	21	11	23	अतिगंड	25	23	व	07	14	कुंभे	30	6	21	पूर्णिमा व्रत, रक्षाबन्धन (पूरा दिन शुद्ध है) श्रावणी, उपाकर्म	06	02	07	05

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (14 अगस्त, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	06	02	03	02	05	06	06	00
27	21	26	16	16	02	11	17	17
19	31	50	00	35	48	51	37	37
58	13	45	53	44	23	04	42	42
57	828	39	117	11	71	03	03	03
37	24	05	44	50	11	29	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
आश्ले 4	विशा 1	आश्ले 4	पुष्य 4	आर्द्रा 3	उ.फा. 2	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:57

5 · बृ मं · सू 3 · 6 शु · 4 बु · 2 · 7 · चं श रा · 1 के · 8 · 10 · 12 · 9 · 11

पूर्णिमायां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (21 अगस्त, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	10	03	04	02	05	06	06	00
04	03	01	00	17	11	12	17	17
03	04	23	02	57	05	17	15	15
44	05	19	54	05	32	11	26	26
57	871	38	120	11	70	04	03	03
45	56	45	56	18	47	03	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मघा 2	धनि 3	पुन 4	मघा 1	आर्द्रा 4	हस्त 1	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:02

6 शु · 4 मं · श · सू 5 बु · 7 रा · 3 बृ · 8 · 2 · 9 · 11 चं · 1 के · 10 · 12

A नागदंष्ट पंचमी व्रत B बुध आश्लेषा में दिवा 1:25 C गण्डमूल रात्रि 9:00 तक D भद्रा 10:21 से रात्रि 8:47 तक, बुध सिंह में अ.रा. परि 4:55 शुक्र हस्त में 7:20

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- कजली तीज – ग्रीष्म के अवसाव पर काले कजरारे मेघों को आकाश में देखकर, पपीहे की पुकार और वर्षा की फुहार आनन्दित कर देती है। भारतीय लोक जीवन में श्रावण शुक्ल तृतीया को कजली तीज का लोकपर्व मनाता है। नागपञ्चमी – कश्मीर के जाने माने कवि कल्हन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'राजतरंगिनी' में कश्मीर की सम्पूण भूमि को नागों का अवदान माना है। प्रसिद्ध नगर अनन्त नाग का नामकरण इसका ऐतिहासिक प्रमाण है। भारतीय संस्कृति में सायं प्रातः भगवत्स्मरण के साथ अनन्त तथा वासुकि आदि पवित्र नागों का नाम स्मरण भी किया जाता है – अनन्तं वासुकिं शेष पद्मनाभं च कम्बलम्। शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियंतथा।। एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्। सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।। तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।। रक्षाबन्धम्– भद्रायां द्वेन कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।। आकाश लक्षणम् – वर्षा के संकेत अच्छे हैं, फसलों के लिए शुभ हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 22 अगस्त से 5 सितंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श श्राव	वि भाद्र	अं अग.	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
0	0	1	बुध	56	02	28	28	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा तिथि क्षय				
32	32	2	गुरु	50	22	26	12	शत	08	40	09	31	सुकर्मा	22	24	तै	15	16	मी.अ.रा.2:27	31	7	22	सा.सू. कन्या में	0	0	0	0
32	28	3	शुक्र	46	20	24	36	पू.भा.	05	19	08	11	धृति	19	56	व	13	19	मीने	भाद्र	8	23	भद्रा दिवा 1:24 से रात्रि 12:36 तक, मंगल पुष्य में अ.रा.परि 5:50	06	03	07	04
32	21	4	शनि	44	15	23	47	उ.भा.	03	39	07	32	शूल	18	05	ब	12	05	मीने	2	9	24	**श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 8:48, संकट चतुर्थी, A**	06	03	07	03
32	17	5	रवि	44	12	23	46	रेवती	03	57	07	40	गंड	16	52	कौ	11	40	मेषे 7:40	3	10	25	पंचक समाप्त 7:40, गंडमूल	06	04	07	01
32	13	6	सोम	46	10	24	34	अश्वि	6	19	8	37	वृद्धि	16	18	ग	12	04	मेषे	4	11	26	भद्रा रात्रि 12:34 से, गंडमूल दिवा 8:37 तक	06	05	07	0
32	08	7	मंग	49	57	26	06	भरणी	10	34	10	20	ध्रुव	16	19	वि	13	15	वृ.सा.4:52	5	12	27	भद्रा दिवा 1:20 तक, बुध पू.फा. में रात्रि 10:38, अगस्तोदय:	06	05	06	59
32	02	8	बुध	55	07	28	10	कृत्ति	16	25	12	41	व्याघा	16	49	बा	15	04	वृषे	6	13	28	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत, दूर्वाष्टमी व्रत, अमृतयोग, स.सि. योग**	06	06	06	58
31	58	9	गुरु	60	0	0	0	रोहि	23	24	15	29	हर्षण	17	38	तै	17	20	वृषे	7	14	29	**श्रीगुग्गा नवमी**	06	07	06	56
31	55	9	शुक्र	01	05	06	34	मृग	30	52	18	29	वज्र	18	37	ग	06	34	मि.प्रा.4:58	8	15	30	भद्रा रात्रि 7:48 से, सूर्य पू.फा. में रात्रि 8:08	06	07	06	55
31	51	10	शनि	07	17	09	03	आर्द्रा	38	20	21	29	सिद्धि	19	35	वि	09	03	मिथुने	9	16	31	भद्रा 9:03 तक, अमृतयोग 9:03 तक, शुक्र चित्रा में दिवा 3:28	06	08	06	54
31	43	11	रवि	13	09	11	25	पुन	45	18	24	17	व्यती	20	24	बा	11	25	क.सा.5:36	10	17	सित	**अजा एकादशी व्रत**, अमृतयोग 11:25 तक, गुरू पुन. में दिवा 12:44	06	08	06	53
31	40	12	सोम	18	17	13	29	पुष्य	51	25	26	44	वरीय	20	56	तै	13	29	कर्के	11	18	2	**सोम प्रदोष व्रत**, गंडमूल अ.रा. परि 2:44 से अमृतयोग B	06	09	06	51
31	36	13	मंग	22	26	15	09	आश्ले	56	25	28	45	परिघ	21	10	व	15	09	कर्के	12	19	3	भद्रा दिवा 2:09 से अ.रा.परि 3:45 तक, गंडमूल, सिद्ध योग,C	06	10	06	50
31	31	14	बुध	25	23	16	21	मघा	60	0	0	0	शिव	21	01	श	16	21	सिं.प्रा.4:45	13	20	4	**पिठोरी अमावस**	06	10	06	49
31	25	30	गुरु	27	12	17	05	मघा	0	17	06	19	सिद्धि	20	31	ना	17	05	सिंहे	14	21	5	**कुशाग्रहणी अमावस, देवपितृकार्येऽमावस, गंडमूल प्रात: 6:19D**	06	11	06	48
																								06	12	06	46

अष्टम्यां बुधवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (28 अगस्त, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	01	03	04	02	05	06	06	00
10	06	05	13	19	19	12	16	16
48	23	53	53	14	19	47	53	53
37	15	35	03	32	48	06	11	11
58	719	38	114	10	70	04	03	03
58	44	26	33	44	22	35	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मघा 4	कृत्ति 3	पुष्य 1	पू.फा 1	आर्द्रा 4	हस्त 3	स्वा 2	स्वा 4	भर 2

कुण्डली अष्टमी प्रात: 6:07

6 शु; 5 सू. बु; 4 मं; 3 बृ; 2 चं; 1 के; 12; 11; 10; 9; 8; 7 श रा

अमावस्यां गुरूवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (5 सितम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	04	03	04	02	05	06	06	00
18	12	10	28	20	28	13	16	16
33	53	59	35	37	40	25	27	27
08	52	40	15	38	56	40	45	45
58	823	38	104	09	69	05	03	03
12	22	02	46	56	51	07	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.फा. 2	मघा 4	पुष्य 3	उ.फा. 1	पुन 1	चित्रा 2	स्वा 3	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अमावस प्रात: 6:12

6 शु; 5 सू. चं. बु; 4 मं; 3 बृ; 2; 1 के; 12; 11; 10; 9; 8; 7 श रा

A गंडमूल प्रात: 7:32 से, सिद्धयोग B दिवा 1:29 तक, स.सि. योग C स.सि. योग, बुध उ.फा. में अ.रा.परि 3:23, मासिक शिवरात्रि व्रत D बुध कन्या में रात्रि 12:55

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-

जन्माष्टमी व्रत – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को रात के बारह बजे मथुरा नगरी के कारागार में वसुदेव जी को पत्नी देवकी के गर्भ से षोडश कला सम्पन्न भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार हुआ था। इस व्रत से सप्तमी सहित अष्टमी का ग्रहण निषिद्ध है। **पूर्वविद्धाष्टमी या तु उदये नवमी दिने। मुहूर्तमपिसंयुक्ता सम्पूर्णा साऽष्टमी भवेत॥ कला काष्ठामुहूर्त्तापि यदा कृष्णाष्टमी तिथि:। नवम्यांसैवग्राह्यास्यात् सप्तमीसंयुतानहि॥ कुशोत्पाटिनी अमावस** – इस दिन वर्ष भर के धार्मिक कृत्यों तथा श्राद्धादि कृत्यों के लिए कुश उत्पाटन किया जाता है। यह तिथि पूर्वाह्न व्यापिनी ली जाती है। हिन्दुओं के किसी भी धार्मिक क्रिया कलाप में कुश की अनिवार्यता होती है– पूजाकाले सर्वीत्र [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2070 भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 6 सितंबर से 19 सितंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद ऋतौ, उत्तरगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श भाद्र	वि भाद्र	अं सितं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
31	21	1	शुक्र	27	56	17	23	पू.फा.	03	07	07	27	साध्य	19	41	ब	17	23	कं.दि.1:40	15	22	6	भा.शु. प्रतिपदा, शुक्र तुला में 8:40 सिद्धयोग	06	12	06	45
31	16	2	शनि	27	38	17	17	उ.फा.	04	52	08	10	शुभ	18	31	कौ	17	17	कन्यायां	16	23	7	चन्द्रदर्शनम	06	13	06	44
31	10	3	रवि	26	25	16	48	हस्त	05	42	08	31	शुक्ल	17	04	ग	16	48	तु.रा.8:33	17	24	8	हरितालिका तीज व्रत, भद्रा अ.रा.परि 4:23 से, स.सि.योग 8:31,A	06	14	06	42
31	06	4	सोम	24	21	15	59	चित्रा	05	39	08	30	ब्रह्म	15	21	वि	15	59	तुलायां	18	25	9	सिद्धि विनायक चतुर्थी व्रत, भद्रा दिवा 3:59 तक, चंद्रदर्शन निषेध:	06	14	06	41
31	01	5	मंग	21	26	14	50	स्वाती	04	49	08	11	ऐन्द्र	13	21	बा	14	50	वृ.रा.1:43	19	26	10	ऋषिपंचमी (नागपंचमी डुग्गर प्रदेश)	06	15	06	40
30	55	6	बुध	17	47	13	23	विशा	03	10	07	32	वैधृ	11	07	तै	13	23	वृश्चिके	20	27	11	सूर्यषष्ठी व्रत, बुध हस्त में रात्रि 11:36, शुक्र स्वाती में B	06	16	06	38
30	51	7	गुरु	13	21	11	37	अनु ज्येष्ठा	00 57	47 40	06 29	35 21	विष्कुंभ प्रीति	06 29	38 54	व	11	37	वृश्चिके	21	28	12	भद्रा दिवा 11:37 से रात्रि 10:35 तक, गंडमूल प्रात: 6:35 से	06	16	06	37
30	47	8	शुक्र	08	12	09	34	मूला	53	55	27	51	आयु.	26	58	ब	09	34	ध.प्रा.5:21	22	29	13	गंडमूल अ.रा.परि 3:51 तक, सूर्य उ.फा. में दिवा 1:55, C	06	17	06	36
30	41	9	शनि	02	27	07	16	पू.षा.	49	37	26	09	सौभा.	23	51	कौ	07	16	धने	23	30	14	सिद्धयोग 7:16 तक	06	17	06	34
0	0	10	शनि	56	10	28	46	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
30	36	11	रवि	49	35	26	09	उ.षा.	44	58	24	18	शोभन	20	37	व	15	28	मकरे 7:41	24	31	15	पद्मा एकादशी व्रत, भद्रा दिवा 3:27 से रात्रि 2:09 तक, D	06	18	06	33
30	32	12	सोम	42	57	23	30	श्रव	40	17	22	26	अतिगंड	17	21	ब	12	49	मकरे	25	अश्वि	16	आश्विन् संक्रांति, सूर्य कन्या में रात्रि 12:00, वामन द्वादशी,E	06	19	06	32
30	26	13	मंग	36	35	20	58	धनि	35	48	20	39	सुकर्मा	14	08	कौ	10	13	कुंभे 9:31	26	2	17	भौम प्रदोष व्रत, पञ्चक प्रारंभ 9:32, सिद्धयोग आश्विने दुग्ध त्याग:	06	19	06	30
30	21	14	बुध	30	46	18	39	शत	31	53	19	06	धृति	11	04	ग	07	46	कुंभे	27	3	18	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा सायं 6:39 से अ.रा.परि 5:40 तक	06	20	06	29
30	15	15	गुरु	25	52	16	42	पू.भा.	28	55	17	55	शूल गंड	08 29	15 48	व	16	42	मीने 12:10	28	4	19	पूर्णिमा व्रत, श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध, सिद्धयोग	06	21	06	27

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (13 सितम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	08	03	05	02	06	06	06	00
26	00	16	12	21	07	14	16	16
19	05	02	00	54	57	08	02	02
29	02	33	31	02	27	25	19	19
58	853	37	95	09	69	05	03	03
25	39	38	34	02	10	37	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.फा. 4	मूला 1	पुष्य 4	हस्त 1	पुन 1	स्वा 1	स्वा 3	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अष्टमी प्रात: 6:17

6 बु, 4 मं, शु श 7 रा, 5 सू, 3 बृ, 8, 2, 9 चं, 11, 1 के, 10, 12

पूर्णिमायां गुरूवासरे प्रात: 5:30 सगतिका: स्पष्टग्रहा: (19 सितम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	10	03	05	02	06	06	06	00
02	26	19	21	22	14	14	15	15
10	06	47	17	46	51	42	43	43
21	04	32	46	26	03	56	15	15
58	833	37	89	08	68	05	03	03
35	26	19	08	17	35	56	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.फा 2	पू.भा. 2	आश्ले 1	हस्त 4	पुन 1	स्वा 3	स्वा 3	स्वा 3	भर 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रात: 6:21

शु श रा 7, 5, सू 6 बु, 8, 4 मं, 9, 3 बृ, 10, 12, 2, 11 चं, 1 के

A वराह जयंती B अ.रा.परि 2:40 C मंगल आश्लेषा में अ.रा.परि 5:20 D अमृत योग, स. सि.योग E अमृतयोग, स.सि.योग।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **हरितालिका तीज व्रत** – इस दिन स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिये तथा कुमारी कन्याएँ अपने मनोवाञ्छित वर की प्राप्ति के लिए हरितालिका का व्रत करती हैं **"आलिर्भिहरितायस्मात्तस्मात् सा हरितालिका'** सखियों द्वारा हरी गयी। इस व्युत्पत्ति के अनुसार व्रत का नाम हरितालिका हुआ। इस व्रत के अनुष्ठान से नारी को अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। **राधाष्टमी** – नारदपाञ्चरात्र में कहा गया है– **"यथा ब्रह्मस्वरूपश्चश्रीकृष्ण: प्रकृते: पर:। तथा ब्रह्मस्वरूपा न निर्लिप्ता प्रकृते: परा।। आविर्भावस्तिरोभावस्तस्या: कालेननारद। न कृत्रिमा च सा नित्या सत्यरूपा यथा हरि:।।"** जैसे श्रीकृष्ण ब्रह्मस्वरूप हैं तथा प्रकृति से पर हैं वैसे ही श्रीराधा जी भी ब्रह्मस्वरूप, निर्लिप्त तथा प्रकृति से पर हैं। **आकाश लक्षणम्** – रुक-रुक कर वर्षा होने के योग हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 अश्विन कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 20 सितंबर से 4 अक्तूबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद ऋतौ, उत्तर-दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०
30	11	1	शुक्र	22	14	15	15	उ.भा.	27	11	17	14	वृद्धि	27	49	कौ	15	15	मीने
30	06	2	शनि	20	04	14	24	रेवती	26	56	17	09	ध्रुव	26	20	ग	14	24	मे.सा.5:09
30	0	3	रवि	19	40	14	15	अश्वि	28	25	17	45	व्याघा	25	26	वि	14	15	मेषे
29	56	4	सोम	21	04	14	49	भरणी	31	38	19	03	हर्षण	25	04	बा	14	49	वृ.रा. 1:30
29	52	5	मंग	24	12	16	05	कृत्ति	36	32	21	01	वज्र	25	13	तै	16	05	वृषे
29	46	6	बुध	28	48	17	56	रोहि	42	43	23	30	सिद्धि	25	46	व	17	56	वृषे
29	41	7	गुरु	34	26	20	12	मृग	49	47	26	21	व्यती	26	35	वि	07	01	मिथुने 12:53
29	37	8	शुक्र	40	32	22	39	आर्द्रा	57	15	29	20	वरीय	27	30	बा	09	25	मिथुने
29	31	9	शनि	46	33	25	04	पुन	60	0	0	0	परिघ	28	21	तै	11	53	क.रा.1:30
29	26	10	रवि	51	50	27	12	पुन	04	22	8	12	शिव	28	59	व	14	11	कर्के
29	22	11	सोम	56	07	28	55	पुष्य	10	45	10	46	सिद्धि	29	16	ब	16	07	कर्के
29	16	12	मंग	58	57	30	04	आश्ले	16	01	12	53	साध्य	29	07	कौ	17	34	सिंहे 12:52
29	11	13	बुध	60	0	0	0	मघा	19	51	14	26	शुभ	28	31	ग	18	26	सिंहे
29	06	13	गुरु	0	19	6	38	पू.फा.	22	16	15	25	शुक्ल	27	28	व	06	38	कं.अ.रा.3:35
29	0	14	शुक्र	0	15	06	37	उ.फा.	23	20	15	51	ब्रह्म	25	59	श	06	37	कन्यायां
0	0	30	शुक्र	58	52	30	04	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

तिथि	वार	श भाद्र	वि अश्वि	अं सितं	विवरण भारतीय स्टै॰ समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
1	शुक्र	29	5	20	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा गंडमूल सायं 5:14 से, बुध चित्रा में A	06	21	06	26
2	शनि	30	6	21	पंचक समाप्त सायं 5:09, भद्रा अ.रा.परि 2:19से, गंडमूल, द्वितीया श्राद्ध	06	22	06	25
3	रवि	31	7	22	श्रीगणेश चतुर्थी, चंद्रोदय रात्रि 8:00 भद्रा दिवा 2:15 तक, B	06	23	06	23
4	सोम	अश्वि	8	23	शुक्र विशाखा में सायं 5:57, चतुर्थीश्राद्ध, भारतीय आश्विन शुरू	06	23	06	22
5	मंग	2	9	24	स.सि.योग, पञ्चमी श्राद्ध	06	24	06	21
6	बुध	3	10	25	भद्रा सायं 5:56 से, स.सि.योग, बुध तुला मे 6:34, षष्ठी श्राद्ध	06	24	06	19
7	गुरु	4	11	26	भद्रा प्रात: 7:04 तक, सूर्य हस्त में अ.रा.परि 5:28, महालक्ष्मी व्रत, C	06	25	06	18
8	शुक्र	5	12	27	अशोकाष्टमी, अष्टमी श्राद्ध	06	26	06	17
9	शनि	6	13	28	सिद्धयोग, सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्, नवमी श्राद्ध	06	26	06	15
10	रवि	7	14	29	भद्रा दिवा 2:08 से अ.रा.परि 3:12 तक, दशमी श्राद्ध	06	27	06	14
11	सोम	8	15	30	इन्द्रा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध, गंडमूल दिवा 10:46 से,D	06	28	06	13
12	मंग	9	16	अक्तू	सन्यासीनांश्राद्धम्, गंडमूल, म.सि.योग 12:53 तक, द्वादशी श्राद्ध	06	28	06	11
13	बुध	10	17	2	प्रदोष व्रत, गंडमूल दिवा 2:26 तक, अमृतयोग, शुक्र वृश्चिक E	06	29	06	10
13	गुरु	11	18	3	भद्रा प्रात: 6:38 से सायं 6:37 तक, चतुर्दशी श्राद्ध, F	06	30	06	09
14	शुक्र	12	19	4	सर्वपितृश्राद्धम्, देवपितृकार्येऽमावस, श्राद्ध समाप्त,	06	31	06	07
30	शुक्र	0	0	0	अमावस तिथि क्षय	0	0	0	0

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (27 सितम्बर, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	02	03	06	02	06	06	06	00
09	08	24	02	23	23	15	15	15
59	13	44	40	49	56	31	17	17
58	16	41	11	04	36	48	49	49
58	711	36	80	07	67	06	03	03
53	40	55	07	13	41	19	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
उ.फा. 4	आर्द्रा 1	आश्ले 3	चित्रा 3	पुन 2	विशा 2	स्वा 3	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:26

बु शु श रा 7
5
8
6 सू
4 मं
चं 3 वृ
9
10
12
2
11
1 के

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (4 अक्तूबर, सन् 2013 ई॰)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	05	03	06	02	07	06	06	00
16	04	29	11	24	01	16	14	14
52	18	01	31	36	47	16	55	55
50	43	55	58	25	39	53	34	34
59	795	36	69	06	66	06	03	03
07	29	32	41	09	44	36	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
हस्त 3	उ.फा. 3	आश्ले 4	स्वा 2	पुन 2	विशा 4	स्वा 3	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अमावस प्रातः 6:31

श रा बु 7
5
8 शु
सू 6 चं
4 मं
3 वृ
9
10
12
2
11
1 के

A दिवा 2:30, प्रतिपदा श्राद्ध सिद्धयोग B गंडमूल सायं 5:45 तक स.सि.योग, तृतीया श्राद्ध, सा.सू. तुला में C सप्तमी श्राद्ध D स.सि.योग 10:46 तक, बुध स्वाती में 6:34 E में दिवा 2:55, त्रयोदशी श्राद्ध F मासिक शिवरात्री व्रत।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- पितृपक्ष – अश्विन कृष्ण प्रतिपदा से अमावस तक पंद्रह दिन पितृपक्ष के नाम से विख्यात है। इन पंद्रह दिनों में अपने पितरों को नित्य जल देना तथा उनकी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध करना चाहिए। पूर्णिमा पर देहान्त होने पर भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को श्राद्ध किया जाता है– श्राद्ध पितृपक्ष की बहुत महिमा है– **"आयु पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिबलंश्रियम्॥ पशून् सौख्यंधनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥"** धर्मशास्त्र में लिखा है पितरों को पिण्डदान करने वाला गृहस्थ दीर्घायु, पुत्र पौत्रादि, यश, स्वर्ग पुष्टि बल, लक्ष्मी, पशु सुख साधन तथा धनधान्यादि की प्राप्ति करता है। **लक्ष्मी व्रत –** सौभाग्यवती स्त्रियां पुत्र प्राप्ति की तथा पुत्र सुख की इच्छा के लिये यह व्रत करती हैं। 4 अक्तूबर को ही पितृ विसर्जन करना ठीक है। **आकाश लक्षण –** सामान्य वर्षा के योग हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 आश्विन शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 5 अक्तूबर से 18 अक्तूबर तक सूर्यादक्षिणायणे, शरद ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श आश्वि	वि आश्वि	अं अक्तू	. विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
28	56	1	शनि	56	17	29	03	हस्त	23	09	15	47	ऐन्द्र	24	07	किं	17	37	तु.अ.रा.3:35	13	20	5	शरद नवरात्र प्रारंभ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, मंगल सिंह में A	06	31	06	06
28	51	2	रवि	52	47	27	40	चित्रा	21	51	15	17	वैधृ	21	56	बा	16	24	तुलायां	14	21	6	चन्द्रदर्शनम्	06	32	06	05
28	47	3	सोम	48	32	25	58	स्वाती	19	47	14	28	विष्कुं	19	30	तै	14	51	तुलायां	15	22	7		06	33	06	04
28	41	4	मंग	43	45	24	04	विशा	17	04	13	23	प्रीति	16	52	व	13	02	वृश्चिके 7:40	16	23	8	भद्रा दिवा 1:01 से रात्रि 12:04 तक	06	33	06	02
28	36	5	बुध	38	33	22	0	अनु	13	49	12	6	आयु.	14	05	ब	11	03	वृश्चिके	17	24	9	गंडमूल दिवा 12:06 से, **स.सि.योग**	06	34	06	01
28	32	6	गुरु	33	07	19	50	ज्ये	10	20	10	43	सौभा.	11	13	कौ	08	55	धने 10:43	18	25	10	गंडमूल, सूर्य चित्रा में सायं 6:25	06	35	06	0
28	28	7	शुक्र	27	36	17	38	मूला	06	39	09	15	शोभन अतिगंड	08 29	17 21	ग	06	44	धने	19	26	11	भद्रा सायं 5:38 से अ.रा.परि 4:32 तक, गंडमूल दिवा 9:15 तक,B	06	35	05	59
28	21	8	शनि	22	04	15	26	पू.षा. उ.षा.	02 59	57 20	07 30	47 21	सुकर्मा	26	26	ब	15	26	म.दि.1:25	20	27	12	श्रीदुर्गाष्टमी, बुध विशाखा में 11:55, सरस्वती पूजन पू.षा. नक्षत्र	06	36	05	57
28	16	9	रवि	16	39	13	17	श्रव	55	57	29	01	धृति	23	35	कौ	13	17	मकरे	21	28	13	दुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी, सरस्वती विसर्जन श्रवण नक्षत्र में	06	37	05	56
28	12	10	सोम	11	32	11	15	धनि	52	57	27	49	शूल	20	51	ग	11	15	कुं.सा.4:23	22	29	14	पंचक प्रारंभ सायं 4:25, भद्रा रात्रि 10:19 से	06	38	05	55
28	08	11	मंग	06	54	09	24	शत	50	30	26	51	गंड	18	17	वि	09	24	कुंभे	23	30	15	पापांकुशा एकादशी व्रत, भद्रा 9:24 तक, अमृतयोग 9:24 तक	06	38	05	54
28	03	12	बुध	02	47	07	46	पू.भा.	48	45	26	10	वृद्धि	15	55	बा	07	46	मी.रा. 8:18	24	31	16	प्रदोष व्रत, कार्तिके द्विदलं त्यजेत्	06	39	05	53
0	0	13	बुध	59	30	30	28	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
27	56	14	गुरु	57	12	29	34	उ.भा.	47	58	25	52	ध्रुव	13	50	ग	17	58	मीने	25	कार्ति	17	**कार्तिक संक्रांति**, सूर्य तुला में 12:00, गंडमूल अ.रा.परि 1:52 से,C	06	40	05	51
27	52	15	शुक्र	56	05	29	07	रेवती	48	17	26	0	व्याघा	12	04	वि	17	16	मे.रा.2:00	26	2	18	**श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत**, शरद पूर्णिमा, श्रीवाल्मीकि जयंती, D	06	41	05	50

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (12 अक्तूबर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	08	04	06	02	07	06	06	00
24	25	03	19	25	10	17	14	14
46	18	52	46	21	37	10	30	30
44	34	24	46	06	06	36	09	09
59	851	36	49	04	65	06	03	03
22	00	02	13	50	23	51	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
चित्रा 1	पू.षा. 4	मघा 2	स्वा 4	पुन 2	अनु 3	स्वा 4	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:36

7 श बु रा | 6 सू | 5 मं | 4 | 3 बृ | 2 | 1 के | 12 | 11 | 10 | 9 चं | 8 शु

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (18 अक्तूबर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	11	04	06	02	07	06	06	00
00	18	07	23	25	17	17	14	14
43	41	27	38	47	06	52	11	11
24	19	38	05	32	15	05	04	04
59	792	35	20	03	64	07	03	03
33	58	39	33	47	05	00	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व आ
चित्रा 3	रेव 1	मघा 3	विशा 2	विशा 2	ज्ये 1	स्वा 4	स्वा 3	भर 1

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:41

7 सू बु श रा | 6 | 5 मं | 4 | 3 बृ | 2 | 1 के | 12 चं | 11 | 10 | 9 | 8 शु

A रात्रि 7:38, शुक्र अनुराधा में दिवा 2:45 **B** अमृतयोग, सरस्वती आवाहन मूल नक्षत्रे, भद्रकाली अवतार **C** अमृतयोग शुक्र ज्येष्ठा में रात्रि 7:40 **D** कार्तिकस्नान प्रारंभ, पंचक रात्रि 2:00 समाप्त, भद्रा सायं 5:20 तक, गंडमूल, स.सि. योग।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- शारदीय नवरात्रे – विजयादशमी – शरत्पूर्णिमा ये तीनों पर्व परस्पर सूत्र में आबद्ध हैं अतएव आश्विन् शुक्ल पक्ष को शास्त्रों में देवी पक्ष कहा गया है– **"नवशक्तिसमायुक्तांनवरात्रं तदुच्यते"** – नौ शक्तियों से युक्त होने के कारण नवरात्र कहा गया है– **दैत्यनाशार्थवचनो दकारः परिकीर्तितः। उकारो विघ्ननाशस्य वाचको वेदसम्मः॥ रेफो रोगघ्नवचनो गश्च पापघ्नवाचकः। भयशत्रुघ्नवचनश्चाकारःपरिकीर्तितः॥** देवी पुराण के अनुसार दुर्गा शब्द में "दकार' दैत्यनाशक, उकार विघ्ननाशक, रेफ रोगनाशक – गकार पापनाशक तथा आकार भयशत्रुनाशक है अतएव दुर्गा 'दुर्गातिनाशिनी' है। सर्वप्रथम भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने इस शारदीय नवरात्र पूजा का प्रारम्भ समुद्र तट पर किया था, अतएव यह राजस पूजा है। विजयदशमी के दिन श्रीरामचन्द्र जी ने लंका विजय के लिए प्रस्थान किया था– **अथविजयदशम्यामाश्विने शुक्लपक्षे दशमुखनिधनाय प्रस्थितोरामचन्द्रः। द्विरदविधुमहाब्जैर्यूथनाथैस्तथाऽन्यैः कपिभिरपरिमाणैः व्याप्तभूदिक्खचक्रैः॥ शरद पूर्णिमा** – शरत्पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा की चान्दनी में अमृत निवास करता है, इसलिये उसकी किरणों से अमृतत्व और आरोग्य की प्राप्ति सुलभ है। **आकाश लक्षणम्** – सामान्य वर्षा के योग हैं, प्रायशः मौसम खुशक रहेगा।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 कार्तिक कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 19 अक्तूबर से 3 नवंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, शरद/हेमंत ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श अश्वि	वि कार्ति	अं अक्टू	विवरण भारतीय स्टे० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
27	48	1	शनि	56	15	29	12	अश्वि	49	52	26	39	हर्षण	10	42	बा	17	05	मेषे	27	3	19	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा, गंडमूल अ.रा.परि 2:39 तक	06	41	05	49
27	43	2	रवि	57	52	29	52	भरणी	52	50	27	51	वज्र	09	45	तै	17	28	मेषे	28	4	20		06	42	05	48
27	38	3	सोम	60	0	0	0	कृत्ति	57	10	29	36	सिद्धि	09	14	व	18	25	वृषे 10:14	29	5	21	भद्रा सायं 6:29 से, बुध वक्री सायं 4:00, बुधास्त पश्चिमे	06	43	05	47
27	33	3	मंग	0	54	07	06	रोहि	60	0	0	0	व्यती	09	09	वि	07	06	वृषे	30	6	22	श्रीगणेशचतुर्थी, **करवाचौथ व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८:०४, A**	06	44	05	46
27	30	4	बुध	5	15	8	51	रोहि	02	47	07	52	वरीय	09	28	बा	08	51	मि.रा.9:09	कार्ति	7	23	स.सि. योग 7:52 तक, सूर्य स्वाती में अ.रा.परि 4:55, B	06	45	05	45
27	26	5	गुरु	10	42	11	02	मृग	09	27	10	32	परिघ	10	06	तै	11	02	मिथुने	2	8	24	सिद्धयोग 11:02 तक, स्कन्द षष्ठी	06	45	05	44
27	21	6	शुक्र	16	44	13	28	आर्द्रा	16	41	13	27	शिव	10	56	व	13	28	मिथुने	3	9	25	भद्रा दिवा 1:28 से अ.रा.परि 2:43 तक, सिद्धयोग दिवा 1:28 तक	06	46	05	43
27	16	7	शनि	22	56	15	58	पुन	24	01	16	24	सिद्धि	11	49	ब	15	58	कर्के 9:40	4	10	26	**अहोई अष्टमी**	06	47	05	42
27	11	8	रवि	28	41	18	17	पुष्य	30	58	19	12	साध्य	12	35	कौ	18	17	कर्के	5	11	27	गंडमूल रात्रि 7:12 से, रविपुष्य योग, मंगल पू.फा. में अ.रा.परि 4:38	06	48	05	41
27	06	9	सोम	33	28	20	13	आश्ले	36	58	21	37	शुभ	13	06	तै	07	19	सिं.रा.9:37	6	12	28	गंडमूल	06	49	05	40
27	02	10	मंग	36	52	21	35	मघा	41	37	23	29	शुक्ल	13	13	व	08	59	सिंहे	7	13	29	भद्रा 8:54 से रात्रि 9:35 तक, गंडमूल रात्रि 11:29 तक, C	06	50	05	39
26	58	11	बुध	38	35	22	17	पू.फा.	44	38	24	42	ब्रह्म	12	51	ब	10	02	सिंहे	8	14	30	**रमा एकादशी व्रत**, शुक्र (मूल 1) धनु में दिवा 2:27	06	50	05	38
26	53	12	गुरु	38	30	22	16	उ.फा.	45	55	25	14	ऐन्द्र	11	56	कौ	10	22	कन्यायां 6:54	9	15	31	गोवत्सद्वादशी	06	51	05	37
26	48	13	शुक्र	36	40	21	33	हस्त	45	30	25	05	वैधृ	10	28	ग	10	00	कन्यायां	10	16	नवं	**प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री व्रत, धनतेरस, धन्वन्तरी जयंती, D**	06	52	05	36
26	43	14	शनि	33	16	20	12	चित्रा	43	33	24	19	विष्कुम्भ प्रीति	08 29	28 59	वि	08	57	तुलायां 12:45	11	17	2	दीपदान, **नरक चतुर्दशी**, भद्रा 8:52 तक, सिद्धयोग	06	53	05	35
26	38	30	रवि	28	31	18	19	स्वाती	40	18	23	02	आयु.	27	07	च	07	19	तुलायां	12	18	3	देवपितृकार्येऽमावस, **दीपावली, महालक्ष्मीपूजा**, कुबेर, बली पूजा	06	54	05	34

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (27 अक्तूबर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	03	04	06	02	07	06	06	00
09	09	12	22	26	26	18	13	13
40	49	46	08	15	33	55	42	42
39	37	08	10	01	35	42	28	28
59	720	35	52	02	61	07	03	03
53	22	03	50	06	37	00	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
स्वा 1	पुष्य 2	मघा 4	विशा 1	पुन 2	ज्ये 3	स्वा 4	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:48

8 शु, 7 सू. बु श रा, 6, 5 मं, 4 चं, 3 बृ, 2, 1 के, 12, 11, 10, 9

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (3 नवम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	06	04	06	02	08	06	06	00
16	09	16	14	26	03	19	13	13
40	40	49	02	25	37	45	20	20
32	55	55	37	42	47	54	13	13
60	848	34	13	00	59	07	03	03
07	57	31	07	45	07	12	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
स्वा 4	स्वा 1	पू.फा 2	स्वा 3	पुन 2	मूला 2	स्वा 4	स्वा 3	भर 1

कुण्डली अमावस प्रातः 6:54

8, 7 श सू बु चं रा, 6, 5 मं, 4, 3 बृ, 2, 1 के, 12, 11, 10, 9 शु

A सिद्धयोग 7:06 तक, भद्रा प्रातः 7:06 तक
B सा.सू. वृश्चिक में C बुध स्वाती में 10:37
D श्री हनुमान जयंती।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- करवा चौथ — यह व्रत कार्तिक कृष्ण चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी में करना चाहिए। यदि दो दिन चन्द्रोदय व्यापिनी हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्व विद्धा लेनी चाहिए। वास्तव में करवाचौथ पति और पत्नी दोनों के लिये नवप्रणय निवेदन तथा एक दूसरे के प्रति अपार प्रेम, त्याग एवं उत्सर्ग की चेतना लेकर आता है— इस दिन स्त्रियां पूर्ण सुहागिन रूप धारण कर वस्त्राभूषणों को पहनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देकर अखण्ड सुहाग की प्रार्थना करती हैं। दिन भर व्रत के पश्चात् यह प्रण भी लेती हैं कि वे मन, वचन एवं कर्म से पति के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखेंगी। **अहोई अष्टमी** — जम्मू प्रान्त में अहोई अष्टमी का व्रत बड़ी श्रद्धा के साथ घर-घर में किया जाता है। इस व्रत के करने से पति एवं सन्तान का कल्याण होता है। दीपावली — धनत्रयोदशी से यमद्वितीया तक ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री भगवती लक्ष्मी का समाराधन पर्व दीपावली महोत्सव है। दीपावली की [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2070 कार्तिक शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 4 नवबर से 17 नवबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श कार्ति	वि कार्ति	अं नवं	विवरण भारतीय स्टे० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
26	33	1	सोम	22	44	16	01	विशा	36	08	21	23	सोभा.	23	58	ब	16	01	वृ.दि.3:48	13	19	4	का.शु. प्रतिपदा, **गोवर्धन पूजा**, शनि विशाखा में अ.रा.परि 4:33	06	55	05	33
26	30	2	मंग	16	15	13	26	अनु	31	20	19	28	शोभन	20	36	कौ	13	26	वृश्चिके	14	20	5	**भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा**, गंडमूल रात्रि 7:28 से, चन्द्रदर्शनम्	06	56	05	32
26	28	3	बुध	09	22	10	41	ज्ये	26	13	17	26	अतिगंड	17	09	ग	10	41	घ.सा.5:26	15	21	6	भद्रा रात्रि 9:17 से, गंडमूल, अमृतयोग 10:41 तक, A	06	56	05	32
26	23	4	गुरु	02	22	07	54	.मूला	21	06	15	24	सुकर्मा	13	42	वि	07	54	धने	16	22	7	भद्रा 7:54 तक, गंडमूल दिवा 3:24 तक, मेल बाबा बल्लो, B	06	57	05	31
0	0	5	गुरु	55	35	29	12	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	पंचमी तिथि क्षय	0	0	0	0
26	18	6	शुक्र	49	15	26	41	पू.षा.	16	16	13	29	धृति	10	20	कौ	15	55	म.रा.7:02	17	23	8	सिद्धयोग	06	58	05	30
26	13	7	शनि	43	38	24	27	उ.षा.	11	59	11	47	शूल गंड	07 28	09 11	ग	13	32	मकरे	18	24	9	भद्रा रात्रि 12:27 से	06	59	05	29
26	11	8	रवि	38	48	22	32	श्रव	08	27	10	23	वृद्धि	25	30	वि	11	27	कुं.रा.9:49	19	25	10	**गोपाष्टमी**, पंचक प्रारंभ रात्रि 9:52, भद्रा दिवा 11:29, C	07	0	05	29
26	06	9	सोम	34	56	21	0	धनि	05	49	09	21	ध्रुव	23	07	बा	09	43	कुंभे	20	26	11	**अक्षय नवमी**	07	01	05	28
26	01	10	मंग	32	06	19	53	शत	04	07	08	41	व्याघा	21	03	तै	08	23	मी.अ.रा.2:27	21	27	12		07	02	05	27
25	58	11	बुध	30	18	19	11	पू.भा.	03	27	08	26	हर्षण	19	20	व	07	29	मीने	22	28	13	**देव प्रवोधिनी एकादशी व्रत**, भद्रा 7:32 से रात्रि 7:11 तक, D	07	03	05	27
25	55	12	गुरु	29	37	18	55	उ.भा.	03	52	08	37	वज्र	17	57	ब	07	00	मीने	23	29	14	गंडमूल दिवा 8:37 से, श्री नेहरू जयंती	07	04	05	26
25	51	13	शुक्र	30	03	19	06	रेवती	05	19	09	12	सिद्धि	16	54	कौ	07	00	मेषे 9:12	24	30	15	पंचक समाप्त 9:12, गंडमूल, सं.सि. योग 9:12 तक, E	07	04	05	25
25	48	14	शनि	31	31	19	42	अश्वि	07	49	10	13	व्यती	16	11	ग	07	21	मेषे	25	मार्ग	16	**मार्गशीर्ष संक्रांति** सूर्य वृश्चिक में 11:48, भद्रा रात्रि 7:42 से F	07	05	05	25
25	43	15	रवि	34	06	20	45	भरणी	11	22	11	39	वरीय	15	49	वि	08	10	वृ.सा. 6:04	26	2	17	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत**, भद्रा 8:12 तक, H	07	06	05	24

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (10 नवम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	09	04	06	06	08	06	06	00
23	20	20	08	26	10	20	12	12
41	27	49	30	26	22	36	57	57
57	33	45	43	40	21	17	57	57
60	839	33	04	00	55	07	03	03
18	06	54	21	39	51	12	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
विशा 2	श्रवण 4	पू.फा 3	स्वा 1	विशा 2	मूल 4	विशा 1	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:00

8, 6, 9 शु, 7 सू बु बृ श रा, 5 मं, 10 चं, 4, 11, 1 के, 3, 12, 2

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (17 नवम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	00	04	06	02	08	06	06	00
00	23	24	11	26	16	21	12	12
44	27	45	27	17	40	26	35	35
33	23	13	38	51	47	29	42	42
60	744	33	56	02	51	07	03	03
29	04	16	58	03	28	07	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
विशा 4	भर 4	पू.फा. 4	स्वा 2	पुन 2	पू.षा. 2	विशा 1	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:06

9 शु, श रा बु, 10, 8 सू, 7, 6, 11, 5 मं, 12, 2, 4, 1 चं के, 3 बृ

A सूर्य विशाखा में दिवा 1:05, दूर्वागणपति व्रत, बुध उदय पूर्व में B मथवार जम्मू, सिद्ध योग 7:54 पश्चात, वक्री गुरू 10:30 सौभाग्य पंचमी C बुध मार्गी रात्रि 2:40 D शुक्र पू.षा. में 10:46, तुलसी विवाह, चतुर्मास्य व्रत समाप्ति, भीष्म पंचक प्रारंभ E प्रदोषः वैकुण्ठ चतुर्दशी F गंडमूल दिवा 10:13 तक, सिद्धयोग H भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक स्नान पूर्ति, श्रीनानक जयंती।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **अन्नकूट** – कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है इससे भगवान् विष्णु की प्रसन्नता प्राप्त होती है। **"कार्त्तिकस्य सिते पक्षे अन्नकूटं समाचेरत्। गोवर्धनोत्सवं चैव श्रीविष्णुः प्रीयतामिति॥"** **हरिप्रवोधिनी एकादशी व्रत**– भगवान ने भाद्रपदमास की शुक्ल एकादशी को महापराक्रमी शरवासुर नामक राक्षस को मारा था और उसके बाद थकावट दूर करने के लिए क्षीर सागर में जाकर सो गए, वे वहाँ चार मास तक सोते रहे और कार्त्तिक शुक्ल एकादशी को जगे, अतः इस एकादशी का नाम हरिप्रवोधनी एकादशी पड़ गया। इस एकादशी को रात्रि जागरण का विशेष महत्त्व है– मांगलिक ध्वनि तथा निम्न मंत्रों द्वारा भगवान् को जगाने की प्रार्थना करनी चाहिए– **"उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्दत्यज निद्रां जगत्पते। त्वयिसुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम्॥ उत्तिष्ठोतिष्ठ वाराह दंष्टोद्धृतवसुन्धरे। हिरण्याक्षप्राणघातिन त्रैलोक्येमंगलं कुरू॥** **भीष्म पञ्चक** – 13 नवम्बर से 17 नवम्बर तक भीष्म पञ्चक रहेंगे। **आकाशलक्षणम** – जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में तेज वर्षा होने की सम्भावना है।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 18 नवंबर से 2 दिसंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट
25	41	1	सोम	37	43	22	13	कृति	15	56	13	30	परिघ	15	45	बा	09	26
25	36	2	मंग	42	20	24	05	रोहि	21	29	15	44	शिव	16	0	तै	16	06
25	33	3	बुध	47	50	26	18	मृग	27	53	18	19	सिद्धि	16	31	ग	13	09
25	31	4	गुरु	53	55	28	45	आर्द्रा	34	56	21	09	साध्य	17	15	ब	18	30
25	26	5	शुक्र	60	0	0	0	पुन	42	20	24	08	शुभ	18	06	कौ	18	01
25	23	5	शनि	0	14	07	18	पुष्य	49	42	27	06	शुक्ल	18	58	तै	07	18
25	22	6	रवि	06	27	09	48	आश्ले	56	35	29	51	ब्रह्म	19	43	व	09	48
25	18	7	सोम	11	59	12	01	मघा	60	0	0	0	ऐन्द्र	20	12	ब	12	01
25	16	8	मंग	16	16	13	45	मघा	02	24	08	12	वैधृ	20	17	कौ	13	45
25	13	9	बुध	18	59	14	51	पू.फा.	06	47	09	58	विष्कु	19	52	ग	14	51
25	11	10	गुरु	19	49	15	12	उ.फा.	09	22	11	01	प्रीति	18	50	वि	15	12
25	06	11	शुक्र	18	36	14	44	हस्त	10	02	11	18	आयु.	17	11	बा	14	44
25	03	12	शनि	15	24	13	28	चित्रा	08	42	10	47	सौभा.	14	55	तै	13	28
25	02	13	रवि	10	25	11	29	स्वाती	05	37	9	34	शोभन	12	05	व	11	29
25	01	14	सोम	03	57	08	54	विशा अनु	01 55	02 12	07 29	44 25	अतिगंड सुकर्मा	08 29	45 03	श	08	54
0	0	30	सोम	56	20	29	52	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

तिथि	चन्द्रचार भ.अंग्रे.	श. कार्ति	वि. मार्ग	अं. नव	विवरण भारतीय स्टै. समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
1	वृषे	27	3	18	मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा	07	07	05	24
2	मि.अ.रा.4:58	28	4	19	सूर्य अनुराधा में रात्रि 7:10	07	08	05	23
3	मिथुने	29	5	20	भद्रा दिवा 1:11 से रात्रि 2:18 तक, अमृतयोग, मंगल उ.फा. में सायं 4:32	07	09	05	23
4	मिथुने	30	6	21	श्रीगणेश चतुर्थी, अमृतयोग, चंद्रोदय रात्रि 8:25	07	10	05	23
5	क.रा.5:23	मार्ग	7	22	स.सि.योग	07	11	05	22
5	कर्के	2	8	23	गंडमूल अ.रा.परे 3:06 से	07	12	05	22
6	सिं.अ.रा.5:51	3	9	24	भद्रा 9:48 से रात्रि 10:54 तक, गंडमूल, अमृतयोग 9:48 तक A	07	13	05	22
7	सिंहे	4	10	25	भैरवाष्टमी, गंडमूल, अमृतयोग 12:01 तक	07	13	05	21
8	सिंहे	5	11	26	गंडमूल दिवा 8:12 तक, सिद्धयोग, मंगल कन्या में रात्रि 7:30	07	14	05	21
9	कं.रा.4:18	6	12	27	भद्रा अ.रा.परे 3:01 से	07	15	05	21
10	कन्यायां	7	13	28	भद्रा दिवा 3:12 तक	07	16	05	21
11	तु.रा.11:08	8	14	29	उत्पन्ना एकादशी व्रत, सिद्धयोग, शुक्र उ.षा. में अ.रा.परे 3:16	07	17	05	20
12	तुलायां	9	15	30	प्रदोषव्रत, शनि उदय पूर्व में	07	18	05	20
13	तु.रा.2:14	10	16	दिस	भद्रा 11:29 से रात्रि 10:11 तक, बुध वृश्चिक में 10:03, B	07	19	05	20
14	वृश्चिके	11	17	2	देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस, स.सि.योग, C	07	19	05	20
30	0	0	0	0		0	0	0	0

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (26 नवम्बर, सन 2013 ई.)

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	04	04	06	02	08	06	06	00
09	11	29	22	25	23	22	12	12
49	57	41	23	52	55	30	07	07
46	00	02	55	23	08	06	05	05
60	742	32	85	07	43	06	03	03
43	36	20	36	47	45	58	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
अनु	मघा	उ.फा.	विशा	पुन	पू.षा.	विशा	स्वा	अश्वि
2	4	1	1	3	4	1	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:14

9 शु
रा बु श
7
10
सू 8
6
चं
11
5 मं
12
2
4
1 के
3 गु

अमावस्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (2 दिसम्बर, सन 2013 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	07	05	07	02	08	06	06	00
15	01	02	01	25	28	23	11	11
54	58	53	13	26	01	11	48	48
27	27	18	02	57	16	35	00	00
60	884	31	90	04	36	06	03	03
51	02	37	44	52	32	49	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
अनु	विशा	उ.फा.	विशा	पुन	उ.षा.	विशा	स्वा	अश्वि
4	4	2	4	2	1	1	2	4

कुण्डली अमावस प्रातः 7:19

9 शु
श रा
8
7
10
सू चं
बु
6 मं
11
5
12
2
4
1 के
3 गु

A बुध विशाखा में दिवा 12:02 B मासिक शिवरात्री व्रत C सूर्य ज्येष्ठा में रात्रि 11:25

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- काल भैरवाष्टमी – भगवान् शंकर का दुष्टों को दण्ड देने वाला कालभैरव स्वरूप अत्यन्त रौद्र, भयानक विकराल तथा प्रचण्ड है। शिव पुराण की शतरुद्रसंहिता के अनुसार परमेश्वर सदाशिव ने मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी को भैरवरूप में अवतार लिया अतः उन्हें साक्षात् भगवान् शंकर ही मानना चाहिए– "भैरवः पूर्णरूपोहिशंकरस्य परात्मनः। मूढास्तं वै न जानन्तिमोहिताशिवमायया॥" उत्पन्ना एकादशी – इस व्रत से मनुष्य निर्धन से धनी, निर्बल से बलवान, पुत्र रहित पुत्र सहित होकर अन्त में बैकुण्ठ प्राप्त करता है। जम्मू के समीप पुरमंडल ग्राम में गुप्त गंगा के किनारे एक प्राचीन शिव मन्दिर है। पुरमण्डल में मार्गशीर्ष त्रयोदशी से अमावस्या तक मेला लगता है। पुराणों में स्नान का महत्त्व [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2070 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 3 दिसंबर से 17 दिसंबर तक सूर्योदक्षिणायणे, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श मार्ग	वि मार्ग	अं दिसं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू			
घटी	पल																							सू.	उ.	सू.	अ.
24	58	1	मंग	47	55	26	31	ज्ये	48	40	26	49	धृति	25	05	कि	16	13	ध.रा.2:49	12	18	3	मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा, गंडमूल, बुध अनुराधा में दिवा 3:03, अमृतयोग	07	20	05	20
24	56	2	बुध	39	13	23	03	मूला	41	50	24	06	शूल	21	01	बा	12	47	धने	13	19	4	गंडमूल रात्रि 12:06 तक, चंद्रदर्शनम्	07	21	05	20
24	53	3	गुरु	30	36	19	37	पू.षा.	35	06	21	25	गंड	16	58	तै	09	19	म.रा.2:46	14	20	5	भद्रा अ.रा.परि 6:00 से, शुक्र मकर में दिवा 2:25	07	22	05	20
24	51	4	शुक्र	22	31	16	24	उ.षा.	28	56	18	58	वृद्धि	13	05	वि	16	24	मकरे	15	21	6	भद्रा सायं 4:24 तक	07	23	05	20
24	50	5	शनि	15	22	13	33	श्रव	23	42	16	53	ध्रुव व्याघात	09 30	26 13	बा	13	33	कुं.अ.रा.4:01	16	22	7	पंचक प्रारंभ अ.रा.परि 4:05, अमृतयोग दिवा 1:33 तक, A	07	24	05	20
24	48	6	रवि	09	24	11	10	धनि	19	41	15	17	हर्षण	27	24	तै	11	10	कुंभे	17	23	8	अमृतयोग 11:10 तक, बुधास्त पूर्वे	07	24	05	20
24	48	7	सोम	04	49	09	21	शत	17	06	14	16	वज्र	25	06	व	09	21	कुंभे	18	24	9	भद्रा 9:21 से रात्रि 8:46 तक, अमृत योग 9:21 तक	07	25	05	21
24	47	8	मंग	01	52	08	11	पू.भा.	16	07	13	53	सिद्धि	23	17	ब	08	11	मीने 7:55	19	25	10	सिद्धयोग 8:11 तक	07	26	05	21
24	46	9	बुध	0	29	07	38	उ.भा.	16	41	14	07	व्यती	21	58	कौ	07	38	मीने	20	26	11	गंडमूल दिवा 2:07 से	07	26	05	21
24	43	10	गुरु	0	39	07	43	रेवती	18	39	14	55	वरीय	21	06	ग	07	43	मे.दि.2:55	21	27	12	पंचक समाप्त दिवा 2:55, भद्रा रात्रि 8:02 से, गंडमूल, B	07	27	05	21
24	41	11	शुक्र	02	12	08	21	अश्विन	21	56	16	15	परिघ	20	38	वि	08	21	मेषे	22	28	13	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयंती, भद्रा 8:21 तक, C	07	28	05	21
24	42	12	शनि	04	57	09	28	भरणी	26	20	18	01	शिव	20	29	बा	09	28	वृ.रा.12:31	23	29	14	शनि प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी	07	29	05	22
24	41	13	रवि	08	44	10	59	कृत्ति	31	38	20	09	सिद्धि	20	38	तै	10	59	वृषे	24	पौष	15	पौष संक्रांति, सूर्य धनु में रात्रि 2:25, मंगल हस्त में अ.रा. परि 2:45,D	07	29	05	22
24	40	14	सोम	13	20	12	50	रोहि	37	40	22	34	साध्य	21	0	व	12	50	वृषे	25	2	16	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा दिवा 12:50 से रात्रि 1:53 तक, सं.सि. योग	07	30	05	22
24	41	15	मंग	18	36	14	57	मृग	44	15	25	13	शुभ	21	33	ब	14	57	मिथुने 11:52	26	3	17	पूर्णिमा व्रत	07	30	05	23

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (10 दिसम्बर, सन 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	10	05	07	02	09	06	06	00
24	28	07	13	24	02	24	11	11
01	38	02	27	43	15	05	22	22
46	08	27	26	29	46	12	33	33
60	799	30	92	06	24	06	03	03
58	33	31	41	07	33	33	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
ज्ये 3	पू.भा. 3	उ.फा. 4	अनु 4	पुन 2	उ.षा. 2	विशा 2	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:26

9 | रा श | सू 8 बु | 7 | 6 मं | 10 शु | 11 चं | 5 | 12 | 2 | 4 | 1 के | 3 बृ

पूर्णिमायां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (17 दिसम्बर, सन 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	01	05	07	02	09	06	06	00
01	26	10	24	23	04	24	11	11
08	48	32	18	57	26	50	00	00
45	37	53	38	51	56	06	18	18
61	719	29	93	07	10	06	03	03
02	12	26	30	01	23	14	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मूल 1	मृग 1	हस्त 1	ज्ये 3	पुन 2	उ.षा. 3	विशा 2	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:30

10 शु | 8 बु | श | 9 सू | 11 | 7 रा | 12 | 6 मं | 1 के | 3 बृ | 5 | 2 चं | 4

A सं.सि.योग, श्रीराम विवाहोत्सव B सिद्धयोग 7:43 तक, स.सि.योग, बुध ज्येष्ठा में 7:19 C गंडमूल दिवा 4:15 तक, सिद्धयोग 8:21 तक D पिशाचमोचन श्राद्धम।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **विवाह पञ्चमी** – मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का विवाह मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी को जनकपुर में सम्पन्न हुआ था। श्रीराम भक्तों को यह महोत्सव अपने अपने तरीके से आनन्द और उल्लासपूर्वक मनाना चाहिए। **गीता जयन्ती** – गीता एक सार्वभौम ग्रन्थ है यह किसी देशकाल, धर्म सम्प्रदाय या जाति विशेष के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है इस ग्रन्थ में कहीं भी 'श्रीकृष्ण उवाच' शब्द नहीं आया बल्कि 'श्री भगवानुवाच' का प्रयोग किया गया है। "सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्तादुग्धं गीतामृतंमहत्॥" **दत्तात्रय जयन्ती** – महायोगीश्वर दत्तात्रय जी भगवान विष्णु के अवतार हैं, इनका अवतरण मार्गशीर्ष पूर्णिमा को प्रदोष काल में हुआ था, गिरनार क्षेत्र श्री दत्तात्रय जी का सिद्धपीठ है दक्षिण भारत में इनके अनेक मन्दिर हैं। **आकाश लक्षणम्** – सर्दी का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं-कहीं रुक-रुक कर वर्षा होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 पौष कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2013 ई. 18 दिसंबर से 1 जनवरी तक सूर्योदक्षिण/उत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श मार्ग	वि पौष	अं दिसं	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू. उ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. अ.
24	38	1	बुध	24	23	17	17	आर्द्रा	51	17	28	03	शुक्ल	22	15	कौ	17	17	मिथुने	27	4	18	पौष कृष्ण प्रतिपदा	07	31	05	23
24	40	2	गुरु	30	37	19	47	पुन.	58	40	31	0	ब्रह्म	23	03	ग	19	47	क.रा.12:15	28	5	19	सं.सि. योग	07	32	05	24
24	38	3	शुक्र	36	58	22	20	पुष्य	60	0	0	0	ऐन्द्र	23	54	व	09	03	कर्के	29	6	20	भद्रा 9:03 से रात्रि 10:20 तक, बुध धनु में रात्रि 8:54	07	32	05	24
24	37	4	शनि	43	17	24	52	पुष्य	06	05	09	59	वैधृ	24	44	व	11	37	कर्के	30	7	21	श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय रात्रि 8:57, गंडमूल 9:59 से, सिद्धयोग A	07	33	05	24
24	38	5	रवि	49	10	27	14	आश्ले	13	19	12	53	विष्कुं	25	25	कौ	14	05	सिंहे 12:53	पौष	8	22	गंडमूल, भरतीय पौषारंभ	07	33	05	25
24	40	6	सोम	54	12	29	15	मघा	19	57	15	33	प्रीति	25	53	ग	16	18	सिंहे	2	9	23	भद्रा अ.रा.परि 5:15 से, गंडमूल दिवा 3:33 तक	07	34	05	26
24	38	7	मंग	57	57	30	46	पू.फा.	25	36	17	49	आयु.	25	58	वि	18	05	क.रा.12:18	3	10	24	भद्रा सायं 6:01 तक	07	34	05	26
24	40	8	बुध	60	0	0	0	उ.फा.	29	50	19	31	सौभा.	25	34	बा	19	17	कन्यायां	4	11	25	अमृतयोग	07	35	05	27
24	40	8	गुरु	0	05	07	37	हस्त	32	22	20	32	शोभन	24	36	कौ	07	37	कन्यायां	5	12	26		07	35	05	27
24	41	9	शुक्र	0	14	07	41	चित्रा	32	53	20	45	अतिगंड	23	0	ग	07	41	तुलायां 8:44	6	13	27	भद्रा रात्रि 7:18 से अ.रा. परि 6:55 तक	07	35	05	28
0	0	10	शुक्र	58	17	30	55	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
24	42	11	शनि	54	17	29	19	स्वाती	31	20	20	08	सुकर्मा	20	44	व	18	13	तुलायां	7	14	28	सफला एकादशी व्रत (स्मार्त), सं.सि.योग, सूर्य पू.षा. में 4:42	07	36	05	29
24	42	12	रवि	48	25	26	58	विशा	27	55	18	46	धृति	17	50	कौ	16	14	वृ.दि.1:10	8	15	29	सफला एकादशी व्रत (वैष्णव), बुध पू.षा. में 7:19	07	36	05	29
24	43	13	सोम	40	53	23	58	अनु	22	44	16	42	शूल	14	22	ग	13	32	वृश्चिके	9	16	30	सोम प्रदोष व्रत, भद्रा रात्रि 11:58 से, गंडमूल दिवा 4:42 से,B	07	36	05	30
24	45	14	मंग	32	12	20	30	ज्ये	16	12	14	06	गंड वृद्धि	10 30	28 14	वि	10	17	ध.दि.2:06	10	17	31	भद्रा 10:14 तक, गंडमूल	07	37	05	31
24	45	30	बुध	22	47	16	44	मूला	08	47	11	08	ध्रुव	25	49	ना	16	44	धने	11	18	जन.	देवपितृकार्येऽमावस, कुहूः, गंडमूल दिवा 11:08 तक	07	37	05	31

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (25 दिसम्बर, सन् 2013 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	05	05	08	02	09	06	06	00
09	02	14	06	22	04	25	10	10
17	40	23	51	59	43	38	34	34
22	58	32	10	01	51	36	52	52
61	755	28	95	07	08	05	03	03
08	07	01	02	44	54	49	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
मूला 3	उ.फा. 2	हस्त 2	मूला 3	पुन 1	उ.षा. 3	विशा 2	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:35

10 शु, 8, 11, सू. 9 बु, श 7 रा, 12, चं 6 मं, 1 के, 3 बृ, 5, 2, 4

अमावस्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (1 जनवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	08	05	08	02	09	06	06	00
16	09	17	18	22	02	26	10	10
25	44	35	01	03	50	18	12	12
27	35	19	39	42	34	08	36	36
61	919	26	63	08	25	05	03	03
10	03	31	19	04	21	24	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
पू.षा. 1	मूला 3	हस्त 3	पू.षा. 2	पुन 1	उ.षा. 2	विशा 2	स्वा 2	अश्वि 4

कुण्डली अमावस प्रातः 7:37

10 शु, 9 सू. चं बु, 8, श 7 रा, 11, 12, 6 मं, 1 के, 3 बृ, 5, 2, 4

A शुक्र वक्री, अ.रा.परि 3:20, सा.सू. मकर में, सायन उत्तरायण प्रारंभ B सं.सि.योग, मासिक शिवरात्री व्रत

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान–

सफला एकादशी व्रत– इस दिन उपवास धारण कर भगवान श्रीविष्णु की श्रद्धा से पूजादि में मग्न रहना चाहिए तथा रात्रि जागरण करने से भगवान का दिव्य लोग प्राप्त होता है।

देवपितृकार्ये अमावस– इस अमावस को हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, चन्द्रभागा (अखनूर) तवषि जम्मू, गुप्त गंगा पुरमण्डल में, देविका उधमपुर में स्नानदानादि का विशेष महत्त्व है। तान्त्रिक सिद्धियों की प्राप्ति के लिए यह अमावस प्रसिद्ध है। पौष संक्रान्ति रविवार को होने के कारण गेहूँ, जौ, चना, मटर इत्यादि का भाव मन्दा होगा। चान्दी, मूँग, उड़द, चावल, सरसों, अलसी, औषधियाँ तथा रसदार पदार्थों में तेजी आएगी। रूई व रेशमी कपड़ों तथा ऊनी कपड़ों में कुछ सस्तापन होकर फिर तेज हो जाएगा। इस मास में व्यापारियों के लिए चान्स मन्दे हैं, वाहनों के भावों में तेजी-मन्दी आ सकती है। **आकाश लक्षणम्–** तेज हवाओं सहित वर्षा [illegible]

श्रीविक्रमी संवत् 2070 (पौष शुक्ल पक्ष) शाके 1935, सन् 2014 ई. 2 जनवरी से 16 जनवरी तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श पौष	वि पौष	अं जन	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दे. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
24	47	1	गुरु	13	02	12	50	पू.षा उ.षा	00 53	57 15	08 28	00 55	व्याघा	21	23	ब	12	50	म.दि.1:13	12	19	2	पौष शुक्ल प्रतिपदा	07	37	05	32
24	50	2	शुक्र	03	32	09	02	श्रव	46	07	26	04	हर्षण	17	06	कौ	09	02	मकरे	13	20	3	अमृतयोग 9:02 तक, सं.सि.योग, चंद्रदर्शनम्, आरोग्य व्रत	07	37	05	33
0	0	3	शुक्र	54	45	29	31	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	तृतीया तिथि क्षय	0	0	0	0
24	52	4	शनि	47	02	26	26	धनि	40	02	23	38	वज्र	13	06	व	15	54	कुंभ 12:47	14	21	4	पंचक प्रारंभ दिवा 12:51, भद्रा दिवा 3:58 से अ.रा.परि 2:26 तक A	07	37	05	34
24	51	5	रवि	40	53	23	59	शत	35	26	21	48	सिद्धि व्यती	09 30	31 28	व	13	08	कुंभे	15	22	5	शुक्रास्त पश्चिमे सूर्यास्त काल 8 जनवरी	07	37	05	34
24	52	6	सोम	36	32	22	15	पू.भा.	32	37	20	41	वरीय	28	01	कौ	11	01	मी.दि.2:53	16	23	6	बुध उ.पा. में दिवा 12:46, वक्री शुक्र धनु में रात्रि 11:32	07	38	05	35
24	55	7	मंग	34	12	21	19	उ.भा.	31	42	20	19	परिघ	26	12	ग	09	41	मीने	17	24	7	गंडमूल रात्रि 8:19 से मार्तंड सप्तमी,	07	38	05	36
24	57	8	बुध	33	52	21	11	रेवती	32	47	20	45	शिव	25	0	वि	09	09	मे.रा.8:45	18	25	8	पंचक समाप्त सायं 8:45, भद्रा रात्रि 9:19 से, गंडमूल, अमृतयोग B	07	38	05	37
25	0	9	गुरु	35	25	21	48	अश्विन	35	42	21	55	सिद्धि	24	22	बा	09	24	मेषे	19	26	9	भद्रा 9:15 तक, गंडमूल रात्रि 9:55 तक, अमृतयोग	07	38	05	38
25	02	10	शुक्र	38	35	23	04	भरणी	40	07	23	41	साध्य	24	13	तै	10	21	मेषे	20	27	10	सूर्य उ.पा. में अ.रा. परि 6:35	07	38	05	39
25	03	11	शनि	43	01	24	50	कृत्ति	45	49	25	57	शुभ	24	27	व	11	54	वृ.प्रा.6:13	21	28	11	पुत्रदा एकादशी व्रत, भद्रा 11:57 से रात्रि 12:50 तक	07	38	05	39
25	07	12	रवि	48	25	26	59	रोहि	52	20	28	33	शुक्ल	24	57	ब	13	52	वृषे	22	29	12	शुक्र पू.षा. में 12:40	07	37	05	40
25	10	13	सोम	54	20	29	21	मृग	59	22	31	22	ब्रह्म	25	38	कौ	16	08	मि.सा.5:56	23	30	13	प्रदोष व्रत, सं.सि.योग, लोहड़ी पर्व (जम्मू कश्मीर हिमाचल, हरियाणा, C	07	37	05	41
25	12	14	मंग	60	0	0	0	आर्द्रा	60	0	0	0	ऐन्द्र	26	25	ग	18	35	मिथुने	24	माघ	14	मकर संक्रांति सूर्य मकर में दिवा 1:10, मंगल चित्रा में D	07	37	05	42
25	15	14	बुध	0	32	07	50	आर्द्रा	06	40	10	17	वैधृ	27	14	व	07	50	मिथुने	25	2	15	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा 7:50 से रात्रि 9:05 तक	07	37	05	43
25	17	15	गुरु	06	50	10	21	पुन	14	0	13	13	विष्कुं	28	02	ब	10	21	क.प्रा.6:29	26	3	16	पूर्णिमा व्रत, सिद्ध योग 10:21 तक, सं.सि.योग दिवा 1:01 तक, E	07	37	05	44

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (8 जनवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	11	05	08	02	08	06	06	00
23	21	20	29	21	29	26	09	09
33	43	35	27	06	16	54	50	50
37	11	59	42	58	37	33	20	20
60	777	24	100	08	35	04	03	03
59	10	48	21	06	45	55	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
पू.षा. 4	रेवती 2	हस्त 4	उ.षा. 1	पुन 1	उ.षा. 1	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:38

10
8
9 सू. बु शु
11
श 7 रा
12 चं
6 मं
1 के
3 बृ
5
2
4

पूर्णिमायां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (16 जनवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	02	05	09	02	08	06	06	00
01	29	23	12	20	24	27	09	09
42	30	46	48	03	27	31	24	24
33	27	48	41	09	15	51	54	54
61	710	22	100	07	33	04	03	03
05	52	33	24	45	38	19	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व अ	मा उ	व अ	व अ
उ.षा. 2	पुन 3	चित्रा 1	श्रव 1	पुन 1	पू.षा. 4	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:37

11
9 शु
सू 10 बु
12
8
1 के
श 7 रा
2
4 चं
6 मं
3 बृ
5

A सिद्धयोग B बुध मकर में दिवा 1:15, शुक्रास्त पश्चिमे सूर्यास्त C पंजाब दिल्ली) शुक्रोदयः पूर्वे सूर्योदयकाल 13 जनवरी D अ.रा. परि 1:18, बुध श्रवण में दिवा 1:13, शुक्रोदयः पूर्वे सूर्योदय काल E गुरु आर्द्रा में दिवा 3:16

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :- **आरोग्य व्रत** – यह व्रत पौष शुक्ल द्वितीया को आरोग्य प्राप्ति के लिए किया जाता है। **मार्त्तण्ड सप्तमी** – इस दिन भगवान् सूर्य के उद्देश्य से हवन करके गोदान करने से वर्ष पर्यंत उत्तम फल प्राप्ति होती है। **पुत्रदाएकादशी** – इस दिन श्रद्धापूर्वक उपवास करने से सुलक्षण पुत्र की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा से माघ स्नान प्रारम्भ होता है। मकर संक्रान्ति को घृत एवं कम्बलदान का विशेष महत्त्व है इसका दान करने वाला सम्पूर्ण भोगों को भोग कर मोक्ष को प्राप्त होता है। "माघेमासि महादेव यो दद्याद्घृतकम्बलम्। स भुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्तेमोक्षं च विन्दति।।" मकर संक्रान्ति के दिन निरयन सूर्य उत्तरायण हो जाता है। इस दिन स्नानदानादि का अधिक महत्त्व है। तिल दान करना अत्युत्तम माना जाता है। **आकाशलक्षणम्** – शीतलहर यथावत बनी रहेगी। पर्वतीय प्रदेशों में बर्फ गिरेगी ओलावृष्टि भी हो सकती है।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 माघ कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2014 ई. 17 जनबरी से 30 जनबरी तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श पौष	वि माघ	अं जन	विवरण भारतीय स्टै० समय में	दै. सूर्योदयास्त जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
25	21	1	शुक्र	13	05	12	51	पुष्य	21	18	16	08	प्रीति	28	48	कौ	12	51	कर्के	27	4	17	माघ कृष्ण प्रतिपदा, गंडमूल दिवा 4:08 से, सिद्धयोग	07	37	05	45
25	25	2	शनि	19	10	15	16	आश्ले	28	25	18	58	आयु.	29	28	ग	15	16	सिं.सा.6:58	28	5	18	भद्रा अ.रा.परि 4:24 से, गंडमूल	07	36	05	46
25	27	3	रवि	24	50	17	32	मघा	35	05	21	38	सौभा.	29	59	वि	17	32	सिंहे	29	6	19	**श्रीगणेश चतुर्थी, भुग्गा व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 8:39, A**	07	36	05	47
25	31	4	सोम	29	51	19	32	पू.फा.	41	9	24	03	शोभन	30	16	बा	19	32	सिंहे	30	7	20		07	36	05	48
25	32	5	मंग	33	57	21	10	उ.फा.	46	15	26	05	अतिगंड	30	15	कौ	08	24	कं.प्रा.6:35	माघ	8	21		07	35	05	48
25	35	6	बुध	36	47	22	18	हस्त	50	7	27	38	सुकर्मा	29	49	ग	09	48	कन्यायां	2	9	22	भद्रा रात्रि 10:18 से, सं.सि.योग, बुध धनिष्ठा में दिवा 2:40	07	35	05	49
25	38	7	गुरु	38	06	22	49	चित्रा	52	27	28	33	धृति	28	52	वि	10	39	तु.सा.4:10	3	10	23	भद्रा 10:33 तक, स्वामी विवेकानन्द जयंती, नेता जी जयंती	07	35	05	50
25	42	8	शुक्र	37	35	22	36	स्वाती	52	57	28	45	शूल	27	22	बा	10	48	तुलायां	4	11	24	सूर्य श्रवण में 9:00	07	34	05	51
25	46	9	शनि	35	08	21	37	विशा	51	37	28	12	गंड	25	15	तै	10	13	वृ.रा.10:24	5	12	25	सिद्धयोग, सां.सू. कुंभ में 9:10	07	34	05	52
25	50	10	रवि	30	47	19	52	अनु	48	22	26	54	वृद्धि	22	31	व	08	50	वृश्चिके	6	13	26	भद्रा 8:44 से रात्रि 7:52 तक, गंडमूल अ.रा.परि 2:54 से, B	07	33	05	53
25	53	11	सोम	24	38	17	24	ज्ये	43	29	24	56	ध्रुव	19	14	बा	17	24	ध.रा.12:56	7	14	27	**षट्तिला एकादशीव्रत**, गंडमूल	07	33	05	54
25	58	12	मंग	17	0	14	20	मूला	37	11	22	24	व्याघा	15	28	तै	14	20	धने	8	15	28	**भौम प्रदोष व्रत**, गंडमूल रात्रि 12:56 तक, **तिलद्वादशी**	07	32	05	55
26	02	13	बुध	08	15	10	49	पू.षा.	29	57	19	30	हर्षण वज्र	11 30	20 59	व	10	49	म.रा.12:42	9	16	29	भद्रा 10:49 से रात्रि 8:55 तक, अमृतयोग 10:49 तक	07	31	05	56
0	0	14	बुध	58	45	31	01	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी क्षय	0	0	0	0
26	06	30	गुरु	49	04	27	08	उ.षा.	22	10	16	23	सिद्धि	26	33	च	17	04	मकरे	10	17	30	देवपितृकार्येऽमावस, **मौनीअमावस**	07	31	05	57

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (24 जनवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	06	05	09	02	08	06	06	00
09	07	26	25	19	20	28	08	08
50	10	38	53	03	46	04	59	59
58	45	07	04	20	19	06	28	28
61	793	19	91	07	18	03	03	3
01	05	51	48	03	10	39	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व अ	मा उ	व अ	व अ
उ.षा. 4	स्वा 1	चित्रा 1	धनि 1	आर्द्रा 4	पू.षा. 3	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:34

11; 9 शु; सू 10 बु; 12; 8; 1 के; 7 चं श गु; 2; 4; 6 मं; 3 बृ; 5

अमावस्यां गुरूवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (30 जनवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	09	05	10	02	08	06	06	00
15	03	28	04	18	19	28	08	08
56	02	31	12	22	34	24	40	40
56	19	25	41	45	13	40	23	23
60	859	17	66	06	03	03	03	03
58	58	27	47	20	20	07	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	व अ	मा उ	व अ	व अ
श्रव 2	उ.षा. 2	चित्रा 2	धनि 4	आर्द्रा 4	पू.षा. 2	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:31

11 बु; 9 शु; सू 10 चं; 12; 8; 1 के; श 7 रा; 2; 4; 6 मं; 3 बृ; 5

A भद्रा सायं 5:32 तक, गंडमूल रात्रि 9:38 तक B बुध कुंभ में रात्रि 11:52, गणराज्य दिवस।

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-
भुग्गा व्रत – 19 जनवरी 2014 रविवार को है। इस व्रत में भगवान श्रीगणेश जी का पूजन स्तुति वगैरा करते हैं तथा रात्रि काल चन्द्रोदय हो जाने पर श्रीगणेश जी को गुड़ तिल भोग लगाया जाता है। तत्पश्चात् चन्द्रमा को अर्घ दिया जाता है। इस व्रत को करने से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से निवृति होती है। **षट्तिला एकादशी** – इस दिन छ: प्रकार के तिलों का व्यवहार किया जाता है इस दिन तिलों के जल से स्नान, तिल का उबटन तिल से हवन, तिलमिश्रितजल का पान, तिल का भोजन तथा तिलदान करने से समस्त पापों का नाश होता है। **"तिलस्नायी तिलोद्वर्तीतिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक्तिलदाताचषट्तिलाः पापनाशनाः॥"** **मौनी अमावस** – इसमें मौन व्रत एवं उपवास धारण कर स्नान, दान, जपादि करने से मानसिक एवं शारीरिक कष्टों से छुटकारा मिलता है। **आकाश लक्षणम्** – मकर संक्रान्ति के आस पास वर्षा होने के शुभ संकेत हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 **माघ शुक्ल पक्ष** शाके 1935, सन् 2014 ई. **31 जनवरी से 14 फरवरी तक** [illegible], शिशिर ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श माघ	वि माघ	अं जन	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
26	10	1	शुक्र	39	37	23	21	श्रव	14	27	13	17	व्यती	22	12	किं	13	13	कुं.रा.11:47	11	18	31	माघ शुक्ल प्रतिपदा, सिद्धयोग, सं.सि.योग दिवा 1:17 तक, A	07	30	05	58
26	13	2	शनि	30	58	19	53	धनि	07	12	10	23	वरीय	18	06	बा	09	34	कुंभे	12	19	फर	बुध शतभिषा में दिवा 2:45	07	30	05	59
26	18	3	रवि	23	33	16	54	शत पू.भा.	01 56	02 19	07 30	54 00	परिघ	14	24	ग	16	54	मी.रा.12:24	13	20	2	गौरी तृतीया, भद्रा अ.रा.परि 3:44 से	07	29	06	0
26	23	4	सोम	17	45	14	34	उ.भा.	53	24	28	49	शिव	11	12	वि	14	34	मीने	14	21	3	भद्रा दिवा 2:34 तक, गंडमूल अ.रा.परि 4:49 से	07	28	06	1
26	27	5	मंग	13	55	13	01	रवती	52	30	28	27	सिद्धि साध्य	08 30	37 42	बा	13	01	मे.अ.रा.4:56	15	22	4	वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त अ.रा. परि 4:27, गंडमूल, B	07	27	06	2
26	31	6	बुध	12	10	12	19	अश्वि	53	44	28	56	शुभ	29	28	तै	12	19	मेषे	16	23	5	गंडमूल अ.रा.परि 4:56 तक	07	27	06	3
26	36	7	गुरु	12	35	12	28	भरणी	56	59	30	13	शुक्ल	28	52	व	12	28	मेषे	17	24	6	भद्रा दिवा 12:28 से रात्रि 12:57 तक, बुध वक्री अ.रा.परि 3:10,C	07	26	06	4
26	38	8	शुक्र	15	03	13	26	कृत्ति	60	0	0	0	ब्रह्म	28	48	ब	13	26	वृषे 12:39	18	25	7	भीष्माष्टमी	07	25	06	4
26	43	9	शनि	19	10	15	04	कृत्ति	01	57	08	11	ऐन्द्र	29	11	कौ	15	04	वृषे	19	26	8	सिद्धयोग	07	24	06	5
26	47	10	रवि	24	30	17	11	रोहि	08	12	10	40	वैधृ	29	51	ग	17	11	मि.रा.12:03	20	27	9		07	23	06	6
26	51	11	सोम	30	38	19	38	मृग	15	18	13	30	विष्कुं	30	41	वि	19	38	मिथुने	21	28	10	जया एकदशी व्रत, भद्रा प्रातः 6:24 से रात्रि 7:38 तक,D	07	23	06	7
26	56	12	मंग	37	04	22	11	आर्द्रा	22	48	16	29	प्रीति	0	0	ब	08	54	मिथुने	22	29	11	भीष्म द्वादशी	07	22	06	8
27	01	13	बुध	43	29	24	44	पुन	30	18	19	28	प्रीति	07	34	कौ	11	28	कर्के 12:43	23	फाल्गु	12	फाल्गुन संक्रांति सूर्य कुंभ में रात्रि 2:10, प्रदोष व्रत, अमृत योग,E	07	21	06	9
27	06	14	गुरु	49	34	27	09	पुष्य	37	36	22	22	आयु.	08	24	ग	13	58	कर्के	24	2	13	भद्रा अ.रा.परि 3:09 से, गंडमूल रात्रि 10:22 से, गुरू पुष्य योग	07	20	06	10
27	11	15	शुक्र	55	09	29	22	आश्ले	44	26	25	05	सौभा.	09	08	वि	16	17	सिं.रा.1:05	25	3	14	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, श्रीगुरू रविदास जयंती,F	07	19	06	11

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (7 फरवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	00	06	10	02	08	06	06	00
24	26	00	09	17	20	28	08	08
04	17	38	16	36	13	46	14	14
00	19	31	47	18	39	56	57	57
60	740	13	06	05	14	02	03	03
47	34	45	32	06	58	22	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	व उ	मा अ	मा उ	व अ	व अ
धनि 1	भर 4	चित्रा 3	शत 1	आर्द्रा 4	पू.षा. 3	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:25

11 बु, 9 शु, 10 सू, 8, 12, चं 1 के, 7 मं श ग, 2, 4, 6, 3 बृ, 5

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (14 फरवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	03	06	10	02	08	06	06	00
01	20	02	05	17	22	29	07	07
08	12	03	04	04	39	01	52	52
56	58	56	07	13	05	21	41	41
60	709	10	65	03	27	02	03	03
36	51	01	28	52	57	39	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	व उ	मा अ	मा उ	व अ	व अ
धनि 3	आश्ले 2	चित्रा 3	धनि 4	आर्द्रा 4	पू.षा. 3	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:19

12, सू 11 बु, 10, 1 के, 9 शु, 2, 8, 3 बृ, 5, 7 रा मं श, 4 चं, 6

A पंचक प्रारंभ रात्रि 11:50, शुक्र मार्गी अ.रा.परि 2:17, नवरात्र व्रत B मंगल तुला में दिवा 2:20, सरस्वती पंचमी C सूर्य घनिष्ठा में 12:04 D स. सि. योग दिवा 1:30 तक E बुध धनिष्ठा में दिवा 2:08 F भद्रा सायं 4:15 तक गंडमूल।

पर्व त्योहार निर्णय एवं शस्त्र विधान–

नवरात्र व्रत– माघ शुक्ल प्रतिपदा से शैशिर नवरात्र प्रारम्भ होकर नवमी तक व्रत चलते हैं, नवमी के दिन होम, कन्या पूजन के पश्चात् व्रत धारण करने से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति एवं दुःख निवृत्ति द्वारा शान्ति प्राप्त होती है। **सरस्वती पंचमी–** प्रातः सूर्योदय व्यापिनी पंचमी में विधिवत सरस्वती पूजा एवं जपादि के पश्चात कुमारी पूजनोपरान्त ही नैवैद्य ग्रहण करें। इससे जन्म जन्मान्तर तक विद्या बुद्धि का साहचर्य एवं ज्ञान विज्ञान से तृप्ति होती है। **भीमाष्टमी–** माघशुक्ल अष्टमी के दिन यव, तिल, जलादि से भीष्म जी का श्राद्ध व तर्पण करने से भीष्म जी को शान्ति देने से स्वयं भी आत्म शान्ति लाभ होता है। **जया एकादशी व्रत–** एकादशी का व्रत धारण करने से कुल में कोई भी पिशाच योनि से संतप्त हो तो अवश्य पिशाचत्व मिटकर सद्गति प्राप्त होती है। **आकाश लक्षणम्–** बादल चाल अच्छी बनेगी, वर्षा प्रचुर होगी। सर्दी अभी बनी रहेगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2014 ई. 15 फरबरी से 1 मार्च तक सूर्योत्तरायणे, शिशिर/वसंत ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श माघ	वि फाल्गु	अं फर	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
27	16	1	शनि	60	0	0	0	मघा	50	42	27	34	शोभन	9	42	बा	18	24	सिंहे	26	4	15	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, गंडमूल अ.रा.परि 3:34 तक	07	18	06	12
27	21	1	रवि	0	10	07	21	पू.फा.	56	19	29	48	अतिगंड	10	06	को	07	21	सिंहे	27	5	16		07	17	06	13
27	23	2	सोम	04	27	09	03	उ.फा.	60	0	0	0	सुकर्मा	10	16	ग	09	03	क.दि.12:18	28	6	17	भद्रा रात्रि 9:43 से, अमृत योग 9:03 तक	07	16	06	13
27	28	3	मंग	07	52	10	24	उ.फा.	01	10	07	43	धृति	10	11	वि	10	24	कन्यायां	29	7	18	श्रीगणेश चतुर्थी चंद्रोदय रात्रि 9:19, भद्रा दिवा 10:24 तक,A	07	15	06	14
27	33	4	बुध	10	22	11	23	हस्त	05	05	09	16	शूल	09	49	बा	11	23	तुला.रा.9:53	30	8	19	स.सि.योग 9:16 तक, सूर्य शतभिषा में सायं 4:40	07	14	06	15
27	38	5	गुरु	11	40	11	53	चित्रा	07	55	10	23	गंड	09	06	तै	11	53	तुलायां	फा.	9	20	सिद्धयोग 11:53 तक, भारतीय फाल्गुन आरंभ	07	13	06	16
27	43	6	शुक्र	11	40	11	52	स्वाती	09	30	11	0	वृद्धि ध्रुव	07 30	59 25	व	11	52	तुलायां	2	10	21	भद्रा 11:52 से रात्रि 11:34 तक, सिद्धयोग 11:52 तक,B	07	12	06	17
27	48	7	शनि	10	12	11	16	विशा	09	40	11	03	व्याघा	28	22	ब	11	16	वृ.प्रा.5:05	3	11	22	बुध उदय पूर्व में 8:10	07	11	06	18
27	53	8	रवि	07	12	10	03	अनु	08	17	10	29	हर्षण	25	50	को	10	03	वृश्चिके	4	12	23	गंडमूल दिवा 10:29 से	07	10	06	19
27	57	9	सोम	02	42	08	14	ज्ये	05	27	09	20	वज्र	22	50	ग	08	14	धने 9:20	5	13	24	भद्रा रात्रि 7:02 से अ.रा.परि 5:50 तक, गंडमूल	07	09	06	19
0	0	10	सोम	56	47	29	50	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
28	03	11	मंग	49	39	26	58	मूला पू.षा.	01 55	15 49	07 29	37 26	सिद्धि	19	25	व	16	27	धने	6	14	25	विजया एकादशी व्रत, गंडमूल प्रातः 7:37 तक, अमृत योग	07	07	06	20
28	08	12	बुध	41	36	23	44	उ.षा.	49	37	26	56	व्यती	15	40	को	13	23	मकरे 10:50	7	15	26	सिद्धयोग, शुक्र मकर में 11:53	07	06	06	21
28	13	13	गुरु	33	03	20	18	श्रव	42	54	24	14	वरीय	11	43	ग	10	02	मकरे	8	16	27	प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत, भद्रा रात्रि 8:18 से अ.रा.परि 6:33 तक	07	05	06	22
28	18	14	शुक्र	24	23	16	49	धनि	36	09	21	31	परिघ शिव	07 27	39 39	श	16	49	कुंभे 10:52	9	17	28	पंचक प्रारंभ दिवा 10:52, बुध मार्गी रात्रि 7:30	07	04	06	23
28	21	30	शनि	16	05	13	29	शत	29	53	19	0	सिद्धि	23	50	ना	13	29	कुंभे	10	18	मार्च	देवपितृकार्येऽमावस, मंगल वक्री रात्रि 9:52	07	03	06	23

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (23 फरवरी, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	07	06	09	02	08	06	06	00
10	13	03	25	16	27	29	07	07
13	47	12	56	36	43	12	24	24
31	41	24	14	05	44	39	05	05
60	796	04	36	02	40	00	03	03
24	24	25	24	10	24	44	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	व उ	मा अ	मा उ	व अ	व अ
शत 2	अनु 4	चित्रा 3	धनि 1	रोहि 2	उ.फा. 1	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:10

12; 10 बु; 11 सू; 1 के; 9 शु; 2; 8 चं; 3 बृ; 5; 7 रा मं श; 4; 6

अमावस्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (1 मार्च, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	10	06	09	02	09	06	06	00
16	11	03	24	16	02	29	07	07
15	38	28	06	26	02	15	05	05
34	00	20	48	00	03	33	00	00
60	888	00	05	00	46	00	03	03
15	44	08	53	59	28	08	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	व उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
शत 3	शत 2	चित्रा 4	धनि 1	आर्द्रा 3	उ.षा. 2	विशा 3	स्वा 1	अश्वि 3

कुण्डली अमावस प्रातः 7:03

12; सू; 10 बु शु; 11 चं; 1 के; 9; 2; 8; 3 बृ; 7 मं श रा; 5; 4; 6

A सिद्धयोग 10:24 तक, बुध मकर में सायं 5:42, सा.सू. मीन में B शुक्र उ.षा. में दिवा 1:55

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :–महाशिवरात्रि व्रत – भगवान् शिवजी की अति प्रिय रात्रि को 'शिवरात्रि' कहते हैं, ज्योतिष शास्त्रानुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी में चन्द्रमा सूर्य के समीप होता है। अतः वही समय जीवन रूपी चन्द्रमा का शिव रूपी सूर्य के साथ योग-मिलन होता है अतः इस चतुर्दशी को शिव पूजा करने से जीव को अभीप्टतम पदार्थ की प्राप्ति होती है। यही शिवरात्रि का रहस्य है। **विजया एकादशी व्रत–** इस एकादशी के व्रत के प्रभाव से व्यावहारिक विजय तो [illegible] जाती है इसमें तो दुर्जयी मन को भी पराजित कर उस पर पूर्णाधिकार प्राप्त कर आध्यात्मिक बल सम्पन्न अमोघ शक्तियों का अधिकारी

श्रीविक्रमी संवत् 2070 फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाका 1935, सन् 2014 ई. 2 मार्च से 16 मार्च तक सूर्योत्तरायणे, वसंत ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श फाल्गु	वि फाल्गु	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
28	27	1	रवि	08	33	10	27	पू.भा.	24	29	16	49	साध्य	20	20	व	10	27	मीन 11:19	11	19	2	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, शनि वक्री रात्रि 9:48, अमृतयोग 10:27 तक	07	02	06	24
28	33	2	सोम	02	15	07	54	उ.भा.	20	28	15	11	शुभ	17	17	कौ	07	54	मीन	12	20	3	गंडमूल दिवा 3:11 से, अमृतयोग 7:54 तक, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती	07	0	06	25
0	0	3	सोम	57	29	29	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	तृतीया तिथि क्षय	0	0	0	0
28	38	4	मंग	54	34	28	48	रेवती	18	0	14	11	शुक्ल	14	47	व	17	17	मे.दि.2:11	13	21	4	पंचक समाप्त दोपहर 2:11, भद्रा सायं 5:23 से अ.रा.परि A	06	59	06	26
28	43	5	बुध	53	42	28	26	अश्वि	17	30	13	58	ब्रह्म	12	55	व	16	31	मेष	14	22	5	गंडमूल दिवा 1:58 तक, याज्ञवल्क्य जयंती	06	58	06	27
28	46	6	गुरु	54	52	28	53	भरणी	19	0	14	33	ऐन्द्र	11	41	कौ	16	33	वृ.रा.8:49	15	23	6	गुरू मार्गी सायं 4:10	06	57	06	27
28	52	7	शुक्र	57	57	30	05	कृत्ति	22	26	15	54	वैधृ	11	05	ग	17	24	वृष	16	24	7	अमृतयोग	06	56	06	28
28	58	8	शनि	60	0	0	0	रोहि	27	36	17	56	विष्कुं	11	02	वि	18	56	वृष	17	25	8	भद्रा प्रातः 6:05 से रात्रि 7:00 तक, स.सि. योग	06	54	06	29
29	03	8	रवि	02	35	07	55	मृग	34	03	20	30	प्रीति	11	26	ब	07	55	मिथुन 7:09	18	26	9	**होलाष्टक प्रारंभ**	06	53	06	30
29	06	9	सोम	08	17	10	11	आर्द्रा	41	16	23	22	आयु.	12	09	कौ	10	11	मिथुन	19	27	10	शुक्र श्रवण में रात्रि 7:36	06	52	06	30
29	12	10	मंग	14	33	12	40	पुन	48	49	26	21	सौभा.	13	01	ग	12	40	क.रा.7:36	20	28	11	भद्रा अ.रा.परि 1:55 से	06	51	06	31
29	18	11	बुध	20	55	15	11	पुष्य	56	9	29	16	शोभन	13	54	वि	15	11	कर्क	21	29	12	**आमलकी एकादशी व्रत**, भद्रा दिवा 3:11 तक, बुध कुंभ में 9:32	06	49	06	32
29	23	12	गुरु	26	51	17	32	आश्ले	60	0	0	0	अतिगंड	14	41	बा	17	32	कर्क	22	30	13	गंडमूल प्रातः 5:16 से	06	48	06	33
29	27	13	शुक्र	32	05	19	36	आश्ले	03	0	07	59	सुकर्मा	15	15	तै	19	36	सिंह 7:59	23	चैत्र	14	**चैत्र संक्रांति**, सूर्य मीन में रात्रि 11:02, प्रदोष व्रत, गंडमूल	06	47	06	33
29	33	14	शनि	36	26	21	19	मघा	09	02	10	22	धृति	15	34	ग	08	31	सिंह	24	2	15	भद्रा रात्रि 9:19 से, गंडमूल दिवा 10:22 तक, सिद्धयोग	06	45	06	34
29	38	15	रवि	39	46	22	38	पू.फा.	14	08	12	23	शूल	15	35	वि	10	02	कं.सा.6:49	25	3	16	**श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन**, भद्रा 9:58 तक	06	44	06	35

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (9 मार्च, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	01	06	09	02	09	06	06	00
24	29	03	27	16	08	29	06	06
16	09	08	25	23	36	13	39	39
37	38	22	02	41	09	39	35	35
60	719	05	45	00	52	00	03	03
58	02	56	05	36	31	42	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
पू.भा. 2	मृग 2	चित्रा 3	धनि 2	आर्द्रा 3	उ.षा. 4	विशा 3	चित्रा 4	अश्वि 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:53

12
शु बु
10
1 के
11 सू.
9
2 चं
8
श मं रा
3 बृ
5
7
4
6

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (16 मार्च, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	04	06	10	02	09	06	06	00
01	23	02	03	16	14	29	06	06
15	06	10	47	31	56	06	17	17
42	55	46	33	58	15	41	20	20
60	745	21	65	01	56	01	03	03
23	50	17	39	57	30	23	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
पू.भा. 4	पू.फा. 3	चित्रा 3	धनि 4	आर्द्रा 3	श्रव 2	विशा 3	चित्रा 4	अश्वि 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:44

1 के
11 बु
12 सू.
10 शु
2
3 बृ
9
4
6
8
5 चं
7 मं श रा

(A 4:48 तक, गंडमूल सूर्य पू.भा. में रात्रि 10:55)

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-
अमालकी एकादशी व्रत– फाल्गुन शुक्ल एकादशी के दिन आमली के वृक्ष में लक्ष्मी नारायण का वास होता है अतः उस दिन लक्ष्मी नारायण जी की पूजा आमली वृक्ष के समीप करते हुए उपवास, रात्रि जागरण एवं प्रदक्षिणा कर दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन के बाद स्वयं व्रत धारण करें तो विष्णु लोक की प्राप्ति हो। **होलीपर्व** – होलिका दहन, इस अवसर पर लकड़ियों तथा कंडों आदि का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है फिर उसमें आग लगाई जाती है। पूजन के समय निम्न मन्त्र का उच्चारण किया जाता है। **"असृक्पाभयसंत्रस्तैःकृतात्वं होलिबालिशैः। अतस्त्वां पूजयिष्यामिभूतेभूतिप्रदाभव॥** होली सम्मिलन, मित्रता एवं एकता का पर्व है इस दिन द्वेष भाव भूलकर सब से प्रेम और भाईचारे से मिलना चाहिए। एकता सद्भावना एवं सोल्लास का परिचय देना चाहिए। यही इस पर्व का मूल उद्देश्य एवं सन्देश है। **आकाश लक्षण** – तेज़ हवाओं के साथ तेज वर्षा के योग हैं, मौसम अच्छा रहेगा। फल फूलों की वृद्धि होगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2070 चैत्र कृष्ण पक्ष शाका 1935, सन् 2014 ई. 17 मार्च से 30 मार्च तक सूर्योत्तरायणे, वसंत ऋतौ, दक्षिण/उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घटी	दिनमान पल	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ०मि०	श फाल्गु	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टै० समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
29	44	1	सोम	42	03	23	31	उ.फा.	18	14	14	0	गंड	15	17	बा	11	08	कन्यायां	26	4	17	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	06	43	06	36
29	48	2	मंग	43	19	24	0	हस्त	21	23	15	14	वृद्धि	14	40	तै	11	49	तु.अ.रा.3:41	27	5	18	सूर्य उ.भा. में 7:25, बुध शतभिषा में सायं 6:45	06	41	06	36
29	53	3	बुध	43	29	24	03	चित्रा	23	28	16	03	ध्रुव	13	44	व	12	05	तुलायां	28	6	19	भद्रा दिवा 12:01 से रात्रि 12:03 तक, अमृतयोग	06	40	06	37
29	58	4	गुरु	42	39	23	42	स्वाती	24	33	16	28	व्याघा	12	28	ब	11	56	तुलायां	29	7	20	श्रीगणेश चतुर्थी, अमृतयोग, चंद्रोदाय रात्रि 10:08, A	06	39	06	38
30	05	5	शुक्र	40	48	22	56	विशा	24	39	16	29	हर्षण	10	54	कौ	11	22	वृश्चि.10:31	30	8	21		06	38	06	39
30	08	6	शनि	37	56	21	46	अनु	23	45	16	06	वज्र	8	59	ग	10	24	वृश्चिके	चैत्र	9	22	भद्रा रात्रि 9:46 से, गंडमूल दिवा 4:06 से, भारतीय चैत्रमास प्रारंभ	06	36	06	39
30	13	7	रवि	34	01	20	11	ज्ये	21	50	15	19	सिद्ध व्यती	06 28	46 13	वि	09	02	ध.दि.3:19	2	10	23	भद्रा 8:58 तक, गंडमूल	06	35	06	40
30	20	8	सोम	29	12	18	14	मूला	18	59	14	09	वरीय	25	23	बा	07	15	धने	3	11	24	गंडमूल दिवा 2:09 तक, शुक्र धनिष्ठा में रात्रि 9:00	06	34	06	41
30	23	9	मंग	23	33	15	57	पू.षा.	15	18	12	39	परिघ	22	18	ग	15	57	म.सा.6:14	4	12	25	भद्रा अ.रा.परि 2:40 से, वक्री मंगल कन्या में 9:45	06	32	06	41
30	28	10	बुध	17	13	13	24	उ.षा.	10	55	10	53	शिव	19	01	वि	13	24	मकरे	5	13	26	भद्रा दिवा 1:24 तक	06	31	06	42
30	35	11	गुरु	10	25	10	40	श्रव	06	0	08	54	सिद्धि	15	36	बा	10	40	कुं.रा.7:53	6	14	27	पापमोचिनी एकादशी व्रत, पंचक प्रारंभ सायं 7:52	06	30	06	43
30	38	12	शुक्र	03	27	07	51	धनि शत	00 55	57 59	06 28	51 51	साध्य	12	09	तै	07	51	कुंभे	7	15	28	प्रदोष व्रत, भद्रा अ.रा. परि 5:05 से, अमृत योग 7:51 तक,B	06	28	06	43
0	0	13	शुक्र	56	34	29	05	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
30	43	14	शनि	50	09	26	30	पू.भा.	51	27	27	01	शुभ शुक्ल	08 29	46 33	वि	15	46	मी.रा.9:27	8	16	29	मासिक शिवरात्री व्रत, भद्रा दिवा 3:47 तक, सिद्धयोग	06	27	06	44
30	50	30	रवि	44	33	24	14	उ.भा.	47	43	25	30	ब्रह्म	26	36	च	13	19	मीने	9	17	30	देवपितृकार्येऽमावस, विक्रमी संवत् 2070 समाप्त, स.सि. योग	06	26	06	45

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (24 मार्च, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	08	06	10	02	09	06	06	00
09	08	00	13	16	22	28	05	05
12	15	20	31	52	41	52	51	51
39	03	07	13	46	06	55	54	54
60	789	16	101	03	59	02	03	03
30	05	57	42	25	59	08	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 2	मूला 3	चित्रा 3	शत 3	आर्द्रा 4	श्रव 4	विशा 3	चित्रा 4	अश्वि 2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:34

1 के, 11 बु, 12 सू, 10 शु, 2, 3 बृ, 9 चं, 4, 6, 8, 5, 7 श मं रा

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः (30 मार्च, सन् 2014 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	11	05	10	02	09	06	06	00
15	04	28	22	17	28	28	05	05
09	48	29	03	15	46	38	32	32
08	52	24	21	58	12	46	50	50
59	851	20	90	14	01	02	03	03
19	47	20	45	29	59	39	11	11
शी	शी	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उ.भा. 4	उ.भा. 1	चित्रा 2	पू.भा. 1	आर्द्रा 4	धनि 2	विशा 3	चित्रा 4	अश्वि 2

कुण्डली अमावस प्रातः 6:26

1 के, 11 बु, सू 12 चं, 10 शु, 2, 3 बृ, 9, 4, 6 मं, 8, 5, 7 श रा

A सा.सू. मेष में रात्रि 10 बजे **B** बुध पू.भा. में रात्रि 8:09

पर्व, त्योहार, निर्णय एवं शास्त्र विधान :-

शीतलाष्टमी व्रत – इस व्रत को करने से व्रती के कुल में दाहज्वर, पीतज्वर, विस्फोटक, दुर्गन्धियुक्त फोड़े, नेत्रों के समस्त रोग, शीतला की फुंसियों के चिह्न तथा शीतला जनित दोष दूर हो जाते हैं। इस व्रत को करने से शीतलादेवी प्रसन्न होती है। शीतला देवी के स्वरूप का 'शीतलास्तोत्र' में निम्न प्रकार से वर्णन किया गया है। **"वन्देऽहंशीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्।। मार्जनी कलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम्।।"**

पापमोचिनी एकादशी व्रत– इस एकादशी का व्रत धारण कर लक्ष्मी नारायण की पूजा व रात्रि जागरण कर द्वादशी के दिन ब्राह्मण भोजन के पश्चात् नैवैध ग्रहण करे, यह व्रत जन्मान्तरीय पापों से मुक्त कराकर भगवत्कृपा का पात्र बनाकर विष्णुलोक की प्राप्ति कराने वाला है। **आकाश लक्षण** – मौसम अच्छा रहेगा, अमावस के आस-पास सामान्य वर्षा के योग हैं।

जम्मू और कश्मीर के नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.
अखनूर	32.53	74.45	−31.00	कोलाहोई	34.12	75.21	−28.36
अच्छी बाल	33.41	75.14	−29.4	खपलू	35.10	76.20	−24.40
अनन्तनाग	33.44	75.10	−29.20	खरताक्षो	34.53	76.14	−25.04
अबरिग	33.42	76−36	−23.36	खरना	33.36	77.31	−19.56
अमरनाथ गुफा	34.13	75.32	−27.52	खलात्से	34.23	76.50	−22.40
अवन्ति पुरा	33.57	75.01	−29.56	गिलगित	35.55	74.21	−32.36
अस्तोर	35.22	74.51	−30.36	गुफिस	36.13	73.30	−36.00
इश्कुमान	36.35	73.50	−34.40	गुराईस	34.38	74.56	−30.16
उड़ी	34.5	74.1	−33.56	गुलमर्ग	34.05	74.25	−32.20
उपंशी	33.52	77.50	−18.40	गोम्पा	35.02	77.20	−20.40
ऊधमपुर	32.54	75.6	−29.36	गोर	35.34	74.31	−31.56
कटरा	32.59	74.57	−30.12	चार	33.15	77.09	−21.24
कठुआ	32.22	75.32	−27.52	चिनेनी	33.01	75.20	−28.40
करगिया	33.00	77.17	−20.52	चिलास	35.26	74.07	−33.32
[illegible]	32.59	78.16	−16.56	चुंगतास	35.37	8.37	−15.32
क[illegible]कुण्ड	33.37	75.09	−29.24	चुशुल	33.34	68.38	−15.28
कारगिल	34.31	76.13	−25.08	चूमर	32.38	68.35	−15.40
कार्त्से	34.18	76.04	−25.44	जंगला	33.40	77.01	−21.56
किजिलजिल्ला	35.18	78.48	−14.48	जम्मू	32.43	74.54	−30.24
किश्तवाड	33.19	75.58	−26.48	जसरोटा	32.29	75.27	−28.12
कुद	33.5	75.17	−28.52	टंक्से	34.03	78.13	−17.08
कुमदोक	33.32	78.10	−17.20	टिथवाल	34.24	73.47	−34.52
कुलगाम	33.41	75.03	−29.48	टोलरी	35.03	76.04	−25.44
केरन	34.39	73.58	−34.08	डोडा	33.10	75.35	−27.40
कोटली	33.30	73.55	−34.20	तेरू	36.11	72.45	−39.00

जम्मू और कश्मीर के नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै॰ अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै॰ अन्तर मि. सै.
द्रास	35.05	75.05	−29.40	बिजबिआड़ा	33.48	75.6	−29.36
देमचौक	32.40	79.27	−12.12	बुंजी	35.40	74.40	−31.20
द्रास	34.27	75.46	−26.56	भद्रवाह	32.59	75.43	−27.08
नवांशहर	32.37	74.44	−31.04	भिम्बर	33.00	74.05	−33.40
नागिर	36.15	74.46	−30.56	मनावर	32.47	74.23	−32.28
नुनकुन	33.59	76.01	−25.56	मरखा	33.51	77.23	−20.28
नोशेरा	33.10	74.15	−33.00	मरोल	34.43	76.18	−24.48
न्योमा	33.12	78.40	−15.20	मिनिमर्ग	34.48	75.03	−29.48
पदम	33.28	76.53	−22.48	मीरपुर	33.32	73.56	−34.16
पम्जल	34.17	78.49	−14.44	मीरवाली	36.33	73.25	−36.20
परकुट्टा	35.07	76.00	−26.00	मुजफ्फराबाद	34.23	73.30	−36.00
पलन्द्री	33.44	73.42	−35.12	मुलवेख	34.22	76.22	−24.32
पहलगाम	34.01	75.25	−28.20	मेन्धर	33.39	74.09	−33.24
पामपुर	34.01	74.56	−30.16	यासिन	36.21	73.22	−36.32
पासु	36.30	74.42	−3032	राजौरी	33.22	74.17	−32.52
पिंगल	36.09	73.11	−37.16	रामनगर	32.48	75.21	−28.36
पुंछ	33.51	76.06	−33.36	रामबन	33.15	75.15	−29.00
बनिहाल	33.30	75.18	−28.48	रियासी	33.03	74.52	−30.32
बटोटी	33.06	75.19	−28.44	रोन्दा	35.35	75.15	−29.00
बड़गाम	34.01	74.42	−31.12	रोन्दू	35.37	75.06	−29.36
बसोली	32.29	75.50	−26.40	लाथो	33.42	77.43	−19.08
बाओ	32.41	74.55	−30.20	लेह	34.09	77.35	−19.40
बाघ	33.59	73.50	−34.40	वैष्णो देवी	33.02	74.57	−30.12
बारामूला	34.12	74.24	−32.24	शक्सगम	36.08	76.31	−23.56
बाल्टिस्ट	36.22	74.38	−31.28	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै॰ अन्तर मि. सै.
शिंगशल	36.29	75.19	−28.44
शुकपाकुजंग	34.24	78.21	−16.36
शुपियां	33.42	74.52	−30.32
शुशोत	34.03	77.40	−19.20
शेरकिला	36.06	74.04	−33.44
श्योक	34.13	78.10	−17.20
श्रीनगर	34.07	74.50	−30.40
साम्बा	32.32	75.08	−29.28
सियारी	34.55	76.43	−23.08
सूतक	33.11	77.28	−20.08
सोनामर्ग	34.18	75.18	−28.48
सोन्दर	33.28	75.55	−26.20
सोपुर	34.19	74.30	−32.00
स्कार्दू	35.17	75.44	−27.04
हान्ले	32.46	79.01	−13.56
अमृतसर (पंजाब)	31.37	74.55	−30.20
अलिगढ़ (उ.प्र.)	27.54	78.6	−17.36
अलीपुर (बंगाल)	22.32	88.24	+23.36
अलाहाबाद (उ.प्र.)	25.28	81.54	−02.24
अगरतला (त्रिपुरा)	23.49	91.18	+35.12
अहमदाबाद (गुजरात)	23.3	72.40	−39.20
अहमदनगर (महा.)	19.05	74.48	−30.48
अजमेर (राज.)	26.27	74.42	−31.12
अलमोड़ा (उ.प्र.)	29.37	79.40	−11.20
अलवर (राज.)	27.34	76.38	−23.28
अमरावती (महा.)	20.56	77.48	−18.48
अम्बाला (हरि.)	30.21	76.52	−22.32
अंबिकापुर (म.प्र.)	23.10	83.15	+03.00
अमेठी (उ.प्र.)	26.8	81.50	−02.40
आनन्दपुर (पंजा)	31.15	76.32	−23.52
अनूपगढ़ (राज.)	29.07	73.06	−37.36
आजमगढ़ (उ.प्र.)	26.3	83.13	+02.52
अयोध्या (उ.प्र.)	26.48	82.14	−01.04
अबोहर (पंजा)	30.08	74.12	−33.12
असनसोल (बंगाल)	23.42	87.01	+18.04
आगरा (उ.प्र.)	27.10	78.05	−17.40
आबू (राज.)	24.40	72.45	−39.00
इटावा (उ.प्र.)	26.47	79.02	−13.52
इम्फाल (मणि.)	24.44	13.58	+45.52
इन्दौर (म.प्र.)	22.44	75.50	−26.40
इटारसी (म.प्र.)	22.30	77.55	−18.20
उदयपुर (राज.)	27.42	75.33	−27.48
उज्जैन (म.प्र.)	23.09	75.43	−27.08
उन्नाव (उ.प्र.)	26.48	80.43	−07.08
ऊना (हि.प्र.)	31.32	76.18	−24.48
औरंगाबाद (महा.)	19.53	75.23	−28.28
कटक (उड़ी)	20.28	85.54	+13.36
कच्छ (गुजरात)	22.35	69.40	−51.20
कटनी (म.प्र.)	23.47	80.27	−08.12
करनाल (हरियाणा)	29.42	77.02	−21.52
कलकत्ता (बंगाल)	22.34	88.24	+23.36
कपूरथला (पंजाब)	31.23	75.25	−28.20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टै॰ अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मि. सै.
कांगड़ा (हि.प्र.)	32.5	76.18	−24.48
कानपुर (उ.प्र.)	26.28	80.24	−08.24
कालका (हरियाणा)	30.49	76.57	−22.12
कुल्लु (हि.प्र.)	31.58	77.10	−21.20
कुराली (पंजाब)	30.50	76.35	−23.40
कोटकपूरा (पंजाब)	30.24	74.52	−30.32
कादियां (पंजाब)	31.49	75.23	−28.28
करसोग (हि.प्र.)	31.23	77.14	−21.04
किन्नोर (हि.प्र.)	31.32	78.20	−16.40
कंडाघाट (हि.प्र.)	30.57	77.08	−21.28
कोटखाई (हि.प्र.)	31.8	77.36	−19.36
कोहिमा (नागा.)	25.41	94.07	+46.28
कुमार सेन	31.18	77.37	−19.32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29.59	76.48	−22.48
करतारपुर (पंजाब)	31.27	75.32	−27.52
कैथल (हरियाणा)	29.48	76.26	−24.16
कोल्हापुर (महा.)	16.42	74.16	−32.56
कन्नौज (उ.प्र.)	27.3	79.58	−09.28
कोटा (राज.)	25.10	75.52	−26.32
खन्ना (पंजाब)	30.42	17.13	−25.08
खुरजा (उ.प्र.)	28.15	77.50	−18.40
खण्डवा (उ.प्र.)	21.50	78.07	−24.28
गढ़वाल (उ.प्र.)	30.15	79.30	−12.00
गया (बिहार)	24.49	85.01	+10.04
ग्वालियर (म.प्र.)	26.14	78.10	−17.20
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टै॰ अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मि. सै.
गुड़गांव (हरियाणा)	28.29	77.04	−21.44
गोरखपुर (उ.प्र.)	26.45	83.24	+03.36
गोहाटी (आसाम)	26.11	91.47	+36.52
गाजीपुर (उ.प्र.)	25.34	83.35	+04.20
गोईदवाल (पंजाब)	31.22	75.08	−29.28
गोराया (पंजाब)	31.06	75.47	−26.52
गंगानगर (राज.)	29.49	73.50	−34.40
गोंडा (उ.प्र.)	27.28	82.01	−01.56
गढ़शंकर (पंजाब)	31.13	76.11	−25.16
गाजियाबाद (उ.प्र.)	28.40	77.28	−20.08
गोवा	15.27	73.59	−34.04
गोलकुण्डा (हैदरा.)	17.47	82.20	−00.39
चम्बा (हि.प्र.)	32.30	76.10	−25.20
चित्तौडगढ़ (राज.)	24.54	74.42	−31.12
चण्डीगढ़ (के.प्र.)	30.44	.76.53	−22.28
चन्दौसी (उ.प्र.)	28.27	78.59	−14.44
चिरापुंजी (मेघा)	25.27	91.47	+37.08
चूरू (राज.)	28.19	75.01	−21.56
चिंतपूर्णी	31.47	76.04	−25.44
जालंधर (पंजाब)	31.19	75.24	−28.24
जौनपुर (उ.प्र.)	25.46	82.44	+00.56
जैसलमेर (राज.)	26.55	70.54	−46.24
जयपुर (राज.)	26.55	72.52	−26.32
जीन्द (हरि.)	29.19	76.21	−24.36
जण्डियाला (पंजाब)	31.51	75.37	−27.32
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.
जामनगर (गुजरात)	22.27	70.05	−49.40	त्रिवेन्द्रम (केरल)	08.29	76.57	−22.12
जोगिंद्रनगर (हि.प्र.)	31.58	76.45	−23.00	थानेसर (हरि.)	29.58	76.56	−22.16
जोधपुर (राज.)	26.18	73.04	−37.44	दिल्ली	28.39	77.12	−21.12
जबलपुर (म.प्र.)	23.10	79.59	−10.04	देहरादून (उ.आंचल)	30.19	78.04	−17.44
जलगांव (गुजरात)	22.27	75.40	−27.20	दसूहा (पंजाब)	31.49	75.39	−27.24
जैतों (पंजाब)	30.28	74.53	−30.28	दीनानगर (पंजाब)	32.08	75.31	−27.56
जीरा	30.57	74.59	−30.04	दतारपुर (पंजाब)	31.53	75.45	−27.00
जगारधरी (हरि.)	30.10	77.16	−20.56	दार्जिलिंग (बंगाल)	27.03	88.18	+23.12
ज्वालामुखी (हि.प्र.)	31.53	76.20	−24.40	दुर्गापुर (बंगाल)	23.30	87.20	+19.20
जाखल (हरि.)	29.49	75.49	−26.44	द्वारिका (गुजरात)	22.14	69.01	−53.56
जूनागढ़ (गुजरात)	21.31	70.06	−47.36	देवरिया (उ.प्र.)	23.33	83.45	+05.00
जोरहाट (आसाम)	26.46	94.06	+47.04	दतिया (म.प्र.)	25.39	78.27	−16.12
झांसी (म.प्र.)	25.27	78.37	−15.32	देवप्रयाग (उ.प्र.)	30.09	78.37	−15.32
झरिया (बिहार)	23.50	86.33	+26−12	धनबाद (बिहार)	23.47	86.30	+16.00
झुंझुन (राज.)	28.06	75.25	−28.20	धर्मशाला (हि.प्र.)	32.16	76.23	−24.28
टाटर नगर (बिहार)	25.50	86.10	+14.40	धौलपुर (राज.)	26.42	77.53	−18.28
टांडा उडमुड़ (पंजाब)	31.40	75.41	−27.16	नागौर (राज.)	27.11	73.40	−35.20
टोहाना (हरि.)	29.43	75.53	−26.28	नवलगढ़ (राज.)	22.51	75.18	−28.48
टिहरी (उ.प्र.)	30.20	78.00	−16.00	नोहर (राज.)	29.11	74.46	−30.56
टोंक (राज.)	26.11	75.50	−26.40	नसीराबाद (राज.)	26.18	74.46	−30.56
टोडाराय सिंह (राज.)	26.00	75.29	−28.04	नासिक (महा.)	20.02	73.50	−34.40
डलहोजी (हि.प्र.)	32.31	76.00	−26.00	नरवाना (हरि.)	29.36	76.08	−25.28
डिब्रुगढ़ (आसाम)	27.29	94.58	+49.42	नागपुर (म.प्र.)	21.09	79.09	−13.24
डूगरपुर (राज.)	23.50	76.46	−35.08	नारवौल (हरि.)	28.02	76.14	−25.04
तिरुपति (आंध्र)	13.40	79.20	−12.40	नंगल (पंजाब)	31.23	76.23	−24.08

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टै॰ अन्तर	
	अ.	क.	अ.	क.	मि.	सै.
नवांशहर (पंजाब)	31.07		76.08		−25.28	
नाभा (पंजाब)	30.25		76.09		−25.24	
नाहन (हि.प्र.)	30.33		77.21		−20.36	
नालागढ़ (हि.प्र.)	30.57		76.22		−24.32	
नैनीताल (उ.आ.)	29.23		79.30		−12.00	
पठानकोट (पंजाब)	32.17		75.42		−27.12	
पटियाला (पंजाब)	30.20		76.25		−24.40	
पट्टी (पंजाब)	31.17		74.51		−30.36	
पंचकूला (हरि.)	30.45		76.53		−22.28	
पानीपत (हरि.)	29.23		77.01		−21.56	
पिहोवा (हरि.)	29.56		76.36		−23.36	
पिंजौर (हरि.)	30.49		76.55		−22.20	
पटना (बिहार)	25.37		85.13		+10.52	
प्रयाग (उ.प्र.)	25.30		81.56		−02.16	
पीलीभीत (उ.प्र.)	28.38		79.51		−10.36	
पालमपुर (हि.प्र.)	32.06		76.33		−23.48	
पपरौला (हि.प्र.)	32.04		76.34		−23.44	
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	25.54		81.59		−02.04	
प्रतापगढ़ (म.प्र.)	24.02		74.40		−31.20	
पाली (राज.)	25.46		73.25		−36.20	
पोरबन्दर (गुजरात)	21.37		69.49		−50.40	
पचमढी (म.प्र.)	22.30		78.22		−16.32	
पुरी (उड़ीसा)	19.48		85.52		+13.28	
पूना (महा.)	18.30		73.56		−34.28	
पुरुलिया (बंगाल)	23.20		86.25		+15.40	

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टै॰ अन्तर	
	अ.	क.	अ.	क.	मि.	सै.
पन्ना (म.प्र.)	24.44		80.14		−09.04	
पिलानी (राज.)	28.23		75.35		−27.40	
पुत्कर (राज.)	28.30		74.34		−31.44	
पतेहगढ़ (उ.प्र.)	27.23		79.40		−11.20	
फैजाबाद (उ.प्र.)	26.47		82.12		−01.12	
परुखाबाद (उ.प्र.)	27.24		79.37		−11.32	
फगवाड़ा (पंजाब)	31.13		75.47		−26.52	
फरीदकोट (पंजाब)	30.40		74.57		−30.12	
फाजिल्का (पंजाब)	30.24		74.04		−33.44	
फिरोजपुर (पंजाब)	30.55		74.40		−31.20	
फिल्लौर (पंजाब)	31.01		75.48		−26.48	
फरीदाबाद (हरि.)	28.25		77.22		−20.32	
फतेहाबाद (हरि.)	29.31		75.30		−28.00	
बटाला (पंजाब)	31.49		75.14		−29.04	
बंगा (पंजाब)	31.11		75.59		−26.04	
वलाचौर (पंजाब)	31.03		76.19		−24.44	
बद्रीनाथ (उ.प्र.)	30.44		69.02		−11.52	
विजनौर (उ.प्र.)	29.23		78.11		−17.16	
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	28.24		77.54		−18.24	
बनारस (उ.प्र.)	25.20		83.00		+02.00	
बरेली (उ.प्र.)	28.22		79.27		−12.12	
बलिया (उ.प्र.)	25.44		84.11		+06.04	
बदायूं (उ.प्र.)	28.02		79.10		−13.20	
बड़ौदा (गुजरात)	22.18		73.12		−37.12	
बम्बई (महा.)	19.00		72.54		−38.24	

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै० अन्तर मि. सै.
बाराबंकी (उ.प्र.)	26.56	81.13	−05.08	मंसूरी (उ.प्र.)	30.27	78.06	−17.36
बल्लभगढ़ (हरि.)	28.22	77.20	−20.40	मथुरा (उ.प्र.)	27.28	77.41	−19.16
बहादुरपुर (हरि.)	28.42	76.55	−22.30	मुजफ्फरनगर (उ.प्र)	29.28	77.44	−19.04
बीकानेर (राज.)	28.01	73.22	−36.32	मंदसौर (म.प्र.)	24.03	75.08	−29.28
बांसबाड़ा (राज.)	23.30	74.24	−32.24	मैसूर (कर्नाटक)	12.18	76.42	−23.12
बून्दी (राज.)	25.27	75.40	−27.20	मण्डी (हि.प्र.)	31.43	76.58	−22.08
बैजनाथ (हि.प्र.)	32.03	76.36	−23.36	मनीकरण (हि.प्र.)	32.00	77.20	−20.40
बिलासपुर (हि.प्र.)	31.19	76.50	−22.40	मनाली (हि.प्र.)	32.17	77.19	−20.44
बिलासपुर (म.प्र.)	22.05	82.13	−01.08	मद्रास (चेन्नई)	13.04	80.17	−08.52
बस्तर (म.प्र.)	19.20	81.30	−04.00	यमुनानगर (हरि.)	30.08	77.16	−20.56
बैंगलौर (कर्नाटक)	12.58	77.38	−19.28	रामपुर (हि.प्र.)	31.28	77.39	−19.24
भटिंडा (पंजाब)	30.11	75.00	−30.00	रोहडू (हि.प्र.)	31.12	77.44	−19.08
भिवानी (हरियाणा)	28.46	76.18	−24.48	रोपड़ (पंजाब)	30.57	76.32	−23.52
भुवनेश्वर (उड़ीसा)	20.10	85.50	+13.20	राजपुरा (पंजाब)	30.29	76.34	−23.44
भरतपुर (राज.)	27.05	77.30	−20.00	रायकोट (पंजाब)	30.41	75.36	−27.26
भीलवाड़ा (राज.)	25.21	74.40	−31.20	रोहतक (हरि.)	28.54	76.38	−23.28
मलेरकोटला (पंजाब)	30.31	75.59	−26.04	रिवाड़ी (हरि.)	28.12	76.40	−23.20
मोगा (पंजाब)	30.48	75.10	−29.20	रतलाम (म.प्र.)	23.31	75.07	−29.32
महेन्द्रगढ़ (हरि)	28.16	76.10	−25.20	रायपुर (म.प्र.)	21.15	81.41	−03.16
मनसादेवी (हरि.)	30.44	76.52	−22.32	रायबरेली (उ.प्र.)	26.14	81.16	−04.56
मकराना (राज.)	27.03	74.43	−31.08	रामपुर (उ.प्र.)	28.48	79.05	−13.40
मेरठ (उ.प्र.)	29.01	77.05	−19.00	रांची (बिहार)	23.23	85.23	+11.32
मिर्जापुर (उ.प्र.)	25.10	82.07	−00.28	रायसिंहनगर (राज.)	29.32	73.27	−36.12
मुरादाबाद (उ.प्र.)	28.51	78.49	−14.44	राजकोट (गुजरात)	22.18	70.56	−46.16
मुगलसराय (उ.प्र.)	25.17	83.11	+02.44	रामेश्वरम् (ताम.)	09.17	79.22	−12.32

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै॰ अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै॰ अन्तर मि. सै.
लुधियाना (पंजाब)	30.55	75.54	−26.24	सोनीपत (हरि.)	28.58	76.59	−22.04
लाहौर (पाकिस्तान)	31.35	74.18	−32.48	सूरतगढ़ (राज.)	29.19	73.57	−34.12
लखनऊ (यू.पी)	26.55	80.59	−06.04	सीकर (राज.)	27.36	75.09	−29.24
लाडवा (हरियाणा)	29.59	77.05	−21.40	सवाई माधो (राज.)	22.58	76.30	−24.00
वृन्दावन (उ.प्र.)	27.33	77.44	−19.04	साम्भर (राज.)	26.54	75.10	−29.20
विशाखापट्टनम	17.42	83.20	+3.20	सिरोही (राज.)	24.53	72.54	−38.24
शिमला	31.06	77.13	−21.08	सागर (म.प्र.)	23.50	78.45	−13.48
शाहदरा (दिल्ली)	28.40	77.20	−20.40	सिहोर (म.प्र.)	23.12	77.00	−22.00
शाहाबाद (हरि.)	30.10	76.55	−22.20	सहारनपुर (उ.प्र.)	29.58	77.23	−20.28
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)	27.54	79.57	−10.12	सीतापुर (उ.प्र.)	27.26	80.43	−07.08
शोलापुर (महा.)	17.40	75.56	−26.16	सोमनाथ (गुजरात)	21.04	70.26	−48.16
शिलांग (मेघा.)	25.34	91.56	+37.44	होशिहारपुर (पंजाब)	31.32	75.57	−26.12
श्रीगंगानगर (राज.)	29.49	73.50	−34.40	हमीरपुर (हि.प्र.)	31.42	76.30	−24.00
श्री माधोपुर (राज.)	27.25	75.32	−27.52	हजारीबाग (बिहार)	23.59	85.25	+11.40
संगरूर (पंजाब)	30.12	75.53	−26.28	हांसी (हरियाणा)	29.06	76.00	−26.00
सरहिन्द (पंजाब)	30.38	76.29	−24.04	हिसार (हरियाणा)	29.10	75.46	−26.56
सुल्तानपुर (पंजाब)	31.58	77.07	−21.32	हरिद्वार (उ.प्र.)	29.58	78.13	−17.08
समाना (पंजाब)	30.09	76.12	−29.12	हाथरस (उ.प्र.)	27.36	78.6	−17.36
समराला (पंजाब)	30.51	76.11	−25.16	हनुमानगढ़ (राज.)	29.32	74.21	−32.36
सुनाम (पंजाब)	30.08	75.48	−23.48	हापुड (उ.प्र.)	28.43	77.50	−18.40
सुन्दरनगर (हि.प्र.)	31.33	76.54	−22.24	हरदोई (उ.प्र.)	27.23	80.10	−09.20
सोलन (हि.प्र.)	30.55	77.09	−21.24	हैदराबाद (आ.प्र.)	17.20	78.30	−16.00
सुजानपुर टि.(हि.प्र.)	31.50	06.31	−23.56	होशंगाबाद (म.प्र.)	22.46	77.45	−19.00
सरकाघाट (हि.प्र.)	31.43	76.22	−24.32	हावड़ा (बंगाल)	22.32	88.23	+23.32
सिरसा (हरि.)	29.32	75.07	−29.32				

दैनिक स्पष्ट - ग्रह

मार्च सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	10:16:46:35	1:16:09:26	4:20:44:40	11:03:55:38	0:12:59:56	0:01:02:04	6:05:02:36	7:15:45:57	11:09:08:55	10:06:57:25	8:15:06:17
2	10:17:46:47	1:28:13:26	4:20:21:06	11:05:19:21	0:13:10:49	0:02:09:13	6:05:00:17	7:15:42:46	11:09:12:09	10:06:59:40	8:15:07:30
3	10:18:46:57	2:10:33:43	4:19:57:26	11:06:37:29	0:13:21:49	0:03:16:09	6:04:57:53	7:15:39:35	11:09:15:24	10:07:01:55	8:15:08:41
4	10:19:47:06	2:23:15:13	4:19:33:43	11:07:49:26	0:13:32:55	0:04:22:51	6:04:55:23	7:15:36:24	11:09:18:40	10:07:04:09	8:15:09:50
5	10:20:47:12	3:06:21:46	4:19:09:58	11:08:54:39	0:13:44:06	0:05:29:20	6:04:52:48	7:15:33:13	11:09:21:57	10:07:06:23	8:15:10:58
6	10:21:47:16	3:19:55:22	4:18:46:15	11:09:52:37	0:13:55:23	0:06:35:34	6:04:50:08	7:15:30:03	11:09:25:15	10:07:08:36	8:15:12:04
7	10:22:47:18	4:03:55:32	4:18:22:37	11:10:42:52	0:14:06:46	0:07:41:33	6:04:47:23	7:15:26:52	11:09:28:34	10:07:10:49	8:15:13:08
8	10:23:47:18	4:18:18:52	4:17:59:06	11:11:24:59	0:14:18:14	0:08:47:18	6:04:44:33	7:15:23:41	11:09:31:53	10:07:13:02	8:15:14:11
9	10:24:47:16	5:02:59:17	4:17:35:44	11:11:58:38	0:14:29:48	0:09:52:47	6:04:41:38	7:15:20:31	11:09:35:13	10:07:15:14	8:15:15:12
10	10:25:47:13	5:17:48:45	4:17:12:34	11:12:23:36	0:14:41:27	0:10:58:00	6:04:38:38	7:15:17:20	11:09:38:33	10:07:17:25	8:15:16:11
11	10:26:47:07	6:02:38:43	4:16:49:38	11:12:39:43	0:14:53:11	0:12:02:57	6:04:35:33	7:15:14:09	11:09:41:55	10:07:19:36	8:15:17:08
12	10:27:47:00	6:17:21:28	4:16:27:00	11:12:46:58	0:15:05:00	0:13:07:37	6:04:32:24	7:15:10:59	11:09:45:17	10:07:21:46	8:15:18:04
13	10:28:46:51	7:01:51:20	4:16:04:41	11:12:45:28	0:15:16:54	0:14:12:01	6:04:29:10	7:15:07:48	11:09:48:39	10:07:23:56	8:15:18:58
14	10:29:46:41	7:16:04:58	4:15:42:43	11:12:35:25	0:15:28:53	0:15:16:07	6:04:25:51	7:15:04:37	11:09:52:02	10:07:26:05	8:15:19:50
15	11:00:46:29	8:00:01:12	4:15:21:09	11:12:17:13	0:15:40:57	0:16:19:56	6:04:22:28	7:15:01:26	11:09:55:25	10:07:28:13	8:15:20:41
16	11:01:46:15	8:13:40:29	4:15:00:01	11:11:51:23	0:15:53:05	0:17:23:26	6:04:19:01	7:14:58:15	11:09:58:49	10:07:30:21	8:15:21:29
17	11:02:45:59	8:27:04:05	4:14:39:21	11:11:18:35	0:16:05:19	0:18:26:38	6:04:15:30	7:14:55:05	11:10:02:14	10:07:32:27	8:15:22:16
18	11:03:45:42	9:10:13:35	4:14:19:12	11:10:39:37	0:16:17:37	0:19:29:30	6:04:11:54	7:14:51:54	11:10:05:38	10:07:34:33	8:15:23:01
19	11:04:45:23	9:23:10:21	4:13:59:35	11:09:55:25	0:16:29:59	0:20:32:03	6:04:08:14	7:14:48:43	11:10:09:03	10:07:36:38	8:15:23:44
20	11:05:45:03	10:05:55:25	4:13:40:32	11:09:07:03	0:16:42:25	0:21:34:16	6:04:04:31	7:14:45:32	11:10:12:28	10:07:38:43	8:15:24:25
21	11:06:44:40	10:18:29:26	4:13:22:05	11:08:15:36	0:16:54:56	0:22:36:07	6:04:00:44	7:14:42:22	11:10:15:54	10:07:40:46	8:15:25:05
22	11:07:44:15	11:00:52:50	4:13:04:16	11:07:22:14	0:17:07:32	0:23:37:37	6:03:56:53	7:14:39:11	11:10:19:20	10:07:42:49	8:15:25:42
23	11:08:43:49	11:13:06:04	4:12:47:06	11:06:28:07	0:17:20:11	0:24:38:45	6:03:52:59	7:14:36:01	11:10:22:46	10:07:44:50	8:15:26:18
24	11:09:43:20	11:25:09:56	4:12:30:36	11:05:34:22	0:17:32:54	0:25:39:30	6:03:49:01	7:14:32:50	11:10:26:13	10:07:46:51	8:15:26:52
25	11:10:42:50	0:07:05:46	4:12:14:48	11:04:42:04	0:17:45:41	0:26:39:50	6:03:45:00	7:14:29:39	11:10:29:34	10:07:48:51	8:15:27:24
26	11:11:42:17	0:18:55:40	4:11:59:43	11:03:52:10	0:17:58:31	0:27:39:46	6:03:40:56	7:14:26:29	11:10:32:58	10:07:50:49	8:15:27:54
27	11:12:41:42	1:00:42:28	4:11:45:21	11:03:05:32	0:18:11:26	0:28:39:17	6:03:36:49	7:14:23:18	11:10:36:24	10:07:52:47	8:15:28:23
28	11:13:41:05	1:12:29:54	4:11:31:44	11:02:22:53	0:18:24:24	0:29:38:21	6:03:32:40	7:14:20:07	11:10:39:50	10:07:54:44	8:15:28:49
29	11:14:40:25	1:24:22:23	4:11:18:53	11:01:44:48	0:18:37:25	1:00:36:58	6:03:28:27	7:14:16:56	11:10:43:16	10:07:56:39	8:15:29:13
30	11:15:39:43	2:06:24:52	4:11:06:48	11:01:11:44	0:18:50:30	1:01:35:06	6:03:24:12	7:14:13:45	11:10:46:42	10:07:58:33	8:15:29:36
31	11:16:38:59	2:18:42:37	4:10:55:29	11:00:44:01	0:19:03:38	1:02:32:45	6:03:19:55	7:14:10:35	11:10:50:07	10:08:00:27	8:15:29:57

अप्रैल सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	11:17:38:13	3:01:20:51	4:10:44:57	11:00:21:51	0:19:16:49	1:03:29:54	6:03:15:35	7:14:07:24	11:10:53:31	10:08:02:19	8:15:30:16
2	11:18:37:24	3:14:24:03	4:10:35:12	11:00:05:22	0:19:30:03	1:04:26:31	6:03:11:13	7:14:04:13	11:10:56:56	10:08:04:10	8:15:30:33
3	11:19:36:33	3:27:55:26	4:10:26:14	10:29:54:34	0:19:43:20	1:05:22:36	6:03:06:50	7:14:01:02	11:11:00:20	10:08:05:59	8:15:30:48
4	11:20:35:40	4:11:56:01	4:10:18:04	10:29:49:26	0:19:56:40	1:06:18:07	6:03:02:24	7:13:57:52	11:11:03:44	10:08:07:48	8:15:31:01
5	11:21:34:44	4:26:23:58	4:10:10:40	10:29:49:50	0:20:10:03	1:07:13:03	6:02:57:57	7:13:54:41	11:11:07:07	10:08:09:35	8:15:31:12
6	11:22:33:46	5:11:14:11	4:10:04:04	10:29:55:40	0:20:23:29	1:08:07:23	6:02:53:28	7:13:51:30	11:11:10:30	10:08:11:20	8:15:31:22
7	11:23:32:46	5:26:18:45	4:09:58:15	11:00:06:43	0:20:36:57	1:09:01:05	6:02:48:58	7:13:48:20	11:11:13:52	10:08:13:05	8:15:31:29
8	11:24:31:44	6:11:27:57	4:09:53:12	11:00:22:50	0:20:50:28	1:09:54:09	6:02:44:26	7:13:45:09	11:11:17:14	10:08:14:48	8:15:31:35
9	11:25:30:41	6:26:32:00	4:09:48:55	11:00:43:48	0:21:04:01	1:10:46:33	6:02:39:54	7:13:41:58	11:11:20:35	10:08:16:30	8:15:31:39
10	11:26:29:35	7:11:22:31	4:09:45:25	11:01:09:23	0:21:17:37	1:11:38:16	6:02:35:20	7:13:38:48	11:11:23:55	10:08:18:11	8:15:31:41
11	11:27:28:28	7:25:53:39	4:09:42:40	11:01:39:24	0:21:31:15	1:12:29:16	6:02:30:45	7:13:35:37	11:11:27:15	10:08:19:50	8:15:31:41
12	11:28:27:19	8:10:02:16	4:09:40:41	11:02:13:36	0:21:44:55	1:13:19:32	6:02:26:10	7:13:32:26	11:11:30:34	10:08:21:28	8:15:31:39
13	11:29:26:08	8:23:47:43	4:09:39:27	11:02:51:50	0:21:58:38	1:14:09:03	6:02:21:34	7:13:29:15	11:11:33:52	10:08:23:04	8:15:31:36
14	0:00:24:55	9:07:11:04	4:09:38:57	11:03:33:51	0:22:12:23	1:14:57:47	6:02:16:58	7:13:26:04	11:11:37:10	10:08:24:39	8:15:31:30
15	0:01:23:41	9:20:14:29	4:09:39:12	11:04:19:30	0:22:26:10	1:15:45:42	6:02:12:21	7:13:22:53	11:11:40:27	10:08:26:12	8:15:31:23
16	0:02:22:25	10:03:00:37	4:09:40:11	11:05:08:35	0:22:39:59	1:16:32:46	6:02:07:44	7:13:19:43	11:11:43:43	10:08:27:44	8:15:31:14
17	0:03:21:07	10:15:32:08	4:09:41:53	11:06:00:56	0:22:53:50	1:17:18:58	6:02:03:08	7:13:16:32	11:11:46:58	10:08:29:15	8:15:31:03
18	0:04:19:48	10:27:51:29	4:09:44:18	11:06:56:25	0:23:07:42	1:18:04:16	6:01:58:31	7:13:13:21	11:11:50:12	10:08:30:43	8:15:30:50
19	0:05:18:27	11:10:00:50	4:09:47:26	11:07:54:52	0:23:21:37	1:18:48:37	6:01:53:55	7:13:10:11	11:11:53:25	10:08:32:11	8:15:30:35
20	0:06:17:04	11:22:02:04	4:09:51:15	11:08:56:10	0:23:35:33	1:19:31:59	6:01:49:19	7:13:07:00	11:11:56:37	10:08:33:36	8:15:30:19
21	0:07:15:39	0:03:56:55	4:09:55:46	11:10:00:11	0:23:49:31	1:20:14:21	6:01:44:43	7:13:03:50	11:11:59:48	10:08:35:01	8:15:30:00
22	0:08:14:12	0:15:47:10	4:10:00:57	11:11:06:49	0:24:03:30	1:20:55:39	6:01:40:09	7:13:00:39	11:12:02:58	10:08:36:23	8:15:29:40
23	0:09:12:44	0:27:34:44	4:10:06:49	11:12:15:58	0:24:17:30	1:21:35:51	6:01:35:35	7:12:57:28	11:12:06:07	10:08:37:44	8:15:29:18
24	0:10:11:13	1:09:21:56	4:10:13:20	11:13:27:32	0:24:31:32	1:22:14:54	6:01:31:03	7:12:54:17	11:12:09:15	10:08:39:03	8:15:28:55
25	0:11:09:40	1:21:11:34	4:10:20:30	11:14:41:27	0:24:45:36	1:22:52:46	6:01:26:31	7:12:51:06	11:12:12:21	10:08:40:21	8:15:28:29
26	0:12:08:06	2:03:06:54	4:10:28:18	11:15:57:38	0:24:59:40	1:23:29:24	6:01:22:01	7:12:47:56	11:12:15:26	10:08:41:37	8:15:28:02
27	0:13:06:29	2:15:11:46	4:10:36:44	11:17:16:02	0:25:13:46	1:24:04:45	6:01:17:33	7:12:44:45	11:12:18:30	10:08:42:51	8:15:27:33
28	0:14:04:50	2:27:30:23	4:10:45:46	11:18:36:35	0:25:27:52	1:24:38:45	6:01:13:06	7:12:41:34	11:12:21:33	10:08:44:03	8:15:27:03
29	0:15:03:09	3:10:07:07	4:10:55:25	11:19:59:13	0:25:42:00	1:25:11:22	6:01:08:41	7:12:38:23	11:12:24:34	10:08:45:14	8:15:26:30
30	0:16:01:26	3:23:06:08	4:11:05:39	11:21:23:56	0:25:56:08	[illegible]	[illegible]	7:12:35:12	11:12:27:34	10:08:46:23	[illegible]

मई सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रा...

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	0:16:59:41	4:06:30:50	4:11:16:27	11:22:50:40	0:26:10:17	1:26:12:12	6:00:59:56	7:12:32:02	11:12:30:32	10:08:47:30	8:15:25:21
2	0:17:57:54	4:20:23:12	4:11:27:49	11:24:19:25	0:26:24:27	1:26:40:18	6:00:55:38	7:12:28:51	11:12:33:29	10:08:48:35	8:15:24:43
3	0:18:56:05	5:04:42:59	4:11:39:45	11:25:50:08	0:26:38:37	1:27:06:47	6:00:51:21	7:12:25:40	11:12:36:24	10:08:49:39	8:15:24:05
4	0:19:54:14	5:19:27:13	4:11:52:13	11:27:22:48	0:26:52:48	1:27:31:35	6:00:47:07	7:12:22:30	11:12:39:18	10:08:50:41	8:15:23:24
5	0:20:52:21	6:04:29:54	4:12:05:12	11:28:57:26	0:27:07:00	1:27:54:39	6:00:42:55	7:12:19:19	11:12:42:10	10:08:51:41	8:15:22:42
6	0:21:50:27	6:19:42:38	4:12:18:43	0:00:34:01	0:27:21:12	1:28:15:55	6:00:38:46	7:12:16:08	11:12:45:01	10:08:52:39	8:15:21:58
7	0:22:48:30	7:04:55:35	4:12:32:44	0:02:12:31	0:27:35:24	1:28:35:20	6:00:34:40	7:12:12:57	11:12:47:50	10:08:53:36	8:15:21:13
8	0:23:46:33	7:19:59:09	4:12:47:14	0:03:52:58	0:27:49:37	1:28:52:50	6:00:30:37	7:12:09:47	11:12:50:37	10:08:54:30	8:15:20:26
9	0:24:44:33	8:04:45:14	4:13:02:14	0:05:35:22	0:28:03:50	1:29:08:21	6:00:26:37	7:12:06:36	11:12:53:23	10:08:55:23	8:15:19:38
10	0:25:42:32	8:19:08:17	4:13:17:42	0:07:19:42	0:28:18:03	1:29:21:51	6:00:22:40	7:12:03:25	11:12:56:07	10:08:56:14	8:15:18:48
11	0:26:40:30	9:03:05:29	4:13:33:39	0:09:05:59	0:28:32:16	1:29:33:16	6:00:18:46	7:12:00:14	11:12:58:49	10:08:57:03	8:15:17:57
12	0:27:38:27	9:16:36:30	4:13:50:02	0:10:54:13	0:28:46:30	1:29:42:33	6:00:14:56	7:11:57:03	11:13:01:29	10:08:57:50	8:15:17:04
13	0:28:36:22	9:29:42:54	4:14:06:53	0:12:44:24	0:29:00:43	1:29:49:38	6:00:11:09	7:11:53:52	11:13:04:08	10:08:58:35	8:15:16:09
14	0:29:34:16	10:12:27:34	4:14:24:11	0:14:36:31	0:29:14:56	1:29:54:29	6:00:07:25	7:11:50:42	11:13:06:44	10:08:59:19	8:15:15:14
15	1:00:32:09	10:24:53:59	4:14:41:54	0:16:30:35	0:29:29:09	1:29:57:03	6:00:03:46	7:11:47:31	11:13:09:19	10:09:00:00	8:15:14:17
16	1:01:30:00	11:07:05:54	4:15:00:04	0:18:26:35	0:29:43:22	1:29:57:18	6:00:00:10	7:11:44:20	11:13:11:52	10:09:00:40	8:15:13:18
17	1:02:27:51	11:19:06:58	4:15:18:38	0:20:24:28	0:29:57:35	1:29:55:11	5:29:56:38	7:11:41:10	11:13:14:23	10:09:01:17	8:15:12:18
18	1:03:25:40	0:01:00:32	4:15:37:37	0:22:24:12	1:00:11:48	1:29:50:42	5:29:53:10	7:11:37:59	11:13:16:52	10:09:01:53	8:15:11:17
19	1:04:23:28	0:12:49:38	4:15:57:00	0:24:25:45	1:00:26:00	1:29:43:47	5:29:49:46	7:11:34:48	11:13:19:19	10:09:02:27	8:15:10:15
20	1:05:21:14	0:24:36:58	4:16:16:47	0:26:29:02	1:00:40:12	1:29:34:28	5:29:46:26	7:11:31:37	11:13:21:43	10:09:02:59	8:15:09:11
21	1:06:18:59	1:06:24:56	4:16:36:57	0:28:33:58	1:00:54:23	1:29:22:43	5:29:43:11	7:11:28:27	11:13:24:06	10:09:03:29	8:15:08:06
22	1:07:16:43	1:18:15:48	4:16:57:31	1:00:40:26	1:01:08:33	1:29:08:34	5:29:40:01	7:11:25:16	11:13:26:27	10:09:03:56	8:15:06:59
23	1:08:14:26	2:00:11:49	4:17:18:26	1:02:48:17	1:01:22:43	1:28:52:03	5:29:36:54	7:11:22:05	11:13:28:45	10:09:04:22	8:15:05:52
24	1:09:12:07	2:12:15:17	4:17:39:44	1:04:57:22	1:01:36:52	1:28:33:10	5:29:33:53	7:11:18:54	11:13:31:01	10:09:04:46	8:15:04:43
25	1:10:09:46	2:24:28:43	4:18:01:22	1:07:07:30	1:01:51:00	1:28:12:01	5:29:30:56	7:11:15:43	11:13:33:15	10:09:05:08	8:15:03:33
26	1:11:07:25	3:06:54:49	4:18:23:22	1:09:18:27	1:02:05:07	1:27:48:38	5:29:28:04	7:11:12:32	11:13:35:27	10:09:05:28	8:15:02:22
27	1:12:05:02	3:19:36:26	4:18:45:43	1:11:30:00	1:02:19:13	1:27:23:08	5:29:25:16	7:11:09:22	11:13:37:37	10:09:05:46	8:15:01:10
28	1:13:02:37	4:02:36:26	4:19:08:24	1:13:41:55	1:02:33:18	1:26:55:37	5:29:22:34	7:11:06:11	11:13:39:44	10:09:06:02	8:14:59:57
29	1:14:00:11	4:15:57:22	4:19:31:24	1:15:53:52	1:02:47:22	1:26:26:13	5:29:19:57	7:11:03:00	11:13:41:49	10:09:06:17	8:14:58:42
30	1:14:57:43	4:29:41:03	4:19:54:44	1:18:05:37	1:03:01:25	1:25:55:05	5:29:17:25	7:10:59:49	11:13:43:51	10:09:06:29	8:14:57:27
31	1:15:55:15	5:13:48:02	4:20:18:22	1:20:16:54	1:03:15:26	1:25:22:22	5:29:14:57	7:10:56:39	11:13:45:51	10:09:06:39	8:14:56:11

जून सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	1:16:52:44	5:28:17:04	4:20:42:19	1:22:27:25	1:03:29:26	1:24:48:15	5:29:12:36	7:10:53:28	11:13:47:49	10:09:06:47	8:14:54:54
2	1:17:50:13	6:13:04:40	4:21:06:33	1:24:36:55	1:03:43:25	1:24:12:58	5:29:10:19	7:10:50:17	11:13:49:45	10:09:06:53	8:14:53:35
3	1:18:47:40	6:28:05:02	4:21:31:06	1:26:45:11	1:03:57:22	1:23:36:42	5:29:08:07	7:10:47:06	11:13:51:38	10:09:06:58	8:14:52:16
4	1:19:45:06	7:13:10:27	4:21:55:55	1:28:51:59	1:04:11:17	1:22:59:43	5:29:06:01	7:10:43:55	11:13:53:28	10:09:07:00	8:14:50:56
5	1:20:42:32	7:28:12:11	4:22:21:01	2:00:57:06	1:04:25:11	1:22:22:13	5:29:04:01	7:10:40:45	11:13:55:16	10:09:07:00	8:14:49:36
6	1:21:39:56	8:13:01:39	4:22:46:24	2:03:00:23	1:04:39:04	1:21:44:29	5:29:02:05	7:10:37:34	11:13:57:02	10:09:06:59	8:14:48:14
7	1:22:37:19	8:27:31:44	4:23:12:03	2:05:01:42	1:04:52:54	1:21:06:44	5:29:00:16	7:10:34:23	11:13:58:45	10:09:06:55	8:14:46:52
8	1:23:34:42	9:11:37:29	4:23:37:58	2:07:00:54	1:05:06:43	1:20:29:15	5:28:58:31	7:10:31:12	11:14:00:25	10:09:06:50	8:14:45:29
9	1:24:32:04	9:25:16:35	4:24:04:08	2:08:57:55	1:05:20:30	1:19:52:16	5:28:56:53	7:10:28:01	11:14:02:03	10:09:06:43	8:14:44:05
10	1:25:29:26	10:08:29:10	4:24:30:35	2:10:52:38	1:05:34:15	1:19:16:00	5:28:55:20	7:10:24:50	11:14:03:39	10:09:06:34	8:14:42:40
11	1:26:26:47	10:21:17:17	4:24:57:16	2:12:45:01	1:05:47:59	1:18:40:42	5:28:53:52	7:10:21:40	11:14:05:12	10:09:06:22	8:14:41:15
12	1:27:24:08	11:03:44:25	4:25:24:12	2:14:35:01	1:06:01:40	1:18:06:34	5:28:52:30	7:10:18:29	11:14:06:42	10:09:06:09	8:14:39:49
13	1:28:21:28	11:15:54:48	4:25:51:24	2:16:22:36	1:06:15:19	1:17:33:48	5:28:51:14	7:10:15:18	11:14:08:09	10:09:05:54	8:14:38:23
14	1:29:18:48	11:27:53:01	4:26:18:49	2:18:07:43	1:06:28:56	1:17:02:35	5:28:50:04	7:10:12:07	11:14:09:34	10:09:05:37	8:14:36:56
15	2:00:16:07	0:09:43:34	4:26:46:30	2:19:50:21	1:06:42:31	1:16:33:05	5:28:49:00	7:10:08:57	11:14:10:57	10:09:05:18	8:14:35:28
16	2:01:13:26	0:21:30:45	4:27:14:24	2:21:30:30	1:06:56:03	1:16:05:27	5:28:48:01	7:10:05:46	11:14:12:16	10:09:04:58	8:14:34:00
17	2:02:10:45	1:03:18:21	4:27:42:32	2:23:08:09	1:07:09:33	1:15:39:47	5:28:47:08	7:10:02:35	11:14:13:33	10:09:04:35	8:14:32:32
18	2:03:08:03	1:15:09:40	4:28:10:55	2:24:43:16	1:07:23:00	1:15:16:13	5:28:46:21	7:09:59:24	11:14:14:47	10:09:04:11	8:14:31:03
19	2:04:05:20	1:27:07:24	4:28:39:30	2:26:15:51	1:07:36:25	1:14:54:49	5:28:45:40	7:09:56:13	11:14:15:58	10:09:03:44	8:14:29:34
20	2:05:02:37	2:09:13:45	4:29:08:19	2:27:45:52	1:07:49:47	1:14:35:41	5:28:45:05	7:09:53:02	11:14:17:07	10:09:03:16	8:14:28:04
21	2:05:59:54	2:21:30:25	4:29:37:21	2:29:13:18	1:08:03:06	1:14:18:51	5:28:44:36	7:09:49:52	11:14:18:12	10:09:02:46	8:14:26:34
22	2:06:57:10	3:03:58:45	5:00:06:36	3:00:38:07	1:08:16:23	1:14:04:22	5:28:44:13	7:09:46:41	11:14:19:15	10:09:02:14	8:14:25:03
23	2:07:54:26	3:16:39:51	5:00:36:04	3:02:00:19	1:08:29:37	1:13:52:16	5:28:43:56	7:09:43:30	11:14:20:15	10:09:01:41	8:14:23:33
24	2:08:51:41	3:29:34:42	5:01:05:43	3:03:19:49	1:08:42:47	1:13:42:32	5:28:43:45	7:09:40:19	11:14:21:13	10:09:01:05	8:14:22:02
25	2:09:48:55	4:12:44:11	5:01:35:36	3:04:36:36	1:08:55:55	1:13:35:10	5:28:43:40	7:09:37:08	11:14:22:07	10:09:00:28	8:14:20:31
26	2:10:46:09	4:26:09:13	5:02:05:40	3:05:50:37	1:09:08:59	1:13:30:12	5:28:43:41	7:09:33:58	11:14:22:59	10:08:59:49	8:14:19:00
27	2:11:43:23	5:09:50:28	5:02:35:55	3:07:01:47	1:09:22:00	1:13:27:34	5:28:43:48	7:09:30:47	11:14:23:47	10:08:59:08	8:14:17:29
28	2:12:40:35	5:23:48:13	5:03:06:23	3:08:10:04	1:09:34:58	1:13:27:16	5:28:44:01	7:09:27:36	11:14:24:33	10:08:58:26	8:14:15:57
29	2:13:37:48	6:08:01:59	5:03:37:01	3:09:15:23	1:09:47:53	1:13:29:15	5:28:44:20	7:09:24:25	11:14:25:16	10:08:57:41	8:14:14:26
30	2:14:34:59	6:22:30:06	5:04:07:51	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	7:09:21:15	11:14:25:56	10:08:56:56	[illegible]

जुलाई सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	2:15:32:11	7:07:09:21	5:04:38:51	3:11:16:44	1:10:13:31	1:13:39:57	5:28:45:15	7:09:18:04	11:14:26:34	10:08:56:08	8:14:11:25
2	2:16:29:22	7:21:54:51	5:05:10:02	3:12:12:37	1:10:26:15	1:13:48:35	5:28:45:52	7:09:14:53	11:14:27:08	10:08:55:19	8:14:09:54
3	2:17:26:33	8:06:40:17	5:05:41:24	3:13:05:09	1:10:38:56	1:13:59:19	5:28:46:35	7:09:11:42	11:14:27:40	10:08:54:28	8:14:08:23
4	2:18:23:43	8:21:18:32	5:06:12:55	3:13:54:14	1:10:51:32	1:14:12:06	5:28:47:23	7:09:08:31	11:14:28:08	10:08:53:35	8:14:06:51
5	2:19:20:54	9:05:42:39	5:06:44:37	3:14:39:44	1:11:04:05	1:14:26:54	5:28:48:18	7:09:05:20	11:14:28:34	10:08:52:41	8:14:05:20
6	2:20:18:05	9:19:46:52	5:07:16:29	3:15:21:33	1:11:16:35	1:14:43:39	5:28:49:18	7:09:02:09	11:14:28:57	10:08:51:46	8:14:03:50
7	2:21:15:16	10:03:27:23	5:07:48:31	3:15:59:33	1:11:29:00	1:15:02:17	5:28:50:24	7:08:58:59	11:14:29:17	10:08:50:49	8:14:02:19
8	2:22:12:27	10:16:42:44	5:08:20:43	3:16:33:35	1:11:41:21	1:15:22:45	5:28:51:36	7:08:55:48	11:14:29:34	10:08:49:50	8:14:00:49
9	2:23:09:39	10:29:33:41	5:08:53:05	3:17:03:32	1:11:53:38	1:15:44:58	5:28:52:54	7:08:52:37	11:14:29:48	10:08:48:50	8:13:59:18
10	2:24:06:51	11:12:02:51	5:09:25:36	3:17:29:16	1:12:05:51	1:16:08:54	5:28:54:18	7:08:49:26	11:14:29:59	10:08:47:48	8:13:57:49
11	2:25:04:03	11:24:14:13	5:09:58:17	3:17:50:39	1:12:18:00	1:16:34:29	5:28:55:47	7:08:46:16	11:14:30:07	10:08:46:45	8:13:56:19
12	2:26:01:16	0:06:12:32	5:10:31:07	3:18:07:33	1:12:30:04	1:17:01:39	5:28:57:23	7:08:43:05	11:14:30:13	10:08:45:40	8:13:54:50
13	2:26:58:29	0:18:02:56	5:11:04:07	3:18:19:52	1:12:42:04	1:17:30:20	5:28:59:04	7:08:39:54	11:14:30:15	10:08:44:34	8:13:53:21
14	2:27:55:43	0:29:50:33	5:11:37:17	3:18:27:29	1:12:54:00	1:18:00:29	5:29:00:51	7:08:36:43	11:14:30:15	10:08:43:27	8:13:51:53
15	2:28:52:57	1:11:40:12	5:12:10:35	3:18:30:20	1:13:05:51	1:18:32:04	5:29:02:43	7:08:33:33	11:14:30:12	10:08:42:18	8:13:50:25
16	2:29:50:12	1:23:36:11	5:12:44:03	3:18:28:22	1:13:17:37	1:19:04:59	5:29:04:41	7:08:30:22	11:14:30:05	10:08:41:07	8:13:48:58
17	3:00:47:28	2:05:42:02	5:13:17:40	3:18:21:35	1:13:29:18	1:19:39:14	5:29:06:45	7:08:27:11	11:14:29:56	10:08:39:56	8:13:47:31
18	3:01:44:44	2:18:00:26	5:13:51:25	3:18:09:59	1:13:40:54	1:20:14:43	5:29:08:55	7:08:24:00	11:14:29:44	10:08:38:43	8:13:46:05
19	3:02:42:00	3:00:32:59	5:14:25:20	3:17:53:41	1:13:52:26	1:20:51:25	5:29:11:10	7:08:20:49	11:14:29:29	10:08:37:29	8:13:44:40
20	3:03:39:17	3:13:20:23	5:14:59:24	3:17:32:48	1:14:03:52	1:21:29:17	5:29:13:31	7:08:17:38	11:14:29:11	10:08:36:13	8:13:43:15
21	3:04:36:34	3:26:22:20	5:15:33:36	3:17:07:33	1:14:15:13	1:22:08:15	5:29:15:58	7:08:14:28	11:14:28:50	10:08:34:57	8:13:41:51
22	3:05:33:52	4:09:37:55	5:16:07:56	3:16:38:12	1:14:26:29	1:22:48:18	5:29:18:30	7:08:11:17	11:14:28:27	10:08:33:39	8:13:40:27
23	3:06:31:10	4:23:05:48	5:16:42:26	3:16:05:07	1:14:37:40	1:23:29:23	5:29:21:07	7:08:08:06	11:14:28:00	10:08:32:20	8:13:39:05
24	3:07:28:29	5:06:44:37	5:17:17:03	3:15:28:45	1:14:48:45	1:24:11:28	5:29:23:50	7:08:04:55	11:14:27:31	10:08:31:00	8:13:37:43
25	3:08:25:48	5:20:33:12	5:17:51:49	3:14:49:36	1:14:59:44	1:24:54:30	5:29:26:39	7:08:01:45	11:14:26:59	10:08:29:38	8:13:36:22
26	3:09:23:07	6:04:30:38	5:18:26:42	3:14:08:16	1:15:10:38	1:25:38:27	5:29:29:33	7:07:58:34	11:14:26:24	10:08:28:16	8:13:35:01
27	3:10:20:27	6:18:36:09	5:19:01:44	3:13:25:25	1:15:21:26	1:26:23:17	5:29:32:32	7:07:55:23	11:14:25:46	10:08:26:53	8:13:33:42
28	3:11:17:47	7:02:48:51	5:19:36:53	3:12:41:47	1:15:32:08	1:27:08:59	5:29:35:36	7:07:52:12	11:14:25:06	10:08:25:28	8:13:32:23
29	3:12:15:07	7:17:07:14	5:20:12:10	3:11:58:06	1:15:42:44	1:27:55:31	5:29:38:45	7:07:49:02	11:14:24:22	10:08:24:03	8:13:31:06
30	3:13:12:28	8:01:28:51	5:20:47:35	3:11:15:12	1:15:53:14	1:28:42:50	5:29:42:00	7:07:45:51	11:14:23:36	10:08:22:37	8:13:29:49
31	3:14:09:49	8:15:50:04	5:21:23:07	3:10:33:51	1:16:03:38	1:29:30:56	5:29:45:20	7:07:42:40	11:14:22:48	10:08:21:10	8:13:28:33

अगस्त सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	3:15:07:12	9:00:06:14	5:21:58:47	3:09:54:50	1:16:13:56	2:00:19:47	5:29:48:45	7:07:39:29	11:14:21:56	10:08:19:42	8:13:27:19
2	3:16:04:34	9:14:12:12	5:22:34:33	3:09:18:56	1:16:24:08	2:01:09:22	5:29:52:15	7:07:36:18	11:14:21:02	10:08:18:13	8:13:26:05
3	3:17:01:58	9:28:02:58	5:23:10:28	3:08:46:49	1:16:34:13	2:01:59:38	5:29:55:50	7:07:33:07	11:14:20:06	10:08:16:43	8:13:24:53
4	3:17:59:23	10:11:34:39	5:23:46:29	3:08:19:10	1:16:44:12	2:02:50:35	5:29:59:30	7:07:29:57	11:14:19:06	10:08:15:13	8:13:23:41
5	3:18:56:49	10:24:44:57	5:24:22:37	3:07:56:33	1:16:54:05	2:03:42:12	6:00:03:14	7:07:26:46	11:14:18:04	10:08:13:42	8:13:22:31
6	3:19:54:16	11:07:33:32	5:24:58:53	3:07:39:28	1:17:03:51	2:04:34:26	6:00:07:04	7:07:23:35	11:14:17:00	10:08:12:10	8:13:21:22
7	3:20:51:44	11:20:01:55	5:25:35:16	3:07:28:21	1:17:13:30	2:05:27:17	6:00:10:58	7:07:20:25	11:14:15:53	10:08:10:37	8:13:20:13
8	3:21:49:14	0:02:13:12	5:26:11:46	3:07:23:32	1:17:23:02	2:06:20:43	6:00:14:58	7:07:17:14	11:14:14:43	10:08:09:04	8:13:19:07
9	3:22:46:44	0:14:11:39	5:26:48:23	3:07:25:18	1:17:32:27	2:07:14:44	6:00:19:02	7:07:14:03	11:14:13:31	10:08:07:30	8:13:18:01
10	3:23:44:17	0:26:02:18	5:27:25:07	3:07:33:51	1:17:41:45	2:08:09:17	6:00:23:10	7:07:10:52	11:14:12:16	10:08:05:56	8:13:16:56
11	3:24:41:50	1:07:50:34	5:28:01:59	3:07:49:19	1:17:50:57	2:09:04:22	6:00:27:24	7:07:07:42	11:14:10:59	10:08:04:21	8:13:15:53
12	3:25:39:25	1:19:41:54	5:28:38:57	3:08:11:47	1:18:00:00	2:09:59:59	6:00:31:41	7:07:04:31	11:14:09:39	10:08:02:45	8:13:14:51
13	3:26:37:01	2:01:41:25	5:29:16:02	3:08:41:15	1:18:08:57	2:10:56:05	6:00:36:04	7:07:01:20	11:14:08:17	10:08:01:09	8:13:13:51
14	3:27:34:39	2:13:53:36	5:29:53:14	3:09:17:43	1:18:17:46	2:11:52:39	6:00:40:31	7:06:58:09	11:14:06:53	10:07:59:33	8:13:12:51
15	3:28:32:18	2:26:22:01	6:00:30:33	3:10:01:06	1:18:26:27	2:12:49:42	6:00:45:02	7:06:54:58	11:14:05:26	10:07:57:56	8:13:11:54
16	3:29:29:59	3:09:08:52	6:01:07:59	3:10:51:17	1:18:35:00	2:13:47:11	6:00:49:38	7:06:51:48	11:14:03:57	10:07:56:19	8:13:10:57
17	4:00:27:40	3:22:14:53	6:01:45:32	3:11:48:07	1:18:43:26	2:14:45:07	6:00:54:18	7:06:48:37	11:14:02:26	10:07:54:41	8:13:10:02
18	4:01:25:24	4:05:39:07	6:02:23:12	3:12:51:24	1:18:51:44	2:15:43:27	6:00:59:03	7:06:45:26	11:14:00:52	10:07:53:03	8:13:09:08
19	4:02:23:08	4:19:19:12	6:03:00:58	3:14:00:54	1:18:59:53	2:16:42:12	6:01:03:52	7:06:42:15	11:13:59:16	10:07:51:25	8:13:08:16
20	4:03:20:54	5:03:11:43	6:03:38:51	3:15:16:20	1:19:07:55	2:17:41:21	6:01:08:44	7:06:39:05	11:13:57:38	10:07:49:46	8:13:07:25
21	4:04:18:41	5:17:12:49	6:04:16:50	3:16:37:24	1:19:15:48	2:18:40:52	6:01:13:42	7:06:35:54	11:13:55:58	10:07:48:07	8:13:06:36
22	4:05:16:29	6:01:18:53	6:04:54:56	3:18:03:44	1:19:23:32	2:19:40:45	6:01:18:43	7:06:32:43	11:13:54:16	10:07:46:28	8:13:05:48
23	4:06:14:19	6:15:27:01	6:05:33:08	3:19:34:59	1:19:31:08	2:20:41:00	6:01:23:48	7:06:29:33	11:13:52:32	10:07:44:48	8:13:05:02
24	4:07:12:09	6:29:35:13	6:06:11:27	3:21:10:44	1:19:38:36	2:21:41:36	6:01:28:57	7:06:26:22	11:13:50:45	10:07:43:08	8:13:04:18
25	4:08:10:01	7:13:42:14	6:06:49:52	3:22:50:33	1:19:45:54	2:22:42:33	6:01:34:10	7:06:23:11	11:13:48:57	10:07:41:39	8:13:03:35
26	4:09:07:54	7:27:47:10	6:07:28:22	3:24:33:59	1:19:53:04	2:23:43:49	6:01:39:26	7:06:20:00	11:13:47:07	10:07:40:00	8:13:02:53
27	4:10:05:48	8:11:49:03	6:08:06:59	3:26:20:34	1:20:00:06	2:24:45:25	6:01:44:47	7:06:16:49	11:13:45:15	10:07:38:20	8:13:02:13
28	4:11:03:43	8:25:46:25	6:08:45:42	3:28:09:51	1:20:06:58	2:25:47:20	6:01:50:11	7:06:13:39	11:13:43:21	10:07:36:41	8:13:01:35
29	4:12:01:40	9:09:37:08	6:09:24:31	4:00:01:24	1:20:13:41	2:26:49:34	6:01:55:39	7:06:10:28	11:13:41:25	10:07:35:02	8:13:00:59
30	4:12:58:38	9:23:18:27	6:10:03:26	4:01:54:46	1:20:20:14	2:27:52:06	6:02:01:10	7:06:07:17	11:13:39:28	10:07:33:24	8:13:00:24

सितंबर सन् 2012 ई. भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य	Moon चन्द्र	Mars मंगल	Mercury बुध	Jupiter गुरु	Venus शुक्र	Saturn शनि	Rahu राहु	Harshel हर्षल	Neptune नेपच्यून	Pluto प्लूटो
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
1	4:14:55:39	10:20:01:21	6:11:21:33	4:05:45:25	1:20:32:54	2:29:58:03	6:02:12:23	7:06:00:56	11:13:35:28	10:07:30:07	8:12:59:19
2	4:15:53:42	11:02:58:22	6:12:00:46	4:07:41:57	1:20:39:00	3:01:01:27	6:02:18:05	7:05:57:45	11:13:33:26	10:07:28:30	8:12:58:49
3	4:16:51:46	11:15:37:50	6:12:40:04	4:09:38:54	1:20:44:56	3:02:05:09	6:02:23:50	7:05:54:35	11:13:31:22	10:07:26:53	8:12:58:21
4	4:17:49:53	11:28:00:30	6:13:19:28	4:11:35:58	1:20:50:43	3:03:09:06	6:02:29:39	7:05:51:24	11:13:29:17	10:07:25:16	8:12:57:54
5	4:18:48:01	0:10:08:32	6:13:58:58	4:13:32:55	1:20:56:19	3:04:13:20	6:02:35:30	7:05:48:13	11:13:27:10	10:07:23:39	8:12:57:29
6	4:19:46:11	0:22:05:17	6:14:38:34	4:15:29:34	1:21:01:46	3:05:17:49	6:02:41:25	7:05:45:02	11:13:25:02	10:07:22:03	8:12:57:06
7	4:20:44:23	1:03:55:04	6:15:18:15	4:17:25:44	1:21:07:03	3:06:22:33	6:02:47:23	7:05:41:52	11:13:22:52	10:07:20:27	8:12:56:45
8	4:21:42:37	1:15:42:55	6:15:58:02	4:19:21:16	1:21:12:09	3:07:27:32	6:02:53:24	7:05:38:41	11:13:20:42	10:07:18:52	8:12:56:26
9	4:22:40:54	1:27:34:15	6:16:37:56	4:21:16:04	1:21:17:05	3:08:32:46	6:02:59:28	7:05:35:30	11:13:18:29	10:07:17:18	8:12:56:08
10	4:23:39:12	2:09:34:31	6:17:17:55	4:23:10:03	1:21:21:51	3:09:38:13	6:03:05:35	7:05:32:19	11:13:16:16	10:07:15:44	8:12:55:52
11	4:24:37:32	2:21:48:54	6:17:57:59	4:25:03:08	1:21:26:27	3:10:43:55	6:03:11:45	7:05:29:09	11:13:14:02	10:07:14:10	8:12:55:38
12	4:25:35:55	3:04:21:53	6:18:38:10	4:26:55:15	1:21:30:52	3:11:49:50	6:03:17:58	7:05:25:58	11:13:11:46	10:07:12:37	8:12:55:25
13	4:26:34:19	3:17:16:44	6:19:18:26	4:28:46:23	1:21:35:06	3:12:55:58	6:03:24:14	7:05:22:47	11:13:09:29	10:07:11:05	8:12:55:15
14	4:27:32:46	4:00:35:03	6:19:58:48	5:00:36:29	1:21:39:09	3:14:02:18	6:03:30:32	7:05:19:36	11:13:07:12	10:07:09:34	8:12:55:06
15	4:28:31:14	4:14:16:20	6:20:39:16	5:02:25:32	1:21:43:02	3:15:08:51	6:03:36:54	7:05:16:26	11:13:04:53	10:07:08:03	8:12:54:59
16	4:29:29:45	4:28:17:56	6:21:19:49	5:04:13:32	1:21:46:43	3:16:15:36	6:03:43:17	7:05:13:15	11:13:02:34	10:07:06:34	8:12:54:54
17	5:00:28:17	5:12:35:12	6:22:00:28	5:06:00:29	1:21:50:13	3:17:22:33	6:03:49:44	7:05:10:04	11:13:00:13	10:07:05:05	8:12:54:51
18	5:01:26:51	5:27:02:15	6:22:41:13	5:07:46:23	1:21:53:33	3:18:29:42	6:03:56:12	7:05:06:54	11:12:57:52	10:07:03:36	8:12:54:49
19	5:02:25:27	6:11:32:53	6:23:22:03	5:09:31:14	1:21:56:40	3:19:37:01	6:04:02:44	7:05:03:43	11:12:55:31	10:07:02:09	8:12:54:50
20	5:03:24:05	6:26:01:34	6:24:02:59	5:11:15:03	1:21:59:37	3:20:44:31	6:04:09:17	7:05:00:32	11:12:53:08	10:07:00:43	8:12:54:52
21	5:04:22:44	7:10:24:03	6:24:44:00	5:12:57:50	1:22:02:22	3:21:52:13	6:04:15:53	7:04:57:22	11:12:50:45	10:06:59:18	8:12:54:56
22	5:05:21:25	7:24:37:33	6:25:25:06	5:14:39:37	1:22:04:56	3:23:00:04	6:04:22:31	7:04:54:11	11:12:48:22	10:06:57:53	8:12:55:03
23	5:06:20:08	8:08:40:35	6:26:06:17	5:16:20:24	1:22:07:18	3:24:08:06	6:04:29:11	7:04:51:00	11:12:45:58	10:06:56:30	8:12:55:11
24	5:07:18:52	8:22:32:35	6:26:47:34	5:18:00:13	1:22:09:29	3:25:16:18	6:04:35:53	7:04:47:49	11:12:43:34	10:06:55:08	8:12:55:20
25	5:08:17:39	9:06:13:20	6:27:28:55	5:19:39:04	1:22:11:28	3:26:24:40	6:04:42:38	7:04:44:38	11:12:41:09	10:06:53:47	8:12:55:32
26	5:09:16:26	9:19:42:41	6:28:10:22	5:21:16:58	1:22:13:16	3:27:33:12	6:04:49:24	7:04:41:28	11:12:38:44	10:06:52:27	8:12:55:46
27	5:10:15:16	10:03:00:15	6:28:51:53	5:22:53:57	1:22:14:51	3:28:41:54	6:04:56:12	7:04:38:17	11:12:36:19	10:06:51:08	8:12:56:01
28	5:11:14:07	10:16:05:27	6:29:33:30	5:24:30:02	1:22:16:15	3:29:50:46	6:05:03:02	7:04:35:06	11:12:33:53	10:06:49:51	8:12:56:18
29	5:12:13:00	10:28:57:42	7:00:15:12	5:26:05:13	1:22:17:28	4:00:59:47	6:05:09:53	7:04:31:56	11:12:31:28	10:06:48:34	8:12:56:37
30	5:13:11:56	11:11:36:31	7:00:56:59	5:27:39:31	1:22:18:28	4:02:08:57	6:05:16:47	7:04:28:45	11:12:29:09	10:06:47:19	8:12:56:58

अक्तूबर सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	5:14:10:53	11:24:01:59	7:01:38:50	5:29:12:57	1:22:19:17	4:03:18:16	6:05:23:42	7:04:25:34	11:12:26:43	10:06:46:05	8:12:57:21
2	5:15:09:52	0:06:14:50	7:02:20:47	6:00:45:32	1:22:19:53	4:04:27:45	6:05:30:38	7:04:22:24	11:12:24:17	10:06:44:53	8:12:57:46
3	5:16:08:54	0:18:16:39	7:03:02:48	6:02:17:16	1:22:20:18	4:05:37:23	6:05:37:37	7:04:19:13	11:12:21:52	10:06:43:42	8:12:58:12
4	5:17:07:57	1:00:09:54	7:03:44:55	6:03:48:09	1:22:20:30	4:06:47:09	6:05:44:36	7:04:16:02	11:12:19:27	10:06:42:32	8:12:58:41
5	5:18:07:03	1:11:57:56	7:04:27:06	6:05:18:12	1:22:20:31	4:07:57:04	6:05:51:37	7:04:12:52	11:12:17:03	10:06:41:24	8:12:59:11
6	5:19:06:11	1:23:44:50	7:05:09:22	6:06:47:24	1:22:20:19	4:09:07:07	6:05:58:40	7:04:09:41	11:12:14:39	10:06:40:17	8:12:59:43
7	5:20:05:21	2:05:35:17	7:05:51:44	6:08:15:47	1:22:19:56	4:10:17:19	6:06:05:43	7:04:06:30	11:12:12:15	10:06:39:11	8:13:00:17
8	5:21:04:34	2:17:34:20	7:06:34:10	6:09:43:18	1:22:19:20	4:11:27:38	6:06:12:48	7:04:03:19	11:12:09:52	10:06:38:07	8:13:00:53
9	5:22:03:49	2:29:47:11	7:07:16:41	6:11:09:58	1:22:18:32	4:12:38:06	6:06:19:54	7:04:00:08	11:12:07:29	10:06:37:04	8:13:01:30
10	5:23:03:06	3:12:18:45	7:07:59:17	6:12:35:46	1:22:17:32	4:13:48:42	6:06:27:01	7:03:56:58	11:12:05:07	10:06:36:03	8:13:02:10
11	5:24:02:26	3:25:13:14	7:08:41:58	6:14:00:40	1:22:16:19	4:14:59:25	6:06:34:10	7:03:53:47	11:12:02:46	10:06:35:04	8:13:02:51
12	5:25:01:48	4:08:33:29	7:09:24:44	6:15:24:40	1:22:14:55	4:16:10:15	6:06:41:19	7:03:50:36	11:12:00:25	10:06:34:06	8:13:03:34
13	5:26:01:12	4:22:20:28	7:10:07:35	6:16:47:43	1:22:13:18	4:17:21:13	6:06:48:29	7:03:47:26	11:11:58:05	10:06:33:10	8:13:04:19
14	5:27:00:38	5:06:32:39	7:10:50:31	6:18:09:47	1:22:11:30	4:18:32:17	6:06:55:40	7:03:44:15	11:11:55:46	10:06:32:15	8:13:05:06
15	5:28:00:07	5:21:05:55	7:11:33:31	6:19:30:49	1:22:09:29	4:19:43:29	6:07:02:52	7:03:41:04	11:11:53:28	10:06:31:22	8:13:05:54
16	5:28:59:37	6:05:53:49	7:12:16:36	6:20:50:46	1:22:07:16	4:20:54:47	6:07:10:04	7:03:37:54	11:11:51:10	10:06:30:31	8:13:06:44
17	5:29:59:10	6:20:48:29	7:12:59:46	6:22:09:34	1:22:04:51	4:22:06:11	6:07:17:17	7:03:34:43	11:11:48:54	10:06:29:41	8:13:07:36
18	6:00:58:44	7:05:41:48	7:13:43:01	6:23:27:10	1:22:02:15	4:23:17:42	6:07:24:31	7:03:31:32	11:11:46:39	10:06:28:53	8:13:08:30
19	6:01:58:21	7:20:26:33	7:14:26:20	6:24:43:27	1:21:59:26	4:24:29:19	6:07:31:45	7:03:28:21	11:11:44:25	10:06:28:07	8:13:09:26
20	6:02:57:59	8:04:57:17	7:15:09:43	6:25:58:20	1:21:56:26	4:25:41:02	6:07:39:00	7:03:25:10	11:11:42:12	10:06:27:23	8:13:10:23
21	6:03:57:38	8:19:10:36	7:15:53:11	6:27:11:41	1:21:53:14	4:26:52:50	6:07:46:15	7:03:22:00	11:11:40:01	10:06:26:41	8:13:11:22
22	6:04:57:20	9:03:05:00	7:16:36:44	6:28:23:25	1:21:49:51	4:28:04:45	6:07:53:30	7:03:18:49	11:11:37:51	10:06:26:00	8:13:12:23
23	6:05:57:03	9:16:40:26	7:17:20:20	6:29:33:20	1:21:46:16	4:29:16:45	6:08:00:45	7:03:15:38	11:11:35:42	10:06:25:21	8:13:13:25
24	6:06:56:48	9:29:57:52	7:18:04:01	7:00:41:18	1:21:42:30	5:00:28:51	6:08:08:01	7:03:12:27	11:11:33:34	10:06:24:44	8:13:14:29
25	6:07:56:35	10:12:58:45	7:18:47:46	7:01:47:06	1:21:38:33	5:01:41:02	6:08:15:16	7:03:09:17	11:11:31:29	10:06:24:09	8:13:15:35
26	6:08:56:23	10:25:44:43	7:19:31:36	7:02:50:31	1:21:34:25	5:02:53:18	6:08:22:31	7:03:06:06	11:11:29:24	10:06:23:36	8:13:16:42
27	6:09:56:13	11:08:17:22	7:20:15:29	7:03:51:19	1:21:30:06	5:04:05:41	6:08:29:46	7:03:02:55	11:11:27:22	10:06:23:04	8:13:17:51
28	6:10:56:05	11:20:38:14	7:20:59:27	7:04:49:12	1:21:25:36	5:05:18:08	6:08:37:01	7:02:59:45	11:11:25:20	10:06:22:35	8:13:19:02
29	6:11:55:59	0:02:48:48	7:21:43:28	7:05:43:50	1:21:20:56	5:06:30:40	6:08:44:17	7:02:56:34	11:11:23:21	10:06:22:07	8:13:20:14
30	6:12:55:54	0:14:50:34	7:22:27:34	7:06:34:54	1:21:16:05	5:07:43:18	6:08:51:32	7:02:53:23	11:11:21:23	10:06:21:41	8:13:21:28
31	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नवम्बर सन् 2012 ई. भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम [illegible]

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	6:14:55:51	1:08:34:56	7:23:55:58	7:08:04:33	1:21:05:53	5:10:08:49	6:09:06:01	7:02:47:02	11:11:17:33	10:06:20:56	8:13:24:00
2	6:15:55:53	1:20:22:01	7:24:40:16	7:08:42:12	1:21:00:32	5:11:21:41	6:09:13:14	7:02:43:51	11:11:15:41	10:06:20:36	8:13:25:19
3	6:16:55:56	2:02:09:29	7:25:24:38	7:09:14:22	1:20:55:01	5:12:34:39	6:09:20:28	7:02:40:40	11:11:13:51	10:06:20:18	8:13:26:39
4	6:17:56:01	2:14:00:49	7:26:09:04	7:09:40:25	1:20:49:21	5:13:47:41	6:09:27:41	7:02:37:29	11:11:12:03	10:06:20:02	8:13:28:00
5	6:18:56:09	2:25:59:59	7:26:53:34	7:09:59:46	1:20:43:31	5:15:00:48	6:09:34:53	7:02:34:18	11:11:10:16	10:06:19:48	8:13:29:23
6	6:19:56:19	3:08:11:19	7:27:38:08	7:10:11:43	1:20:37:32	5:16:13:59	6:09:42:04	7:02:31:08	11:11:08:32	10:06:19:36	8:13:30:47
7	6:20:56:30	3:20:39:18	7:28:22:46	7:10:15:37	1:20:31:25	5:17:27:15	6:09:49:15	7:02:27:57	11:11:06:50	10:06:19:26	8:13:32:13
8	6:21:56:44	4:03:28:14	7:29:07:28	7:10:10:49	1:20:25:08	5:18:40:35	6:09:56:25	7:02:24:46	11:11:05:10	10:06:19:18	8:13:33:41
9	6:22:57:00	4:16:41:46	7:29:52:13	7:09:56:45	1:20:18:43	5:19:53:59	6:10:03:34	7:02:21:35	11:11:03:33	10:06:19:13	8:13:35:09
10	6:23:57:17	5:00:22:18	8:00:37:03	7:09:32:57	1:20:12:10	5:21:07:27	6:10:10:42	7:02:18:25	11:11:01:57	10:06:19:09	8:13:36:40
11	6:24:57:37	5:14:30:19	8:01:21:57	7:08:59:07	1:20:05:29	5:22:20:59	6:10:17:49	7:02:15:14	11:11:00:24	10:06:19:07	8:13:38:11
12	6:25:57:59	5:29:03:46	8:02:06:55	7:08:15:17	1:19:58:40	5:23:34:34	6:10:24:55	7:02:12:03	11:10:58:53	10:06:19:07	8:13:39:44
13	6:26:58:22	6:13:57:48	8:02:51:56	7:07:21:46	1:19:51:44	5:24:48:14	6:10:31:59	7:02:08:53	11:10:57:25	10:06:19:10	8:13:41:18
14	6:27:58:48	6:29:05:01	8:03:37:02	7:06:19:19	1:19:44:41	5:26:01:56	6:10:39:03	7:02:05:42	11:10:55:59	10:06:19:14	8:13:42:54
15	6:28:59:15	7:14:16:17	8:04:22:10	7:05:09:12	1:19:37:31	5:27:15:42	6:10:46:05	7:02:02:31	11:10:54:35	10:06:19:21	8:13:44:31
16	6:29:59:43	7:29:22:02	8:05:07:23	7:03:53:09	1:19:30:15	5:28:29:31	6:10:53:06	7:01:59:20	11:10:53:14	10:06:19:29	8:13:46:09
17	7:01:00:13	8:14:13:45	8:05:52:39	7:02:33:19	1:19:22:53	5:29:43:24	6:11:00:05	7:01:56:09	11:10:51:56	10:06:19:40	8:13:47:48
18	7:02:00:44	8:28:45:01	8:06:37:59	7:01:12:12	1:19:15:25	6:00:57:19	6:11:07:02	7:01:52:58	11:10:50:40	10:06:19:53	8:13:49:29
19	7:03:01:16	9:12:52:00	8:07:23:22	6:29:52:31	1:19:07:51	6:02:11:17	6:11:13:58	7:01:49:47	11:10:49:27	10:06:20:07	8:13:51:10
20	7:04:01:50	9:26:33:31	8:08:08:48	6:28:36:53	1:19:00:13	6:03:25:17	6:11:20:52	7:01:46:37	11:10:48:16	10:06:20:24	8:13:52:53
21	7:05:02:25	10:09:50:24	8:08:54:17	6:27:27:43	1:18:52:30	6:04:39:21	6:11:27:45	7:01:43:26	11:10:47:08	10:06:20:43	8:13:54:37
22	7:06:03:01	10:22:45:01	8:09:39:50	6:26:27:04	1:18:44:43	6:05:53:27	6:11:34:35	7:01:40:15	11:10:46:03	10:06:21:04	8:13:56:22
23	7:07:03:38	11:05:20:32	8:10:25:26	6:25:36:29	1:18:36:51	6:07:07:36	6:11:41:24	7:01:37:05	11:10:45:01	10:06:21:27	8:13:58:09
24	7:08:04:17	11:17:40:26	8:11:11:05	6:24:56:58	1:18:28:56	6:08:21:47	6:11:48:11	7:01:33:54	11:10:44:01	10:06:21:52	8:13:59:56
25	7:09:04:56	11:29:48:11	8:11:56:47	6:24:29:02	1:18:20:58	6:09:36:01	6:11:54:55	7:01:30:43	11:10:43:04	10:06:22:20	8:14:01:44
26	7:10:05:37	0:11:47:00	8:12:42:32	6:24:12:44	1:18:12:57	6:10:50:17	6:12:01:38	7:01:27:32	11:10:42:10	10:06:22:49	8:14:03:34
27	7:11:06:19	0:23:39:45	8:13:28:20	6:24:07:47	1:18:04:54	6:12:04:36	6:12:08:18	7:01:24:22	11:10:41:19	10:06:23:20	8:14:05:24
28	7:12:07:02	1:05:28:56	8:14:14:11	6:24:13:36	1:17:56:48	6:13:18:57	6:12:14:56	7:01:21:11	11:10:40:30	10:06:23:53	8:14:07:15
29	7:13:07:47	1:17:16:50	8:15:00:05	6:24:29:26	1:17:48:40	6:14:33:20	6:12:21:32	7:01:18:00	11:10:39:45	10:06:24:29	8:14:09:08
30	7:14:08:32	1:29:05:33	8:15:46:02	6:24:54:28	1:17:40:31	6:15:47:46	6:12:28:06	7:01:14:49	11:10:39:02	10:06:25:06	8:14:11:01

दिसम्बर सन् 2012 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख	Sun सूर्य	Moon चन्द्र	Mars मंगल	Mercury बुध	Jupiter गुरु	Venus शुक्र	Saturn शनि	Rahu राहु	Harshel हर्षल	Neptune नेपच्यून	Pluto प्लूटो
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
1	7:15:09:19	2:10:57:09	8:16:32:02	6:25:27:48	1:17:32:21	6:17:02:14	6:12:34:37	7:01:11:38	11:10:38:23	10:06:25:45	8:14:12:55
2	7:16:10:08	2:22:53:55	8:17:18:05	6:26:08:34	1:17:24:10	6:18:16:44	6:12:41:05	7:01:08:27	11:10:37:46	10:06:26:27	8:14:14:50
3	7:17:10:57	3:04:58:20	8:18:04:10	6:26:55:56	1:17:15:59	6:19:31:16	6:12:47:31	7:01:05:17	11:10:37:12	10:06:27:10	8:14:16:46
4	7:18:11:48	3:17:13:13	8:18:50:19	6:27:49:05	1:17:07:49	6:20:45:51	6:12:53:54	7:01:02:06	11:10:36:41	10:06:27:55	8:14:18:42
5	7:19:12:41	3:29:41:44	8:19:36:30	6:28:47:20	1:16:59:38	6:22:00:27	6:13:00:15	7:00:58:55	11:10:36:13	10:06:28:43	8:14:20:40
6	7:20:13:34	4:12:27:16	8:20:22:44	6:29:50:02	1:16:51:28	6:23:15:06	6:13:06:33	7:00:55:44	11:10:35:48	10:06:29:32	8:14:22:38
7	7:21:14:29	4:25:33:06	8:21:09:01	7:00:56:35	1:16:43:19	6:24:29:46	6:13:12:48	7:00:52:33	11:10:35:26	10:06:30:23	8:14:24:37
8	7:22:15:25	5:09:02:09	8:21:55:20	7:02:06:29	1:16:35:12	6:25:44:28	6:13:19:00	7:00:49:23	11:10:35:08	10:06:31:16	8:14:26:36
9	7:23:16:23	5:22:56:19	8:22:41:42	7:03:19:17	1:16:27:06	6:26:59:12	6:13:25:09	7:00:46:12	11:10:34:52	10:06:32:12	8:14:28:36
10	7:24:17:21	6:07:15:49	8:23:28:07	7:04:34:35	1:16:19:03	6:28:13:58	6:13:31:15	7:00:43:01	11:10:34:39	10:06:33:09	8:14:30:37
11	7:25:18:21	6:21:58:32	8:24:14:35	7:05:52:04	1:16:11:03	6:29:28:45	6:13:37:18	7:00:39:50	11:10:34:29	10:06:34:08	8:14:32:39
12	7:26:19:22	7:06:59:37	8:25:01:05	7:07:11:25	1:16:03:05	7:00:43:34	6:13:43:17	7:00:36:40	11:10:34:23	10:06:35:09	8:14:34:41
13	7:27:20:24	7:22:11:28	8:25:47:37	7:08:32:24	1:15:55:11	7:01:58:24	6:13:49:14	7:00:33:29	11:10:34:19	10:06:36:12	8:14:36:44
14	7:28:21:26	8:07:24:33	8:26:34:12	7:09:54:47	1:15:47:21	7:03:13:15	6:13:55:07	7:00:30:18	11:10:34:19	10:06:37:16	8:14:38:47
15	7:29:22:30	8:22:28:45	8:27:20:50	7:11:18:22	1:15:39:36	7:04:28:07	6:14:00:56	7:00:27:07	11:10:34:22	10:06:38:23	8:14:40:51
16	8:00:23:33	9:07:15:01	8:28:07:29	7:12:43:01	1:15:31:54	7:05:43:01	6:14:06:42	7:00:23:56	11:10:34:28	10:06:39:31	8:14:42:55
17	8:01:24:38	9:21:36:39	8:28:54:11	7:14:08:36	1:15:24:18	7:06:57:55	6:14:12:25	7:00:20:45	11:10:34:37	10:06:40:42	8:14:44:59
18	8:02:25:43	10:05:30:04	8:29:40:55	7:15:34:58	1:15:16:47	7:08:12:51	6:14:18:03	7:00:17:34	11:10:34:49	10:06:41:54	8:14:47:04
19	8:03:26:48	10:18:54:43	9:00:27:41	7:17:02:04	1:15:09:22	7:09:27:47	6:14:23:38	7:00:14:23	11:10:35:04	10:06:43:08	8:14:49:10
20	8:04:27:53	11:01:52:28	9:01:14:29	7:18:29:47	1:15:02:03	7:10:42:44	6:14:29:09	7:00:11:13	11:10:35:23	10:06:44:23	8:14:51:16
21	8:05:28:59	11:14:26:56	9:02:01:18	7:19:58:04	1:14:54:50	7:11:57:42	6:14:34:37	7:00:08:02	11:10:35:44	10:06:45:41	8:14:53:22
22	8:06:30:04	11:26:42:39	9:02:48:10	7:21:26:50	1:14:47:44	7:13:12:41	6:14:40:00	7:00:04:51	11:10:36:09	10:06:47:00	8:14:55:28
23	8:07:31:11	0:08:44:27	9:03:35:03	7:22:56:05	1:14:40:45	7:14:27:41	6:14:45:20	7:00:01:41	11:10:36:37	10:06:48:21	8:14:57:35
24	8:08:32:17	0:20:37:05	9:04:21:58	7:24:25:45	1:14:33:53	7:15:42:41	6:14:50:35	6:29:58:30	11:10:37:07	10:06:49:44	8:14:59:41
25	8:09:33:23	1:02:24:53	9:05:08:54	7:25:55:48	1:14:27:09	7:16:57:42	6:14:55:46	6:29:55:19	11:10:37:41	10:06:51:08	8:15:01:49
26	8:10:34:30	1:14:11:37	9:05:55:52	7:27:26:13	1:14:20:32	7:18:12:44	6:15:00:53	6:29:52:08	11:10:38:18	10:06:52:34	8:15:03:56
27	8:11:35:37	1:26:00:23	9:06:42:52	7:28:56:59	1:14:14:03	7:19:27:46	6:15:05:56	6:29:48:57	11:10:38:58	10:06:54:01	8:15:06:03
28	8:12:36:44	2:07:53:37	9:07:29:54	8:00:28:06	1:14:07:43	7:20:42:50	6:15:10:55	6:29:45:46	11:10:39:42	10:06:55:31	8:15:08:10
29	8:13:37:51	2:19:53:13	9:08:16:56	8:01:59:33	1:14:01:31	7:21:57:54	6:15:15:49	6:29:42:35	11:10:40:28	10:06:57:01	8:15:10:18
30	8:14:38:58	3:02:00:37	9:09:04:01	8:03:31:19	1:13:55:28	7:23:12:58	6:15:20:39	6:29:39:25	11:10:41:17	10:06:58:34	8:15:12:25
31	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जनवरी सन् 2013 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम

तारीख	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	8:16:41:14	3:26:43:32	9:10:38:14	8:06:35:49	1:13:43:49	7:25:43:10	6:15:30:06	6:29:33:03	11:10:43:04	10:07:01:43	8:15:16:38
2	8:17:42:22	4:09:21:31	9:11:25:22	8:08:08:34	1:13:38:14	7:26:58:16	6:15:34:42	6:29:29:52	11:10:44:03	10:07:03:20	8:15:18:46
3	8:18:43:31	4:22:12:33	9:12:12:32	8:09:41:39	1:13:32:49	7:28:13:24	6:15:39:14	6:29:26:42	11:10:45:04	10:07:04:58	8:15:20:53
4	8:19:44:40	5:05:18:33	9:12:59:44	8:11:15:05	1:13:27:33	7:29:28:31	6:15:43:41	6:29:23:31	11:10:46:08	10:07:06:38	8:15:23:00
5	8:20:45:49	5:18:41:37	9:13:46:56	8:12:48:52	1:13:22:27	8:00:43:40	6:15:48:03	6:29:20:20	11:10:47:15	10:07:08:19	8:15:25:08
6	8:21:46:58	6:02:23:41	9:14:34:10	8:14:23:01	1:13:17:32	8:01:58:49	6:15:52:20	6:29:17:09	11:10:48:26	10:07:10:02	8:15:27:15
7	8:22:48:07	6:16:26:02	9:15:21:25	8:15:57:33	1:13:12:48	8:03:13:59	6:15:56:33	6:29:13:59	11:10:49:39	10:07:11:46	8:15:29:22
8	8:23:49:17	7:00:48:37	9:16:08:42	8:17:32:28	1:13:08:13	8:04:29:09	6:16:00:41	6:29:10:48	11:10:50:55	10:07:13:32	8:15:31:28
9	8:24:50:27	7:15:29:20	9:16:55:59	8:19:07:48	1:13:03:50	8:05:44:20	6:16:04:43	6:29:07:37	11:10:52:14	10:07:15:18	8:15:33:35
10	8:25:51:36	8:00:23:36	9:17:43:18	8:20:43:32	1:12:59:38	8:06:59:30	6:16:08:41	6:29:04:26	11:10:53:36	10:07:17:07	8:15:35:41
11	8:26:52:46	8:15:24:16	9:18:30:38	8:22:19:43	1:12:55:37	8:08:14:42	6:16:12:33	6:29:01:15	11:10:55:01	10:07:18:56	8:15:37:47
12	8:27:53:55	9:00:22:26	9:19:17:58	8:23:56:20	1:12:51:48	8:09:29:53	6:16:16:20	6:28:58:04	11:10:56:28	10:07:20:47	8:15:39:52
13	8:28:55:04	9:15:08:47	9:20:05:19	8:25:33:25	1:12:48:10	8:10:45:05	6:16:20:02	6:28:54:53	11:10:57:59	10:07:22:39	8:15:41:57
14	8:29:56:13	9:29:35:06	9:20:52:42	8:27:10:58	1:12:44:43	8:12:00:16	6:16:23:38	6:28:51:42	11:10:59:32	10:07:24:32	8:15:44:02
15	9:00:57:21	10:13:35:42	9:21:40:04	8:28:49:01	1:12:41:29	8:13:15:28	6:16:27:09	6:28:48:32	11:11:01:08	10:07:26:26	8:15:46:06
16	9:01:58:28	10:27:07:55	9:22:27:28	9:00:27:34	1:12:38:26	8:14:30:39	6:16:30:35	6:28:45:21	11:11:02:47	10:07:28:22	8:15:48:10
17	9:02:59:35	11:10:12:06	9:23:14:52	9:02:06:38	1:12:35:35	8:15:45:51	6:16:33:55	6:28:42:10	11:11:04:29	10:07:30:18	8:15:50:14
18	9:04:00:41	11:22:50:56	9:24:02:16	9:03:46:13	1:12:32:56	8:17:01:02	6:16:37:09	6:28:39:00	11:11:06:13	10:07:32:16	8:15:52:16
19	9:05:01:46	0:05:08:47	9:24:49:41	9:05:26:20	1:12:30:29	8:18:16:13	6:16:40:18	6:28:35:49	11:11:08:00	10:07:34:15	8:15:54:19
20	9:06:02:50	0:17:10:51	9:25:37:05	9:07:06:59	1:12:28:15	8:19:31:25	6:16:43:22	6:28:32:38	11:11:09:50	10:07:36:14	8:15:56:20
21	9:07:03:53	0:29:02:40	9:26:24:31	9:08:48:11	1:12:26:12	8:20:46:36	6:16:46:20	6:28:29:27	11:11:11:42	10:07:38:15	8:15:58:21
22	9:08:04:55	1:10:49:38	9:27:11:56	9:10:29:56	1:12:24:22	8:22:01:47	6:16:49:12	6:28:26:16	11:11:13:37	10:07:40:17	8:16:00:22
23	9:09:05:57	1:22:36:41	9:27:59:22	9:12:12:12	1:12:22:44	8:23:16:57	6:16:51:58	6:28:23:06	11:11:15:34	10:07:42:19	8:16:02:21
24	9:10:06:57	2:04:28:04	9:28:46:47	9:13:55:01	1:12:21:18	8:24:32:08	6:16:54:39	6:28:19:55	11:11:17:34	10:07:44:23	8:16:04:20
25	9:11:07:57	2:16:27:09	9:29:34:13	9:15:38:20	1:12:20:04	8:25:47:19	6:16:57:14	6:28:16:44	11:11:19:37	10:07:46:27	8:16:06:18
26	9:12:08:55	2:28:36:22	10:00:21:39	9:17:22:09	1:12:19:03	8:27:02:29	6:16:59:43	6:28:13:33	11:11:21:42	10:07:48:33	8:16:08:16
27	9:13:09:53	3:10:57:09	10:01:09:04	9:19:06:25	1:12:18:14	8:28:17:39	6:17:02:06	6:28:10:22	11:11:23:49	10:07:50:39	8:16:10:13
28	9:14:10:50	3:23:30:03	10:01:56:30	9:20:51:05	1:12:17:38	8:29:32:50	6:17:04:23	6:28:07:12	11:11:25:59	10:07:52:46	8:16:12:09
29	9:15:11:46	4:06:15:00	10:02:43:56	9:22:36:08	1:12:17:13	9:00:48:00	6:17:06:35	6:28:04:01	11:11:28:11	10:07:54:53	8:16:14:04
30	9:16:12:41	4:19:11:32	10:03:31:21	9:24:21:27	1:12:17:01	9:02:03:10	6:17:08:40	6:28:00:50	11:11:30:26	10:07:57:02	8:16:15:58
31	9:17:13:35	5:02:19:09	10:04:18:46	9:26:06:59	1:12:17:01	9:03:18:20	6:17:10:40	6:27:57:39	11:11:32:43	10:07:59:11	8:16:17:51

फरवरी सन् 2013 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	9:18:14:29	5:15:37:41	10:05:06:12	9:27:52:36	1:12:17:14	9:04:33:30	6:17:12:33	6:27:54:29	11:11:35:02	10:08:01:21	8:16:19:44
2	9:19:15:21	5:29:07:21	10:05:53:37	9:29:38:10	1:12:17:38	9:05:48:40	6:17:14:20	6:27:51:18	11:11:37:23	10:08:03:31	8:16:21:35
3	9:20:16:13	6:12:48:50	10:06:41:02	10:01:23:33	1:12:18:15	9:07:03:50	6:17:16:02	6:27:48:07	11:11:39:47	10:08:05:42	8:16:23:26
4	9:21:17:04	6:26:42:53	10:07:28:26	10:03:08:31	1:12:19:04	9:08:19:00	6:17:17:37	6:27:44:57	11:11:42:12	10:08:07:54	8:16:25:15
5	9:22:17:55	7:10:49:52	10:08:15:51	10:04:52:53	1:12:20:05	9:09:34:09	6:17:19:06	6:27:41:46	11:11:44:40	10:08:10:06	8:16:27:04
6	9:23:18:44	7:25:09:12	10:09:03:15	10:06:36:22	1:12:21:19	9:10:49:19	6:17:20:29	6:27:38:35	11:11:47:11	10:08:12:19	8:16:28:52
7	9:24:19:33	8:09:38:39	10:09:50:38	10:08:18:39	1:12:22:44	9:12:04:28	6:17:21:45	6:27:35:24	11:11:49:43	10:08:14:32	8:16:30:38
8	9:25:20:20	8:24:14:03	10:10:38:02	10:09:59:24	1:12:24:22	9:13:19:37	6:17:22:55	6:27:32:13	11:11:52:17	10:08:16:46	8:16:32:23
9	9:26:21:07	9:08:49:26	10:11:25:24	10:11:38:10	1:12:26:11	9:14:34:46	6:17:24:00	6:27:29:02	11:11:54:53	10:08:19:00	8:16:34:08
10	9:27:21:52	9:23:17:41	10:12:12:47	10:13:14:32	1:12:28:13	9:15:49:55	6:17:24:57	6:27:25:51	11:11:57:32	10:08:21:14	8:16:35:51
11	9:28:22:36	10:07:31:43	10:13:00:08	10:14:47:58	1:12:30:26	9:17:05:03	6:17:25:49	6:27:22:41	11:12:00:12	10:08:23:29	8:16:37:33
12	9:29:23:18	10:21:25:41	10:13:47:29	10:16:17:54	1:12:32:51	9:18:20:11	6:17:26:34	6:27:19:30	11:12:02:54	10:08:25:45	8:16:39:13
13	10:00:23:59	11:04:55:51	10:14:34:49	10:17:43:43	1:12:35:29	9:19:35:18	6:17:27:13	6:27:16:19	11:12:05:38	10:08:28:00	8:16:40:53
14	10:01:24:39	11:18:01:03	10:15:22:08	10:19:04:46	1:12:38:17	9:20:50:24	6:17:27:45	6:27:13:09	11:12:08:24	10:08:30:16	8:16:42:31
15	10:02:25:17	0:00:42:29	10:16:09:26	10:20:20:22	1:12:41:18	9:22:05:31	6:17:28:12	6:27:09:58	11:12:11:12	10:08:32:32	8:16:44:08
16	10:03:25:53	0:13:03:16	10:16:56:43	10:21:29:49	1:12:44:30	9:23:20:36	6:17:28:32	6:27:06:47	11:12:14:01	10:08:34:49	8:16:45:44
17	10:04:26:27	0:25:07:53	10:17:43:59	10:22:32:23	1:12:47:53	9:24:35:41	6:17:28:45	6:27:03:37	11:12:16:52	10:08:37:05	8:16:47:18
18	10:05:27:00	1:07:01:36	10:18:31:14	10:23:27:24	1:12:51:28	9:25:50:45	6:17:28:53	6:27:00:26	11:12:19:45	10:08:39:22	8:16:48:51
19	10:06:27:31	1:18:50:01	10:19:18:28	10:24:14:12	1:12:55:14	9:27:05:49	6:17:28:54	6:26:57:15	11:12:22:39	10:08:41:40	8:16:50:23
20	10:07:28:00	2:00:38:39	10:20:05:41	10:24:52:12	1:12:59:11	9:28:20:51	6:17:28:49	6:26:54:04	11:12:25:35	10:08:43:58	8:16:51:53
21	10:08:28:27	2:12:32:36	10:20:52:52	10:25:20:54	1:13:03:19	9:29:35:54	6:17:28:37	6:26:50:54	11:12:28:33	10:08:46:16	8:16:53:22
22	10:09:28:52	2:24:36:18	10:21:40:02	10:25:39:54	1:13:07:37	10:00:50:55	6:17:28:20	6:26:47:43	11:12:31:32	10:08:48:21	8:16:54:50
23	10:10:29:16	3:06:53:11	10:22:27:10	10:25:48:57	1:13:12:07	10:02:05:56	6:17:27:56	6:26:44:32	11:12:34:32	10:08:50:39	8:16:56:16
24	10:11:29:38	3:19:25:31	10:23:14:17	10:25:48:00	1:13:16:47	10:03:20:56	6:17:27:26	6:26:41:21	11:12:37:34	10:08:52:57	8:16:57:41
25	10:12:29:58	4:02:14:13	10:24:01:23	10:25:37:07	1:13:21:38	10:04:35:56	6:17:26:50	6:26:38:11	11:12:40:37	10:08:55:15	8:16:59:04
26	10:13:30:16	4:15:18:56	10:24:48:27	10:25:16:38	1:13:26:40	10:05:50:55	6:17:26:08	6:26:35:00	11:12:43:42	10:08:57:32	8:17:00:25
27	10:14:30:32	4:28:38:12	10:25:35:30	10:24:47:05	1:13:31:51	10:07:05:53	6:17:25:20	6:26:31:49	11:12:46:48	10:08:59:48	8:17:01:46
28	10:15:30:47	5:12:09:40	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्च सन् 2013 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य	Moon चन्द्र	Mars मंगल	Mercury बुध	Jupiter गुरु	Venus शुक्र	Saturn शनि	Rahu राहु	Harshel हर्षल	Neptune नेपच्यून	Pluto प्लूटो
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
1	10:16:31:01	5:25:51:23	10:27:09:32	10:23:24:05	1:13:42:45	10:09:35:48	6:17:23:25	6:26:25:28	11:12:53:03	10:09:04:20	8:17:04:21
2	10:17:31:12	6:09:40:42	10:27:56:30	10:22:32:45	1:13:48:27	10:10:50:45	6:17:22:18	6:26:22:17	11:12:56:13	10:09:06:36	8:17:05:37
3	10:18:31:22	6:23:36:06	10:28:43:27	10:21:36:36	1:13:54:19	10:12:05:41	6:17:21:06	6:26:19:07	11:12:59:23	10:09:08:52	8:17:06:51
4	10:19:31:31	7:07:36:30	10:29:30:22	10:20:37:03	1:14:00:21	10:13:20:36	6:17:19:47	6:26:15:56	11:13:02:35	10:09:11:07	8:17:08:03
5	10:20:31:38	7:21:41:11	11:00:17:16	10:19:35:36	1:14:06:33	10:14:35:31	6:17:18:23	6:26:12:45	11:13:05:48	10:09:13:22	8:17:09:14
6	10:21:31:44	8:05:49:23	11:01:04:09	10:18:33:43	1:14:12:54	10:15:50:26	6:17:16:53	6:26:09:34	11:13:09:02	10:09:15:36	8:17:10:23
7	10:22:31:48	8:19:59:49	11:01:50:59	10:17:32:49	1:14:19:24	10:17:05:20	6:17:15:16	6:26:06:23	11:13:12:17	10:09:17:50	8:17:11:31
8	10:23:31:51	9:04:10:20	11:02:37:48	10:16:34:12	1:14:26:05	10:18:20:13	6:17:13:34	6:26:03:12	11:13:15:33	10:09:20:04	8:17:12:37
9	10:24:31:51	9:18:17:46	11:03:24:36	10:15:39:00	1:14:32:54	10:19:35:06	6:17:11:46	6:26:00:02	11:13:18:49	10:09:22:17	8:17:13:41
10	10:25:31:51	10:02:18:09	11:04:11:21	10:14:48:11	1:14:39:53	10:20:49:57	6:17:09:53	6:25:56:51	11:13:22:07	10:09:24:30	8:17:14:44
11	10:26:31:48	10:16:07:10	11:04:58:05	10:14:02:30	1:14:47:01	10:22:04:49	6:17:07:54	6:25:53:40	11:13:25:25	10:09:26:43	8:17:15:44
12	10:27:31:43	10:29:40:55	11:05:44:47	10:13:22:32	1:14:54:17	10:23:19:39	6:17:05:49	6:25:50:30	11:13:28:45	10:09:28:54	8:17:16:44
13	10:28:31:37	11:12:56:30	11:06:31:27	10:12:48:42	1:15:01:43	10:24:34:28	6:17:03:38	6:25:47:19	11:13:32:05	10:09:31:05	8:17:17:41
14	10:29:31:29	11:25:52:30	11:07:18:05	10:12:21:13	1:15:09:17	10:25:49:17	6:17:01:23	6:25:44:08	11:13:35:25	10:09:33:16	8:17:18:37
15	11:00:31:18	0:08:29:12	11:08:04:40	10:12:00:11	1:15:17:01	10:27:04:05	6:16:59:01	6:25:40:58	11:13:38:46	10:09:35:26	8:17:19:30
16	11:01:31:05	0:20:48:27	11:08:51:14	10:11:45:37	1:15:24:52	10:28:18:51	6:16:56:35	6:25:37:47	11:13:42:08	10:09:37:35	8:17:20:22
17	11:02:30:50	1:02:53:25	11:09:37:46	10:11:37:23	1:15:32:52	10:29:33:37	6:16:54:03	6:25:34:36	11:13:45:31	10:09:39:44	8:17:21:13
18	11:03:30:33	1:14:48:21	11:10:24:15	10:11:35:21	1:15:41:00	11:00:48:22	6:16:51:26	6:25:31:26	11:13:48:54	10:09:41:51	8:17:22:01
19	11:04:30:14	1:26:38:06	11:11:10:42	10:11:39:17	1:15:49:16	11:02:03:05	6:16:48:44	6:25:28:15	11:13:52:17	10:09:43:59	8:17:22:48
20	11:05:29:53	2:08:27:54	11:11:57:06	10:11:48:56	1:15:57:41	11:03:17:48	6:16:45:57	6:25:25:04	11:13:55:41	10:09:46:05	8:17:23:33
21	11:06:29:29	2:20:23:01	11:12:43:29	10:12:04:03	1:16:06:13	11:04:32:29	6:16:43:05	6:25:21:53	11:13:59:05	10:09:48:10	8:17:24:16
22	11:07:29:03	3:02:28:26	11:13:29:49	10:12:24:20	1:16:14:53	11:05:47:09	6:16:40:09	6:25:18:42	11:14:02:29	10:09:50:15	8:17:24:57
23	11:08:28:34	3:14:48:33	11:14:16:06	10:12:49:31	1:16:23:40	11:07:01:49	6:16:37:08	6:25:15:32	11:14:05:54	10:09:52:19	8:17:25:37
24	11:09:28:04	3:27:26:43	11:15:02:21	10:13:19:20	1:16:32:35	11:08:16:27	6:16:34:02	6:25:12:21	11:14:09:19	10:09:54:22	8:17:26:15
25	11:10:27:31	4:10:25:04	11:15:48:34	10:13:53:31	1:16:41:37	11:09:31:04	6:16:30:51	6:25:09:10	11:14:12:45	10:09:56:24	8:17:26:51
26	11:11:26:56	4:23:44:05	11:16:34:44	10:14:31:48	1:16:50:47	11:10:45:40	6:16:27:36	6:25:06:00	11:14:16:10	10:09:58:25	8:17:27:25
27	11:12:26:19	5:07:22:33	11:17:20:52	10:15:13:58	1:17:00:04	11:12:00:15	6:16:24:17	6:25:02:49	11:14:19:36	10:10:00:25	8:17:27:57
28	11:13:25:39	5:21:17:43	11:18:06:57	10:15:59:47	1:17:09:27	11:13:14:49	6:16:20:54	6:24:59:38	11:14:23:03	10:10:02:24	8:17:28:27
29	11:14:24:58	6:05:25:40	11:18:53:00	10:16:49:03	1:17:18:58	11:14:29:22	6:16:17:27	6:24:56:28	11:14:26:27	10:10:04:22	8:17:28:56
30	11:15:24:15	6:19:41:53	11:19:39:00	10:17:41:33	1:17:28:36	11:15:43:54	6:16:13:55	6:24:53:17	11:14:29:47	10:10:06:19	8:17:29:22
31	11:16:23:30	7:04:01:55	11:20:24:58	10:18:37:07	1:17:38:20	11:16:58:25	6:16:10:20	6:24:50:06	11:14:33:14	10:10:08:15	8:17:29:47

अप्रैल सन् 2013 ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.5 मि.30 दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़	Sun सूर्य रा. अं. क. वि.	Moon चन्द्र रा. अं. क. वि.	Mars मंगल रा. अं. क. वि.	Mercury बुध रा. अं. क. वि.	Jupiter गुरु रा. अं. क. वि.	Venus शुक्र रा. अं. क. वि.	Saturn शनि रा. अं. क. वि	Rahu राहु रा. अं. क. वि.	Harshel हर्षल रा. अं. क. वि.	Neptune नेपच्यून रा. अं. क. वि.	Pluto प्लूटो रा. अं. क. वि.
1	11:17:22:43	7:18:21:52	11:21:10:54	10:19:35:36	1:17:48:11	11:18:12:55	6:16:06:41	6:24:46:56	11:14:36:40	10:10:10:10	8:17:30:10
2	11:18:21:55	8:02:38:36	11:21:56:47	10:20:36:50	1:17:58:08	11:19:27:25	6:16:02:58	6:24:43:45	11:14:40:06	10:10:12:03	8:17:30:31
3	11:19:21:05	8:16:49:49	11:22:42:37	10:21:40:42	1:18:08:12	11:20:41:53	6:15:59:11	6:24:40:34	11:14:43:31	10:10:13:56	8:17:30:50
4	11:20:20:13	9:00:53:49	11:23:28:25	10:22:47:03	1:18:18:22	11:21:56:21	6:15:55:21	6:24:37:23	11:14:46:56	10:10:15:47	8:17:31:07
5	11:21:19:19	9:14:49:11	11:24:14:11	10:23:55:46	1:18:28:38	11:23:10:47	6:15:51:28	6:24:34:12	11:14:50:21	10:10:17:38	8:17:31:23
6	11:22:18:23	9:28:34:41	11:24:59:54	10:25:06:47	1:18:39:01	11:24:25:13	6:15:47:31	6:24:31:02	11:14:53:46	10:10:19:27	8:17:31:37
7	11:23:17:26	10:12:09:02	11:25:45:34	10:26:19:58	1:18:49:29	11:25:39:38	6:15:43:31	6:24:27:51	11:14:57:10	10:10:21:15	8:17:31:48
8	11:24:16:27	10:25:30:54	11:26:31:12	10:27:35:16	1:19:00:04	11:26:54:02	6:15:39:28	6:24:24:40	11:15:00:34	10:10:23:01	8:17:31:58
9	11:25:15:26	11:08:39:09	11:27:16:47	10:28:52:36	1:19:10:44	11:28:08:24	6:15:35:23	6:24:21:30	11:15:03:58	10:10:24:46	8:17:32:06
10	11:26:14:23	11:21:32:58	11:28:02:20	11:00:11:54	1:19:21:30	11:29:22:46	6:15:31:14	6:24:18:19	11:15:07:21	10:10:26:30	8:17:32:12
11	11:27:13:18	0:04:12:06	11:28:47:49	11:01:33:06	1:19:32:22	0:00:37:07	6:15:27:03	6:24:15:08	11:15:10:43	10:10:28:13	8:17:32:16
12	11:28:12:11	0:16:37:02	11:29:33:16	11:02:56:10	1:19:43:19	0:01:51:27	6:15:22:50	6:24:11:58	11:15:14:05	10:10:29:54	8:17:32:19
13	11:29:11:02	0:28:49:05	0:00:18:40	11:04:21:02	1:19:54:21	0:03:05:45	6:15:18:34	6:24:08:47	11:15:17:26	10:10:31:34	8:17:32:19
14	0:00:09:51	1:10:50:28	0:01:04:02	11:05:47:42	1:20:05:29	0:04:20:02	6:15:14:16	6:24:05:36	11:15:20:47	10:10:33:12	8:17:32:18

नवग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृष ३	म. २८	कं. २५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ.१५	

विस्तृत गुण मिलान सारिणी द्वारा वर-वधु गुण मिलान विधि

वर-वधु दोनों की जन्मपत्रिकाओं में ग्रह स्थिति का भली भान्ति अध्ययन के उपरान्त गुण मिलान की परम्परा प्रचलित है। अतः विस्तृत गुण मिलान सारिणी प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है आप इस विधि से सन्तुष्ट होंगे। सारिणी की ऊपर की पंक्तियों में वर (लड़का) के नक्षत्र हैं वाम भाग में कन्या (लड़की) के नक्षत्र लिखे हैं। वाम भाग से दक्षिण की ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर, दोनों के आमने सामने देखने से गुण संख्या सरलता से उपलब्ध हो जाएगी। वर्ण, वश्य, तारा, योनि, मैत्री, गण, भकूट एवं नाड़ी में आठ प्रकार के दोष होते हैं जिस दोष के सामने शून्य (0) उपलब्ध हो वही दोष वर-कन्या के मिलान में है, ऐसा जानना। नवांशेश ज्ञान के लिए जन्माक्षर चक्र 191 पृष्ठ पर देखें। अष्टकूटों के परिहार कैसे हो सकते हैं ये सभी पञ्चाङ्ग में उपलब्ध है। पिछले पंचाङ्ग में *विवाहमुहूर्त विमर्श:* इस लेख में विस्तृत रूप में विवेचन किया जा चुका है। धन्यवाद!

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मेष अश्विनी १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	४	२	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०	१
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
	गुणयोग	२८	३३	२८½	१८½	२१½	२२½	२६	१७	१९	२३½	३१½	२८	२१	२५	१५½	११	९	१३
मेष भरणी १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	२	४	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
	गुणयोग	३४	२८	२९	१९	२२½	१४½	१८	२६	२७	३१½	२३½	२५½	२०	१८	२६	२१½	२०	४
मेष कृत्तिका १	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३	३	३	३	३	३	१
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
	गुणयोग	२७½	२९	२८	१८	१०	१६½	२०	२०	२१	२५½	२६½	२३½	१६½	२०	२०	१५½	१५½	१८

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रेव.
	चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मेष अश्विनी १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
	योनि	१	०	१	१	३	३	२	२	२	२	२	१	१	४	१	१	३	२
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
	गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	२२½	२६½	२२½	१८½	२५½	१४	१३	२५	२३½	२५	२६	२०	२०	१५	१६	१४½	२४½	२६
मेष भरणी १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	३	१	१	३	३	२	२	२	२	२	०	०	२	०	०	३	४
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
	गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	१३½	२९½	२१½	१७½	१७½	१९½	२०	१८	२६	२७½	२६	१०	१०	२०	२४	२२½	१७½	२६½
मेष कृत्तिका १	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	३	१	१	३	३	२	०	२	२	०	१	१	३	१	२	३	३
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
	गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	२७½	१५½	१९½	१५½	१९½	२५½	२४½	१८	१२	१३½	११½	२५	२५	२७	१९	१७½	१९½	११½

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
वृष कृत्तिका २,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६
	भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	१८½	२०	१९	२८	२०	२६½	१७½	१७½	१८½	२२	२३	२०
वृष रोहिणी १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०
	भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	२३½	२३½	११	२०	२८	३६	२७	२३½	२२½	२६	२७	१२
वृष मृगशिरा १,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१
	भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
	नक्षत्र	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
वृष कृत्तिका २,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	३	३	३	३	३	१	१	३	१	१	३	३
	रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१८½	२२	२२	२१	२१	२३½	२२½	१०½	१४½	२०½	२४½	३०½
वृष रोहिणी १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८
	गुणयोग	१०½	२४½	२७	२६	२६	२०	१९	१५½	९½	१५½	२९½	२३½
वृष मृगशिरा १,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	०	०	०	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	०	८	०	८

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	घनि.	घनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
वृष कृत्तिका २,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	०	२	२	०	१	१	३	१	१	३	३
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	८
	गुणयोग	२०	१३½	७½	१२	१०	२३½	२९½	३१½	२३½	२०	२२	१४
वृष रोहिणी १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	१४	१९	११½	१६	१७	२०	२४½	२४½	३०½	२७	२७	१९
वृष मृगशिरा १,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मृगशिरा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	२	२	२	४	४	४	२	१	१	२	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	२७	१८	२२	१९½	२७	२०	२८	३३	३१½	१९	१२	१४
मिथुन आर्द्रा १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	१	१	२	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१९	२७	२१	१८½	२४½	२६	३४	२८	२५	१२½	२०	१३
पुनर्वसु १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	२०	२७	२३	२०½	२२½	२३½	३१½	२४	२८	१५½	२२½	१७

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
	नक्षत्र	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मृगशिरा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	२३½	१९½	२८½	३१½	३४	२१	१४	२७	२०½	१४	११	१४
मिथुन आर्द्रा १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०
	रा.मै.	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	२३½	२९½	२१½	२४½	२४½	२८	२१	२७	२१	१४½	१७	३
पुनर्वसु १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	०	०	३	३	३	२	२	३	२	२	३	३
	रा.मै.	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	१	[illegible]	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	२२½	२६½	२९½	२४½	२५½	२७½	२०½	२८	२२	१५½	२१½	७

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मृगशिरा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	२	१	०	०	१	२	२	२	२	२	२	२
	रा.मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	१	५	५	५	६	१	१	१	५	[illegible]	५	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	२३	१८	२५	२०	२३½	११½	१३	२१	२३½	२५½	१७½	२६½
मिथुन आर्द्रा १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	२	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	४	२	२	२	२	१	१	२	१	१	२	२
	रा.मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१६	२८	२८	२३	२३	१७½	१९	१२	१७	१९	२६½	२६½
पुनर्वसु १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
	रा.मै.	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१४	२७	२७	२२	२३	१७	१८½	१४	१६	१८	२८	२७½

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

वर की राशि				मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र				अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
चरण				१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
	पुनर्वसु	४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४	०	०	३	३	३	२	२	३	२	२	३	३	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
			रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुणयोग	२२½	२९½	२५½	२२	२४	२५	१८	१०½	१४½	२८	३५	२९½	१६½	२०½	१५½	१८	१९	२१	२०½	२८	२२	२०	२६	११½	८	२१	२१	२६	२७	२१	१२½	८	१०	१६	२६	२५½
कर्क	पुष्य	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	३	३	४	४	२	२	२	२	३	३	४	३	३	३	३	३	३	१	१	३	१	१	३	३	२	०	२	२	०	१	१	३	१	१	३	३
			रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	३०½	२१½	२६½	२३	२५	१८	११	१८	२१½	३५	२८	३०	१९½	१५½	२३½	२६	२७	१२	११½	२६½	२१	१९	१८	२१	१७	११	२१	२६	२५	१३	४½	१४½	१८	२४	१८	२७
	आश्लेषा	१, २, ३, ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	३	३	३	३	१	१	१	१	४	४	३	४	०	०	३	३	३	२	२	३	२	२	३	३	१	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
			रा.मै.	४	४	४	½	½	½	१	१	१	५	५	५	५	५	५	१	१	१	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½	½	½	½	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२६	२४½	२२½	१९	११	१९	१२	१२	१५	२८½	२९	२८	१५	१५½	१८½	२१	२१	२६	२५½	१२½	१७½	१५½	२०	२६	२२½	१६	८	१३	१३	२६	१७½	१९½	११½	१७½	२१	१३

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
सिंह	मघा	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	३	३	३	३	१	१	१	२	०	०	३	०
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२०	२०	१६½	१७½	९½	१७½	२१½	२२½	२०½	१६½	१९½	१६
सिंह	पू॰फा॰	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	१	१	१	२	०	०	३	०
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	२६	१८	२०	२१	२३½	१५½	१९½	२८½	२६½	२२½	१७½	१६½
सिंह	उ॰फा॰	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	४	४	४	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०
			भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुणयोग	१६½	२६	२०	२१	२६	२४½	२८½	२०½	२१½	१७½	२५½	१९½

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
			नक्षत्र	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
सिंह	मघा	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	४	४	३	३	३	२	२	३	२	२	३	३
			रा.मै.	५	५	५	४	४	४	०	०	०	५	५	५
			गण	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुणयोग	२८	३०	२७½	१६½	१६½	२१½	२४½	११½	१६½	२२½	२५½	३३
सिंह	पू॰फा॰	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	४	४	३	३	३	२	२	३	२	२	३	३
			रा.मै.	५	५	५	४	४	४	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	३०	२८	३५	२४	२२½	७½	१०½	२५½	१८½	२४½	२३½	२५½
सिंह	उ॰फा॰	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	२	२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	३	३	४	४	३	०	०	३	०	०	३	३
			रा.मै.	५	५	५	४	४	४	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०
			भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२७½	३५	२८	१७	१६	१३½	१६½	२५½	१६½	२२½	३१½	१७½

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
सिंह	मघा	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	२	२	१	१	२	२	२	३	२	२	३	३
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२५	१९	८½	३½	४½	१८½	२४½	२५½	१८½	१८½	१९½	१३
सिंह	पू॰फा॰	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	१	१	२	२	२	३	२	२	३	३
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	१९	१७	२४	१९	१८½	४½	१०½	१९½	२४½	२४½	१७½	२५½
सिंह	उ॰फा॰	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
			रा.मै.	५	५	५	०	०	०	०	०	०	५	५	५
			गण	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुणयोग	९½	२५	२५	२०	२०	११½	१७½	११½	१५½	१५½	२६½	२५½

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
उ.फा. २,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वस्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	३	०	०	३	०	०	३	३	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१३	२२½	१६½	२१	२६	२४½	३१½	२३½	२४½	२०	२८	२२	१७½	२५	१८	२८	२७	२४½	१६½	२५½	१६½	१८	२७	१३	१४	२९½	२९½	२४½	२४½	१६	१६½	१०½	१४½	१७½	२८½	२७½
कन्या हस्त १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वस्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	०	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	१	१	४	१	१	२	२	२	२	२	२	२	१	१	०	१	१	३	३
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१०	२०	१७½	२२	२५	२६	३३	२२½	२४½	२०	२८	२३	१८½	२२½	१६	२६	२८	२८	२०	२६½	१८½	२०	२६	१३	१५	२७	२८½	२३½	२४½	१८½	१९	८½	१३½	१६½	२६½	२७½
चित्रा १,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
	वस्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	५	५	५	१	१	१	४	४	४	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	४	४	४	½	½	½
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
चित्रा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
	योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
	गुणयोग	२२½	१४½	२८½	२३½	२०	१२	१३	२१	१९½	२०½	११½	२६½	२५½	११½	१७½	१७½	२०	२१
तुला स्वाती १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
	योनि	०	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	१
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
	गुणयोग	२७½	२९½	१७½	१२½	१५½	२६	२७	२६	२८	२९	२७½	१४½	१३½	२५½	२५½	२५½	२७½	२१
विशाखा १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४
	रा.मै.	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	०	०	०	५	५	५
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
	भ	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
	गुणयोग	२२½	२२½	२०½	१५½	१०½	१८½	१९½	२१	२१	२२	२१	१८½	१७½	१९½	१७½	१७½	१८½	२७½

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
	चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
चित्रा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	२८	२७	३४½	२३½	६½	२०½	२८	१४	२२	२५	२६½	२३½	१८	२६	१८½	१२½	३½	१२½
तुला स्वाती १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१	३	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	१	४	१	१	२	२	२	२	२	२	२	१	१	०	१	१	३	३
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	७	७	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	२८	२८	२०	९	२१½	१६½	२३	२७	१९	२२	२३	२६½	२१	२०	२५	१९	१६½	१२½
विशाखा १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
	रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	५	५	५	५	५	५	½	½	½
	गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
	गुणयोग	३४½	१९	२८	१७	१६	२०½	२८	२२	१४	१७	१७	३०	२४½	२६	२०	१४	१३	४½

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा	पू.भा	उ.भा	रेव.
चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण — अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
विशाखा ४																																				
वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
योनि	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	१	२	२	२	०	०	१	४	४	१	४	४	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	१
रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
गुणयोग	१६½	१६½	१४½	१९½	१४½	२२½	१२	१३½	१३½	१९	१८	१५½	२१½	२३½	२१½	१७	१८	२७	२२½	७	१६	२८	२७	३१½	२२½	१६½	८½	१२	१२	२५	२४	२५½	१९½	१९	१८	९½
वृश्चिक — अनुराधा १, २, ३, ४																																				
वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
योनि	३	३	३	३	२	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१	१	२	१	१	४	४	०	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
रा. मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
गुणयोग	२८½	१५½	१९½	२४½	२७½	२०½	१०	१५	२०½	२६	१८	२१	२४½	२०½	२९½	२५	२५	११	६½	२०½	१६	२८	२८	३१	१५½	१३½	२१½	२५	२६	१२	११	२१	२४½	२४	१८	२७
ज्येष्ठा १, २, ३, ४																																				
वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
वश्य	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	२	२	०	०	०	१	१	१	०	०	०	१	१	१
तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
योनि	३	३	३	३	२	२	२	०	३	३	३	३	२	२	३	३	२	१	१	२	१	१	४	४	०	२	२	२	२	१	१	३	१	१	३	३
रा.मै.	५	५	५	३	३	३	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५
गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
भ.	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०
नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
गुणयोग	२२	१८½	२८½	२९½	२७½	२२½	२२	२	५	१०½	२०	२६	३१	२३½	१६½	१२	११	२४	१९½	१४½	१९½	३१½	३०	२८	१४	१६½	१६½	२०	२०	२५	२४	१८	१०	९½	२१	२१

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
धनु	मूला	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	१	१	२	१	२	२	२	२	२	१	१	२	१	२	०	०	४	२	२	२	२	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
			गुणयोग	१२	२०	२४½	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७	२३½	२५	१९	९½	१३	१३	२६	२६	२१	२६	२३½	१५½	१५	२८	२८	२६½	१५	१५	२०	२८½	२१½	१४½	१६	२५	२६½
	पू०षा०	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	०	०	१	१	१	२	२	२	०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२	४	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	२६	१८	१८	१२½	१८	१०	१८	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८½	२७	१३	१३	२७	२१	१७½	१५½	१७½	२८	२८	३४	२२½	२३	६	१४½	२३½	२८½	३०	२३	३१
	उ०षा०	१	वर्ण	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	२	२	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७	७	७	७
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२४½	२६	१२	६½	१०½	१७	२५	२७	२७	२३	२३	९	८½	२४	२५	२८½	२८½	२१	२१	१९	१३	९½	२३½	१७½	२६½	३४	२८	१६½	१४½	१५	२३½	२३½	२९½	३१	३१	२३

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा
			चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मकर	उ.षा.	२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
			योनि	२	२	२	२	०	०	०	२	२	२	२	२	१	१	२	२	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
			भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुणयोग	२७	२८½	१४½	१२	१६	२२½	२०	२२	२२	२८	२८	१४	४½	२०	२१	२४½	२४½	१७
मकर	श्रवण	१,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
			योनि	२	२	०	०	१	१	१	२	२	२	०	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५	५	६	१
			भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८
			गुणयोग	२७	२६	१३½	११	१६	२५	२२½	२१	२२	२८	२६	१५	६½	१८½	२०	२३½	२४½	१९½
	धनिष्ठा	१,२	वर्ण	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
			वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१	½	½	½
			तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
			योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	२	२	१	१	२	२	१	१	१	१
			रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
			गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
			भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०	०	०	०
			नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
			गुणयोग	२०	११	२६	२३½	२०	१२	९½	१६½	१६	२२	१३	२७	१९½	५½	१२½	१६	१७½	१५½

कन्या की राशि	नक्षत्र	चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रेव.
			चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
			अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
मकर	उ.षा.	२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	२	२	२	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२४	२२	१६	१३	२७	२१	१६	२३½	१७½	२८	२६	२६½	१७	१७	२३	३०½	३०½	२२½
मकर	श्रवण	१,२,३,४	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
			योनि	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२	४	१	१	२	१	१	२	२
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	१	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	८	८	०
			गुणयोग	२६½	२२	१७	१४	२७	२२	१७	२३	१४½	२५	२८	२८	१८½	१८	२१	२८½	२९½	२२½
	धनिष्ठा	१,२	वर्ण	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१
			वश्य	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
			तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
			योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
			रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
			गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
			भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०	७	७	७
			नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
			गुणयोग	२२½	२४½	२९	२६	१२	२६	२१	७	१६	२६½	२७	२८	१८½	२३½	१९	२६½	१५½	२२½

विस्तृत गुण मिलान सारणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा
	चरण	१,२, ३,४	१,२, ३,४	१	२,३, ४	१,२, ३,४	१,२	३,४	१,२, ३,४	१,२, ३	४	१,२, ३,४	१,२, ३,४	१,२, ३,४	१,२, ३,४	१	२,३, ४	१,२, ३,४	१,२
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
धनिष्ठा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	½	½	½	०	०	०	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
	योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	१	१	१	१	२	२	१	१	१	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०
	गुणयोग	२०	११	२६	३०½	२७	१९	१२	१९	१७½	१२½	४½	१८½	२५½	११½	१८½	१७½	१९	१७
कुम्भ शतभिषा १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	१	२	२	½	½	½	½	०	०	०	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
	योनि	४	२	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	२	३	३	३	०	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
	गण	०	०	६	६	०	०	०	०	०	०	०	६	६	०	०	०	०	६
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
	गुणयोग	१५	२१	२८	३२½	२५½	२७	२०	१२	१३	८	१४½	२०½	२६½	२०½	१२½	११½	८½	२५
पूर्वभाद्रपदा १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	½	½	०	०	०	०	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	२	१	१	१	२	२	१	१	१	१
	रा.मै.	½	½	½	५	५	५	४	४	४	½	½	½	०	०	०	४	४	४
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६	६	६	०
	भ.	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०	०	०	८
	गुणयोग	१८	२५	२०	२४½	३१½	३१½	२४½	१७	१८	१३½	२०	१२½	१९½	२५½	१६½	१५½	१५½	१७½

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
	चरण	३,४	१,२, ३,४	१,२, ३	४	१,२, ३,४	१,२, ३,४	१,२ ३,४	१,२, ३,४	१	२,३, ४	१,२, ३,४	१,२	३,४	१,२, ३,४	१,२, ३	४	१,२, ३,४	१,२, ३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
धनिष्ठा ३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	१८	२०	२४½	२५	११	२५	२९½	१५½	२४½	१८	१८½	१९½	२८	३३	२८½	१८	७	१४
कुम्भ शतभिषा १,२,३,४	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	३	१½	१½
	योनि	१	०	१	१	३	३	२	२	२	२	२	१	१	४	१	१	३	२
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	६	०	६	६	०	६	६	०	०	०	०	६	६	६	०	०	०	०
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	२६	१९	२६	२६½	२१	१९	२२½	२४½	२४½	१८	१८	२४½	३३	२८	१९	८½	१७	१६
पूर्वभाद्रपदा १,२,३	वर्ण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	वश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	२	½	½	½	२	२	२	½	½	½
	तारा	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	३	३	३	५	५	५	५	५	५	३	३	३
	गण	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७	०	०	०
	नाड़ी	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१८½	२६	२०	२०½	२६½	११	१५½	२९½	३०½	२४	२३	२०	२८½	१९	२८	१७½	२२½	२०

विस्तृत गुण मिलान सारिणी

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
	नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.
	चरण	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
पू.भा. ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०
	वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½
	योनि	१	०	१	१	२	२	२	१	२	२	१	१	२	२	१
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८	८	८	०
	गुणयोग	१४½	२१½	१६½	१९	२६	२६	२५½	१८	१९	१८	२५	१७½	१७½	२३½	१४½
मीन उ.भा. १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०
	वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½
	योनि	३	३	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५
	गण	६	६	०	०	६	६	६	६	६	६	६	०	०	६	६
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०
	नाड़ी	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८
	गुणयोग	२४½	१६½	१८½	२१	२६	१८	१७½	२५½	२८	२७	१९	२१	१८½	१६½	२५½
रेवती १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०
	वश्य	१	१	१	१	१	१	½	½	½	२	२	२	१	१	१
	तारा	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½
	योनि	२	४	३	३	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
	रा.मै.	५	५	५	½	½	½	½	½	½	४	४	४	५	५	५
	गण	६	५	१	१	५	६	६	५	६	६	६	१	१	५	५
	भ.	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०

कन्या की राशि / नक्षत्र / चरण	वर की राशि	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	उ.फा.	ह.	चित्रा	चित्रा	स्वा.	विशा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	घनि.	घनि.	शत.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रेव.
	चरण	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
	अष्टकूट	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण	गुण
पू.भा. ४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½
	योनि	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	१	४	४	१	४	४	१	०
	रा.मै.	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
	गण	६	६	०	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	८	८	८	८	८	८	०	०	०	८	८
	गुणयोग	१६½	१६½	१८½	११½	१९	१३	१९	२५	९½	१५	२९	३०	२९½	२८½	२५½	१७	७½	१६½	२८	३३	३०½
मीन उ.भा. १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	३
	योनि	४	३	०	०	३	०	०	३	३	२	२	२	२	२	१	१	३	१	१	४	३
	रा.मै.	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
	गण	६	६	०	०	६	०	०	६	०	०	६	६	६	६	०	०	०	६	६	६	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७
	नाड़ी	८	८	०	०	८	८	८	०	८	८	०	८	८	८	०	०	८	८	८	०	८
	गुणयोग	२७½	२६½	९½	२½	१९½	१२	१८	१९	२१	२४	२२	३०	२९½	२९½	१४½	६	१६	२१½	३३	२८	३५
रेवती १,२,३,४	वर्ण	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
	वश्य	½	½	½	½	½	½	१	१	१	½	½	½	२	२	२	½	½	½	२	२	२
	तारा	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३
	योनि	३	३	१	१	३	१	१	३	३	२	२	२	२	२	०	०	२	०	०	३	४
	रा.मै.	½	½	½	½	½	½	५	५	५	५	५	५	३	३	३	३	३	३	५	५	५
	गण	५	६	१	[illegible]	६	१	१	६	१	१	५	५	५	६	१	१	१	५	५	५	६
	भ.	७	७	७	०	०	०	०	०	०	७	७	७	७	७	७	०	०	०	७	७	७

शुभ विवाह मुहूर्त्त विक्रमी संवत् 2069 (सन् 2012 – 13 ई॰)

मुहूर्त्तनिर्णेता : पं॰ रवीन्द्र रैणा, बी॰एस॰सी॰एल॰एल॰बी॰, रैणा ज्योतिष कार्यालय, बी. सी. रोड, जम्मू, मोवाईल 9419189111
पं॰ सुरेश शास्त्री, फलित ज्योतिषाचार्य, दहोतरा कम्प्यूटराईज़्ड ज्योतिष कार्यालय, 121-रघुनाथपुरा, जम्मू, मोवाईल 9419248431
एवं पं॰ विनय शास्त्री, तालाब तिल्लो, जम्मू, मोवाईल : 9419149757

विशेष सूचना श्रीविक्रमी संवत् 2070 सन् 2013-14 ई. के शुभविवाहादि मुहूर्त हमारे पास उपलब्ध हैं जो सज्जन मुहूर्त पूछना चाहते हैं वे कृपया श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान 44/2 त्रिकुटानगर में सम्पर्क करें।

काल शुद्धि

1. **संवत्सराम्भ–** 23 मार्च से 12 अप्रैल तक चैत्र मास रहेगा। चैत्र मास में सभी शुभ कार्य वर्जित हैं।
2. **गुरू अस्तोदय–** 29 अप्रैल से बृहस्पति वार्धक्य दोष प्रारम्भ, बृहस्पति तारा 2 मई सन् 2012 ई. पश्चिम में अस्त होकर 30 मई सन् 2012 ई. को पूर्व में उदित होगा। 31 मई से 2 जून तक गुरूबाल्यत्व दोष रहेगा।
3. **शुक्रास्तोदय–** 2 जून को शुक्र पश्चिम में अस्त होकर 11 जून को पूर्व में उदित होगा, 14 जून तक बाल्यत्व दोष रहेगा अतः इस समय के अन्तराल में वैवाहिक शुभ कार्य नहीं होंगे।
4. **भाद्रपद अधिमास–** 18 अगस्त से 16 सितम्बर तक भाद्रपद मास अधिमास (मलमास) रहेगा।
5. **श्राद्धपक्ष–** 29 सितम्बर से 15 अक्तूबर तक श्राद्ध पक्ष रहेगा।
6. **भीष्मपञ्चक–** 24 नवम्बर से 28 नवम्बर तक भीष्म पंचक रहेंगे, परम्परागत यह समय विवाहादि मुहूर्तों के लिए वर्जित समझा जाता है। अतः मुहूर्त नहीं लगाए गए।
7. **पौष मास–** 15 दिसम्बर से 12 जनवरी सन् 2013 ई. तक पौष मास रहेगा।
8. **शुक्रास्तोदय–** 10 फरवरी (2013 ई.) को पूर्व में अस्त होकर 21 अप्रैल (2013 ई.) को पश्चिम में उदय होगा।

विशेष– अत्यावश्यक होने पर पौष चैत्र तथा तारा अस्त में विवाह मुहूर्त शास्त्र सम्मति से हो सकते हैं, ऐसे प्रमाण शास्त्र में उपलब्ध हैं, यदि कोई सज्जन विशेष परिस्थिति में अथवा अत्यावश्यकता में विवाह मुहूर्त चाहते हों, श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान में सम्पर्क कर सकते हैं।

वैशाख मास (अप्रैल) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई॰, वि॰सं॰ 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
वैशाख कृ. 10	रवि	3 वैशा	15 अप्रैल	धनिष्ठा	मकर/कुंभ	मेष	मेष	||||| ऽ अ. । ऽ ||	रात्रि लग्न 12 (चं. बु. दान)
वैशाख कृ. 11	सोम	4 वैशा.	16 अप्रैल	धनिष्ठा	कुम्भ	मेष	मेष	|||||| ऽ ||	दि. ल. 3 (बुध, केतु दान)
वैशाख शु. 3	मंगल	12 वैशा	24 अप्रैल	रोहिणी	वृष	मेष	मेष	||ऽशु.के.।ऽरा.ऽअ.||||	ल.गोधू., रा.ल. 12 (बु. दा.), युतिदोषः गौड़देशे
वैशाख शु. 4	बुध	13 वैशा	25 अप्रैल	रोहिणी	वृष	मेष	मेष	||ऽ शु. के. ।ऽ रा. ऽ अ. ||||	दि.ल. 3 (चं. के. दान), युति दोषः गौड़दोशे
वैशा. शु. 4/5	बुध	13 वैशा	25 अप्रैल	मृगशिरा	वृष/मिथुन	मेष	मेष	||ऽशु.|||ऽअतिऽ||	गोधू., रा.ल. 12(बु.दा.)
वैशा. शु. 5	गुरू	14 वैशा	26 अप्रैल	मृगशिरा	मिथुन	मेष	मेष	||ऽशु.|||ऽऽ||	दि.ल. 4(बु.दा.), पादेन शुक्र युति परिहार

आषाढ़ मास (जून-जुलाई) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई०, वि०सं० 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आषा. शु. 11	शुक्र	2 आषा	15 जून	अश्वि	मेष	मिथुन	वृष	ऽबु. ।।। ऽ श. ।ऽऽ।।	दि.ल. 4(सू. बु. दान)
आषा. शु. 5	रवि	11 आषा	24 जून	मघा	सिंह	मिथुन	वृष	।।।।। ऽ वज्र ऽ ।।	दि.ल. 4 (सू.दा.), गोधू. रा.ल. 1 (मं. बु. दान)
आषा. शु. 8	बुध	14 आषा	27 जून	हस्त	कन्या	मिथुन	वृष	।।।।।। ऽ ।।	दि. ल. 4 (बु. दान), 5(बु.रा. दा.), गोधू. रा.ल. 10(बु.दा.) रा.ल. 1 (चं.मं. दान) अत्यावश्यके
आषा. शु. 9	गुरू	15 आषा	28 जून	चित्रा	कन्या	मिथुन	वृष	ऽमं।ऽश.।।ऽनृऽ।।।	दि.ल 4, 5 (बु. राहु दान) आवश्यके
आषा. शु. 10	शुक्र	16 आषा	29 जून	स्वाती	तुला	मिथुन	वृष	।।।।।।ऽ।।	दि.ल. 4, 5 (बु. रा. दान), गोधू. रा.ल. 10 (बु. दान)
आ.शु.13/14	सोम	19 आषा	2 जुला.	मूल	धनु	मिथुन	वृष	।।।।ऽरो.।।ऽ।	ल. गोधू., रा.ल. 10 (चं.बु. दा. व पूजा)
श्रावण कृ. 2	गुरू	22 आषा	5 जुला.	श्रवण	मकर	मिथुन	वृष	।ऽ।।ऽबु.ऽअऽवि.।।।	ल. गोधू., रा.ल. 1 (मं. दान)
श्रावण कृ. 3	शुक्र	23 आषा	6 जुला	धनिष्ठा	मकर/कुम्भ	मिथुन	वृष	।।।।।।।।।	ल. गोधूलि रा.ल. 1 (मं. दान)
श्रावण कृ. 4	शनि	24 आषा	7 जुला	धनिष्ठा	कुम्भ	मिथुन	वृष	।।।।।।।।।	दि.ल. 5 (चं. दान)
श्रावण कृ. 7	मंगल	27 आषा	10 जुला	उ.भा.	मीन	मिथुन	वृष	।ऽ।।ऽ मं. ऽ चौ. ऽ ।।।	दि.ल. 4 (चं. बु. दान)
श्रावण कृ. 8	बुध	28 आषा	11 जुला	रेवती	मीन	मिथुन	वृष	ऽशु. ।।।।।ऽ।ऽ	दि.ल. 4 (सू. बु. दान)
श्रावण कृ. 8	बुध	28 आषा	11 जुला	अश्वि	मेष	मिथुन	वृष	।।।ऽ श. ऽ रो. ऽऽ।ऽ	लग्न गोधू. रा.ल. 10 (बु. दान)
श्रावण कृ. 9	गुरू	29 आषा	12 जुला	अश्वि	मेष	मिथुन	वृष	।।।ऽ श. ऽ रो. ऽऽ।	दि.ल. 4 (सू. बु. दान), 5 (बु. मं. श. दान) गोधू. रा.ल. 10 (बु. दान)

श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई०, वि०सं० 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
श्राव. शु. 4/5	सोम	8 श्राव	23 जुला.	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	ल. गोधू., रा.ल. 1 (मं. दान), 3 (गु. के. दान)
श्राव. शु. 5/6	मंगल	9 श्राव	24 जुला.	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृष	।।।।।।ऽऽ।ऽ	दि. ल. 5 (सू. बु. दा.)
श्राव. शु. 6	मंगल	9 श्राव	24 जुला.	हस्त	कन्या	कर्क	वृष	।।ऽमं.।।ऽरो.।।।ऽ	ल. गोधू., रा. ल. 3 (गु. के. दा.) युतिदोषः गौड़ देशे
श्राव. शु. 7	बुध	10 श्राव	25 जुला.	हस्त	कन्या	कर्क	वृष	।।ऽमं.।।ऽरो.।।।।	दि.ल. 5 (सू.बु.मं. दा.)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
श्राव.शु.13/14	मंगल	16 श्राव	31 जुला.	उ.षा.	धनु	कर्क	वृष	ऽश. ।।ऽ शु. ।ऽ चौ. ।ऽ।।	रा.ल. 1 (मं. दान), 3 (चं. दान)
श्राव. शु. 14	बुध	17 श्राव	1 अग.	श्रवण	मकर	कर्क	वृष	।।।।ऽ सू. बु. ।।ऽ।।	रा.ल. 1 (मं. दान)
श्राव. पूर्णिमा,	गुरू	18 श्राव	2 अग.	श्रवण	मकर	कर्क	वृष	।।।।ऽ बु. ।।ऽ।।	दि. ल. 5 (सू. बु. चं. दान), गोधू.
भा.कृ. 3/4	रवि	21 श्राव	5 अग.	उ.भा.	मीन	कर्क	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	रा.ल. 3 (गु. के. दान), मेषे मृत्युबाण प्रभाव:
भा.कृ. 4/5	सोम	22 श्राव	6 अग.	रेवती	मीन	कर्क	वृष	।।।।।।।।ऽ।	रा. ल. 1 (चं. मं. दान), 3 (गु. के. दान)
भाद्र कृ. 4/5	मंगल	23 श्राव	7 अग.	अश्वि	मेष	कर्क	वृष	ऽशुऽ।।ऽ मं ।ऽ।।ऽ	रा. ल. 3 (गु. के. दान)
भाद्र कृ. 9	शनि	27 श्राव	11 अग.	रोहिणी	वृष	कर्क	वृष	।ऽऽ गु ।ऽ रा ।ऽऽ।।	लग्न गोधू., रा. ल. 3 (चं. के. दान)
भाद्र कृ. 10	रवि	28 श्राव	12 अग.	मृग.	वृष/मिथुन	कर्क	वृष	।ऽ हर्ष ।।। ऽ रो ।ऽ।।	लग्न गोधू., रा. ल. 3 (चं. दान)
भाद्र. कृ 11	सोम	29 श्राव	13 अग.	मृग.	मिथुन	कर्क	वृष	।ऽ हर्ष ।।।।ऽ।।	दि. ल. 5 (सू. रा. दान)

आश्विन मास (सितम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई०, वि०सं० 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
भाद्र शु. 3	मंगल	3 आश्वि	18 सितं.	स्वाती	तुला	कन्या	वृष	।।।।ऽ अ ऽ ।।।	रा. ल. 3 (गु. के. दान), 4(मं. श. दान), 5 (रा. दान)
भाद्र शु. 7	शनि	7 आश्वि	22 सितं.	मूल	धनु	कन्या	वृष	।।।।ऽ चौ ऽऽ।ऽ	रा. ल. 5 (शु. रा. दान)
भाद्र शु. 9/10	सोम	9 आश्वि	24 सितं.	उ.षा.	मकर	कन्या	वृष	ऽ श ।।।। ऽ रो ऽ ति ऽ ।।	रा. ल. 4 (चं. श. दान)
भाद्र शु. 10/11	मंगल	10 आ.	25 सितं.	श्रवण	मकर	कन्या	वृष	।।।।।। ऽ ।।।	गोधू. रा. ल. 4 (चं. श. दान)

कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई०, वि०सं० 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आश्वि. शु. 5	शुक्र	4 कार्ति.	19 अक्तू.	मूल	धनु	तुला	वृष	ऽ मं. ।।।।।।।।	रा. ल. 3 (चं. शु. दान), 5 (रा. दान), 6 (शु. दान)
आश्वि. शु. 6	शनि	5 कार्ति.	20 अक्तू.	मूल	धनु	तुला	वृष	ऽ मं. शु ।।।।।ऽ।।।	दि. ल. 10 (शु. चं. दान), गोधू. अतिआवश्यके
आश्वि. शु.8/9	सोम	7 कार्ति.	22 अक्तू.	श्रवण	मकर	तुला	वृष	ऽ श. ऽ।।।।ऽ शु ।।।	ल. गोधू., रा. ल. 4 (चं. श. दान), 6 (शु. दान)
आश्वि. शु.9/10	मंगल	8 कार्ति.	23 अक्तू.	धनिष्ठा	मकर/कुंभ	तुला	वृष	।ऽ।।।।ऽ गं ।ऽ।	ल. गोधू., रा. ल. 4 (चं. श. दान), 6 (शु. दान)
अश्वि. शु. 10	बुध	9 कार्ति.	24 अक्तू.	धनिष्ठा	कुम्भ	तुला	वृष	।ऽ गं ।।।।।ऽ।	दि. ल. 10 (शु. दान), विजयादशमी (स्वत: सिद्ध मुहूर्त)

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आश्वि.शु. 12	शुक्र	11 का.	26 अक्तू.	उ.भा.	मीन	तुला	वृष	ऽ सू ऽ व्या ।।ऽशु ।ऽ।।ऽ	रा. ल. 3 (शु. दान)
आश्वि.शु.13/14	शनि	12 का.	27 अक्तू.	रेवती	मीन	तुला	वृष	।ऽ हर्ष ।ऽ शु ।ऽ अ ।।।।	रा. ल. 4 (शु. श. दान), 6 (चं. शु. दान)
आश्वि. शु.14	रवि	13 का.	28 अक्तू.	रेवती	मीन	तुला	वृष	।ऽ हर्ष ।ऽ शु ।ऽ अ ऽ व ।।।	दि. ल. 10, 11 (शु. दान), गोधू., रा. ल. 4(श. शु. दान)
आ.शु. 14/15	रवि	13 का.	28 अक्तू.	अश्वि.	मेष	तुला	वृष	।।।।।ऽ अ ऽ व ऽ।।	रा. ल. 4 (श. शु. रा. दान)
आश्वि. पूर्णिमा	सोम	14 का.	29 अक्तू.	अश्वि.	मेष	तुला	वृष	।।।।।।ऽ व ऽ।।	दि.ल. 10,11(शु.दा.), गोधू., रा.ल.4(श.शु. दा.),5(रा.दा.)
कार्ति. कृ. 3	गुरू	17 का.	1 नवं.	रोहिणी	वृष	तुला	वृष	।।ऽ गु ।ऽ बु ऽ चौ ऽ परि ।।।	दि. ल. 10, 11 (शु. दान), गोधू.
कार्ति. कृ. 3	शुक्र	18 का.	2 नवं.	मृग	वृष/मिथुन	तुला	वृष	।।।।ऽ मं. ।ऽ प्रि ऽ।।	दि. ल. 10, 11 (शु.दा.), गोधू., रा.ल. 4(श.शु.च. दान) 5 (रा. दान), 6 (शु. दान)
कार्ति. कृ. 4	शनि	19 का.	3 नवं.	मृग	मिथुन	तुला	वृष	।।।।ऽ मं ऽ रो ऽऽ।।	दि. ल. 11 (शु. दान)
कार्ति. कृ. 8/9	बुध	23 का.	7 नवं.	मघा	सिंह	तुला	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. 4 (श. शु. दान), कर्क लग्न रात्रि 11:05 के बाद 6 (चं. शु. दान)
कार्ति. कृ. 9	गुरू	24 का.	8 नवं.	मघा	सिंह	तुला	वृष	।।।।।ऽ नृ ऽऽ।।	दि. ल. 11(चं. शु. दान); रा. ल. 4 (श. शु. दान)
कार्ति. कृ.11/12	शनि	26 का.	10 नवं.	हस्त	कन्या	तुला	वृष	।।ऽ शु ।।।ऽ वि ऽ ।।	रा. ल. 4 (शु. श. दान), 5 (रा. दान)
कार्ति. कृ. 12	रवि	27 का.	11 नवं.	हस्त	कन्या	तुला	वृष	।।ऽ शु ।।।ऽ वि ऽ।।	दि. ल. 10 (मं. शु. दान)

मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2012 ई॰, वि॰सं॰ 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
कार्ति. शु. 3	शुक्र	2 मार्ग.	16 नवं.	मूल	धनु	वृश्चि.	वृष	।।ऽ मं ।।।।।।	दि.ल. 10(चं.मं.दा.), 11(शु.दा.), गोधू., रा.ल. 5(रा.दा.)
कार्ति. शु. 4/5	शनि	3 मार्ग.	17 नवं.	उ.षा.	धनु	वृश्चि.	वृष	ऽ मं ऽ ।।। ऽ अ ऽ।।।	रा. ल. 5, 6(बु. दान)
कार्ति. शु. 5/6	रवि	4 मार्ग.	18 नवं.	उ.षा.	मकर	वृश्चि.	वृष	ऽ मं ऽ गं ।।।ऽ अ ऽ।।।	दि. ल. 11 (चं. दान), गोधू., रा.ल. 4 (चं. मं. श. दान)
कार्ति. शु. 6	रवि	4 मार्ग.	18 नवं.	श्रवण	मकर	वृश्चि.	वृष	ऽ श ऽ।।।।।।।।	रा. ल. 6 (मं. बु. दान)
कार्ति. शु. 6/7	सोम	5 मार्ग.	19 नवं.	श्रवण	मकर	वृश्चि.	वृष	ऽ श ऽ।।।।ऽ।।।	दि. ल. 11 (चं. दान), गोधू., रा. ल. 4 (चं. श. दान)
कार्ति. शु. 7	सोम	5 मार्ग.	19 नवं.	धनिष्ठा	मकर	वृश्चि.	वृष	।।।।।ऽ नृ ।ऽ।।	रा. ल. 6 (मं. बु. दान)
कार्ति. शु. 10	गुरू	8 मार्ग.	22 नवं.	उ.भा.	मीन	वृश्चि.	वृष	।।।।।।ऽ च ऽ	रा. ल. 6 (चं. मं. बु. दान), दग्धा तिथि परिहार

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेजी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
कार्ति. कृ. 1	गुरू	15 मार्ग.	29 नवं.	रोहिणी	वृष	वृश्चि.	वृष	।।ऽ गु ।ऽ सू ऽ नृ ।ऽ।।	दि. ल. 10 (श. दान), 11 (सू. रा. दान)
कार्ति. कृ. 1/2	शुक्र	15 मार्ग.	29 नवं.	मृगशिरा	वृष	वृश्चि.	वृष	।ऽ सा ।।।।ऽ।।।	रा. ल. 4 (श. रा. दान), 5 (रा. शु. दान), 6(सू. रा. दा.)
कार्ति. कृ. 2	शुक्र	16 मार्ग.	30 नवं.	मृगशिरा	मिथुन	वृश्चि.	वृष	।ऽ सा ।।।।ऽ।।।	दि. ल. 11 (सू. रा. दान), गोधू.
मार्ग. कृ. 6/7	बुध	21 मार्ग.	5 दिसं.	मघा	सिंह	वृश्चि.	वृष	ऽ बु ऽ ।।।।ऽ।।।	रा. ल. 6 (चं. मं. दान)
मार्ग. कृ. 8/9	शुक्र	23 मार्ग.	7 दिसं.	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चि.	वृष	ऽ शु ।।।।ऽ नृ ऽऽ।।	दि.ल. 11(चं.के.दान), रा.ल. 4(श.रा.दा.), 5(रा.शु.दा.)
मार्ग. कृ. 11	रवि	25 मार्ग.	9 दिसं.	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चि.	वृष	।।।।।ऽ चौ ऽऽ।।	दि.ल. 10(मं.दा.), रा.ल.4(श.रा.दा.), 5(रा.शु.दा.), 6(गु.दा.)

माघ मास (जनवरी-फरवरी) विवाह मुहूर्त सन् 2013 ई०, वि०सं० 2069

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	तारीख अंग्रेज़ी	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश-दोष रेखाएँ	शुद्ध लग्न-ग्रह की पूजा दानादि विवरण
पौष शु. 5/6	बुध	4 माघ	16 जन.	उ.भा.	मीन	मकर	वृष	।।।।।ऽ अ ऽ परि ।।।	रा. ल. 6 (चं. दान), 8(गु. शु. दान)
पौष शु. 6	गुरू	5 माघ	17 जन.	उ.भा.	मीन	मकर	वृष	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. 11 (मं. बु. दान), गोधू.
पौष शु. 6/7	गुरू	5 माघ	17 जन.	रेवती	मीन	मकर	वृष	।।।।।ऽ नृ ऽ।।	लग्न गोधू., रा. ल. 6(चं. बु. दान), 8(गु. शु. दान)
पौष शु. 7	शुक्र	6 माघ	18 जन.	रेवती	मीन	मकर	वृष	।।।।।ऽ नृ ऽ।।	दि. ल. 11 (मं. रा. दान), गोधू.
पौष शु. 8	शनि	7 माघ	19 जन.	अश्वि	मेष	मकर	वृष	।।।।।।ऽ सा ऽ।।	दि. ल. 11 (श. के. मं. दान), 12 (चं. के. दान)
पौष शु. 11	मंगल	10 माघ	22 जन.	रोहिणी	वृष	मकर	वृष	।।ऽ गु ।।ऽ रो ।।ऽ।	दि.ल.11(श.मं.दा.),12(चं.के. दा.),गोधू., रा.ल.8(चं.गु.दा.)
माघ कृ. 3/4	बुध	18 माघ	30 जन.	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	वृष	।ऽ।।।ऽ रो ।ऽ।।	रा.ल. 6 (चं. मं. दान), 8 (चं. गु. दान)
माघ कृ. 4	गुरू	19 माघ	31 जन.	उ.फा.	कन्या	मकर	वृष	।।।।।ऽ रो ।ऽ।।	दि. ल. 12 (चं. दान), 2 (मं. दान), गोधू.
माघ कृ. 5	गुरू	19 माघ	31 जन.	हस्त	कन्या	मकर	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. 8 (गु. शु. दान)
माघ कृ. 5	शुक्र	20 माघ	1 फर.	हस्त	कन्या	मकर	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. 12 (चं. दान), 2(मं. दान), गोधू.
माघ कृ. 9	सोम	23 माघ	4 फर.	अनुराधा	वृश्चिक	मकर	वृष	ऽ बु शु ।।।ऽ के ऽ नृ ऽऽ।।	लग्न गोधू., रा. ल. 8 (चं. दान)
माघ कृ. 10	मंगल	24 माघ	5 फर.	अनुराधा	वृश्चिक	मकर	वृष	ऽ बु शु ।।।ऽ के ऽ नृ ऽऽ।।	दि. ल. 12 (चं. मं. दान), 2(चं. दान)
माघ कृ. 11	बुध	25 माघ	6 फर.	मकर	धनु	मकर	वृष	।ऽ हर्ष ।।।ऽ चौ ।ऽ।।	लग्न गोधू., रा.ल. 8(गु. शु. दान), दग्धा परिहार
माघ कृ. 12	गुरू	26 माघ	7 फर.	मकर	धनु	मकर	वृष	।ऽ हर्ष ।।।ऽ चौ ऽ व ऽ।ऽ	दि. ल. 12 (चं. मं. रा. दान)

मुण्डन मुहूर्त (2012–13 ई०)

उत्तरायण मासों में, जन्मकाल से 1, 3, 5 इत्यादि वर्षों में, शुभ कहा गया है। जन्म मास, ज्येष्ठ बालक का ज्येष्ठ मास अथवा ज्येष्ठ नक्षत्र में, जन्म राशि अष्टमस्थ राशि एवं अष्टमस्थ लग्न में मुण्डन न करें। अपने कुलानुसार अश्विन एवं चैत्र नवरात्रों में किसी देवस्थान एवं विवाह के साथ कर सकते हैं।

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय लग्न
वै. शु. 11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशा.	धनिष्ठा	ल. 3, अभिजित्
वै. शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	ल. 4, अभिजित्
वै. शु. 7	शनि	28 अप्रै.	16 वैशा.	पुर्न.	ल. 3, अभिजित्
आ.कृ. 11	शुक्र	15 जून	2 आषा	अश्विनी	ल. 4, अभिजित्
आ. शु. 2	गुरू	21 जून	8 आषा	पुर्न	ल. 4, अभिजित्
आ. शु. 3	शुक्र	22 जून	9 आषा.	पुष्य	ल. 5, चंद्र दान, अभिजित्
आ. शु. 8	बुध	27 जून	14 आषा.	हस्त	ल. 4, 5
आ.शु. 10	शुक्र	29 जून	16 आषा.	स्वाती	ल. 4, 5, अभिजित्
आ.शु. 12	चंद्र	2 जुला.	19 आषा.	ज्येष्ठ	ल. 5, अभिजित
श्रा.कृ. 1	बुध	4 जुला.	21 आषा.	उ.षा.	दिवा 2:22 से 3:58 तक
श्रा.कृ. 2	गुरू	5 जुला.	22 आषा.	श्रवण	दिवा 1:19 आवश्यके वैधृ. के बाद
श्रा.कृ. 8	बुध	11 जुला.	28 आषा.	रेवती	ल. 4 (बु. दान)
			सन् 2013 ई.		
पौ.शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल. 11, 12, अभिजित्
पौ. शु. 15	रवि	27 जन.	15 माघ	हस्त	ल.12, अभिजित् ब्राह्मणों के लिए अत्यावश्यके
मा.कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	ल. 12, 2, अभिजित्

डुग्गर देश की प्रधान देवी माँ वैष्णवी है, परम्परा के अनुसार नवरात्रों को अत्यन्त शुद्ध एवं शुभ मान कर कुछ परिवारों में नवरात्रों में मुण्डन करवाने की प्रथा प्रचलित है। यदि नवरात्रों में मुहूर्त करना चाहें तो श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, 44/2 [illegible]

शिलान्यास मुहूर्त (नीव)

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय लग्न
वै. कृ. 11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशा.	धनिष्ठा	अभिजित्
वै. शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	अभिजित्
वै. शु. 7	शनि	28 अप्रै.	16 वैशा.	पुनर्वसु	अभिजित्
आ.कृ. 11	शुक्र	15 जून	2 आषा.	अश्विनी	अभिजित्
आ.शु. 2	गुरू	12 जून	8 आषा.	पुनर्वसु	ल. 5, अभिजित्
आ.शु. 8	बुध	27 जून	14 आषा.	हस्त	अभिजित्
आ. शु. 10	शुक्र	29 जून	16 आषा.	स्वाती	ल. 5, अभिजित्
श्रा.कृ. 3	शुक्र	6 जुला.	23 आषा.	श्रवण/धनि.	ल. 5, अभिजित्
श्रा.शु. 5	सोम	23 जुला.	8 श्रावण	उ.फा.	अभिजित्
श्रा. शु. 7	बुध	25 जुला.	10 श्राव.	हस्त	ल. 5, मं. दान
श्रा.शु. 8	गुरू	26 जुला.	11 श्राव.	स्वाती	अभिजित्
श्रा.शु.15/1	गुरू	2 अग.	18 श्राव.	श्रवण	ल. 5 (चं. दान), अभिजित्
प्र.भा.कृ. 2	शनि	4 अग.	20 श्राव.	शतभिषा	ल. 5 (चं. दान), अभिजित्
प्र.भा.कृ. 5	सोम	6 अग.	22 श्राव.	उ.भा.	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 11	सोम	12 अग.	29 श्राव.	मृगशिरा	ल. 5, अभिजित्
आ.शु. 15	सोम	29 अक्तू.	14 कार्ति.	अश्विनी	अभिजित्
का.कृ. 3	गुरू	1 नवं.	17 कार्ति.	रोहिणी	अभिजित्
का.कृ. 3	शुक्र	2 नवं.	18 कार्ति.	मृगशिरा	अभिजित्
मार्ग. कृ. 2	शुक्र	30 नवं.	16 मार्ग.	मृगशिरा	अभिजित्
मार्ग. कृ 8	शुक्र	7 दिसं.	23 मार्ग.	उ.फा.	प्रात: 7:30 से 8:46 तक
			सन् 2013 ई.		
पौ.शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल. 11 (मं. दान.), अभिजित्
पौ.शु. 13	गुरू	24 जन.	12 माघ	मृगशिरा	प्रात: 9:55 तक
माघ कृ. 5	गुरू	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	अभिजित्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	20 माघ	हस्त	ल. 12 (चं. दान), अभिजित

यज्ञोपवीत मुहूर्त्त

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चैत्र शु. 1	शुक्र	23 मार्च	10 चैत्र	रेवती	ल. 3 (बु.दा.), दिवा 12:33 बाद
चैत्र शु. 3	रवि	25 मार्च	12 चैत्र	आश्विनी	ल. 3 (बु. दान)
चैत्र शु. 6	गुरू	29 मार्च	16 चैत्र	मृगशिरा	ल. 3 (बु. दान)
चैत्र शु. 7	शुक्र	30 मार्च	17 चैत्र	आर्द्रा	ल. 4 (चं. बु. दान)
चैत्र शु. 10	सोम	2 अप्रैल	20 चैत्र	पुष्य/आश्ले	ल. 3 (बु. दान)
वैशा. कृ. 2	रवि	8 अप्रैल	26 चैत्र	स्वाती	ल. 3, अभिजित्
वैशा. शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	ल. 4 (चं. बु. दान)
वैशा. शु. 6	शुक्र	27 अप्रै.	15 वैशा.	आर्द्रा	ल. 4 (चं. बु. दान)
			सन् 2013 ई.		
पौष शु. 6	गुरू	17 जन.	5 माघ	उ.भा.	ल. 11 (मं. दान), अभिजित्
पौष शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल. 11 (मं. दान), अभिजित्
पौष शु. 13	गुरू	24 जन.	12 माघ	आर्द्रा	ल. 12 (शु. दान), अभिजित्
पौष शु.15/1	रवि	27 जन.	15 माघ	पुष्य	ल. 12, अभिजित्
माघ कृ. 5	गुरू	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	अभिजित्
माघ कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	ल. 12, 10:36 तक चं. दा.

विपणि मुहूर्त्त

विपणि (दुकान) अथवा व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व मुहूर्त्त वाले दिन अपने कार्यालय में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा श्री गणपति सहित पंचदेव पूजा, नवग्रह पूजन, कलशस्थापनादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा.कृ. 10	रवि	15 अप्रै.	3 वैशाख	धनिष्ठा	ल. 4 (चं. दा.), अभिजित्
वैशा.कृ. 11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशाख	धनिष्ठा	ल. 3, अभिजित्
वैशा.शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	अभिजित्
वैशा.शु. 7	शनि	28 अप्रै.	16 वैशा.	पुनर्वसु	अभिजित्
आषा.कृ.11	शुक्र	15 जून	2 आषाढ़	अश्विनी	ल. 4, अभिजित्
आषा.शु. 2	गुरू	21 जून	8 आषाढ़	पुनर्वसु	ल. 4, अभिजित्
आषा.शु. 3	शुक्र	22 जून	9 आषाढ़	पुष्य	ल. 4, 5, अभिजित्
आषा.शु. 8	बुध	27 जून	14 आषा.	हस्त	ल. 4, 5, अभिजित्
आशा.शु.10	शुक्र	29 जून	16 आषा.	स्वाती	ल. 4, 5, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
श्राव. कृ. 3	शुक्र	6 जुला.	23 आषा.	श्रव./धनि.	ल. 4, अभिजित्
श्राव.कृ. 6	सोम	9 जुला.	26 आषा.	उ.भा.	अभिजित्
श्राव.कृ. 8	बुध	11 जुला.	28 आषा.	रेवती	ल. 4, अभिजित्
श्राव.शु. 1	शुक्र	20 जुला.	5 श्रावण	पुष्य	ल. 5 (चं.दा.), अभिजित्
श्राव.शु. 5	सोम	23 जुला.	8 श्रावण	उ.फा.	अभिजित्
श्राव.शु. 7	बुध	25 जुला.	10 श्राव.	हस्त	ल. 5, अभिजित्
श्राव.शु. 8	गुरू	26 जुला.	11 श्राव.	स्वाती	अभिजित्
श्राव.शु. 15	बुध	1 अगस्त	17 श्राव.	उ.षा.	अभिजित्
श्राव.शु. 15	गुरू	2 अगस्त	18 श्राव.	श्रवण	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 5	सोम	6 अगस्त	22 श्राव.	पू.भा.	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 10	रवि	12 अग.	28 श्राव.	रोहिणी	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 11	सोम	13 अग.	29 श्राव.	मृगशिरा	ल. 5, अभिजित्
द्वि.भा.शु. 2	सोम	17 सितं.	2 आश्वि.	हस्त	अभिजित्
आश्नि.शु.8	सोम	22 अक्तू.	7 कार्ति.	उ.षा.	अभिजित्
आ.शु. 10	बुध	24 अक्तू.	9 कार्ति.	धनिष्ठा	अभिजित्
आ.शु. 15	सोम	29 अक्त.	14 कार्ति.	आश्वि.	अभिजित्
कार्ति.कृ. 3	गुरू	1 नवंबर	17 कार्ति.	रोहिणी	अभिजित्
कार्ति.कृ. 5	शनि	3 नवंबर	19 कार्ति.	मृगशिरा	अभिजित्
कार्ति.कृ.12	रवि	11 नवं.	27 कार्ति.	हस्त	अभिजित्
कार्ति.शु. 5	रवि	18 नवं.	4 मार्ग	उ.षा.	अभिजित्
कार्ति.शु. 6	सोम	19 नवं.	5 मार्ग	श्रवण	अभिजित्
कार्ति.शु. 10	शुक्र	23 नवं.	9 मार्ग	उ.भा.	अभिजित्
मार्ग. कृ. 1	गुरू	29 नवं.	15 मार्ग	रोहिणी	अभिजित्
मार्ग. कृ. 2	शुक्र	30 नवं.	16 मार्ग	मृगशिरा	अभिजित्
मार्ग.कृ.9/10	शनि	8 दिसं.	24 मार्ग	हस्त	अभिजित्
मार्ग.कृ.11	रवि	9 दिसं.	25 मार्ग	चित्रा	अभिजित्
				सन् 2013 ई.	
पौष शु. 6	गुरू	17 जन.	5 माघ	उ.भा.	ल. 11 (मं. दान), अभिजित्
पौष शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल. 11 (मं. दान), अभिजित्
पौष शु. 8	शनि	19 जन.	7 माघ	आश्विनी	ल. 11, 12, अभिजित्
पौष शु. 15	रवि	27 जन.	15 माघ	पुष्य	ल. 12, अभिजित्
माघ कृ. 5	गुरू	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	अभिजित्
माघ कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	ल. 12 (चं. दान), अभिजित्

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं॰ 2069

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में वास्तु शान्ति, नवग्रह-पूजन-शान्ति एवं पंचदेव पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथा शक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन पूर्वक सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा.कृ. 11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशा.	धनिष्ठा	ल. 3, अभिजित्
वै.कृ.12/13	बुध	18 अप्रै.	6 वैशा.	उ.भा.	ल. 6
वैशा.शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	अभिजित्
वैशा.शु. 7	शनि	28 अप्रै.	16 वैशा.	पुनर्वसु	अभिजित्
आ.कृ. 11	शुक्र	15 जून	2 आषा.	अश्विनी	अभिजित्
आ.शु. 2	गुरू	21 जून	8 आषा.	पुनर्वसु	अभिजित्
आ.शु. 3	शुक्र	22 जून	9 आषा.	पुष्य	अभिजित्
आ.शु. 10	शुक्र	29 जून	16 आषा.	स्वाती	ल. 5, अभिजित्
आ.शु. 8	सोम	22 अक्तू.	7 कार्ति.	उ.षा.	अभिजित्
आ.शु. 10	बुध	24 अक्तू.	9 कार्ति.	धनिष्ठा	ल. 9, अभिजित्
आ.शु. 15	सोम	29 अक्तू.	14 कार्ति.	अश्विनी	ल. 9, 11, अभिजित्
का.कृ. 3	गुरू	1 नवं.	17 कार्ति.	रोहिणी	ल. 11, अभिजित्
का.कृ. 3	शुक्र	2 नवं.	18 कार्ति.	रोहिणी	प्रातः 8:59 तक
का.कृ. 5	शनि	3 नवं.	19 कार्ति.	मृगशिरा	अभिजित्
का.कृ. 6	सोम	5 नवं.	21 कार्ति.	पुनर्वसु	अभिजित्
का.शु. 6	सोम	19 नवं.	5 मार्ग.	श्रवण	अभिजित्
का.शु. 8	बुध	21 नवं.	7 मार्ग.	शतभिषा	ल. 11 (चं. दान)
का.शु. 10	शुक्र	23 नवं.	9 मार्ग.	उ.भा.	अभिजित्
मार्ग.कृ. 1	शुक्र	29 नवं.	15 मार्ग.	रोहिणी	ल. 11, अभिजित्
मार्ग.कृ. 2	शुक्र	30 नवं.	16 मार्ग.	मृगशिरा	ल. 11, अभिजित्
मार्ग.कृ. 8	शुक्र	7 दिसं.	23 मार्ग.	उ.फा.	ल. 11, अभिजित्
मार्ग.कृ. 10	शनि	8 दिसं.	24 मार्ग.	हस्त	अभिजित्
			सन् 2013 ई.		
पौष शु. 6	गुरू	17 जन.	5 माघ	उ.भा.	ल. 11 (मं. दा.), अभिजित्
पौष शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल. 11 (मं. दा.), अभिजित्
पौष शु. 8	शनि	19 जन.	7 माघ	अश्विनी	ल. 11, 12, अभिजित्
पौष शु. 15	रवि	27 जन.	15 माघ	पुष्य	रवि पुष्य, ल. 12, अभिजित्
माघ कृ. 5	रवि	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	अभिजित्
माघ कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	ल. 12 (चं. दान), अभिजित्

जीर्ण (पुरातन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त

प्राचीन (पुराने) गृह में प्रवेश के लिए ऊपर लिखे नवीन गृह मुहूर्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। **अक्तूबर, नवम्बर व दिसम्बर** तीन मासों में जो मुहूर्त्त नवीन गृह-प्रवेश के लिए लगाए गए हैं वही मुहूर्त्त पुरातन गृह-प्रवेश में ग्राह्य हैं। ध्यान रहे, तारा अस्त में भी विशेष परिस्थितिवश पुरातन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में श्रीराघवेन्द्र ज्यौतिष संस्थान 44/2 त्रिकुटा नगर में सम्पर्क कर सकते हैं। धन्यवाद!

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चै. शु. 1	शुक्र	23 मार्च	10 चैत्र	उ.भा.	अभिजित्
वै. कृ. 11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशाख	धनिष्ठा	ल. 3, अभिजित्
वै. शु. 4	बुध	25 अप्रै.	13 वैशा.	रोहि/मृग.	ल. 3, अभिजित्
वै. शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	अभिजित्
आ.कृ. 11	शुक्र	15 जून	2 आषा	अश्विनी	ल. 4, अभिजित्
आ.शु. 2	गुरू	21 जून	8 आषा	पुनर्वसु	ल. 4, अभिजित्
आ.शु. 3	शुक्र	22 जून	9 आषा	पुष्य	ल. 5, अभिजित्
आ.शु. 8	बुध	2[illegible] जून	14 आषा	हस्त	ल. 4, 5, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
आ.शु. 10	शुक्र	29 जून	16 आषा	स्वाती	ल. 4, 5, अभिजित्
श्रा.कृ. 8	बुध	11 जुला.	28 आषा	रेवती	ल. 4
श्रा.शु. 1	शुक्र	20 जुला.	5 श्रावण	पुष्य	अभिजित्
श्रा.शु. 5	सोम	23 जुला.	8 श्रावण	उ.फा.	अभिजित्
श्रा.शु. 8	गुरू	26 जुला.	11 श्रावण	स्वाती	अभिजित्
श्रा.शु. 15	बुध	1 अगस्त	17 श्राव.	उ.षा.	अभिजित्
श्रा.शु. 15	गुरू	2 अग.	18 श्राव.	श्रवण	ल. 5 (चं. दान)
प्र.भा.कृ. 2	शनि	4 अग.	20 श्राव.	शतभिषा	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 5	सोम	6 अग.	22 श्राव.	उ.भा.	अभिजित्
प्र.भा.कृ. 8	बुध	8 अग.	24 श्राव.	अश्विन	ल. 5 (चं. दान)
प्र.भा.कृ.11	सोम	13 अग.	29 श्राव.	मृगशिरा	ल. 5, अभिजित्
आ.शु. 8	सोम	22 अक्तू.	7 कार्ति.	उ.षा.	ल. 9, 11, अभिजित्
आ.शु.15	सोम	29 अक्तू.	14 कार्ति.	अश्विनी.	अभिजित्
का.कृ. 5	शनि	3 नवंबर	19 कार्ति.	मृगशिरा	अभिजित्
कार्ति.शु.5	रवि	18 नवं.	4 मार्ग	उ.षा.	अभिजित्
का.शु. 6	सोम	19 नवं.	5 मार्ग.	श्रवण	अभिजित्
का.शु. 10	शुक्र	23 नवं.	9 मार्ग.	उ.भा.	अभिजित्
मार्ग. कृ.2	शुक्र	30 नवं.	16 मार्ग.	मृगशिरा	अभिजित्
मा.कृ. 10	शनि	8 दिसं.	24 मार्ग.	हस्त	अभिजित्
			सन् 2013 ई.		
पौष शु. 6	गुरू	17 जन.	5 माघ	उ.भा.	ल. 11 (मं. दान), अभिजित्
पौष शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	अभिजित्
पौष शु. 8	शनि	19 जन.	7 माघ	आश्विनी	अभिजित्
पौष शु.15	रवि	27 जन.	15 माघ	पुष्य	अभिजित्
माघ कृ.5	गुरू	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	अभिजित्
माघ कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	अभिजित्

... (मूर्ति स्थापना) मुहूर्त सं. 2069

निम्नलिखित सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। प्राय: सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण में मुहूर्त्तों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु की मूर्त्ति स्थापना में वामन जयन्ती, मत्स्य जयंती, अक्षया तृतीया, भारत में श्रीकृष्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु कृष्ण जन्माष्टमी, मार्गशीर्ष मास भी विशेष प्रशस्त है।

इसी भाँति श्री गणेश प्रतिमा की स्थापना में उ.भा., रेवती नक्षत्र, मंगलवार, गणेश चतुर्थी विशेषकर भाद्रपद कृष्ण एवं शुक्ल चतुर्थी तिथि विशेषत: शुभ मानी जाती है।

श्री राम की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मासों के अतिरिक्त, श्री परशुराम जयंती, अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ है। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित माना जाता है।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र एवं बसन्त पंचमी विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं।

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा.कृ. 10	रवि	15 अप्रै.	3 वैशाख	धनिष्ठा	अभिजित् (श्रीविष्णु, लक्ष्मीनारायण)
वैशा. कृ.11	सोम	16 अप्रै.	4 वैशाख	धनिष्ठा	ल. 3, अभिजित् (श्रीविष्णु, शिवलिंग)
वैशा. शु. 3	मंगल	24 अप्रै.	12 वैशा.	रोहिणी	ल. 3, दिवा 6:47 के उपरांत (श्रीदुर्गा, लक्ष्मीनारायण, राधाकृष्ण)
वैशा. शु. 5	गुरू	26 अप्रै.	14 वैशा.	मृगशिरा	दिवा 12:36 तक (सर्वदेव, शिवलिंग)
वैशा. शु. 7	शनि	28 अप्रै.	16 वैशा.	पुनर्वसु	ल. 3, दिवा 10:18 के बाद, अभिजित् (शिवजी, सर्वदेव)
आषा.कृ. 11	शुक्र	15 जून	2 आषा.	आश्विनी	अभिजित् (शिवजी, सर्वदेव)
आषा.शु. 2	गुरू	21 जून	8 आषा.	पुनर्वसु	ल. 5, अभिजित् (सर्वदेव, शिवजी)
आषा.शु. 3	शुक्र	22 जून	9 आषा.	पुष्य	ल. 5, अभिजित् (श्रीदुर्गा, सर्वदेव)
आषा.शु.10	शुक्र	29 जून	16 आषा.	स्वाती	ल. 5, अभिजित् (सर्वदेव, दुर्गा)
श्राव.कृ. 3	शुक्र	6 जुला.	23 आषा.	श्रव/धनि	अभिजित् (श्रीदुर्गा, सर्वदेव)
श्राव.कृ. 6	सोम	9 जुला.	26 आषा.	उ.भा.	दिवा 12:41 के बाद (सर्वदेव)
श्राव.कृ. 8	बुध	11 जुला.	18 आषा.	रेवती	ल. 4 (चं. दान) (सर्वदेव, शिव)

पक्ष तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
			सन् 2013 ई.		
पौष शु. 3	चन्द्र	14 जन.	2 माघ	धनिष्ठा	अभिजित् (शिवपार्वती, दुर्गा माँ)
पौष शु. 6	गुरू	17 जन.	5 माघ	उ.भा.	ल.11, अभि.(सर्वदेव, लक्ष्मीनारायण)
पौष शु. 7	शुक्र	18 जन.	6 माघ	रेवती	ल.11, अभि.(सर्वदेव, श्रीरामकृष्ण)
पौष शु. 8	शुक्र	19 जन.	7 माघ	आश्विनी	ल.11,12,अभि.(शिवपरिवार, सर्वदेव)
पौष शु.13	गुरू	24 जन.	12 माघ	मृग/आर्द्रा	अभिजित् (श्रीहनुमान, दुर्गा माँ, शिव परिवार)
पौष शु. 15	रवि	27 जन.	15 माघ	पुष्य	ल. 12, अभिजित् (सर्वदेव)
माघ कृ. 5	गुरू	31 जन.	19 माघ	उ.फा.	दिवा 11:13 के बाद, अभि.(सर्वदेव)
माघ कृ. 5	शुक्र	1 फर.	20 माघ	हस्त	ल. 12, अभि. (सर्वदेव, दुर्गा मां, शिव परिवार, श्रीहनुमान, राधाकृष्ण, लक्ष्मीनारायण, श्रीगणेश)
माघ कृ. 6	शनि	2 फर.	21 माघ	चित्रा	अभिजित् (शिवजी, सर्वदेव)
माघ.कृ.12	गुरू	7 फर.	26 माघ	मूला	ल.12, अभि. (श्रीदुर्गा, शिव, भैरव)

रामायण अदि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त

रामायण, भागवतादि पुराण, महाभारत इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों की कथा प्रारम्भ करने में संयोज्य काल–

तिथि – (शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15)

वार – सू., चं., बु., गु. श.।

नक्षत्र– अश्वि, रोहि., मृग., पुन., पुष्य, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव, धनि, शत., रेव।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ – (1 कृ), 2, 3, 5, 9, 10, 12 एवं 15 शुक्ल।

शुभ वार – सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र – अश्विनी, रोहिणी, पुनं, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न – 1, 4, 7, 10 ।

विशेष– केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों. ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त वाले दिन- छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

श्रावण के सोमवार

श्रावण मास में आशुतोष भगवान् शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है। जो प्रतिदिन पूजन न कर सकें उन्हें सोमवार को शिव पूजा अवश्य करनी चाहिये और व्रत रखना चाहिये। सोमवार भगवान् शंकर का प्रिय दिन है, अत: सोमवार को शिवाराधन करनी चाहिये। इसी प्रकार मासों में श्रावण मास भगवान् शंकर को विशेष प्रिय है। अत: श्रावण मास में प्रतिदिन शिवोपासना का विधान है। श्रावण में पार्थिव शिव पूजा का विशेष महत्त्व है। अत: प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार तथा प्रदोष को शिवपूजा या पार्थिव शिवपूजा अवश्य करनी चाहिये। इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ कराने का भी विधान है। श्रावण मास में जितने भी सोमवार पड़ते हैं, उन सब में शिवाजी का व्रत किया जाता है। इस व्रत में प्रात: गङ्गा स्नान अन्यथा किसी पवित्र नदी या सरोवर में अथवा विधिपूर्वक घर पर ही स्नान करके शिव मन्दिर में जाकर स्थापित शिवलिङ्ग का या अपने घर में पार्थिव मूर्ति बनाकर यथाविधि षोडशोपचार–पूजन किया जाता है। यथासम्भव विद्वान् ब्राह्मण से रुद्राभिषेक भी कराना चाहिये। इस व्रत में श्रावणमाहात्म्य और श्रीशिवमहापुराण की कथा सुनने का विशेष महत्त्व है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण–भोजन कराकर एक बार ही भोजन करने का विधान है। भगवान् शिव का यह व्रत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

रक्षाबन्धन निर्णय

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। इसमें पराह्णव्यापिनी तिथि ली जाती है। यदि वह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वा लेनी चाहिये। यदि उस दिन भद्रा हो तो उसका त्याग कर देना चाहिये। भद्रा में श्रावणी और फाल्गुनी दोनों वर्जित हैं; क्योंकि श्रावणी से राजा का और फाल्गुनी से प्रजा का अनिष्ट होता है–

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।

श्रावणी उपाकर्म विधान

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा ही उपाकर्म का प्रसिद्ध काल माना गया है। श्रावणी विशेषकर ब्राह्मणों अथवा पण्डितों का पर्व है। वेदपारायण के शुभारम्भ को उपाकर्म कहते हैं। इस दिन यज्ञोपवीत के पूजन का भी विधान है। ऋषिपूजन तथा पुराने यज्ञोपवीत को उतारकर नया यज्ञोपवीत धारण करना पर्व का विशेष कृत्य है। प्राचीन समय में यह कर्म गुरु अपने शिष्यों के साथ किया करते थे। यह उत्सव द्विजों के वेदाध्ययन का और आश्रमों के उस [illegible] है। अत: इसकी रक्षा ही नहीं, अपितु इसे यथार्थरूप में मानना [illegible]

जन्माक्षर चक्र

अवकहडा चक्रम् (राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नक्षत्र नाड़ी योनी वर्ग का गणवोधक चक्र)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मनुष्य	जलचर

चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३		१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	क	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
वर्ग	सिंह	सिं	सिं	मृग	मृ	मृ	मृ	मृ	गरुड़	ग	ग	ग	ग	मृग	मृ	मृ	मृ	मृ	विड़ा	वि	बि	बि	बि	सिंह	वि	धि	मेढ़ा	मे	मे	मे	मे	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा
नवांश	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क	तुला	वृश्चि	धनु	म	कु	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तुला	वृ	धन	म	कु	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृश्चि	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
नाड़ी	आदि	मध्या	अन्त्या	अन्त्या	मध्या	आदि	आदि	मध्या	अन्त्या
योनी	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
स्वामी	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	जलचर	मनुष्य	मनुष्य	कीटक

चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
वर्ग	मृ	मृ	मृ	मृ	मृ	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	मू	मू	मू	मेढा	श्वा	श्वा	मू	मू	मृ	मृ	मृ	मृ	मृ	सर्प	स	स	स	स	स	स	स	स	स	मृ	मृ	मृ
नवांश	मेष	वृ	मि	कर्क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग.	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	मघा	पूर्वा-फाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाड़ी	अन्त्या	मध्या	आदि	आदि	मध्या	अन्त्या	अन्त्या	मध्या	आदि
योनी	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस

अवकहडा चक्रम् (राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नक्षत्र नाड़ी योनी वर्ग का गणवोधक चक्र)

राशि	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	गुरू	शनि	शनि	गुरू
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	मनुष्य	जलचर	मनुष्य	जलचर

चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ये	यो	भ्रा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सु	से	सो	दा	दी	दू	थ	झा	ञ	दे	दो	चा	ची
वर्ग	मृग	मृ	मूषक	मू	मू	सर्प	मू	श्वा	मू	मू	सिं	सिं	बिडा	वि	बि	वि	बि	बि	बि	बि	बि	मे	मे	मे	मे	मे	स	स	स	स	सिं	सिं	स	स	सिं	सिं
नवांश	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	कर्क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाड़ी	आदि	मध्या	अन्त्या	अन्त्या	मध्या	आदि	आदि	मध्या	अन्त्या
योनी	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव

अथ घातचक्र :– नीचे दिया हुआ घातचक्र युद्ध विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घातचक्र चन्द्र, वारादि शुभ नहीं होते परन्तु तीर्थयात्रा विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। अधिक जानकारी के लिए श्री राघवेन्द्रपञ्चाङ्ग सम्पादक से सम्पर्क करें।

राश्यः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१/६/११	५/१०/१५	२/७/१२	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५	४/९/२४	१/६/११	३/८/१३	४/९/१४	३/८/१३	५/१०/१५
घातवार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	वव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	मेष	वृष	कर्क	तुला	मकर	मीन	कन्या	वृश्चिक	धनु	कुम्भ	मिथुन	सिंह
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चन्द्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृष	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टदिनानि १-च	२-च	३-च	४-च	पूज्यवृक्षाः	धार्योषधम्	पक्षिणः	कष्टलक्षणानि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यामन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
अश्विनी (दस्रनासत्यै)	८	१२	१७	९	वृषः (विषः) (वासा)	अपामार्ग (ओंगा)	कपोतः	बुद्धिभ्रमः कण्डूज्वरः अनिद्रा, गात्रपीड़ा	तिलाः	आटे का अश्व गुडौदन सहित	ब्रह्मभोजनम्	ॐ यावांकशामधु मत्यश्विना सूनृतावती। यता यज्ञमिमिक्षतम्।।	विष्कुम्भः (यमः)	ॐ यमायत्वांगिरस्वते पिमृमते स्वाहा। स्वाहाधर्माय स्वाहाधर्मः पित्रे।।
भरणी (यमः)	५	१२	०	१९	परूपकः (आमलकः)	अगस्ति	मयूरः	नाना व्याधि, अंगपीड़ा छर्दि रोगः, अरुचिः	घृतमधुगुड	भार्पपिष्टिकामहिष खिचड़ी सहित	रक्तवस्त्रम्	ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुताहविः यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरङ्कृतः।।	प्रीतिः (विष्णुः)	ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा-अदोम्यः। अतो धर्माणि धारयन्।
कृत्तिका (अग्नि)	९	१९	१४	१४	उदुम्बरः (रुम्बल)	कार्पासः	चकः	अतिदाहः, नेत्रपीड़ा उरुशूलंप्रलापश्च	तिलाः	मसूर का मेष पायस सहित	दुग्धमिश्री	ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य-नस्पतिः मूर्धा कवीरयीणाम्।।	आयुष्मान् (चन्द्रमा)	ॐ सनो महांअनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धियेवाजाय हिन्वतु।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	११	८	१२	१२	जम्बू (जामुन)	अपामार्गः	सरटः	हिक्का, उदरशूलम्, दाहः त्रिदोषः।	घृतपायसम्	आटे का हंस तिल सहित	मधु	ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि-सीमतः। सुरुचो वेन आवः सबु-ध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयो निमसतश्चविवः।।	सौभाग्य (ब्रह्मा)	ॐ एष ब्रह्मा यऋत्वियइन्द्रो नाम श्रुतोगुणे।।
मृगशिरा (चन्द्रः)	५	१३	१५	१९	खदिरः (खैर)	जयन्ती	सरटः	दृष्टिदोषः, अर्ध-गात्रपीड़ा, क्लेश	तिलदुग्धम्	आटे का मृग दुग्ध सहित	कृष्णगौः	ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् भवावाजस्य संगथे।।	शोभनः (बृहस्पतिः)	ॐ वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्। बृहस्पति वरेण्यम्।।
आर्द्रा (रुद्रः)	०	२	३२	११	कलिः (बहेड़ा)	चन्दनम् (अश्वत्थः)	गृध्रः	कटिपीड़ा, निद्राक्षय कम्पनं, भीति	मध्वाज्य	आटे का बैल दध्योदन सहित	कृष्णवस्त्र	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।	अतिगण्डः (राक्षसः)	ॐ यत्याहि निऋतीनां वज्रहस्तपरि वृजम् अहरहः शुन्ध्युः परिपदामि।।
पुनर्वसु (अदितिः)	११	१३	१५	३२	वंशः (बांस)	अर्कः	चकः	शिरः पीड़ा, कटि पीड़ा नेत्रदोषः, देवदोषः	घृतपायसम्	पिष्टी दम्पती अपूप सहित	कृष्ण वस्त्र	ॐ अनागसो अदितये देव सवितुः सवे। विश्वावामानि धीमहि।।	सुकर्मा (इन्द्रः)	ॐ इन्द्रं प्रातर्हवामेह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे। इन्द्रं सोमस्य पीतये।।
पुष्य (बृहस्पतिः)	८	१२	३०	१५	अश्वत्थः (पीपल)	तुषारः	पिकः	शीतविषमज्वरः, घोरकष्टं पाणिपा-दशैत्यम्	घृतदुग्धम्	आटे का पुरुष पायस सहित	तिल तैल	ॐ बृहस्पते जुषस्व नो हव्यानि विश्वदेव्य। रास्व रत्नानिदाशुषे।	धृतिः (आपः)	ॐ शन्नोदेवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।
आश्लेषा (सर्पः)	०	०	०	०	पुन्नागः (गंगरेन)	पटोलः	कपोतः	सन्निपातः, पादपीड़ा औषधवैफल्यम्	घृतपायसम्	त्रिशिरा सर्पः तिलमयः दुग्धयुतः	सुवर्णम्	ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः।।	शूलम् (सर्पः)	ॐ या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं रनु। ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	६	३	१८	३०	वटः (बोढ़)	भृंगराजः	काकः	हृच्छूलं, अर्धगात्र-पीड़ा दाहः डाकिनी-दोषः	घृततिलाः	आटे का मनुष्य पञ्चान्न सहित	अन्नरौप्यम्	ॐ आधत्त पितरोगगर्भेकुमारं पुष्कर स्रजम्। यथेह पुरुषो असत्।।	गण्डः (अग्नि)	ॐ सुसमिद्धाय शोचिषेधृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।।
पूर्वाफाल्गुनी (भगः)	६०	५	१२	९	पलाशः (ढाक)	कष्टकारी	चातकः	गात्रपीड़ा, दाहः देवदोषः कम्पनम्	घृतौदनम्	आटे की कन्या दुग्धोदनयुक्त	लौहम्	ॐ देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या भगस्य रातिमीमहे।।	वृद्धिः (अदित्यः)	ॐ सनो विश्वाहासुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्। प्रण आयू पितारिषत्।।
उत्तराफाल्गुनी (अर्यमा)	४	५	६	०	प्लक्षः (पिलखन)	पटोलः	शुकः	तीव्रज्वरः, महाक-ष्टम् हृच्छूलम् कुलदेवदोषः	प्रियङ्गुघृतम्	आटे की दम्पती अन्न सहित	अन्नम्	ॐ वामं वामं त आसुरे देवो ददात्वर्यमा। वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूलती।।	ध्रुवः (भूमिः)	ॐ महामित्रस्य साधयस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परियशं निषेदथुः।।
हस्तः (सूर्यः)	२१	३०	३०	०	अरिष्टः (रीठा)	जाती	सरटः	भयंकर रोगः, प्रस्वेदः उदरदोषः	चर्वाज्यम्	आटे की स्त्री ओदनयुक्त	सुवर्णम्	ॐ सपृत्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य शोचिष्केशं विचक्षण।।	व्याघातः (वायुः)	ॐ वायोशतं हरीणां युवस्यपोसयाणाम्। अतवाते सहस्रिणो रथआयातु पाजस्य।।
चित्रा (त्वष्टा)	१२	२	८	१०	श्री वृक्ष (नारिकेल)	मरुबकः (मरुआ)	मालिका (मल्लिकः) हँसजाति	चित्ररोगः कर्ण, ग्रीवा, हृच्छूलं ज्वरः	तिलाज्यम्	मृन्मय पिचाच चित्रान्नयुक्त	वस्त्रम् दुग्धम्	ॐ आयन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा। त्वष्टा सपाणिर्दधातु वीरान्।।	हर्षणः (भगः)	ॐ भग भक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा। मूर्धानरायमारभे।।
स्वातिः	१२	६	८	७	अर्जुनः	जाती	पिङ्गलः	नाना व्याधिः श्लेष्मा,	घृतपायसम्	पिष्टिमृगमूर्तिः	कृष्णवस्त्रम्	ॐ वायोयेते सहस्रिणो रथा सस्ते-	वज्रः	ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वा-

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टदिनानि १-च	२-च	३-च	४-च	पूज्यवृक्षाः	धार्यौषधम्	पक्षिणः	कष्टलक्षणानि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यामन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
(वायुः) विशाखा (इन्द्राग्नी)	१०	१२	३०	०	पाहिफः (पाह)	गुञ्जा	कौशिकः	अंगपीड़ा, व्रण कुक्षिशूल, श्लेष्म-व्याधिः, मुखकर्ण पीड़ा, मुग्धत्वम्	घृतोदनम्	सप्तान्नसहिता आटे का अश्व पञ्चान्न सहित	रौप्यम्	भिरागहि। नियुत्वान् सोम पतिये।। ॐ इन्द्राग्नीआगत सुतगीभिर्नभो-वरेण्यम्। अस्त पातन्धियेषितः।	(वरुणः) सिद्धिः (गणेशः)	भिरूतिभिः।। करतां नः सुराधसः।। ॐ गणनान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रिया-णांत्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमज निगर्भधं त्वममजा सिगर्भधम्।।
अनुराधा (मित्रः)	१२	१३	४	१२	बकुलः (मौल श्री)	सुपुपम्	कोकिलः	मुदपीड़ा, भूतबाधा, शिर पीड़ा ज्वरः।	त्रिमधुः (गुड़, घृत,	आटे का सर्प चित्रान्न सहित	कृष्णवस्त्रम्	ॐ तानः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम्। मित्रं साधयतं धियः।।	व्यतीपात (रुद्रः)	ॐ पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुवात्रा। तुर्यामदस्यून् तनूभिः।।
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	१५	४०	६	१०	देवदारु (दयार)	अपामार्गः	कुक्कुटः	मार्गभीतिः कम्पने पित्त कोप, व्याकुलता	तिलपायसम्	आटे का हाथी पायस सहित	रौप्यम्	ॐ यत इन्द्रभयामहे ततो नो अ अभयं कृधि। मघवंछग्धितव तन्न उतये विद्विषो विमृधो जाहि।	वरीयान् (कुबेरः)	ॐ वयंम् सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।
मूला (निर्ऋतिः)	०	२१	२६	३०	सर्जः (शल)	मन्दारः	भ्रमरः	मुख, उदरदोष, स्त्री-देवदोष, कण्ठावरोध	चर्वाज्यम्	आटे का अश्व सप्तान्नसहित	तिलस्वर्णम्	ॐ मोषुणः परा परा निर्ऋतिर्दु हणावधीत पदीष्ट तृष्णया सह।।	परिघः (त्वष्टा)	ॐ इहत्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुपह्वये। अस्माकमस्तु केवलः।।
पूर्वाषाढ़ा (आपः)	१५	२२	४	०	जलवेतस् (बेंत)	कार्पासकः	तित्तिरिः	शिरः पीड़ा, कम्पनं छर्दिः, दुर्गन्धिः अङ्गशूल		पूर्ण कुम्भ अन्नसहित	तिलतैलम्	ॐ आपः प्रणीतभेषजं वपरूथं तन्वेमम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।	शिवः (मित्रः)	ॐ मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोम पतिये। जज्ञानां पूतदक्षसा।
उत्तराषाढ़ा (विश्वेदेवाः)	२०	१५	१२	२५	पनसः (फालसा)	कार्पासकः	शुकः	प्रलाप, कटि उरुपीड़ा ज्वरदोषः त्रिदोषः	तिल पायसम्	आटे का मगर-मच्छ तिलोदन-सहितं ०	कृष्णवस्त्रम्	ॐ विश्वेदेवास आगत श्रृणुता म इम हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।।	सिद्धः (स्कन्द)	ॐ तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमां महासेनासो अमेभिरेषाम्।।
श्रवण (विष्णुः)	२०	१५	१२	२५	अर्कः (आक)	अपामार्गः	तित्तिरिः	अतिसारः, त्रिदोषः भूतदोषः स्वकृत-व्याधिः	चर्वाज्यम्	आटे का गरुड़ पूर्णकुम्भ सहित	नवगृह	ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम्। समूढमस्य पाँसुरे।	साध्यः (सावित्री)	ॐ युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सर्वे। स्वर्ग्याय शक्त्या।।
धनिष्ठा (गन्धर्वा)	८	२०	१६	१०	शमी (जांटी)	भृंगराजः	काकः	मूत्रकृच्छ्रं, अतिसारः वमन, कुलदेवदोषः, ज्वरः	अश्वत्थसमित्	आटे का मकर अन्नघटसहित	तिलतैलम्	ॐ वसोः पवित्र मसिशतधार वसो पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारण सुप्वा काम धुक्षः।।	शुभः (लक्ष्मीः)	ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णं निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण।
शतभिषा (वरुणः)	१०	१४	१४	२५	कदम्बः (कदम्ब)	कमलम्	कपोतः	सन्निपातज्वरः, व्याधिः, वाताधिक्यं, वारुण दोषः	कुष्माण्डम्	आटे का पुरुष कुम्भ सहित	तिलतैलम्	ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्याच मृडय।। त्वामवस्यु राचके।।	शुक्लः (गौरी)	ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरापरमे व्योमन्।।
पूर्वाभाद्रपदा (अजैकपाद)	१०	१४	१९	२०	आम्रः (आम)	भृंगराजः	वर्तक	त्रिदोषः, छर्दि अङ्गपीडा जलदेवदोषः	चर्वाज्यम्	कुश के विश्वे-देव अष्टदल पर अन्नयुक्त?	रक्तवस्त्रम्	ॐ उतनोअहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वजएक पात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।।	ब्रह्म (कुमारो)	ॐ गोमदूषुणास्त्वाश्वावधानमश्विना। वर्ती रुद्रनृपाय्यम्।।
उत्तराभाद्रपदा (अहिर्बुध्न्य)	१	०	३०	८	निम्बः (नीम)	अश्वत्थ	शुकः	कामलज्वरः शूलम् अतिसारः क्षेत्रपाल-दोषः		आटे का शिव बिल्वपत्र युक्त	रौप्यम्	ॐ मा नोज हिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्यस्त्रिधदृतायोः।।	ऐन्द्रः (पितरः)	ॐ मनो न्वाह्वामहे नाराशं सेन स्तो-मेन। पितृणां च मन्मभिः।।
रेवती (पूषा)	१	११	२	३०	मधूकः (महुआ)	अश्वत्थः	चाषः (मायुर)	उरःशूलम्, चित्तभ्रमः भ्रांति, वातपित्तज्वर	घृतपायसम्	कुमारी प्रतिमा कुम्भ सहित	कांस्यपात्रम्	ॐ पूषन् वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इहस्मसि।	वैधृति (दितिः)	ॐ त्वमग्ने वीर वयशसोदेवश्च सविता भगः। [illegible]

षड्वर्गकोष्ठकः

राशि																											
	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
० मेष	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	११
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृषभ	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मिथुन	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ कर्क	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिंह	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कन्या	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गकोष्ठकः

राशि	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
७ तुला	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
८ वृश्चिक	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
९ धन	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१० मकर	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
११ कुंभ	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१२ मीन	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

लग्न सारिणी (अक्षांश 29° उत्तर) पलभा 6/39/6

दिल्ली, रोहतक, गुड़गांव, हिसार, नैनीताल, गाजियावाद, मुरादाबाद, मेरठ तथा सम्बन्धित स्थानों के लिए।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	०२	०९	१६	२२	३०	३८	४६	५४	०२	११	१९	२७	३५	४४	५२	००	०८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	०६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	०४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१७	२८	४०	५१	०२	१४	२५	३७	४८	००	११
कर्क घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०७	१८	३०	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	००
सिंह घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	०७	१९	३०	४१	५३	०४	१६	२७	३८	५०	०१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
कन्याघ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१७	२९	४०	५२	०३	१४	२६
तुला घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	००	११	२३	३४	४६	५७	०९	२१	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५२	०४	१६	२७	३९	५१	०२	१४
वृश्चिकघ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु. घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११
मकरघ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२२	३०	३८	४६	५५	०३	११	१९	२८	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	०७	१५	२३	३२
कुंभ घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	०५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	०६	१४
मीन घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०१	०८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारिणी (अंक्षाश 30° उत्तर) पलभा 6/55/42

अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, देहरादून, कुराली, खन्ना, पटियाला, भठिण्डा, नाभा, रोपड़, सहारनपुर, हरिद्वार, तथा सम्बन्धित स्थानों के लिए।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	०४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२७	३९	५०	०२
कर्क घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	०२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	०९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	०७	१८	३०	४२	५४
सिंह घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	३१	४३
कन्याघ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	३०
तुला घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	०४	१६	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३८	४९	०१	१३	२५	३७	४८	००	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृश्चिकघ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	०९	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९.	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनुः घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
मकरघ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	०८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३८
कुंभ घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	०१	०८	१५
मीन घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१	४८	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारिणी (अंक्षाश 31° उत्तर) पलभा 7/12/37

लुधियाना, जालन्धर, चण्डीगढ़, अमृतसर, रोपड़, फगवाड़ा, होशियारपुर, कपूरथला, फिरोज़पुर, शिमला, हमीरपुर, मंडी, ऊना तथा सम्बन्धित स्थानों के लिए।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४१	४८	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	०६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
वृष घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२१
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प.	२१	३१	४१	५१	०१	१०	२०	३०	४२	५४	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	५६	०८	२०	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५२	०४	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
सिंह घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५०	०२	१४	२६	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४३	५५	०७	१८	३०	४२
कन्याघ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	०८	२०	३२
तुला घ.	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प.	३२	४३	५५	०७	१८	३०	४२	५३	०५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१४	२६
वृश्चिकघ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प.	२६	३८	५०	०२	१४	२६	३८	४९	०१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५
धनुः घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१५	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६
मकरघ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२६	३६	४६	५६	०६	१५	२५	३५	४४	५२	००	०८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	०४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४१
कुंभ घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	४१	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	००	०७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१५
मीन घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	००	०७	१४	२१	२८	३४	४१

लग्न सारिणी (अंक्षाश ३३° उत्तर) पलभा ६/३९/६

अखनूर, साम्बा, हीरानगर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, कठुआ, रियासी, कटड़ा, चम्बा, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डल्हौज़ी तथा सम्बन्धित स्थानों के लिए।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
० प.	३७	४४	५१	५८	०४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	०४	१२	२०	२८	३५	४३	४१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	०२	१०	१८	२६
वृष घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
१ प.	२६	३४	४२	५०	५८	०६	१३	२१	३१	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२१	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	५९	१०
मि. घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	०९	२१	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४९
कर्क घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३ प.	४९	५८	०९	२१	३३	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०८	२०	३२	४४	५६	०८	२०	३२	४४	५६	०८	२०	३२	४४	५६	०८	२०	३२	४४
सिंह घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	४४	५६	०८	२०	३२	४४	५६	०८	२०	३२	४४	५६	०८	१९	३०	४३	५५	०७	१९	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२९	४१
कन्याघ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
५ प.	४१	५२	०४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१४	२६	३८	५०	०२	१४	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३६	४८	००	१२	२४	३६
तुला घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	४३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	४९	११	२३	३५	४७	४९	११	२३	३५
वृश्चिघ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
७ प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१५	२६
धनु: घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
८ प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
मकरघ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	३६	४६	५६	०६	१६	२५	३५	४५	५३	०१	०९	१७	२४	३२	४१	४९	५६	०४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	०८	१५	२३	३१	३९	४७
कुंभ घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	०२	०९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	०३	०९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	०३	१०	१६
मीन घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३७	४४	५०	५७	०४	११	१७	२४	३१	३७

दशम लग्न सारिणी (सर्वत्र उपयोगी)

अश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प.	३८	४७	५६	०६	१५	२४	३३	४३	५३	०३	१३	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२
वृष घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प.	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०३	१४	२५	३५	४६	५७	०८	१९	२९	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९
मि. घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प.	४९	००	११	२२	३२	४३	५४	०५	१५	२६	३७	४८	५८	०९	२०	३१	४२	५२	०३	१४	२५	३५	४६	५७	०८	१८	२९	४०	५१	०१	१२
कर्क घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प.	१२	२३	३४	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४८	५८	०७	१७	२७	३६	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
सिंह घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प.	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३६	४५	५४	०४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	०९	१८	२७	३६	४६	५५	०४	१३	२३	३२	४१	५०	००
कन्याघ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३
५ प.	००	०९	१८	२८	३७	४६	५५	०५	१४	२३	३२	४२	५१	००	०९	१९	२८	३७	४७	५६	०५	१४	२४	३३	४२	५१	०१	१०	१९	२८	३८
तुला घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प.	३८	४७	५६	०६	१५	२४	३३	४३	५३	०३	१३	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२
वृश्चिकघ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प.	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०३	१४	२४	३५	४६	५७	०८	१९	२९	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९
धनुः घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प.	४९	००	११	२२	३२	४३	५४	०५	१५	२६	३७	४८	५८	०९	२०	३१	४२	५२	०३	१४	२५	३५	४६	५७	०८	१८	२९	४०	५१	०१	१२
मकरघ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प.	१२	२३	३४	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४८	५८	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
कुंभ घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प.	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३६	४५	५५	०४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०९	१८	२७	३६	४६	५५	०४	१३	२३	३२	४१	५०	००
मीन घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
११ प.	००	०९	१८	२८	३७	४६	५५	०५	१४	२३	३२	४२	५१	००	०९	१९	२८	३७	४७	५६	०५	१४	२४	३३	४२	५१	०१	१०	१९	२८	३८

* क्रान्ति सारिणी *

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७
+	२	५७	५१	४५	३९	३२	२४	१७	०९	००	५१	४१	३१	२१	१०	५९	४८	३६	२४	११	५८	४४	३०	१६	२	४७	३२	१६	००	४४	२७
फरवरी	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	९	८	८	८	७	×	×
+	११	५३	३६	१८	००	४२	२३	५	४६	२६	७	४७	२७	७	४६	२६	५	४४	२२	१	३९	१९	५६	३४	११	४८	२७	५	५२	×	×
मार्च	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	+०	−०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४
+	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३६	१३	४९	२६	२	३८	१५	४१	२७	४	४१	१६	८	३१	५५	१९	४२	६	२९	५३	१६	४०	३
अप्रैल	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	×
−	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४०	२	२३	४४	५	२५	५६	६	२६	४६	६	२६	४५	४	२३	४१	×
मई	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१
−	०	१८	३६	५३	११	२८	४४	१	१७	३३	४९	४	१९	३४	४८	२	१६	२९	४३	५५	८	२०	३२	४३	५४	५	१५	२५	३५	४१	५३
जून	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	×
−	१	९	१७	२४	३१	३८	४४	४९	५५	०	४	८	१२	१५	१८	२०	२२	२४	२५	२६	२७	२७	२६	२५	२४	२५	२०	१८	१५	११	×
जुलाई	२३	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८
−	८	४	५९	५४	४९	४३	३७	३१	२४	१६	९	१	५२	४३	३४	२५	१५	५	५४	४३	३२	२०	८	५६	४३	३०	१७	३	४९	३५	२०
अगस्त	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	१०	९	९	९	८
−	५	५०	३५	१९	३	४७	३०	१३	५६	३९	२१	३	४५	२७	८	४०	३१	११	५२	३२	१३	५३	३२	१२	५१	३१	१०	४९	२७	६	४५
सितंबर	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	−०	+०	०	०	१	१	१	२	२	×
−	२३	१	३९	१७	५५	३३	१०	४८	२५	८	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३५	१२	४९	२५	२	२१	४५	८	३१	५५	१८	४१	×
अक्तूबर	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४
+	५	२८	५१	१४	३८	१	२४	४७	९	३२	५५	१८	४०	३	२५	४७	९	३१	५३	१४	३६	५७	१८	३९	००	२१	४१	२	२२	४१	१
नवंबर	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	×
+	२०	४०	५९	१७	३६	५४	१२	२९	४७	४	२१	३७	५३	९	२५	४०	५५	१०	२४	३८	५१	४	१७	३०	४२	५३	५	१५	२६	३६	×
दिसंबर	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
+	४६	५५	४	१२	२०	२८	३५	४१	४८	५३	५९	४	८	१२	१५	१८	२१	२३	२५	२६	२६	२७	२६	२६	२४	२३	२१	१८	१५	११	७

नोट – सूर्य क्रान्ति 21 मार्च से 22 सितंबर तक उत्तर (+) तथा 23 सितंबर से 20 मार्च तक दक्षिण (−) होती है। क्रान्ति अंश और कला में है।

चर सारणी

क्रान्त्यंश	२		४		६		८		१०		१२		१४		१६		१८		२०		२२		२४	
अक्षांश	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.	मि.	सै.
२	०	१७	०	३४	०	५०	१	०७	१	१४	१	४२	२	००	२	१८	२	३६	२	५४	३	१४	३	३४
४	०	३४	१	०७	१	४२	२	१५	२	५०	३	२४	४	००	४	३६	५	१२	५	५०	६	२९	७	०८
६	०	५०	१	४२	२	३२	३	२३	४	१५	५	०७	६	००	६	५४	७	५०	८	४६	९	४४	१०	४४
८	१	०७	२	१५	३	२३	४	३२	५	४१	६	५१	८	०२	९	१४	१०	२८	११	४४	१३	०१	१४	२१
९	१	१६	२	३२	३	४९	५	०६	६	२४	७	४३	९	०१	१०	२५	११	४८	१३	१३	१४	५१	१६	१०
१०	१	२४	२	४९	४	१४	५	४१	७	०८	८	३६	१०	०५	११	३६	१३	०८	१४	४३	१६	२०	१८	०१
११	१	३३	३	०७	४	४१	६	१६	७	५१	९	२८	११	०६	१२	४७	१४	२९	१६	१३	१८	००	१९	५२
१२	१	४२	३	२४	५	०७	६	५१	८	३६	१०	२१	१२	०९	१४	००	१५	५०	१७	४७	१९	४२	२१	४३
१३	१	५०	३	४२	५	३४	७	२६	९	२०	११	१५	१३	१२	१५	११	१७	१२	१९	१७	२१	२५	२३	२६
१४	२	००	४	००	६	००	८	०२	१०	०५	१२	०९	१४	१५	१६	२४	१८	३५	२०	५०	२३	००	२५	३०
१५	२	०९	४	१८	६	२७	८	३८	१०	५०	१३	०४	१५	१९	१७	३८	१९	५९	२२	२३	२४	५२	२७	२२
१६	२	१८	४	३६	६	५४	९	१४	११	३६	१३	५९	१६	२४	१८	५२	२१	२३	२३	५८	२६	३७	२९	२०
१७	२	२६	४	५४	७	२२	९	५१	१२	२२	१४	५४	१७	२९	२०	०७	२२	४८	२५	३३	२८	२३	३१	१८
१८	२	३६	५	१२	७	५०	१०	२८	१३	०८	१५	५०	१८	३५	२१	२३	२४	१४	२७	१०	३०	१०	३३	१६
१९	२	४५	५	३१	८	१८	११	०६	१३	५५	१६	४७	१९	४२	२२	४०	२५	४२	२८	४८	३१	५९	३५	१६
२०	२	५४	५	५०	८	४६	११	४३	१४	४३	१७	४५	२०	५०	२३	५८	२७	१०	३०	२७	३३	४९	३७	१८
२१	३	०४	६	०९	९	१५	१२	२२	१५	३१	१८	४३	२१	५८	२५	१७	२८	४०	३२	०७	३५	४१	३९	४२
२२	३	१४	६	२८	९	४४	१३	०१	१६	२०	१९	४२	२३	०८	२६	३६	३०	१०	३३	४९	३७	३५	४१	२७
२३	३	२४	६	४८	१०	१४	१३	४१	१७	१०	२०	४२	२४	१८	२७	५७	३१	४३	३५	३३	३९	३०	४३	३४
२४	३	३४	७	०८	१०	४४	१४	२१	१८	०१	२१	४३	२५	३०	२९	२०	३३	१६	३७	१८	४१	२७	४५	४४
२५	३	४४	७	२८	११	१४	१५	०२	१८	५२	२२	४५	२६	४२	३०	४४	३४	५२	३९	०५	४३	२६	४७	५६
२६	३	५४	७	४९	११	४५	११	४३	१९	४४	२३	४८	२७	५६	३२	०९	३६	२८	४०	५४	४५	२८	५०	१०
२७	४	०४	८	१०	१२	१७	१६	२६	२०	३६	२४	५२	२९	१२	३३	३६	३८	०७	४२	४५	४७	३१	५२	२७
२८	४	१५	८	३१	१२	४९	१७	०९	२१	३१	२५	४७	३०	२८	३५	०५	३९	४८	४४	३८	४९	३७	५४	४७
२९	४	२६	८	५३	१३	२२	१७	५२	२२	२६	२७	०४	३१	४७	३६	३५	४१	३०	४६	३३	५१	४५	५७	०९
३०	४	३७	९	१५	१३	५५	१८	३७	२३	२२	२८	१२	३३	०६	३८	०७	४३	१५	४८	३१	५३	५७	५९	३५
३१	४	४९	९	३८	१४	२९	१९	२३	२४	२०	२९	२१	३४	२८	३९	४१	४५	०२	५०	३२	५६	१२	६२	०४
३३	५	१२	१०	२५	१५	३९	२०	५७	२६	१८	३१	४४	३७	१६	४२	५६	४८	४४	५४	४१	६०	५१	६७	०३
३५	५	३६	११	१४	१६	५३	२२	३५	२८	२२	३४	१४	४०	१३	४६	२०	५२	३६	५९	०४	६५	४४	७२	४०
४०	६	४३	१३	२७	२०	१४	१७	०५	३४	०२	४१	०६	४८	१८	५५	४१	६३	१७	७१	०८	७९	१६	८७	४५
४५	८	०१	१६	२०	२४	०८	३२	१८	४०	३७	४९	०५	४७	४५	६६	३६	७५	५०	८५	२२	९५	१९	१०५	४५
५०	९	३२	१९	०७	२८	४६	३८	३४	४८	३१	५८	४२	६९	०९	७९	५६	९१	०८	१०२	५०	११५	०८	१२८	११
५५	११	२६	२२	५६	३४	३२	४६	१९	५८	२०	७०	४१	८३	२६	९६	४२	११०	३५	१२५	१७	१४०	५८	१५७	५६
१३"४'	१	४४	३	५४	५	५१	७	५०	९	५०	११	५१	१३	५४	१६	००	१८	०८	२०	१९	२२	३३	२४	५२
१८"५५'	२	४५	५	३०	८	१५	११	०३	१३	५१	१६	४३	१९	३६	२२	३३	२५	३४	२८	४०	३१	५०	३५	०६
२२"३४'	३	२०	६	४०	१०	०१	१३	२४	१६	४८	२०	१६	२३	४७	२७	२३	३१	०२	३४	४८	३८	४०	४२	३९
२८"३८'	४	२२	८	४५	१३	१०	१७	३६	२२	०६	२६	४९	३१	१८	३६	०२	४०	३१	४५	५१	५०	५८	५६	१६

वेलान्तर सारिणी

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	०३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३
+	३२	००	२८	२५	२२	४५	९	३४	०	२४	४८	११	३५	५७	१९	३९	००	१९	३८	५६	१४	३०	४७	०२	१७	३०	४३	५४	६	१६	२६
फरवरी	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	×	×
+	३०	४०	५०	५६	१	५	९	१२	१४	१५	१६	१५	१५	१३	११	८	४	०	५५	४९	४२	३४	२७	१९	१०	००	५१	४०	३४	×	×
मार्च	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	८	८	८	७	७	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४
+	२९	१७	५	५२	३९	२५	११	५६	४१	२५	१०	५४	३८	२१	५	४८	३१	१३	५६	३८	३१	०३	४५	२७	९	५१	३३	१४	५६	३८	२०
अप्रैल	४	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	०	०	–०	+०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	×
–	२	४२	२६	८	५१	३४	१७	०	४३	२६	१०	५४	३८	२४	९	१४	२०	३३	४७	०	१३	२४	३६	४७	५८	८	१८	२७	३६	४४	×
मई	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२
–	५२	५९	६	१२	१८	२२	२७	३१	३५	३८	४०	४२	४३	४३	४३	४२	४१	३९	३७	३३	३०	२६	२२	१६	११	५	५८	५१	४४	३५	२७
जून	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	+०	–०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	×
–	१९	१०	०	५०	४०	२९	१९	७	५६	४४	३२	२०	८	१३	१७	३०	४३	५६	९	२२	३६	४९	२	१५	२८	४०	५३	६	१८	३०	×
जुलाई	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
–	४२	५३	४	१५	२६	३६	४६	५६	५	१३	२२	३०	३७	४४	५१	५७	२	७	१२	१६	२०	२३	२५	२६	२८	२८	२८	२७	२७	२५	२२
अगस्त	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०
–	१८	१४	१०	४	५९	५२	४६	३९	३१	२२	१३	३	५३	४२	३१	१९	७	५४	४१	२७	१३	५८	४३	१७	१२	५५	३८	२०	३	४५	२७
सितंबर	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	×
–	८	१९	३१	५१	१०	३०	५१	११	३२	५३	१४	३५	५६	१७	३८	०	२१	४२	३	२४	४६	०७	२८	४९	९	३०	५१	११	३१	५१	×
अक्तूबर	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
+	११	३०	४९	७	२६	४४	२	१९	३६	५२	८	२३	३८	५२	६	१९	३२	४३	५५	००	१६	२५	३४	४२	५०	५६	३	८	१३	१७	२०
नवंबर	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	×
+	२२	२४	२५	२४	२४	२२	१९	१६	१२	६	००	५३	४६	२८	२८	१७	६	५४	४१	२७	१३	५७	४२	२५	८	४९	३०	१०	५०	२९	×
दिसंबर	११	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०	+०	–०	०	१	१	२	२
+	८	४५	२२	५८	३४	९	४४	१७	५१	२४	५७	२९	१	३२	३	३४	५	३६	०	३७	७	३७	७	३७	७	२९	५२	२२	५१	२०	४९

नोट :– 26 दिसम्बर से 14 अप्रैल तक तथा 15 जून से 31 अगस्त तक वेलान्तर ऋण (–) 15 अप्रैल से 14 जून तक तथा 1 सितंबर से 15 दिसंबर तक वेलांतर धन (+) होता है। वेलान्तर मिनट एवं सेकेंड में हैं।

ॐ श्री गणेशाय नमः
श्रीसद्गुरवे नमः

विविधमुहूर्ताः

गर्भाधानसंस्कार मुहूर्त्त

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च संध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्त्रः।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वाती विष्णुवस्वम्बुपे सत्।। (मु०चि० मणि)

भद्रा, षष्ठी, पर्व (अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा) एवं रिक्ता (४, ९, १४) तिथियाँ, संध्याकाल, भौमरवि और शनिवार तथा ऋतुकाल की प्रथम चार रात्रियाँ गर्भाधान के लिए त्याज्य हैं तीनों उत्तरा (उ०फा०, उ०षा०उ०भा०) मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा इन सभी नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है।

गर्भाधान में शुभ लग्न :–

लग्न से केन्द्र त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ९, ५) में शुभग्रह और ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों, लग्न को पुरुषग्रह देखते हों, चन्द्रमा विषम राशि और विषम राशि के नवांश में हो, समरात्रि में गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्विनी नक्षत्रों को गर्भाधान के लिए मध्यम कहा है।

गर्भाधान मुहूर्त्त चक्र

श्रेष्ठनक्षत्र	रो० हस्त, स्वाती, मृग० अनु०श्र०ध० शतभिषा, तीनों उत्तरा
मध्यम नक्षत्र	पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा
लग्न	१-४-५-७-९-१० पापग्रहों की स्थिति ३, ६, ११वें हो
नवांश	१, ३, ५, ७, ९, ११
रात्रियाँ	रजोदर्शन से ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं

गर्भ मासों के स्वामी तथा स्त्री पुरुष के चन्द्र बल की विशेषता।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भा-धान लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

शुक्र, भौम, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, गर्भाधानकालिक लग्नपति चन्द्र तथा सूर्य क्रम से गर्भ के प्रथमादि मासों के अधिपति होते हैं। विवाह एवं गर्भकालिक संस्कारों में स्त्री का चन्द्रबल तथा इनसे भिन्न कार्यों में पति के चन्द्रबल को देखना चाहिए।

पुंसवन का मुहूर्त्त अथवा विष्णुपूजन मुहूर्त्त

पुंसवनसंस्कार सीमन्तोन्नयन से पूर्व किया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य है गर्भ में पुरुष जातक हेतु संस्कार करना। 'पुमान् सूयतेऽनेन कर्मणेति पुंसवनम्', गर्भस्थ शिशु का पुत्र अथवा पुत्री सम्बंधी विभाजन तीसरे मास में हो जाता है अतः पुंसवन संस्कार तीसरे मास में ही युक्तिसंगत है सीमान्तसंस्कार के लिए बताए जाने वाले तिथि वार नक्षत्रों में गर्भ के तीसरे मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिए। आठवें मास में श्रवन, रोहिणी औरपुष्य नक्षत्रों में, शुभ लग्न में, अष्टम भाव शुद्ध रहने पर गर्भिणी को विष्णु पूजन करना चाहिए।

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त चक्रम्

मास	गर्भ से तीसरे मास में तथा मासाधिपति के बलवान होने पर ६, ८	लग्न	१-३-५-७-११
तिथि	शुक्लपक्ष की १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ कृष्ण पक्ष के १ से १० तक	वार	रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र भी
नक्षत्र	रो० मृग० पुष्य, पुन० हस्त, मूल श्रवन तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र छोड़कर)		

स्तनपान कराने का मुहूर्त्त

जन्म से पाँचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति, ४, ९, १४ तिथि को त्याग कर शुभतिथि में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवारों में पुन० पुष्य, मृ० मघा श्रवण, रेवती नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान शुभ है।

स्तनपान कराने के लिए मुहूर्त्तचक्र

तिथि	२-३-५-८-१०-११-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	पुन० पुष्प मृ० म० श्र० रे०
त्याज्य	भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि

जल पूजन करने का मुहूर्त्त

जन्म के पश्चात प्रथम मास समाप्ति पर बुध, गुरु, चन्द्र वारों में ४-९, १४-३० तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मृ०पुन० पुण्य, हस्त, अनु० मूल, श्रवण नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन श्रेष्ठ है।

जल पूजन के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु
नक्षत्र	मृ० पुन, पुष्य, हस्त, अनु० मूल, श्रवण
त्याज्य	प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिकमास गुरु-शुक्रास्त, रिक्ता व अमा० तिथि

सीमन्तसंस्कार मुहूर्त्तः

गुरु रवि और भौम वारों में, मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण पुनर्वसु तथा हस्त नक्षत्रों में रिक्ता (४, ९, १४) अमावास्या, द्वादशी, षष्ठी और अष्टमी तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में, गर्भमासपति के बलवान रहने पर, आठवें अथवा छठे मास में शुभग्रहों के केन्द्र में (१, ४, ७, १०) एवं त्रिकोण (५, ९) भावों में स्थित होने पर, पाप ग्रहों के ३, ६, ११ भाव में होने पर सीमन्त एवं (पुंसवन) संस्कार करना चाहिए।

ध्रुव संज्ञक (उत्तरा ३, रोहिणी) एवं रेवती नक्षत्रों में शुभग्रह वारों में पुरुष लग्न के नवांश में सीमन्त करना शुभ होता है।

सीमन्त संस्कार गर्भ का ही संस्कार है, गर्भ में शिशु की स्थिति एवं विकास हेतु कोई समस्या न हो इस उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है। इसे केश उत्पन्न होने के उपलक्ष्य में होने वाला संस्कार भी कहा जाता है क्योंकि गर्भस्थ शिशु के शिर एवं शरीर में रोम उत्पत्ति गर्भ के छठे मास में होती है। सीमन्त का अर्थ भी केश ही होता है।

गर्भकालिक स्थिति में तृतीय मास महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि तीसरे मास में ही अंगों की उत्पत्ति होती है तथा कन्या अथवा पुत्र का निर्णय हो जाता है। अत: तीसरे मास में पुंसवन नामक संस्कार का विधान बताया गया है। यद्यपि कुछ आचार्यों ने पुंसवन और सीमन्त दोनों संस्कारों को एक साथ करने के लिए कहा है।

सीमन्तोननयनस्योक्ततिथिवारभराशिषु।
पुंसवं कारयेद्विद्वान सहैवैकदिनेऽथवा।। (नृसिंहदेवज्ञ:)

जम्मू तथा हिमाचल प्रदेश में भी सीमन्तपुंसवन दोनों संस्कारों को एक साथ कर लेने की प्रथा प्रचलित है।

जातकर्म–नामकरण मुहूर्त

अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या इत्यादि पर्व दिन, रिक्तातिथियों (४/९/१४) को त्याग कर शुभ दिनों में, जन्म से एकादश अथवा द्वादश दिन मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में नवजात शिशु का जातकर्म और नामकरण करना चाहिए।

जातकर्म जातक की श्रीवृद्धि एवं ग्रहदोष निवारण हेतु किया जाता है। × × ×

सूतिकास्नानमुहूर्त्त

रेवती, उत्तरात्रय, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौमवारों में सूतीस्नान शुभ होता है।

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, विशाखवा कृत्तिका, मूल और चित्रा नक्षत्रों में, बुध शनिवारों में ६, ८ तथा रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों में सूतीस्नान नहीं करना चाहिए।

दन्तोत्पत्तिफलम्

मास	दन्तोत्पत्तिफल
प्रथम	स्वयं बालक नष्ट हो
द्वितीय	अनुज (छोटे भाई) के लिए कष्टप्रद
तृतीय	भगिनी (बहन) के लिए कष्टप्रद
चतुर्थ	माता के लिए कष्ट
पञ्चम	अग्रज (बड़े भाई) के लिए अनिष्ट
षष्ठ	अतुल सुख प्राप्ति
सप्तम	पितृ सुख
अष्टम	स्वास्थ्यलाभ
नवम	धन लाभ
दशम	सुखप्राप्ति
एकादश	धनसम्पत्ति लाभ तथा सुखबाहुल्य

बालक यदि जन्मकाल में ही दान्त युक्त उत्पन्न हो तो स्वयं अपने और अपने माता पिता अथवा माता के लिए मृत्यु सूचक होता है।

जन्म के अनन्तर ऊपर की दान्त पंक्ति यदि निषिद्ध समय में (सदशन) दान्त सहित हो तब भी अपना, माता पिता के विनाश का सूचक होता है।

दोलारोहणनिष्क्रमण मुहूर्त्त

जन्म समय से बत्तीस, बारह, सोलह, अठारह एवं दश दिनों में शुभग्रहों के वासरों में (सोम, बुध, गुरु, शुक्र) मृदु-लघु और ध्रुव संज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, हस्त अश्विनी, पुष्य तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में नवजात शिशु को दोला (झूला) में आरूढ़ करना चाहिए।

दोलारोहण चक्र

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें

५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	रोग	सौख्य

निष्क्रमण के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१५
वार	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अ०रो०पुन० पुष्य, हस्त, अनु० स्वा० मूल० श्र० ध०
त्याज्य	मंगल, शनि, रिक्ता, अमा० विष्टि अशुभ योग

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

बालक के नामकरण, निष्क्रमण, भूमि उपवेशन के बाद ६, ८, १०, १२वें मास में पुत्र को और ५, ७, ९, ११वें मास में कन्या को अन्नप्राशन करावें।।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त चक्र

मास पुत्र के लिए	६, ८, १०, १२
मास कन्या के लिए	५, ७, ९, ११
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र	अश्वि० रो० मृ० पुन० पु० हस्त, चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० तीनों उत्तरा, रेवती
लग्न	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११
त्याज्य	जन्म लग्न से व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न। लग्न दशम में पापग्रह भद्रा व्यतिपात दोष।

कर्ण वेध मुहूर्त्त

समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन जन्म नक्षत्र व तिथि, क्षयतिथि व रिक्ता को छोड़कर जन्म से १२वें या १६वें दिन तथा ६, ७, ८ वें मास में विषम वर्षों में शुभवार (सोम, बुध, गुरु, शुक्र) अश्वि० मृ० पुन० पुष्य, हस्त, चि० अनु० श्र० ध० रे० नक्षत्रों में लग्न से अष्टम शुद्धसमय में वृष, तुला, धनु, मीन लग्न में तथा गुरु केन्द्र में स्थिति होने पर कर्ण वेध श्रेष्ठ समझें।

कर्ण वेध – मुहूर्त्त चक्र

वर्षादि	विषम वर्ष। ६, ७, ८ मास में जन्म से १२वें या १६वें दिन।।
तिथि १,	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार सोम	, बुध, शुक्र, गुरु
नक्षत्र	अश्वि० मृ० पुन० पु० हस्त, चि० अनु० श्र० धनि० रे०
लग्न २,	७, ९, १२
त्याज्य	समवर्ष, देवशयन (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से का०शु० एकादशी तक) चैत्र, पौष, जन्मगास, तिथि, नक्षत्र, क्षय तथा रिक्त। तिथि

चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार मुहूर्त्त विचार

अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव या तीर्थस्थान पर मुण्डन संस्कार किया जा सकता है विषम वर्ष, उत्तरायण २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अश्वि० मृ० पुन० पुष्य, हस्त, चि० स्वा० ज्ये० श्र० धनि० शत० रे० नक्षत्रों में करना श्रेष्ठ है। अष्टम भाव शुद्ध चाहिए। ज्येष्ठ एवं चैत्र मास त्याज्य हैं बालक की माता को ४ मास की गर्भ स्थिति होने पर ५ वर्ष से न्यून अवस्था के बालक का मुण्डन न करें।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार हेतु मुहूर्त्त चक्र

वर्ष	विषम। सूर्य उत्तरायण होने पर
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि० मृ० पुन, पुष्य, हस्त, चि० स्वा० ज्ये० श्र० धनि० शत० रे०
त्याज्य	लग्न से अष्टग्रह, ज्येष्ट चैत्रमास, समवर्ष, दक्षिणायन।

कन्या के नाक बिंधवाने का विचार

शुक्लपक्ष, रिक्ता (४, ९, १४) अमा० रहित तिथि सोम, बुध, गुरु, शुक्र, प्रथम प्रहर अशुभ योग रहित अश्वि० मृ० पुन० पुष्य, हस्त, चि० अनु० श्र० धनि० रे० ३ उत्तरा, स्वाती० शत इन नक्षत्रों में कन्या का नाक बींधना शुभ है।

कन्या की नासिका छेदन-मुहूर्त्त चक्र

पक्ष	शुक्ल पक्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम-बुध-गुरु-शुक्र
प्रहर	प्रथम
नक्षत्र	अश्वि०, मृ० पुन० पुष्य, हस्त० चि० अनु० श्र० धनि० रे० उत्तरा ३, स्वाती, शत०

अक्षरारम्भ करने का विचार

बालक को विद्यारम्भ से पूर्व अक्षर अंकादि ज्ञानार्थ अक्षरारम्भ का विचार होता है। सूर्य उत्तरायण हो, जन्म से ५, ७वें वर्ष में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि शुभवार, अश्वि, आर्द्रा, पुन० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० रे० इन नक्षत्रों में, चर लग्नों को त्याग कर अन्य स्थिर, द्विस्वभाव लग्नों में, गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवता का पूजन करके अक्षराम्भ करवाना चाहिए।

अक्षराम्भ के लिए मुहूर्त्त चक्र

अयन	उत्तरायण
वर्ष	५वां - ७वां
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ६, ८, १०, ११, १२
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
नक्षत्र	अश्वि० आर्द्रा, पुन० पुष्य हस्त, चि० स्वा० अनु० श्र० रे०

विद्यारम्भ विचार

अक्षराम्भ के पश्चात् विशेष ज्ञान को वृद्धिप्रद भाषास्थ विद्या (विशेषतः संस्कृत भाषास्थविद्या) का प्रारम्भ फाल्गुनमास छोड़कर उत्तरायण २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, रवि, बुध, गुरु, शुक्र वारों में, अश्वि० आश्ले० मृ० आर्द्रा, पुन० पु० हस्त, चि० स्वा० अनु० मूल, श्र० ध० श० तीनों पूर्वा, रेवती इन नक्षत्रों में श्रेष्ठ है। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू के विद्यारम्भ के लिए, रवि, मंगल, शनिवार रिक्ता (४, ९, १४) तिथि ज्ये० आश्ले० मघा, ३ पूर्वा, भ० कृ० वि० आर्द्रा, उ०षा० शत० इन नक्षत्रों में शुभ है।

विद्यारम्भ कराने के लिए मुहूर्त्त चक्र

अयन	उत्तरायण	
तिथि	२, ३, ५, ६, १०, ११, १२	
संस्कृत व हिन्दी विद्यारम्भ में त्याज्य	फाल्गुनमास, रिक्ता तिथि अशुभवार	
वार	रवि, बुध, गुरु, शुक्र	
नक्षत्र ग्राह्य	अश्वि० रो० मृ० आर्द्रा, पुन, पुष्य आ० हस्त० चि० स्वा० अनु० मू० श्र० ध० श० ३ पूर्वा रे०	
अंग्रेज़ी	वार	रवि, मंगल, शनि
फ़ारसी	तिथि	४, ९, १४
उर्दू आदि	नक्षत्र	ज्ये० आश्ले० म० ३ पूर्वा भ०कृ०वि० आर्द्रा, उ०षा० शत०

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार के मुहूर्त्त का विचार

यज्ञोपवीतपरिधान (उपनयनसंस्कार) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों को करना चाहिए। बाकल के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण ८वें, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करें। इस काल के व्यतीत हो जाने पर ब्राह्मण १६वें क्षत्रिय २२वें वैश्य २४वें वर्ष तक उपनयन करवा सकते हैं बालक का चन्द्रबल तथा गुरुबल विचार करना आवश्यक है देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण सूर्य में, रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवारों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में अश्वि० रो० मृ० आर्द्रा, पुन० पुष्य, आश्ले० तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त० चि० स्वा० अनु०मू० श्र०ध०शत०रे० इन नक्षत्रों के क्रूर तथा वेध रहित होने पर पूर्वाह्न में, अभिजित् मुहूर्त्त में यज्ञोपवीत संस्कार करावें।

चैत्र में मीन के सूर्य में, वृष या कर्क के पूर्ण चन्द्रमा के लग्न में रहने पर अत्यन्त शुभफलप्रद होता है। सामवेदियों को मंगलवार भी श्रेष्ठ है परन्तु मंगल का बल विचारना आवश्यक है। उपनयन संस्कार में दक्षिणायन नहीं होना चाहिए। देवशयन, गुरु, शुक्र का बालवृद्धत्व अपराह्न काल, ज्ये० शुक्ल द्वितीया, आषाढ़ शुक्ल १०, पोष शु० ११, माघ शु० १२ संक्रान्ति दिन, रोगबाण, सूर्य के ८, १७, २६ गतांश, लग्नेश और चन्द्र, गुरु शुक्र की ६, ८, १२ में स्थिति, १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ होते हैं इन सबका त्याग आवश्यक है।

उपनयन करने के लिए मुहूर्त्त चक्र

वर्ष	ब्राह्मण (८ या १६)	क्षत्रिय (११ या १२)	वैश्य (१२ या २४)
अयन	देवशयन से पूर्व उत्तरायण में		
वार	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र		
पक्षतिथि	शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ कृष्णपक्ष की २, ३, ५		
नक्षत्र	अश्वि० रो० मृग० आर्द्रा, पुन० पुष्य, आश्ले० तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा० ह० चि० स्वा० अनु० मू० श्र० ध, शत रेवती		
गुरु	५, १, ९ २, ७ श्रेष्ठ	१, ३, ६, १० पूज्य	४, ८, १२ निन्दित
अन्य ग्राह्य	पूर्वाह्न, अभिजित्मुहूर्त्त (सामवेदियों को भौमबल व मंगलवार भी)		
त्याज्य	गुरु शुक्र का बाल वृद्धास्त, दक्षिणायन, संक्रान्ति दिवस, रोग बाण तथा लग्नेश, चं० शु०गु० की ६, ८, १२वें, पापग्रहों की १, ५, ८ वें स्थिति।		

ॐ श्री गणेशायन नमः

नमोऽस्तुरामाय

ब्रह्मर्षिवसिष्ठ द्वारा विरचित "वसिष्ठसांहता" में अष्टदश कूटों का विचार किया गया है, इन्हीं सभी कूटों का पूर्णरूपेण विवरण परमादरणीय सद्गुरु डॉ० बिहारी लाल वसिष्ठ जी द्वारा सम्पादित 'श्री वैष्णवविजयपञ्चाङ्गम्' में उपलब्ध है वर्त्तमान् में प्रसिद्ध अष्ट कूटों के सन्दर्भ में प्रतिपादन करते हैं।

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः।।

(१) वर्णकूट (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणकूट (७) भकूट (८) नाड़ी।। क्रमशः एकोत्तर गुणवृद्धि कारक होते हैं जैसे वर्ण का एक गुण, वश्य के दो, तारा के तीन योनि के चार, ग्रहमैत्री के पाँच, गणमैत्री के छः, भकूट के सात नाड़ी के आठ ज्ञात करें, कुल योग ३६ गुणों का बोधक है। सरलता के लिए वर्ण ज्ञान बोधक चक्र बताते हैं।

वर्णज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	कर्क वृश्चिक मीन	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ

मीनादि क्रम से ब्राह्मणादि चारों वर्ण सुनिश्चित हैं हीनवर्णा का विवाह उत्तम वर्ण के वर से नहीं होना चाहिए ऐसे ही उत्तम वर्णा का विवाह हीन वर्ण वर से नहीं होना चाहिए।

वर्णदोष परिहार

कन्या ↓	वर :– ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

कन्या के वर्ण से वर का वर्ण उत्तम हो या समान वर्ण हो तो १ गुणोपलब्धि समझें। वर से कन्या का वर्ण उत्तम हो तो ० शून्य गुण प्राप्त होता है। वर स्वयं उत्तम वर्ण में हो तो एक गुण, वर की राशि का स्वामी वर्णोत्तम हो तो भी एक गुण जानें।

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वेवांशनाथयोः।
गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रविवर्धनः।। (अत्रि)
न वर्ग–वर्णो न गणो न योनिः द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा।
तारा विरोधे नव–पञ्चमे वा मैत्री यदा स्यात् शुभदो विवाहः।। (वृ०ज्यो०सा०)

(२) वश्य विचार

सिंह राशि को छोड़कर सभी राशियाँ मनुष्य राशि के वश में है। जल राशियाँ (४, १०, १२) न राशियों (३, ६, ९ पू० ११) का भक्ष्य हैं। सिंह वनचर और वृश्चिक कीट दोनों भयङ्कर मानी जाती हैं। दोनों के (कन्या एवं बालक) वश्य समान हों तो २ गुण, एक वश्य, दूसरा शत्रु होने पर एक गुण एक वश्य दूसरा भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने से शून्य गुण प्राप्ति समझें।

वश्यदोष परिहार

राशीश मित्रता, राशीश एकता, नवांशेश मैत्री एवं एकता तथा योनि मैत्री होने से वश्यदोष परिहार शास्त्रकारों ने माना है।

(३) ताराकूट

(१) जन्म (२) सम्पद् (३) विपद (४) क्षेम (५) प्रत्यरि (६) साधक (७) वध (८) मैत्र (९) अतिमैत्र ये नव ताराएँ हैं। कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक, वर नक्षत्र से कन्या नक्षत्र पर्यन्त गणना करके भिन्न–भिन्न दोनों को ९ का भाग दें शेष ३, ५, ७ बचें तो अशुभ, शेष शुभ समझें।

दोनों की तारा शुभ हो तो गुण ३
एक शुभ, दूसरे की अशुभ हो तो १ $^1/_2$ गुण
दोनों की अशुभ ताराएँ हों तो गुण शून्य समझें।

तारा दोष परिहार

राशीशमैत्री एवं एकता, नवांशेश मैत्री एवं एकता होने से परिहार समझें।

(४) योनिकूट

शास्त्रकारों ने अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों की अश्व, गज, मेष सर्पादि योनियाँ स्वीकार की हैं। कन्या एवं वर की योनियों की परस्पर शत्रुता सर्वदा त्याज्य है, जैसे शेर एवं हाथी, गाय और चीता, सर्प तथा न्यौला, अश्व–महिष, श्वान–मृग, वानर–मेष, चूहा एवं बिल्ली हैं।

कन्या एवं वर की एक ही योनि हो तो अत्यन्त शुभ, योनियाँ परस्पर परममित्र हों तो ४ गुण, मित्र हों तो ३ गुण समान एक जैसी प्रकृति की हों तो २ गुण, सामान्य वैर हो तो १ गुण, परम शत्रुता हो तो शून्य गुण प्राप्ति समझें।

योनि दोष परिहार

राशीश मैत्री, राशीश एकता, नवांशेश मैत्री, नवांशेश एकता परिहार कारक है।

(५) राशीशमैत्री कूट

वर कन्या की राशियों में स्वामियों का एकत्व अथवा मित्रता भावादि इस कूट के मुख्य स्तम्भ हैं। (१) यदि दोनों की राशियों का एक ही स्वामी हो या राशियों के स्वामी आपस में मित्र+मित्र हों तो मिलान सर्वोत्तम समझें, (२) एक दूसरे का मित्र परन्तु दूसरा सम हो उत्तम मिलान, सम+सम हो तो मिलान सामान्य, मित्र+शत्रु तो नेष्ट, सम–शत्रु हो तो अति नेष्ठ, एवं शत्रु+शत्रु हों तो अत्यन्त नेष्ट समझें।

शत्रुमित्रंच विज्ञेयं दम्पत्योः कलहप्रदम्।
अन्योन्यसमशत्रुत्वं दम्पत्योः विरहप्रदम्।। (वसिष्ठ)

राशीश एकत्व = ५
राशीश मित्र+मित्र = ५
राशीश मित्र+सम = ४
राशीश सम+सम = ३
राशीश मित्र+शत्रु = १
राशीश शत्रु+शत्रु = ०

नवांशेशमैत्री एवं नवांशेश एकता, नक्षत्र एक परन्तु राशियां भिन्न-भिन्न हों तो परिहार हो जाता है।

(३) गणकूट

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों का देवगण, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नक्षत्रों का मनुष्यगण, कृत्तिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूला, धनिष्ठा और शतभिषा का राक्षसगण होता है।

वर कन्या के नक्षत्रों के गण यदि देव+देव = ७ गुण, मिलान सर्वोत्तम

मनुष्य-मनुष्य	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
मनुष्य-देव	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
राक्षस-राक्षस	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
देव-मनुष्य	–	५ गुण	–	मिलान शुभ
देव-राक्षस	–	१ गुण	–	नेष्ट मिलान
राक्षस-देव	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान
मनुष्य-राक्षस	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान
राक्षस-मनुष्य	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान

गणदोष परिहार

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः।
गणादिदौष्टयेऽप्युद्वाहः पुत्र-पौत्रविवर्धनः।। *(अत्रि)*
द्विर्द्वादशे वा नवपञ्चमे वा षड्काष्टके राक्षसयोषितो वा।
एकाधिपत्ये भवनेशमैत्र्ये शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम्।। *(वसिष्ठ)*

राशीश मैत्री, राशीश एकता, नवांशेश मित्रता एवं नवांशेश एकाधिपत्य परिहार कारक हैं।

कृत्तिका रोहिणी स्वातिर्मघाचोत्तराफाल्गुनी।
पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े न क्वचिद् गणदोष दे।। *(वृ०दै०र० मुहूर्तकल्पद्रुमः)*
गणदोषोयोनिदोषो वर्ण दोषः षडष्टकम्।
चत्वारि नैवदुष्यन्ति राशि मैत्री यदाभवेत्।। *(वृ०ज्यो०सा०)*

कृत्तिका, रोहिणी, स्वाती, मघा, उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा ये सभी नक्षत्र गणदोष परिहार करने की क्षमता रखते हैं।

गणदोष, योनि दोष, वर्ण, षडाष्टकदोष राशि मित्रता होने पर दूषित नहीं करते।

भकूट का दूसरा नामान्तर राशिकूट भी है। यह तीन प्रकार का है– (१) द्विर्दादशादोष (२) नवमपञ्चमदोष (३) षडष्टकदोष – कन्या की राशि से वर की राशि दूसरी व बारहवीं (२-१२) अथवा वर की राशि से कन्या की राशि दूसरी व बारहवीं (२-१२) हो तो द्विर्द्वादश दोष होता है, इसी प्रकार दोनों (वर-कन्या) की राशियाँ नौवीं व पाँचवीं हो तो नवम-पञ्चम, तथा छठी व आठवीं हो तो षडष्टक दोष होता है। राशिकूट शुद्धि होने पर ७ गुण माने जाते हैं। षडाष्टक परिहार– १, ८, २-७, ३-१०, ४-९, ५-१२ तथा ६-११ – इन राशियों का षडाष्टक शुभ है १-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुभाव होने के कारण त्याज्य कहा है।

नवमपञ्चम परिहार :–

वरस्यपञ्चमेकन्या, कन्याया नवमेवरः
एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्र सुखावहम्।। *(वृ०ज्यो०स०)*

वर से कन्या की राशि पञ्चम और कन्या की राशि से नवम वर की राशि हो तो परिहार होता है ऐसी जोड़ी पुत्रपौत्र तक सुख देखती है।

शुभ नवपञ्चम :–

मेषे च सिंहे वृषभे च कन्ये युग्मे घटे वृश्चिक कर्कटेच।
सिंहेच चापे मकरे युवल्या मित्र त्रिकोणं बहुपुत्रलाभः।। *(चण्डेश्वर)*

१-५, २-६, ३-११, ८-४, ५-९, १०-६ ये सभी शुभ नवपञ्चम हैं ग्राह्य हैं।

अशुभववपञ्चम :–

मेषे च चापे मकरे वृषे च कुम्भे च युग्मे झषकर्कटे च।
कुम्भे तुलायां झषकीटयोश्च शत्रु त्रिकोणं बहुदुःखहानि।। *(चण्डेश्वर)*

१-९, १०-२, ११-३, १२-४, ११-७, १२-४ ये सभी अशुभ नवपञ्चम है दुःखप्रद होते हैं।

अशुभद्विर्न्द्वादश दोष :–

कन्याहरौकीट तुलाधरौ वा चापेमृगे वा झषगे च कुम्भे।
कुलीर युग्मे वृषभे च मेषे द्विर्द्वादशे वै निधनं करोति।।

शुभद्विर्द्वादश :–

चापे फणीन्द्रे घटभे मृगे च अजे झषे सिंह कुलीरके च।
कन्यातुलायां वृषभे च युग्मे द्विर्द्वादशेचाथकरोतिवृद्धिम्।।

एकाधिपत्य, राशीश मैत्री तथा नवांशेश मैत्री पूर्णतः परिहार कारक मानी गई है। द्विर्द्वादशा में दारिद्रय, षडष्टक में मृत्यु, नवपञ्चम में अपत्य हानि कहा है।

षडाष्टके गोमिथुन प्रदेयं।
कास्यं सरोप्यं नवपञ्चमे च।।
नाड्यां सुवर्णान्नमथोसधेनुं।
द्विर्द्वादशे ब्राह्मनतर्पणं च।।

८. नाड़ी कूट

अष्टकूटों में शिरोमणि कूट नाड़ी कूट है।
नाड़ीकूटं तु संग्राह्य कूटानां हिं शिरोमणिः।
ब्रह्माण कन्यका कण्ठे सूत्रत्वेन विनिर्मितम्।।
"एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योःमरणं ध्रुवम्।" *(मुहूर्तप्रकाशे)*

वर कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ सूचक है मृत्युप्रद है। सुविधा के लिए त्रिनाड़ी चक्र को समझें। अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों को तीन पंक्तियों (नाड़ियों) में विभाजित किया गया है– आदि, मध्य और अन्त्य।

त्रिनाड़ीचक्रम्

आदि	अ	आ	पुन	उ०फा	ह	ज्ये	मू	शत	पूर्वाभा
मध्य	भ	मृग्	पुष्य	पू०फा	चि	अनु	पू०षा	ध	उ०भा०
अन्त्य	कृ	रो	आश्ले०	मघा	स्वा	वि	उ०षा	श्र	रे

कन्या एवं वर का जन्म नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो विवाह अशुभ सूचक होता है, दोनों की आद्य नाड़ी हो तो विवाहोपरान्त विरहा की स्थिति हो, मध्यनाड़ी हो तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य योग अथवा घोर कष्ट होता है। भिन्न नाड़ी में आठ गुणों की प्राप्ति तथा समान नाड़ी होने पर शून्य गुण प्राप्त होता है।

नाड़ी दोष परिहार

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजे।।
एवमपि ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा।
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा।। *(शीघ्रवोधे)*

नाड़ीयोनौ द्विजस्योक्ते गणवर्णौच बाहुजे।
वैश्यानां राशिकूटं स्याद्योनिर्वर्गस्तु पादजे।। (मुहूर्तकल्पद्रुमे)

नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्ण दोष क्षत्रियों के लिए, गणदोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विचारणीय है।

विशेष :– अब चूकि वर्ण व्यवस्था भङ्ग होती जा रही है सभी जातियाँ अपने-अपने कर्मों से विमुख होती जा रही हैं अतः ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए भी नाड़ी दोष उपेक्षनीय नहीं है। सर्वश्रेष्ठ मिलान हेतु नाड़ी दोष परिहार देखना परमावश्यक है।

यदि वर कन्या दोनों की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों यदि दोनों का नक्षत्र एक हो राशि भिन्न-भिन्न हो, तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न (पाद भेद) हो ऐसी स्थिति में नाड़ी दोष नहीं होता– शुभफलप्रद होता है।

आद्यांशेन चतुर्थाशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्।।
एवं भांश व्यधोयत्र जायते वर कन्ययोः
तत्र मृत्युर्नसंदेहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः।।

स्वरोदये शास्त्रानुसार प्रथम पाद का चतुर्थपाद से एवं चतुर्थपाद का प्रथमपाद से वेध, द्वितीय का तृतीय से तथा तृतीय का द्वितीय से वर कन्या के नक्षत्रों का वेध समझें। शेष चरणों का परस्पर स्वल्प दोष होने से उपेक्ष्य जानें।

एक राश्यादि योगे तु नाड़ी दोषो न विद्यते।
अन्यत्र तु विचार्यैषा स्वभावाच्छोभनाश्च ते।।
सुहृदेकाधिपयोगे ताराबलेवश्य राशौ वा।
अपिनाड्यादि विरोधे विवाहो भवति हितार्थाय।। (ज्यो०त० सुधार्णवे)

श्रीपति निबंध एवं ज्योतिषत्व सुधार्णव में एकाधिपत्य एवं राशि मैत्री नाड़ी प्रभृति समस्त कूटों में पाये जाने वाले दोषों में परिहारक माने गए हैं। इसी प्रकार एक राशि भिन्न नक्षत्र एवं एक नक्षत्र में भी राशि भेद तथा चरण भेद होने से नाड़ी दोष निवृत्त हो जाता है।

एक राशिरुभयोर्भिन्नभं चेदभिन्न भमुतान्य राशिता।
पुंस्त्रियोरतिरतीव नो यदा रोहिणी शुचि भनाड़ी कोड्डुवत्।। (ज्योतिर्विदाभरणे)
एक नक्षत्र जातानां नाड़ी वेधो न विद्यते।
भिन्नांशश्चैकराशीनां दम्पत्योः प्रीतिहेतवे।।
एकराशौ पृथग्धिष्ण्ये पृथग् राशौ तथैकभे।
गणनाड़ी नृदूरं च ग्रहवैरं न चिन्तयेत्।। (वृहस्पतिः)
दम्पत्योरेक राशिश्चेद् भिन्नमृक्षं यदा तदा।
गणदोषोऽप्येकनाडायां विवाहः शुभदः स्मृतः।। (ज्यो० निबंध)

रत्नकोशकार तो एक नक्षत्र गत दोनों को एक चरण होने पर भी मिलान शुभ मानते हैं।

"केचिन्नेच्छन्ति चैकांशे केचिदिच्छन्तिमेलकम्।।"

सप्तविंशति नक्षत्रों में कुछ नक्षत्र है जो नाड़ी दोष निरस्त करने की क्षमतारखते हैं यदि इन नक्षत्रों में वर कन्या का जन्म हो तो भी नाड़ी दोष निरस्त समझें।

वैश्वानरद्रुहिणयोरदितीशयोश्चतद्वत्करार्यमभयोर्द्वयधिपानिलेन्द्वोः।
छागैकपादवरुणयोः श्रुतिवैश्वयोश्चस्यादभिन्नभवनेनहिनाड़ीदोषः।। (रत्नकोषे)

कृत्तिकारोहिणी नक्षत्रों में, पुनर्वसु आर्द्रा में, उत्तराफाल्गुनी हस्त में, स्वाती विशाखा में, शतभिषापूर्वाभाद्रपदा में, उत्तराषाढ़ा श्रवण में, इन नक्षत्रों में जन्म होने पर चाहे वे एक पाद हों या भिन्नपाद में हों, चाहे अभिन्न राशि ही क्यों न हो नाड़ी दोष नहीं हो सकता।

प्रीतिवित्तसुखदः करग्रहेस्त्वेकराशिषु च भिन्नभं यदि।
वारुणाजपादभं भवेद्यदा नाड़ी दोषगणजो न विद्यते।।
नाड़ीगणो नैकराशौचिन्त्यो भिन्नभयोर्यथा।
कृत्तिकाकभयोर्द्वीशस्वात्योः पूभाजलेशयोः।।

आचार्यलल्ल ने भी रत्नकोषकार की भान्ति कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, स्वाती, पूर्वाभाद्रपदा, शतभिषा इन नक्षत्रों को नाड़ी दोष का पूर्णरूपेण परिहार स्वीकार किया है।

विवाह वृन्दान का प्रमाण ज्योतिर्निबंध में इस प्रकार से उपलब्ध है।

नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योर्यदि भिन्नमृक्षम्।
प्रीतिस्तदानीं निविडानृनार्योश्चेत् कृत्तिकारोहिणीवन्न नाड़ी।।

उक्त नक्षत्रों में एक नक्षत्र यदि वर या कन्या का आ जाए जिसका परिहार कहा गया है, दूसरे का ऐसा नक्षत्र आ जाए जिसका परिहार नहीं, ऐसी स्थिति में "निमित्तायाये नैमित्तिकस्याप्यपायः" इस परिभाषा से एक का परिहार होने पर दूसरे का स्वयं परिहार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त 'वृहद्दैवज्ञरञ्जनम्' में ऐसाप्रमाण उपलब्ध है जिसमें और भी नक्षत्रों का समावेश किया गया है।

अजैकपान्मित्रवसुद्विदैव प्रभंजनाग्न्यर्क भुजंगभानि।
मुकुन्दजीवान्तक भानि नूनं शुभानि योषिन्नरजन्मभैक्ये।। (वृ०दै०र०)

पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, धनिष्ठा, विशाखा, स्वाती, कृत्तिका, हस्त, आश्लेषा, श्रवण, पुष्य भरणी, इन नक्षत्रों में कोई भी दो नक्षत्र वर कन्या के आ जाएं तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है, वर कन्या के लिए शुभ फलप्रद हो जाता है। "एक राशि में दो नक्षत्र हों और नाड़ी भेद भी हो जाए तो विवाह में वर्जित जानना।

एकराशौद्विनक्षत्रेकृत्तिकायाम्यतारके।
धनिष्ठा शततारे च पुष्याश्लेषौ च वर्जयेत्।।
शुक्रे जीवे तथा सौम्य एक राशीश्वरेयदि।
नाड़ीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः।। (विवाह कोतुहले)

शुक्र जीव तथा बुध यदि राशीश्वर हो जाए तो भी नाड़ी दोष परिहार हो जाता है।

दोषानुपत्तये नाड़या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् काञ्चनादिना।।
हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके।
गावोऽन्नं वसनं हेमं सर्वदोषापहारकम्।। (गुरुः)

नाड़ी दोष हो जाने पर अत्यावश्यक में महामृत्युञ्जय जप श्रेष्ठ सात्विक ब्राह्मणें द्वारा करवाकर गो, अन्न, वस्त्र, सोनादि दान करना चाहिए। शुभम्भूभात।

विवाह संस्कार

"भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्न वशेन तस्याः
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः

मुहूर्तचिन्तामणि (रामदवैज्ञः)

स्त्री को प्रधान रूप से धर्म-अर्थ-काम की प्रदात्री मानकर तथा सन्तान उत्पत्ति की मुख्य स्त्रोत समझकर विवाह समय का विचार विशेष रूप से करना परमावश्यक है।

जीवन की पूर्ण रूपेण सिद्धि के लिए चारों आश्रम आवश्यक हैं– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्त और सन्यास!

ब्रह्मचर्याश्रम– जीवन की एक विशेष अवस्था है जिसमें अपने मस्तिष्क को उन्नत करके बुद्धिजन्य ज्ञान को प्राप्त करना होता है, इस प्रकार के समस्त ज्ञान हेतु शारीरिक उन्नति होना भी आवश्यक है।

गृहस्थाश्रम– चारों आश्रमों में मुख्य गृहस्थाश्रम है और गृहस्थाश्रम का मुख्य आधार है 'विवाह संस्कार'। विवाह धर्मार्थ काममोक्ष रूपी चतुर्वर्ग फलप्राप्ति करवाने में एकमात्र सहायक है। यह एक ऐसी अवस्था है कि जस समय विषयों का राग विचार पूर्वक त्याग न कर सके उस राग का यथार्थ ज्ञान करने के लिए नियम पूर्वक (जिस काम को जिसके लिए करना चाहिए) अर्थ और काम का न्यायपूर्वक संचय करना और शेष आश्रमों की द्राव्यादि से सेवा करनी होती है।

वानप्रस्थाश्रम– जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय विषयों में अरुचि होवे फिर तपश्चर्यापूर्वक मन इन्द्रिय आदि का संयम करना और पारिवारिक जीवन का त्याग करना होता है। समस्त संसार से समभाव रखना ही सही वानप्रस्थ है।

सन्यासाश्रम– अवस्था भेद मिटाकर सभी प्रकार से निडर हो जाना अर्थात् अपने आप में स्थायी रूप से सत्य का अनुभव करना ही सन्यास आश्रम है। जीवन की पूर्णता सिद्ध करने के लिए सन्यास अत्यन्त आवश्यक है।

विवाह संस्कार के उपरान्त ही मनुष्य सन्तानोत्पत्ति के साथ देवर्षिपितृ ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता है। धर्मशास्त्रोक्तं आठ प्रकार के विवाहों में 'ब्रह्म विवाह विधि' श्रेष्ठ है। इस

विधि में मुख्य रूप से वर कन्या की जाति गोत्रादि भिन्नता, मेलापक (नक्षत्र व मंगली आदि का मिलान) विचार किया जाता है। परन्तु आज अधिकांश लोगों द्वारा गान्धर्व विवाह विधि को (प्रेम विवाह) अपनाया जा रहा है और श्रेष्ठ भी समझा जा रहा है।

इससे पूर्व अष्टकूटों का विचार कर चुके हैं अब कुण्डली मिलान में मङ्गल के सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत करते हैं कुण्डली मिलान में सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि कुण्डली मङ्गली तो नहीं है यदि दोनों कुण्डलियाँ मङ्गली हों तो विवाह शुभ होता है। कुण्डली में मङ्गल यदि १, ४, ७, ८ १२वें भाव में हो तो कुण्डली मङ्गली मानी जाती है, विशेष परिस्थितियों में मङ्गली परिहार के द्वारा ही विवाह किया जा सकता है जैसे कि एक की कुण्डली में १, ४, ७, ८ १२वें से जिस भाव में मङ्गल पड़ा हो तो दूसरे की कुण्डली में उसी भाव में शनि या अन्यपापग्रह विद्यमान हो तो मङ्गली दोष परिहार हो जाता है।

भौमेन सदृशो भौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाहः शुभदो प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः।।

चन्द्र कुण्डली में भी इसी प्रकार विचार करके तभी विवाह करना चाहिए। विशेषतः मङ्गल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकृत।।

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मङ्गल से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोष विनाशकृत्।।

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।।

केन्द्रेकोणे शुभाढये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्त था।।

न मंगली चन्द्रभृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः न मङ्गली मंगल राहु योगे।।

तनु धन सुख मादनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।।

इन्हीं परिहार वाक्यों से भौम (कुज) दोष निरस्त होता है फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी लोग कुण्डली मिलान करें तो श्रेयस्कर होगा। यहाँ यह भी स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक-ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या की कुण्डली में यदि कुयोगों द्वारा वैधव्य योग हो तो शालिग्राम से, पिप्पल वृक्ष से, अर्कवृक्ष से वा कुम्भ से पूर्वाद्य विवाह करवाकर स्वर्णदान, गोदान, महामृत्युञ्जयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य पुत्र तथा धनधान्यादि से युक्त होती है।

जन्मोत्थं च विलोक्य वालविधवायोगं विधायव्रतम्।
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वारहः।।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहंस्फुटम्।
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।

विवाह से पूर्व कन्या का नाम परिवर्तन

यदि कन्या एवं वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों का प्रसिद्ध नाम परस्पर मिलान में शुभ न हो तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के अनुसार यहाँ दोषांक का अभाव हो उसी आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्।।

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्मनाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम लेना ऐसी विपरीत कदापि न करें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक है और आवश्यक भी। यथा-

विवाहेसर्वमांगल्येयात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशेःप्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्।।
कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।
सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।।
मन्त्रेपुनर्भूर्वरणे नामराशेः प्रधानता।
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।।

नाम राशि का विचार

देशेग्रामेगृहेयुद्धेसेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्।।
काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाम भात् चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

वर वरण मुहूर्त्त

विवाह संस्कार से पूर्व पञ्चाङ्ग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में शुभतिथि वार कृत्तिका, रोहिणी, पू० ३ उ० ३ नक्षत्रों में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के घर आकर पूर्वोत्तर या पूर्वा पर दिशा में बैठे कुंकुम या केसर से वर को तिलक करें, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त

पञ्चाङ्ग शुद्धि देखकर कुयोग रहित दिन में कृ० पूर्वा० ३ स्वा० अनु० उ०पा०श्र०ध० तथा विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभसमय में वस्त्रालङ्कार फल पुष्पों सहित कन्या वरण करें।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधु वर की सगोत्र और माता की सात पीढ़ी में से न हो। दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाईयों से न करें। दो सगी बहनों का दो सगे भाईयों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पश्चात् लड़के का विवाह हो सकता है पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहिनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहिनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह के पश्चात् मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करें, संवत्सर भेद से मङ्गल कार्य हो सकते हैं। मङ्गल कार्य के मध्य पितृ कर्म (श्रद्धादि) न करें। वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शान्ति करके विवाह करने में हानि नहीं। नान्दीमुख श्राद्ध हो जाने के पश्चात् यदि किसी की मृत्यु हो जाए तो कन्या वर के माता पिता को अशौच नहीं लगता निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

विवाह में त्रिबल शुद्धि

बल	गुरु	चन्द्र	सूर्य
श्रेष्ठ	२, ५, ७, ९, ११	१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११	३, ६, १०, ११
पूज्य	१, ३, ६, १०	१२	१, २, ५, ७, ९
नेष्ट	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वरस्य भास्कर बलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्।।

यहाँ वर का सूर्यबल, कन्या का गुरु बल तथा दोनों का चन्द्रबल देखना चाहिए।

विशेष :- गुरु व सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र, स्वराशि, स्वनवांश, वर्गोत्तम नवांश में होने पर ४, ८, १२वें होनें पर भी शुभ होते हैं।

स्वोच्चे स्वमैत्रे वा स्वांश वर्गोत्तमेगुरौ।।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्।।
(रामदैवज्ञ)

यदि गुरु नीच या शत्रु राशि का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होता है अतः नीच या शत्रु राशिस्थ गुरु कन्या की राशि से २, ५, ७, ९, ११वें होने पर भी अशुभ माना गया है यह पूजा करने पर ही श्रेयस्कर होता है। ऐसे ही सूर्य ४, ८, १२वें होने पर परिहार वाक्य–

"स्वोच्चे स्वमित्रसदने स्वगृहे स्ववर्गे।
स्वांशे ततश्च निधन व्ययतुर्यगोऽपि।।
श्रेयस्तनोति रिपुनीचगलोऽप्यनिष्टम्।
तुल्यं फलं निगदितं रवि जीवयोश्च।।
(दैवज्ञकल्पद्रुम)

सूर्य यदि तुला राशि वाले वर के लिए २, ५, ९वें हो तो भी शुभ फलप्रद होता है उसकी पूजा की आवश्यकता नहीं होती।

"धर्मधीधनगतोदिवाकरस्तौलि राशि जनितस्य शोभनः।।"

अन्य राशि वालों के लिए २, ५, ९वां सूर्य १३ अंश बीत जाने पर शुभ माना जाता है पूज्य नहीं होता।

"गर्ग्याङ्गिरो वत्सवसिष्ठगौत–।
मपराशराद्या मुनयो वदन्ति।।
द्वितीय पंचाङ्गतो दिवाकर–
स्त्रयोदशा हात्परतः शुभावहः।।"

विवाह मुहूर्त्त में दश दोषों का विचार

१. लत्तादोष चक्रम् :–

ग्रहाः	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बंधुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षय	मरणम्

उदाहरण– जैसे सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लत्ता दोष वाला विवाह नक्षत्र होगा इसी भान्ति शेष ग्रहों की लत्ता दोष भी जानें।

२. पात दोष ज्ञान चक्रम् :–

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	विवाह नक्षत्राणि
आर्द्रा	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	
पुन	अ	मृ	अ	मृ	श्र	अ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	सूर्याधिष्ठित नक्षत्रानि
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	उभा	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	पूफा	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात दोष से दूषित हो जाता है, इन दूषित नक्षत्रों में विवाह नहीं करना चाहिए।

३. युति दोष :– जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उसी ग्रह की युति का दोष समझें, चन्द्रमा उच्च स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता। शुक्रवगी युति विशेष रूप से वर्जित है, सू, मं, श, रा, के इत्यादि की युति मृत्यु, दारिद्रय एवं भयप्रद मानी गई है।

४. वेध दोष चक्रम :–

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	वि.न.
अभि	उषा	श्र	रे	उभा	श	भ	पुन	मृ	ह	उफा	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर कोई भी ग्रह हो वेध दोष होता है यह सर्वत्र निन्दित है इसका सर्वदा त्याग करना हितकारी है।

५. जामित्र दोष चक्रम :–

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	वि.न.
अनु	ज्ये	ध	पूभा	उभा	अ	कृ	मृ	पुन	उफा	ह	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जित है।

६. वाणज्ञानाय सुलभ चक्रम् :–

वाण नाम	अर्कस्य राशि प्रति गतांशाः	५ कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय परत्वेन वर्ज्या
रोग	०८/१७/२६	व्रतबंधे	रवौ	रात्रौत्याज्यम्
अग्नि	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४/१३/२२	नृपसेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चारे	६/१५/२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

७. एकार्गलदोष :– व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रहदोष :– सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९. क्रान्तिसाम्य दोष चक्रम :–

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	म	ध	वृश्चिक	मी	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चंद्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रान्ति साम्य दोष आ जाता है जैसे मिथुन के सूर्य और धनु के चन्द्रमा में या धनु के सूर्य और मिथुन के चन्द्रमा में। यह दोष सर्वत्र वर्जित है विशेषतः इसकी सूक्ष्म क्रान्ति ही वर्जित है इसका निर्णय महायातगणित से किया जा सकता है।

१०. दग्धातिथिदोष :–

धनु	वृष	कर्क	कन्या	सिंह	मकर	सूर्यः
मीन	कुम्भ	मेष	मिथुन	वृश्चिक	तुला	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त सङ्क्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियाँ विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजङ्गं क्रान्तिसाम्यं च वाणवेधं तथैवच।
लग्नहीनं विवाहं तु कलो पञ्च विवर्जयेत्।।

[illegible] (उज्जैनप्रान्त) [illegible] कुरु (कुरुक्षेत्र) बागर आंगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्षं कुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त बलखबुखारा) कलिङ्ग वंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्।। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शल्वे (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितं भम्। त्यजेत्तु विदभं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता:।।

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पापा	००	शुक्र	००	००	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं मं शुभा. लग्नेश	००	मं	००	श	त्याज्या ग्रहा:
चंद्रकूर	कुलिकं क्रांति साम्यं च				चं	मं	चंद्रभोग		विदभ्भं च गोधूली त्याज्या:			

युति परिहार :-

स्वोच्चगे वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:।
युति दोषाय न भवेद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा।।

दोषापवाद ज्योतिर्निबंधे :-

दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा कलौ युगे।
तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणै: सह।।

अपवादान्तरम् :-

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु:।
केन्द्रसंस्थे सितौ वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।
मुहूर्त्त लग्न षड्वर्ग कुनवांश ग्रहोद्भवा:
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।
लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेका दशालये।
सर्वग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत्।
बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्।
द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा:।।

स्मरण रहे पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना।

विवाह काल निर्णय:

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता इसको त्रिज्येष्ठ कहते है। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम है फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में विवाह हो सकते हैं।

जन्म नक्षत्र में अन्न प्राशन, यज्ञोपवीत धारण, मुण्डन (चूड़ाकरण) राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों को शुभ माना गया है परन्तु सीमन्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्मनक्षत्र अनिष्टफलप्रद होता है :-

बालान्नभुक्तौ व्रतबंधनेऽपि राज्याभिषेके रवलुजन्मधिष्ण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु वसिष्ठ:।।

जन्ममास एवं जन्म नक्षत्र में बड़े लड़के या लड़की का विवाह करने का निषेध माना गया है।

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा
आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रह:।।

परन्तु छोटे लड़के या लड़की का विवाह जन्ममास में हो सकता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त:

विवाह संस्कार हो जाने के पश्चात् पहली बार वधु का पतिगृह में प्रवेश वधु प्रवेश कहलाता है विवाह के १६ दिन के भीतर बिना तिथि मुहूर्त्तादि का विचार किए भी स्थिर लग्न में वधु प्रवेश हो सकता है। एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त स्थिर लग्न में तीसरे, ५वें वर्ष में भी शुभ है। वधु प्रवेश में रे. अ. रोहि. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. वृ. शु. श. इन वारों में चतुर्थ अष्टमस्थान शुद्ध हो, १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में ५/८/११ लग्नों में शुभ होता है। व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति अमा. संक्रान्ति, रिक्ता तिथियों में वधु प्रवेश वर्जित है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त चक्र

दिन	१६ दिन तक अथवा ७, ५, ९वें दिन
मास वर्ष	विषम मास, विषम वर्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
नक्षत्र	रे. अ. रो. मृ. श्र. ध. हस्त. चि. स्वा. म. मूल. पुष्य, अनु. तीनों उत्तरा. आभि.
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र
लग्न	२, ५, ८, ११ लग्न ४, ८ भाव शुद्ध हो
त्याज्य	व्यतीपात, क्षयतिथि, रिक्ता, उमा. ग्रहण. वैधृति. संक्रान्ति दिन

वधु प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः
राजप्रवेशो न निशिप्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः
सत् कीर्त्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः।।

द्विरागमन मुहूर्त्त– वधुप्रवेशोपरान्त द्वितीयवार पिता के घर (प्योके) से पतिगृह में प्रवेश द्विरागमन कहलाता है, १, ३, ५ विषम वर्षों में, १-८-११ राशि के सूर्य में गुरु की शुद्धि विचार कर शुभवार १, २, ३, ६, ७, १२ लग्नों में, ह. अ. रे. तीनों उत्तरा अभिजित्, रो. मृ. पुन. पु. श्र. ध. श. मू. चि. अनु. नक्षत्रों में शुभ कहा है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ होता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त चक्रम्

वर्ष	विषम (५ वर्ष तक)
मास	१, ८, ११वीं राशि के सूर्य में, सूर्य गुरु की शुद्धि
तिथि वार	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १५ सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र
लग्न	१, २, ३, ६, ७, १२
नक्षत्र	ह. चि. अ. रे. रो. स्वा. पुन. पुष्य श्र. ध. श. मृ. मू. अनु. ३ उत्तरा
त्याज्य	सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र (रेवती से मृगशिरा तक चन्द्र के रहने पर शुक्र शुभ हो जाता है) सामान्य अवस्था में त्याज्य

विशेष :-

द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहेसमवासरेषु।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्धयादि विचारनीयम्।।
रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।।

यात्रा मुहूर्त्त का विचार

यात्रा करने में चन्द्रवास, दिक्शूल, योगिनी चन्द्रबल ये चार मुख्य बातें विचारणीय है। यात्रा में ह. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. सर्वश्रेष्ठ हैं। अत्यावश्यक में भ. कृ. आ. आश्ले, मघा. चि. स्वा. वि. ज्ये. की पहली क्रमशः ७-२१-१०-१४-११-४०-१४-१४-१४ घटियां यात्रा में त्याज्य हैं। रो. तीनों उत्तरा, पूर्वा [illegible] मूल नक्षत्र यात्रा में मध्यम कहे हैं। कृष्णपक्ष प्रतिपदा, शुक्ल द्वितीया यात्रा में शुभ हैं। जन्म लग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न व अष्टमनवांश में, कुभ लग्न अथवा कुम्भ के नवांश में यात्रा सदैव वर्जित है।

यात्रा में चन्द्रवास

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरेच याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम्।।

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रा फल

यात्रा काल में चन्द्रमा सम्मुख होने पर अर्थलाभ, दक्षिण होने पर सुख सम्पत्ति, पृष्ठ होने पर मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु, वाम होने पर धन हानि करता है।

"सर्वे दोषाः लयं यान्तिपूर्ण चन्द्रे हि सम्मुखे।"

दिशा	सम्मुख	दक्षिण	पृष्ठ	वाम
फल	अर्थलाभ	सुख सम्पत्ति	मृत्यु	धनहानि कष्ट

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः।।

योगिनी विचार

प्रतिपदा से शुरू करके पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान इन दिशाओं में क्रमशः योगिनी भ्रमण करती है। योगिनी दक्षिण तथा पृष्ठ में रहने पर शुभ तथा सम्मुख एवं वाम हो तो अशुभ फलप्रद होती है।

योगिनी निवास चक्रम

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

योगिनी विशेष विचार

योगिनी के शुभा-शुभत्व के सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न मत उपलब्ध हैं :-

योगिनी सम्मुखे द्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा।
अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।। *(मुहूर्त्त गणपति)*

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणंप्रदा।। *(शीघ्रबोध)*

जयदा पृष्ठदक्षस्था भंगदा वामसम्मुखी।
त्रिविधं योगिनी चक्रम् इत्युक्तं ब्रह्मयामले।। *(स्वरोदये)*

"सम्मुखवामगा न शस्ता" – मुहूर्त्त चिन्तामनि में ऐसे कहा गया है।

तथा च–

पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता।
वामसम्मुखयोर्नेष्टा वामुमेवं विचिन्तयेत्।। *(विजयकल्पलता)*

तथा :-

वामे शुभकरी देवी पृष्ठेसर्वार्थदायिनी।
वंशबंधकरी चाग्रे दक्षिणे मृत्युदायिनी।।

मुहूर्त्त चिन्तामणि, मुहूर्त्तगणपति, स्वरोदये विजयकल्पलता इत्यादि ग्रंथों के परस्पर विरोधी वचनों को देखते हुए दक्षिण तथा पुष्ठस्थ योगिनी शुभ एवं वाम और सम्मुख योगिनी अशुभ मानी गई है।

दिक्शूल विचारार्थ चक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋ	प.	वा	उ.	दिशा
चन्द्र	रवि	गुरु	बुध	वार	श	शु	गुरु	बुध	मं	चं	र	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार			संमुख काल वासवर्ज्यम्					

आवश्यकेदिक्शूलेपदार्थाः

सू	धृत	ताम्बूल
चं	पय	चन्दन
मं	गुड	मृद
बु	पुष्प	तिल
वृ	दधि	दधि
शु	धृत	यव
श	तिल	माषान
वार	भक्ष	धारण

समय	शूल
प्रातःकाल	पूर्वदिशा
मध्याह्न	दक्षिण
संध्याकाल	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

अत्यावश्यक कार्य में रविवार में धृतपान, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि, शुक्र को यवान्न शनि को उड़द या तेल की वस्तु का सेवन करके जाना शुभ है।

नक्षत्रशूल विचार

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्येष्ठा	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

यात्रा शुद्धि :– जन्मलग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हो, गुरु शुक्र अस्त, सिंहस्थगुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

लग्नशुद्धि :– शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १०वें, पापग्रह ३, ६, १०, ११वें श्रेष्ठ हैं चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें, लग्नेश ६, ७, ८, १२वें, शनि १०वें शुक्र ७वें नेष्ट हैं।

दिशाओं के विभाग से लग्न विचार

दिशा	शुभलग्न	मध्यम	भय	महाभय
पूर्व	१-५-९	२-६-१०	४-८-१२	३-७-११
दक्षिण	२-१०-६	३-७-११	१-५-९	४-८-१२
पश्चिम	३-७-११	४-८-१२	२-६-१०	१-५-९
उत्तर	४-८-१२	१-५-९	३-७-११	२-६-१०

दिक्शूल परिहार :–

"न वार दोषः प्रभवन्तिरात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणम् दिवा शशांकर्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः।

प्रस्थान विचार :– यात्रा मुहूर्त में देरी हो तो यात्रा के तीन दिन के अन्दर वर्णानुसार यज्ञोपवीतादि वस्तु या मनपसन्द प्रियवस्तु को किसी के पास रख दें पुनः यात्रा में जाते समय लेते जाएँ।

यात्रा में शुभ शकुन :– विप्र २, अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धिवाक्य जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट ये सभी यात्रा समय शुभ होते हैं।

गृहारम्भमुहूर्त्त विचार

वैशख, श्रावण, मार्ग, माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं २/३/५/६/७/१०/११/१२/१३/१५ और कृष्ण पक्ष

की प्रतिपदा इन तिथियों में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३, ध. श. रे. वेध रहित नक्षत्रों में २/३/५/६/८/११/१२ लग्नों में, पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३/६/११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टमस्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है।

नवीन गृहनिर्माण के पूर्व नींव खोदने के उपरान्त इष्टिका स्थापना का विचार करना चाहिए। नींव खनन करते समय राहुमुख का विचार कर राहुमुख के पीछे वाली दिशा से खात (नींव) खनन प्रारम्भ करें।

राहुमुख एवं खात दिशा ज्ञान के लिए चक्र

कोण	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	अग्नि
गृहारम्भ	सिंह, कन्या तुला	वृश्चिक, धनु मकर	कुम्भ, मीन मेष	वृष, मिथुन कर्क
देवाल्या-रम्भ	मीन, मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या, तुला वृश्चिक	धनु, म. कुम्भ
जलाश्या-रम्भ	म. कु. मीन	मेष, वृष मिथुन	कर्क, सिंह कन्या	तुला, वृ. धनु.
खातदिशा	आग्नेय	ई	वाय.	नै.

गृहारम्भ से पूर्व भूमि के शुभाशुभत्व की भी परीक्षा करनी चाहिए। भूमि में एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर रात्रिकाल में जल से भर कर प्रातःकाल निरीक्षण करें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम, जलहीन तथा फटी हो तो भूमि अशुभ जानें।

गृहारम्भ मुहूर्त्त चक्र

नक्षत्र	रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उ. ३ ध, श. रे.
मास	वै. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन इन मासों में १ सूर्य क्रमशः १, ४, ५, ८, १०, ११ राशियों में स्थित होने पर, भाद्रपद एवं कार्तिक मध्यम है
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
तिथियाँ	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
लग्नशुद्धि	स्वामी की दृष्टि हो, लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९वें शुभग्रह, ३, ६, ११वें पाप ग्रह तथा ८, १२ स्थान शुभ पाप से रहित
त्याज्य	भद्रा, अशुभयोग, अष्टमचन्द्र, चक्र अशुद्धि
विशेष	शुक्लपक्ष, गुरु शुक्र के उदय में गृहारम्भ विशेष शुभ है

अन्य विशेष :- पुष्य, उ. ३. रो. म. आश्ले. पूषा नक्षत्रों में गुरु जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र में गुरुवार को गृहारम्भ पुत्रप्रद तथा लक्ष्मीप्रद कहा है। रो. ह. श्र. उफा, चित्रा इनमें जिस नक्षत्र में बुध हो उसी नक्षत्र में बुध हो उसी नक्षत्र में बुधवार गृहारम्भ पुत्र और सुखप्रद है। वि. चि. आ. ध. शं. इनमें शुक्राधिष्ठित नक्षत्र में शुक्रवार को गृहारम्भ धन धान्यप्रद होता है।

चैत्रादिमास में गृहारम्भ का मास के अनुसार फल

मास	फल
चै.	शोक
वै.	धान्य
ज्ये.	पशुमरण
आषा.	हृति
श्रा.	द्रव्यवृद्धि
भाद्र.	नाश
अश्वि.	युद्ध
का.	भृत्यक्षय
मार्ग.	धन
पौ.	श्रीप्राप्ति
मा.	वह्निभय
फाल्गु.	लक्ष्मीलाभ

गृहारम्भ में शिलान्यास (प्रथम इष्टिका स्थापना) पूर्व दक्षिणकोण (अग्निकोण) में करें।

"क्षेत्रभित्तिशिलान्यासासस्तम्भस्यारोपणं तथा पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याहकश्यपः।।"

भूमि शयन विचार

नींव खोदने में भूमि शयन का भी विचार करना आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९, २६ संख्यक नक्षत्रों में भूमि खनन अशुभ है। बहुत जरूरी हो तो इन नक्षत्रों की ५, ११, ७, ६, २, १० घटियां वर्जित हैं।

वत्सचक्र विचार

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें पुनः चक्रानुसार फल विचारें।

वत्स चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शीर्ष	वह्निभय
४	अग्निमपाद	रिक्त, अशुभ
४	पृष्ठपाद	स्थिरता
३	पृष्ठ	श्रीलाभ
४	दक्षिण कुक्षि	शुभलाभ
३	पुच्छ	स्वामिनाश
४	वामकुक्षि	निर्धनता
३	मुख	अशुभ, कष्ट

कुआ खोदने व नल लगाने के लिए चक्र

पूर्व	ऐश्वर्य
अग्नि	सुतहानि
दक्षिण	स्त्रीनाश
नैऋत्य	गृहपतिनाश
पश्चिम	सम्पत्ति
वायव्य	शत्रुभय
उत्तर	सुख
ईशान	पुष्टि
मध्य	अर्थहानि

द्वारस्थापन विचार

सूर्य नक्षत्र से गणना करके चक्र देखकर शुभफलदायक नक्षत्र में चक्रबल शुद्धि में द्वार (मुख्यद्वार) की स्थापना करें।

द्वारस्थापन चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
४	शिर	श्रीप्राप्ति
८	कोण	उद्वंसन
८	शाखा	सौख्य
३	देहली	गृहेशनाश
४	मध्य	सौख्य

जीर्ण व नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्त चक्र

मास	वै. ज्ये. माघ. फाल्गुन
नक्षत्र	३ उ. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में कुम्भ चक्र शुद्धि होने पर
वार	चं. बु. गु. शु.
तिथियां	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३
लग्न	(२, ५, ८, ११) शुभ (३, ६, ९, १२) मध्यम
लग्नशुद्धि	लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १०, ११ स्थानों पर शुभग्रह, ३, ६, ११ पाप तथा ४, ८ स्थान ग्रह रहित श्रेष्ठ हैं।
जीर्ण	उपरोक्त मास तथा श्रा. मार्ग, कार्तिक भी ग्राह्य हैं गुरु शुक्रास्त में भी।
गृह प्रवेश	श. पुष्य, स्वाती और धनिष्ठा नक्षत्रों में भी शुभ है।

कुम्भ चक्र

५	अशुभ
८	शुभ
८	अशुभ
६	शुभ

सूर्य नक्षत्र से गणना कर विचार करें। सूर्य नक्षत्र से गृह प्रवेश तक उक्त चक्रानुसार गणना कर शुभ फल वे समय में ही गृह प्रवेश करना चाहिए।

स्पष्टफल ज्ञान के लिए अन्य कुम्भ चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
१	मुख	अग्निदाह
४	पूर्व	उद्वसन
४	दक्षिण	लाभ
४	पश्चिम	लक्ष्मीप्राप्ति
४	उत्तर	कलह
४	गर्भ	विनाश
३	अधः	स्थिरता
३	कण्ठ	स्थिरता

दुकान (विपणि) करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	रो. तीनों उत्तरा. ह. पुष्य, चि. रे. अनु. मृ. अश्वि
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, १२, १३
अन्य	चन्द्र शुद्धि, शुभलग्न

क्रयनक्षत्र– रे. अ. शत. स्वा. श्र. चित्रा नक्षत्र बुधवार तथा रविवार श्रेष्ठ है।

विक्रय नक्षत्र– पूफा, पूषा, पूभा, वि. कृ. आश्ले. भर. ये सात नक्षत्र गुरुवार और सोमवार श्रेष्ठ हैं।

विशेष– बेचने के नक्षत्रों में खरीदना तथा खरीदने के नक्षत्रों में बेचना हानिप्रद है।

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ह, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा
वार	बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १३

नौकरी करने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, अनु. रे. अ. मृ. पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता, अमा. को छोड़ कर नौकरी शुरू करना श्रेष्ठ है।

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ज्ये. आर्द्रा. मघा. तीनों उत्तरा, मृ. आश्ले. भ.
वार	रवि, बु. गु. शु.
तिथि	३, ५, ८, १०, १३, १५
लग्न	३, ६, ७, ८, १२
लग्न शुद्धि	सूर्य बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष– लग्न में कोई पापग्रह वलशाली हो तो ऐसे लग्न में मुकद्दमा दायर करना अत्यन्त शुभ होता है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	धनिष्ठा, अश्वि. ह. चि. अनु, पुन. पुष्य, ज्ये. एवं रेवती
वार	बुधवार सर्वश्रेष्ठ, अन्य शुभवार
लग्नशुद्धि	श. मं. शु. चं. शुभस्थानों में हो
अन्य	शनि की होरा, चर लग्न

मन्दिर निर्माण का मुहूर्त्त

मास	माघ. फा. वै. ज्ये. मार्ग. पौष.
नक्षत्र	पुष्य उत्तरा ३. मृ. श्र. अश्वि. चि. पुन. आर्द्रा ह. ध. रो
वार	चं. बु. गुरु शुक्र
तिथि	२-३-५-७-११-१२-१३

जलाशय राम सुरप्रतिष्ठा मुहूर्त

समय	उत्तरायण, गुरु, शुक्र व मंगल के बली होने पर
तिथि	शुक्ल पक्ष की १-२-५-१०-१३-१५ कृष्ण पक्ष की १-२-५ मतान्तर से शुक्ल पक्ष की ७-११
नक्षत्र	पुष्य, उत्तरात्रय, ह. रे. रो. अश्वि. मृ. श्र. ध. पुन. मतान्तर से चि. स्वा. भ. मू. अत्यावश्यक होने पर
वार	चं. बु. गु. शु.
लग्नशुद्धि	२, ३, ५, ६, ९, ११, १२ (लग्नराशियाँ) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११वें पापग्रह, अष्टम शुद्ध हो।
अन्य	पूर्वाह्न अपने-अपने मास तिथि, नक्षत्र में दक्षिणायन में प्रतिष्ठा के लिए शास्त्रज्ञा (यथा चतुर्दशी में शंकर चतुर्थी में गणेश) इत्यादि।

जननाशौच एवं मरणाशौच की व्यवस्था

– पं॰ सुरेश शास्त्री, ज्योतिपाचार्य

सपिण्डी के मृत्यु अथवा जन्में ब्राह्मणों को दस दिन का अशौच लगता है। क्षत्रिय को बारह दिन का अशौच होता है। वैश्य को पंद्रह दिन का तथा शूद्र को एक मास का अशौच लगता है। सातवीं पीढ़ी तक सपिण्डता रहती है, उसके बाद सपिण्डता समाप्त हो जाती है। अशौच-काल में होम, दान, प्रतिग्रह, स्वाध्याय आदि वर्जित हैं। अशौच में किसी दूसरे का अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिये तथा अशौच वाले घर जाकर अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए केवल मात्र संवेदना प्रकट करना ही कर्त्तव्य होता है।

गर्भस्राव होने पर जितने मास का गर्भ रहा हो, उतने अहोरात्र का अशौच होता है–

'मासतुल्यैरहोरात्रैर्गर्भस्रावे।'

पैदा होते ही बच्चे के मर जाने पर या मरा हुआ बच्चा जन्मने पर सद्यःशौच होता है–

'जातमृते मृतजाते वा कुलस्य सद्यः शौचम्।'

दाँत न निकले हुए बालक के मरने पर भी सद्यःशौच होता है। इसका न तो अग्नि-संस्कार होता है और न जलांजलि आदि दी जाती है–

'अदन्तजाते बाले प्रेते सद्य एव। नास्याग्निसंस्कारो नोदकक्रिया।'

दाँत निकल गये हों, किंतु चूडाकर्म नहीं हुआ हो ऐसे बालक के मरने पर एक अहोरात्र (रात-दिन) का अशौच हाता है–

'दन्तजाते त्वकृतचूडे त्वहोरात्रेण।'

चूडाकरण हो गया हो, किंतु यज्ञोपवीत न हुआ हो तो तीन दिन का अशौच होता है–

'कृतचूडे त्वसंस्कृते त्रिरात्रेण।'

स्त्रियों का विवाह ही मुख्य संस्कार है। विवाहिता स्त्री यदि ससुराल में मरे तो उसका अशौच (गोत्र आदि भिन्न हो जाने के कारण) मायके वालों को नहीं लगता, किंतु यदि वह पिता के घर आयी हो और प्रसव के कारण उसकी मृत्यु हो जाय तो परम्परानुसार एक दिन या तीन दिन का अशौच होता है–

संस्कृतासु स्त्रीषु नाशौचं भवति पितृपक्षे।
तत्प्रसवमरणे चेत् पितृगृहे स्यातां तदैकरात्रं त्रिरात्रं च।

दो अशौचों की व्यवस्था

जन्म अशौच होने पर यदि अशौच के मध्य जन्म का दूसरा अशौच हो जाय तो पहले अशौच की समाप्ति के साथ ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार दो मरणाशौचों में भी पूर्व के अशौच से दूसरा अशौच समाप्त हो जाता है–

जननाशौचमध्ये यद्यपरं जननाशौचं स्यात् तदा
पूर्वाशौचव्यपगमे शुद्धिः। मरणाशौचमध्ये ज्ञातिमरणेऽप्येवम्।

देशान्तर में जन्म या मृत्यु होने पर अशौच की व्यवस्था

घर से बाहर दूर देश में यदि मृत्यु हो या जन्म हो तो जिस दिन जन्म या मृत्यु हो उसकी सूचना 10 दिन के भीतर जिस दिन भी प्राप्त हो, उस दिन से 10वाँ दिन जब पड़े तो उसी में अशौच पूरा हो जाता है, जैसे यदि किसी की 5 तारीख को मृत्यु हो और 12 तारीख को सूचना मिले तो दो दिन बाद अर्थात् 14 तारीख को दसवें दिन अशौच पूरा हो जायगा। किंतु यदि अशौच पूरा होने के बाद (10 दिन के बाद) साल भर के अंदर जन्म मृत्यु की सूचना मिले तो एक दिन का अशौच होता है। और यदि साल भर बाद सूचना मिले तो स्नानमात्र से शुद्धि हो जाती है–

श्रुत्वा देशान्तरस्थजननमरणे शेषेण शुध्येत्।
व्यतीतेऽशौचे संवत्सरान्तस्त्वेकरात्रेण। ततः परं स्नानेन।

तीन दिन और एक दिन का अशौच

आचार्य (गुरु) और नाना का तीन दिन का अशौच लगता है। गुरु पत्नी, गुरु पुत्र, उपाध्याय, मामा, ससुर, ससुर का पुत्र, सहपाठी, शिष्य तथा अपने देश के राजा के मरने पर एक दिन अशौच होता है। इसी प्रकार असपिण्डी के अपने घर में मरने पर भी एक दिन का अशौच लगता है–

आचार्ये मातामहे च व्यतीते त्रिरात्रेण।
आचार्यपत्नी - पुत्रोपाध्यायमातुलश्व-
शुरश्वशुर्यसहाध्यायिशिष्येष्वतीतेष्वेकरात्रेण।
स्वदेशराजनि च। असपिण्डे स्ववेश्मनि मृते च। (अ॰22)

किसका अशौच नहीं लगता

जो आत्महत्यारे हैं तथा जो पतित हैं, उनका न अशौच होता है और न ही वे जलांजलि तथा श्राद्ध आदि के भागी होते हैं–

आत्मत्यागिनः पतिताश्च नाशौचोदकभाजः। (अ॰22)

पञ्चाङ्ग निरूपणम्

वर्षायनर्तवो मासो दिनं चेत्यङ्गपञ्चकम्।
कालस्य व्यवहारार्थं लोके कैश्चित् प्रकीर्तितम्॥

वर्ष मासो दिनं लग्नं मुहूर्तश्चोति पञ्चकम्।
पञ्चाङ्ग कथितं तस्य शुद्धयशुद्धी निरूपिते॥

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
पञ्चाङ्गं कथितं विज्ञैस्तत्स्वरूपं निरूप्यते॥

भूमण्डल में व्यवहार के लिए वर्ष, अयन, ऋतु, मास तथा दिन– इन पाँच अङ्गों को प्रधान माना गया है। वर्षमास दिन लग्न और मुहूर्त इन पाँचों को पञ्चाङ्ग मानकर शुभाशुभ फलादेश का विचार किया जाता है, वस्तुतः काल के सभी अङ्गों को पञ्चाङ्ग शब्द की संज्ञा दी गई है।

यथाखिलेन्द्रियजन्तोः पञ्चेन्द्रियमुदीर्यते।
तथा कालस्य सर्वाङ्गं पञ्चाङ्गमिति कथ्यते॥

जैसे हमारी सभी इन्द्रियों को 'पञ्चेन्द्रिय' कहते हैं उसी प्रकार काल के समस्त अङ्ग पञ्चाङ्ग नाम से जाने जाते हैं। मुख्यतया सभी विद्वान तिथि, वार, नक्षत्र योग और करण को ही प्रधान मानते हैं अतः इन्हीं पाँच अङ्गों का स्वरूप और शुभाशुभत्व का निरूपण करते हैं।

वर्षनिरूपणम्

वर्ष-सौर, चान्द्र, सावन तथा बार्हस्पत्य चार प्रकार के होते हैं, सौर वर्ष देवताओं (उत्तरी ध्रुव स्थान निवासियों) और राक्षसों (दक्षिणी ध्रुव स्थान वासियों) का एक अहोरात्र होता है। सभी कार्यों में सौर और चान्द्रमानों का व्यवहार होता है। यज्ञ, प्रायश्चित्त सूतकादि कार्यों में 'सावन मान' का व्यवहार होता है। 'बार्हस्पत्य संवत्सर' से भूमि पर सुभिक्ष, दुर्भिक्षादि का विचार किया जाता है। प्रत्येक पञ्चाङ्ग में बार्हस्पत्य वर्ष का शुभशुभ फल लिखा रहता है।

वर्षेशः

चैत्रे शुक्लप्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।
उदयद्वितये पूर्वो नोदययुगलेऽपि पूर्वः स्यात्॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन जो वार रहता है उसका स्वामि राजा होता है, यदि दो दिन सूर्योदय व्यापिनी प्रतिपदा हो तो पूर्व दिन का वारेश, यदि किसी भी दिन सूर्योदय व्यापिनी प्रतिपदा न हो तो भी पूर्व दिन का वार पति ही वर्षेश होता है।

मकरन्द में वर्ष में शुभाशुभ फलप्रद सात अधिकारी कहे गए हैं, यथा–

चैत्रादि-मेषादि-कुलीर, तौलि मृगाननार्द्रा धनुरादि वाराः
राजा चमू सस्य रसाधिनाथाः स्युर्नीरसेशाम्बुधि धान्य नाथः

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का वाराधिपति राजा, वैशाख संक्रांति का वाराधिप मन्त्री, श्रावण (कर्क) संक्रान्ति का वारेश पूर्वधान्येश, कार्तिक संक्रान्ति वाराधिपति रसेश, भाद्रपद संक्रान्ति का वारेश नीरसेश, सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में जब प्रवेश करता है उस वार का अधिपति मेघेश, पोष संक्रान्ति का वाराधिप अग्रधान्येश होते हैं।

इनमें शुभग्रह यदि अधिकारी हों तो शुभफलप्रद, यदि पाप ग्रह हों तो पापफलप्रद होते हैं, सभी शुभ ग्रह आ जाएं तो सर्वोत्तम शुभफलप्रद, शुभ एवं पाप ग्रह बराबर हों तो मध्यमफलप्रद, पाप ग्रह यदि अधिक अधिकारी हों तो पाप फल भी अधिक हो जाता है।

अयन निरूपणम्

एक सौर वर्ष में दो अयन होते हैं, सूर्य का उत्तर चलन सौम्यायन (उत्तरायन) दक्षिण चलन याम्यायन (दक्षिणायन) कहलाता है–

भानोर्मकरसंक्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम्।
कर्क संक्रान्तिश्चैवं षण्मासा दक्षिणायनम्॥

सूर्य की मकर संक्रान्ति से छः मास उत्तरायन और कर्क संक्रान्ति से छः मास दक्षिणायन होता है।

सौम्यं देवदिनं तत्तु याम्यं दैत्यदिनं स्मृतम्।
कुर्याद्याम्यायनेऽप्युग्रं कर्म सौम्यायने शुभम्॥
सौम्यऽयने भवत्यर्कः सुरश्मिश्च शुभप्रदः।
असौ याम्यायने गच्छन् विरश्मिर्विबलस्तथा॥

उत्तरायण देवताओं का, दक्षिणायन दैत्यों का दिन होता है, दक्षिणायन में उग्रकर्म करने चाहिए और शुभकृत्य उत्तरायण में करने चाहिए क्योंकि उत्तरायण में सूर्य किरणें स्वच्छ और शुभफलप्रद होती हैं, दक्षिणायन में विकृत किरणों वाला सूर्य निर्बली होता है।

ऋतुनिरूपणम्

मीनादि द्विद्विराशिस्थे सूर्ये षट्वर्त्तवः स्मृता।
क्रमाद् बसन्तो ग्रीष्मश्च वर्षर्तुश्च शरत् तथा।
हेमन्तः शिशिरेश्चेति विज्ञेयाः सौरमानतः।
एवं चैत्रादिमासाभ्यां द्वाभ्यां द्वाभ्यां तथैन्दवाः॥

मीनादि दो-दो राशियों में सूर्य के रहने से क्रमशः (1) बसन्त, (2) ग्रीष्म, (3) वर्षा, (4) शरद्, (5) हेमन्त और (6) शिशिर ये छः ऋतुएं सौर मान से होती हैं इसी प्रकार त्रैचादि दो-दो चान्द्रमासों की बसन्तादि छः चन्द्र ऋतुएँ होती हैं।

विंध्य से उत्तर सौर ऋतु और विंध्य से दक्षिण चान्द्र ऋतु व्यवहार में लाई जाती है।

चैत्रादि-द्विद्विमासाभ्यां वसन्तादृतवश्चषट्।
दाक्षिणात्याः प्रशंसन्ति देवे पैत्र्ये च कर्मणि॥

सौरमान से षट् ऋतुओं को देवकर्म में और चान्द्रमान से छः ऋतुओं को पितृकर्म में प्रशस्त माना गया, ऐसा दक्षिण भारत के विद्वानों का मत है।

ऋतुओं के स्वामी

भृगोर्वसन्तः क्षितिसूनु-भान्वोर्ग्रीष्मः शशाङ्कस्य तथा प्रवर्षाः।
विदः शरद्देवगुरोस्तु हेमन्तऋतुः शनेः स्याच्छिशिरश्च कालः॥

	ऋतु	स्वामी
1.	वसन्त	शुक्र
2.	ग्रीष्म	सूर्य-मंगल
3.	वर्षा	चन्द्रमा
4.	शरद्	बुध
5.	हेमन्त	गुरु
6.	शिशिर	शनि

चान्द्र ऋतु में अन्य विशेषताएँ

जब तक सौर वर्ष (12 सूर्य संक्रान्ति) में 12 दर्शान्त होते हैं तब तक दो-दो चान्द्रमास की ऋतुएँ भी होती हैं। परन्तु जब अधिमास होता है तब 12 सूर्य संक्रान्ति में 13 अमान्त होते हैं अतः 13 चान्द्रमास होने से एक ऋतु तीन मास की भी होती है। चान्द्र ऋतु चञ्चल और सौर ऋतु सदा स्थिर (एकरूप) रहती है आचार्य भास्कराचार्य ने कहा है—

वर्षायनर्तु-युग पूर्वकमत्र सौरान्मासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशुमानात्।
यत् कृच्छ्र-सूतक-चिकित्सितवासराद्यं तत् सावनाच्च घटिकादिकमार्क्षमानात्॥

मास निरूपणम्

मासश्चतुर्विधः सौरश्चान्द्रश्चार्क्षश्च सावनः।
सौरो मासस्तु सूर्यस्य संक्रमात् संक्रमावधिः॥
दर्शाद् दर्शावधिश्चान्द्रः सावनः ख त्रि-वासरैः।
भदिनत्रिंशतो मासो नाक्षत्रः परिकीर्तितः॥

सौर, चान्द्र, नाक्षत्र और सावन चार प्रकार के मास होते हैं सूर्य भगवान की राशि संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति तक सौर, दर्शान्त से दर्शान्त पर्यन्त 30 तिथियों का एक चान्द्र मास जो चन्द्रलोक वासियों के लिए एक अहोरात्र होता है। 30 सावन (सूर्योदय से सूर्योदय तक) दिन का एक सावन दिन और तीस नक्षत्र दिनों का एक नाक्षत्र मास होता है।

पक्ष निरूपणम्

बुधैश्चन्द्रमसो मासे द्वौ पक्षौ परिकीर्तितौ।
दर्शान्तात् पूर्णिमां यावत् शुक्लोऽन्यः कृष्णपक्षकः॥
चन्द्रस्य शुक्ल वृद्धत्वाच्छुक्लो देवगणप्रियः।
शुक्लस्यापचयात् पक्षः कृष्णाख्यः पितृतुष्टिदः॥

प्रत्येक चान्द्रमास में दो पक्ष होते हैं दर्शान्त से पूर्णमान्त पर्यन्त 'शुक्ल पक्ष' तथा पूर्णिमान्त से दर्शान्त तक 'कृष्णपक्ष' कहलाता है शुक्लपक्ष में चन्द्रमा की वृद्धि होने के कारण शुक्ल पक्ष देवताओं का प्रिय और कृष्ण पक्ष में शुक्लत्व ह्रास होने के कारण पितृगण का प्रिय कहा गया है।

चन्द्रमा का पूर्णत्व और क्षीणत्व

शुक्लाष्टमीदलादूर्ध्वं यावत् कृष्णाष्टमीदलम्।
पूर्णः पूर्णबलो ज्ञेयश्चन्द्रः क्षीणस्ततोऽन्यतः॥

शुक्लपक्ष अष्टमी के उत्तरार्ध से कृष्ण पक्ष सप्तमी के पूर्वार्ध तक चन्द्रमा पूर्णवली तथा अन्य तिथियों में क्षीण समझना।

कृष्णपक्षोदितं कर्म शुक्लपक्षेऽपि कारयेत्
कृष्णे तु पञ्चमीं यावत् कर्म शुक्लोदितं चरेत्॥

कृष्णपक्ष विहित कर्म को शुक्लपक्ष में करना और शुक्ल पक्ष विहित कर्म कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तक करना चाहिए।

तिथि निरूपणम्

जिज्ञासुओं के अभ्यासार्थ तिथियों की संज्ञा– (1) प्रतिपद, (2) द्वितीया, (3) तृतीया,(4) चतुर्थी, (5) पञ्चमी, (6) षष्ठी, (7) सप्तमी, (8) अष्टमी,

(9) नवमी, (10) दशमी, (11) एकादशी, (12) द्वादशी, (13) त्रयोदशी, (14) चतुर्दशी, (15) पञ्चदशी।

शुक्ल पक्ष की पञ्चदशी पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की पञ्चदशी अमावस कहलाती है। अमावास्या के दो भेद हैं–

सिनीवाली कुहूभेदादमावास्या द्विधा स्मृता।
सा दृष्टेन्दुः 'सिनीवाली' सा नष्टेन्दुकला 'कुहूः'

जिस अमावास्या में चन्द्रकला दृश्य हो वह 'सिनीवाली' तथा जिसमें चन्द्रकला दृश्य नहीं होती वह 'कुहू' कहलाती है।

अमावास्या की विशेषता

पूर्वापराभ्यां सहितस्तिथिभ्यां निहन्ति दर्शो निचयं गुणानाम्।
तमेव हित्वाऽमृतसिद्धि योग स्तिथेरशेषानपि हन्ति दोषान्॥

अमावास्या अपने पूर्व तथा पर तिथियों के सहित (कृष्णपक्ष 14, 30 शुक्लपक्ष 1 में) गुणों को नष्ट करने वाली होती है। किन्तु अमावास्या को छोड़कर 14, 1 इनमें सिद्धियोग (शनि में चतुर्दशी, शुक्र में प्रतिपदा) हो तो सभी दोषों को नष्ट कर देती है अर्थात् यज्ञ और पितृकार्य को छोड़कर अमावास्या में समस्त शुभकार्य निन्ध कहे हैं।

पूर्णिमा के भी दो भेद होते हैं–

कलाहीने साऽनुमतिः पूर्णे 'राका' निशाकरे

जिस पूर्णिमा के अन्दर ही चन्द्रविम्ब कलाहीन हो वह 'अनुमति' और जिसमें आरम्भ से अन्त तक चन्द्रबिम्ब पूर्ण हो वह 'राका' कहलाती है।

तिथियों के देवता

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी
1	अग्नि	9	दुर्गा
2	ब्रह्मा	10	यम
3	गौरी	11	विश्वेदेव
4	गणेश	12	विष्णु
5	नाग	13	काम
6	स्कन्द	14	शिव
7	सूर्य	15	चन्द्रमा
8	शङ्कर	30	चन्द्रमा

तिथियों की नन्दादि संज्ञा

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता, पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात् स्युः।
कनिष्ठ-मध्येष्ट फलास्तु शुक्ले, कृष्णे भवन्त्युत्तम-मध्य-हीनाः॥

शुक्लपक्ष	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	कृष्णपक्ष
कनिष्ठ	1	2	3	4	5	श्रेष्ठ
मध्य	6	7	8	9	10	मध्य
श्रेष्ठ	11	12	13	14	15	कनिष्ठ

नन्दादि तिथियों के कृत्य

नन्दासु चित्रोत्सव-वास्तु तन्त्र-क्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नित्यम्।
विवाह-भूषा-शकटाध्वयाने, भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि॥

जयासु संग्राम-बलोपयोगि कार्याणि सिद्ध्यन्ति विनिर्मितानि।
रिक्तासु तद्वद्रिपु-वन्धघात विषाग्नि शस्त्राणि च यान्ति सिद्धिम्॥

पूर्णासु माङ्गल्य विवाह यात्रासपौष्टिकं शान्तिककर्म कार्यम्।
सदैव दर्शे पितृकर्म मुक्त्वा नान्यद् विदध्याच्छुभमङ्गलानि॥

स्पष्टार्थ चक्रम्

तिथियाँ	कृत्यानि
1, 6, 11	चित्रकला, वास्तु इत्यादि
2, 7, 12	विवाहादि शुभ कार्य
3, 8, 13	संग्रामादि कार्य
4, 9, 14	शत्रुनाश के उपाय
5, 10, 15	विवाहादि मङ्गल कार्य

पक्षरन्ध्र तिथियाँ तथा उनकी त्याज्य घटी

वेदाङ्गाष्ट नवार्केन्द्र पक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत्।
वस्वङ्कमनु तत्त्वांशा-शरा नाडीः पराः शुभाः॥

चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी– ये पक्षरन्ध्र (शेष सहित) तिथियां हैं– क्रम से 8, 9, 14, 15, 10, 5 घड़ी प्रारम्भ से दोषयुक्त होती हैं अतः शुभकार्यों के लिए सर्वदा वर्जित है, शेष घड़ी शुभफलप्रद होती है।

तिथियों में निषेध

षष्ठाष्टमी-भूत विधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैल पले क्षुररतम्।
नाभ्यञ्जनं विश्व दश द्विके तिथै धात्रीफलैः स्नानभमाद्रिगोष्सवत्।

षष्ठी में तेल, अष्टमी में मास, चतुर्दशी में क्षौर (हजामत करवाना) और अमावास्या में रतिक्रिया (स्त्री सम्भोग) न करें। त्रयोदशी, दशमी, द्वितीया में अभ्यङ्ग (शरीर के मलोद्वर्तन) न करें तथा अमावास्या सप्तमी नवमी इन तिथियों में आमल के फल से स्नान न करें, केवल पुरुषों के लिए मनाही है।

शनौ षष्ठयां स्मृतं तैलं महाष्टम्यां पलाशनम्।
क्षौरं शुक्ल चतुर्दश्यां दीपमाल्यां च मैथुनम्॥

शनिवार षष्ठी में तेल, आश्विन शुक्लाष्टमी में मांस, शुक्ल चतुर्दशी में क्षौर और दीपावली की अमावास्या में रतिक्रिया (मैथुन कर्म) प्रशस्त होते हैं।

वार निरूपणम्

रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति शुक्र और शनि ये सात वार है– ये सूक्ष्म और स्थूल भेद से दो प्रकार के हैं। एक पूर्ण अहोरात्र (60 घटी अथवा 24 घण्टे) दूसरा केवल एक होरा (24 मिनट) मात्र होता है। यज्ञ सूतकादि कर्म में अपने-अपने सूर्योदय काल से सबके अलग-अलग होते हैं किन्तु यात्रा, विवाहादि कार्यों में विहित अथवा निषिद्धवार भूमण्डलवासियों के लिए लंका सूर्योदय काल से ग्राह्य हैं, क्योंकि लंका में सूर्योदय के समय में ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का प्रारम्भ किया है।

वारक्रम

रविवार के बाद चन्द्र, मङ्गल आदि का क्रम क्यों हुआ? रविवार के बाद मंगल या शनिवार ही क्यों नहीं आया? सोमवार क्यों आया।

प्रलय के अन्त में जब सूर्योदय हुआ तो भारतीय ऋषियों ने प्रथम होरा 'सूर्य' की स्वीकार की उसके बाद दूसरी होरा शुक्र की मानी जो इसके निकटवर्ती ग्रह है, तीसरी होरा बुध की जो शुक्र के समीपस्थ है, चौथी होरा चन्द्रमा की, पाँचवीं शनि की, छठी होरा गुरु की, सातवीं होरा मंगल की मानी, उसके पश्चात् जब सूर्योदय हुआ तो पहली होरा चन्द्रमा की हुई अतः भारतीय महर्षियों ने रविवार के बाद दूसरे दिन का नाम सोमवार रखा।

सूर्यादिवारों के शुभत्व और अशुभत्व

शुक्रेज्जबुधचन्द्राणां वाराः सर्वत्र शोभनाः।
रविभूसुतमन्दानां शुभकर्मसु केषुचित्॥

बुध, वृहस्पति और शुक्रवार सभी कार्यों में प्रशस्त हैं रवि मंगल और शनिवार शुभकार्यों में वर्जित हैं किन्तु किसी-किसी शुभकार्य में प्रशस्त होते हैं।

रवि आदि वारों में कृत्य

रविवार	राजाभिषेक, उत्सव, यात्रा, नौकरी, गो सेवा, अग्नि सम्बन्धी कार्य मन्त्र, औषध, स्वर्ण, ताम्बा, ऊन, चमड़ा, लकड़ी, युद्ध तथा क्रय विक्रय का व्यवहार करना।
सोमवार	जल सम्बन्धी शङ्ख, सीप मोती आदि का व्यवहार करना
मंगलवार	शत्रुओं में फूट करवाना, क्रूर कार्य, खनिज पदार्थ, स्वर्ण, मूंगे आदि का व्यवहार करना
बुधवार	उच्च शिक्षा, व्यापार, अध्ययन आदि कार्य करना
वृहस्पतिवार	सब प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान
शुक्रवार	स्त्री, संगीत, शय्यादि करना।
शनिवार	लोहा, पत्थर, सीसा, रंग नीले काले पदार्थ, चोरी आदि निकृष्ठ कर्म, गृह प्रवेश, हाथी बाँधना (गाड़ी खरीदना) मशीनरी चालू करना मन्त्रग्रहण आदि स्थिर कार्य करना।

वारदोष परिहार

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैतेज्य-दिवाकराणाम्
दिवा न चन्द्रार्कजभूसुतानां, सर्वत्र निन्धो बुधवारदोषः॥

गुरू, शुक्र और रवि का दोष रात्रि में नहीं होता। चन्द्र, मंगल तथा शनि का दोष दिन में नहीं होता। बुधवार में जो दोष कथित हैं वह दिन और रात्रि में भी होता है।

मंगल तथा बुधवार के कर्त्तव्य

ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे।
ऋणच्छेदं कुजे कुर्याद् बुधे च धनसङ्ग्रहम्॥

मंगलवार ऋण नहीं लेना चाहिए बुधवार ऋण देना नहीं चाहिए। मंगलवार को ऋण चुकाना और बुधवार धन सञ्चय करना चाहिए।

नक्षत्र निरूपणम्

भास्कराचार्य के अनुसार

सृष्ट्वा भचक्रं कमलोद्भवेन, ग्रहैःसहैतद् भगणादिसंस्थैः।
शश्वद्भ्रमे विश्वसृजा नियुक्तं तदन्ततारे च तथा ध्रुवत्वे॥

विश्व-रचयिता ब्रह्मा ने 360 अंश परिणाम परिधिवाले भ चक्र स्थित 180 अंश अन्तरित उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवतारा गत धुरी (अक्ष) पर भ चक्र को स्थिर कर ध्रुवतारा से 90 अंश पर स्थित 'रेवती' नामक तारा के साथ ही सूर्यादि सातों ग्रहों को अनवरत समगति से पश्चिमाभिमुख भ्रमण शक्ति देकर नियुक्त किया।

भ्रमण करते हुए भचक्र में नक्षत्र तो अपने-अपने स्थान में स्थिर रहते हैं किन्तु सूर्यादि ग्रह ईश्वर प्रदत्त स्वशक्ति से पूर्वाभिमुख चलित होते रहते हैं जिससे उन ग्रहों का सब नक्षत्रों से सम्पर्क होता रहता है। इसी कारण से ही समय में प्रतिक्षण विभिन्नता होती रहती है।

नक्षत्रों की ध्रुवस्थिरादि संज्ञाएँ

उत्तरात्रयरोहिण्यो ध्रुवाख्याश्च स्थिराः स्मृताः।
स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चराख्यानि चलानि च॥
पूर्वात्रयं मघायाम्यं क्रूराख्यं चेति पञ्चकम्।
कृत्तिका च विशाखा च द्वावेते मिश्रसंज्ञके॥
हस्तोऽश्विन्यभिजित् पुष्यो लघुसंज्ञं चतुष्टयम्।
चित्रा मित्रं मृगोऽन्त्यं च मृदुसंज्ञं प्रकीर्तितम्॥
ज्येष्ठामूल शिवःश्लेषा तीक्ष्णमेतच्चतुष्टयम्।
स्व स्व संज्ञानुसारेण सर्वमेतत् फलप्रदम्॥

तीनों उत्तरा और रोहिणी ये ध्रुव और स्थिर संज्ञक हैं, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा– ये चर और चल संज्ञक हैं। तीनों पूर्वा, मघा और भरणी ये पाँचों क्रूर संज्ञक है। अश्विनी और विशाखा ये दो मिश्र संज्ञक है। अश्विनी अभिजित् हस्त और पुष्य ये लघु (क्षिप्र) संज्ञक हैं। चित्रा अनुराधा, मृग्शिरा और रेवती थे– मृदु संज्ञक हैं, ज्येष्ठा मूला, आर्द्रा और आश्लेषा थे। तीक्षण संज्ञक हैं– अपने-अपने नाम तुल्य फलादेश करते हैं।

अथ योग निरूपणम्

सूर्येन्दुगतिसंयोगः खाभ्राष्टकलिकामितः।
योगो विष्कम्भकाद्यास्ते सप्तविंशतिसम्मिताः॥

सूर्य तथा चन्द्रमा गति योग जब 800 कला तुल्य होता है तो एक योग कहलाता है। भचक्र में 'विष्कम्भ' आदि नाम से उनकी संख्या 27 है।

(1) विष्कम्भ, (2) प्रीति, (3) आयुष्मान्, (4) सौभाग्य, (5) शोभन, (6) अतिगण्ड, (7) सुकर्मा, (8) धृति, (9) शूल, (10) गण्ड, (11) वृद्धि, (12) ध्रुव, (13) व्याघात, (14) हर्षण, (15) वज्र, (16) सिद्धि, (17) व्यतीपात, (18) वरीयान्, (19) परिघ, (20) शिव, (21) सिद्ध, (22) साध्य, (23) शुभ, (24) शुक्ल, (25) ब्रह्म, (26) ऐन्द्र, (27) वैधृति।

ये अपने-अपने नाम-तुल्य फलप्रद हैं। इसलिये विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ और वैधृति– ये दुर्योग कहे गये हैं। शेष सब सुयोग हैं।

अथ करण निरूपणम्

तिथ्यर्धं करणं प्रोक्तं तानि चैकादशैव हि।
तेषु स्थिराणि चत्वारि सप्तसन्ति चराणिच॥

तिथ्यर्ध को करण कहते हैं। एक मास में तिथ्यर्ध तो 60 होते हैं किन्तु करण 11 ही हैं उनमें चार स्थिर और सात चर करण होते हैं– शुक्लपक्ष – कृष्णपक्ष के अनुसार करण चक्र लिखते हैं।

तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध
प्रतिपदा	किंस्तुघ्न	बव	प्रतिपदा	बालव	कौलव
द्वितीया	बालव	कौलव	द्वितीया	तैतिल	गर
तृतीया	तैतिल	गर	तृतीया	वणिज	विष्टि
चतुर्थी	वणिज	विष्टि	चतुर्थी	बव	बालव
पञ्चमी	बव	बालव	पञ्चमी	कौलव	तैतिल
षष्ठी	कौलव	तैतिल	षठी	गर	वणिज
सप्तमी	गर	वणिज	सप्तमी	विष्टि	बव
अष्टमी	विष्टि	बव	अष्टमी	बालव	कौलव
नवमी	बालव	कौलव	नवमी	तैतिल	गर
दशमी	तैतिल	गर	दशमी	वणिज	विष्टि
एकादशी	वणिज	विष्टि	एकादशी	बव	बालव
द्वादशी	बव	बालव	द्वादशी	कौलव	तैतिल
त्रयोदशी	कौलव	तैतिल	त्रयोदशी	गर	वणिज
चतुर्दशी	गर	वणिज	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
पूर्णिमा	विष्टि	बव	अमावास्या	चतुष्पद	नाग

इन सभी करणों में भद्रा का विशेष महत्त्व कहा गया है प्रतिमास आठ तिथ्यर्धों में ही भद्रा रहती हैं, यथा–

भद्राविचार

शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमी पञ्चदश्यो–
भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे॥
कृष्णेऽन्त्यार्धे स्यात् तृतीया दशम्योः।
पूर्वे भागे सप्तमी शम्भुतिथ्योः॥

शुक्ल पक्ष को अष्टमी एवं पञ्चदशी के पूर्वार्ध, चतुर्थी एकादशी के उत्तरार्ध में तथा– कृष्णपक्ष में तृतीया, दशमी तिथि के उत्तरार्ध और सप्तमी चतुर्दशी पूर्वार्ध में भद्रा रहती है।

शुक्लपक्ष	कृष्ण पक्ष
8–15 पूर्वार्ध	7–14 पूर्वाध
4–11 उत्तरार्ध	3–10 उत्तरार्ध

क्रम से इनके नाम

कराली नन्दिनी रौद्री सुमुखी दुर्मुखी तथा।
त्रिशिरा वैष्णवी हंसी विष्टेः संज्ञा प्रकीर्तिताः॥

कराली, नन्दिनी, रौद्री, सुमुखी, दुर्मुखी त्रिशिरा, वैष्णवी तथा हंसी क्रम से भद्रा के नाम है, नाम सदृश ही फलादेश होती है। तिथि के पूर्वार्ध में दिवाभद्रा और उत्तरार्ध में रात्रि भद्रा कहलाती हैं। दिवाभद्रा दिन में और रात्रि भद्रा रात्रि में 'क्रमागत' और इससे विपरीत 'अक्रमागत' कहलाती है। दिवा भद्रा रात्रि में और रात्रि भद्रा दिन में शुभप्रद होती है यथा– वृहस्पति।

दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिवा।
भद्रादोषस्तथा न स्यात् सा भद्रा भद्रदायिनी॥

तथा–

विष्टिस्तु सर्वथा त्याज्या क्रमेणैवागता तु या।
अक्रमेणगता भद्रा सर्वकार्येषु शोभना॥

अर्थात् पूर्वार्ध की भद्रा दिन में और उत्तरार्ध की भद्रा रात्रि में त्याज्य है। इसके विपरीत पूर्वार्ध की भद्रा रात्रि में और उत्तरार्ध की भद्रा दिन में समस्त कार्यों में प्रशस्त होती है।

यहाँ बहुत से विद्वान जन समस्त (तिथ्यर्ध) भद्रा को त्याज्य समझ लेते हैं परन्तु यह प्रामादिक समझना। भद्रा शब्द से केवल भद्रा का मुख भाग 5 घड़ी मात्र त्याज्य है।

स्पष्टार्थ चक्र द्वारा प्रस्तुत है।

	शुक्लपक्ष				कृष्णपक्ष			
तिथि	चतुर्थी	अष्टमी	एकादशी	पूर्णिमा	तृतीया	सप्तमी	दशमी	चतुर्दशी
प्रहर	5	2	7	4	8	3	6	1
मुख घटी	5	5	5	5	5	5	5	5
प्रहर	8	1	6	3	7	2	5	4
पुच्छ घटी	3	3	3	3	3	3	3	3
दिशा	प॰	अ॰	उ॰	नै॰	ई॰	द॰	वा॰	पू॰

भद्रामुख एवं भद्रा पुच्छ विचार

सम्पूर्ण तिथिमान (घटीपल) को अहोरात्र मानकर उसके आठ विभागों को आठ पहर मानकर मुख और पुच्छ घटी का ज्ञान करना चाहिए। त्याज्य भद्रा में केवल भद्रा के मुख भाग का ही ग्रहण करना चाहिए। अतः भद्रा में केवल मुख घटी मात्र त्याज्य है तथा पुच्छ घटी तो सभी कार्यों में अत्यन्त शुभ फलप्रद होती है, यथा–

पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यप्यशुभानि वा।
तानि सर्वाणि सिद्धयन्ति विष्टिपुच्छे न संशयः॥

पूर्णिमा के कृत्यों में भद्रा विचार

"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा"

अर्थात् शुभकार्य के समान ही भद्रा में होलिकादाह एवं रक्षाबन्धन उपाकर्म, ये दो नहीं करने चाहिए। वहाँ भी भद्रा शब्द से **मुखघटी** मात्र समझना चाहिए। यहाँ कुछ लोग समझते हैं कि भद्रा में केवल दो ही (श्रावण और फाल्गुनी) मात्र नहीं करना, अन्य कर्म में भद्रा का दोष नहीं होता है, ऐसा अर्थ ऋषिवचनों के विरुद्ध है।

वार के अनुसार भद्रा के नाम

सोमे शुक्रे च 'कल्याणी' शनिवारे तु 'वृश्चिकी'
गुरौ 'पुण्यवती' सूर्यबुधभौमेषु भद्रिका॥

सोमवार शुक्रवार को भद्रा कल्याणी, शनिवार वृश्चिकी वृहस्पतिवार पुण्यवती और सूर्य, बुध, मंगल वारों में भद्रिका कहलाती है– इसमें शनिवार भद्रा अशुभ मानी जाती है।

वस्तुतः करण (भद्रा) का दोष तुच्छ दोषों में माना जाता है, यह अन्य गुणों के रहते स्वयमेव नष्ट हो जाता है, यथा–

भ तिथिकरण दोषा वार योगोद्भवा वा।
सपदि शशिनि शस्ते नाशमायान्ति सर्वे॥
सकल विविधदोषाः सद्गुणत्वं व्रजन्ति।
भवति यदा सुकार्ये चित्तशुद्धिर्नराणम्॥

किसी भी कार्य में चन्द्रमा प्रशस्त हो तो तिथि नक्षत्र करण वार एवं योगों का दोष नाश हो जाता है। किसी भी कार्य में मनुष्य की मनःशुद्धि हो तो समस्त दोषों का नाश हो जाता है और कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं।

राशिस्वरूप तथा राश्याधिपति

राजा होने के कारण सूर्य और चन्द्रमा 6-6 राशियों के अधिकारी हुए। सूर्य ने सिंह राशि पर अपना अधिकार बनाया और चन्द्रमा ने कर्क राशि को अपना स्थान बनाया एवं सिंह के आगे की छः राशियाँ सूर्य के तथा चन्द्रमा के पीछे को छः राशियाँ चन्द्रमा के अधिकार में हुई। बुध को राजकुमार होने के कारण सूर्य ने अपने समीपस्थ **कन्या** में और चन्द्रमा ने **मिथुन** में स्थान दिया। तदनन्तर मन्त्री ग्रह शुक्र को सूर्य ने **तुला** और चन्द्रमा ने **वृष** में स्थान दिया। सेनापति मंगल को सूर्य ने **वृश्चिक** में और चन्द्रमा ने **मेष** में स्थान दिया देवगुरु वृहस्पति को सूर्य ने **धनु** में और चन्द्रमा ने **मीन** में स्थान दिया। भृत्यग्रह शनि को सूर्य ने **कुंभ** और चन्द्रमा ने **मकर** में स्थान दिया। इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों को दो-दो राशियों का आधिपत्य प्राप्त हुआ।

लग्न की अन्धादि संज्ञा

मेष वृष और सिंह– ये तीनों लग्न दिन में, मिथुन कर्क और कन्या– ये तीनों लग्न रात्रि में, 'अन्धसंज्ञक' होते हैं। तुला वृश्चिक– ये दिन में, धनुमकर रात्रि में, **'बधिर'** संज्ञक होते हैं। कुंभ दिन में तथा मीन रात्रि में तथा **'पंगु संज्ञक'** होते हैं– ये अंधादि लग्न विवाह आदि शुभ कार्य में त्याज्य होते हैं।

परिहार

लग्नात् केन्द्रे त्रिकोणे वा यद्येकोऽपि शुभग्रहः।
तदा लग्नगता दोषाः सर्वे नश्यन्त्यसंशयम्॥

यदि लग्न से केन्द्र या त्रिकोण स्थान में एक भी शुभ ग्रह (बुध, वृहस्पति, शुक्र) हो तो लग्नगत अन्धकत्वादि सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। समस्त ज्योतिष शस्त्रकार महर्षियों

एवं आचार्यों का मत है कि सूर्य आत्मा, चन्द्रमा मन और लग्न शरीर हैं अतः सूर्य, चन्द्रमा और लग्न ये तीनों प्रबल हों तो वर्ष, मास, अयन वार नक्षत्र तिथि आदि समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं।

तिथिवारभव सिद्धयोग

शुक्रेनन्दा बुधे भद्रा जया मंगलवासरे।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धख्याः कार्यसिद्धदाः॥

शुक्रवार में नन्दा 1, 6, 11, बुधवार में भद्रा 2, 7, 12 मंगलवार में जया 3, 8, 13, शनिवार में रिक्ता 4, 9, 14 और गुरुवार में पूर्णातिथि 5, 10, 15 तिथि हो तो कार्यसिद्धिकारक 'सिद्धयोग' कहलाता है।

अमृतयोग

रविमङ्गलयोर्नन्दा भद्रा भार्गवचन्द्रयोः।
जया बुधे गुरौ रिक्ता पूर्णार्कौ चामृताह्वयाः॥

रविवार और मंगल वारों में नन्दा 1, 6, 11 शुक्र और सोमवारों भद्रा 2, 7, 12 बुधवार में जया 3, 8, 13, गुरु में रिक्ता 4, 9, 14 और शनि में पूर्ण 5, 10, 15 तिथियां अमृत योग कारक होती है।

श्रेष्ठतम सर्वार्थ सिद्धियोग

वार	नक्षत्राणि
रविवार	हस्त, मूल, उत्तरा-3, अश्विनी
सोमवार	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा
मंगलवार	अश्विनी, उ.भा., कृत्तिका, आश्लेषा
बुधवार	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा
गुरुवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु एवं श्रवण
शुक्रवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु एवं श्रवण
शनिवार	श्रवण, रोहिणी, स्वाती

उक्त चक्रानुसार सर्वश्रेष्ठ सर्वार्थ सिद्धि योग होते हुए भी कार्यविशेष में सुयोग भी त्याज्य होता है–

गृहारम्भे कुजे दास्रं यात्रायां रोहिणीं शनौ।
विवाहे च गुरौ पुष्यं सुयोगमपि वर्जयेत्॥

सुयोग होने पर भी गृह प्रवेश में मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र, यात्रा में शनिवार रोहिणी नक्षत्र और विवाह में गुरु पुष्य योग का भी परित्याग करना चाहिए।

ग्रहनिरूपणम्

सौरमण्डल में जो गतिशील दिखाई देते हैं वे 'ग्रह' और इनके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र कहलाते हैं। भारतीय ज्योतिष शास्त्र प्रणेता महर्षिगण नवग्रह ही मानते हैं। आधुनिक (पाश्चात्य) वैज्ञानिकों ने हर्षल नैपच्यून, प्लूटो इत्यादि को ग्रहों की संज्ञा दी है– भारतीय प्रणेता भी इनको जानते थे परन्तु ये इतनी दूरी पर हैं जिससे पृथ्वी पर इनकी रश्मियों का प्रभाव नहीं पहुंचता इनके नीचे स्थित क्रम से शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र की रश्मियों के सम्पर्क से इनका प्रभाव नष्ट हो जाता है अतः इन्हें उपग्रहमान कर उपेक्षित कर दिया गया–

ग्रहाधीनं जगत् सर्वं ग्रहाधीना नराऽवराः।
कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहाः कर्मफलप्रदाः॥
सृष्टि-रक्षण-संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः।
पूर्वकर्मफलानां च सूचकाः खेचरा मताः॥

समस्त चराचर जगत ग्रहों के आधीन है, ग्रहों के द्वारा ही काल का ज्ञान होता है, ग्रहों द्वारा ही प्राणियों को शुभाशुभ फल मिलता है, चराचर का सृजन, पालन और संहार ग्रहों के द्वारा ही होता है और पूर्वजन्म के किए हुए शुभाशुभ फलों के सूचक भी ग्रह ही है।

ग्रहों के मूलत्रिकोण, उच्च और नीच

सूर्यादि ग्रहों के क्रम से सिंह वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुंभ मूल त्रिकोण हैं। तथा मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन और तुला से क्रम से 10, 3, 28, 15, 5, 27, 20 अंशों से उच्च स्थान हैं। उच्च से सप्तम राशि उतने ही अंशों से नीच स्थान है।

स्पष्ट ज्ञानार्थ चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूल त्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
अंश	10	3	28	15	5	27	20
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
अंश	10	3	28	15	5	27	20
गृह	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ

विवाहादि में ग्रहों की गोचर शुद्धि

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु-केतु	स्थान
3/6 10/11	1/2/3 5/6/7 9/10/11	3/6 10/11	3/6 10/11	2/5/7 9/11	1/2/3 9/11	3/6 10/11	3/6 10/11	शुद्ध
1/2 5/7/9	*	12/5 7/9	12/5 7/9	1/3/6	5/6 7/10	5/6 7/10	1/2/5 7/9	मध्य
4/8/12	4/8/12	4/8/12	4/8/12	4/8/12	4/8/12	4/8/12	4/8/12	निन्द्य

मध्य स्थानों में शान्ति जपदानादि से शुभ हो जाते हैं 4/12 स्थानों में द्विगुनित जपदानादि करने से और आठवें स्थान में त्रि-गुणित जपदानादि करने से शुभ हो जाते हैं।

सिंहस्थ गुरुनिर्णयः

सामान्य वचन से सिंहस्थ गुरु, शुभ कार्य में त्याज्य कहा गया है–

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्।
भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नाऽन्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे॥

(मुहूर्तचिन्तामणि)

सिंह राशि में गुरु जब सिंह के नवांश में हो तो गोदावरी के उत्तर एवं गंगा के दक्षिण बीच के देशों में त्याज्य है अन्यदेशों में नहीं। किसी ने 'सिंह' शब्द से समस्त सिंह मान लिया ऐसा आर्षवचनों के विरुद्ध होने के कारण अमान्य है यथा बृद्धगर्ग–

भागीरथ्युत्तरे तीरे गोदाया दक्षिणे तथा।
विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति॥

मेषराशि के रवि में किसी भी देश में सिंहस्थ गुरु त्याज्य नहीं– यथा महर्षिवसिष्ठ–

करस्य ग्रहणं कार्य सिंहस्थो वाक्पतिर्यदा।
भानौ मेषगते शस्तमित्याहुः शौनकादयः॥

शौनकीय पटल में प्रमाण–

वरलाभातिकालाभ्यांदुर्भिक्षाद्देशविप्लवात्।
विवाहः शुभदो नित्यं सिंहस्थेऽपि वृहस्पतौ॥

जब सुयोग्य वर मिल जाए, कन्या विवाह करवाने योग्य हो, देश में उपद्रव या दुर्भिक्ष का संकट हो तो सिंहस्थ वृहस्पति में भी विवाह शुभप्रद होता है।

मकरस्थ गुरुनिर्णयः

मकरस्थो यदा जीवो वर्जयेत् पञ्चमांशकम्।
शेषेष्वपि तु भागेषु विवाहः शोभनो मतः॥

(देवीपुराण)

मकरस्थ गुरु के पहले अंश मात्र ही त्याज्य कहे हैं– शेष भाग में विवाहादि सभी कार्य करने चाहिए। गर्ग वसिष्ठादि सभी ऋषियों का यही मत है ज्यौतिषी लोग अपने-अपने कर्त्तव्य की अनुकूलता के अनुसार विवाहादि कार्यों का निर्देश करें।

गुरुशुक्रास्त दोषनिर्णयः

अस्त लक्षणम्

लुप्तांशुः सूर्यसान्निध्यात् खेटोऽस्त इति कथ्यते।
क्षीणो वृद्धस्ततः पूर्वं पश्चात् क्षीणस्तु बालकः॥

सूर्य के समीप होने के कारण लुप्त किरण होने से ग्रह **'अस्त'** कहलाता है। अस्त से पूर्व क्षीण रश्मि **'बृद्ध'** एवं अस्त के बाद (उदय होने पर) क्षीणरशिम **'बाल'** कहलाता है।

वार्धकेऽस्ते तथा वाल्ये समये गुरु शुक्रयोः।
व्रतयज्ञ-विवाहादि मंगलं परिवर्जयेत्॥

गुरु ग्रह पूर्व एवं पश्चिम दोनों दिशाओं में उदय और अस्त होते हैं किन्तु वृहस्पति केवल पश्चिम में अस्त और पूर्व में उदय होता है। शुक्र पूर्व दिशा में उदय होने के बाद तीन दिन तथा पश्चिम में उदय होने के बाद दश दिन वाल्य रहता है– पूर्व 15 दिन तथा पश्चिमास्त से पहले पाँच दिन बार्धक्य रहता है। इस प्रकार गुरु के अस्त से पहले 15 दिन वार्धक्य और उदय से आगे 15 दिन बाल्य रहता है।

अन्य मुनियों का मत

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्त कैश्चित् सप्तदिनं परैः।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं च द्वयहं विधोः॥

कुछ ऋषियों ने गुरु और शुक्र दोनों के दश दिन बाल्य और दश दिन वार्धक्य कहे हैं कुछ मुनियों ने सात-सात दिनात्मक बाल्य और बार्धक्य स्वीकार किया है, बहुत से मुनियों ने तो आवश्यक कार्यों में केवल तीन दिन बाल्य और तीन दिन बार्धक्य माना है। चन्द्रमा के उदय के बाद आधा दिन तक बाल्य और दर्शान्त से पूर्व दो दिन तक बार्धक्य रहता है।

विशेष–

गुरु शुक्र शशाङ्केषु त्रिषु वाऽप्युदिते द्वये।
कार्य बुधैः शुभं कर्म त्रिष्वस्तेषु परित्यजेत्॥

गुरु, शुक्र और चन्द्रमा– ये तीनों अथवा इनमें दो उदित हों तो शुभ कर्म करना चाहिए और जब तीनों अस्त हों तो त्याग देना चाहिए।

पुनः विशेष–

कृष्णे पुष्टतनौ चन्द्रे शुक्ले क्षीणकरेऽपिच।
कार्य कर्म शुभं चास्तेऽप्येकस्मिन् गुरुशुक्रयोः॥

कृष्ण पक्ष में सप्तमी पर्यंत शुक्ल पक्ष में द्वितीया से पूर्णिमा पर्यंत यदि गुरु, शुक्र में केवल एक अस्त हो तो शुभकार्य कर लेना चाहिए। अर्थात् तारा अस्त में विवाहादि हो सकते हैं। इसी सन्दर्भ में 'मुहूर्त्त चिन्तामणि' में प्रमाण उपलब्ध है– लग्न शुद्धि होने पर सभी अयोग सुयोग हो जाते हैं, यथा–

अयोगे सुयोगोऽपिचेत् स्यात् तदानी–
मयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति॥
परे लग्न शुद्ध्या कुयोगादिनाशं
दिनार्धोत्तरं विष्टि पूर्वं च शस्तम्॥

यदि किसी भी कार्य में अयोग और सुयोग दोनों हों तो अयोग नष्ट हो जाता है वहाँ सुयोग का ही शुभ फल होता है। बहुत से महर्षियों का मत है यदि लग्न की शुद्धि हो तो समस्त अशुभ योग नष्ट हो जाते हैं। समय के मुख्य पाँच अंग (वर्ष, मास, तिथि, लग्न और मुहूर्त्त) इन उत्तरोत्तर क्रम से अधिक बलवान होते हैं। अतः लग्न की शुद्धि हो जाने पर वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, वारादि सम्बंधी जितने भी कुयोग हैं सभी नष्ट हो जाते हैं तथा सर्वथा समय शुद्ध हो जाता है लग्न की प्रशंसा में लल्लाचार्य का मत–

नतिथिर्न नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्ग नारद कश्यपाः॥

गर्गनारद कश्यपादि सभी ऋषियों ने तिथि, योग, नक्षत्रावारादि को महत्ता न देकर केवल लग्न की प्रशंसा की है–

लग्नं जीवो मनश्चन्द्रः शरीरं तिथि भादिकम्।
पुष्टे जीवेऽखिलं पुष्टं नष्टे नष्टं विदुर्बुधाः॥

किसी भी कार्य में लग्न जीव, चन्द्रमा, मन, तिथि नक्षात्रदि अन्य विषय शरीर हैं। जीव के पुष्ट रहने से सब पुष्ट और नष्ट होने से सब नष्ट हो जाते हैं।

लत्ता, पात, युति, वेध, यामित्र, वाण, एकार्गल, उपग्रह क्रान्ति साम्य तथा दग्धातिथि इत्यादि दश दोषों का विचार विवाह मुहूर्त्त में किया जाता है, ये दश दोष विवाह में त्याज्य कहे हैं इनमें चार से कम दोष हों तो लग्न शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं।

विवाह के दोषों का भङ्गयोग

त्रिकोणे केन्द्रे वा मदन रहिते दोषशतकं
हरेत सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः
भवेदाये केन्द्रेऽङ्गय उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति॥

विवाह लग्न से सप्तम त्याग कर अन्य केन्द्र (1, 4, 10) और त्रिकोण (5, 9) बुद्ध से दुगना, यदि गुरु उक्त स्थान में हो तो लाखों दोषों का नाश हो जाता है। यदि लग्नेश, अथवा लग्न नवमांशेश 11, 1, 4, 10 में हो तो समस्त दोषों को कपास रूई के ढेर को अग्नि के समान भस्म कर देता है। अहोरात्र में 12 लग्न बीतते हैं– विद्वान लोग यदि चाहें तो प्रतिदिन उक्त योग प्राप्त हो सकते हैं इतनी सुविधा हमें ज्यौतिष शास्त्र प्रदान करता है। हमें परिहारवादी भावों को उजागर कर मुहूर्त्त निश्चय करके लोगों को बताना चाहिए।

पारस्करादि महर्षियों का मत है कि–

वर्षमास-दिनानां वा शुद्धिं नैव विचिन्तयेत।
सुलग्ने सुमुहूर्त्ते वा विवाहः सार्वकालिकः॥

तथा च–

वर्ष च मासश्च दिनं च लग्नं, मुहूर्त्त एते वलिनः क्रमात स्युः।
परः परः पूर्वभवं हिदोषं, विवशयत्येव न संशयोऽत्र॥

वर्षमास दिन इत्यादि की शुद्धि विचार नहीं करना चाहिए, शुद्ध लग्न एवं मुहूर्त में विवाह सार्वकालिक होता है। इस प्रकार के वचनों के अनुसार आजकाल विज्ञजन स्थूल (तिथि नक्षत्रादि) काल की शुद्धि के साथ-साथ सूक्ष्म लग्न काल की भी शुद्धि देख लें तो सर्वश्रेष्ठ विवाह मुहूर्त प्रतिदिन हो सकता है।

चन्द्रमा स्पष्ट से सारिणी द्वारा विंशोत्तरी दशा साधन

गणित के प्रयास से बचने के लिए सारिणी का उपयोग किया जाता है। यहाँ सरलता से दशा साधन क्रम दिखाया जायेगा। दशा साधन में सर्वप्रथम चन्द्रमा स्पष्ट की आवश्यकता रहती है सारिणी (१) में ऊपर राशि तथा बायें तरफ अंश दिये हैं अभीष्ट स्पष्ट चन्द्र की राशि अंश के सम्मुख कोष्ठक में लब्धफल दशा का भुक्त वर्षादि होगा। जो दशा दो अंशों के भीतर समाप्त होती है उस दशा के दो मान एक कोष्ठक में ही दिये हैं। मेष राशि के १३ अंश २० कला पर केतु की दशा समाप्त होती है अतः १३ अंश सम्बन्धित फल ६/९/२७ तथा उस दशा के समाप्ति के वर्ष ७ एक ही कोष्ठक में दिये हैं। इसका ध्यान दशा साधन में रखना चाहिए।

दूसरे संस्करण में कला विकला सम्बन्धित दशा फल के लिए एक विस्तृत सारिणी (२) दी है। इसमें प्रति कला विकला सम्बन्धित फल अनायास प्राप्त हो जाता है। इन सब फलों का योग दशा का भुक्तमान बन जाता है इसे दशा वर्ष में घटाने से दशा का भोग्यमान प्राप्त होगा।

उदाहरण – स्पष्टचन्द्र ५/१६/०५/१० पर से दशा साधन ऊपर लिखे नियमानुसार सारिणी द्वारा किया जाता है जातक का जन्म चन्द्र महादशा में हुआ है।

व. मा. दि. घ. प.

४ । ६ । ०० कन्या राशि १६ अंश से प्राप्त फल

० । २२ । ३० कला ०५ के अनुसार प्राप्त फल

०० । ४५ विकला १० के अनुसार प्राप्त फल

४ । ६ । २२ । ३० । ४५

चन्द्रभुक्तदशा वर्षादि

इसे चन्द्र के दशा वर्ष (१०) में घटाने से दशा वर्षादि प्राप्त होंगे।

१० । ०० । ०० । ०० । ००

४ । ०६ । २२ । ३० । ४५ चन्द्र भुक्तदशा वर्षादि

५ । ०५ । ०७ । २९ । १५ चन्द्र भोग्य दशा वर्षादि

इस प्रकार अन्य उदाहरणों का साधन करना चाहिये।

दशा सारिणी

विंशोत्तरी दशा सारिणी (१)

अं.		मे. व	सिं. मा.	ध. दि.		वृ. व	क. मा.	म. दि.		मि. व	तु मा.	कुं. दि.		क. व	वृ. मा.	मी. दि.
०		०	०	०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०
१	के.	०	६	९	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	बृ.	१३	२	१२
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	४	२४
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
३/२०														१६	०	०
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
६/४०										७	०	०				
७		३	८	९		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२१
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७		२	६	०		८	६	१८		१३	९	९
१२/२०		७	०	०												
१४	शु.	१	०	०		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	२	१२
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१६/४०														१९	०	०
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ.	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२३/२०						१०	०	०								
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१७	६	०		०	१०	२५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२६/४०		२०	०	०												
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		७	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		२	५	१२		९	४	२४		१४	५	१२
२९		१	०	२१		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१
३०	सू.	१	६	०		३	६	०	बृ.	१२	०	०	बु.	१७	०	०

विंशोत्तरी दशा कला–विकला सारिणी

	सूर्य		चन्द्र		मंगल–केतु	
	कला	विकला	कला	विकला	कला	विकला
	मा. दि. घ.	दि. घ. प.	मा. दि. घ.	दि. घ. प.	मा. दि. घ.	दि. घ. प.
१	० २ ४२	० २ ४२	० ४ ३०	० ४ ३०	० ३ ९	० ३ ९
२	० ५ २४	० ५ २४	० ९ ०	० ९ ०	० ६ १८	० ६ १८
३	० ८ ६	० ८ ६	० १३ ३०	० १३ ३०	० ९ २७	० ९ २७
४	० १० ४८	० १० ४८	० १८ ०	० १८ ०	० १२ ३६	० १२ ३६
५	० १३ ३०	० १३ ३०	० २२ ३०	० २२ ३०	० १५ ४५	० १५ ४५
६	० १६ १२	० १६ १२	० २७ ०	० २७ ०	० १८ ५४	० १८ ५४
७	० १८ ५४	० १८ ५४	१ १ ३०	० ३१ ३०	० २२ ३	० २२ ३
८	० २१ ३६	० २१ ३६	१ ६ ०	० ३६ ०	० २५ १२	० २५ १२
९	० २४ १८	० २४ १८	१ १० ३०	० ४० ३०	० २८ २१	० २८ २१
१०	० २७ ०	० २७ ०	१ १५ ०	० ४५ ०	१ १ ३०	० ३१ ३०
११	० २९ ४२	० २९ ४२	१ १९ ३०	० ४९ ३०	१ ४ ३९	० ३४ ३९
१२	१ २ २४	० ३२ २४	१ २४ ०	० ५४ ०	१ ७ ४८	० ३७ ४८
१३	१ ५ ६	० ३५ ६	१ २८ ३०	० ५८ ३०	१ १० ५७	० ४० ५७
१४	१ ७ ४८	० ३७ ४८	२ ३ ०	१ ३ ०	१ १४ ६	० ४४ ६
१५	१ १० ३०	० ४० ३०	२ ७ ३०	१ ७ ३०	१ १७ १५	० ४७ १५
१६	१ २३ ३२	० ४३ ३२	२ १२ ०	१ १२ ०	१ २० २४	० ५० २४
१७	१ १५ ५४	० ४५ ५४	२ १६ ३०	१ १६ ३०	१ २३ ३३	० ५३ ३३
१८	१ १८ ३६	० ४८ ३६	२ २१ ०	१ २१ ०	१ २६ ४२	० ५६ ४२
१९	१ २१ १८	० ५१ १८	२ २५ ३०	१ २५ ३०	१ २९ ५१	० ५९ ५१
२०	१ २४ ०	० ५४ ०	३ ० ०	१ ३० ०	२ ३ ०	१ ३ ०
२१	१ २६ ४२	० ५६ ४२	३ ४ ३०	१ ३४ ३०	२ ६ ९	१ ६ ९
२२	१ २९ २४	० ५९ २४	३ ९ ०	१ ३९ ०	२ ९ १८	१ ९ १८
२३	२ २ ६	१ २ ६	३ १३ ३०	१ ४३ ३०	२ १२ २७	१ १२ २७
२४	२ ४ ४८	१ ४ ४८	३ १८ ०	१ ४८ ०	२ १५ ३६	१ १५ ३६
२५	२ ७ ३०	१ ७ ३०	३ २२ ३०	१ ५२ ३०	२ १८ ४५	१ १८ ४५
२६	२ १० १२	१ १० १२	३ २७ ०	१ ५७ ०	२ २१ ५४	१ २१ ५४
२७	२ १२ ५४	१ १२ ५४	४ १ ३०	२ १ ३०	२ २५ ३	१ २५ ३
२८	२ १५ ३६	१ १५ ३६	४ ६ ०	२ ६ ०	२ २८ १२	१ २८ १२
२९	२ १८ १८	१ १८ १८	४ १० ३०	२ १० ३०	३ १ २१	१ ३१ २१
३०	२ २१ ०	१ २१ ०	४ १५ ०	२ १५ ०	३ ४ ३०	१ ३४ ३०

विंशोत्तरी दशा कला–विकला सारिणी

	सूर्य		चन्द्र		मंगल–केतु	
	कला	विकला	कला	विकला	कला	विकला
	मा. दि. घ.	दि. घ. प.	मा. दि. घ.	दि. घ. प.	मा. दि. घ.	दि. घ. प.
३१	२ २३ ४२	१ २३ ४२	४ १९ ३०	२ १९ ३०	३ ७ ३९	१ २७ ३९
३२	२ २६ २४	१ २६ २४	४ २४ ०	२ २४ ०	३ १० ४८	१ ४० ४८
३३	२ २९ ६	१ २९ ६	४ २८ ३०	२ २८ ३०	३ १३ ५७	१ ४३ ५७
३४	३ १ ४८	१ ३१ ४८	५ ३ ०	२ ३३ ०	३ १७ ६	१ ४७ ६
३५	३ ४ ३०	१ ३४ ३०	५ ७ ३०	२ ३७ ३०	३ २० १५	१ ५० १५
३६	३ ७ १२	१ ३७ १२	५ १२ ०	२ ४२ ०	३ २३ २४	१ ५३ २४
३७	३ ९ ५४	१ ३९ ५४	५ १६ ३०	२ ४६ ३०	३ २६ ३३	१ ५६ ३३
३८	३ १२ ३६	१ ४२ ३६	५ २१ ०	२ ५१ ०	३ २९ ४२	१ ५९ ४२
३९	३ १५ १८	१ ४५ १८	५ २५ ३०	२ ५५ ३०	४ २ ५१	२ २ ५१
४०	३ १८ ०	१ ४८ ०	६ ० ०	३ ० ०	४ ६ ०	२ ६ ०
४१	३ २० ४२	१ ५० ४२	६ ४ ३०	३ ४ ३०	४ ९ ९	२ ९ ९
४२	३ २३ २४	१ ५३ २४	६ ९ ०	३ ९ ०	४ १२ १८	२ १२ १८
४३	३ २६ ६	१ ५६ ९	६ १३ ३०	३ १३ ३०	४ १५ २७	२ १५ २७
४४	३ २८ ४८	१ ५८ ४८	६ १८ ०	३ १८ ०	४ १८ ३६	२ १८ ३६
४५	४ १ ३०	२ १ ३०	६ २२ ३०	३ २२ ३०	४ २१ ४५	२ २१ ४५
४६	४ ४ १२	२ ४ १२	६ २७ ०	३ २७ ०	४ २४ ५४	२ २४ ५४
४७	४ ६ ५४	२ ६ ५४	७ १ ३०	३ ३१ ३०	४ २८ ३	२ २८ ३
४८	४ ९ ३६	२ ९ ३६	७ ६ ०	३ ३६ ०	५ १ १२	२ ३१ १२
४९	४ १२ १८	२ १२ १८	७ १० ३०	३ ४० ३०	५ ४ २१	२ ३४ २१
५०	४ १५ ०	२ १५ ०	७ १५ ०	३ ४५ ०	५ ७ ३०	२ ३७ ३०
५१	४ १७ ४२	२ १७ ४२	७ १९ ३०	३ ४९ ३०	५ १० ३९	२ ४० ३९
५२	४ २० २४	२ २० २४	७ २४ ०	३ ५४ ०	५ १३ ४८	२ ४३ ४८
५३	४ २३ ६	२ २३ ६	७ २८ ३०	३ ५८ ३०	५ १६ ५७	२ ४६ ५७
५४	४ २५ ४८	२ २५ ४८	८ ३ ०	४ ३ ०	५ २० ६	२ ५० ६
५५	४ २८ ३०	२ २८ ३०	८ ७ ३०	४ ७ ३०	५ २३ १५	२ ५३ १५
५६	५ १ १२	२ ३१ १२	८ १२ ०	४ १२ ०	५ २६ २४	२ ५६ २४
५७	५ ३ ५४	२ ३३ ५४	८ १६ ३०	४ १६ ३०	५ २९ ३३	२ ५९ ३३
५८	५ ६ ३६	२ ३६ ३६	८ २१ ०	४ २१ ०	६ २ ४२	३ २ ४२
५९	५ ९ १८	२ ३९ १८	८ २५ ३०	४ २५ ३०	६ ५ ५१	३ ५ ५१

विंशोत्तरी दशा कला–विकला सारिणी

	राहु						गुरु						शनि					
	कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
१	०	८	६	०	८	६	०	७	१२	०	७	१२	०	८	३३	०	८	३३
२	०	१६	१२	०	१६	१२	०	१४	२४	०	१४	२४	०	१७	६	०	१७	६
३	०	२४	१८	०	२४	१८	०	२१	३६	०	२१	३६	०	२५	३९	०	२५	३९
४	१	२	२४	०	३२	२४	०	२८	४८	०	२८	४८	१	४	१२	०	३४	१२
५	१	१०	३०	०	४०	३०	१	६	०	०	३६	०	१	१२	४५	०	४२	४५
६	१	१८	३६	०	४८	३६	१	१३	१२	०	४३	१२	१	२१	१८	०	५१	१८
७	१	२६	४२	०	५६	४२	१	२०	२४	०	५०	२४	१	२९	५१	०	५९	५१
८	२	४	४८	१	४	४८	१	२७	३६	०	५७	३६	२	८	२४	१	८	२४
९	२	१२	५४	१	१२	५४	२	४	४८	१	४	४८	२	१६	५७	१	१६	५७
१०	२	२१	०	१	२१	०	२	१२	०	१	१२	०	२	२५	३०	१	२५	३०
११	२	२९	६	१	२९	६	२	१९	१२	१	१९	१२	३	४	३	१	३४	३
१२	३	७	१२	१	३७	१२	२	२६	२४	१	२६	२४	३	१२	३६	१	४२	३६
१३	३	१५	१८	१	४५	१८	३	३	३६	१	३३	३६	३	२१	९	१	५१	९
१४	३	२३	२४	१	५३	२४	३	१०	४८	१	४०	४८	३	२९	४२	१	५९	४२
१५	४	१	३०	२	१	३०	३	१८	०	१	४८	०	४	८	१५	२	८	१५
१६	४	९	३६	२	९	३६	३	२५	१२	१	५[illegible]	१२	४	१६	४८	२	१६	४८
१७	४	१७	४२	२	१७	४२	४	२	२४	२	२	२४	४	२५	२१	२	२५	२१
१८	४	२५	४८	२	२५	४८	४	९	३६	२	९	३६	५	३	५४	२	३३	५४
१९	५	३	५४	२	३३	५४	४	१६	४८	२	१६	४८	५	१२	२७	२	४२	२७
२०	५	१२	०	२	४२	०	४	२४	०	२	२४	०	५	२१	०	२	५१	०
२१	५	२०	६	२	५०	६	५	१	१२	२	३१	१२	५	२९	३३	२	५९	३३
२२	५	२८	१२	२	५८	१२	५	८	२४	२	३८	२४	६	८	६	३	८	६
२३	६	६	१८	३	६	१८	५	१५	३६	२	४५	३६	६	१६	३९	३	१६	३९
२४	६	१४	२४	३	१४	२४	५	२२	४८	२	५२	४८	६	२५	१२	३	२५	१२
२५	६	२२	३०	३	२२	३०	६	०	०	३	०	०	७	३	४५	३	३३	४५
२६	७	०	३६	३	३०	३६	६	७	१२	३	७	१२	७	१२	१८	३	४२	१८
२७	७	८	४२	३	३८	४२	६	१४	२४	३	१४	२४	७	२०	५१	३	५०	५१
२८	७	१६	४८	३	४६	४८	६	२१	३६	३	२१	३६	७	२९	२४	३	५९	२४
२९	७	२४	५४	३	५४	५४	६	२८	४८	३	२८	४८	८	७	५७	४	७	५७
३०	८	३	०	४	३	०	७	६	०	३	३६	०	८	१६	३०	४	१६	३०

विंशोत्तरी दशा कला–विकला सारिणी

	राहु						गुरु						शनि					
	कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
३१	८	११	६	४	११	६	७	१३	१२	३	४३	१२	८	२५	३	४	२५	३
३२	८	१९	१२	४	१९	१२	७	२०	२४	३	५०	२४	९	३	३६	४	३३	३६
३३	८	२७	१८	४	२७	१८	७	२७	३६	३	५७	३६	९	१२	९	४	४२	९
३४	९	५	२४	४	३५	२४	८	४	४८	४	४	४८	९	२०	४२	४	५०	४२
३५	९	१३	३०	४	४३	३०	८	१२	०	४	१२	०	९	२९	१५	४	५९	१५
३६	९	२१	३६	४	५१	३६	८	१९	१२	४	१९	१२	१०	७	४८	५	७	४८
३७	९	२९	४२	४	५९	४२	८	२६	२४	४	२६	२४	१०	१६	२१	५	१६	२१
३८	१०	७	४८	५	७	४८	९	३	३६	४	३३	३६	१०	२४	५४	५	२४	५४
३९	१०	१५	५४	५	१५	५४	९	१०	४८	४	४०	४८	११	३	२७	५	३३	२७
४०	१०	२४	०	५	२४	०	९	१८	०	४	४८	०	११	१२	०	५	४२	०
४१	११	२	६	५	३२	६	९	२५	१२	४	५५	१२	११	२०	३३	५	५०	३३
४२	११	१०	१२	५	४०	१२	१०	२	२४	५	२	२४	११	२९	६	५	५९	६
४३	११	१८	१८	५	४८	१८	१०	९	२६	५	९	३६	१२	७	३९	६	७	३९
४४	११	२६	२४	५	५६	२४	१०	१६	४८	५	१६	४८	१२	१६	१२	६	१६	१२
४५	१२	४	३०	६	४	३०	१०	२४	०	५	२४	०	१२	२४	४५	६	२४	४५
४६	१२	१२	३६	६	१२	३६	११	१	१२	५	३१	१२	१३	३	१८	६	३३	१८
४७	१२	२०	४२	६	२०	४२	११	८	२४	५	३८	२४	१३	११	५१	६	४१	५१
४८	१२	२८	४८	६	२८	४८	११	१५	३६	५	४५	३६	१३	२०	२४	६	५०	२४
४९	१३	६	५४	६	३६	५४	११	२२	४८	५	५२	४८	१३	२८	५७	६	५८	५७
५०	१३	१५	०	६	४५	०	१२	०	०	६	०	०	१४	७	३०	७	७	३०
५१	१३	२३	६	६	५३	६	१२	७	१२	६	७	१२	१४	१६	३	७	१६	३
५२	१४	१	१२	७	१	१२	१२	१४	२४	६	१४	२४	१४	२४	३६	७	२४	३६
५३	१४	९	१८	७	९	१८	१२	२१	३६	६	२१	३६	१५	३	९	७	३३	९
५४	१४	१७	२४	७	१७	२४	१२	२८	४८	६	२८	४८	१५	११	४२	७	४१	४२
५५	१४	२५	३०	७	२५	३०	१३	६	०	६	३६	०	१५	२०	१५	७	५०	१५
५६	१५	३	३६	७	३३	३६	१३	१३	१२	६	४३	१२	१५	२८	४८	७	५८	४८
५७	१५	११	४२	७	४१	४२	१३	२०	२४	६	५०	२४	१६	७	२१	८	७	२१
५८	१५	१९	४८	७	४९	४८	१३	२७	३६	६	५७	३६	१६	१५	५४	८	१५	५४
५९	१५	२७	५४	७	५७	५४	१४	४	४८	७	४	४८	१६	२४	२७	८	२४	२७

विंशोत्तरी दशा कला–विकला सारिणी

	बुध		शुक्र	
	कला	विकला	कला	विकला
	मा. दि. घ.	दि. घ. प.	मा. दि.	दि. घ.
१	० ७ ३९	० ७ ३९	० ९	० ९
२	० १५ १८	० १५ १८	० १८	० १८
३	० २२ ५७	० २२ ५७	० २७	० २७
४	१ ० ३६	० ३० ३६	१ ६	० ३६
५	१ ८ १५	० ३८ १५	१ १५	० ४५
६	१ १५ ५४	० ४५ ५४	१ २४	० ५४
७	१ २३ ३३	० ५३ ३३	२ ३	१ ३
८	२ १ १२	१ १ १२	२ १२	१ १२
९	२ ८ ५१	१ ८ ५१	२ २१	१ २१
१०	२ १६ ३०	१ १६ ३०	३ ०	१ ३०
११	२ २४ ९	१ २४ ९	३ ९	१ ३९
१२	३ १ ४८	१ ३१ ४८	३ १८	१ ४८
१३	३ ९ २७	१ ३९ २७	३ २७	१ ५७
१४	३ १७ ६	१ ४७ ६	४ ६	२ ६
१५	३ २४ ४५	१ ५४ ४५	४ १५	२ १५
१६	४ २ २४	२ २ २४	४ २४	२ २४
१७	४ १० ३	२ १० ३	५ ३	२ ३३
१८	४ १७ ४२	२ १७ ४२	५ १२	२ ४२
१९	४ २५ २१	२ २५ २१	५ २१	२ ५१
२०	५ ३ ०	२ ३३ ०	६ ०	३ ०
२१	५ १० ३९	२ ४० ३९	६ ९	३ ९
२२	५ १८ १८	२ ४८ १८	६ १८	३ १८
२३	५ २५ ५७	२ ५५ ५७	६ २७	३ २७
२४	६ ३ ३६	३ ३ ३६	७ ६	३ ३६
२५	६ ११ १५	३ ११ १५	७ १५	३ ४५
२६	६ १८ ५४	३ १८ ५४	७ २४	३ ५४
२७	६ २६ ३३	३ २६ ३३	८ ३	४ ३
२८	७ ४ १२	३ ३४ १२	८ १२	४ १२
२९	७ ११ ५१	३ ४१ ५१	८ २१	४ २१
३०	७ १९ ३०	३ ४९ ३०	९ ०	४ ३०
३१	७ २७ ९	३ ५७ ९	९ ९	४ ३९
३२	८ ४ ४८	४ ४ ४८	९ १८	४ ४८
३३	८ १२ २७	४ १२ २७	९ २७	४ ५७
३४	८ २० ६	४ २० ६	१० ६	५ ६
३५	८ २७ ४५	४ २७ ४५	१० १५	५ १५
३६	९ ५ २४	४ ३५ २४	१० २४	५ २४
३७	९ १३ ३	४ ४३ ३	११ ३	५ ३३
३८	९ २० ४२	४ ५० ४२	११ १२	५ ४२
३९	९ २८ २१	४ ५८ २१	११ २१	५ ५१
४०	१० ६ ०	५ ६ ०	१२ ०	६ ०
४१	१० १३ ३९	५ १३ ३९	१२ ९	६ ९
४२	१० २१ १८	५ २१ १८	१२ १८	६ १८
४३	१० २८ ५७	५ २८ ५७	१२ २७	६ २७
४४	११ ६ ३६	५ ३६ ३६	१३ ६	६ ३६
४५	११ १४ १५	५ ४४ १५	१३ १५	६ ४५
४६	११ २१ ५४	५ ५१ ५४	१३ २४	६ ५४
४७	११ २९ ३३	५ ५९ ३३	१४ ३	७ ३
४८	१२ ७ १२	६ ७ १२	१४ १२	७ १२
४९	१२ १४ ५१	६ १४ ५१	१४ २१	७ २१
५०	१२ २२ ३०	६ २२ ३०	१५ ०	७ ३०
५१	१३ ० ९	६ ३० ९	१५ ९	७ ३९
५२	१३ ७ ४८	६ ३७ ४८	१५ १८	७ ४८
५३	१३ १५ २७	६ ४५ २७	१५ २७	७ ५७
५४	१३ २३ ६	६ ५३ ६	१६ ६	८ ६
५५	१४ ० ४५	७ ० ४५	१६ १५	८ १५
५६	१४ ८ २४	७ ८ २४	१६ २४	८ २४
५७	१४ १६ ३	७ १६ ३	१७ ३	८ ३३
५८	१४ २३ ४२	७ १३ ४२	१७ १२	८ ४२
५९	१५ १ २१	७ ३१ २१	१७ २१	८ ५१

पूजा होमादि में पत्नी दिशा विचार

वामो सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे।
वामेऽशनैकाशय्यां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।
सर्वेषु कार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामता।।
वामे पत्नीं त्रिषुस्थानो पितृणां पादशौचने।
रथारोहण काले च ऋतुकाले सदा भवेत्।। (संस्कार गणपति)

पाँच स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली और बसन्त पञ्चमी ये पाँच स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त हैं। आवश्याकता होने पर शुभ कार्य इन दिनों में किये जा सकते हैं।

होम में अग्निवास विचार

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुविवह्निवासः।
सौख्याय होम शशियुग्म शेषे प्राणार्थनाशौ दिविभूतले च।।

(मुहूर्त्ति चिन्तामण)

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष अमावस्या तक ३० तिथियों में वर्तमान तिथि में एक जोड़कर उसमें वार संख्या (रवि से शनि तक ७) जोड़ कर इस जोड़ में ४ का भाग देने से यदि शून्य ० और तीन ३ शेष बचें तो भूमि में अग्नि वास होता है। यदि एक बचे तो अग्नि वास स्वर्ग में होता है इसमें प्राणनाश, यदि दो बचे तो अग्निवास पाताल मे होता है इसमें धन नाश होता है। अग्नि वास भूमि पर होने से ही हवन में उत्तम फल प्राप्ति होती है।

अथ विंशोत्तरीसूर्यमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	5	24
चं.	0	0	9	0
मं.	0	0	6	18
रा.	0	0	16	12
बृ.	0	0	14	24
श.	0	0	17	6
बु.	0	0	15	18
के.	0	0	6	18
शु.	0	0	18	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	15	0
मं.	0	0	10	30
रा.	0	0	27	0
बृ.	0	0	24	0
श.	0	0	28	30
बु.	0	0	25	30
के.	0	0	10	30
शु.	0	1	0	0
र.	0	0	9	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	18	36
बृ.	0	1	13	12
श.	0	1	21	18
बु.	0	1	15	54
के.	0	0	18	54
शु.	0	1	24	0
र.	0	0	16	12
चं.	0	0	27	0
मं.	0	0	18	54

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	8	24
श.	0	1	15	36
बु.	0	1	10	48
के.	0	0	16	48
शु.	0	1	18	0
र.	0	0	14	24
चं.	0	0	24	0
मं.	0	0	16	48
रा.	0	1	13	12

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	1	24	6
बु.	0	1	18	27
के.	0	0	19	57
शु.	0	1	27	0
र.	0	0	17	6
चं.	0	0	28	30
मं.	0	0	19	57
रा.	0	1	21	18
बृ.	0	1	15	36

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	1	13	21
के.	0	0	17	51
शु.	0	1	21	0
र.	0	0	15	18
चं.	0	0	25	30
मं.	0	0	17	51
रा.	0	1	15	54
बृ.	0	1	10	48
श.	0	1	18	27

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	0	0
र.	0	0	18	0
चं.	0	1	0	0
मं.	0	0	21	0
रा.	0	1	24	0
बृ.	0	1	18	0
श.	0	1	27	0
बु.	0	1	21	0
के.	0	0	21	0

अथ विंशोत्तरीचंद्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	25	0
मं.	0	0	17	30
रा.	0	1	15	0
बृ.	0	1	10	0
श.	0	1	17	30
बु.	0	1	12	30
के.	0	0	17	30
शु.	0	1	20	0
र.	0	0	15	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30
चं.	0	0	17	30

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	2	21	0
बृ.	0	2	12	0
श.	0	2	25	30
बु.	0	2	16	30
के.	0	1	1	30
शु.	0	3	0	0
र.	0	0	27	0
चं.	0	1	15	0
मं.	0	1	1	30

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	2	4	0
श.	0	2	16	0
बु.	0	2	8	0
के.	0	0	28	0
शु.	0	2	20	0
र.	0	0	24	0
चं.	0	1	10	0
मं.	0	0	28	0
रा.	0	2	12	0

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	3	0	15
बु.	0	2	20	45
के.	0	1	3	15
शु.	0	3	5	0
र.	0	0	28	30
चं.	0	1	17	30
मं.	0	1	3	15
रा.	0	2	25	30
बृ.	0	2	16	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	2	12	15
के.	0	0	29	45
शु.	0	2	25	0
र.	0	0	25	30
चं.	0	1	12	30
मं.	0	0	29	45
रा.	0	2	16	30
बृ.	0	2	8	0
श.	0	2	20	45

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30
चं.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	3	10	0
र.	0	1	0	0
चं.	0	1	20	0
मं.	0	1	5	0
रा.	0	3	0	0
बृ.	0	2	20	0
श.	0	3	5	0
बु.	0	2	25	0
के.	0	1	5	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	9	0
चं.	0	0	15	0
मं.	0	0	10	30
रा.	0	0	27	0
बृ.	0	0	24	0
श.	0	0	28	30
बु.	0	0	25	30
के.	0	0	10	30
शु.	0	1	0	0

अथ विंशोत्तरीभौममहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	8	35
रा.	0	0	22	3
बृ.	0	0	19	36
श.	0	0	23	16
बु.	0	0	20	50
के.	0	0	8	34
शु.	0	0	24	30
र.	0	0	7	21
चं.	0	0	12	15

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
चं.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	2	3	10	30
बु.	1	26	31	30
के.	0	23	16	30
शु.	2	6	30	0
र.	0	19	57	0
चं.	1	3	15	0
मं.	0	23	16	0
रा.	1	29	51	0
बृ.	1	23	12	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	1	20	34	30
के.	0	20	49	30
शु.	1	29	30	0
र.	0	17	51	0
चं.	0	29	45	0
मं.	0	20	49	30
रा.	1	23	33	0
बृ.	1	17	36	0
श.	1	26	31	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	8	34	30
शु.	0	24	30	0
र.	0	7	21	0
चं.	0	12	15	0
मं.	0	8	34	30
रा.	0	22	3	0
बृ.	0	19	36	0
श.	0	23	16	30
बु.	0	20	49	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30

अथ विंशोत्तरीराहुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ विंशोत्तरीराहुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	25	48
बृ	0	4	9	36
श.	0	5	3	54
बु	0	4	17	42
के.	0	1	26	42
शु	0	5	12	0
र	0	1	18	36
चं	0	2	21	0
मं	0	1	26	42

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ	0	3	24	12
श.	0	4	16	48
बु	0	4	2	24
के.	0	1	20	24
शु	0	4	24	0
र	0	1	13	12
चं	0	2	12	0
मं	0	1	20	24
रा.	0	4	9	36

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	5	12	27
बु	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु	0	5	21	0
र	0	1	21	18
चं	0	2	25	30
मं	0	1	29	51
रा.	0	5	3	54
बृ	0	4	16	48

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु	0	5	3	0
र	0	1	15	54
चं	0	2	16	30
मं	0	1	23	33
रा.	0	4	17	42
बृ	0	4	2	24
श.	0	4	25	21

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	22	3
शु	0	2	3	0
र	0	0	18	54
चं	0	1	1	30
मं	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु	0	1	23	33

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु	0	6	0	0
र	0	1	24	0
चं	0	3	0	0
मं	0	2	3	0
रा.	0	5	12	0
बृ	0	4	24	0
श.	0	5	21	0
बु	0	5	3	0
के.	0	2	3	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र	0	0	16	12
चं	0	0	27	0
मं	0	0	18	54
रा.	0	1	18	36
बृ	0	1	13	12
श.	0	1	21	18
बु	0	1	15	54
के.	0	0	18	54
शु	0	1	24	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं	0	1	15	0
मं	0	1	1	30
रा.	0	2	21	0
बृ	0	2	12	0
श.	0	2	25	30
बु	0	2	16	30
के.	0	1	1	30
शु	0	3	0	0
र	0	0	27	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु	0	2	3	0
र	0	0	18	54
चं	0	1	1	30

अथ विंशोत्तरीगुरुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ	0	3	12	24
श.	0	4	1	36
बु	0	3	18	48
के.	0	1	14	48
शु	0	4	8	0
र	0	1	8	24
चं	0	2	4	0
मं	0	1	14	48
रा.	0	3	25	12

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	4	24	24
बु	0	4	6	12
के.	0	1	23	12
शु	0	5	2	0
र	0	1	15	36
चं	0	2	16	0
मं	0	1	23	12
रा.	0	4	16	48
बृ	0	4	1	36

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु	0	3	25	36
के.	0	1	17	36
शु	0	4	16	0
र	0	1	10	46
चं	0	2	8	0
मं	0	1	17	36
रा.	0	4	2	24
बृ	0	3	18	48
श.	0	4	9	12

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	19	36
शु	0	1	26	0
र	0	0	16	48
चं	0	0	28	0
मं	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24
बृ	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु	0	1	17	36

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु	0	5	10	0
र	0	1	18	0
चं	0	2	20	0
मं	0	1	26	0
रा.	0	4	24	0
बृ	0	4	8	0
श.	0	5	2	0
बु	0	4	16	0
के.	0	1	26	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र	0	0	14	24
चं	0	0	24	0
मं	0	0	16	48
रा.	0	1	13	12
बृ	0	1	8	24
श.	0	1	15	36
बु	0	1	10	48
के.	0	0	16	48
शु	0	1	18	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं	0	1	10	0
मं	0	0	28	0
रा.	0	2	12	0
बृ	0	2	4	0
श.	0	2	16	0
बु	0	2	8	0
के.	0	0	28	0
शु	0	2	20	0
र	0	0	24	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं	0	0	11	36
रा.	0	1	20	24
बृ	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु	0	1	26	0
र	0	0	16	48
चं	0	0	28	0

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	9	36
बृ	0	3	25	12
श.	0	4	16	48
बु	0	4	2	24
के.	0	1	20	24
शु	0	4	24	0
र	0	1	13	12
चं	0	2	12	0
मं	0	1	20	24

अथ विंशोत्तरीशनिमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	5	21	28	30
बु	0	5	3	25	30
के.	0	2	3	10	30
शु	0	6	0	30	0
र	0	1	24	9	0
चं	0	3	0	15	0
मं	0	2	3	10	30
रा.	0	5	12	27	0
बृ	0	4	24	24	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र	0	1	18	27	0
चं	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	31	0
बृ.	0	4	9	12	0
श.	0	5	3	25	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प
.के	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र	0	0	19	57	0
च	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु	0	6	10	0
र	0	1	27	0
चं	0	3	5	0
मं	0	2	6	30
रा.	0	5	21	0
बृ	0	5	2	0
श.	0	6	0	30
बु	0	5	11	30
के.	0	2	6	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र	0	0	17	6
चं	0	0	28	30
मं	0	0	19	57
रा.	0	1	21	18
बृ	0	1	15	36
श.	0	1	24	9
बु	0	1	18	27
के.	0	0	19	57
शु	0	1	27	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं	0	1	17	30
मं	0	1	3	15
रा.	0	2	25	30
बृ	0	2	16	0
श.	0	3	0	15
बु	0	2	20	45
के.	0	1	3	15
शु	0	3	5	0
र	0	0	28	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	0
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	5	3	54
बृ	0	4	16	48
श.	0	5	12	27
बु	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु	0	5	21	0
र	0	1	21	18
चं	0	2	25	30
मं	0	1	29	51

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ	0	4	1	36
श.	0	4	24	24
बु	0	4	9	12
के.	0	1	23	12
शु	0	5	2	0
र	0	1	15	36
चं	0	2	16	0
मं	0	1	23	12
रा.	0	4	16	48

अथ विंशोत्तरीबुधमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	2	49	30
के.	0	1	20	34	30
शु.	0	4	24	30	0
र.	0	1	13	21	0
चं.	0	2	12	15	0
मं.	0	1	20	34	30
रा.	0	4	10	3	0
बृ.	0	3	25	36	0
श.	0	4	17	16	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	5	20	0
र.	0	1	21	0
चं.	0	2	25	0
मं.	0	1	29	30
रा.	0	5	3	0
बृ.	0	4	16	0
श.	0	5	11	30
बु.	0	4	24	30
के.	0	1	26	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	15	18
चं.	0	0	25	30
मं.	0	0	17	51
रा.	0	1	15	54
बृ.	0	1	10	48
श.	0	1	18	27
बु.	0	1	13	21
के.	0	0	17	51
शु.	0	1	21	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	12	30
मं.	0	0	29	45
रा.	0	2	16	30
बृ.	0	2	8	0
श.	0	2	20	45
बु.	0	2	12	15
के.	0	0	29	45
शु.	0	2	25	0
र.	0	0	25	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बु.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	17	42
बृ.	0	4	2	24
श.	0	4	25	21
बु.	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु.	0	5	3	0
र.	0	1	15	54
चं.	0	2	16	30
मं.	0	1	23	33

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	18	48
श.	0	4	9	12
बु.	0	3	25	36
के.	0	1	17	36
शु.	0	4	16	0
र.	0	1	10	48
चं.	0	2	8	0
मं.	0	1	17	36
रा.	0	4	2	24

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
शु.	0	5	3	25	30
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र.	0	1	18	27	0
चं.	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	21	0
बृ.	0	4	3	12	0

अथ विंशोत्तरीकेतुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
चं.	0	0	12	15	0
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	7
बृ.	0	0	19	36	0
श.	0	0	23	16	30
बु.	0	0	20	49	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	0
बृ.	0	0	19	36	0
श	0	0	23	16	30
बृ.	0	0	20	49	30
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
चं.	0	0	12	15	0

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	24	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
चं.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30

अथ विंशोत्तरीशुक्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	20	0
र.	0	2	0	0
चं.	0	3	10	0
मं.	0	2	10	0
रा.	0	6	0	0
बृ.	0	5	10	0
श.	0	6	10	0
बु.	0	5	20	0
के.	0	2	10	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	18	0
चं.	0	1	0	0
मं.	0	0	21	0
रा.	0	1	24	0
बृ.	0	1	18	0
श.	0	1	27	0
बु.	0	1	21	0
के.	0	0	21	0
शु.	0	2	0	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	20	0
मं.	0	1	5	0
रा.	0	3	0	0
बृ.	0	2	20	0
श.	0	3	5	0
बु.	0	2	25	0
के.	0	1	5	0
शु.	0	3	10	0
र.	0	1	0	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0

अथ राहंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	5	12	0
बृ.	0	4	24	0
श.	0	5	21	0
बु.	0	5	3	0
के.	0	2	3	0
शु.	0	6	0	0
र.	0	1	24	0
चं.	0	3	0	0
मं.	0	2	3	0

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	4	8	0
श.	0	5	2	0
बु.	0	4	16	0
के.	0	1	26	0
शु.	0	5	10	0
र.	0	1	18	0
चं.	0	2	20	0
मं.	0	1	26	0
रा.	0	4	24	0

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	6	0	30
बु.	0	5	11	30
के.	0	2	6	30
शु.	0	6	10	0
र.	0	1	27	0
चं.	0	3	5	0
मं.	0	2	6	30
रा.	0	5	21	0
बृ.	0	5	2	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	4	24	30
के.	0	1	29	30
शु.	0	5	20	0
र.	0	1	21	0
चं.	0	2	25	0
मं.	0	1	29	30
रा.	0	5	3	0
बृ.	0	4	16	0
श.	0	5	11	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	24	30
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्यदशा वर्ष 6 कृ.उ.फा. उषा.				चंद्रदशा वर्ष 10 रोहि. ह. श्रवण				भौमदशा वर्ष 7 मृ. चि. ध.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	0	3	18	चं.	0	10	0	मं.	0	4	27
चं.	0	6	0	मं.	0	7	0	रा.	1	0	18
मं.	0	4	6	रा.	1	6	0	बृ.	0	11	6
रा.	0	10	24	बृ.	1	4	0	श.	1	1	9
बृ.	0	9	18	श.	1	7	0	बु.	0	11	27
श.	0	11	12	बु.	1	5	0	के.	0	4	27
बु.	0	10	6	के.	0	7	0	शु.	1	2	0
के.	0	4	6	शु.	1	8	0	सू.	0	4	6
शु.	1	0	0	सू.	0	6	0	चं.	0	7	0

राहुदशा वर्ष 18 आर्द्रा. स्वा. शत				गुरुदशा वर्ष 16 पुन. वि. पू. भा.				शनिदशा वर्ष 19 पुष्य अनु. उ. भा.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	2	8	12	बृ.	2	1	18	श.	3	0	3
बृ.	2	4	24	श.	2	6	12	बु.	2	8	9
श.	2	10	6	बु.	2	3	6	के.	1	1	9
बु.	2	6	18	के.	0	11	6	शु.	3	2	0
के.	1	0	18	शु.	2	8	0	सू.	0	11	12
शु.	3	0	0	सू.	0	9	18	चं.	1	7	0
सू.	0	10	24	चं.	1	4	0	मं.	1	1	9
चं.	1	6	0	मं.	0	11	6	रा.	2	10	6
मं.	1	0	18	रा.	2	4	24	बृ.	2	6	12

बुधदशा वर्ष 17 आश्ले ज्ये रेवती				केतुदशा वर्ष 7 मघा. मू. अश्वि				शुक्रदशा वर्ष 20 पू. फा. पू. षा. भ.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	2	4	27	के.	0	4	27	शु.	3	4	0
के.	0	11	27	शु.	1	2	0	सू.	1	0	0
शु.	2	10	0	सू.	0	4	6	चं.	1	8	0
सू.	0	10	6	चं.	0	7	0	मं.	1	2	0
चं.	1	5	0	मं.	0	4	27	रा.	3	0	0
मं.	0	11	27	रा.	1	0	18	बृ.	2	8	0
रा.	2	6	18	बृ.	0	11	6	श.	3	2	0
बृ.	2	3	6	श.	1	1	9	बु.	2	10	0
श.	2	8	9	बु.	0	11	27	के.	1	2	0

योगिनीदशाऽन्तर्दशा चक्र

मंगला 1				पिंगला 2				धान्या 3				भ्रामरी 4			
श्रवण, आर्द्रा, चित्रा				पुनर्वसु, स्वाति, धनिष्ठा				पुष्य, विशाखा, शतभिषा				आश्ले, अनु. पूर्वा भा. अश्विनी			
चन्द्र				सूर्य				वृहस्पति				मंगल			
	व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.
मं	0	0	10	पि.	0	1	10	धा.	0	3	0	भ्रा.	0	5	10
पि.	0	0	20	धा.	0	2	0	भ्रा.	0	4	0	भ.	0	6	20
धा.	0	1	0	भ्रा.	0	2	20	भ.	0	5	0	उ.	0	8	0
भ्रा.	0	1	10	भ.	0	3	10	उ.	0	6	0	सि.	0	9	10
भ.	0	1	20	उ.	0	4	0	सि.	0	7	0	सं.	0	10	20
उ.	0	2	0	सि.	0	4	20	सं.	0	8	0	मं	0	1	10
सि.	0	2	10	सं.	0	5	10	मं	0	1	0	पि.	0	2	20
सं.	0	2	20	मं	0	0	20	पि.	0	2	0	धा.	0	4	0

भद्रिका 5				उल्का 6				सिद्धा 7				संकटा 8			
मघा, ज्येष्ठा, उ.भा, भरणी				पूर्वा फा, मूला रेवती कृतिका				उ.फा., पूर्वाषाढ़ा रोहिणी				हस्त, उत्तराषाढ़ा मृगशिरा			
बुध				शनि				शुक्र				केतु			
	व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.
भ.	0	8	10	उ.	1	0	0	सि.	1	4	10	सं.	1	9	10
उ.	0	10	0	सि.	1	2	0	सं.	1	6	20	मं	0	2	20
सि.	0	11	20	सं.	1	4	0	मं	0	2	10	पि.	0	5	10
सं.	1	1	10	मं	0	2	0	पि.	0	4	20	धा.	0	8	0
मं	0	1	20	पि.	0	4	0	धा.	0	7	0	भ्रा.	0	10	20
पि.	0	3	10	धा.	0	6	0	भ्रा.	0	9	10	भ.	1	1	10
धा.	0	5	0	भ्रा.	0	8	0	भ.	0	11	20	उ.	1	4	0
भ्रा.	0	6	20	भ.	0	10	0	उ.	1	2	0	सि.	1	6	20

योगिनी दशा विचार :– योगिनी दशा कुल 36 वर्ष की होती है प्रत्येक 36 वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा में पुनरावृत्ति होती है।

वर्षफल निर्माण विधि

जिस वर्ष का वर्षफल अभीष्ट हो, उस अभीष्ट संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर जो शेष बचे वे जन्म से गत वर्ष अर्थात् 'गताब्द' होते हैं उन गताब्दों से पृष्ठ संख्या 182 पर दी गई प्राचीन एवं पृष्ठ संख्या 183 दी गई नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी के नीचे दिए गए वार, घटी, पलादि फल लेकर उसमें जन्म के वार इष्टघटी, पलादि जोड़ने पर वर्ष प्रवेशकालिक वारादि इष्टकालज्ञात होता है। पल, घटी आदि यदि 60 से अधिक हों, तो उन्हें सवर्ण करके तथा यदि वारादि संख्या

7 से अधिक हो, तो 7 का भाग देने पर एकादि शेष रहने पर रवि आदि क्रम से वार तथा आगे वर्षेष्ट घटी पलादि होते हैं। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यंशादि की तरह वर्ष प्रवेशकालिक स्पष्ट सूर्य होता है। वर्षेष्ट के स्वदेशीय (समीपस्थ अक्षांश) लग्न सारिणी से लग्न साधन करने पर वर्ष प्रवेश कालिक लग्न सिद्ध होता है। इस प्रकार वर्ष लग्न में वर्ष प्रवेश कालिक ग्रह स्थापित करने पर वर्ष कुण्डली बनती है।

मुन्थासाधन– वर्ष कुण्डली में मुन्था भी लगाई जाती है। जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुन्था होती है, यह प्रतिवर्ष एक-एक राशि बढ़ती है। अत: गतवर्ष संख्या में जन्म लग्न जोड़ने पर यदि 12 से अधिक हो तो 12 का भाग देने पर शेष मुन्था की राशि होती है।

त्रिपताकी चक्रम् – वर्ष प्रवेश की संख्या को 9 का भाग दें जो शेष बचे जन्म कुण्डली में जिस राशि में चंद्रमा हो उससे आगे उतने स्थान गिन कर प्राप्त राशि अंक पर चंद्रमा लगायें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या को 4 का भाग दें शेष को जन्म स्थान के ग्रहों से उतने आगे गिन कर लगायें।

मुद्दादशासाधन– गत वर्ष संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर जो संख्या उपलब्ध हो, उसमें 2 घटाकर 9 का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र की दशा होती है। सूर्यादि मुद्दादशा दिन पृ० सं० -- पर दिए मुद्दादशा चक्र से जानें।

हर्षबलसाधन– वर्ष कुण्डली में स्थानवल, स्वोच्चवल, पुरुषस्त्रीवल तथा दिनरात्रिबल – ये चार वर्ष बल कहलाते हैं।

स्थानबल– वर्ष लग्न से 9 स्थान में सूर्य, 3 में चन्द्रमा, 6 में मंगल, 1 में बुध, 11 में गुरु, 5 में शुक्र तथा 12 में शनि 5 हर्षबल देते हैं।

स्वोच्चबल– प्रत्येक ग्रह अपनी तथा उच्च राशि में 5 राशि में 5 हर्षबल देते हैं। अर्थात् सूर्य 1/5 व चन्द्र 2/4, मंगल 1/8/10, बुध 3/6, गुरु 4/9/12, शुक्र 2/7/12, शनि 10/11/7 इन सवोच्च राशियों में सूर्यादि ग्रह हर्षित होते हैं।

पुरुषस्त्रीबल– स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श.) 1/2/3/7/8/9 स्थानों में तथा पुरुषग्रह (सू.मं.गु.) 4/5/6/10/11/12 स्थानों में 5 हर्षबल देते हैं।

दिनरात्रिबल– दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुरुषग्रह तथा रात्रि में हो तो स्त्री ग्रह 5 हर्षबल देते हैं।

यहाँ यह ध्यान देना चाहिए जहाँ बल प्राप्त हो वहाँ 5 तथा जहाँ बल प्राप्त न हो वहाँ 0 शून्य रखना चाहिए। इस प्रकार सूर्यादि सात ग्रहों के चारों स्थानादि बलों का योग हर्षबल कहलाता है।

वर्षेश-निर्णय– जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति, मुन्थाधिपति, त्रिराशिपति, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी ये पञ्चाधिकारी कहलाते हैं। इन पञ्चाधिकारियों में जो बलवान् होकर लग्न को देखता हो, वह वर्षेश होता है। बलवान् होने पर भी यदि लग्न को न देखता हो तो वर्षेश नहीं होगा। समान वली होने पर जो लग्न को अधिक दृष्टि से देखता हो वह वर्षेश होगा। लग्न को देखने वाला ग्रह यदि अल्पबल हो तो मुन्थेश अर्थात् मुन्था जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होगा। यदि पञ्चाधिकारियों में कोई भी लग्न को न देखता हो तो जो गृह सबसे बलवान हो वह वर्षेश होगा। यदि चन्द्र वर्षेश प्राप्त हो तो वह पञ्चाधिकारियों में जिससे इत्थशाल करे वह वर्षेश होगा। यदि इत्थाशाल न करे तो चन्द्र जिस राशि में बैठा हो वह वर्षेश होगा।

वर्ष दृष्टि-विचार– वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में स्थित हो, उससे 5/9 स्थान को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से, 3/11 स्थान का गुप्त मित्र दृष्टि से, 1/7 स्थान को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा 4/10 स्थान को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है। प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि सभी कार्यों में शीघ्र सफलता देने वाली होती है, गुप्त मित्र दृष्टि कार्यों में कठिनता से सफलता देने वाली होती है। प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि शत्रुता उत्पन्न करने वाली, मित्र से शत्रुता कराने वाली, बनते काम बिगाड़ने वाली हानिकारक होती है। गुप्त शत्रु दृष्टि कार्यों को कठिनता से सफल कराने वाली तथा गुप्त रूप से शत्रु उत्पन्न कराने वाली होती है।

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्षफल [illegible]

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५
घटी	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१
घटी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४०	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

त्रिराशिपतिचक्र

मे.	वृ.	मि	कं.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

विं. मुद्दादशाचक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

योगिनीक्रमेण मुद्दादशाचक्र

यो.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मा.	०	०	१	१	१	२	२	२
दि.	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रत्यक्ष मित्र	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९
गुप्त मित्र	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११
प्रत्यक्ष शत्रु	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७
गुप्त शत्रु	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०

जन्म एवं वर्ष कुण्डली में द्वादश भाव

फलादेश में सुगमता के लिए जन्म अथवा वर्ष कुण्डली के विभिन्न भावों के अलग-अलग नाम रखे गए हैं। लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव- केन्द्र कहलाते हैं। लग्न से पंचम (5) नवम (9) भावों को त्रिकोण कहते हैं। केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित शुभ ग्रह शुभफलदायक होते हैं।

पणफर- लग्न से 2-5-8-11वें भावों को पणफर कहते हैं। इन भावों में स्थित ग्रह यदि उच्च, मित्रादि राशि का हो, तो शुभफलप्रद होता है।

आपोक्लिम- 3, 6, 9 तथा 12 द्वादशभाव को आपोक्लिम कहते हैं। इन भावों में नीच-शत्रु आदि राशि का ग्रह अशुभफल प्रदान करता है।

उपचय- 3, 6, 10, 11वें भावों को उपचय भाव कहते हैं। शेष भावों को अनुपचय कहते हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	०८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	०९	३२	५४	१७	४०	०३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	०८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४९	०४	१९	३५	५०	०५	२१	३६	५२	०७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	०६	२९	५२	१५	३८	०१	२३	४६	०९	३२	५५	१८	४१	०४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	०७	३०	५३
विपल	२३	१६	०९	०२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	०६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	०७	००
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	०९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	०१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	०४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	०७	३०	५३	१६	३९	०२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	०८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गण्ड – मूलादि – जन्म – विचार

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती– ये 6 नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक, माता, पिता, कुल या स्वयं को अरिष्टदायक होता है। यदि यह अरिष्ट से बच जाये तो अपने बल-बुद्धि से संसार में सुखपूर्वक दीर्घायु प्राप्त करता है। इसलिए गण्डमूल में उत्पन्न शिशु के पिता को 27 दिन तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। और फिर प्रसूति-स्नान के बाद गण्डमूल की शान्ति गौदान आदि देकर बालक का मुख देखना चाहिए।

मूलनिवास – चक्र

मास के अनुसार	वैशा. ज्ये, मार्ग. फा.	चै.श्रा.का.पौ.	आषा.अश्वि., भाद्र, माघ
लग्न के अनुसार	2, 5, 8, 11	3, 6, 9, 12	1, 4, 7, 10
मूल निवास स्थान	पाताल	भूमि	स्वर्ग
फल	शुभ	कुलनाश	शुभ

मूल – आश्लेषा चरण – फल

मूल चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल		समय-फल	
1	पितृनाश	1	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
2	मातृनाश	2	धन नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
3	धननाश	3	मातृनाश	रात्रि में	माता को भय
4	शान्ति से शुभ	4	पितृनाश		

मूलजन्म में वृक्ष विभाग

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी फल	7 मूल नाश	8 वंशनाश	10 मातृक्लेश	11 मातुल-कष्ट	12 मन्त्री पद	5 मन्त्री पद	4 प्रचुर लाभ	3 अल्पायु

मूल – पुरुष – चक्र

विभाग	शिर	मुख	कन्धा	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुप्तांग	जानु	पैर
घटी फल	5 राजा	7 पितृ-नाश	4 वली	8 वली	3 दानी	9 मन्त्री	2 तानी	10 कामी	6 बुद्धि-मान	6 बुद्धि-मान

मूल – कन्या – चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी फल	4 पशु नाश	6 धन नाश	5 धन लाभ	5 कुटिला	5 धन-लाभ	8 दया-वती	9 कामिनी	4 मातृ-नाश	4 भ्रातृ-नाश	10 विधवा

आश्लेषा – चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी फल	5 पुत्रादि	7 पितृ-नाश	2 स्त्री-नाश	4 स्त्री-लाभ	4 गुरु भय	8 वली	1 आत्महा	6 भ्रम	7 तपस्वी हानि	7 धन

आश्लेषा – पुरुष – चक्र

विभाग	फल	पुष्प	पत्ता	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
घटी फल	1 धन	5 धन	9 राजभय	7 हानि	13 मानहानि	12 पितृहानि	4 अल्पायु

अभुक्त मूल – विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की 4 घटी मतान्तर से 1 घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की 4 घटी मतानन्तर से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इस समय में कदाचित् बालक का जन्म हो, तो बालक के पिता को 8 वर्ष तक मतान्तर से 6 मास तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। इसकी शान्ति के लिए रुद्रार्चन अभिषेक एवं महामृत्युञ्जय की विधि सहित अभुक्त मूल शान्ति कर शुभ मुहूर्त्त में बालक का मुख देखना चाहिए।

अश्विनीपाद फलम्– 1 में पाद में पितृकष्ट, 2 पाद में सुख सम्पद, 3 या में मन्त्रिसम, 4र्थ में राजा तुल्य होता है। **रेवती पाद फलम्**– 1 में राजा तुल्य, 2य में मन्त्रितुल्य, 3य में सुखसम्पद, 4र्थ में पितृकष्ट। **मघा पाद फलम्**– प्रथम में मातृ कष्ट, 2य में पितृ कष्ट, 3य में सौख्य प्राप्ति, 4र्थ में धनमान विद्याप्राप्ति। **ज्येष्ठा पाद फलम्**– प्रथम में ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट, 2य में अनुज क्लेश, 3य में मातृ कष्ट, 4र्थ में पितृकष्ट।

विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने का फल एवं उपचार

शरीर पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने पर उस समय जो वस्त्र पहने हों उन वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए। जन्म नक्षत्र, दग्धा-तिथि, मृत्युयोग, पापग्रहयुक्त लग्न एवं अष्टम चन्द्रमा में पल्ली पतन अरिष्ट फलदायक होता है, अतः उसकी शान्ति के लिए पञ्चगव्य से स्नान कर छायापात्रदान, महामृत्युञ्य का जप, होमादि करना श्रेयस्कर होता है।

पल्ली-पतन के शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र :- छिपकली के 1, 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12, 13 इन तिथियों, सोम, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों तथा अश्वि., रोहि., पुन., पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., धनि., शत., इन नक्षत्रों में गिरने पर शुभ फलदायक है। इनके अतिरिक्त तिथि, वार एवं नक्षत्रों में गिरने पर अशुभफलदायक है।

अंग विभागवश पल्ली-पतनफल जानने के लिए चक्र

अंग	फल	अंग	फल	अंग	फल	अंग	फल
मस्तक	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाश	पृष्ठ मध्य	झगड़ा-झंझट	कटिप्रदेश	रोग-भय
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	दक्षिण-भुज	मान-सम्मान	दक्षिण-पृष्ठ	सुखलाभ	दक्षिण जंघा	धन-हानि
नासिकाग्र	व्याधि	वाम-भुज	राज-भय	वाम-पृष्ठ	रोग-भय	वाम जंघा	पुत्र-लाभ
मुख-प्रदेश	मिष्ठान-भोजन	दक्षिण-स्कन्ध	सफलता	दक्षिण-हस्त	धन-लाभ	गुदा	रोग-भय
दक्षिण-कर्ण	आयु-वृद्धि	वाम-स्कन्ध	शत्रुभय	वाम-हस्त	धन-हानि	गुप्तांग	मित्र-प्राप्ति
वाम-कर्ण	भूषण लाभ	स्तर-प्रदेश	दौर्भाग्य	नाभि-प्रदेश	पुत्र-प्राप्ति	दक्षिण-पाद	यात्रा
				हृदय	यश-प्राप्ति	वाम-पाद	रोग भय

अंग स्फुरण फल :- शकुन की दृष्टि से शरीर के किसी भी भाग में अचानक स्फुरण हो जाता है। यह स्फुरण यदि निरन्तर लम्बे समय तक होता रहे तो वह वायु विकार से सम्बन्धित होता है। वह स्फुरण निष्फल होता है।

यदि क्षणिक अंग- स्फुरण हो, तो वह शुभाशुभ फल बोधक होता है। सामान्यतया स्त्री का वामांग एवं पुरुष का दक्षिणांग स्फुरण शुभ माना गया है। विस्तृत फल निम्न प्रकार ज्ञात करें।

अंग स्फुरण फल जानने के लिए चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक (सिर)	भूमिलाभ	भृकुटि	धन प्राप्ति	कण्ठ	भूषण प्राप्ति	पृष्ठ	पराजय	वाहू-प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति
ललाट	स्थान लाभ	नासिका	सुगन्ध लाभ	ग्रीवा	शत्रु भय	नाभि	स्त्रीनाश	गुप्तांग	प्रिय-प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शनलाभ	दक्षिण कण	आयु-वृद्धि	स्कन्ध	मित्र-समागम	कुक्षि	सुप्रीति	जंघा	हानिप्रद
कपोल	स्त्री सुख	वाम-कण	भूषण लाभ	वक्षः स्थल	विजय	कटि प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति	घटना	शत्रुसन्धि
भ्रुमध्य	सुख-प्राप्ति	अधर	प्रिय प्राप्ति	हृदय	इष्ट सिद्धि	हस्त	धन-प्राप्ति	पाद	स्थान-प्राप्ति

छींक (छिक्का) विचार :-

कोई शुभ कार्य प्रारम्भ करते समय अथवा यात्रा करते समय छींक आने पर अपशकुन माना जाता है। इसका विचार भारत वर्ष में प्रायः सभी प्रदेशों में होता है इसके विषय में अनेक लोकोक्ति अथवा घाघ, भड्डली इत्यादि की किवदन्तियाँ मुहावरों के रूप में प्रचलित हैं।

संकेत में सारांश यह है कि सूँघने आदि पदार्थों के द्वारा ली गई बनावटी छींक निष्फल होती है। पीछे की छींक कुशलक्षेमकारक है। बाईं ओर की छींक सभी कार्य को सिद्ध करने वाली, सामने की छींक लड़ाई कराने वाली, दाहिनी ओर की छींक धन-नाश करने वाली, ऊँची छींक विजय देने वाली, नीची छींक भय करने वाली तथा अपनी छींक बहुत दुःख देने वाली होती है। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या की छींक बहुत अशुभफल देने वाली होती है। यदि भोजन के अन्त में छींक आए तो दूसरे दिन प्रिय भोजन प्राप्त होता है।

सन्ध्यावन्दनादि, शयन के समय, शौच के समय, दानकाल, भोजन के समय, बाईं ओर तथा पीछे की छींक शुभफल करने वाली होती है। छींक के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, उनमें से प्रचलित उक्ति यहाँ दी जा रही है-

(छींकत न्हइये छींकत खइये, छींकत जइये सोय। छींकत पर घर कबहूँ न जइये सब सोने की होय। एक नाक दो छींका। इनसे सगुन हात है नीका।।)

दैनिक लग्न सारणी 2012 जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	बृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:13:21	09:55:45	11:23:16	12:48:12	14:23:20	16:18:46	18:33:19	20:53:38	23:10:57	01:31:10	03:50:38	06:09:15
2	08:09:25	09:51:50	11:19:20	12:44:16	14:19:24	16:14:50	18:29:23	20:49:42	23:07:01	01:27:14	03:46:42	06:05:19
3	08:05:29	09:47:54	11:15:24	12:40:20	14:15:28	16:10:54	18:25:27	20:45:47	23:03:05	01:23:18	03:42:47	06:01:23
4	08:01:33	09:43:58	11:11:28	12:36:24	14:11:32	16:06:58	18:21:31	20:41:51	22:59:09	01:19:22	03:38:51	05:57:27
5	07:57:37	09:40:02	11:07:32	12:32:28	14:07:36	16:03:03	18:17:35	20:37:55	22:55:13	01:15:26	03:34:55	05:53:31
6	07:53:42	09:36:06	11:03:36	12:28:32	14:03:40	15:59:07	18:13:39	20:33:59	22:51:17	01:11:30	03:30:59	05:49:35
7	07:49:46	09:32:10	10:59:40	12:24:36	13:59:45	15:55:11	18:09:43	20:30:03	22:47:21	01:07:35	03:27:03	05:45:39
8	07:45:50	09:28:14	10:55:44	12:20:40	13:55:49	15:51:15	18:05:47	20:26:07	22:43:25	01:03:39	03:23:07	05:41:44
9	07:41:54	09:24:18	10:51:48	12:16:44	13:51:53	15:47:19	18:01:51	20:22:11	22:39:30	00:59:43	03:19:11	05:37:48
10	07:37:58	09:20:23	10:47:53	12:12:48	13:47:57	15:43:23	17:57:55	20:18:15	22:35:34	00:55:47	03:15:15	05:33:52
11	07:34:02	09:16:27	10:43:57	12:08:52	13:44:01	15:39:27	17:53:60	20:14:19	22:31:38	00:51:51	03:11:20	05:29:56
12	07:30:06	09:12:31	10:40:01	12:04:57	13:40:05	15:35:31	17:50:04	20:10:23	22:27:42	00:47:55	03:07:24	05:26:00
13	07:26:10	09:08:35	10:36:05	12:01:01	13:36:09	15:31:35	17:46:08	20:06:27	22:23:46	00:43:59	03:03:28	05:22:04
14	07:22:15	09:04:39	10:32:09	11:57:05	13:32:13	15:27:39	17:42:12	20:02:32	22:19:50	00:40:03	02:59:32	05:18:08
15	07:18:19	09:00:43	10:28:13	11:53:09	13:28:17	15:23:43	17:38:16	19:58:36	22:15:54	00:36:07	02:55:36	05:14:12
16	07:14:23	08:56:47	10:24:17	11:49:13	13:24:21	15:19:47	17:34:20	19:54:40	22:11:58	00:32:11	02:51:40	05:10:17
17	07:10:27	08:52:51	10:20:21	11:45:17	13:20:25	15:15:51	17:30:24	19:50:44	22:08:02	00:28:16	02:47:44	05:06:21
18	07:06:31	08:48:56	10:16:25	11:41:21	13:16:29	15:11:55	17:26:28	19:46:48	22:04:06	00:24:20	02:43:48	05:02:25
19	07:02:35	08:44:60	10:12:29	11:37:25	13:12:33	15:07:59	17:22:32	19:42:52	22:00:11	00:20:24	02:39:53	04:58:29
20	06:58:39	08:41:04	10:08:34	11:33:29	13:08:37	15:04:04	17:18:36	19:38:56	21:56:15	00:16:28	02:35:57	04:54:33
21	06:54:43	08:37:08	10:04:38	11:29:33	13:04:42	15:00:08	17:14:40	19:35:00	21:52:19	24:08:36	02:32:01	04:50:37
22	06:50:48	08:33:12	10:00:42	11:25:37	13:00:46	14:56:12	17:10:45	19:31:04	21:48:23	24:04:40	02:28:05	04:46:41
23	06:46:52	08:29:16	09:56:46	11:21:41	12:56:50	14:52:16	17:06:49	19:27:08	21:44:27	24:00:44	02:24:09	04:42:45
24	06:42:56	08:25:20	09:52:50	11:17:46	12:52:54	14:48:20	17:02:53	19:23:13	21:40:31	23:56:48	02:20:13	04:38:50
25	06:38:60	08:21:24	09:48:54	11:13:50	12:48:58	14:44:24	16:58:57	19:19:17	21:36:35	23:52:53	02:16:17	04:34:54
26	06:35:04	08:17:28	09:44:58	11:09:54	12:45:02	14:40:28	16:55:01	19:15:21	21:32:39	23:48:57	02:12:21	04:30:58
27	06:31:08	08:13:33	09:41:02	11:05:58	12:41:06	14:36:32	16:51:05	19:11:25	21:28:43	23:45:01	02:08:25	04:27:02
28	06:27:12	08:09:37	09:37:06	11:02:02	12:37:10	14:32:36	16:47:09	19:07:29	21:24:47	23:41:05	02:04:29	04:23:06
29	06:23:16	08:05:41	09:33:10	10:58:06	12:33:14	14:28:40	16:43:13	19:03:33	21:20:52	23:37:09	02:00:34	04:19:10
30	06:19:21	08:01:45	09:29:15	10:54:10	12:29:18	14:24:44	16:39:17	18:59:37	21:16:56	23:33:13	01:56:38	04:15:14
31	06:15:25	07:57:49	09:25:19	10:50:14	12:25:22	14:20:49	16:35:21	18:55:41	21:12:60	23:29:17	01:52:42	04:11:18

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	बृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:53:53	09:21:23	10:46:18	12:21:26	14:16:53	16:31:25	18:51:45	21:09:04	23:25:21	01:48:46	04:07:22	06:11:29
2	07:49:57	09:17:27	10:42:22	12:17:31	14:12:57	16:27:30	18:47:49	21:05:08	23:21:25	01:44:50	04:03:26	06:07:33
3	07:46:01	09:13:31	10:38:26	12:13:35	14:09:01	16:23:34	18:43:54	21:01:12	23:17:29	01:40:54	03:59:31	06:03:37
4	07:42:05	09:09:35	10:34:31	12:09:39	14:05:05	16:19:38	18:39:58	20:57:16	23:13:34	01:36:58	03:55:35	05:59:41
5	07:38:09	09:05:39	10:30:35	12:05:43	14:01:09	16:15:42	18:36:02	20:53:20	23:09:38	01:33:02	03:51:39	05:55:45
6	07:34:14	09:01:43	10:26:39	12:01:47	13:57:13	16:11:46	18:32:06	20:49:24	23:05:42	01:29:06	03:47:43	05:51:49
7	07:30:18	08:57:47	10:22:43	11:57:51	13:53:17	16:07:50	18:28:10	20:45:28	23:01:46	01:25:10	03:43:47	05:47:53
8	07:26:22	08:53:51	10:18:47	11:53:55	13:49:21	16:03:54	18:24:14	20:41:33	22:57:50	01:21:15	03:39:51	05:43:57
9	07:22:26	08:49:56	10:14:51	11:49:59	13:45:25	15:59:58	18:20:18	20:37:37	22:53:54	01:17:19	03:35:55	05:40:01
10	07:18:30	08:45:60	10:10:55	11:46:03	13:41:30	15:56:02	18:16:22	20:33:41	22:49:58	01:13:23	03:31:59	05:36:06
11	07:14:34	08:42:04	10:06:59	11:42:08	13:37:34	15:52:07	18:12:26	20:29:45	22:46:02	01:09:27	03:28:03	05:32:10
12	07:10:38	08:38:08	10:03:03	11:38:12	13:33:38	15:48:11	18:08:30	20:25:49	22:42:06	01:05:31	03:24:07	05:28:14
13	07:06:42	08:34:12	09:59:08	11:34:16	13:29:42	15:44:15	18:04:35	20:21:53	22:38:10	01:01:35	03:20:11	05:24:18
14	07:02:46	08:30:16	09:55:12	11:30:20	13:25:46	15:40:19	18:00:39	20:17:57	22:34:15	00:57:39	03:16:16	05:20:22
15	06:58:50	08:26:20	09:51:16	11:26:24	13:21:50	15:36:23	17:56:43	20:14:01	22:30:19	00:53:43	03:12:20	05:16:26
16	06:54:54	08:22:24	09:47:20	11:22:28	13:17:54	15:32:27	17:52:47	20:10:05	22:26:23	00:49:47	03:08:24	05:12:30
17	06:50:58	08:18:28	09:43:24	11:18:32	13:13:58	15:28:31	17:48:51	20:06:09	22:22:27	00:45:51	03:04:28	05:08:34
18	06:47:03	08:14:32	09:39:28	11:14:36	13:10:03	15:24:35	17:44:55	20:02:14	22:18:31	00:41:56	03:00:32	05:04:38
19	06:43:07	08:10:36	09:35:32	11:10:41	13:06:07	15:20:39	17:40:59	19:58:18	22:14:35	00:37:60	02:56:36	05:00:42
20	06:39:11	08:06:41	09:31:36	11:06:45	13:02:11	15:16:44	17:37:03	19:54:22	22:10:39	00:34:04	02:52:40	04:56:46
21	06:35:15	08:02:45	09:27:40	11:02:49	12:58:15	15:12:48	17:33:07	19:50:26	22:06:43	00:30:08	02:48:44	04:52:50
22	06:31:19	07:58:49	09:23:45	10:58:53	12:54:19	15:08:52	17:29:12	19:46:30	22:02:47	00:26:12	02:44:48	04:48:54
23	06:27:23	07:54:53	09:19:49	10:54:57	12:50:23	15:04:56	17:25:16	19:42:34	21:58:51	00:22:16	02:40:52	04:44:58
24	06:23:27	07:50:57	09:15:53	10:51:01	12:46:27	15:01:00	17:21:20	19:38:38	21:54:55	24:14:24	02:36:56	04:41:02
25	06:19:31	07:47:01	09:11:57	10:47:05	12:42:32	14:57:04	17:17:24	19:34:42	21:50:60	24:10:28	02:33:00	04:37:07
26	06:15:35	07:43:05	09:08:01	10:43:09	12:38:36	14:53:08	17:13:28	19:30:46	21:47:04	24:06:32	02:29:04	04:33:11
27	06:11:39	07:39:09	09:04:05	10:39:14	12:34:40	14:49:12	17:09:32	19:26:51	21:43:08	24:02:36	02:25:08	04:29:15
28	06:07:43	07:35:13	09:00:09	10:35:18	12:30:44	14:45:17	17:05:36	19:22:55	21:39:12	23:58:40	02:21:13	04:25:19
29	06:03:47	07:31:17	08:56:13	10:31:22	12:26:48	14:41:21	17:01:40	19:18:59	21:35:16	23:54:44	02:17:17	04:21:23

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:27:21	08:52:17	10:27:26	12:22:52	14:37:25	16:57:44	19:15:03	21:31:20	23:50:49	02:13:21	04:17:27	05:59:51
2	07:23:26	08:48:22	10:23:30	12:18:56	14:33:29	16:53:48	19:11:07	21:27:24	23:46:53	02:09:25	04:13:31	05:55:55
3	07:19:30	08:44:26	10:19:34	12:15:01	14:29:33	16:49:53	19:07:11	21:23:28	23:42:57	02:05:29	04:09:35	05:51:60
4	07:15:34	08:40:30	10:15:38	12:11:05	14:25:37	16:45:57	19:03:15	21:19:32	23:39:01	02:01:33	04:05:39	05:48:04
5	07:11:38	08:36:34	10:11:43	12:07:09	14:21:41	16:42:01	18:59:19	21:15:36	23:35:05	01:57:37	04:01:43	05:44:08
6	07:07:42	08:32:38	10:07:47	12:03:13	14:17:45	16:38:05	18:55:23	21:11:41	23:31:09	01:53:41	03:57:47	05:40:12
7	07:03:46	08:28:42	10:03:51	11:59:17	14:13:50	16:34:09	18:51:27	21:07:45	23:27:13	01:49:45	03:53:51	05:36:16
8	06:59:50	08:24:46	09:59:55	11:55:21	14:09:54	16:30:13	18:47:32	21:03:49	23:23:17	01:45:49	03:49:55	05:32:20
9	06:55:54	08:20:50	09:55:59	11:51:25	14:05:58	16:26:17	18:43:36	20:59:53	23:19:21	01:41:53	03:45:59	05:28:24
10	06:51:58	08:16:55	09:52:03	11:47:29	14:02:02	16:22:21	18:39:40	20:55:57	23:15:25	01:37:57	03:42:03	05:24:28
11	06:48:02	08:12:59	09:48:07	11:43:34	13:58:06	16:18:25	18:35:44	20:52:01	23:11:29	01:34:01	03:38:07	05:20:32
12	06:44:06	08:09:03	09:44:12	11:39:38	13:54:10	16:14:30	18:31:48	20:48:05	23:07:33	01:30:05	03:34:12	05:16:36
13	06:40:11	08:05:07	09:40:16	11:35:42	13:50.14	16:10:34	18:27:52	20:44:09	23:03:38	01:26:10	03:30:16	05:12:40
14	06:36:15	08:01:11	09:36:20	11:31:46	13:46:18	16:06:38	18:23:56	20:40:13	22:59:42	01:22:14	03:26:20	05:08:44
15	06:32:19	07:57:15	09:32:24	11:27:50	13:42:23	16:02:42	18:20:00	20:36:17	22:55:46	01:18:18	03:22:24	05:04:48
16	06:28:23	07:53:19	09:28:28	11:23:54	13:38:27	15:58:46	18:16:04	20:32:22	22:51:50	01:14:22	03:18:28	05:00:52
17	06:24:27	07:49:23	09:24:32	11:19:58	13:34:31	15:54:50	18:12:08	20:28:26	22:47:54	01:10:26	03:14:32	04:56:57
18	06:20:31	07:45:27	09:20:36	11:16:03	13:30:35	15:50:54	18:08:13	20:24:30	22:43:58	01:06:30	03:10:36	04:53:01
19	06:16:35	07:41:32	09:16:40	11:12:07	13:26:39	15:46:58	18:04:17	20:20:34	22:40:02	01:02:34	03:06:40	04:49:05
20	06:12:39	07:37:36	09:12:45	11:08:11	13:22:43	15:43:02	18:00:21	20:16:38	22:36:06	00:58:38	03:02:44	04:45:09
21	06:08:43	07:33:40	09:08:49	11:04:15	13:18:47	15:39:07	17:56:25	20:12:42	22:32:10	00:54:42	02:58:48	04:41:13
22	06:04:47	07:29:44	09:04:53	11:00:19	13:14:51	15:35:11	17:52:29	20:08:46	22:28:14	00:50:46	02:54:52	04:37:17
23	06:00:51	07:25:48	09:00:57	10:56:23	13:10:55	15:31:15	17:48:33	20:04:50	22:24:19	00:46:50	02:50:56	04:33:21
24	05:56:56	07:21:52	08:57:01	10:52:27	13:06:60	15:27:19	17:44:37	20:00:54	22:20:23	00:42:54	02:47:00	04:29:25
25	05:52:60	07:17:56	08:53:05	10:48:31	13:03:04	15:23:23	17:40:41	19:56:58	22:16:27	00:38:58	02:43:04	04:25:29
26	05:49:04	07:14:00	08:49:09	10:44:35	12:59:08	15:19:27	17:36:45	19:53:03	22:12:31	00:35:03	02:39:09	04:21:33
27	05:45:08	07:10:04	08:45:13	10:40:40	12:55:12	15:15:31	17:32:49	19:49:07	22:08:35	00:31:07	02:35:13	04:17:37
28	05:41:12	07:06:08	08:41:17	10:36:44	12:51:16	15:11:35	17:28:54	19:45:11	22:04:39	00:27:11	02:31:17	04:13:41
29	05:37:16	07:02:13	08:37:22	10:32:48	12:47:20	15:07:39	17:24:58	19:41:15	22:00:43	00:23:15	02:27:21	04:09:46
30	05:33:20	06:58:17	08:33:26	10:28:52	12:43:24	15:03:43	17:21:02	19:37:19	21:56:47	00:19:19	02:23:25	04:05:50
31	05:29:24	06:54:21	08:29:30	10:24:56	12:39:28	14:59:48	17:17:06	19:33:23	21:52:51	24:11:27	02:19:29	04:01:54

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	बृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:53:53	09:21:23	10:46:18	12:21:26	14:16:53	16:31:25	18:51:45	21:09:04	23:25:21	01:48:46	04:07:22	06:11:29
2	07:49:57	09:17:27	10:42:22	12:17:31	14:12:57	16:27:30	18:47:49	21:05:08	23:21:25	01:44:50	04:03:26	06:07:33
3	07:46:01	09:13:31	10:38:26	12:13:35	14:09:01	16:23:34	18:43:54	21:01:12	23:17:29	01:40:54	03:59:31	06:03:37
4	07:42:05	09:09:35	10:34:31	12:09:39	14:05:05	16:19:38	18:39:58	20:57:16	23:13:34	01:36:58	03:55:35	05:59:41
5	07:38:09	09:05:39	10:30:35	12:05:43	14:01:09	16:15:42	18:36:02	20:53:20	23:09:38	01:33:02	03:51:39	05:55:45
6	07:34:14	09:01:43	10:26:39	12:01:47	13:57:13	16:11:46	18:32:06	20:49:24	23:05:42	01:29:06	03:47:43	05:51:49
7	07:30:18	08:57:47	10:22:43	11:57:51	13:53:17	16:07:50	18:28:10	20:45:28	23:01:46	01:25:10	03:43:47	05:47:53
8	07:26:22	08:53:51	10:18:47	11:53:55	13:49:21	16:03:54	18:24:14	20:41:33	22:57:50	01:21:15	03:39:51	05:43:57
9	07:22:26	08:49:56	10:14:51	11:49:59	13:45:25	15:59:58	18:20:18	20:37:37	22:53:54	01:17:19	03:35:55	05:40:01
10	07:18:30	08:45:60	10:10:55	11:46:03	13:41:30	15:56:02	18:16:22	20:33:41	22:49:58	01:13:23	03:31:59	05:36:06
11	07:14:34	08:42:04	10:06:59	11:42:08	13:37:34	15:52:07	18:12:26	20:29:45	22:46:02	01:09:27	03:28:03	05:32:10
12	07:10:38	08:38:08	10:03:03	11:38:12	13:33:38	15:48:11	18:08:30	20:25:49	22:42:06	01:05:31	03:24:07	05:28:14
13	07:06:42	08:34:12	09:59:08	11:34:16	13:29:42	15:44:15	18:04:35	20:21:53	22:38:10	01:01:35	03:20:11	05:24:18
14	07:02:46	08:30:16	09:55:12	11:30:20	13:25:46	15:40:19	18:00:39	20:17:57	22:34:15	00:57:39	03:16:16	05:20:22
15	06:58:50	08:26:20	09:51:16	11:26:24	13:21:50	15:36:23	17:56:43	20:14:01	22:30:19	00:53:43	03:12:20	05:16:26
16	06:54:54	08:22:24	09:47:20	11:22:28	13:17:54	15:32:27	17:52:47	20:10:05	22:26:23	00:49:47	03:08:24	05:12:30
17	06:50:58	08:18:28	09:43:24	11:18:32	13:13:58	15:28:31	17:48:51	20:06:09	22:22:27	00:45:51	03:04:28	05:08:34
18	06:47:03	08:14:32	09:39:28	11:14:36	13:10:03	15:24:35	17:44:55	20:02:14	22:18:31	00:41:56	03:00:32	05:04:38
19	06:43:07	08:10:36	09:35:32	11:10:41	13:06:07	15:20:39	17:40:59	19:58:18	22:14:35	00:37:60	02:56:36	05:00:42
20	06:39:11	08:06:41	09:31:36	11:06:45	13:02:11	15:16:44	17:37:03	19:54:22	22:10:39	00:34:04	02:52:40	04:56:46
21	06:35:15	08:02:45	09:27:40	11:02:49	12:58:15	15:12:48	17:33:07	19:50:26	22:06:43	00:30:08	02:48:44	04:52:50
22	06:31:19	07:58:49	09:23:45	10:58:53	12:54:19	15:08:52	17:29:12	19:46:30	22:02:47	00:26:12	02:44:48	04:48:54
23	06:27:23	07:54:53	09:19:49	10:54:57	12:50:23	15:04:56	17:25:16	19:42:34	21:58:51	00:22:16	02:40:52	04:44:58
24	06:23:27	07:50:57	09:15:53	10:51:01	12:46:27	15:01:00	17:21:20	19:38:38	21:54:55	24:14:24	02:36:56	04:41:02
25	06:19:31	07:47:01	09:11:57	10:47:05	12:42:32	14:57:04	17:17:24	19:34:42	21:50:60	24:10:28	02:33:00	04:37:07
26	06:15:35	07:43:05	09:08:01	10:43:09	12:38:36	14:53:08	17:13:28	19:30:46	21:47:04	24:06:32	02:29:04	04:33:11
27	06:11:39	07:39:09	09:04:05	10:39:14	12:34:40	14:49:12	17:09:32	19:26:51	21:43:08	24:02:36	02:25:08	04:29:15
28	06:07:43	07:35:13	09:00:09	10:35:18	12:30:44	14:45:17	17:05:36	19:22:55	21:39:12	23:58:40	02:21:13	04:25:19
29	06:03:47	07:31:17	08:56:13	10:31:22	12:26:48	14:41:21	17:01:40	19:18:59	21:35:16	23:54:44	02:17:17	04:21:23

3-10-11 at 9.26 Pm दिल्ली

पुत्र/श्री हेमन्त कुमार

~~Sharma D~~

Sharmadr.Kirtikant@gmail.com

{निमन्त्रण पत्र}

युवा साधना केन्द्र {जीवनविज्ञान शाला}
75- 76 वीरेन्द्र मार्केट , निकट नांगलोई स्टैण्ड,नजफगढ़, नई दिल्ली-43
दूरभाष- 01128014444/09650235915

महोदय,

सादर वन्दे !

आप सब को सूचित किया जाता हैं कि मेरे पिता श्री लालमणि आर्य का स्वर्गवास 1998 के 28 मई को इसी स्थान पर हो गया था। तब से हर वर्ष *28 मई* को उनकी स्मृति में *प्रातः 9 बजे यज्ञ (हवन)* का आयोजन किया जाता हैं और फिर उनके सामाजिक कार्यों पर प्रकाश तथा अन्त में भण्डारा की व्यवस्था की गई हैं। आशा हैं आप सभी उनकी पुण्यस्मृति में भाग लेकर सेवा का अवसर प्रदान करेंगे।

प्रार्थी
सत्यदेव शास्त्री
युवा साधना केन्द्र

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:27:21	08:52:17	10:27:26	12:22:52	14:37:25	16:57:44	19:15:03	21:31:20	23:50:49	02:13:21	04:17:27	05:59:51
2	07:23:26	08:48:22	10:23:30	12:18:56	14:33:29	16:53:48	19:11:07	21:27:24	23:46:53	02:09:25	04:13:31	05:55:55
3	07:19:30	08:44:26	10:19:34	12:15:01	14:29:33	16:49:53	19:07:11	21:23:28	23:42:57	02:05:29	04:09:35	05:51:60
4	07:15:34	08:40:30	10:15:38	12:11:05	14:25:37	16:45:57	19:03:15	21:19:32	23:39:01	02:01:33	04:05:39	05:48:04
5	07:11:38	08:36:34	10:11:43	12:07:09	14:21:41	16:42:01	18:59:19	21:15:36	23:35:05	01:57:37	04:01:43	05:44:08
6	07:07:42	08:32:38	10:07:47	12:03:13	14:17:45	16:38:05	18:55:23	21:11:41	23:31:09	01:53:41	03:57:47	05:40:12
7	07:03:46	08:28:42	10:03:51	11:59:17	14:13:50	16:34:09	18:51:27	21:07:45	23:27:13	01:49:45	03:53:51	05:36:16
8	06:59:50	08:24:46	09:59:55	11:55:21	14:09:54	16:30:13	18:47:32	21:03:49	23:23:17	01:45:49	03:49:55	05:32:20
9	06:55:54	08:20:50	09:55:59	11:51:25	14:05:58	16:26:17	18:43:36	20:59:53	23:19:21	01:41:53	03:45:59	05:28:24
10	06:51:58	08:16:55	09:52:03	11:47:29	14:02:02	16:22:21	18:39:40	20:55:57	23:15:25	01:37:57	03:42:03	05:24:28
11	06:48:02	08:12:59	09:48:07	11:43:34	13:58:06	16:18:25	18:35:44	20:52:01	23:11:29	01:34:01	03:38:07	05:20:32
12	06:44:06	08:09:03	09:44:12	11:39:38	13:54:10	16:14:30	18:31:48	20:48:05	23:07:33	01:30:05	03:34:12	05:16:36
13	06:40:11	08:05:07	09:40:16	11:35:42	13:50:14	16:10:34	18:27:52	20:44:09	23:03:38	01:26:10	03:30:16	05:12:40
14	06:36:15	08:01:11	09:36:20	11:31:46	13:46:18	16:06:38	18:23:56	20:40:13	22:59:42	01:22:14	03:26:20	05:08:44
15	06:32:19	07:57:15	09:32:24	11:27:50	13:42:23	16:02:42	18:20:00	20:36:17	22:55:46	01:18:18	03:22:24	05:04:48
16	06:28:23	07:53:19	09:28:28	11:23:54	13:38:27	15:58:46	18:16:04	20:32:22	22:51:50	01:14:22	03:18:28	05:00:52
17	06:24:27	07:49:23	09:24:32	11:19:58	13:34:31	15:54:50	18:12:08	20:28:26	22:47:54	01:10:26	03:14:32	04:56:57
18	06:20:31	07:45:27	09:20:36	11:16:03	13:30:35	15:50:54	18:08:13	20:24:30	22:43:58	01:06:30	03:10:36	04:53:01
19	06:16:35	07:41:32	09:16:40	11:12:07	13:26:39	15:46:58	18:04:17	20:20:34	22:40:02	01:02:34	03:06:40	04:49:05
20	06:12:39	07:37:36	09:12:45	11:08:11	13:22:43	15:43:02	18:00:21	20:16:38	22:36:06	00:58:38	03:02:44	04:45:09
21	06:08:43	07:33:40	09:08:49	11:04:15	13:18:47	15:39:07	17:56:25	20:12:42	22:32:10	00:54:42	02:58:48	04:41:13
22	06:04:47	07:29:44	09:04:53	11:00:19	13:14:51	15:35:11	17:52:29	20:08:46	22:28:14	00:50:46	02:54:52	04:37:17
23	06:00:51	07:25:48	09:00:57	10:56:23	13:10:55	15:31:15	17:48:33	20:04:50	22:24:19	00:46:50	02:50:56	04:33:21
24	05:56:56	07:21:52	08:57:01	10:52:27	13:06:60	15:27:19	17:44:37	20:00:54	22:20:23	00:42:54	02:47:00	04:29:25
25	05:52:60	07:17:56	08:53:05	10:48:31	13:03:04	15:23:23	17:40:41	19:56:58	22:16:27	00:38:58	02:43:04	04:25:29
26	05:49:04	07:14:00	08:49:09	10:44:35	12:59:08	15:19:27	17:36:45	19:53:03	22:12:31	00:35:03	02:39:09	04:21:33
27	05:45:08	07:10:04	08:45:13	10:40:40	12:55:12	15:15:31	17:32:49	19:49:07	22:08:35	00:31:07	02:35:13	04:17:37
28	05:41:12	07:06:08	08:41:17	10:36:44	12:51:16	15:11:35	17:28:54	19:45:11	22:04:39	00:27:11	02:31:17	04:13:41
29	05:37:16	07:02:13	08:37:22	10:32:48	12:47:20	15:07:39	17:24:58	19:41:15	22:00:43	00:23:15	02:27:21	04:09:46
30	05:33:20	06:58:17	08:33:26	10:28:52	12:43:24	15:03:43	17:21:02	19:37:19	21:56:47	00:19:19	02:23:25	04:05:50
31	05:29:24	06:54:21	08:29:30	10:24:56	12:39:28	14:59:48	17:17:06	19:33:23	21:52:51	24:11:27	02:19:29	04:01:54

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टे. टा. समाप्ति काल दिल्ली

अप्रैल	मीन	मेष	बृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:50:25	08:25:34	10:21:00	12:35:32	14:55:52	17:13:10	19:29:27	21:48:55	24:07:31	02:15:33	03:57:58	05:25:28
2	06:46:29	08:21:38	10:17:04	12:31:36	14:51:56	17:09:14	19:25:31	21:44:59	24:03:35	02:11:37	03:54:02	05:21:32
3	06:42:33	08:17:42	10:13:08	12:27:41	14:47:60	17:05:18	19:21:35	21:41:04	23:59:39	02:07:41	03:50:06	05:17:37
4	06:38:37	08:13:46	10:09:12	12:23:45	14:44:04	17:01:22	19:17:39	21:37:08	23:55:44	02:03:45	03:46:10	05:13:41
5	06:34:41	08:09:50	10:05:16	12:19:49	14:40:08	16:57:26	19:13:44	21:33:12	23:51:48	01:59:50	03:42:14	05:09:45
6	06:30:45	08:05:54	10:01:21	12:15:53	14:36:12	16:53:30	19:09:48	21:29:16	23:47:52	01:55:54	03:38:18	05:05:49
7	06:26:49	08:01:58	09:57:25	12:11:57	14:32:16	16:49:35	19:05:52	21:25:20	23:43:56	01:51:58	03:34:22	05:01:53
8	06:22:54	07:58:02	09:53:29	12:08:01	14:28:20	16:45:39	19:01:56	21:21:24	23:40:00	01:48:02	03:30:27	04:57:57
9	06:18:58	07:54:07	09:49:33	12:04:05	14:24:24	16:41:43	18:57:60	21:17:28	23:36:04	01:44:06	03:26:31	04:54:01
10	06:15:02	07:50:11	09:45:37	12:00:09	14:20:29	16:37:47	18:54:04	21:13:32	23:32:08	01:40:10	03:22:35	04:50:05
11	06:11:06	07:46:15	09:41:41	11:56:13	14:16:33	16:33:51	18:50:08	21:09:36	23:28:12	01:36:14	03:18:39	04:46:09
12	06:07:10	07:42:19	09:37:45	11:52:17	14:12:37	16:29:55	18:46:12	21:05:41	23:24:16	01:32:18	03:14:43	04:42:13
13	06:03:14	07:38:23	09:33:49	11:48:21	14:08:41	16:25:59	18:42:16	21:01:45	23:20.21	01:28:22	03:10:47	04:38:18
14	05:59.18	07:34:27	09:29:53	11:44:26	14:04:45	16:22:03	18:38:20	20:57:49	23:16:25	01:24:27	03:06:51	04:34:22
15	05:55:22	07:30:31	09:25:57	11:40:30	14:00:49	16:18:07	18:34:25	20:53:53	23:12:29	01:20:31	03:02:55	04:30:26
16	05:51:26	07:26:35	09:22:01	11:36:34	13:56:53	16:14:11	18:30:29	20:49:57	23:08:33	01:16:35	02:58:59	04:26:30
17	05:47:30	07:22:39	09:18:05	11:32:38	13:52:57	16:10:16	18:26:33	20:46:01	23:04:37	01:12:39	02:55:04	04:22:34
18	05:43:34	07:18:43	09:14:09	11:28:42	13:49:01	16:06:20	18:22:37	20:42:05	23:00:41	01:08:43	02:51:08	04:18:38
19	05:39:38	07:14:47	09:10:14	11:24:46	13:45:05	16:02:24	18:18:41	20:38:09	22:56:45	01:04:47	02:47:12	04:14:42
20	05:35:43	07:10:51	09:06:18	11:20:50	13:41:10	15:58:28	18:14:45	20:34:13	22:52:50	01:00:51	02:43:16	04:10:46
21	05:31:47	07:06:55	09:02:22	11:16:54	13:37:14	15:54:32	18:10:49	20:30:18	22:48:54	00:56:56	02:39:20	04:06:50
22	05:27:51	07:02:59	08:58:26	11:12:58	13:33:18	15:50:36	18:06:53	20:26:22	22:44:58	00:52:60	02:35:24	04:02:54
23	05:23:55	06:59:04	08:54:30	11:09:02	13:29:22	15:46:40	18:02:57	20:22:26	22:41:02	00:49:04	02:31:28	03:58:59
24	05:19:59	06:55:08	08:50:34	11:05:06	13:25:26	15:42:44	17:59:02	20:18:30	22:37:06	00:45:08	02:27:32	03:55:03
25	05:16:03	06:51:12	08:46:38	11:01:10	13:21:30	15:38:48	17:55:06	20:14:34	22:33:10	00:41:12	02:23:37	03:51:07
26	05:12:07	06:47:16	08:42:42	10:57:15	13:17:34	15:34:52	17:51:10	20:10:38	22:29:14	00:37:16	02:19:41	03:47:11
27	05:08:11	06:43:20	08:38:46	10:53:19	13:13:38	15:30:57	17:47:14	20:06:42	22:25:18	00:33:20	02:15:45	03:43:15
28	05:04:15	06:39:24	08:34:50	10:49:23	13:09:42	15:27:01	17:43:18	20:02:46	22:21:23	00:29:24	02:11:49	03:39:19
29	05:00:19	06:35:28	08:30:54	10:45:27	13:05:46	15:23:05	17:39:22	19:58:50	22:17:27	00:25:29	02:07:53	03:35:23
30	04:56:23	06:31:32	08:26:58	10:41:31	13:01:50	15:19:09	17:35:26	19:54:55	22:13:31	00:21:33	02:03:57	03:31:27

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

मई ता.	मेष घ. मि. से.	वृष घ. मि. से.	मिथुन घ. मि. से.	कर्क घ. मि. से.	सिंह घ. मि. से.	कन्या घ. मि. से.	तुला घ. मि. से.	वृश्चिक घ. मि. से.	धनु घ. मि. से.	मकर घ. मि. से.	कुम्भ घ. मि. से.	मीन घ. मि. से.
1	06:27:36	08:23:02	10:37:35	12:57:55	15:15:13	17:31:30	19:50:59	22:09:35	00:17:37	02:00:01	03:27:31	04:52:27
2	06:23:40	08:19:06	10:33:39	12:53:59	15:11:17	17:27:34	19:47:03	22:05:39	00:13:41	01:56:05	03:23:35	04:48:31
3	06:19:44	08:15:10	10:29:43	12:50:03	15:07:21	17:23:38	19:43:07	22:01:43	00:09:45	01:52:10	03:19:40	04:44:36
4	06:15:48	08:11:15	10:25:47	12:46:07	15:03:25	17:19:43	19:39:11	21:57:47	00:05:49	01:48:14	03:15:44	04:40:40
5	06:11:52	08:07:19	10:21:51	12:42:11	14:59:29	17:15:47	19:35:15	21:53:51	23:57:58	01:44:18	03:11:48	04:36:44
6	06:07:56	08:03:23	10:17:55	12:38:15	14:55:33	17:11:51	19:31:19	21:49:56	23:54:02	01:40:22	03:07:52	04:32:48
7	06:04:00	07:59:27	10:13:59	12:34:19	14:51:38	17:07:55	19:27:24	21:45:60	23:50:06	01:36:26	03:03:56	04:28:52
8	06:00:04	07:55:31	10:10:04	12:30:23	14:47:42	17:03:59	19:23:28	21:42:04	23:46:10	01:32:30	03:00:00	04:24:56
9	05:56:09	07:51:35	10:06:08	12:26:27	14:43:46	17:00:03	19:19:32	21:38:08	23:42:14	01:28:34	02:56:04	04:21:00
10	05:52:13	07:47:39	10:02:12	12:22:31	14:39:50	16:56:07	19:15:36	21:34:12	23:38:18	01:24:38	02:52:08	04:17:04
11	05:48:17	07:43:43	09:58:16	12:18:36	14:35:54	16:52:11	19:11:40	21:30:16	23:34:22	01:20:43	02:48:12	04:13:08
12	05:44:21	07:39:47	09:54:20	12:14:40	14:31:58	16:48:15	19:07:44	21:26:20	23:30:27	01:16:47	02:44:16	04:09:12
13	05:40:25	07:35:51	09:50:24	12:10:44	14:28:02	16:44:19	19:03:48	21:22:25	23:26:31	01:12:51	02:40:21	04:05:16
14	05:36:29	07:31:55	09:46:28	12:06:48	14:24:06	16:40:24	18:59:52	21:18:29	23:22:35	01:08:55	02:36:25	04:01:20
15	05:32:33	07:27:59	09:42:32	12:02:52	14:20:10	16:36:28	18:55:56	21:14:33	23:18:39	01:04:59	02:32:29	03:57:25
16	05:28:37	07:24:03	09:38:36	11:58:56	14:16:14	16:32:32	18:52:01	21:10:37	23:14:43	01:01:03	02:28:33	03:53:29
17	05:24:41	07:20:07	09:34:40	11:55:00	14:12:19	16:28:36	18:48:05	21:06:41	23:10:47	00:57:07	02:24:37	03:49:33
18	05:20:45	07:16:11	09:30:44	11:51:04	14:08:23	16:24:40	18:44:09	21:02:45	23:06:51	00:53:11	02:20:41	03:45:37
19	05:16:49	07:12:16	09:26:48	11:47:08	14:04:27	16:20:44	18:40:13	20:58:49	23:02:55	00:49:16	02:16:45	03:41:41
20	05:12:53	07:08:20	09:22:53	11:43:12	14:00:31	16:16:48	18:36:17	20:54:53	22:58:60	00:45:20	02:12:49	03:37:45
21	05:08:57	07:04:24	09:18:57	11:39:16	13:56:35	16:12:52	18:32:21	20:50:57	22:55:04	00:41:24	02:08:53	03:33:49
22	05:05:01	07:00:28	09:15:01	11:35:21	13:52:39	16:08:56	18:28:25	20:47:02	22:51:08	00:37:28	02:04:57	03:29:53
23	05:01:06	06:56:32	09:11:05	11:31:25	13:48:43	16:05:01	18:24:29	20:43:06	22:47:12	00:33:32	02:01:02	03:25:57
24	04:57:10	06:52:36	09:07:09	11:27:29	13:44:47	16:01:05	18:20:33	20:39:10	22:43:16	00:29:36	01:57:06	03:22:01
25	04:53:14	06:48:40	09:03:13	11:23:33	13:40:51	15:57:09	18:16:38	20:35:14	22:39:20	00:25:40	01:53:10	03:18:05
26	04:49:18	06:44:44	08:59:17	11:19:37	13:36:55	15:53:13	18:12:42	20:31:18	22:35:24	00:21:44	01:49:14	03:14:09
27	04:45:22	06:40:48	08:55:21	11:15:41	13:32:60	15:49:17	18:08:46	20:27:22	22:31:28	00:17:48	01:45:18	03:10:14
28	04:41:26	06:36:52	08:51:25	11:11:45	13:29:04	15:45:21	18:04:50	20:23:26	22:27:32	00:13:52	01:41:22	03:06:18
29	04:37:30	06:32:56	08:47:29	11:07:49	13:25:08	15:41:25	18:00:54	20:19:30	22:23:37	00:09:57	01:37:26	03:02:22
30	04:33:34	06:29:01	08:43:34	11:03:53	13:21:12	15:37:29	17:56:58	20:15:34	22:19:41	00:06:01	01:33:30	02:58:26
31	04:29:38	06:25:05	08 39:38	10:59:57	13:17:16	15:33:33	17:53:02	20:11:39	22:15:45	00:02:05	01:29:34	02:54:30

दैनिक लग्न सारणी जून ... समाप्ति काल दिल्ली

जून ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:21:09	08:35:42	10:56:02	13:13:20	15:29:37	17:49:06	20:07:43	22:11:49	23:54:13	01:25:38	02:50:34	04:25:42
2	06:17:13	08:31:46	10:52:06	13:09:24	15:25:42	17:45:10	20:03:47	22:07:53	23:50:17	01:21:43	02:46:38	04:21:47
3	06:13:17	08:27:50	10:48:10	13:05:28	15:21:46	17:41:14	19:59:51	22:03:57	23:46:21	01:17:47	02:42:42	04:17:51
4	06:09:21	08:23:54	10:44:14	13:01:32	15:17:50	17:37:19	19:55:55	22:00:01	23:42:25	01:13:51	02:38:46	04:13:55
5	06:05:25	08:19:58	10:40:18	12:57:36	15:13:54	17:33:23	19:51:59	21:56:05	23:38:29	01:09:55	02:34:50	04:09:59
6	06:01:29	08:16:02	10:36:22	12:53:41	15:09:58	17:29:27	19:48:03	21:52:09	23:34:33	01:05:59	02:30:55	04:06:03
7	05:57:33	08:12:06	10:32:26	12:49:45	15:06:02	17:25:31	19:44:07	21:48:13	23:30:37	01:02:03	02:26:59	04:02:07
8	05:53:38	08:08:10	10:28:30	12:45:49	15:02:06	17:21:35	19:40:11	21:44:17	23:26:42	00:58:07	02:23:03	03:58:11
9	05:49:42	08:04:15	10:24:34	12:41:53	14:58:10	17:17:39	19:36:15	21:40:21	23:22:46	00:54:11	02:19:07	03:54:15
10	05:45:46	08:00:19	10:20:39	12:37:57	14:54:14	17:13:43	19:32:19	21:36:26	23:18:50	00:50:15	02:15:11	03:50:19
11	05:41:50	07:56:23	10:16:43	12:34:01	14:50:18	17:09:47	19:28:24	21:32:30	23:14:54	00:46:19	02:11:15	03:46:24
12	05:37:54	07:52:27	10:12:47	12:30:05	14:46:23	17:05:51	19:24:28	21:28:34	23:10:58	00:42:24	02:07:19	03:42:28
13	05:33:58	07:48:31	10:08:51	12:26:09	14:42:27	17:01:55	19:20:32	21:24:38	23:07:02	00:38:28	02:03:23	03:38:32
14	05:30:02	07:44:35	10:04:55	12:22:13	14:38:31	16:57:59	19:16:36	21:20:42	23:03:06	00:34:32	01:59:27	03:34:36
15	05:26:06	07:40:39	10:00:59	12:18:18	14:34:35	16:54:04	19:12:40	21:16:46	22:59:10	00:30:36	01:55:32	03:30:40
16	05:22:11	07:36:43	09:57:03	12:14:22	14:30:39	16:50:08	19:08:44	21:12:50	22:55:14	00:26:40	01:51:36	03:26:44
17	05:18:15	07:32:48	09:53:07	12:10:26	14:26:43	16:46:12	19:04:48	21:08:54	22:51:18	00:22:44	01:47:40	03:22:48
18	05:14:19	07:28:52	09:49:11	12:06:30	14:22:47	16:42:16	19:00:52	21:04:58	22:47:22	00:18:48	01:43:44	03:18:52
19	05:10:23	07:24:56	09:45:15	12:02:34	14:18:51	16:38:20	18:56:56	21:01:02	22:43:26	00:14:52	01:39:48	03:14:57
20	05:06:27	07:20:60	09:41:20	11:58:38	14:14:55	16:34:24	18:53:00	20:57:06	22:39:30	00:10:56	01:35:52	03:11:01
21	05:02:31	07:17:04	09:37:24	11:54:42	14:10:59	16:30:28	18:49:04	20:53:10	22:35:35	00:07:00	01:31:56	03:07:05
22	04:58:35	07:13:08	09:33:28	11:50:46	14:07:04	16:26:32	18:45:08	20:49:14	22:31:39	00:03:04	01:28:00	03:03:09
23	04:54:39	07:09:12	09:29:32	11:46:50	14:03:08	16:22:36	18:41:12	20:45:18	22:27:43	23:55:13	01:24:04	02:59:13
24	04:50:44	07:05:16	09:25:36	11:42:54	13:59:12	16:18:40	18:37:16	20:41:22	22:23:47	23:51:17	01:20:09	02:55:17
25	04:46:48	07:01:20	09:21:40	11:38:59	13:55:16	16:14:44	18:33:21	20:37:27	22:19:51	23:47:21	01:16:13	02:51:21
26	04:42:52	06:57:25	09:17:44	11:35:03	13:51:20	16:10:48	18:29:25	20:33:31	22:15:55	23:43:25	01:12:17	02:47:25
27	04:38:56	06:53:29	09:13:48	11:31:07	13:47:24	16:06:52	18:25:29	20:29:35	22:11:59	23:39:29	01:08:21	02:43:30
28	04:35:00	06:49:33	09:09:52	11:27:11	13:43:28	16:02:57	18:21:33	20:25:39	22:08:03	23:35:33	01:04:25	02:39:34
29	04:31:04	06:45:37	09:05:57	11:23:15	13:39:32	15:59:01	18:17:37	20:21:43	22:04:07	23:31:37	01:00:29	02:35:38
30	04:27:08	06:41:41	09:02:01	11:19:19	13:35:36	15:55:05	18:13:41	20:17:47	22:00:11	23:27:41	00:56:33	02:31:42

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:37:45	08:58:05	11:15:23	13:31:40	15:51:09	18:09:45	20:13:51	21:56:15	23:23:45	00:52:37	02:27:46	04:23:13
2	06:33:49	08:54:09	11:11:27	13:27:44	15:47:13	18:05:49	20:09:55	21:52:19	23:19:49	00:48:42	02:23:50	04:19:17
3	06:29:53	08:50:13	11:07:31	13:23:49	15:43:17	18:01:53	20:05:59	21:48:23	23:15:54	00:44:46	02:19:54	04:15:21
4	06:25:58	08:46:17	11:03:35	13:19:53	15:39:21	17:57:57	20:02:03	21:44:27	23:11:58	00:40:50	02:15:59	04:11:25
5	06:22:02	08:42:21	10:59:40	13:15:57	15:35:25	17:54:01	19:58:07	21:40:32	23:08:02	00:36:54	02:12:03	04:07:29
6	06:18:06	08:38:25	10:55:44	13:12:01	15:31:29	17:50:05	19:54:11	21:36:36	23:04:06	00:32:58	02:08:07	04:03:33
7	06:14:10	08:34:29	10:51:48	13:08:05	15:27:33	17:46:09	19:50:15	21:32:40	23:00:10	00:29:02	02:04:11	03:59:37
8	06:10:14	08:30:34	10:47:52	13:04:09	15:23:37	17:42:13	19:46:19	21:28:44	22:56:14	00:25:06	02:00:15	03:55:42
9	06:06:18	08:26:38	10:43:56	13:00:13	15:19:42	17:38:18	19:42:23	21:24:48	22:52:18	00:21:10	01:56:19	03:51:46
10	06:02:22	08:22:42	10:40:00	12:56:17	15:15:46	17:34:22	19:38:27	21:20:52	22:48:22	00:17:14	01:52:23	03:47:50
11	05:58:26	08:18:46	10:36:04	12:52:21	15:11:50	17:30:26	19:34:32	21:16:56	22:44:26	00:13:19	01:48:27	03:43:54
12	05:54:31	08:14:50	10:32:08	12:48:25	15:07:54	17:26:30	19:30:36	21:13:00	22:40:30	00:09:23	01:44:32	03:39:58
13	05:50:35	08:10:54	10:28:12	12:44:30	15:03:58	17:22:34	19:26:40	21:09:04	22:36:34	00:05:27	01:40:36	03:36:02
14	05:46:39	08:06:58	10:24:16	12:40:34	15:00:02	17:18:38	19:22:44	21:05:08	22:32:39	00:01:31	01:36:40	03:32:06
15	05:42:43	08:03:02	10:20:21	12:36:38	14:56:06	17:14:42	19:18:48	21:01:12	22:28:43	23:53:39	01:32:44	03:28:10
16	05:38:47	07:59:06	10:16:25	12:32:42	14:52:10	17:10:46	19:14:52	20:57:16	22:24:47	23:49:43	01:28:48	03:24:15
17	05:34:51	07:55:10	10:12:29	12:28:46	14:48:14	17:06:50	19:10:56	20:53:20	22:20:51	23:45:47	01:24:52	03:20:19
18	05:30:55	07:51:15	10:08:33	12:24:50	14:44:18	17:02:54	19:07:00	20:49:25	22:16:55	23:41:51	01:20:56	03:16:23
19	05:26:59	07:47:19	10:04:37	12:20:54	14:40:22	16:58:58	19:03:04	20:45:29	22:12:59	23:37:56	01:17:00	03:12:27
20	05:23:03	07:43:23	10:00:41	12:16:58	14:36:27	16:55:02	18:59:08	20:41:33	22:09:03	23:33:60	01:13:05	03:08:31
21	05:19:08	07:39:27	09:56:45	12:13:02	14:32:31	16:51:06	18:55:12	20:37:37	22:05:07	23:30:04	01:09:09	03:04:35
22	05:15:12	07:35:31	09:52:49	12:09:06	14:28:35	16:47:11	18:51:16	20:33:41	22:01:11	23:26:08	01:05:13	03:00:39
23	05:11:16	07:31:35	09:48:53	12:05:11	14:24:39	16:43:15	18:47:20	20:29:45	21:57:15	23:22:12	01:01:17	02:56:43
24	05:07:20	07:27:39	09:44:57	12:01:15	14:20:43	16:39:19	18:43:25	20:25:49	21:53:20	23:18:16	00:57:21	02:52:48
25	05:03:24	07:23:43	09:41:02	11:57:19	14:16:47	16:35:23	18:39:29	20:21:53	21:49:24	23:14:20	00:53:25	02:48:52
26	04:59:28	07:19:47	09:37:06	11:53:23	14:12:51	16:31:27	18:35:33	20:17:57	21:45:28	23:10:24	00:49:29	02:44:56
27	04:55:32	07:15:51	09:33:10	11:49:27	14:08:55	16:27:31	18:31:37	20:14:01	21:41:32	23:06:28	00:45:33	02:40:60
28	04:51:36	07:11:56	09:29:14	11:45:31	14:04:59	16:23:35	18:27:41	20:10:05	21:37:36	23:02:32	00:41:37	02:37:04
29	04:47:40	07:07:60	09:25:18	11:41:35	14:01:03	16:19:39	18:23:45	20:06:10	21:33:40	22:58:37	00:37:42	02:33:08
30	04:43:45	07:04:04	09:21:22	11:37:39	13:57:08	16:15:43	18:19:49	20:02:14	21:29:44	22:54:41	00:33:46	02:29:12
31	04:39:49	07:00:08	09:17:26	11:33:43	13:53:12	16:11:47	18:15:53	19:58:18	21:25:48	22:50:45	00:29:50	02:25:16

दैनिक लग्न सारणी (अगस्त) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:56:12	09:13:30	11:29:47	13:49:16	16:07:52	18:11:57	19:54:22	21:21:52	22:46:49	00:25:54	02:21:20	04:35:53
2	06:52:16	09:09:34	11:25:52	13:45:20	16:03:56	18:08:01	19:50:26	21:17:56	22:42:53	00:21:58	02:17:24	04:31:57
3	06:48:20	09:05:38	11:21:56	13:41:24	15:59:60	18:04:06	19:46:30	21:14:00	22:38:57	00:18:02	02:13:28	04:28:01
4	06:44:24	09:01:43	11:17:60	13:37:28	15:56:04	18:00:10	19:42:34	21:10:05	22:35:01	00:14:06	02:09:33	04:24:05
5	06:40:28	08:57:47	11:14:04	13:33:32	15:52:08	17:56:14	19:38:38	21:06:09	22:31:05	00:10:10	02:05:37	04:20:09
6	06:36:32	08:53:51	11:10:08	13:29:36	15:48:12	17:52:18	19:34:42	21:02:13	22:27:09	00:06:14	02:01:41	04:16:13
7	06:32:37	08:49:55	11:06:12	13:25:40	15:44:16	17:48:22	19:30:47	20:58:17	22:23:13	00:02:18	01:57:45	04:12:17
8	06:28:41	08:45:59	11:02:16	13:21:44	15:40:20	17:44:26	19:26:51	20:54:21	22:19:17	23:54:26	01:53:49	04:08:21
9	06:24:45	08:42:03	10:58:20	13:17:49	15:36:24	17:40:30	19:22:55	20:50:25	22:15:22	23:50:31	01:49:53	04:04:25
10	06:20:49	08:38:07	10:54:24	13:13:53	15:32:29	17:36:34	19:18:59	20:46:29	22:11:26	23:46:35	01:45:57	04:00:30
11	06:16:53	08:34:11	10:50:29	13:09:57	15:28:33	17:32:39	19:15:03	20:42:33	22:07:30	23:42:39	01:42:01	03:56:34
12	06:12:57	08:30:15	10:46:33	13:06:01	15:24:37	17:28:43	19:11:07	20:38:37	22:03:34	23:38:43	01:38:05	03:52:38
13	06:09:01	08:26:19	10:42:37	13:02:05	15:20:41	17:24:47	19:07:11	20:34:41	21:59:38	23:34:47	01:34:09	03:48:42
14	06:05:05	08:22:24	10:38:41	12:58:09	15:16:45	17:20:51	19:03:15	20:30:46	21:55:42	23:30:51	01:30:13	03:44:46
15	06:01:09	08:18:28	10:34:45	12:54:13	15:12:49	17:16:55	18:59:19	20:26:50	21:51:46	23:26:55	01:26:17	03:40:50
16	05:57:13	08:14:32	10:30:49	12:50:17	15:08:53	17:12:59	18:55:24	20:22:54	21:47:50	23:22:59	01:22:21	03:36:54
17	05:53:18	08:10:36	10:26:53	12:46:22	15:04:57	17:09:03	18:51:28	20:18:58	21:43:54	23:19:03	01:18:26	03:32:58
18	05:49:22	08:06:40	10:22:57	12:42:26	15:01:02	17:05:07	18:47:32	20:15:02	21:39:58	23:15:07	01:14:30	03:29:02
19	05:45:26	08:02:44	10:19:01	12:38:30	14:57:06	17:01:12	18.43:36	20:11:06	21:36:02	23:11:11	01:10:34	03:25:06
20	05:41:30	07:58:48	10:15:05	12:34:34	14:53:10	16:57:16	18:39:40	20:07:10	21:32:06	23:07:15	01:06:38	03:21:10
21	05:37:34	07:54:52	10:11:10	12:30:38	14:49:14	16:53:20	18:35:44	20:03:14	21:28:11	23:03:19	01:02:42	03:17:14
22	05:33:38	07:50:56	10:07:14	12:26:42	14:45:18	16:49:24	18:31:48	19:59:18	21:24:15	22:59:23	00:58:46	03:13:19
23	05:29:42	07:47:00	10:03:18	12:22:46	14:41:22	16:45:28	18:27:52	19:55:22	21:20:19	22:55:27	00:54:50	03:09:23
24	05:25:46	07:43:05	09:59:22	12:18:50	14:37:26	16:41:32	18:23:57	19:51:27	21:16:23	22:51:32	00:50:54	03:05:27
25	05:21:50	07:39:09	09:55:26	12:14:54	14:33:31	16:37:36	18:20:01	19:47:31	21:12:27	22:47:36	00:46:58	03:01:31
26	05:17:54	07:35:13	09:51:30	12:10:59	14:29:35	16:33:41	18:16:05	19:43:35	21:08:31	22:43:40	00:43:02	02:57:35
27	05:13:58	07:31:17	09:47:34	12:07:03	14:25:39	16:29:45	18:12:09	19:39:39	21:04:35	22:39:44	00:39:06	02:53:39
28	05:10:03	07:27:21	09:43:38	12:03:07	14:21:43	16:25:49	18:08:13	19:35:43	21:00:39	22:35:48	00:35:10	02:49:43
29	05:06:07	07:23:25	09:39:42	11:59:11	14:17:47	16:21:53	18:04:17	19:31:47	20:56:43	22:31:52	00:31:14	02:45:47
30	05:02:11	07:19:29	09:35:46	11:55:15	14:13:51	16:17:57	18:00:21	19:27:51	20:52:47	22:27:56	00:27:18	02:41:51
31	04:58:15	07:15:33	09:31:51	11:51:19	14:09:55	16:14:01	17:56:25	19:23:55	20:48:51	22:23:60	00:23:22	02:37:55

दैनिक लग्न सारणी सितम्बर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

सितम्बर ता.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.
1	07:11:37	09:27:55	11:47:23	14:05:59	16:10:05	17:52:30	19:19:59	20:44:55	22:20:04	00:19:27	02:33:59	04:54:19
2	07:07:41	09:23:59	11:43:27	14:02:04	16:06:10	17:48:34	19:16:04	20:40:59	22:16:08	00:15:31	02:30:03	04:50:23
3	07:03:46	09:20:03	11:39:32	13:58:08	16:02:14	17:44:38	19:12:08	20:37:04	22:12:12	00:11:35	02:26:07	04:46:27
4	06:59:50	09:16:07	11:35:36	13:54:12	15:58:18	17:40:42	19:08:12	20:33:08	22:08:16	00:07:39	02:22:12	04:42:31
5	06:55:54	09:12:11	11:31:40	13:50:16	15:54:22	17:36:46	19:04:16	20:29:12	22:04:20	00:03:43	02:18:16	04:38:35
6	06:51:58	09:08:15	11:27:44	13:46:20	15:50:26	17:32:50	19:00:20	20:25:16	22:00:24	23:55:51	02:14:20	04:34:39
7	06:48:02	09:04:19	11:23:48	13:42:24	15:46:30	17:28:54	18:56:24	20:21:20	21:56:28	23:51:55	02:10:24	04:30:44
8	06:44:06	09:00:23	11:19:52	13:38:28	15:42:34	17:24:58	18:52:28	20:17:24	21:52:33	23:47:59	02:06:28	04:26:48
9	06:40:10	08:56:28	11:15:56	13:34:33	15:38:38	17:21:03	18:48:32	20:13:28	21:48:37	23:44:03	02:02:32	04:22:52
10	06:36:14	08:52:32	11:12:00	13:30:37	15:34:43	17:17:07	18:44:36	20:09:32	21:44:41	23:40:07	01:58:36	04:18:56
11	06:32:18	08:48:36	11:08:04	13:26:41	15:30:47	17:13:11	18:40:40	20:05:36	21:40:45	23:36:11	01:54:40	04:14:60
12	06:28:22	08:44:40	11:04:09	13:22:45	15:26:51	17:09:15	18:36:45	20:01:40	21:36:49	23:32:15	01:50:44	04:11:04
13	06:24:27	08:40:44	11:00:13	13:18:49	15:22:55	17:05:19	18:32:49	19:57:44	21:32:53	23:28:19	01:46:48	04:07:08
14	06:20:31	08:36:48	10:56:17	13:14:53	15:18:59	17:01:23	18:28:53	19:53:48	21:28:57	23:24:23	01:42:52	04:03:12
15	06:16:35	08:32:52	10:52:21	13:10:57	15:15:03	16:57:27	18:24:57	19:49:53	21:25:01	23:20:28	01:38:57	03:59:16
16	06:12:39	08:28:56	10:48:25	13:07:01	15:11:07	16:53:31	18:21:01	19:45:57	21:21:05	23:16:32	01:35:01	03:55:20
17	06:08:43	08:25:00	10:44:29	13:03:05	15:07:11	16:49:35	18:17:05	19:42:01	21:17:09	23:12:36	01:31:05	03:51:25
18	06:04:47	08:21:04	10:40:33	12:59:10	15:03:16	16:45:40	18:13:09	19:38:05	21:13:13	23:08:40	01:27:09	03:47:29
19	06:00:51	08:17:09	10:36:37	12:55:14	14:59:20	16:41:44	18:09:13	19:34:09	21:09:17	23:04:44	01:23:13	03:43:33
20	05:56:55	08:13:13	10:32:41	12:51:18	14:55:24	16:37:48	18:05:17	19:30:13	21:05:21	23:00:48	01:19:17	03:39:37
21	05:52:59	08:09:17	10:28:46	12:47:22	14:51:28	16:33:52	18:01:21	19:26:17	21:01:26	22:56:52	01:15:21	03:35:41
22	05:49:03	08:05:21	10:24:50	12:43:26	14:47:32	16:29:56	17:57:26	19:22:21	20:57:30	22:52:56	01:11:25	03:31:45
23	05:45:08	08:01:25	10:20:54	12:39:30	14:43:36	16:26:00	17:53:30	19:18:25	20:53:34	22:49:00	01:07:29	03:27:49
24	05:41:12	07:57:29	10:16:58	12:35:34	14:39:40	16:22:04	17:49:34	19:14:29	20:49:38	22:45:04	01:03:33	03:23:53
25	05:37:16	07:53:33	10:13:02	12:31:38	14:35:44	16:18:08	17:45:38	19:10:33	20:45:42	22:41:08	00:59:37	03:19:57
26	05:33:20	07:49:37	10:09:06	12:27:42	14:31:48	16:14:12	17:41:42	19:06:38	20:41:46	22:37:13	00:55:42	03:16:01
27	05:29:24	07:45:41	10:05:10	12:23:47	14:27:52	16:10:16	17:37:46	19:02:42	20:37:50	22:33:17	00:51:46	03:12:06
28	05:25:28	07:41:45	10:01:14	12:19:51	14:23:57	16:06:21	17:33:50	18:58:46	20:33:54	22:29:21	00:47:50	03:08:10
29	05:21:32	07:37:50	09:57:18	12:15:55	14:20:01	16:02:25	17:29:54	18:54:50	20:29:58	22:25:25	00:43:54	03:04:14
30	05:17:36	07:33:54	09:53:22	12:11:59	14:16:05	15:58:29	17:25:58	18:50:54	20:26:02	22:21:29	00:39:58	03:00:18

दैनिक लग्न सारणी अक्टूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

अक्टूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:29:58	09:49:27	12:08:03	14:12:09	15:54:33	17:22:02	18:46:58	20:22:07	22:17:33	00:36:02	02:56:22	05:13:40
2	07:26:02	09:45:31	12:04:07	14:08:13	15:50:37	17:18:06	18:43:02	20:18:11	22:13:37	00:32:06	02:52:26	05:09:44
3	07:22:06	09:41:35	12:00:11	14:04:17	15:46:41	17:14:11	18:39:06	20:14:15	22:09:41	00:28:10	02:48:30	05:05:49
4	07:18:10	09:37:39	11:56:15	14:00:21	15:42:45	17:10:15	18:35:10	20:10:19	22:05:45	00:24:14	02:44:34	05:01:53
5	07:14:14	09:33:43	11:52:19	13:56:25	15:38:49	17:06:19	18:31:14	20:06:23	22:01:50	00:20:19	02:40:38	04:57:57
6	07:10:18	09:29:47	11:48:23	13:52:29	15:34:53	17:02:23	18:27:19	20:02:27	21:57:54	00:16:23	02:36:42	04:54:01
7	07:06:22	09:25:51	11:44:27	13:48:33	15:30:57	16:58:27	18:23:23	19:58:31	21:53:58	24:08:31	02:32:47	04:50:05
8	07:02:26	09:21:55	11:40:31	13:44:37	15:27:01	16:54:31	18:19:27	19:54:35	21:50:02	24:04:35	02:28:51	04:46:09
9	06:58:31	09:17:59	11:36:36	13:40:41	15:23:06	16:50:35	18:15:31	19:50:40	21:46:06	24:00:39	02:24:55	04:42:13
10	06:54:35	09:14:03	11:32:40	13:36:46	15:19:10	16:46:39	18:11:35	19:46:44	21:42:10	23:56:43	02:20:59	04:38:17
11	06:50:39	09:10:08	11:28:44	13:32:50	15:15:14	16:42:43	18:07:39	19:42:48	21:38:14	23:52:47	02:17:03	04:34:21
12	06:46:43	09:06:12	11:24:48	13:28:54	15:11:18	16:38:47	18:03:43	19:38:52	21:34:18	23:48:51	02:13:07	04:30:26
13	06:42:47	09:02:16	11:20:52	13:24:58	15:07:22	16:34:52	17:59:47	19:34:56	21:30:23	23:44:56	02:09:11	04:26:30
14	06:38:51	08:58:20	11:16:56	13:21:02	15:03:26	16:30:56	17:55:51	19:31:00	21:26:27	23:40:60	02:05:15	04:22:34
15	06:34:55	08:54:24	11:13:00	13:17:06	14:59:30	16:26:60	17:51:56	19:27:04	21:22:31	23:37:04	02:01:19	04:18:38
16	06:30:59	08:50:28	11:09:04	13:13:10	14:55:34	16:23:04	17:47:60	19:23:08	21:18:35	23:33:08	01:57:23	04:14:42
17	06:27:03	08:46:32	11:05:08	13:09:14	14:51:38	16:19:08	17:44:04	19:19:13	21:14:39	23:29:12	01:53:28	04:10:46
18	06:23:07	08:42:36	11:01:12	13:05:18	14:47:42	16:15:12	17:40:08	19:15:17	21:10:43	23:25:16	01:49:32	04:06:50
19	06:19:12	08:38:40	10:57:16	13:01:22	14:43:46	16:11:16	17:36:12	19:11:21	21:06:47	23:21:20	01:45:36	04:02:54
20	06:15:16	08:34:44	10:53:20	12:57:26	14:39:50	16:07:20	17:32:16	19:07:25	21:02:52	23:17:24	01:41:40	03:58:58
21	06:11:20	08:30:48	10:49:24	12:53:30	14:35:54	16:03:24	17:28:20	19:03:29	20:58:56	23:13:29	01:37:44	03:55:02
22	06:07:24	08:26:52	10:45:29	12:49:34	14:31:58	15:59:28	17:24:24	18:59:33	20:54:60	23:09:33	01:33:48	03:51:07
23	06:03:28	08:22:56	10:41:33	12:45:38	14:28:03	15:55:32	17:20:29	18:55:37	20:51:04	23:05:37	01:29:52	03:47:11
24	05:59:32	08:19:01	10:37:37	12:41:42	14:24:07	15:51:37	17:16:33	18:51:41	20:47:08	23:01:41	01:25:56	03:43:15
25	05:55:36	08:15:05	10:33:41	12:37:46	14:20:11	15:47:41	17:12:37	18:47:46	20:43:12	22:57:45	01:22:00	03:39:19
26	05:51:40	08:11:09	10:29:45	12:33:51	14:16:15	15:43:45	17:08:41	18:43:50	20:39:16	22:53:49	01:18:05	03:35:23
27	05:47:44	08:07:13	10:25:49	12:29:55	14:12:19	15:39:49	17:04:45	18:39:54	20:35:21	22:49:53	01:14:09	03:31:27
28	05:43:48	08:03:17	10:21:53	12:25:59	14:08:23	15:35:53	17:00:49	18:35:58	20:31:25	22:45:57	01:10:13	03:27:31
29	05:39:53	07:59:21	10:17:57	12:22:03	14:04:27	15:31:57	16:56:53	18:32:02	20:27:29	22:42:02	01:06:17	03:23:35
30	05:35:57	07:55:25	10:14:01	12:18:07	14:00:31	15:28:01	16:52:57	18:28:06	20:23:33	22:38:06	01:02:21	03:19:39
31	05:32:01	07:51:29	10:10:05	12:14:11	13:56:35	15:24:05	16:49:01	18:24:10	20:19:37	22:34:10	00:58:25	03:15:43

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:47:33	10:06:09	12:10:15	13:52:39	15:20:09	16:45:06	18:20:15	20:15:41	22:30:14	00:54:29	03:11:48	05:28:05
2	07:43:37	10:02:13	12:06:19	13:48:43	15:16:13	16:41:10	18:16:19	20:11:45	22:26:18	00:50:33	03:07:52	05:24:09
3	07:39:41	09:58:17	12:02:23	13:44:47	15:12:17	16:37:14	18:12:23	20:07:49	22:22:22	00:46:37	03:03:56	05:20:13
4	07:35:45	09:54:21	11:58:27	13:40:51	15:08:22	16:33:18	18:08:27	20:03:54	22:18:26	00:42:42	02:59:60	05:16:17
5	07:31:50	09:50:25	11:54:31	13:36:55	15:04:26	16:29:22	18:04:31	19:59:58	22:14:30	00:38:46	02:56:04	05:12:21
6	07:27:54	09:46:30	11:50:35	13:32:60	15:00:30	16:25:26	18:00:35	19:56:02	22:10:34	00:34:50	02:52:08	05:08:25
7	07:23:58	09:42:34	11:46:39	13:29:04	14:56:34	16:21:30	17:56:39	19:52:06	22:06:39	00:30:54	02:48:12	05:04:29
8	07:20:02	09:38:38	11:42:43	13:25:08	14:52:38	16:17:34	17:52:43	19:48:10	22:02:43	00:26:58	02:44:16	05:00:33
9	07:16:06	09:34:42	11:38:47	13:21:12	14:48:42	16:13:38	17:48:48	19:44:14	21:58:47	00:23:02	02:40:20	04:56:38
10	07:12:10	09:30:46	11:34:52	13:17:16	14:44:46	16:09:43	17:44:52	19:40:18	21:54:51	24:15:10	02:36:24	04:52:42
11	07:08:14	09:26:50	11:30:56	13:13:20	14:40:50	16:05:47	17:40:56	19:36:23	21:50:55	24:11:14	02:32:29	04:48:46
12	07:04:18	09:22:54	11:26:60	13:09:24	14:36:54	16:01:51	17:36:60	19:32:27	21:46:59	24:07:18	02:28:33	04:44:50
13	07:00:22	09:18:58	11:23:04	13:05:28	14:32:58	15:57:55	17:33:04	19:28:31	21:43:03	24:03:23	02:24:37	04:40:54
14	06:56:26	09:15:02	11:19:08	13:01:32	14:29:02	15:53:59	17:29:08	19:24:35	21:39:07	23:59:27	02:20:41	04:36:58
15	06:52:31	09:11:06	11:15:12	12:57:36	14:25:07	15:50:03	17:25:12	19:20:39	21:35:12	23:55:31	02:16:45	04:33:02
16	06:48:35	09:07:10	11:11:16	12:53:40	14:21:11	15:46:07	17:21:16	19:16:43	21:31:16	23:51:35	02:12:49	04:29:06
17	06:44:39	09:03:14	11:07:20	12:49:44	14:17:15	15:42:11	17:17:21	19:12:47	21:27:20	23:47:39	02:08:53	04:25:10
18	06:40:43	08:59:19	11:03:24	12:45:49	14:13:19	15:38:15	17:13:25	19:08:51	21:23:24	23:43:43	02:04:57	04:21:14
19	06:36:47	08:55:23	10:59:28	12:41:53	14:09:23	15:34:20	17:09:29	19:04:55	21:19:28	23:39:47	02:01:01	04:17:19
20	06:32:51	08:51:27	10:55:32	12:37:57	14:05:27	15:30:24	17:05:33	19:00:60	21:15:32	23:35:51	01:57:05	04:13:23
12	06:28:55	08:47:31	10:51:36	12:34:01	14:01:31	15:26:28	17:01:37	18:57:04	21:11:36	23:31:55	01:53:10	04:09:27
22	06:24:59	08:43:35	10:47:41	12:30:05	13:57:35	15:22:32	16:57:41	18:53:08	21:07:40	23:27:60	01:49:14	04:05:31
23	06:21:03	08:39:39	10:43:45	12:26:09	13:53:39	15:18:36	16:53:45	18:49:12	21:03:44	23:24:04	01:45:18	04:01:35
24	06:17:07	08:35:43	10:39:49	12:22:13	13:49:43	15:14:40	16:49:49	18:45:16	20:59:48	23:20:08	01:41:22	03:57:39
25	06:13:11	08:31:47	10:35:53	12:18:17	13:45:48	15:10:44	16:45:53	18:41:20	20:55:53	23:16:12	01:37:26	03:53:43
26	06:09:16	08:27:51	10:31:57	12:14:21	13:41:52	15:06:48	16:41:57	18:37:24	20:51:57	23:12:16	01:33:30	03:49:47
27	06:05:20	08:23:55	10:28:01	12:10:25	13:37:56	15:02:52	16:38:02	18:33:28	20:48:01	23:08:20	01:29:34	03:45:51
28	06:01:24	08:19:60	10:24:05	12:06:29	13:33:60	14:58:56	16:34:06	18:29:32	20:44:05	23:04:24	01:25:38	03:41:55
29	05:57:28	08:16:04	10:20:09	12:02:34	13:30:04	14:55:00	16:30:10	18:25:36	20:40:09	23:00:28	01:21:42	03:37:60
30	05:53:32	08:12:08	10:16:13	11:58:38	13:26:08	14:51:05	16:26:14	18:21:41	20:36:13	22:56:32	01:17:46	03:34:04

दैनिक लग्न सारणी [illegible] समाप्ति काल दिल्ली

दिसम्बर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:08:12	10:12:17	11:54:42	13:22:12	14:47:09	16:22:18	18:17:45	20:32:17	22:52:36	01:13:51	03:30:08	05:49:36
2	08:04:16	10:08:22	11:50:46	13:18:16	14:43:13	16:18:22	18:13:49	20:28:21	22:48:41	01:09:55	03:26:12	05:45:40
3	08:00:20	10:04:26	11:46:50	13:14:20	14:39:17	16:14:26	18:09:53	20:24:25	22:44:45	01:05:59	03:22:16	05:41:44
4	07:56:24	10:00:30	11:42:54	13:10:24	14:35:21	16:10:30	18:05:57	20:20:29	22:40:49	01:02:03	03:18:20	05:37:48
5	07:52:28	09:56:34	11:38:58	13:06:29	14:31:25	16:06:34	18:02:01	20:16:33	22:36:53	00:58:07	03:14:24	05:33:53
6	07:48:32	09:52:38	11:35:02	13:02:33	14:27:29	16:02:38	17:58:05	20:12:38	22:32:57	00:54:11	03:10:28	05:29:57
7	07:44:37	09:48:42	11:31:06	12:58:37	14:23:33	15:58:42	17:54:09	20:08:42	22:29:01	00:50:15	03:06:32	05:26:01
8	07:40:41	09:44:46	11:27:11	12:54:41	14:19:37	15:54:46	17:50:13	20:04:46	22:25:05	00:46:19	03:02:37	05:22:05
9	07:36:45	09:40:50	11:23:15	12:50:45	14:15:41	15:50:51	17:46:17	20:00:50	22:21:09	00:42:23	02:58:41	05:18:09
10	07:32:49	09:36:55	11:19:19	12:46:49	14:11:45	15:46:55	17:42:21	19:56:54	22:17:13	00:38:27	02:54:45	05:14:13
11	07:28:53	09:32:59	11:15:23	12:42:53	14:07:50	15:42:59	17:38:25	19:52:58	22:13:17	00:34:32	02:50:49	05:10:17
12	07:24:57	09:29:03	11:11:27	12:38:57	14:03:54	15:39:03	17:34:29	19:49:02	22:09:21	00:30:36	02:46:53	05:06:21
13	07:21:01	09:25:07	11:07:31	12:35:01	13:59:58	15:35:07	17:30:33	19:45:06	22:05:26	00:26:40	02:42:57	05:02:25
14	07:17:05	09:21:11	11:03:35	12:31:05	13:56:02	15:31:11	17:26:38	19:41:10	22:01:30	00:22:44	02:39:01	04:58:30
15	07:13:10	09:17:15	10:59:39	12:27:10	13:52:06	15:27:15	17:22:42	19:37:14	21:57:34	00:18:48	02:35:05	04:54:34
16	07:09:14	09:13:19	10:55:44	12:23:14	13:48:10	15:23:19	17:18:46	19:33:18	21:53:38	24:10:56	02:31:09	04:50:38
17	07:05:18	09:09:24	10:51:48	12:19:18	13:44:14	15:19:23	17:14:50	19:29:22	21:49:42	24:07:00	02:27:13	04:46:42
18	07:01:22	09:05:28	10:47:52	12:15:22	13:40:18	15:15:27	17:10:54	19:25:27	21:45:46	24:03:04	02:23:18	04:42:46
19	06:57:26	09:01:32	10:43:56	12:11:26	13:36:22	15:11:31	17:06:58	19:21:31	21:41:50	23:59:08	02:19:22	04:38:50
20	06:53:30	08:57:36	10:40:00	12:07:30	13:32:26	15:07:35	17:03:02	19:17:35	21:37:54	23:55:13	02:15:26	04:34:54
21	06:49:34	08:53:40	10:36:04	12:03:34	13:28:30	15:03:39	16:59:06	19:13:39	21:33:58	23:51:17	02:11:30	04:30:58
22	06:45:39	08:49:44	10:32:08	11:59:38	13:24:34	14:59:43	16:55:10	19:09:43	21:30:02	23:47:21	02:07:34	04:27:02
23	06:41:43	08:45:48	10:28:12	11:55:42	13:20:38	14:55:47	16:51:14	19:05:47	21:26:07	23:43:25	02:03:38	04:23:07
24	06:37:47	08:41:52	10:24:17	11:51:46	13:16:43	14:51:51	16:47:18	19:01:51	21:22:11	23:39:29	01:59:42	04:19:11
25	06:33:51	08:37:57	10:20:21	11:47:51	13:12:47	14:47:56	16:43:22	18:57:55	21:18:15	23:35:33	01:55:46	04:15:15
26	06:29:55	08:34:01	10:16:25	11:43:55	13:08:51	14:43:60	16:39:26	18:53:59	21:14:19	23:31:37	01:51:50	04:11:19
27	06:25:59	08:30:05	10:12:29	11:39:59	13:04:55	14:40:04	16:35:30	18:50:03	21:10:23	23:27:41	01:47:54	04:07:23
28	06:22:03	08:26:09	10:08:33	11:36:03	13:00:59	14:36:08	16:31:34	18:46:07	21:06:27	23:23:45	01:43:59	04:03:27
29	06:18:07	08:22:13	10:04:37	11:32:07	12:57:03	14:32:12	16:27:39	18:42:11	21:02:31	23:19:49	01:40:03	03:59:31
30	06:14:12	08:18:17	10:00:41	11:28:11	12:53:07	14:28:16	16:23:43	18:38:16	20:58:35	23:15:54	01:36:07	03:55:36
31	06:10:16	08:14:21	09:56:45	11:24:15	12:49:11	14:24:20	16:19:47	18:34:20	20:54:39	23:11:58	01:32:11	03:51:40

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

जनवरी ता.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.
1	08:31:21	10:10:17	11:33:21	12:53:44	14:24:52	16:18:07	18:33:39	20:57:28	23:19:12	01:43:58	04:07:28	06:28:14
2	08:27:26	10:06:21	11:29:25	12:49:48	14:20:56	16:14:12	18:29:43	20:53:32	23:15:17	01:40:03	04:03:32	06:24:18
3	08:23:30	10:02:25	11:25:29	12:45:52	14:16:60	16:10:16	18:25:47	20:49:36	23:11:21	01:36:07	03:59:36	06:20:23
4	08:19:34	09:58:29	11:21:33	12:41:56	14:13:04	16:06:20	18:21:51	20:45:40	23:07:25	01:32:11	03:55:40	06:16:27
5	08:15:38	09:54:34	11:17:37	12:38:00	14:09:08	16:02:24	18:17:55	20:41:44	23:03:29	01:28:15	03:51:44	06:12:31
6	08:11:42	09:50:38	11:13:41	12:34:05	14:05:12	15:58:28	18:13:59	20:37:48	22:59:33	01:24:19	03:47:49	06:08:35
7	08:07:46	09:46:42	11:09:46	12:30:09	14:01:16	15:54:32	18:10:04	20:33:52	22:55:37	01:20:23	03:43:53	06:04:39
8	08:03:50	09:42:46	11:05:50	12:26:13	13:57:20	15:50:36	18:06:08	20:29:56	22:51:41	01:16:27	03:39:57	06:00:43
9	07:59:55	09:38:50	11:01:54	12:22:17	13:53:24	15:46:40	18:02:12	20:26:01	22:47:45	01:12:31	03:36:01	05:56:47
10	07:55:59	09:34:54	10:57:58	12:18:21	13:49:28	15:42:44	17:58:16	20:22:05	22:43:49	01:08:35	03:32:05	05:52:52
11	07:52:03	09:30:58	10:54:02	12:14:25	13:45:32	15:38:48	17:54:20	20:18:09	22:39:53	01:04:39	03:28:09	05:48:56
12	07:48:07	09:27:02	10:50:06	12:10:29	13:41:36	15:34:52	17:50:24	20:14:13	22:35:58	01:00:44	03:24:13	05:44:60
13	07:44:11	09:23:07	10:46:10	12:06:33	13:37:40	15:30:56	17:46:28	20:10:17	22:32:02	00:56:48	03:20:17	05:41:04
14	07:40:15	09:19:11	10:42:14	12:02:37	13:33:44	15:27:00	17:42:32	20:06:21	22:28:06	00:52:52	03:16:21	05:37:08
15	07:36:19	09:15:15	10:38:18	11:58:41	13:29:48	15:23:04	17:38:36	20:02:25	22:24:10	00:48:56	03:12:26	05:33:12
16	07:32:23	09:11:19	10:34:23	11:54:45	13:25:52	15:19:08	17:34:40	19:58:29	22:20:14	00:45:00	03:08:30	05:29:16
17	07:28:28	09:07:23	10:30:27	11:50:49	13:21:57	15:15:12	17:30:44	19:54:33	22:16:18	00:41:04	03:04:34	05:25:20
18	07:24:32	09:03:27	10:26:31	11:46:53	13:18:01	15:11:16	17:26:48	19:50:37	22:12:22	00:37:08	03:00:38	05:21:25
19	07:20:36	08:59:31	10:22:35	11:42:58	13:14:05	15:07:21	17:22:52	19:46:41	22:08:26	00:33:12	02:56:42	05:17:29
20	07:16:40	08:55:35	10:18:39	11:39:02	13:10:09	15:03:25	17:18:57	19:42:46	22:04:30	00:29:16	02:52:46	05:13:33
21	07:12:44	08:51:40	10:14:43	11:35:06	13:06:13	14:59:29	17:15:01	19:38:50	22:00:34	00:25:21	02:48:50	05:09:37
22	07:08:48	08:47:44	10:10:47	11:31:10	13:02:17	14:55:33	17:11:05	19:34:54	21:56:39	00:21:25	02:44:54	05:05:41
23	07:04:52	08:43:48	10:06:51	11:27:14	12:58:21	14:51:37	17:07:09	19:30:58	21:52:43	24:13:33	02:40:58	05:01:45
24	07:00:57	08:39:52	10:02:55	11:23:18	12:54:25	14:47:41	17:03:13	19:27:02	21:48:47	24:09:37	02:37:03	04:57:49
25	06:57:01	08:35:56	09:58:59	11:19:22	12:50:29	14:43:45	16:59:17	19:23:06	21:44:51	24:05:41	02:33:07	04:53:53
26	06:53:05	08:32:00	09:55:03	11:15:26	12:46:33	14:39:49	16:55:21	19:19:10	21:40:55	24:01:45	02:29:11	04:49:58
27	06:49:09	08:28:04	09:51:08	11:11:30	12:42:37	14:35:53	16:51:25	19:15:14	21:36:59	23:57:49	02:25:15	04:46:02
28	06:45:13	08:24:08	09:47:12	11:07:34	12:38:41	14:31:57	16:47:29	19:11:18	21:33:03	23:53:53	02:21:19	04:42:06
29	06:41:17	08:20:12	09:43:16	11:03:38	12:34:45	14:28:01	16:43:33	19:07:22	21:29:07	23:49:57	02:17:23	04:38:10
30	06:37:21	08:16:17	09:39:20	10:59:43	12:30:50	14:24:05	16:39:37	19:03:27	21:25:11	23:46:02	02:13:27	04:34:14
31	06:33:25	08:12:21	09:35:24	10:55:47	12:26:54	14:20:10	16:35:42	18:59:31	21:21:15	23:42:06	02:09:31	04:30:18

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:08:25	09:31:28	10:51:51	12:22:58	14:16:14	16:31:46	18:55:35	21:17:20	23:38:10	02:05:35	04:26:22	06:29:29
2	08:04:29	09:27:32	10:47:55	12:19:02	14:12:18	16:27:50	18:51:39	21:13:24	23:34:14	02:01:40	04:22:26	06:25:33
3	08:00:33	09:23:36	10:43:59	12:15:06	14:08:22	16:23:54	18:47:43	21:09:28	23:30:18	01:57:44	04:18:30	06:21:38
4	07:56:37	09:19:40	10:40:03	12:11:10	14:04:26	16:19:58	18:43:47	21:05:32	23:26:22	01:53:48	04:14:35	06:17:42
5	07:52:41	09:15:44	10:36:07	12:07:14	14:00:30	16:16:02	18:39:51	21:01:36	23:22:26	01:49:52	04:10:39	06:13:46
6	07:48:45	09:11:49	10:32:11	12:03:18	13:56:34	16:12:06	18:35:55	20:57:40	23:18:30	01:45:56	04:06:43	06:09:50
7	07:44:49	09:07:53	10:28:15	11:59:22	13:52:38	16:08:10	18:31:59	20:53:44	23:14:34	01:42:00	04:02:47	06:05:54
8	07:40:53	09:03:57	10:24:19	11:55:27	13:48:42	16:04:14	18:28:03	20:49:48	23:10:38	01:38:04	03:58:51	06:01:58
9	07:36:57	09:00:01	10:20:24	11:51:31	13:44:47	16:00:19	18:24:08	20:45:52	23:06:43	01:34:08	03:54:55	05:58:02
10	07:33:02	08:56:05	10:16:28	11:47:35	13:40:51	15:56:23	18:20:12	20:41:56	23:02:47	01:30:12	03:50:59	05:54:06
11	07:29:06	08:52:09	10:12:32	11:43:39	13:36:55	15:52:27	18:16:16	20:38:01	22:58:51	01:26:16	03:47:03	05:50:10
12	07:25:10	08:48:13	10:08:36	11:39:43	13:32:59	15:48:31	18:12:20	20:34:05	22:54:55	01:22:21	03:43:07	05:46:14
13	07:21:14	08:44:17	10:04:40	11:35:47	13:29:03	15:44:35	18:08:24	20:30:09	22:50:59	01:18:25	03:39:11	05:42:18
14	07:17:18	08:40:21	10:00:44	11:31:51	13:25:07	15:40:39	18:04:28	20:26:13	22:47:03	01:14:29	03:35:15	05:38:22
15	07:13:22	08:36:25	09:56:48	11:27:55	13:21:11	15:36:43	18:00:32	20:22:17	22:43:07	01:10:33	03:31:19	05:34:27
16	07:09:26	08:32:29	09:52:52	11:23:59	13:17:15	15:32:47	17:56:36	20:18:21	22:39:11	01:06:37	03:27:23	05:30:31
17	07:05:30	08:28:34	09:48:56	11:20:04	13:13:20	15:28:52	17:52:40	20:14:25	22:35:15	01:02:41	03:23:28	05:26:35
18	07:01:34	08:24:38	09:45:01	11:16:08	13:09:24	15:24:56	17:48:45	20:10:29	22:31:19	00:58:45	03:19:32	05:22:39
19	06:57:38	08:20:42	09:41:05	11:12:12	13:05:28	15:20:60	17:44:49	20:06:33	22:27:24	00:54:49	03:15:36	05:18:43
20	06:53:42	08:16:46	09:37:09	11:08:16	13:01:32	15:17:04	17:40:53	20:02:37	22:23:28	00:50:53	03:11:40	05:14:47
21	06:49:46	08:12:50	09:33:13	11:04:20	12:57:36	15:13:08	17:36:57	19:58:42	22:19:32	00:46:57	03:07:44	05:10:51
22	06:45:50	08:08:54	09:29:17	11:00:24	12:53:40	15:09:12	17:33:01	19:54:46	22:15:36	00:43:01	03:03:48	05:06:55
23	06:41:55	08:04:58	09:25:21	10:56:28	12:49:44	15:05:16	17:29:05	19:50:50	22:11:40	00:39:05	02:59:52	05:02:59
24	06:37:59	08:01:02	09:21:25	10:52:33	12:45:49	15:01:20	17:25:09	19:46:54	22:07:44	00:35:10	02:55:56	04:59:03
25	06:34:03	07:57:06	09:17:29	10:48:37	12:41:53	14:57:25	17:21:13	19:42:58	22:03:48	00:31:14	02:52:00	04:55:07
26	06:30:07	07:53:10	09:13:33	10:44:41	12:37:57	14:53:29	17:17:17	19:39:02	21:59:52	00:27:18	02:48:04	04:51:11
27	06:26:11	07:49:15	09:09:38	10:40:45	12:34:01	14:49:33	17:13:22	19:35:06	21:55:56	24:19:26	02:44:08	04:47:15
28	06:22:15	07:45:19	09:05:42	10:36:49	12:30:05	14:45:37	17:09:26	19:31:10	21:52:00	24:15:30	02:40:12	04:43:19
29	06:18:19	07:41:23	09:01:46	10:32:53	12:26:09	14:41:41	17:05:30	19:27:14	21:48:05	24:11:34	02:36:16	04:39:23

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

मार्च ता.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.
1	07:37:27	08:57:50	10:28:57	12:22:13	14:37:45	17:01:34	19:23:18	21:44:09	24:07:38	02:32:20	04:35:27	06:14:23
2	07:33:31	08:53:54	10:25:02	12:18:18	14:33:49	16:57:38	19:19:23	21:40:13	24:03:42	02:28:24	04:31:31	06:10:27
3	07:29:35	08:49:58	10:21:06	12:14:22	14:29:53	16:53:42	19:15:27	21:36:17	23 59:46	02:24:29	04:27:36	06:06:31
4	07:25:39	08:46:02	10:17:10	12:10:26	14:25:58	16:49:46	19:11:31	21:32:21	23 55:50	02:20:33	04:23:40	06:02:35
5	07:21:43	08:42:06	10:13:14	12:06:30	14:22:02	16:45:50	19:07:35	21:28:25	23:51:54	02:16:37	04:19:44	05:58:39
6	07:17:47	08:38:11	10:09:18	12:02:34	14:18:06	16:41:54	19:03:39	21:24:29	23:47:59	02:12:41	04:15:48	05:54:43
7	07:13:51	08:34:15	10:05:22	11:58:38	14:14:10	16:37:59	18:59:43	21:20:33	23:44:03	02:08:45	04:11:52	05:50:47
8	07:09:55	08:30:19	10:01:26	11:54:42	14:10:14	16:34:03	18:55:47	21:16:37	23:40:07	02:04:49	04:07:56	05:46:51
9	07:05:60	08:26:23	09:57:31	11:50:47	14:06:18	16:30:07	18:51:51	21:12:41	23:36:11	02:00:53	04:03:60	05:42:56
10	07:02:04	08:22:27	09:53:35	11:46:51	14:02:22	16:26:11	18:47:55	21:08:45	23:32:15	01:56:57	04:00:04	05:38:60
11	06:58:08	08:18:31	09:49:39	11:42:55	13:58:26	16:22:15	18:43:60	21:04:50	23:28:19	01:53:01	03:56:08	05:35:04
12	06:54:12	08:14:35	09:45:43	11:38:59	13:54:31	16:18:19	18:40:04	21:00:54	23:24:23	01:49:05	03:52:12	05:31:08
13	06:50:16	08:10:39	09:41:47	11:35:03	13:50:35	16:14:23	18:36:08	20:56:58	23:20:27	01:45:09	03:48:16	05:27:12
14	06:46:20	08:06:43	09:37:51	11:31:07	13:46:39	16:10:27	18:32:12	20:53:02	23:16:31	01:41:13	03:44:20	05:23:16
15	06:42:24	08:02:48	09:33:55	11:27:11	13:42:43	16:06:31	18:28:16	20:49:06	23:12:35	01:37:17	03:40:24	05:19:20
16	06:38:28	07:58:52	09:29:59	11:23:16	13:38:47	16:02:36	18:24:20	20:45:10	23:08:39	01:33:21	03:36:28	05:15:24
17	06:34:32	07:54:56	09:26:04	11:19:20	13:34:51	15:58:40	18:20:24	20:41:14	23:04:43	01:29:25	03:32:32	05:11:28
18	06:30:36	07:50:60	09:22:08	11:15:24	13:30:55	15:54:44	18:16:28	20:37:18	23:00:48	01:25:30	03:28:36	05:07:32
19	06:26:40	07:47:04	09:18:12	11:11:28	13:26:59	15:50:48	18:12:32	20:33:22	22:56:52	01:21:34	03:24:40	05:03:36
20	06:22:45	07.43.08	09:14:16	11:07:32	13:23:04	15:46:52	18:08:36	20:29:26	22:52:56	01:17:38	03:20:45	04:59:40
21	06:18:49	07:39:12	09:10:20	11:03:36	13:19:08	15:42:56	18:04:41	20:25:31	22:48:60	01:13:42	03:16:49	04:55:44
22	06:14:53	07:35:16	09:06:24	10:59:40	13:15:12	15:39:00	18:00:45	20:21:35	22:45:04	01:09:46	03:12:53	04:51:48
23	06:10:57	07:31:20	09:02:28	10:55:44	13:11:16	15:35:04	17:56:49	20:17:39	22:41:08	01:05:50	03:08:57	04:47:53
24	06:07:01	07:27:25	08:58:32	10:51:49	13:07:20	15:31:08	17:52:53	20:13:43	22:37:12	01:01:54	03:05:01	04:43:57
25	06:03:05	07:23:29	08:54:37	10:47:53	13:03:24	15:27:12	17:48:57	20:09:47	22:33:16	00:57:58	03:01:05	04:40:01
26	05:59:09	07:19:33	08:50:41	10:43:57	12:59:28	15:23:17	17:45:01	20:05:51	22:29:20	00:54:02	02:57:09	04:36:05
27	05:55:13	07:15:37	08:46:45	10:40:01	12:55:32	15:19:21	17:41:05	20:01:55	22:25:24	00:50:06	02:53:13	04:32:09
28	05:51:17	07:11:41	08:42:49	10:36:05	12:51:36	15:15:25	17:37:09	19:57:59	22:21:28	00:46:10	02:49:17	04:28:13
29	05:47:21	07:07:45	08:38:53	10:32:09	12:47:41	15:11:29	17:33:13	19:54:03	22:17:33	00:42:14	02:45:21	04:24:17
30	05:43:25	07:03:49	08:34:57	10:28:13	12:43:45	15:07:33	17:29:17	19:50:07	22:13:37	00:38:19	02:41:25	04:20:21
31	05:39:30	06:59:53	08:31:01	10:24:17	12:39:49	15:03:37	17:25:22	19:46:12	22:09:41	00:34:23	02:37:29	04:16:25

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:55:57	08:27:05	10:20:21	12:35:53	14:59:41	17:21:26	19:42:16	22:05:45	00:30:27	02:33:34	04:12:29	05:35:34
2	06:52:01	08:23:09	10:16:25	12:31:57	14:55:45	17:17:30	19:38:20	22:01:49	00:26:31	02:29:38	04:08:33	05:31:38
3	06:48:06	08:19:13	10:12:30	12:28:01	14:51:49	17:13:34	19:34:24	21:57:53	00:22:35	02:25:42	04:04:38	05:27:42
4	06:44:10	08:15:18	10:08:34	12:24:05	14:47:53	17:09:38	19:30:28	21:53:57	24:14:43	02:21:46	04:00:42	05:23:46
5	06:40:14	08:11:22	10:04:38	12:20:09	14:43:58	17:05:42	19:26:32	21:50:01	24:10:47	02:17:50	03:56:46	05:19:50
6	06:36:18	08:07:26	10:00:42	12:16:13	14:40:02	17:01:46	19:22:36	21:46:05	24:06:51	02:13:54	03:52:50	05:15:54
7	06:32:22	08:03:30	09:56:46	12:12:17	14:36:06	16:57:50	19:18:40	21:42:10	24:02:56	02:09:58	03:48:54	05:11:58
8	06:28:26	07:59:34	09:52:50	12:08:22	14:32:10	16:53:54	19:14:44	21:38:14	23:58:60	02:06:02	03:44:58	05:08:02
9	06:24:30	07:55:38	09:48:54	12:04:26	14:28:14	16:49:58	19:10:48	21:34:18	23:55:04	02:02:06	03:41:02	05:04:06
10	06:20:34	07:51:42	09:44:58	12:00:30	14:24:18	16:46:03	19:06:53	21:30:22	23:51:08	01:58:11	03:37:06	05:00:11
11	06:16:38	07:47:46	09:41:02	11:56:34	14:20:22	16:42:07	19:02:57	21:26:26	23:47:12	01:54:15	03:33:10	04:56:15
12	06:12:42	07:43:50	09:37:06	11:52:38	14:16:26	16:38:11	18:59:01	21:22:30	23:43:16	01:50:19	03:29:15	04:52:19
13	06:08:46	07:39:54	09:33:10	11:48:42	14:12:30	16:34:15	18:55:05	21:18:34	23:39:20	01:46:23	03:25:19	04:48:23
14	06:04:51	07:35:58	09:29:14	11:44:46	14:08:34	16:30:19	18:51:09	21:14:38	23:35:24	01:42:27	03:21:23	04:44:27
15	06:00:55	07:32:02	09:25:19	11:40:50	14:04:39	16:26:23	18:47:13	21:10:42	23:31:28	01:38:31	03:17:27	04:40:31
16	05:56:59	07:28:06	09:21:23	11:36:54	14:00:43	16:22:27	18:43:17	21:06:47	23:27:33	01:34:35	03:13:31	04:36:35
17	05:53:03	07:24:11	09:17:27	11:32:58	13:56:47	16:18:31	18:39:21	21:02:51	23:23:37	01:30:39	03:09:35	04:32:39
18	05:49:07	07:20:15	09:13:31	11:29:02	13:52:51	16:14:35	18:35:25	20:58:55	23:19:41	01:26:44	03:05:39	04:28:43
19	05:45:11	07:16:19	09:09:35	11:25:06	13:48:55	16:10:39	18:31:30	20:54:59	23:15:45	01:22:48	03:01:43	04:24:47
20	05:41:15	07:12:23	09:05:39	11:21:10	13:44:59	16:06:44	18:27:34	20:51:03	23:11:49	01:18:52	02:57:48	04:20:52
21	05:37:19	07:08:27	09:01:43	11:17:15	13:41:03	16:02:48	18:23:38	20:47:07	23:07:53	01:14:56	02:53:52	04:16:56
22	05:33:23	07:04:31	08:57:47	11:13:19	13:37:07	15:58:52	18:19:42	20:43:11	23:03:57	01:11:00	02:49:56	04:12:60
23	05:29:27	07:00:35	08:53:51	11:09:23	13:33:11	15:54:56	18:15:46	20:39:15	23:00:02	01:07:04	02:45:60	04:09:04
24	05:25:31	06:56:39	08:49:55	11:05:27	13:29:15	15:50:60	18:11:50	20:35:20	22:56:06	01:03:08	02:42:04	04:05:08
25	05:21:35	06:52:43	08:45:59	11:01:31	13:25:19	15:47:04	18:07:54	20:31:24	22:52:10	00:59:13	02:38:08	04:01:12
26	05:17:39	06:48:47	08:42:03	10:57:35	13:21:24	15:43:08	18:03:58	20:27:28	22:48:14	00:55:17	02:34:12	03:57:16
27	05:13:44	06:44:51	08:38:07	10:53:39	13:17:28	15:39:12	18:00:02	20:23:32	22:44:18	00:51:21	02:30:16	03:53:20
28	05:09:48	06:40:55	08:34:11	10:49:43	13:13:32	15:35:16	17:56:06	20:19:36	22:40:22	00:47:25	02:26:21	03:49:24
29	05:05:52	06:36:59	08:30:15	10:45:47	13:09:36	15:31:20	17:52:11	20:15:40	22:36:26	00:43:29	02:22:25	03:45:28
30	05:01:56	06:33:03	08:26:19	10:41:51	13:05:40	15:27:25	17:48:15	20:11:44	22:32:31	00:39:33	02:18:29	03:41:33

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

मई ता.	मेष घ. मि. से.	वृष घ. मि. से.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.	सिंह घ. मि. सै	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. से.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.
1	06:29:07	08:22:24	10:37:55	13:01:44	15:23:29	17:44:19	20:07:48	22:28:35	00:35:37	02:14:33	03:37:37	04:57:60
2	06:25:11	08:18:28	10:33:59	12:57:48	15:19:33	17:40:23	20:03:52	22:24:39	00:31:42	02:10:37	03:33:41	04:54:04
3	06:21:15	08:14:32	10:30:03	12:53:52	15:15:37	17:36:27	19:59:57	22:20:43	00:27:46	02:06:41	03:29:45	04:50:08
4	06:17:20	08:10:36	10:26:08	12:49:56	15:11:41	17:32:31	19:56:01	22:16:47	00:23:50	02:02:45	03:25:49	04:46:12
5	06:13:24	08:06:40	10:22:12	12:46:00	15:07:45	17:28:35	19:52:05	22:12:51	00:19:54	01:58:49	03:21:53	04:42:16
6	06:09:28	08:02:44	10:18:16	12:42:04	15:03:49	17:24:39	19:48:09	22:08:55	00:15:58	01:54:54	03:17:57	04:38:20
7	06:05:32	07:58:48	10:14:20	12:38:09	14:59:53	17:20:43	19:44:13	22:04:60	00:12:02	01:50:58	03:14:01	04:34:24
8	06:01:36	07:54:52	10:10:24	12:34:13	14:55:57	17:16:48	19:40:17	22:01:04	00:08:06	01:47:02	03:10:05	04:30:28
9	05:57:40	07:50:56	10:06:28	12:30:17	14:52:01	17:12:52	19:36:21	21:57:08	00:04:11	01:43:06	03:06:09	04:26:32
10	05:53:44	07:47:00	10:02:32	12:26:21	14:48:06	17:08:56	19:32:25	21:53:12	23:56:19	01:39:10	03:02:14	04:22:37
11	05:49:48	07:43:04	09:58:36	12:22:25	14:44:10	17:04:60	19:28:30	21:49:16	23:52:23	01:35:14	02:58:18	04:18:41
12	05:45:52	07:39:08	09:54:40	12:18:29	14:40:14	17:01:04	19:24:34	21:45:20	23:48:27	01:31:18	02:54:22	04:14:45
13	05:41:56	07:35:12	09:50:44	12:14:33	14:36:18	16:57:08	19:20:38	21:41:24	23:44:31	01:27:22	02:50:26	04:10:49
14	05:38:00	07:31:16	09:46:48	12:10:37	14:32:22	16:53:12	19:16:42	21:37:28	23:40:35	01:23:27	02:46:30	04:06:53
15	05:34:04	07:27:20	09:42:52	12:06:41	14:28:26	16:49:16	19:12:46	21:33:33	23:36:40	01:19:31	02:42:34	04:02:57
16	05:30:08	07:23:24	09:38:56	12:02:45	14:24:30	16:45:20	19:08:50	21:29:37	23:32:44	01:15:35	02:38:38	03:59:01
17	05:26:12	07:19:28	09:35:01	11:58:50	14:20:34	16:41:25	19:04:54	21:25:41	23:28:48	01:11:39	02:34:42	03:55:05
18	05:22:16	07:15:33	09:31:05	11:54:54	14:16:38	16:37:29	19:00:58	21:21:45	23:24:52	01:07:43	02:30:46	03:51:09
19	05:18:21	07:11:37	09:27:09	11:50:58	14:12:42	16:33:33	18:57:02	21:17:49	23:20:56	01:03:47	02:26:50	03:47:13
20	05:14:25	07:07:41	09:23:13	11:47:02	14:08:47	16:29:37	18.53:07	21:13:53	23:17:00	00:59:51	02:22:55	03:43:17
21	05:10:29	07:03:45	09:19:17	11:43:06	14:04:51	16:25:41	18:49:11	21:09:57	23:13:04	00:55:55	02:18:59	03:39:21
22	05:06:33	06:59:49	09:15:21	11:39:10	14:00:55	16:21:45	18:45:15	21:06:01	23:09:08	00:51:59	02:15:03	03:35:26
23	05:02:37	06:55:53	09:11:25	11:35:14	13:56:59	16:17:49	18:41:19	21:02:06	23:05:13	00:48:04	02:11:07	03:31:30
24	04:58:41	06:51:57	09:07:29	11:31:18	13:53:03	16:13:53	18:37:23	20:58:10	23:01:17	00:44:08	02:07:11	03:27:34
25	04:54:45	06:48:01	09:03:33	11:27:22	13:49:07	16:09:57	18:33:27	20:54:14	22:57:21	00:40:12	02:03:15	03:23:38
26	04:50:49	06:44:05	08:59:37	11:23:26	13:45:11	16:06:01	18:29:31	20:50:18	22:53:25	00:36:16	01:59:19	03:19:42
27	04:46:53	06:40:09	08:55:41	11:19:30	13:41:15	16:02:06	18:25:35	20:46:22	22:49:29	00:32:20	01:55:23	03:15:46
28	04:42:57	06:36:13	08:51:46	11:15:35	13:37:19	15:58:10	18:21:39	20:42:26	22:45:33	00:28:24	01:51:27	03:11:50
29	04:39:01	06:32:18	08:47:50	11:11:39	13:33:23	15:54:14	18:17:44	20:38:30	22:41:37	00:24:28	01:47:31	03:07:54
30	04:35:05	06:28:22	08:43:54	11:07:43	13:29:28	15:50:18	18:13:48	20:34:34	22:37:41	00:20:32	01:43:36	03:03:58
31	04:31:10	06:24:26	08:39:58	11:03:47	13:25:32	15:46:22	18:09:52	20:30:38	22:33:45	00:16:36	01:39:40	03:00:02

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:20:30	08:36:02	10:59:51	13:21:36	15:42:26	18:05:56	20:26:42	22:29:49	00:12:40	01:35:44	02:56:06	04:27:14
2	06:16:34	08:32:06	10:55:55	13:17:40	15:38:30	18:01:60	20:22:47	22:25:54	00:08:45	01:31:48	02:52:11	04:23:18
3	06:12:38	08:28:10	10:51:59	13:13:44	15:34:34	17:58:04	20:18:51	22:21:58	00:04:49	01:27:52	02:48:15	04:19:22
4	06:08:42	08:24:14	10:48:03	13:09:48	15:30:38	17:54:08	20:14:55	22:18:02	00:00:53	01:23:56	02:44:19	04:15:26
5	06:04:46	08:20:18	10:44:07	13:05:52	15:26:42	17:50:12	20:10:59	22:14:06	23:53:01	01:20:00	02:40:23	04:11:30
6	06:00:50	08:16:23	10:40:12	13:01:56	15:22:47	17:46:16	20:07:03	22:10:10	23:49:05	01:16:04	02:36:27	04:07:34
7	05:56:54	08:12:27	10:36:16	12:58:00	15:18:51	17:42:20	20:03:07	22:06:14	23:45:09	01:12:08	02:32:31	04:03:38
8	05:52:59	08:08:31	10:32:20	12:54:05	15:14:55	17:38:24	19:59:11	22:02:18	23:41:13	01:08:12	02:28:35	03:59:42
9	05:49:03	08:04:35	10:28:24	12:50:09	15:10:59	17:34:29	19:55:15	21:58:22	23:37:17	01:04:17	02:24:39	03:55:47
10	05:45:07	08:00:39	10:24:28	12:46:13	15:07:03	17:30:33	19:51:19	21:54:26	23:33:21	01:00:21	02:20:43	03:51:51
11	05:41:11	07:56:43	10:20:32	12:42:17	15:03:07	17:26:37	19:47:23	21:50:30	23:29:25	00:56:25	02:16:48	03:47:55
12	05:37:15	07:52:47	10:16:36	12:38:21	14:59:11	17:22:41	19:43:27	21:46:34	23:25:30	00:52:29	02:12:52	03:43:59
13	05:33:19	07:48:51	10:12:40	12:34:25	14:55:15	17:18:45	19:39:31	21:42:38	23:21:34	00:48:33	02:08:56	03:40:03
14	05:29:23	07:44:55	10:08:44	12:30:29	14:51:19	17:14:49	19:35:36	21:38:42	23:17:38	00:44:37	02:04:60	03:36:07
15	05:25:28	07:40:60	10:04:48	12:26:33	14:47:23	17:10:53	19:31:40	21:34:46	23:13:42	00:40:41	02:01:04	03:32:11
16	05:21:32	07:37:04	10:00:53	12:22:37	14:43:28	17:06:57	19:27:44	21:30:51	23:09:46	00:36:45	01:57:08	03:28:15
17	05:17:36	07:33:08	09:56:57	12:18:41	14:39:32	17:03:01	19:23:48	21:26:55	23:05:50	00:32:49	01:53:12	03:24:20
18	05:13:40	07:29:12	09:53:01	12:14:46	14:35:36	16:59:05	19:19:52	21:22:59	23:01:54	00:28:53	01:49:16	03:20:24
19	05:09:44	07:25:16	09:49:05	12:10:50	14:31:40	16:55:09	19:15:56	21:19:03	22:57:58	00:24:57	01:45:20	03:16:28
20	05:05:48	07:21:20	09:45:09	12:06:54	14:27:44	16:51:14	19:11:60	21:15:07	22:54:02	00:21:02	01:41:25	03:12:32
21	05:01:52	07:17:24	09:41:13	12:02:58	14:23:48	16:47:18	19:08:04	21:11:11	22:50:06	00:17:06	01:37:29	03:08:36
22	04:57:56	07:13:28	09:37:17	11:59:02	14:19:52	16:43:22	19:04:08	21:07:15	22:46:10	00:13:10	01:33:33	03:04:40
23	04:54:01	07:09:33	09:33:21	11:55:06	14:15:56	16:39:26	19:00:12	21:03:19	22:42:14	00:09:14	01:29:37	03:00:44
24	04:50:05	07:05:37	09:29:25	11:51:10	14:12:00	16:35:30	18:56:16	20:59:23	22:38:18	00:05:18	01:25:41	02:56:49
25	04:46:09	07:01:41	09:25:30	11:47:14	14:08:04	16:31:34	18:52:20	20:55:27	22:34:22	00:01:22	01:21:45	02:52:53
26	04:42:13	06:57:45	09:21:34	11:43:18	14:04:08	16:27:38	18:48:24	20:51:31	22:30:26	23:53:30	01:17:49	02:48:57
27	04:38:17	06:53:49	09:17:38	11:39:22	14:00:13	16:23:42	18:44:28	20:47:35	22:26:31	23:49:34	01:13:53	02:45:01
28	04:34:21	06:49:53	09:13:42	11:35:27	13:56:17	16:19:46	18:40:32	20:43:39	22:22:35	23:45:38	01:09:57	02:41:05
29	04:30:25	06:45:57	09:09:46	11:31:31	13:52:21	16:15:50	18:36:37	20:39:43	22:18:39	23:41:42	01:06:02	02:37:09
30	04:26:30	06:42:01	09:05:50	11:27:35	13:48:25	16:11:54	18:32:41	20:35:47	22:14:43	23:37:47	01:02:06	02:33:13

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:38:06	09:01:54	11:23:39	13:44:29	16:07:58	18:28:45	20:31:51	22:10:47	23:33:51	00:58:10	02:29:18	04:22:34
2	06:34:10	08:57:58	11:19:43	13:40:33	16:04:03	18:24:49	20:27:55	22:06:51	23:29:55	00:54:14	02:25:22	04:18:38
3	06:30:14	08:54:02	11:15:47	13:36:37	16:00:07	18:20:53	20:23:59	22:02:55	23:25:59	00:50:18	02:21:26	04:14:42
4	06:26:18	08:50:07	11:11:51	13:32:41	15:56:11	18:16:57	20:20:04	21:58:59	23:22:03	00:46:22	02:17:30	04:10:46
5	06:22:22	08:46:11	11:07:55	13:28:45	15:52:15	18:13:01	20:16:08	21:55:03	23:18:07	00:42:26	02:13:34	04:06:50
6	06:18:26	08:42:15	11:03:59	13:24:49	15:48:19	18:09:05	20:12:12	21:51:07	23:14:11	00:38:30	02:09:38	04:02:55
7	06:14:30	08:38:19	11:00:03	13:20:54	15:44:23	18:05:09	20:08:16	21:47:11	23:10:15	00:34:35	02:05:42	03:58:59
8	06:10:35	08:34:23	10:56:08	13:16:58	15:40:27	18:01:13	20:04:20	21:43:15	23:06:19	00:30:39	02:01:46	03:55:03
9	06:06:39	08:30:27	10:52:12	13:13:02	15:36:31	17:57:17	20:00:24	21:39:19	23:02:23	00:26:43	01:57:51	03:51:07
10	06:02:43	08:26:31	10:48:16	13:09:06	15:32:35	17:53:21	19:56:28	21:35:23	22:58:27	00:22:47	01:53:55	03:47:11
11	05:58:47	08:22:35	10:44:20	13:05:10	15:28:39	17:49:25	19:52:32	21:31:28	22:54:32	00:18:51	01:49:59	03:43:15
12	05:54:51	08:18:39	10:40:24	13:01:14	15:24:43	17:45:29	19:48:36	21:27:32	22:50:36	00:14:55	01:46:03	03:39:19
13	05:50:55	08:14:44	10:36:28	12:57:18	15:20:47	17:41:33	19:44:40	21:23:36	22:46:40	00:10:59	01:42:07	03:35:23
14	05:46:59	08:10:48	10:32:32	12:53:22	15:16:52	17:37:38	19:40:44	21:19:40	22:42:44	00:07:03	01:38:11	03:31:28
15	05:43:03	08:06:52	10:28:36	12:49:26	15:12:56	17:33:42	19:36:48	21:15:44	22:38:48	00:03:07	01:34:15	03:27:32
16	05:39:07	08:02:56	10:24:40	12:45:30	15:08:60	17:29:46	19:32:52	21:11:48	22:34:52	23:55:16	01:30:20	03:23:36
17	05:35:12	07:59:00	10:20:44	12:41:35	15:05:04	17:25:50	19:28:56	21:07:52	22:30:56	23:51:20	01:26:24	03:19:40
18	05:31:16	07:55:04	10:16:49	12:37:39	15:01:08	17:21:54	19:25:00	21:03:56	22:27:00	23:47:24	01:22:28	03:15:44
19	05:27:20	07:51:08	10:12:53	12:33:43	14:57:12	17:17:58	19:21:05	21:00:00	22:23:04	23:43:28	01:18:32	03:11:48
20	05:23.24	07:47:12	10:08:57	12:29:47	14:53:16	17:14:02	19:17:09	20:56:04	22:19:08	23:39:32	01:14:36	03:07:52
21	05:19:28	07:43:16	10:05:01	12:25:51	14:49:20	17:10:06	19:13:13	20:52:08	22:15:12	23:35:36	01:10:40	03:03:56
22	05:15:32	07:39:21	10:01:05	12:21:55	14:45:24	17:06:10	19:09:17	20:48:12	22:11:17	23:31:40	01:06:44	03:00:01
23	05:11:36	07:35:25	09:57:09	12:17:59	14:41:28	17:02:14	19:05:21	20:44:16	22:07:21	23:27:44	01:02:48	02:56:05
24	05:07:40	07:31:29	09:53:13	12:14:03	14:37:32	16:58:18	19:01:25	20:40:21	22:03:25	23:23:49	00:58:52	02:52:09
25	05:03:44	07:27:33	09:49:17	12:10:07	14:33:37	16:54:22	18:57:29	20:36:25	21:59:29	23:19:53	00:54:57	02:48:13
26	04:59:49	07:23:37	09:45:21	12:06:11	14:29:41	16:50:27	18:53:33	20:32:29	21:55:33	23:15:57	00:51:01	02:44:17
27	04:55:53	07:19:41	09:41:26	12:02:16	14:25:45	16:46:31	18:49:37	20:28:33	21:51:37	23:12:01	00:47:05	02:40:21
28	04:51:57	07:15:45	09:37:30	11:58:20	14:21:49	16:42:35	18:45:41	20:24:37	21:47:41	23:08:05	00:43:09	02:36:25
29	04:48:01	07:11:49	09:33.34	11:54:24	14:17:53	16:38:39	18:41:45	20:20:41	21:43:45	23:04:09	00:39:13	02:32:29
30	04:44:05	07:07:53	09:29:38	11:50:28	14:13:57	16:34:43	18:37:50	20:16:45	21:39:49	23:00:13	00:35:17	02:28:33
31	04:40:09	07:03:57	09:25:42	11:46:32	14:10:01	16:30:47	18:33:54	20:12:49	21:35:53	22:56:17	00:31:21	02:24:38

दैनिक लग्न सारणी (अगस्त) भा. स्टे. टा. समाप्ति काल जम्मू

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:00:02	09:21:46	11:42:36	14:06:05	16:26:51	18:29:58	20:08:53	21:31:58	22:52:21	00:27:25	02:20:42	04:36:13
2	06:56:06	09:17:50	11:38:40	14:02:09	16:22:55	18:26:02	20:04:57	21:28:02	22:48:25	00:23:29	02:16:46	04:32:17
3	06:52:10	09:13:54	11:34:44	13:58:14	16:18:59	18:22:06	20:01:02	21:24:06	22:44:29	00:19:33	02:12:50	04:28:21
4	06:48:14	09:09:58	11:30:48	13:54:18	16:15:03	18:18:10	19:57:06	21:20:10	22:40:34	00:15:38	02:08:54	04:24:25
5	06:44:18	09:06:02	11:26:52	13:50:22	16:11:08	18:14:14	19:53:10	21:16:14	22:36:38	00:11:42	02:04:58	04:20:30
6	06:40:22	09:02:07	11:22:57	13:46:26	16:07:12	18:10:18	19:49:14	21:12:18	22:32:42	00:07:46	02:01:02	04:16:34
7	06:36:26	08:58:11	11:19:01	13:42:30	16:03:16	18:06:22	19:45:18	21:08:22	22:28:46	00:03:50	01:57:06	04:12:38
8	06:32:30	08:54:15	11:15:05	13:38:34	15:59:20	18:02:27	19:41:22	21:04:26	22:24:50	23:55:58	01:53:10	04:08:42
9	06:28:34	08:50:19	11:11:09	13:34:38	15:55:24	17:58:31	19:37:26	21:00:30	22:20:54	23:52:02	01:49:14	04:04:46
10	06:24:38	08:46:23	11:07:13	13:30:42	15:51:28	17:54:35	19:33:30	20:56:34	22:16:58	23:48:06	01:45:18	04:00:50
11	06:20:43	08:42:27	11:03:17	13:26:46	15:47:32	17:50:39	19:29:34	20:52:39	22:13:02	23:44:10	01:41:22	03:56:54
12	06:16:47	08:38:31	10:59:21	13:22:51	15:43:36	17:46:43	19:25:39	20:48:43	22:09:06	23:40:14	01:37:26	03:52:58
13	06:12:51	08:34:35	10:55:25	13:18:55	15:39:41	17:42:47	19:21:43	20:44:47	22:05:10	23:36:18	01:33:31	03:49:02
14	06:08:55	08:30:39	10:51:29	13:14:59	15:35:45	17:38:51	19:17:47	20:40:51	22:01:14	23:32:22	01:29:35	03:45:06
15	06:04:59	08:26:43	10:47:33	13:11:03	15:31:49	17:34:55	19:13:51	20:36:55	21:57:18	23:28:26	01:25:39	03:41:10
16	06:01:03	08:22:48	10:43:38	13:07:07	15:27:53	17:30:60	19:09:55	20:32:59	21:53:23	23:24:30	01:21:43	03:37:14
17	05:57:07	08:18:52	10:39:42	13:03:11	15:23:57	17:27:04	19:05:59	20:29:03	21:49:27	23:20:34	01:17:47	03:33:19
18	05:53:11	08:14:56	10:35:46	12:59:15	15:20:01	17:23:08	19:02:03	20:25:07	21:45:31	23:16:39	01:13:51	03:29:23
19	05:49:15	08:10:60	10:31:50	12:55:19	15:16:05	17:19:12	18:58:07	20:21:11	21:41:35	23:12:43	01:09:55	03:25:27
20	05:45:19	08:07:04	10:27:54	12:51:23	15:12:10	17:15:16	18:54:12	20:17:15	21:37:39	23:08:47	01:05:59	03:21:31
21	05:41:23	08:03:08	10:23:58	12:47:28	15:08:14	17:11:20	18:50:16	20:13:20	21:33:43	23:04:51	01:02:03	03:17:35
22	05:37:28	07:59:12	10:20:02	12:43:32	15:04:18	17:07:24	18:46:20	20:09:24	21:29:47	23:00:55	00:58:07	03:13:39
23	05:33:32	07:55:16	10:16:06	12:39:36	15:00:22	17:03:29	18:42:24	20:05:28	21:25:51	22:56:59	00:54:11	03:09:43
24	05:29:36	07:51:20	10:12:10	12:35:40	14:56:26	16:59:33	18:38:28	20:01:32	21:21:55	22:53:03	00:50:15	03:05:47
25	05:25:40	07:47:24	10:08:15	12:31:44	14:52:30	16:55:37	18:34:32	19:57:36	21:17:59	22:49:07	00:46:19	03:01:51
26	05:21:44	07:43:29	10:04:19	12:27:48	14:48:34	16:51:41	18:30:36	19:53:40	21:14:03	22:45:11	00:42:23	02:57:55
27	05:17:48	07:39:33	10:00:23	12:23:52	14:44:39	16:47:45	18:26:40	19:49:44	21:10:07	22:41:15	00:38:27	02:53:59
28	05:13:52	07:35:37	09:56:27	12:19:56	14:40:43	16:43:49	18:22:45	19:45:48	21:06:11	22:37:19	00:34:31	02:50:03
29	05:09:56	07:31:41	09:52:31	12:16:01	14:36:47	16:39:53	18:18:49	19:41:52	21:02:16	22:33:23	00:30:35	02:46:07
30	05:06:00	07:27:45	09:48:35	12:12:05	14:32:51	16:35:58	18:14:53	19:37:56	20:58:20	22:29:27	00:26:40	02:42:12
31	05:02:04	07:23:49	09:44:39	12:08:09	14:28:55	16:32:02	18:10:57	19:34:01	20:54:24	22:25:31	00:22:44	02:38:16

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.
1	07:19:53	09:40:43	12:04:13	14:24:59	16:28:06	18:07:01	19:30:05	20:50:28	22:21:35	00:18:48	02:34:20	04:58:08
2	07:15:57	09:36:47	12:00:17	14:21:03	16:24:10	18:03:05	19:26:09	20:46:32	22:17:39	00:14:52	02:30:24	04:54:13
3	07:12:01	09:32:52	11:56:21	14:17:08	16:20:14	17:59:09	19:22:13	20:42:36	22:13:43	00:10:56	02:26:28	04:50:17
4	07:08:05	09:28:56	11:52:25	14:13:12	16:16:18	17:55:14	19:18:17	20:38:40	22:09:48	00:06:60	02:22:32	04:46:21
5	07:04:10	09:24:60	11:48:29	14:09:16	16:12:22	17:51:18	19:14:21	20:34:44	22:05:52	00:03:04	02:18:36	04:42:25
6	07:00:14	09:21:04	11:44:34	14:05:20	16:08:27	17:47:22	19:10:25	20:30:48	22:01:56	23:55:12	02:14:40	04:38:29
7	06:56:18	09:17:08	11:40:38	14:01:24	16:04:31	17:43:26	19:06:29	20:26:52	21:57:60	23:51:16	02:10:44	04:34:33
8	06:52:22	09:13:12	11:36:42	13:57:28	16:00:35	17:39:30	19:02:33	20:22:56	21:54:04	23:47:20	02:06:48	04:30:37
9	06:48:26	09:09:16	11:32:46	13:53:32	15:56:39	17:35:34	18:58:37	20:19:00	21:50:08	23:43:24	02:02:52	04:26:41
10	06:44:30	09:05:20	11:28:50	13:49:36	15:52:43	17:31:38	18:54:42	20:15:04	21:46:12	23:39:28	01:58:56	04:22:45
11	06:40:34	09:01:24	11:24:54	13:45:41	15:48:47	17:27:42	18:50:46	20:11:09	21:42:16	23:35:32	01:55:00	04:18:49
12	06:36:38	08:57:28	11:20:58	13:41:45	15:44:51	17:23:46	18:46:50	20:07:13	21:38:20	23:31:36	01:51:05	04:14:53
13	06:32:42	08:53:33	11:17:02	13:37:49	15:40:56	17:19:51	18:42:54	20:03:17	21:34:24	23:27:40	01:47:09	04:10:58
14	06:28:46	08:49:37	11:13:06	13:33:53	15:36:60	17:15:55	18:38:58	19:59:21	21:30:28	23:23:45	01:43:13	04:07:02
15	06:24:51	08:45:41	11:09:11	13:29:57	15:33:04	17:11:59	18:35:02	19:55:25	21:26:32	23:19:49	01:39:17	04:03:06
16	06:20:55	08:41:45	11:05:15	13:26:01	15:29:08	17:08:03	18:31:06	19:51:29	21:22:36	23:15:53	01:35:21	03:59:10
17	06:16:59	08:37:49	11:01:19	13:22:05	15:25:12	17:04:07	18:27:10	19:47:33	21:18:40	23:11:57	01:31:25	03:55:14
18	06:13:03	08:33:53	10:57:23	13:18:09	15:21:16	17:00:11	18:23:14	19:43:37	21:14:45	23:08:01	01:27:29	03:51:18
19	06:09:07	08:29:57	10:53:27	13:14:14	15:17:20	16:56:15	18:19:18	19:39:41	21:10:49	23:04:05	01:23:33	03:47:22
20	06:05:11	08:26:01	10:49:31	13:10:18	15:13:24	16:52:19	18:15:23	19:35:45	21:06:53	23:00:09	01:19:37	03:43:26
21	06:01:15	08:22:05	10:45:35	13:06:22	15:09:28	16:48:23	18:11:27	19:31:49	21:02:57	22:56:13	01:15:41	03:39:30
22	05:57:19	08:18:09	10:41:39	13:02:26	15:05:33	16:44:28	18:07:31	19:27:54	20:59:01	22:52:17	01:11:45	03:35:34
23	05:53:23	08:14:14	10:37:43	12:58:30	15:01:37	16:40:32	18:03:35	19:23:58	20:55:05	22:48:21	01:07:50	03:31:39
24	05:49:27	08:10:18	10:33:48	12:54:34	14:57:41	16:36:36	17:59:39	19:20:02	20:51:09	22:44:25	01:03:54	03:27:43
25	05:45:32	08:06:22	10:29:52	12:50:38	14:53:45	16:32:40	17:55:43	19:16:06	20:47:13	22:40:30	00:59:58	03:23:47
26	05:41:36	08:02:26	10:25:56	12:46:42	14:49:49	16:28:44	17:51:47	19:12:10	20:43:17	22:36:34	00:56:02	03:19:51
27	05:37:40	07:58:30	10:21:60	12:42:46	14:45:53	16:24:48	17:47:51	19:08:14	20:39:21	22:32:38	00:52:06	03:15:55
28	05:33:44	07:54:34	10:18:04	12:38:50	14:41:57	16:20:52	17:43:55	19:04:18	20:35:25	22:28:42	00:48:10	03:11:59
29	05:29:48	07:50:38	10:14:08	12:34:55	14:38:01	16:16:56	17:39:59	19:00:22	20:31:30	22:24:46	00:44:14	03:08:03
30	05:25:52	07:46:42	10:10:12	12:30:59	14:34:05	16:13:00	17:36:04	18:56:26	20:27:34	22:20:50	00:40:18	03:04:07

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:42:46	10:06:16	12:27:03	14:30:09	16:09:04	17:32:08	18:52:30	20:23:38	22:16:54	00:36:22	03:00:11	05:21:56
2	07:38:51	10:02:20	12:23:07	14:26:14	16:05:09	17:28:12	18:48:35	20:19:42	22:12:58	00:32:26	02:56:15	05:18:00
3	07:34:55	09:58:24	12:19:11	14:22:18	16:01:13	17:24:16	18:44:39	20:15:46	22:09:02	00:28:31	02:52:20	05:14:04
4	07:30:59	09:54:28	12:15:15	14:18:22	15:57:17	17:20:20	18:40:43	20:11:50	22:05:07	00:24:35	02:48:24	05:10:08
5	07:27:03	09:50:33	12:11:19	14:14:26	15:53:21	17:16:24	18:36:47	20:07:54	22:01:11	00:20:39	02:44:28	05:06:13
6	07:23:07	09:46:37	12:07:23	14:10:30	15:49:25	17:12:28	18:32:51	20:03:58	21:57:15	00:16:43	02:40:32	05:02:17
7	07:19:11	09:42:41	12:03:27	14:06:34	15:45:29	17:08:32	18:28:55	20:00:03	21:53:19	24:08:51	02:36:36	04:58:21
8	07:15:15	09:38:45	11:59:31	14:02:38	15:41:33	17:04:36	18:24:59	19:56:07	21:49:23	24:04:55	02:32:40	04:54:25
9	07:11:19	09:34:49	11:55:35	13:58:42	15:37:37	17:00:40	18:21:03	19:52:11	21:45:27	24:00:59	02:28:44	04:50:29
10	07:07:23	09:30:53	11:51:39	13:54:46	15:33:41	16:56:44	18:17:07	19:48:15	21:41:31	23:57:04	02:24:48	04:46:33
11	07:03:27	09:26:57	11:47:44	13:50:50	15:29:45	16:52:49	18:13:11	19:44:19	21:37:35	23:53:08	02:20:52	04:42:37
12	06:59:31	09:23:01	11:43:48	13:46:54	15:25:49	16:48:53	18:09:16	19:40:23	21:33:40	23:49:12	02:16:57	04:38:41
13	06:55:36	09:19:05	11:39:52	13:42:58	15:21:53	16:44:57	18:05:20	19:36:27	21:29:44	23:45:16	02:13:01	04:34:45
14	06:51:40	09:15:09	11:35:56	13:39:02	15:17:57	16:41:01	18:01:24	19:32:31	21:25:48	23:41:20	02:09:05	04:30:49
15	06:47:44	09:11:13	11:31:60	13:35:06	15:14:02	16:37:05	17:57:28	19:28:36	21:21:52	23:37:24	02:05:09	04:26:54
16	06:43:48	09:07:18	11:28:04	13:31:10	15:10:06	16:33:09	17:53:32	19:24:40	21:17:56	23:33:28	02:01:13	04:22:58
17	06:39:52	09:03:22	11:24:08	13:27:15	15:06:10	16:29:13	17:49:36	19:20:44	21:14:00	23:29:32	01:57:17	04:19:02
18	06:35:56	08:59:26	11:20:12	13:23:19	15:02:14	16:25:17	17:45:40	19:16:48	21:10:04	23:25:37	01:53:21	04:15:06
19	06:32:00	08:55:30	11:16:16	13:19:23	14:58:18	16:21:21	17:41:44	19:12:52	21:06:09	23:21:41	01:49:25	04:11:10
20	06:28:04	08:51:34	11:12:20	13:15:27	14:54:22	16:17:25	17:37:49	19:08:56	21:02:13	23:17:45	01:45:29	04:07:14
21	06:24:08	08:47:38	11:08:24	13:11:31	14:50:26	16:13:29	17:33:53	19:05:00	20:58:17	23:13:49	01:41:34	04:03:18
22	06:20:12	08:43:42	11:04:28	13:07:35	14:46:30	16:09:34	17:29:57	19:01:05	20:54:21	23:09:53	01:37:38	03:59:22
23	06:16:17	08:39:46	11:00:32	13:03:39	14:42:34	16:05:38	17:26:01	18:57:09	20:50:25	23:05:57	01:33:42	03:55:26
24	06:12:21	08:35:50	10:56:36	12:59:43	14:38:38	16:01:42	17:22:05	18:53:13	20:46:29	23:02:01	01:29:46	03:51:30
25	06:08:25	08:31:54	10:52:40	12:55:47	14:34:42	15:57:46	17:18:09	18:49:17	20:42:33	22:58:05	01:25:50	03:47:35
26	06:04:29	08:27:58	10:48:44	12:51:51	14:30:46	15:53:50	17:14:13	18:45:21	20:38:38	22:54:10	01:21:54	03:43:39
27	06:00:33	08:24:02	10:44:49	12:47:55	14:26:50	15:49:54	17:10:17	18:41:25	20:34:42	22:50:14	01:17:58	03:39:43
28	05:56:37	08:20:07	10:40:53	12:43:59	14:22:54	15:45:58	17:06:21	18:37:29	20:30:46	22:46:18	01:14:02	03:35:47
29	05:52:41	08:16:11	10:36:57	12:40:03	14:18:58	15:42:02	17:02:26	18:33:34	20:26:50	22:42:22	01:10:06	03:31:51
30	05:48:45	08:12:15	10:33:01	12:36:07	14:15:03	15:38:06	16:58:30	18:29:38	20:22:54	22:38:26	01:06:11	03:27:55
31	05:44:49	08:08:19	10:29:05	12:32:11	14:11:07	15:34:10	16:54:34	18:25:42	20:18:58	22:34:30	01:02:15	03:23:59

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेप	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:04:23	10:25:09	12:28:15	14:07:11	15:30:14	16:50:38	18:21:46	20:15:02	22:30:34	00:58:19	03:20:03	05:40:53
2	08:00:27	10:21:13	12:24:19	14:03:15	15:26:19	16:46:42	18:17:50	20:11:07	22:26:38	00:54:23	03:16:07	05:36:58
3	07:56:31	10:17:17	12:20:23	13:59:19	15:22:23	16:42:46	18:13:54	20:07:11	22:22:43	00:50:27	03:12:12	05:33:02
4	07 52:35	10:13:21	12:16:28	13:55:23	15:18:27	16:38:50	18:09:58	20:03:15	22:18:47	00:46:31	03:08:16	05:29:06
5	07:48:39	10:09:25	12:12:32	13:51:27	15:14:31	16:34:54	18:06:02	19:59:19	22:14:51	00:42:35	03:04:20	05:25:10
6	07:44:43	10:05:29	12:08:36	13:47:31	15:10:35	16:30:59	18:02:07	19:55:23	22:10:55	00:38:39	03:00:24	05:21:14
7	07:40:47	10:01:33	12:04:40	13:43:35	15:06:39	16:27:03	17:58:11	19:51:27	22:06:59	00:34:43	02:56:28	05:17:18
8	07:36:51	09:57:37	12:00:44	13:39:39	15:02:43	16:23:07	17:54:15	19:47:31	22:03:03	00:30:48	02:52:32	05:13:22
9	07:32:56	09:53:41	11:56:48	13:35:43	14:58:47	16:19:11	17:50:19	19:43:36	21:59:07	00:26:52	02:48:36	05:09:26
10	07:28:60	09:49:45	11:52:52	13:31:47	14:54:51	16:15:15	17:46:23	19:39:40	21:55:11	24:18:60	02:44:40	05:05:30
11	07:25:04	09:45:50	11:48:56	13:27:51	14:50:55	16:11:19	17:42:27	19:35:44	21:51:16	24:15:04	02:40:44	05:01:34
12	07:21:08	09:41:54	11:45:00	13:23:55	14:46:60	16:07:23	17:38:31	19:31:48	21:47:20	24:11:08	02:36:48	04:57:38
13	07:17:12	09:37:58	11:41:04	13:19:60	14:43:04	16:03:27	17:34:35	19:27:52	21:43:24	24:07:12	02:32:53	04:53:43
14	07:13:16	09:34:02	11:37:08	13:16:04	14:39:08	15:59:31	17:30:40	19:23:56	21:39:28	24:03:16	02:28:57	04:49:47
15	07:09:20	09:30:06	11:33:12	13:12:08	14:35:12	15:55:36	17:26:44	19:20:00	21:35:32	23:59:20	02:25:01	04:45:51
16	07:05:24	09:26:10	11:29:16	13:08:12	14:31:16	15:51:40	17:22:48	19:16:04	21:31:36	23:55:25	02:21:05	04:41:55
17	07:01:28	09:22:14	11:25:20	13:04:16	14:27:20	15:47:44	17:18:52	19:12:09	21:27:40	23:51:29	02:17:09	04:37:59
18	06:57:32	09:18:18	11:21:25	13:00:20	14:23:24	15:43:48	17:14:56	19:08:13	21:23:44	23:47:33	02:13:13	04:34:03
19	06:53:36	09:14:22	11:17:29	12:56:24	14:19:28	15:39:52	17:11:00	19:04:17	21:19:48	23:43:37	02:09:17	04:30:07
20	06:49:41	09:10:26	11:13:33	12:52:28	14:15:32	15:35:56	17:07:04	19:00:21	21:15:53	23:39:41	02:05:21	04:26:11
12	06:45:45	09:06:30	11:09:37	12:48:32	14:11:36	15:32:00	17:03:08	18:56:25	21:11:57	23:35:45	02:01:25	04:22:15
22	06:41:49	09:02:35	11:05:41	12:44:36	14:07:40	15:28:04	16:59:12	18:52:29	21.08:01	23:31:49	01:57:29	04:18:19
23	06:37:53	08:58:39	11:01:45	12:40:40	14 03:45	15:24.08	16:55:17	18:48:33	21:04:05	23:27:53	01:53:34	04:14:24
24	06:33:57	08:54:43	10:57:49	12:36:45	13 59:49	15:20:12	16:51:21	18:44:37	21:00:09	23:23:57	01:49:38	04:10:28
25	06:30:01	08:50:47	10:53:53	12:32:49	13:55:53	15:16:17	16:47:25	18:40:41	20:56:13	23:20:01	01:45:42	04:06:32
26	06:26:05	08:46.51	10.49:57	12.28.53	13 51:57	15.12.21	16:43:29	18:36:45	20:52:17	23:16:06	01:41:46	04:02:36
27	06:22:09	08:42:55	10:46:01	12:24:57	13:48:01	15:08:25	16:39:33	18:32:50	20:48:21	23:12:10	01:37:50	03:58:40
28	06:18:13	08:38:59	10:42:06	12:21:01	13:44:05	15:04:29	16:35:37	18.28:54	20:44:25	23:08:14	01:33:54	03:54:44
29	06:14:17	08:35:03	10:38:10	12:17:05	13.40:09	15:00:33	16:31:41	18:24:58	20:40:29	23:04:18	01:29:58	03:50:48
30	06:10:22	08:31:07	10:34:14	12:13:09	13:36:13	14:56:37	16:27:45	18:21:02	20:36:34	23:00:22	01:26:02	03:46:52

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:27:11	10:30:18	12:09:13	13:32:17	14:52:41	16:23:49	18:17:06	20:32:38	22:56:26	01:22:06	03:42:56	06:06:26
2	08:23:16	10:26:22	12:05:17	13:28:21	14:48:45	16:19:53	18:13:10	20:28:42	22:52:30	01:18:10	03:39:01	06:02:30
3	08:19:20	10:22:26	12:01:21	13:24:26	14:44:49	16:15:57	18:09:14	20:24:46	22:48:34	01:14:15	03:35:05	05:58:34
4	08:15:24	10:18:30	11:57:26	13:20:30	14:40:53	16:12:02	18:05:18	20:20:50	22:44:38	01:10:19	03:31:09	05:54:38
5	08:11:28	10:14:34	11:53:30	13:16:34	14:36:57	16:08:06	18:01:22	20:16:54	22:40:42	01:06:23	03:27:13	05:50:42
6	08:07:32	10:10:38	11:49:34	13:12:38	14:33:02	16:04:10	17:57:26	20:12:58	22:36:47	01:02:27	03:23:17	05:46:46
7	08:03:36	10:06:43	11:45:38	13:08:42	14:29:06	16:00:14	17:53:30	20:09:02	22:32:51	00:58:31	03:19:21	05:42:50
8	07:59:40	10:02:47	11:41:42	13:04:46	14:25:10	15:56:18	17:49:34	20:05:06	22:28:55	00:54:35	03:15:25	05:38:54
9	07:55:44	09:58:51	11:37:46	13:00:50	14:21:14	15:52:22	17:45:38	20:01:10	22:24:59	00:50:39	03:11:29	05:34:59
10	07:51:49	09:54:55	11:33:50	12:56:54	14:17:18	15:48:26	17:41:43	19:57:14	22:21:03	00:46:43	03:07:33	05:31:03
11	07:47:53	09:50:59	11:29:54	12:52:58	14:13:22	15:44:30	17:37:47	19:53:18	22:17:07	00:42:47	03:03:37	05:27:07
12	07:43:57	09:47:03	11:25:59	12:49:02	14:09:26	15:40:34	17:33:51	19:49:23	22:13:11	00:38:51	02:59:42	05:23:11
13	07:40:01	09:43:07	11:22:03	12:45:07	14:05:30	15:36:38	17:29:55	19:45:27	22:09:15	00:34:56	02:55:46	05:19:15
14	07:36:05	09:39:12	11:18:07	12:41:11	14:01:34	15:32:42	17:25:59	19:41:31	22:05:19	00:30:60	02:51:50	05:15:19
15	07:32:09	09:35:16	11:14:11	12:37:15	13:57:38	15:28:46	17:22:03	19:37:35	22:01:23	00:27:04	02:47:54	05:11:23
16	07:28:13	09:31:20	11:10:15	12:33:19	13:53:42	15:24:50	17:18:07	19:33:39	21:57:27	00:23:08	02:43:58	05:07:27
17	07:24:18	09:27:24	11:06:19	12:29:23	13:49:46	15:20:54	17:14:11	19:29:43	21:53:32	24:15:16	02:40:02	05:03:32
18	07:20:22	09:23:28	11:02:23	12:25:27	13:45:50	15:16:58	17:10:15	19:25:47	21:49:36	24:11:20	02:36:06	04:59:36
19	07:16:26	09:19:32	10:58:27	12:21:31	13:41:55	15:13:02	17:06:19	19:21:51	21:45:40	24:07:24	02:32:10	04:55:40
20	07:12:30	09:15:36	10:54:32	12:17:35	13:37:59	15:09:07	17:02:23	19:17:55	21:41:44	24:03:28	02:28:14	04:51:44
21	07:08:34	09:11:41	10:50:36	12:13:39	13:34:03	15:05:11	16:58:27	19:13:59	21:37:48	23:59:32	02:24:19	04:47:48
22	07:04:38	09:07:45	10:46:40	12:09:43	13:30:07	15:01:15	16:54:31	19:10:03	21:33:52	23:55:37	02:20:23	04:43:52
23	07:00:42	09:03:49	10:42:44	12:05:48	13:26:11	14:57:19	16:50:35	19:06:07	21:29:56	23:51:41	02:16:27	04:39:56
24	06:56:47	08:59:53	10:38:48	12:01:52	13:22:15	14:53:23	16:46:39	19:02:11	21:26:00	23:47:45	02:12:31	04:36:00
25	06:52:51	08:55:57	10:34:52	11:57:56	13:18:19	14:49:27	16:42:43	18:58:16	21:22:04	23:43:49	02:08:35	04:32:05
26	06:48:55	08:52:01	10:30:56	11:53:60	13:14:23	14:45:31	16:38:47	18:54:20	21:18:08	23:39:53	02:04:39	04:28:09
27	06:44:59	08:48:05	10:27:00	11:50:04	13:10:27	14:41:35	16:34:52	18:50:24	21:14:12	23:35:57	02:00:43	04:24:13
28	06:41:03	08:44:10	10:23:05	11:46:08	13:06:31	14:37:39	16:30:56	18:46:28	21:10:17	23:32:01	01:56:47	04:20:17
29	06:37:07	08:40:14	10:19:09	11:42:12	13:02:35	14:33:43	16:26:60	18:42:32	21:06:21	23:28:05	01:52:51	04:16:21
30	06:33:11	08:36:18	10:15:13	11:38:16	12:58:39	14:29:47	16:23:04	18:38:36	21:02:25	23:24:09	01:48:55	04:12:25
31	06:29:15	08:32:22	10:11:17	11:34:20	12:54:43	14:25:51	16:19:08	18:34:40	20:58:29	23:20:13	01:44:60	04:08:29

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

जनवरी ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:24:21	10:03:50	11:27:37	12:48:44	14:20:31	16:14:08	18:29:30	20:52:44	23:13:46	01:37:48	04:00:39	06:21:04
2	08:20:25	09:59:54	11:23:41	12:44:48	14:16:35	16:10:12	18:25:34	20:48:48	23:09:50	01:33:52	03:56:43	06:17:08
3	08:16:29	09:55:59	11:19:45	12:40:52	14:12:39	16:06:16	18:21:38	20:44:53	23:05:54	01:29:56	03:52:47	06:13:12
4	08:12:33	09:52:03	11:15:49	12:36:56	14:08:43	16:02:20	18:17:42	20:40:57	23:01:58	01:26:01	03:48:51	06:09:16
5	08:08:37	09:48:07	11:11:54	12:33:00	14:04:47	15:58:24	18:13:46	20:37:01	22:58:03	01:22:05	03:44:55	06:05:21
6	08:04:41	09:44:11	11:07:58	12:29:05	14:00:51	15:54:28	18:09:50	20:33:05	22:54:07	01:18:09	03:40:59	06:01:25
7	08:00:46	09:40:15	11:04:02	12:25:09	13:56:55	15:50:32	18:05:54	20:29:09	22:50:11	01:14:13	03:37:04	05:57:29
8	07:56:50	09:36:19	11:00:06	12:21:13	13:52:59	15:46:36	18:01:58	20:25:13	22:46:15	01:10:17	03:33:08	05:53:33
9	07:52:54	09:32:23	10:56:10	12:17:17	13:49:03	15:42:40	17:58:02	20:21:17	22:42:19	01:06:21	03:29:12	05:49:37
10	07:48:58	09:28:27	10:52:14	12:13:21	13:45:07	15:38:44	17:54:06	20:17:21	22:38:23	01:02:25	03:25:16	05:45:41
11	07:45:02	09:24:32	10:48:18	12:09:25	13:41:11	15:34:48	17:50:10	20:13:25	22:34:27	00:58:29	03:21:20	05:41:45
12	07:41:06	09:20:36	10:44:22	12:05:29	13:37:15	15:30:52	17:46:14	20:09:29	22:30:31	00:54:33	03:17:24	05:37:50
13	07:37:10	09:16:40	10:40:26	12:01:33	13:33:19	15:26:56	17:42:19	20:05:34	22:26:35	00:50:38	03:13:28	05:33:54
14	07:33:15	09:12:44	10:36:30	11:57:37	13:29:23	15:23:00	17:38:23	20:01:38	22:22:39	00:46:42	03:09:32	05:29:58
15	07:29:19	09:08:48	10:32:35	11:53:41	13:25:27	15:19:04	17:34:27	19:57:42	22:18:44	00:42:46	03:05:36	05:26:02
16	07:25:23	09:04:52	10:28:39	11:49:45	13:21:31	15:15:08	17:30:31	19:53:46	22:14:48	00:38:50	03:01:41	05:22:06
17	07:21:27	09:00:56	10:24:43	11:45:49	13:17:36	15:11:13	17:26:35	19:49:50	22:10:52	00:34:54	02:57:45	05:18:10
18	07:17:31	08:57:00	10:20:47	11:41:54	13:13:40	15:07:17	17:22:39	19:45:54	22:06:56	00:30:58	02:53:49	05:14:14
19	07:13:35	08:53:05	10:16:51	11:37:58	13:09:44	15:03:21	17:18:43	19:41:58	22:02:60	00:27:02	02:49:53	05:10:18
20	07:09:39	08:49:09	10:12:55	11:34:02	13:05:48	14:59:25	17:14:47	19:38:02	21:59:04	00:23:06	02:45:57	05:06:23
21	07:05:43	08:45:13	10:08:59	11:30:06	13:01:52	14:55:29	17:10:51	19:34:06	21:55:08	24:15:14	02:42:01	05:02:27
22	07:01:48	08:41:17	10:05:03	11:26:10	12:57:56	14:51:33	17:06:55	19:30:10	21:51:12	24:11:19	02:38:05	04:58:31
23	06:57:52	08:37:21	10:01:07	11:22:14	12:53:60	14:47:37	17:02:59	19:26:14	21:47:16	24:07:23	02:34:09	04:54:35
24	06:53:56	08:33:25	09:57:11	11:18:18	12:50:04	14:43:41	16:59:03	19:22:19	21:43:20	24:03:27	02:30:13	04:50:39
25	06:49:60	08:29:29	09:53:16	11:14:22	12:46:08	14:39:45	16:55:08	19:18:23	21:39:25	23:59:31	02:26:18	04:46:43
26	06:46:04	08:25:33	09:49:20	11:10:26	12:42:12	14:35:49	16:51:12	19:14:27	21:35:29	23:55:35	02:22:22	04:42:47
27	06:42:08	08:21:37	09:45:24	11:06:30	12:38:16	14:31:53	16:47:16	19:10:31	21:31:33	23:51:39	02:18:26	04:38:51
28	06:38:12	08:17:42	09:41:28	11:02:34	12:34:20	14:27:57	16:43:20	19:06:35	21:27:37	23:47:43	02:14:30	04:34:55
29	06:34:16	08:13:46	09:37:32	10:58:38	12:30:24	14:24:02	16:39:24	19:02:39	21:23:41	23:43:47	02:10:34	04:30:60
30	06:30:20	08:09:50	09:33:36	10:54:43	12:26:29	14:20:06	16:35:28	18:58:43	21:19:45	23:39:51	02:06:38	04:27:04
31	06:26:25	08:05:54	09:29:40	10:50:47	12:22:33	14:16:10	16:31:32	18:54:47	21:15:49	23:35:56	02:02:42	04:23:08

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:01:58	09:25:44	10:46:51	12:18:37	14:12:14	16:27:36	18:50:51	21:11:53	23:31:60	01:58:46	04:19:12	06:22:29
2	07:58:02	09:21:48	10:42:55	12:14:41	14:08:18	16:23:40	18:46:55	21:07:57	23:28:04	01:54:50	04:15:16	06:18:33
3	07:54:06	09:17:52	10:38:59	12:10:45	14:04:22	16:19:44	18:42:60	21:04:01	23:24:08	01:50:55	04:11:20	06:14:37
4	07:50:10	09:13:56	10:35:03	12:06:49	14:00:26	16:15:49	18:39:04	21:00:06	23:20:12	01:46:59	04:07:24	06:10:41
5	07:46:14	09:10:01	10:31:07	12:02:53	13:56:30	16:11:53	18:35:08	20:56:10	23:16:16	01:43:03	04:03:28	06:06:45
6	07:42:18	09:06:05	10:27:11	11:58:57	13:52:34	16:07:57	18:31:12	20:52:14	23:12:20	01:39:07	03:59:32	06:02:49
7	07:38:22	09:02:09	10:23:15	11:55:01	13:48:38	16:04:01	18:27:16	20:48:18	23:08:24	01:35:11	03:55:36	05:58:53
8	07:34:27	08:58:13	10:19:19	11:51:05	13:44:43	16:00:05	18:23:20	20:44:22	23:04:28	01:31:15	03:51:41	05:54:57
9	07:30:31	08:54:17	10:15:24	11:47:10	13:40:47	15:56:09	18:19:24	20:40:26	23:00:32	01:27:19	03:47:45	05:51:01
10	07:26:35	08:50:21	10:11:28	11:43:14	13:36:51	15:52:13	18:15:28	20:36:30	22:56:37	01:23:23	03:43:49	05:47:05
11	07:22:39	08:46:25	10:07:32	11:39:18	13:32:55	15:48:17	18:11:32	20:32:34	22:52:41	01:19:27	03:39:53	05:43:10
12	07:18:43	08:42:29	10:03:36	11:35:22	13:28:59	15:44:21	18:07:37	20:28:38	22:48:45	01:15:31	03:35:57	05:39:14
13	07:14:47	08:38:33	09:59:40	11:31:26	13:25:03	15:40:26	18:03:41	20:24:43	22:44:49	01:11:35	03:32:01	05:35:18
14	07:10:51	08:34:37	09:55:44	11:27:30	13:21:07	15:36:30	17:59:45	20:20:47	22:40:53	01:07:40	03:28:05	05:31:22
15	07:06:55	08:30:42	09:51:48	11:23:34	13:17:11	15:32:34	17:55:49	20:16:51	22:36:57	01:03:44	03:24:09	05:27:26
16	07:02:59	08:26:46	09:47:52	11:19:38	13:13:16	15:28:38	17:51:53	20:12:55	22:33:01	00:59:48	03:20:13	05:23:30
17	06:59:03	08:22:50	09:43:56	11:15:43	13:09:20	15:24:42	17:47:57	20:08:59	22:29:05	00:55:52	03:16:17	05:19:34
18	06:55:07	08:18:54	09:40:01	11:11:47	13:05:24	15:20:46	17:44:01	20:05:03	22:25:09	00:51:56	03:12:21	05:15:38
19	06:51:11	08:14:58	09:36:05	11:07:51	13:01:28	15:16:50	17:40:05	20:01:07	22:21:13	00:48:00	03:08:25	05:11:42
20	06:47:16	08:11:02	09:32:09	11:03:55	12:57:32	15:12:54	17:36:09	19:57:11	22:17:18	00:44:04	03:04:29	05:07:46
21	06:43:20	08:07:06	09:28:13	10:59:59	12:53:36	15:08:59	17:32:13	19.53:15	22:13:22	00:40:08	03:00:34	05:03:50
22	06:39:24	08:03:10	09:24:17	10:56:03	12:49:40	15:05:03	17:28:18	19:49:19	22:09:26	00:36:12	02:56:38	04:59:54
23	06:35:28	07:59:14	09:20.21	10:52:07	12:45:45	15:01:07	17:24:22	19:45:24	22:05:30	00:32:16	02:52:42	04:55:58
24	06:31:32	07:55:18	09:16:25	10:48:12	12:41:49	14:57:11	17:20:26	19:41:28	22:01:34	00:28:20	02:48:46	04:52:02
25	06:27:36	07:51:22	09:12:29	10:44:16	12:37:53	14:53:15	17:16:30	19:37:32	21:57:38	00:24:25	02:44:50	04:48:06
26	06:23:40	07:47:27	09:08:33	10:40:20	12:33:57	14:49:19	17:12:34	19:33:36	21:53:42	24:16:33	02:40:54	04:44:11
27	06:19:44	07:43:31	09:04:38	10:36:24	12:30:01	14:45:23	17:08:38	19:29:40	21:49:46	24:12:37	02:36:58	04:40:15
28	06:15:48	07:39:35	09:00:42	10:32:28	12:26:05	14:41:27	17:04:42	19:25:44	21:45:50	24:08:41	02:33:02	04:36:19
29	06:11:52	07:35:39	08:56:46	10:28:32	12:22:09	14:37:32	17:00:46	19:21:48	21:41:54	24:04:45	02:29:06	04:32:23

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:31:43	08:52:50	10:24:36	12:18:14	14:33:36	16:56:50	19:17:52	21:37:58	24:00:49	02:25:10	04:28:27	06:07:56
2	07:27:47	08:48:54	10:20:41	12:14:18	14:29:40	16:52:55	19:13:56	21:34:03	23:56:53	02:21:14	04:24:31	06:04:00
3	07:23:51	08:44:58	10:16:45	12:10:22	14:25:44	16:48:59	19:10:00	21:30:07	23:52:57	02:17:18	04:20:35	06:00:04
4	07:19:55	08:41:02	10:12:49	12:06:26	14:21:48	16:45:03	19:06:05	21:26:11	23:49:01	02:13:22	04:16:39	05:56:08
5	07:15:59	08:37:06	10:08:53	12:02:30	14:17:52	16:41:07	19:02:09	21:22:15	23:45:05	02:09:26	04:12:43	05:52:12
6	07:12:03	08:33:11	10:04:57	11:58:34	14:13:56	16:37:11	18:58:13	21:18:19	23:41:09	02:05:30	04:08:47	05:48:17
7	07:08:07	08:29:15	10:01:01	11:54:38	14:10:00	16:33:15	18:54:17	21:14:23	23:37:14	02:01:34	04:04:51	05:44:21
8	07:04:12	08:25:19	09:57:05	11:50:43	14:06:05	16:29:19	18:50:21	21:10:27	23:33:18	01:57:39	04:00:55	05:40:25
9	07:00:16	08:21:23	09:53:09	11:46:47	14:02:09	16:25:23	18:46:25	21:06:31	23:29:22	01:53:43	03:56:59	05:36:29
10	06:56:20	08:17:27	09:49:14	11:42:51	13:58:13	16:21:27	18:42:29	21:02:35	23:25:26	01:49:47	03:53:03	05:32:33
11	06:52:24	08:13:31	09:45:18	11:38:55	13:54:17	16:17:32	18:38:33	20:58:39	23:21:30	01:45:51	03:49:07	05:28:37
12	06:48:28	08:09:35	09:41:22	11:34:59	13:50:21	16:13:36	18:34:37	20:54:44	23:17:34	01:41:55	03:45:11	05:24:41
13	06:44:32	08:05:39	09:37:26	11:31:03	13:46:25	16:09:40	18:30:41	20:50:48	23:13:38	01:37:59	03:41:15	05:20:45
14	06:40:36	08:01:43	09:33:30	11:27:07	13:42:29	16:05:44	18:26:46	20:46:52	23:09:42	01:34:03	03:37:19	05:16:49
15	06:36:40	07:57:48	09:29:34	11:23:12	13:38:33	16:01:48	18:22:50	20:42:56	23:05:46	01:30:07	03:33:24	05:12:53
16	06:32:44	07:53:52	09:25:38	11:19:16	13:34:38	15:57:52	18:18:54	20:38:60	23:01:50	01:26:11	03:29:28	05:08:57
17	06:28:48	07:49:56	09:21:43	11:15:20	13:30:42	15:53:56	18:14:58	20:35:04	22:57:54	01:22:15	03:25:32	05:05:01
18	06:24:52	07:45:60	09:17:47	11:11:24	13:26:46	15:50:00	18:11:02	20:31:08	22:53:58	01:18:19	03:21:36	05:01:05
19	06:20:57	07:42:04	09:13:51	11:07:28	13:22:50	15:46:04	18:07:06	20:27:12	22:50:03	01:14:23	03:17:40	04:57:09
20	06:17:01	07:38:08	09:09:55	11:03:32	13:18:54	15:42:09	18:03:10	20:23:16	22:46:07	01:10:27	03:13:44	04:53:14
21	06:13:05	07:34:12	09:05:59	10:59:36	13:14:58	15:38:13	17:59:14	20:19:20	22:42:11	01:06:31	03:09:48	04:49:18
22	06:09:09	07:30:16	09:02:03	10:55:40	13:11:02	15:34:17	17:55:18	20:15:25	22:38:15	01:02:36	03:05:52	04:45:22
23	06:05:13	07:26:20	08:58:07	10:51:45	13:07:06	15:30:21	17:51:22	20:11:29	22:34:19	00:58:40	03:01:56	04:41:26
24	06:01:17	07:22:25	08:54:11	10:47:49	13:03:10	15:26:25	17:47:27	20:07:33	22:30:23	00:54:44	02:58:00	04:37:30
25	05:57:21	07:18:29	08:50:15	10:43:53	12:59:15	15:22:29	17:43:31	20:03:37	22:26:27	00:50:48	02:54:04	04:33:34
26	05:53:25	07:14:33	08:46:20	10:39:57	12:55:19	15:18:33	17:39:35	19:59:41	22:22:31	00:46:52	02:50:08	04:29:38
27	05:49:29	07:10:37	08:42:24	10:36:01	12:51:23	15:14:37	17:35:39	19:55:45	22:18:35	00:42:56	02:46:12	04:25:42
28	05:45:33	07:06:41	08:38:28	10:32:05	12:47:27	15:10:41	17:31:43	19:51:49	22:14:39	00:39:00	02:42:17	04:21:46
29	05:41:38	07:02:45	08:34:32	10:28:09	12:43:31	15:06:45	17:27:47	19:47:53	22:10:44	00:35:04	02:38:21	04:17:50
30	05:37:42	06:58:49	08:30:36	10:24:13	12:39:35	15:02:50	17:23:51	19:43:57	22:06:48	00:31:08	02:34:25	04:13:54
31	05:33:46	06:54:53	08:26:40	10:20:17	12:35:39	14:58:54	17:19:55	19:40:01	22:02:52	00:27:12	02:30:29	04:09:59

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घ. मि. से.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:50:57	08:22:44	10:16:22	12:31:43	14:54:58	17:15:59	19:36:06	21:58:56	00:23:16	02:26:33	04:06:03	05:29:50
2	06:47:01	08:18:48	10:12:26	12:27:47	14:51:02	17:12:04	19:32:10	21:54:60	24:15:25	02:22:37	04:02:07	05:25:54
3	06:43:06	08:14:52	10:08:30	12:23:52	14:47:06	17:08:08	19:28:14	21:51:04	24:11:29	02:18:41	03:58:11	05:21:58
4	06:39:10	08:10:57	10:04:34	12:19:56	14:43:10	17:04:12	19:24:18	21:47:08	24:07:33	02:14:45	03:54:15	05:18:02
5	06:35:14	08:07:01	10:00:38	12:15:60	14:39:14	17:00:16	19:20:22	21:43:12	24:03:37	02:10:49	03:50:19	05:14:06
6	06:31:18	08:03:05	09:56:42	12:12:04	14:35:18	16:56:20	19:16:26	21:39:16	23:59:41	02:06:53	03:46:23	05:10:10
7	06:27:22	07:59:09	09:52:46	12:08:08	14:31:22	16:52:24	19:12:30	21:35:20	23:55:45	02:02:58	03:42:27	05:06:14
8	06:23:26	07:55:13	09:48:50	12:04:12	14:27:26	16:48:28	19:08:34	21:31:25	23:51:49	01:59:02	03:38:31	05:02:18
9	06:19:30	07:51:17	09:44:54	12:00:16	14:23:31	16:44:32	19:04:38	21:27:29	23:47:53	01:55:06	03:34:35	04:58:23
10	06:15:34	07:47:21	09:40:58	11:56:20	14:19:35	16:40:36	19:00:42	21:23:33	23:43:58	01:51:10	03:30:40	04:54:27
11	06:11:38	07:43:25	09:37:02	11:52:24	14:15:39	16:36:40	18:56:47	21:19:37	23:40:02	01:47:14	03:26:44	04:50:31
12	06:07:42	07:39:29	09:33:06	11:48:28	14:11:43	16:32:45	18:52:51	21:15:41	23:36:06	01:43:18	03:22:48	04:46:35
13	06:03:46	07:35:33	09:29:11	11:44:32	14:07:47	16:28:49	18:48:55	21:11:45	23:32:10	01:39:22	03:18:52	04:42:39
14	05:59:51	07:31:37	09:25:15	11:40:37	14:03:51	16:24:53	18:44:59	21:07:49	23:28:14	01:35:26	03:14:56	04:38:43
15	05:55:55	07:27:41	09:21:19	11:36:41	13:59:55	16:20:57	18:41:03	21:03:53	23:24:18	01:31:31	03:11:00	04:34:47
16	05:51:59	07:23:45	09:17:23	11:32:45	13:55:59	16:17:01	18:37:07	20:59:57	23:20:22	01:27:35	03:07:04	04:30:51
17	05:48:03	07:19:50	09:13:27	11:28:49	13:52:03	16:13:05	18:33:11	20:56:02	23:16:26	01:23:39	03:03:08	04:26:55
18	05:44:07	07:15:54	09:09:31	11:24:53	13:48:07	16:09:09	18:29:15	20:52:06	23:12:31	01:19:43	02:59:13	04:22:59
19	05:40:11	07:11:58	09:05:35	11:20:57	13:44:12	16:05:13	18:25:19	20:48:10	23:08:35	01:15:47	02:55:17	04:19:04
20	05:36:15	07:08:02	09:01:39	11:17:01	13:40:16	16:01:17	18:21:23	20:44:14	23:04:39	01:11:51	02:51:21	04:15:08
21	05:32:19	07:04:06	08:57:43	11:13:05	13:36:20	15:57:21	18:17:28	20:40:18	23:00:43	01:07:55	02:47:25	04:11:12
22	05:28:23	07:00:10	08:53:47	11:09:09	13:32:24	15:53:26	18:13:32	20:36:22	22:56:47	01:03:59	02:43:29	04:07:16
23	05:24:27	06:56:14	08:49:51	11:05:13	13:28:28	15:49:30	18:09:36	20:32:26	22:52:51	01:00:04	02:39:33	04:03:20
24	05:20:31	06:52:18	08:45:55	11:01:17	13:24:32	15:45:34	18:05:40	20:28:30	22:48:55	00:56:08	02:35:37	03:59:24
25	05:16:35	06:48:22	08:41:59	10:57:21	13:20:36	15:41:38	18:01:44	20:24:35	22:44:60	00:52:12	02:31:41	03:55:28
26	05:12:39	06:44:26	08:38:03	10:53:25	13:16:40	15:37:42	17:57:48	20:20:39	22:41:04	00:48:16	02:27:46	03:51:32
27	05:08:44	06:40:30	08:34:07	10:49:30	13:12:44	15:33:46	17:53:52	20:16:43	22:37:08	00:44:20	02:23:50	03:47:36
28	05:04:48	06:36:34	08:30:11	10:45:34	13:08:48	15:29:50	17:49:56	20:12:47	22:33:12	00:40:24	02:19:54	03:43:40
29	05:00:52	06:32:38	08:26:16	10:41:38	13:04:52	15:25:54	17:46:00	20:08:51	22:29:16	00:36:28	02:15:58	03:39:45
30	04:56:56	06:28:42	08:22:20	10:37:42	13:00:57	15:21:58	17:42:05	20:04:55	22:25:20	00:32:33	02:12:02	03:35:49

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.
1	06:24:46	08:18:24	10:33:46	12:57:01	15:18:02	17:38:09	20:00:59	22:21:24	00:28:37	02:08:06	03:31:53	04:52:60
2	06:20:50	08:14:28	10:29:50	12:53:05	15:14:07	17:34:13	19:57:03	22:17:29	00:24:41	02:04:10	03:27:57	04:49:04
3	06:16:54	08:10:32	10:25:54	12:49:09	15:10:11	17:30:17	19:53:07	22:13:33	00:20:45	02:00:14	03:24:01	04:45:08
4	06:12:59	08:06:36	10:21:58	12:45:13	15:06:15	17:26:21	19:49:12	22:09:37	00:16:49	01:56:19	03:20:05	04:41:12
5	06:09:03	08:02:40	10:18:02	12:41:17	15:02:19	17:22:25	19:45:16	22:05:41	00:12:53	01:52:23	03:16:09	04:37:16
6	06:05:07	07:58:44	10:14:06	12:37:21	14:58:23	17:18:29	19:41:20	22:01:45	00:08:57	01:48:27	03:12:13	04:33:20
7	06:01:11	07:54:48	10:10:10	12:33:25	14:54:27	17:14:33	19:37:24	21:57:49	00:05:02	01:44:31	03:08:17	04:29:24
8	05:57:15	07:50:52	10:06:14	12:29:29	14:50:31	17:10:37	19:33:28	21:53:53	23:57:10	01:40:35	03:04:22	04:25:28
9	05:53:19	07:46:56	10:02:18	12:25:33	14:46:35	17:06:42	19:29:32	21:49:57	23:53:14	01:36:39	03:00:26	04:21:32
10	05:49:23	07:43:00	09:58:23	12:21:37	14:42:39	17:02:46	19:25:36	21:46:02	23:49:18	01:32:43	02:56:30	04:17:37
11	05:45:27	07:39:04	09:54:27	12:17:42	14:38:43	16:58:50	19:21:40	21:42:06	23:45:22	01:28:47	02:52:34	04:13:41
12	05:41:31	07:35:08	09:50:31	12:13:46	14:34:48	16:54:54	19:17:45	21:38:10	23:41:26	01:24:52	02:48:38	04:09:45
13	05:37:35	07:31:12	09:46:35	12:09:50	14:30:52	16:50:58	19:13:49	21:34:14	23:37:31	01:20:56	02:44:42	04:05:49
14	05:33:39	07:27:16	09:42:39	12:05:54	14:26:56	16:47:02	19:09:53	21:30:18	23:33:35	01:16:60	02:40:46	04:01:53
15	05:29:43	07:23:20	09:38:43	12:01:58	14:22:60	16:43:06	19:05:57	21:26:22	23:29:39	01:13:04	02:36:50	03:57:57
16	05:25:47	07:19:25	09:34:47	11:58:02	14:19:04	16:39:10	19:02:01	21:22:26	23:25:43	01:09:08	02:32:54	03:54:01
17	05:21:51	07:15:29	09:30:51	11:54:06	14:15:08	16:35:14	18:58:05	21:18:31	23:21:47	01:05:12	02:28:58	03:50:05
18	05:17:55	07:11:33	09:26:55	11:50:10	14:11:12	16:31:18	18:54:09	21:14:35	23:17:51	01:01:16	02:25:03	03:46:09
19	05:13:59	07:07:37	09:22:59	11:46:14	14:07:16	16:27:23	18:50:13	21:10:39	23:13:55	00:57:20	02:21:07	03:42:13
20	05:10:04	07:03:41	09:19:03	11:42:18	14:03:20	16:23:27	18:46:17	21:06:43	23:09:59	00:53:24	02:17:11	03:38:17
21	05:06:08	06:59:45	09:15:07	11:38:23	13:59:24	16:19:31	18:42:22	21:02:47	23:06:04	00:49:29	02:13:15	03:34:21
22	05:02:12	06:55:49	09:11:12	11:34:27	13:55:29	16:15:35	18:38:26	20:58:51	23:02:08	00:45:33	02:09:19	03:30:26
23	04:58:16	06:51:53	09:07:16	11:30:31	13:51:33	16:11:39	18:34:30	20:54:55	22:58:12	00:41:37	02:05:23	03:26:30
24	04:54:20	06:47:57	09:03:20	11:26:35	13:47:37	16:07:43	18:30:34	20:50:59	22:54:16	00:37:41	02:01:27	03:22:34
25	04:50:24	06:44:01	08:59:24	11:22:39	13:43:41	16:03:47	18:26:38	20:47:03	22:50:20	00:33:45	01:57:31	03:18:38
26	04:46:28	06:40:05	08:55:28	11:18:43	13:39:45	15:59:51	18:22:42	20:43:08	22:46:24	00:29:49	01:53:35	03:14:42
27	04:42:32	06:36:09	08:51:32	11:14:47	13:35:49	15:55:55	18:18:46	20:39:12	22:42:28	00:25:53	01:49:39	03:10:46
28	04:38:36	06:32:14	08:47:36	11:10:51	13:31:53	15:51:59	18:14:50	20:35:16	22:38:32	00:21:57	01:45:44	03:06:50
29	04:34:40	06:28:18	08:43:40	11:06:55	13:27:57	15:48:04	18:10:54	20:31:20	22:34:36	00:18:01	01:41:48	03:02:54
30	04:30:44	06:24:22	08:39:44	11:02:59	13:24:01	15:44:08	18:06:59	20:27:24	22:30:41	00:14:06	01:37:52	02:58:58
31	04:26:49	06:20:26	08:35:48	10:59:04	13:20:05	15:40:12	18:03:03	20:23:28	22:26:45	00:10:10	01:33:56	02:55:02

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

जून ता.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.
1	06:16:30	08:31:52	10:55:08	13:16:10	15:36:16	17:59:07	20:19:32	22:22:49	00:06:14	01:29:60	02:51:07	04:22:53
2	06:12:34	08:27:57	10:51:12	13:12:14	15:32:20	17:55:11	20:15:36	22:18:53	00:02:18	01:26:04	02:47:11	04:18:57
3	06:08:38	08:24:01	10:47:16	13:08:18	15:28:24	17:51:15	20:11:40	22:14:57	23:54:26	01:22:08	02:43:15	04:15:01
4	06:04:42	08:20:05	10:43:20	13:04:22	15:24:28	17:47:19	20:07:44	22:11:01	23:50:30	01:18:12	02:39:19	04:11:05
5	06:00:46	08:16:09	10:39:24	13:00:26	15:20:32	17:43:23	20:03:49	22:07:05	23:46:34	01:14:16	02:35:23	04:07:09
6	05:56:51	08:12:13	10:35:28	12:56:30	15:16:36	17:39:27	19:59:53	22:03:09	23:42:38	01:10:20	02:31:27	04:03:13
7	05:52:55	08:08:17	10:31:32	12:52:34	15:12:40	17:35:31	19:55:57	21:59:13	23:38:42	01:06:24	02:27:31	03:59:17
8	05:48:59	08:04:21	10:27:36	12:48:38	15:08:45	17:31:35	19:52:01	21:55:17	23:34:46	01:02:29	02:23:35	03:55:21
9	05:45:03	08:00:25	10:23:40	12:44:42	15:04:49	17:27:39	19:48:05	21:51:21	23:30:50	00:58:33	02:19:39	03:51:26
10	05:41:07	07:56:29	10:19:45	12:40:46	15:00:53	17:23:44	19:44:09	21:47:25	23:26:55	00:54:37	02:15:43	03:47:30
11	05:37:11	07:52:34	10:15:49	12:36:51	14:56:57	17:19:48	19:40:13	21:43:30	23:22:59	00:50:41	02:11:48	03:43:34
12	05:33:15	07:48:38	10:11:53	12:32:55	14:53:01	17:15:52	19:36:17	21:39:34	23:19:03	00:46:45	02:07:52	03:39:38
13	05:29:19	07:44:42	10:07:57	12:28:59	14:49:05	17:11:56	19:32:21	21:35:38	23:15:07	00:42:49	02:03:56	03:35:42
14	05:25:24	07:40:46	10:04:01	12:25:03	14:45:09	17:07:60	19:28:25	21:31:42	23:11:11	00:38:53	01:59:60	03:31:46
15	05:21:28	07:36:50	10:00:05	12:21:07	14:41:13	17:04:04	19:24:29	21:27:46	23:07:15	00:34:57	01:56:04	03:27:50
16	05:17:32	07:32:54	09:56:09	12:17:11	14:37:17	17:00:08	19:20:33	21:23:50	23:03:19	00:31:01	01:52:08	03:23:54
17	05:13:36	07:28:58	09:52:13	12:13:15	14:33:21	16:56:12	19:16:37	21:19:54	22:59:23	00:27:05	01:48:12	03:19:59
18	05:09:40	07:25:02	09:48:17	12:09:19	14:29:26	16:52:16	19:12:42	21:15:58	22:55:27	00:23:09	01:44:16	03:16:03
19	05:05:44	07:21:07	09:44:22	12:05:23	14:25:30	16:48:20	19:08:46	21:12:02	22:51:31	00:19:14	01:40:20	03:12:07
20	05:01:48	07:17:11	09:40:26	12:01:27	14:21:34	16:44:24	19:04:50	21:08:06	22:47:35	00:15:18	01:36:25	03:08:11
21	04:57:52	07:13:15	09:36:30	11:57:32	14:17:38	16:40:29	19:00:54	21:04:10	22:43:39	00:11:22	01:32:29	03:04:15
22	04:53:57	07:09:19	09:32:34	11:53:36	14:13:42	16:36:33	18:56:58	21:00:14	22:39:43	00:07:26	01:28:33	03:00:19
23	04:50:01	07:05:23	09:28:38	11:49:40	14:09:46	16:32:37	18:53:02	20:56:18	22:35:48	00:03:30	01:24:37	02:56:23
24	04:46:05	07:01:27	09:24:42	11:45:44	14:05:50	16:28:41	18:49:06	20:52:22	22:31:52	23:55:38	01:20:41	02:52:28
25	04:42:09	06:57:31	09:20:46	11:41:48	14:01:54	16:24:45	18:45:10	20:48:26	22:27:56	23:51:42	01:16:45	02:48:32
26	04:38:13	06:53:35	09:16:50	11:37:52	13:57:58	16:20:49	18:41:14	20:44:30	22:23:60	23:47:46	01:12:49	02:44:36
27	04:34:17	06:49:40	09:12:54	11:33:56	13:54:02	16:16:53	18:37:18	20:40:34	22:20:04	23:43:50	01:08:53	02:40:40
28	04:30:21	06:45:44	09:08:59	11:30:00	13:50:07	16:12:57	18:33:22	20:36:39	22:16:08	23:39:54	01:04:58	02:36:44
29	04:26:26	06:41:48	09:05:03	11:26:04	13:46:11	16:09:01	18:29:26	20:32:43	22:12:12	23:35:59	01:01:02	02:32:48
30	04:22:30	06:37:52	09:01:07	11:22:08	13:42:15	16:05:05	18:25:30	20:28:47	22:08:16	23:32:03	00:57:06	02:28:52

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:33:56	08:57:11	11:18:13	13:38:19	16:01:09	18:21:34	20:24:51	22:04:20	23:28:07	00:53:10	02:24:56	04:18:34
2	06:30:00	08:53:15	11:14:17	13:34:23	15:57:13	18:17:38	20:20:55	22:00:24	23:24:11	00:49:14	02:21:01	04:14:38
3	06:26:04	08:49:19	11:10:21	13:30:27	15:53:18	18:13:42	20:16:59	21:56:28	23:20:15	00:45:18	02:17:05	04:10:42
4	06:22:08	08:45:23	11:06:25	13:26:31	15:49:22	18:09:47	20:13:03	21:52:32	23:16:19	00:41:22	02:13:09	04:06:46
5	06:18:13	08:41:27	11:02:29	13:22:35	15:45:26	18:05:51	20:09:07	21:48:36	23:12:23	00:37:26	02:09:13	04:02:50
6	06:14:17	08:37:31	10:58:33	13:18:39	15:41:30	18:01:55	20:05:11	21:44:40	23:08:27	00:33:30	02:05:17	03:58:55
7	06:10:21	08:33:36	10:54:37	13:14:43	15:37:34	17:57:59	20:01:15	21:40:44	23:04:31	00:29:35	02:01:21	03:54:59
8	06:06:25	08:29:40	10:50:41	13:10:47	15:33:38	17:54:03	19:57:19	21:36:49	23:00:35	00:25:39	01:57:25	03:51:03
9	06:02:29	08:25:44	10:46:45	13:06:52	15:29:42	17:50:07	19:53:23	21:32:53	22:56:40	00:21:43	01:53:30	03:47:07
10	05:58:33	08:21:48	10:42:50	13:02:56	15:25:46	17:46:11	19:49:27	21:28:57	22:52:44	00:17:47	01:49:34	03:43:11
11	05:54:37	08:17:52	10:38:54	12:58:60	15:21:50	17:42:15	19:45:31	21:25:01	22:48:48	00:13:51	01:45:38	03:39:15
12	05:50:41	08:13:56	10:34:58	12:55:04	15:17:54	17:38:19	19:41:35	21:21:05	22:44:52	00:09:55	01:41:42	03:35:19
13	05:46:46	08:10:00	10:31:02	12:51:08	15:13:58	17:34:23	19:37:39	21:17:09	22:40:56	00:05:59	01:37:46	03:31:24
14	05:42:50	08:06:04	10:27:06	12:47:12	15:10:02	17:30:27	19:33:43	21:13:13	22:36:60	00:02:03	01:33:50	03:27:28
15	05:38:54	08:02:08	10:23:10	12:43:16	15:06:07	17:26:31	19:29:48	21:09:17	22:33:04	23:54:12	01:29:54	03:23:32
16	05:34:58	07:58:13	10:19:14	12:39:20	15:02:11	17:22:35	19:25:52	21:05:21	22:29:08	23:50:16	01:25:58	03:19:36
17	05:31:02	07:54:17	10:15:18	12:35:24	14:58:15	17:18:39	19:21:56	21:01:25	22:25:12	23:46:20	01:22:03	03:15:40
18	05:27:06	07:50:21	10:11:22	12:31:28	14:54:19	17:14:44	19:17:60	20:57:29	22:21:16	23:42:24	01:18:07	03:11:44
19	05:23:10	07:46:25	10:07:26	12:27:33	14:50:23	17:10:48	19:14:04	20:53:33	22:17:20	23:38:28	01:14:11	03:07:48
20	05:19:14	07:42:29	10:03:31	12:23:37	14:46:27	17:06:52	19:10:08	20:49:37	22:13:25	23:34:32	01:10:15	03:03:52
21	05:15:19	07:38:33	09:59:35	12:19:41	14:42:31	17:02:56	19:06:12	20:45:42	22:09:29	23:30:36	01:06:19	02:59:57
22	05:11:23	07:34:37	09:55:39	12:15:45	14:38:35	16:58:60	19:02:16	20:41:46	22:05:33	23:26:40	01:02:23	02:56:01
23	05:07:27	07:30:41	09:51:43	12:11:49	14:34:39	16:55:04	18:58:20	20:37:50	22:01:37	23:22:44	00:58:27	02:52:05
24	05:03:31	07:26:45	09:47:47	12:07:53	14:30:43	16:51:08	18:54:24	20:33:54	21:57:41	23:18:49	00:54:31	02:48:09
25	04:59:35	07:22:49	09:43:51	12:03:57	14:26:47	16:47:12	18:50:28	20:29:58	21:53:45	23:14:53	00:50:36	02:44:13
26	04:55:39	07:18:54	09:39:55	12:00:01	14:22:52	16:43:16	18:46:32	20:26:02	21:49:49	23:10:57	00:46:40	02:40:17
27	04:51:43	07:14:58	09:35:59	11:56:05	14:18:56	16:39:20	18:42:37	20:22:06	21:45:53	23:07:01	00:42:44	02:36:21
28	04:47:47	07:11:02	09:32:03	11:52:09	14:14:60	16:35:24	18:38:41	20:18:10	21:41:57	23:03:05	00:38:48	02:32:25
29	04:43:51	07:07:06	09:28:07	11:48:14	14:11:04	16:31:29	18:34:45	20:14:14	21:38:01	22:59:09	00:34:52	02:28:29
30	04:39:55	07:03:10	09:24:12	11:44:18	14:07:08	16:27:33	18:30:49	20:10:18	21:34:05	22:55:13	00:30:56	02:24:34
31	04:35:60	06:59:14	09:20:16	11:40:22	14:03:12	16:23:37	18:26:53	20:06:23	21:30:10	22:51:17	00:27:00	02:20:38

दैनिक लग्न सारणी (अगस्त) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:55:18	09:16:20	11:36:26	13:59:16	16:19:41	18:22:57	20:02:27	21:26:14	22:47:21	00:23:04	02:16:42	04:32:04
2	06:51:22	09:12:24	11:32:30	13:55:20	16:15:45	18:19:01	19:58:31	21:22:18	22:43:25	00:19:08	02:12:46	04:28:08
3	06:47:26	09:08:28	11:28:34	13:51:24	16:11:49	18:15:05	19:54:35	21:18:22	22:39:29	00:15:12	02:08:50	04:24:12
4	06:43:30	09:04:32	11:24:38	13:47:29	16:07:53	18:11:09	19:50:39	21:14:26	22:35:34	00:11:16	02:04:54	04:20:16
5	06:39:35	09:00:36	11:20:42	13:43:33	16:03:57	18:07:14	19:46:43	21:10:30	22:31:38	00:07:21	02:00:58	04:16:20
6	06:35:39	08:56:40	11:16:46	13:39:37	16:00:01	18:03:18	19:42:47	21:06:34	22:27:42	00:03:25	01:57:02	04:12:24
7	06:31:43	08:52:44	11:12:50	13:35:41	15:56:06	17:59:22	19:38:51	21:02:38	22:23:46	23:55:33	01:53:06	04:08:28
8	06:27:47	08:48:48	11:08:55	13:31:45	15:52:10	17:55:26	19:34:55	20:58:42	22:19:50	23:51:37	01:49:10	04:04:32
9	06:23:51	08:44:53	11:04:59	13:27:49	15:48:14	17:51:30	19:30:59	20:54:46	22:15:54	23:47:41	01:45:14	04:00:36
10	06:19:55	08:40:57	11:01:03	13:23:53	15:44:18	17:47:34	19:27:04	20:50:51	22:11:58	23:43:45	01:41:18	03:56:40
11	06:15:59	08:37:01	10:57:07	13:19:57	15:40:22	17:43:38	19:23:08	20:46:55	22:08:02	23:39:49	01:37:23	03:52:45
12	06:12:03	08:33:05	10:53:11	13:16:01	15:36:26	17:39:42	19:19:12	20:42:59	22:04:06	23:35:53	01:33:27	03:48:49
13	06:08:07	08:29:09	10:49:15	13:12:06	15:32:30	17:35:47	19:15:16	20:39:03	22:00:10	23:31:57	01:29:31	03:44:53
14	06:04:11	08:25:13	10:45:19	13:08:10	15:28:34	17:31:51	19:11:20	20:35:07	21:56:14	23:28:01	01:25:35	03:40:57
15	06:00:16	08:21:17	10:41:23	13:04:14	15:24:39	17:27:55	19:07:24	20:31:11	21:52:18	23:24:05	01:21:39	03:37:01
16	05:56:20	08:17:21	10:37:27	13:00:18	15:20:43	17:23:59	19:03:28	20:27:15	21:48:23	23:20:09	01:17:43	03:33:05
17	05:52:24	08:13:25	10:33:32	12:56:22	15:16:47	17:20:03	18:59:32	20:23:19	21:44:27	23:16:13	01:13:47	03:29:09
18	05:48:28	08:09:29	10:29:36	12:52:26	15:12:51	17:16:07	18:55:37	20:19:23	21:40:31	23:12:18	01:09:51	03:25:13
19	05:44:32	08:05:34	10:25:40	12:48:30	15:08:55	17:12:11	18:51:41	20:15:27	21:36:35	23:08:22	01:05:55	03:21:17
20	05:40:36	08:01:38	10:21:44	12:44:34	15:04:59	17:08:16	18:47:45	20:11:32	21:32:39	23:04:26	01:01:59	03:17:21
21	05:36:40	07:57:42	10:17:48	12:40:38	15:01:03	17:04:20	18:43:49	20:07:36	21:28:43	23:00:30	00:58:03	03:13:25
22	05:32:44	07:53:46	10:13:52	12:36:43	14:57:08	17:00:24	18:39:53	20:03:40	21:24:47	22:56:34	00:54:07	03:09:29
23	05:28:48	07:49:50	10:09:56	12:32:47	14:53:12	16:56:28	18:35:57	19:59:44	21:20:51	22:52:38	00:50:11	03:05:34
24	05:24:52	07:45:54	10:06:00	12:28:51	14:49:16	16:52:32	18:32:01	19:55:48	21:16:55	22:48:42	00:46:15	03:01:38
25	05:20:56	07:41:58	10:02:04	12:24:55	14:45:20	16:48:36	18:28:05	19:51:52	21:12:59	22:44:46	00:42:19	02:57:42
26	05:17:01	07:38:02	09:58:08	12:20:59	14:41:24	16:44:40	18:24:10	19:47:56	21:09:03	22:40:50	00:38:23	02:53:46
27	05:13:05	07:34:06	09:54:13	12:17:03	14:37:28	16:40:45	18:20:14	19:44:00	21:05:07	22:36:54	00:34:27	02:49:50
28	05:09:09	07:30:10	09:50:17	12:13:07	14:33:32	16:36:49	18:16:18	19:40:04	21:01:11	22:32:58	00:30:32	02:45:54
29	05:05:13	07:26:15	09:46:21	12:09:11	14:29:37	16:32:53	18:12:22	19:36:09	20:57:16	22:29:02	00:26:36	02:41:58
30	05:01:17	07:22:19	09:42:25	12:05:16	14:25:41	16:28:57	18:08:26	19:32:13	20:53:20	22:25:06	00:22:40	02:38:02
31	04:57:21	07:18:23	09:38:29	12:01:20	14:21:45	16:25:01	18:04:30	19:28:17	20:49:24	22:21:10	00:18:44	02:34:06

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

सितम्बर ता.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.
1	07:14:27	09:34:33	11:57:24	14:17:49	16:21:05	18:00:34	19:24:21	20:45:28	22:17:14	00:14:48	02:30:10	04:53:25
2	07:10:31	09:30:37	11:53:28	14:13:53	16:17:09	17:56:38	19:20:25	20:41:32	22:13:18	00:10:52	02:26:14	04:49:29
3	07:06:35	09:26:41	11:49:32	14:09:57	16:13:14	17:52:43	19:16:29	20:37:36	22:09:22	00:06:56	02:22:18	04:45:33
4	07:02:39	09:22:45	11:45:36	14:06:01	16:09:18	17:48:47	19:12:33	20:33:40	22:05:27	00:02:60	02:18:22	04:41:37
5	06:58:43	09:18:50	11:41:40	14:02:05	16:05:22	17:44:51	19:08:37	20:29:44	22:01:31	23:55:08	02:14:26	04:37:41
6	06:54:47	09:14:54	11:37:44	13:58:10	16:01:26	17:40:55	19:04:41	20:25:48	21:57:35	23:51:12	02:10:31	04:33:46
7	06:50:51	09:10:58	11:33:49	13:54:14	15:57:30	17:36:59	19:00:45	20:21:52	21:53:39	23:47:16	02:06:35	04:29:50
8	06:46:56	09:07:02	11:29:53	13:50:18	15:53:34	17:33:03	18:56:50	20:17:56	21:49:43	23:43:20	02:02:39	04:25:54
9	06:42:60	09:03:06	11:25:57	13:46:22	15:49:38	17:29:07	18:52:54	20:14:00	21:45:47	23:39:24	01:58:43	04:21:58
10	06:39:04	08:59:10	11:22:01	13:42:26	15:45:42	17:25:11	18:48:58	20:10:05	21:41:51	23:35:28	01:54:47	04:18:02
11	06:35:08	08:55:14	11:18:05	13:38:30	15:41:47	17:21:16	18:45:02	20:06:09	21:37:55	23:31:32	01:50:51	04:14:06
12	06:31:12	08:51:18	11:14:09	13:34:34	15:37:51	17:17:20	18:41:06	20:02:13	21:33:59	23:27:37	01:46:55	04:10:10
13	06:27:16	08:47:22	11:10:13	13:30:39	15:33:55	17:13:24	18:37:10	19:58:17	21:30:03	23:23:41	01:42:59	04:06:14
14	06:23:20	08:43:27	11:06:17	13:26:43	15:29:59	17:09:28	18:33:14	19:54:21	21:26:07	23:19:45	01:39:03	04:02:18
15	06:19:24	08:39:31	11:02:21	13:22:47	15:26:03	17:05:32	18:29:18	19:50:25	21:22:11	23:15:49	01:35:07	03:58:22
16	06:15:28	08:35:35	10:58:26	13:18:51	15:22:07	17:01:36	18:25:22	19:46:29	21:18:15	23:11:53	01:31:11	03:54:27
17	06:11:32	08:31:39	10:54:30	13:14:55	15:18:11	16:57:40	18:21:26	19:42:33	21:14:19	23:07:57	01:27:15	03:50:31
18	06:07:37	08:27:43	10:50:34	13 10:59	15:14:15	16:53:44	18:17:31	19:38:37	21:10:24	23:04:01	01:23:20	03:46:35
19	06:03:41	08:23:47	10:46:38	13:07:03	15:10:20	16:49:48	18:13:35	19:34:41	21:06:28	23:00:05	01:19:24	03:42:39
20	05:59:45	08:19:51	10:42:42	13:03:07	15:06:24	16:45:53	18:09:39	19:30:45	21:02:32	22:56:09	01:15:28	03:38:43
21	05:55:49	08:15:55	10:38:46	12:59:11	15:02:28	16:41:57	18:05:43	19:26:49	20:58:36	22:52:13	01:11:32	03:34:47
22	05:51:53	08:11:59	10:34:50	12:55:16	14:58:32	16:38:01	18:01:47	19:22:54	20:54:40	22:48:17	01:07:36	03:30:51
23	05:47:57	08:08:03	10:30:54	12:51:20	14:54:36	16:34:05	17:57:51	19:18:58	20:50:44	22:44:21	01:03:40	03:26:55
24	05:44:01	08:04:08	10:26:58	12:47:24	14:50:40	16:30:09	17:53:55	19:15:02	20:46:48	22:40:26	00:59:44	03:22:59
25	05:40:05	08:00:12	10:23:02	12:43:28	14:46:44	16:26:13	17:49:59	19:11:06	20:42:52	22:36:30	00:55:48	03:19:03
26	05:36:09	07:56:16	10:19:07	12:39:32	14:42:48	16:22:17	17:46:03	19:07:10	20:38:56	22:32:34	00:51:52	03:15:08
27	05:32:13	07:52:20	10:15:11	12:35:36	14:38:52	16:18:21	17:42:07	19:03:14	20:35:00	22:28:38	00:47:56	03:11:12
28	05:28:18	07:48:24	10:11:15	12:31:40	14:34:57	16:14:25	17:38:11	18:59:18	20:31:04	22:24:42	00:44:01	03:07:16
29	05:24:22	07:44:28	10:07:19	12:27:44	14:31:01	16:10:29	17:34:16	18:55:22	20:27:09	22:20:46	00:40:05	03:03:20
30	05:20:26	07:40:32	10:03:23	12:23:48	14:27:05	16:06:34	17:30:20	18:51:26	20:23:13	22:16:50	00:36:09	02:59:24

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टे. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	07:36:36	09:59:27	12:19:52	14:23:09	16:02:38	17:26:24	18:47:30	20:19:17	22:12:54	00:32:13	02:55:28	05:16:30
2	07:32:40	09:55:31	12:15:57	14:19:13	15:58:42	17:22:28	18:43:35	20:15:21	22:08:58	00:28:17	02:51:32	05:12:34
3	07:28:44	09:51:35	12:12:01	14:15:17	15:54:46	17:18:32	18:39:39	20:11:25	22:05:03	00:24:21	02:47:36	05:08:38
4	07:24:49	09:47:39	12:08:05	14:11:21	15:50:50	17:14:36	18:35:43	20:07:29	22:01:07	00:20:25	02:43:40	05:04:42
5	07:20:53	09:43:43	12:04:09	14:07:25	15:46:54	17:10:40	18:31:47	20:03:33	21:57:11	00:16:29	02:39:44	05:00:46
6	07:16:57	09:39:48	12:00:13	14:03:29	15:42:58	17:06:44	18:27:51	19:59:37	21:53:15	24:08:38	02:35:49	04:56:50
7	07:13:01	09:35:52	11:56:17	13:59:33	15:39:02	17:02:48	18:23:55	19:55:41	21:49:19	24:04:42	02:31:53	04:52:54
8	07:09:05	09:31:56	11:52:21	13:55:37	15:35:06	16:58:52	18:19:59	19:51:46	21:45:23	24:00:46	02:27:57	04:48:59
9	07:05:09	09:27:60	11:48:25	13:51:41	15:31:10	16:54:57	18:16:03	19:47:50	21:41:27	23:56:50	02:24:01	04:45:03
10	07:01:13	09:24:04	11:44:29	13:47:45	15:27:14	16:51:01	18:12:07	19:43:54	21:37:31	23:52:54	02:20:05	04:41:07
11	06:57:17	09:20:08	11:40:33	13:43:50	15:23:18	16:47:05	18:08:12	19:39:58	21:33:36	23:48:58	02:16:09	04:37:11
12	06:53:21	09:16:12	11:36:37	13:39:54	15:19:23	16:43:09	18:04:16	19:36:02	21:29:40	23:45:02	02:12:13	04:33:15
13	06:49:25	09:12:16	11:32:41	13:35:58	15:15:27	16:39:13	18:00:20	19:32:06	21:25:44	23:41:06	02:08:17	04:29:19
14	06:45:30	09:08:20	11:28:45	13:32:02	15:11:31	16:35:17	17:56:24	19:28:10	21:21:48	23:37:11	02:04:21	04:25:23
15	06:41:34	09:04:24	11:24:50	13:28:06	15:07:35	16:31:21	17:52:28	19:24:15	21:17:52	23:33:15	02:00:26	04:21:27
16	06:37:38	09:00:28	11:20:54	13:24:10	15:03:39	16:27:25	17:48:32	19:20:19	21:13:56	23:29:19	01:56:30	04:17:31
17	06:33:42	08:56:32	11:16:58	13:20:14	14:59:43	16:23:29	17:44:36	19:16:23	21:10:00	23:25:23	01:52:34	04:13:36
18	06:29:46	08:52:37	11:13:02	13:16:18	14:55:47	16:19:33	17:40:40	19:12:27	21:06:05	23:21:27	01:48:38	04:09:40
19	06:25:50	08:48:41	11:09:06	13:12:22	14:51:51	16:15:37	17:36:44	19:08:31	21:02:09	23:17:31	01:44:42	04:05:44
20	06:21:54	08:44:45	11:05:10	13:08:26	14:47:55	16:11:42	17:32:49	19:04:35	20:58:13	23:13:35	01:40:46	04:01:48
21	06:17:58	08:40:49	11:01:14	13:04:30	14:43:59	16:07:46	17:28:53	19:00:39	20:54:17	23:09:39	01:36:50	03:57:52
22	06:14:02	08:36:53	10:57:18	13:00:34	14:40:03	16:03:50	17:24:57	18:56:43	20:50:21	23:05:44	01:32:54	03:53:56
23	06:10:06	08:32:57	10:53:22	12:56:38	14:36:07	15:59:54	17:21:01	18:52:48	20:46:25	23:01:48	01:28:58	03:50:00
24	06:06:10	08:29:01	10:49:26	12:52:42	14:32:11	15:55:58	17:17:05	18:48:52	20:42:29	22:57:52	01:25:03	03:46:04
25	06:02:15	08:25:05	10:45:30	12:48:46	14:28:15	15:52:02	17:13:09	18:44:56	20:38:34	22:53:56	01:21:07	03:42:08
26	05:58:19	08:21:09	10:41:34	12:44:50	14:24:19	15:48:06	17:09:13	18:41:00	20:34:38	22:50:00	01:17:11	03:38:12
27	05:54:23	08:17:13	10:37:38	12:40:54	14:20:24	15:44:10	17:05:17	18:37:04	20:30:42	22:46:04	01:13:15	03:34:17
28	05:50:27	08:13:17	10:33:42	12:36:58	14:16:28	15:40:14	17:01:22	18:33:08	20:26:46	22:42:08	01:09:19	03:30:21
29	05:46:31	08:09:21	10:29:46	12:33:03	14:12:32	15:36:18	16:57:26	18:29:12	20:22:50	22:38:12	01:05:23	03:26:25
30	05:42:35	08:05:26	10:25:50	12:29:07	14:08:36	15:32:22	16:53:30	18:25:17	20:18:54	22:34:17	01:01:27	03:22:29
31	05:38:39	08:01:30	10:21:55	12:25:11	14:04:40	15:28:27	16:49:34	18:21:21	20:14:58	22:30:21	00:57:31	03:18:33

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

नवम्बर ता.	तुला घ. मि. सै.	वृश्चिक घ. मि. सै.	धनु घ. मि. सै.	मकर घ. मि. सै.	कुम्भ घ. मि. सै.	मीन घ. मि. सै.	मेष घ. मि. सै.	वृष घ. मि. सै.	मिथुन घ. मि. सै.	कर्क घ. मि. सै.	सिंह घ. मि. सै.	कन्या घ. मि. सै.
	07:57:34	10:17:59	12:21:15	14:00:44	15:24:31	16:45:38	18:17:25	20:11:03	22:26:25	00:53:35	03:14:37	05:34:43
2	07:53:38	10:14:03	12:17:19	13:56:48	15:20:35	16:41:42	18:13:29	20:07:07	22:22:29	00:49:40	03:10:41	05:30:47
3	07:49:42	10:10:07	12:13:23	13:52:52	15:16:39	16:37:46	18:09:33	20:03:11	22:18:33	00:45:44	03:06:45	05:26:51
4	07:45:46	10:06:11	12:09:27	13:48:56	15:12:43	16:33:50	18:05:37	19:59:15	22:14:37	00:41:48	03:02:49	05:22:56
5	07:41:50	10:02:15	12:05:31	13:45:00	15:08:47	16:29:54	18:01:41	19:55:19	22:10:41	00:37:52	02:58:53	05:18:60
6	07:37:54	09:58:19	12:01:35	13:41:04	15:04:51	16:25:59	17:57:46	19:51:23	22:06:45	00:33:56	02:54:58	05:15:04
7	07:33:58	09:54:23	11:57:39	13:37:08	15:00:55	16:22:03	17:53:50	19:47:27	22:02:50	00:30:00	02:51:02	05:11:08
8	07:30:02	09:50:27	11:53:43	13:33:12	14:56:59	16:18:07	17:49:54	19:43:32	21:58:54	00:26:04	02:47:06	05:07:12
9	07:26:06	09:46:31	11:49:47	13:29:16	14:53:03	16:14:11	17:45:58	19:39:36	21:54:58	24:18:12	02:43:10	05:03:16
10	07:22:11	09:42:35	11:45:51	13:25:21	14:49:07	16:10:15	17:42:02	19:35:40	21:51:02	24:14:16	02:39:14	04:59:20
1	07:18:15	09:38:39	11:41:55	13:21:25	14:45:12	16:06:19	17:38:06	19:31:44	21:47:06	24:10:21	02:35:18	04:55:24
12	07:14:19	09:34:43	11:37:59	13:17:29	14:41:16	16:02:23	17:34:10	19:27:48	21:43:10	24:06:25	02:31:22	04:51:28
13	07:10:23	09:30:47	11:34:03	13:13:33	14:37:20	15:58:27	17:30:14	19:23:52	21:39:14	24:02:29	02:27:26	04:47:32
14	07:06:27	09:26:52	11:30:08	13:09:37	14:33:24	15:54:31	17:26:19	19:19:56	21:35:18	23:58:33	02:23:30	04:43:37
15	07:02:31	09:22:56	11:26:12	13:05:41	14:29:28	15:50:36	17:22:23	19:16:00	21:31:22	23:54:37	02:19:34	04:39:41
16	06:58:35	09:18:60	11:22:16	13:01:45	14:25:32	15:46:40	17:18:27	19:12:04	21:27:27	23:50:41	02:15:39	04:35:45
17	06:54:39	09:15:04	11:18:20	12:57:49	14:21:36	15:42:44	17:14:31	19:08:09	21:23:31	23:46:45	02:11:43	04:31:49
18	06:50:43	09:11:08	11:14:24	12:53:53	14:17:40	15:38:48	17:10:35	19:04:13	21:19:35	23:42:49	02:07:47	04:27:53
19	06:46:47	09:07:12	11:10:28	12:49:57	14:13:44	15:34:52	17:06:39	19:00:17	21:15:39	23:38:53	02:03:51	04:23:57
20	06:42:51	09:03:16	11:06:32	12:46:01	14:09:48	15:30:56	17:02:43	18:56:21	21:11:43	23:34:58	01:59:55	04:20:01
2	06:38:56	08:59:20	11:02:36	12:42:05	14:05:53	15:27:00	16:58:47	18:52:25	21:07:47	23:31:02	01:55:59	04:16:05
22	06:34:60	08:55:24	10:58:40	12:38:10	14:01:57	15:23:04	16:54:51	18:48:29	21:03:51	23:27:06	01:52:03	04:12:09
23	06:31:04	08:51:28	10:54:44	12:34:14	13:58:01	15:19:08	16:50:56	18:44:33	20:59:55	23:23:10	01:48:07	04:08:13
24	06:27:08	08:47:32	10:50:48	12:30:18	13:54:05	15:15:12	16:46:60	18:40:37	20:55:59	23:19:14	01:44:11	04:04:18
25	06:23:12	08:43:37	10:46:53	12:26:22	13:50:09	15:11:17	16:43:04	18:36:41	20:52:04	23:15:18	01:40:15	04:00:22
26	06:19:16	08:39:41	10:42:57	12:22:26	13:46:13	15:07:21	16:39:08	18:32:46	20:48:08	23:11:22	01:36:20	03:56:26
27	06:15:20	08:35:45	10:39:01	12:18:30	13:42:17	15:03:25	16:35:12	18:28:50	20:44:12	23:07:26	01:32:24	03:52:30
28	06:11:24	08:31:49	10:35:05	12:14:34	13:38:21	14:59:29	16:31:16	18:24:54	20:40:16	23:03:30	01:28:28	03:48:34
29	06:07:28	08:27:53	10:31:09	12:10:38	13:34:25	14:55:33	16:27:20	18:20:58	20:36:20	22:59:34	01:24:32	03:44:38
30	06:03:32	08:23:57	10:27:13	12:06:42	13:30:29	14:51:37	16:23:24	18:17:02	20:32:24	22:55:39	01:20:36	03:40:42

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल कांगड़ा

दिसम्बर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	08:20:01	10:23:17	12:02:47	13:26:33	14:47:41	16:19:28	18:13:06	20:28:28	22:51:43	01:16:40	03:36:46	05:59:37
2	08:16:05	10:19:21	11:58:51	13:22:38	14:43:45	16:15:32	18:09:10	20:24:32	22:47:47	01:12:44	03:32:50	05:55:41
3	08:12:09	10:15:25	11:54:55	13:18:42	14:39:49	16:11:36	18:05:14	20:20:36	22:43:51	01:08:48	03:28:54	05:51:45
4	08:08:14	10:11:30	11:50:59	13:14:46	14:35:53	16:07:40	18:01:18	20:16:40	22:39:55	01:04:52	03:24:59	05:47:49
5	08:04:18	10:07:34	11:47:03	13:10:50	14:31:57	16:03:45	17:57:22	20:12:44	22:35:59	01:00:56	03:21:03	05:43:53
6	08:00:22	10:03:38	11:43:07	13:06:54	14:28:02	15:59:49	17:53:26	20:08:49	22:32:03	00:57:01	03:17:07	05:39:57
7	07:56:26	09:59:42	11:39:11	13:02:58	14:24:06	15:55:53	17:49:30	20:04:53	22:28:07	00:53:05	03:13:11	05:36:01
8	07:52:30	09:55:46	11:35:15	12:59:02	14:20:10	15:51:57	17:45:35	20:00:57	22:24:11	00:49:09	03:09:15	05:32:05
9	07:48:34	09:51:50	11:31:19	12:55:06	14:16:14	15:48:01	17:41:39	19:57:01	22:20:15	00:45:13	03:05:19	05:28:09
10	07:44:38	09:47:54	11:27:24	12:51:10	14:12:18	15:44:05	17:37:43	19:53:05	22:16:20	00:41:17	03:01:23	05:24:14
11	07:40:42	09:43:58	11:23:28	12:47:14	14:08:22	15:40:09	17:33:47	19:49:09	22:12:24	00:37:21	02:57:27	05:20:18
12	07:36:47	09:40:03	11:19:32	12:43:19	14:04:26	15:36:13	17:29:51	19:45:13	22:08:28	00:33:25	02:53:31	05:16:22
13	07:32:51	09:36:07	11:15:36	12:39:23	14:00:30	15:32:17	17:25:55	19:41:17	22:04:32	00:29:29	02:49:35	05:12:26
14	07:28:55	09:32:11	11:11:40	12:35:27	13:56:34	15:28:21	17:21:59	19:37:21	22:00:36	00:25:33	02:45:40	05:08:30
15	07:24:59	09:28:15	11:07:44	12:31:31	13:52:38	15:24:25	17:18:03	19:33:25	21:56:40	00:21:37	02:41:44	05:04:34
16	07:21:03	09:24:19	11:03:48	12:27:35	13:48:42	15:20:29	17:14:07	19:29:29	21:52:44	24:13:46	02:37:48	05:00:38
17	07:17:07	09:20:23	10:59:52	12:23:39	13:44:46	15:16:33	17:10:11	19:25:33	21:48:48	24:09:50	02:33:52	04:56:42
18	07:13:11	09:16:27	10:55:57	12:19:43	13:40:51	15:12:37	17:06:15	19:21:38	21:44:52	24:05:54	02:29:56	04:52:47
19	07:09:16	09:12:32	10:52:01	12:15:47	13:36:55	15:08:41	17:02:19	19:17:42	21:40:56	24:01:58	02:26:00	04:48:51
20	07:05:20	09:08:36	10:48:05	12:11:51	13:32:59	15:04:46	16:58:23	19:13:46	21:37:00	23:58:02	02:22:04	04:44:55
21	07:01:24	09:04:40	10:44:09	12:07:55	13:29:03	15:00:50	16:54:27	19:09:50	21:33:05	23:54:06	02:18:08	04:40:59
22	06:57:28	09:00:44	10:40:13	12:03:60	13:25:07	14:56:54	16:50:31	19:05:54	21:29:09	23:50:10	02:14:12	04:37:03
23	06:53:32	08:56:48	10:36:17	12:00:04	13:21:11	14:52:58	16:46:35	19:01:58	21:25:13	23:46:14	02:10:17	04:33:07
24	06:49:36	08:52:52	10:32:21	11:56:08	13:17:15	14:49:02	16:42:39	18:58:02	21:21:17	23:42:18	02:06:21	04:29:11
25	06:45:40	08:48:56	10:28:25	11:52:12	13:13:19	14:45:06	16:38:44	18:54:06	21:17:21	23:38:23	02:02:25	04:25:15
26	06:41:45	08:45:01	10:24:30	11:48:16	13:09:23	14:41:10	16:34:48	18:50:10	21:13:25	23:34:27	01:58:29	04:21:20
27	06:37:49	08:41:05	10:20:34	11:44:20	13:05:27	14:37:14	16:30:52	18:46:14	21:09:29	23:30:31	01:54:33	04:17:24
28	06:33:53	08:37:09	10:16:38	11:40:24	13:01:31	14:33:18	16:26:56	18:42:18	21:05:33	23:26:35	01:50:37	04:13:28
29	06:29:57	08:33:13	10:12:42	11:36:28	12:57:35	14:29:22	16:22:60	18:38:22	21:01:37	23:22:39	01:46:41	04:09:32
30	06:26:01	08:29:17	10:08:46	11:32:32	12:53:39	14:25:26	16:19:04	18:34:26	20:57:41	23:18:43	01:42:45	04:05:36
31	06:22:05	08:25:21	10:04:50	11:28:37	12:49:43	14:21:30	16:15:08	18:30:30	20:53:45	23:14:47	01:38:49	04:01:40

ग्रहों के दान, दान समय, जप-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र

	दान - पदार्थ												दान समय	जप संख्या	जपनीय मन्त्र	हवन समिधा
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगौ	र.वस्त्र	र. चन्दन	सूर्योदय	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दही	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वे वस्त्र	श्वे.चंदन	संध्या	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तकेशर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तवस्त्र	र.चंदन	प.2 शेप दिन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	काँसी	मूंग	खांड	घी	सर्वपुष्प	हाथी दाँत	कर्पूर	शस्त्र	ह.वस्त्र	फल	प.5 शेप दिन	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अ.मार्ग
गुरु.	पुखराज	सुवर्ण	काँसी	दा.चना	खांड	घी	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतवस्त्र	पीतफल	संध्या	29000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दूध	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वे.घोड़ा	श्वे.वस्त्र	श्वे.चंदन	सूर्योदय	6000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	उदुवर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	कृ.वस्त्र	उपानह	मध्याह्न	23 000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	कृष्णपुष्प	खड्ग	कम्बल	घोड़ा	नी.वस्त्र	शस्त्र	रात्रि	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	लसन	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधा	तेल	धूम्रपुष्प	नारियल	कम्बल	बकरा	धूम्रवस्त्र	शस्त्र	रात्रि	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुन्था	मणि	सुवर्ण	चाँदी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतपुष्प	कपूर	मिश्री	श्वेतवस्त्र	श्वे.चंदन	हाथीदांत	मुं.काल	मुंथेशवत्	मुंथेशमन्त्रवत्	

स्वप्न विचार

जो स्वप्न बीमारी और या परेशानी की हालत में आता है उस पर भरोसा नहीं करना चाहिये। जो स्वप्न दिन को देखा जाता है वह भी सचाई में कम होता है। रात्रि के पहिले पहर में स्वप्न आए तो उसका फल एक वर्ष में मालूम होता है दूसरे पहर के स्वप्न का फल 7 माह में, तीसरे पहर के स्वप्न का फल तीन महीने में और चौथे पहर का देखा हुआ स्वप्न एक मास में अपना अच्छा या बुरा फल दिखा देता है जो स्वप्न सुबह सूर्य निकलने के समय देखा जाए उसका फल एक प्रहर में प्रकट हो जाता है।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अपने को मारना	दीर्घायु	कछुआ देखना	धन प्राप्ति	जूता गुम होना	वैमनस्य
अनाज भरना	धन लाभ	कुत्ते का काटना	शत्रु से भय	जहाज़ पर चढ़ना	तबदीली हो
अन्न बेचना	नुकसान	कूप में गिरना	परेशानी हो	ज्वाहरात देखना	काम में सफलता
आग उठाना	कष्ट	कब्र में जाना	परेशानी हो	जुआ खेलना	कारोबार में तंगी
आंधी देखना	सफर व परेशानी	किशती देखना	परेशानी हो	झाड़ू देखना	फजूल खर्च होना
आसमान देखना	राजदरबार में मान	में प्रवेश करना	विपत्ति पाना	तख्त देना	तरक्की व इज्ज़त
आग देखना	धन प्राप्ति	कत्ल करना	स्वस्थ लाभ	तख्त पर बैठना	सफलता, इज्ज़त
इमारत बनाना	लाभ व तरक्की हो	गधे की सवारी	कष्ट पाना	तालाब में नहाना	इज्ज़त पाना
ऊंट देखना	धन का लाभ	चांद देखना	खुशी पाना	तेल देखना	कष्ट पाना
ऊंट की सवारी करना	कष्ट पाना	चित्रा देखना	राज्य प्राप्ति	दांतों का गिरना	दीर्घायु नीरोगता
ऊंचाई से गिरना	इज्ज़त में कमी हो	चूहा देखना	कुरूपा स्त्री प्राप्ति	श्वेत सर्प का काटना	लाभ हो
किला देखना	तरक्की हो	चीखें मारना	मुसीबत, पाना	दरया में नहाना	रोग से छूटना

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
दूध पीना	खुशी पाना	विवाह देखना	कलह	निराशा होना	सफलता
नेवला देखना	कलह	वर्षा देखना	फिकर व रंज पाना	रेल में चढ़ना	यात्रा हो
पुरुष का मांस खाना	राज्य की प्राप्ति	वृक्ष पर चढ़ना	काम में सफलता हो	टिकट लेना	प्रदघूटना
पर्वत पर चढ़ना	तरक्की रोज़गार	विष खाकर मर जाना	दुःख व कष्ट पाना	पैर फिसलना	अवनति
पानी पर चलना	कामयाबी सफलता	शरीर में तेल मलना	धनवान् होना	कुशती करना	मुकद्दमा हो
पानी पीना	रोज़गार में तंगी	शत्रु देखना	सफलता पाना	शस्त्र देखना	युद्ध हो
पानी में डूबना	इज्ज़त, तंरक्की पाना	श्रेष्टों से पूजा जाना	धन धान्य की प्राप्ति	शस्त्र उठाना	विजय प्राप्ति
फूल व धान्य की प्राप्ति	क्लेशों, दुःखों का नाश	साफा गिरते देखना	ग़म व कष्ट पाना	शस्त्र गिरना	पराजय
बंसरी बजाना	कष्ट पाना	सोना पाना	परेशानी व ग़म हो	गौ मिलना	भूमि मिले
बंदर देखना	धन प्राप्ति	सांप देखना	परेशानी व खतरा	गौ बेचना	भूमि घूटना
बाल कटे देखना	परेशानी से छूटना	सांप काटना	धन प्राप्ति	पूर्व में जाना	विजय
बर्फ गिरते देखना	बिमारी व फिकर	स्त्रियों की लड़ाई देखना	दुःख पाना	हाथी पर चढ़ना	धन लाभ
बगीचा देखना	ऋण, कष्ट से छूटना	सूर्यचन्द्र ग्रहण देखना	मृत्यु को प्राप्त हो	गौ प्रसूता होना	धन लाभ
बरात देखना	बीमारी	सुवर्ग में जाना	तबदीली	गौ की रस्सी पकड़ना	धन लाभ
बुलबुल देखना	खुशी	सांप मारना	कष्ट से बचना	गौ का दूध पीना	धन लाभ
बिच्छु देखना	फिकर व ग़म	सिंह देखना	शत्रु पर विजय पाना	दूध से नहाना	धन लाभ
बादल देखना	लाभ	हाथी पर सवार होना	लाभ व तरक्की पाना	फूल मिलना	धन लाभ
भैंस देखना	इज्ज़त बढ़े	हाथों का कटना	माता पिता को दुःख	फूल खिलना	धन लाभ
भूषण का चुराना	यात्रा हो	अग्नि लगना	दुःखी होना	युवती मिलना	धन लाभ
मदिरा पीना	कोई कष्ट आए	अर्थी देखना	सफलता	प्रसाद मिलना	धन लाभ
मौत देखना	हानिकारक	अंडे खाना	झगड़ना	आशीर्वाद लेना	धन लाभ
मकान गिरते देखना	रोज़गार में तरक्की हो	आम खाना	लाभ होगा	पुस्तक मिलना	धन लाभ
मुंदरी पाना	परेशानी हो	अनार खाना	रोग लगे	पुस्तक पढ़ना	धन लाभ
मंदिर में जाना	रोग पाना	ऊँट से गिरना	अवनति	साँप डंसना	धन लाभ
मुरदा रोते हुए देखना	तरक्की व इज्ज़त पाना	ऊँट पर चढ़ना	उन्नति	पितर दिखना	धन लाभ
रोटी खाना	खुशखबरी पाना	उड़ता पक्षी देखना	इज्जत	पितर पूजना	धन लाभ
रीछ देखना	खुशी और तरक्की हो	ऊँचे उड़ना	यश मिले	देवता देखना	धन लाभ
वृक्ष काटना	फिकर, नुकसान हो	पेपर पढ़ना	सफलता	मंदिर देखना	धन लाभ
विष खाना	फिकर व ग़म हो	परीक्षा देना	सफलता	बैंक से नोट लेना	धन लाभ

डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा जम्मू में 'धर्म-भास्कर' कैलेण्डर के विमोचन के अवसर पर श्री एन.एन. वोहरा (महामहिम राज्यपाल जम्मू एवं कश्मीर) से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए सह-सम्पादक पं. पीयूष रैणा, साथ में सांसद मदन लाल (बायें) एवं प्रो. चमन लाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षा राज्यमंत्री) दायें।

डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा जम्मू में 'धर्म-भास्कर' कैलेण्डर के विमोचन के अवसर पर श्री एन.एन. वोहरा (राज्यपाल जम्मू एवं कश्मीर) से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए सह-सम्पादक पं. रोहित शास्त्री साथ में प्रो. चमन लाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री)।

बाबा कैलख देव मंदिर परिसर में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर को चुनरी भेंट करते हुए श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम् के मुख्य सम्पादक डॉ. चन्द्रमौलि रैणा।

श्री ब्रजराज

कालदर्शक पंचांग

दैनिक उपयोगी सामग्री सहित प्रकाशित

रवि SUN		8	15		
सोम MON	2	9	16	23	30
मंगल TUE	3	10	17	24	31
बुध WED	4	11	18	25	
गुरु THU	5	12	19	26	
शुक्र FRI	6	13	20	27	
शनि SAT	7	14	21	28	

प्रत्येक पृष्ठ पर देवी-देवताओं के रंगीन चित्र, विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन, शक सम्वत्, अंग्रेजी तारीख, चैत्र आदि मास, तिथि, प्रमुख व्रत एवं त्यौहार, सरकारी छुट्टियाँ, विवाह, व्यापार, वाहन एवं वास्तु मुहूर्त्त, दूध व अखबार का हिसाब, भद्रा, पंचक और गण्ड मूल, कुण्डलियाँ एवं ग्रह स्थिति, बारह महीने का राशिफल, कार्यसिद्धि योग, सर्वदोष नाशक रवियोग, द्वि-त्रिपुष्कर योग, रविपुष्य गुरुपुष्यामृत योग, तिथि व नक्षत्र का समाप्तिकाल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश तथा दैनिक सूर्योदयास्त, ग्रहण विवरण, शनि की साढ़ेसाती व ग्रह चाल का प्रभाव, जन उपयोगी बातें, गृहणी की रसोई, चिकित्सा, गौरख पतरा यात्रा मुहूर्त्त, चौघड़िया मुहूर्त, सूर्य चन्द्र आदि नवग्रह के दान रत्न एवं उपाय, महालक्ष्मी पूजन के श्रेष्ठ मुहूर्त्त, यंत्र-तंत्र-मंत्र, स्वप्न विचार, गोचर ग्रहानुसार संसार का घटना चक्र साथ ही अनेक नए एवं महत्वपूर्ण विषय।

...कुण्डली का विवरण होता है। रु. २०१/-

...पत्रिका- जन्म विवरण (तिथि,नक्षत्र,योगादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अतिसंक्षिप्त फलभी लिखा होता है। रु. २०१/-

३. **जन्माङ्ग पत्रिका**- जन्मविवरण(तिथि,नक्षत्रादि) राशिचक्र, लग्न-चन्द्रकुण्डली,सूर्यादिस्पष्टग्रह,विंशोत्तरी महादशा,अन्तर्दशा और साधारण भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ३५१/-

४. **सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका**- जन्म विवरण (तिथि,नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न,चन्द्र व चलित कुण्डलियाँ,तत्कालीन सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादिकुण्डलियाँ, पंचधामैत्रिकोष्ठक, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनीदशा व अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। यह ४० पृष्ठ की पुस्तकाकार जन्मपत्रिका बनाई जाती है। रु. ११०१/-

५. **कुण्डली मिलान**-वर-वधु जन्मपत्रिका मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु. २५१/-

६. **शुभ मुहूर्त्त**- गृहप्रवेश, दुकान, प्रतिष्ठान, वाहन खरीदने आदि सभी प्रकार के शुभ मुहूर्त्त बताने की फीस। रु. २५१/-

७. **कम्प्यूटर जन्मपत्रिका**- अत्याधुनिक कम्प्यूटर साफ्टवेयर द्वारा भी बनाई जाती हैं, जिनमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली, सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादि कुण्डलियाँ, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा जीवनके सभी पहलुओं पर विवेचन होता है। रु. ५५१/-

नोट:- जन्मतारीख,माह,सन्, जन्म समय,जन्मस्थान,माता-पिताका नाम आदि विवरण स्पष्ट लिखकर भेजें। विदेश में जन्मे जातकों की फीस दोगुनी ली जाती है। जन्मपत्रिका बनाने की फीस पहले ही ली जाती है।

प्रकाशन

आपका अत्यन्त प्रिय नये सम्वत् का श्री राजधानी पंचांग कम्प्यूटर कम्पोजिंग द्वारा सुन्दर साज-सज्जा से सुशोभित पूर्ववत् साइज, अधिक पृष्ठ, सुन्दर डिजायन, मोटे-मोटे अक्षरों में छपकर तैयार है। आप अपने निकटवर्ती दुकानदार से प्राप्त कर सकते है, अथवा पंचांग कार्यालय से सम्पर्क करके मंगा सकते है।

★श्री राजधानी पंचांग की विशेषताएँ★

श्री राजधानी पंचांग में प्रतिवर्ष नये विषयों का समावेश कर आधुनिक बनाने का प्रयास किया जाता है। ज्योतिषियों के लिए नई सारणियाँ बना दी जाती है, जिनकी सहायता से देश-विदेश की कुण्डली निर्माण कर आप घंटों के काम को मिनटों में कर सकते है। नये शोधपूर्ण लेखोंके कारण इसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप अपनी प्रति पहले ही सुरक्षित करा लें।

श्री राजधानी पंचांग कार्यालय

कार्यालय : E-219, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-110053

कार्या. : 22852476
निवास: 22941608
मोबा. : 9868909063